# ॥ वामनपुराण भाषा ॥

जिसमें

कपालमोचन आख्यान, दक्षयज्ञविनाश, महादेवका कालरूपधारण, कामदेवदहन, प्रह्लाद नारायणयुद्ध देवासुरसंग्राम, सूर्यकी कथा, भुवनकोशवर्णन काम्यव्रतआख्यान, दुर्गाचरित्र, पार्वतीजन्म, तपस्या एवं विवाह वर्णन, गौरी उपाख्यान, कुमार, जाबालि, बलि, लक्ष्मी, त्रिविक्रमचरित्र, मरुतजन्म कथा, प्रेतउपाख्यान, ब्रह्माकृतस्तव एवं श्रीवामनभगवान्‌की अनेक उत्तमोत्तम कथा सरल भाषामें वर्णितहैं ।

जिसे

सर्व साधारण के उपकारार्थ श्रीमुंशीनवलकिशोरजी (सी, आई, ई) ने बहुत सा धन देकर बेरीग्रामनिवासी रविदत्तजी वैद्य से संस्कृत से सरल भाषा में अनुवाद कराया ।

दूसरी बार

## लखनऊ


मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपा
मार्च सन् १९०६ ई० ॥

# भूमिका ॥

कलियुगमें संसार के कल्याण के निमित्त भगवान् वेदव्यास जीने द्वापरके अन्तमें वेदों और शास्त्रोंका सारांशलेकर अनेक उत्तमोत्तम और आश्चर्य्य दृष्टान्तों सहित आख्यानों में जो १८ पुराण रचेथे और जिनमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्षके अनेक सरल साधन एवम् वर्णाश्रम धर्म विधान बिस्तारपूर्वक बर्णित हैं उनमें से यह बामनपुराण चौदहवां है और दोभागों में विभक्त है जिनमें १०००० श्लोक हैं ॥

इस पुराण में ब्रह्माशिरच्छेद, कपालमोचन आख्यान, दक्ष यज्ञ बिनाश, महादेव का कालरूप धारण, कामदेवदहन, प्रह्लाद नारायणकायुद्ध, देवासुर संग्राम, सूर्यकीकथा, भुवनकोश बर्णन, काम्यब्रत आख्यान, दुर्गाचरित्र, कुरुक्षेत्र बर्णन, सरोवर माहात्म्य, पार्वती जन्म, तपस्या एवम् बिवाहवर्णन, गौरी उपाख्यान, कौशिकी उपाख्यान, कुमारचरित्र, अन्धकबध उपाख्यान, साध्य उपाख्यान, जाबालिचरित्र, अरजाकथा, मरुतजन्मकथा, बलिचरित्र, लक्ष्मीचरित्र, त्रिविक्रमचरित्र, धुन्धुचरित्र, प्रेतउपाख्यान, नक्षत्र पुरुष आख्यान, श्रीदामाचरित्र, ब्रह्मस्तव एवम् बामन भगवान्की अनेक मनोरंजन कथा अतिउत्तमता से बर्णितहैं ॥

इस पुराणके अबतक संस्कृत में होनेके कारण संस्कृत जानने वालों के सिवा सर्व साधारणको इसका पूरा २ रस न मिलताथा इसलिये इस यंत्रालयने बहुतसाधन व्ययकरके भक्तजनों के उपकारार्थ संस्कृत मूल से सरलभाषामें वेरीग्रामनिवासि रविदत्त जी से अनुवाद कराकर प्रकाश किया ॥

इसके पठन किंवा श्रवणसे परमगति प्राप्त होती है और कार्त्तिककी संक्रान्ति को घृत और धेनुसहित वेदज्ञ ब्राह्मणों को इस का दान करनेसे संसार के समस्त भोगों को भोग मरने के बाद विष्णुलोक प्राप्त होता है ॥

मैनेजर अवधसमाचार सम्पादक ॥

# वामनपुराण भाषा का सूचीपत्र ॥

| अध्याय | विषय | पृष्ठसे | पृष्ठतक |
|---|---|---|---|

इति वामनपुराण भाषा का सूचीपत्र समाप्तहुआ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

# बामनपुराण भाषा ॥

## पहिला अध्याय ॥

जो बलिराजासे त्रिलोकीके राज्यको छीन इन्द्रको देतेभये और बामनरूपको धारण करनेवाले ऐसे तिस विष्णुको नमस्कारहै १ एकसमय नारदमुनि आश्रम में स्थित और विद्वानोंमेंउत्तम ऐसेपुलस्त्यऋषिसे बामनपुराणका आख्यान पूछतेभये २ कि हे ब्रह्मन्! ऐश्वर्य्यवाले और संसारकी उत्पत्ति करनेवाले ऐसे विष्णु भगवान्ने कैसे पहले बामन अवतार धारणकिया यह पूछतेहुये मुझसे कहो ३ और विष्णुका भक्तहोके प्रह्लाददैत्य कैसे देवताओंकेसंग युद्धकरता भया इसमें मुझको महान् संशयहै ४ और सुनाहै हे द्विजों में श्रेष्ठ! दक्ष प्रजापतिकी पुत्री सती महादेवजीकी प्यारी और बरको बरनेवाली ऐसी भार्या होतीभई ५ सुन्दर मुखवाली वह किसवास्ते अपनेशरीरको त्यागके पर्वतोंके राजा और महात्मा ऐसे हिमवान् पर्वतके घरमें जन्मलेतीभई ६ फिरमहादेवकी पत्नी होतीभई इसमेरे संशयको छेदनकरो क्योंकि सर्वज्ञरूप आप मुझको

प्रतीतहोतेहो ७ और हे सत्तम! तीर्थदान नानाप्रकारके व्रत इन्होंका माहात्म्य और बिधिको हेद्विज! मुझसे कहो ८ ऐसे नारदके बचन से प्रेरित किये और कहनेवालों में श्रेष्ठ ऐसे पुलस्त्यऋषि तपके समुद्ररूपी नारदमुनि को कहनेलगे ९ पुलस्त्यजी बोले हेमुनिसत्तम! आदिसे संपूर्ण बामनपुराणको मैं तुमसेकहूंगा आसनकोस्थिर करकेसुन १० पहलेएकसमयमें सती उपस्थितहुये ग्रीष्म ऋतुकोदेखके मंदराचलपर्वत पै स्थितहुये महादेवजी से कहनेलगी ११ हे देवेश! ग्रीष्मऋतु प्रवृत्तहुआ और जहां स्थित होनेसे वायु और धूप नहीं पीड़ा देवें ऐसा मेरे स्थान नहींहै १२ ऐसे सतीके बचन को सुन महादेवजी कहनेलगे हे सुन्दरदांतोंवाली! मैं निराश्रय हूं अर्थात् सब कालमें बनमें बसतारहाहूं १३ ऐसेमहादेव जीसे कहीहुई सती हे नारद! ग्रीष्मकाल को महादेवजी के सङ्ग वृक्षकी छायामें ब्यतीत करतीभई १४ पीछे ग्रीष्मऋतुके अंतमें उपजा और बनके आचरण से अद्भुत और बादलों के अंधकारसे युक्त दिशाओंवाला ऐसा वर्षाकालको देखके दक्षकीपुत्री सती महादेवजी से विनयपूर्वक वचन को कहनेलगी १५। १६ सती बोली कि हे महेश! हृदयको आवदारण करनेवाले पवनचलतेहैं और बादल गर्जतेहैं और नीलेबादलोंके गणोंमें बिजुली चमकतीहै और मयूर अपनी वाणियों को बोलतेहैं १७ और आकाशसे छूटीहुई धारा पृथ्वीमें पड़ती हैं और बगुलोंकी पंक्तियां बादलों को प्राप्त होरही हैं और कदम्ब, सरल,

अर्जुन, केतकी ये वृक्षपवन से हिलेहुये पुष्पों को छोड़ते हैं १८ और मेघके अतिगर्ज्जने को सुन हंस तत्काल मानसरोवरों को त्यागते हैं जैसे बहुतदिनके पुराने और नीच पुरुषों से व्याप्त ऐसे आश्रम को योगीजन १९ और हे शम्भो! ये मृगोंके समूह भागतेहैं और शुद्धहोते हैं और रमण करतेहैं तथा बनकी कृत्रिम पृथ्वी में आनन्दितहुये मृगोंकेगण दौड़ते हैं और बादलों की वृद्धिसे संपूर्ण पृथ्वी २० छोटेतृण और खेतीसे युक्तहुई प्रकाशित होरही है और हे देव! मनोहर और नीले बादलों में बिजली चमकतीहै जैसे दुर्जन की सम्वृद्धिकोदेख २१ शूरबीर चमकते हैं तैसे और नौकाआदि से गमनोंमें अत्यन्त बेगोंवाली नदियां होगईहैं और हे चन्द्रमाकरके अङ्कित सुन्दर मस्तकवाले! नीचजन के साथ बास करने वाली स्त्रियां मलिन जन के आश्रित होजाती हैं इसमें क्या चित्र है अर्थात् क्या आश्चर्य है अर्थात् कुछ भी नहीं २२ और नीलरूपी मेघोंकरके व्याप्त आकाश होरहा है और पुष्पों से आश्रित सर्जवृक्ष होरहे हैं और पाखण्डियों से शोभित नीपसंज्ञक कदम्बवृक्ष होरहे हैं और फलोंकरके शोभित बेलपत्र आदि वृक्ष होरहे हैं और पानीसे शोभित सब नदियां होरहीहैं २३ पत्र और कमलोंकरके शोभित बड़े सरोवर होरहेहैं ऐसे अब यह वर्षाकाल अत्यन्त दुस्सह है ऐसे इस दुस्सह और अद्भुत और भयानककाल में हे शङ्कर! आपसे मैं कहती हूं २४ किइस पर्वतमें स्थानकोकरो जिसकरके हे शम्भो!

मैं स्वस्थ हो जाऊं ऐसे रमणीक बचनको सुनके महादेवजी कहनेलगे २५ कि हे प्रिये! स्थान को बनाने के लिये मेरेपास द्रव्य नहींहै और हेसति! सिंहोंकी चर्मोंसे आच्छादित हुआ मेरादेहहै और शेषनाग मेरा उपवीत अर्थात् जनेऊहै और पिङ्गल सर्प मेरे कानमें कमलरूप है २६ और कम्बल सर्प मेरे एक हाथका गहनाहै और धनञ्जयसर्प मेरे दूसरे हाथका गहना है और अश्वतर सर्प मेरे एक हाथका कङ्कणहै और तक्षकसर्प मेरे दूसरे हाथका कङ्कणहै और नीलाञ्जनके तुल्य वर्णवाला नीलसर्प मेरी कटितट में प्रतिष्ठित है २७ पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! कि ऐसे उग्ररूप और असत्य और शोभित ऐसे बचन को महादेवजी से सती सुनके भयभीत हुई स्वामीको स्थानके कष्टसे पृथ्वीतल की तरफ देख और गरम गरम आंसुओंको काढ़ लज्जासे रोषको हे अव्यय! प्राप्तहुई कहनेलगी २८ देवी बोली किऐसे संश्रित हुई और वृक्षके मूलमें स्थितहुई ऐसी जो मैंहूं सो मेरे लिये यह वर्षाकाल ऐसेही चलाजावेगा आप प्रसन्नहोके कहो २९ महादेवजी बोले कि हे प्रिये ! मेघके समयको जानके यत्नकरूंगा जिसकरके जलकी धारा तेरे पै नहीं पड़ेगी ३० पुलस्त्यजी कहनेलगे पश्चात् ऊंचेमेघों के मण्डलको आरोहितहोके महादेवजी दक्षकीपुत्रीके सङ्ग स्थितहुये तब महादेवजी भूतकेतु नाम से विख्यात आकाशमें हुये ३१ ॥

इति वामनपुराणभाषायांहरललितनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

# दूसरा अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! तभीसे महादेवजीके स-
काशसे वर्षाऋतु निवृत्त हुआ पीछे हे नारद ! संसार
को आनन्द करने वाला और रमणीय ऐसा शरत्काल
आया १ तब नीलेबादल आकाशको त्यागनेलगे और
कंक पक्षी वृक्षों को त्यागने लगे और नदियां तटों कोत्या-
गनेलगीं और कमल सुगन्धों कोत्यागनेलगे और काक
अपने घोंसलों को त्यागनेलगे और रुरुसंज्ञकमृग सीं-
गोंको त्यागनेलगे और जलाशय मैलको त्यागनेलगे २
और कमल फूलने लगे और चन्द्रमाकी किरणें प्रका-
शित होनेलगीं और फूलोंवाली बेलि होने लगी और
प्रसन्नहुई गायोंके समूह शब्द करनेलगे और संतजन
संतोषको प्राप्तहोने लगे ३ और सरोवरों में फूल प्रका-
शित होनेलगे और आकाश में तारागण प्रकाशित होने
लगे और जलाशयों में जलोंकी शुद्धि होनेलगी और
सत्पुरुषों के चित्त दिशाओं के मुखके समान प्रकाशित
होनेलगे और चन्द्रमाकी कान्ति मलको त्यागनेलगी ४
ऐसे कालमें मेघकी पृष्ठपै बसनेवाली सतीको ले पर्वतों
के इन्द्ररूपी मन्दराचल को आये ५ पीछे मन्दराचल
के पृष्ठभाग में समान शिलातल पै महाकीर्त्तिवाले महा-
देवजी सतीके संग रमण करते भये ६ पीछे जब शर-
त्काल व्यतीत होगया और विष्णु जागउठे तब सब
प्रजापतियों में श्रेष्ठ दक्षप्रजापति यज्ञका आरम्भ कर-

ताभया ७ बारह आदित्यों को और इन्द्रआदि सब देवताओं को और कश्यपजी को बुलाके यज्ञमें सभापति बनाता भया ८ और अरुन्धती सहित शंसितव्रतवाले बशिष्ठजी को और अनुसूया सहित अत्रिको और सद्धृति सहित कौशिक को ९ और अहल्या सहित गौतम को और अमाया सहित भरद्वाज को और चन्द्रमा सहित अङ्गिरा ऋषिको १० वेदवेदाङ्गों के जाननेवाले और गुणोंमें सम्पन्न ऐसे इन्हों को आमन्त्रित कर दक्षप्रजापति अपनी यज्ञ में सभापति बनाता भया ११ और अहिंसा भार्य्या सहित धर्मराज को बुला के और निमन्त्रित कर यज्ञस्थान का द्वारपाल बनाता भया १२ और अरिष्टनेमि को इन्धन लाने के वास्ते यज्ञमें दक्षप्रजापति बनाता भया और हे ब्रह्मन्! चन्द्रा सहित अङ्गिरा ऋषिको १३ मिष्टरूपी अन्नपान के संस्कार में प्रयुक्त करताभया और भृगुजी को मन्त्रों के संस्कार में अच्छीतरह प्रयुक्त करताभया १४ तथा रोहिणी सहित और शुद्ध ऐसे चन्द्रमा को धनोंका स्वामी बनाता भया १५ इतनी कथा सुनतेही नारद ने पूछा हे महाराज! जमाई पुत्री दौहित्र इन सबोंको बुलाताभया केवल महादेव और सती को नहीं बुलाता भया १६ दक्षप्रजापति ने धनों का स्वामी और महेश्वर, ज्येष्ठ श्रेष्ठ और वरिष्ठ और आद्य ऐसे महादेवजी क्यों नहीं बुलाये १७ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! सबोंसे बड़ा और सबोंमें श्रेष्ठ और व-

रिष्ठ और आद्य ऐसे महादेव को कपाली जानके दक्ष ने नहीं बुलाया १८ इतना सुन नारदने पुलस्त्यजी से पूछा हे महाराज! देवताओंमें श्रेष्ठ और शूलको हाथ में लेनेवाले और तीन नेत्रोंवाले ऐसे महादेव किस कर्म करके और किसवास्ते कपाली होतेभये १९ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! सावधानहोके अति पुरानी और आदि पुराण में प्रकट मूर्त्तिवाले ब्रह्माजी की कहीहुई ऐसी इसकथा को सुन २० पहले जब एकार्णव लोक हुआ स्थावर और जंगम नष्टहोगये और चन्द्रमा सूर्य नक्षत्र वायु अग्नी ये भी नष्टहोगये २१ ऐसे प्रलयमें प्रतर्कणासे रहित और अविज्ञेय भाव और अभावसे वर्जित और डूबगये हैं बेल और तृण जिस में ऐसा और मुश्किल करके दीखने के योग्य ऐसा जब दुर्दिन होगया २२ तहां विष्णु भगवान् बहुत हजार वर्षों वाली संख्या से युक्त निद्राको ग्रहणकर शयनकरते हैं पीछे रात्रि के अंत में राजसरूप को प्राप्तहो लोकों को रचते २३ वेद और वेदांगों को जाननेवाला और चराचर जगत् को रचनेवाला और अद्भुत दर्शन वाला ऐसा ब्रह्मा उत्पन्न हुआ २४ और तमोगुण से उत्पन्न और तीन नेत्रोंवाला और कपर्दी और शूलको धारण करने वाला और रुद्राक्षकी माला को दिखाता हुआ ऐसा महादेव उत्पन्न हुआ २५ पीछे वहीपूर्वोक्त ईश्वर दारुणरूप अहंकार को रचतेभये जिसअहंकारसे ब्रह्मा और महादेव आवृत होतेभये २६ पीछे अहंकारवाला

महादेव ब्रह्माजी से कहनेलगा कि यहां जो प्राप्तहुआ है सो कौन है और आपको किसने रचाहै यह मेरेको कह २७ तब अहंकार से आवृतहुआ ब्रह्माजी शिवसेकह-नेलगा कि आप कौन हैं और तेरेको उत्पन्नकरनेवाला पिता कौन है और तेरी माता कौन है यह बर्णनकर २८ ऐसे ब्रह्मा और महादेवका आपस में बिवाद होनेलगा और आपही से उत्पत्तिहुई है २९ तब महादेवने कहा कि अतुलरूप वीणा को बजातेहुये और किलकिला ध्वनिको करतेहुये जन्मतेही आकाशको उड़तेभये इस वास्ते पहले आपही उत्पन्नहुआ है ३० तब ऐसे ब्रह्मा जीसे जीताहुआ महादेव दीन और नीचेको मुखवाला होकर स्थितहुआ जैसे राहु से ग्रसित चन्द्रमा ३१ जब ब्रह्माजीने महादेव जीतलिये तब क्रोधसे व्याप्त हुये महादेवजीको पांचवां मुख कहने लगा ३२ कि हे तमोमूर्त्ते! हे त्रिलोचन! मैं तुझको जानताहूं कि दिशा-ओंरूप वस्त्रोंवाले अर्थात् नंगे और बैलपर चढ़नेवाले और लोकको क्षय करनेवाले ऐसे आपहैं ३३ ऐसे ब-चनको सुनक्रोधको प्राप्तहुये और घोरनेत्रसे दग्धक-रनेकी कामनावाले ऐसे महादेव निरंतर ब्रह्माजीकोदे-खतेभये ३४ तब श्वेत, रक्त, पीला, नीला, पिंगजटावाला रौद्रऐसे दुर्दर्शरूपी पांचों मुख महादेवजीके हुये ३५ पीछे सूर्यकेसमान कांतिवाले पांचमुखोंको देख ब्रह्माजी महादेवसे कहनेलगे कि हे रुद्र! अच्छीतरह पीड़ित हुये जलमें बुलबुले उपजते हैं परन्तु तिन्होंमें क्या पराक्रम

होता है अर्थात् नहीं ३६ इस बचन को सुन क्रोध को प्राप्तहुये महादेवजीने अपने नखके अग्रभागसे कठोर वचन कहनेवाले ब्रह्माजीका शिर काट दिया ३७ तब कटाहुआ वह शिर महादेव के बायें हाथ में स्थितरहा अर्थात् कभी भी महादेव के हाथ से वह कटाहुआ शिर अलग होवेनहीं ३८ पीछे क्रोधको प्राप्त होनेवाले और अद्भुत कर्म करनेवाले ऐसे ब्रह्माजी ने बुद्धिमान् और कवच कुण्डल बाण इन्होंको धारण करनेवाला ३९ और हाथ में धनुष को लिये और महा बाहुओं वाला बाण और शक्तिको धारण करनेवाला और अविनाशी और चारभुजा वाला और महाप्राणों वाला और सूर्य के समान दीखने वाला ऐसा एक पुरुष रचा ४० पीछे वह पुरुष महादेव से कहनेलगा कि हे दुर्बुद्धे! तेरे को मैं नहीं मारता तू यहां से चलाजा क्योंकि तू पाप को करनेवाला है इसवास्ते पापिष्ठ पुरुषको सज्जन पुरुष मारने की इच्छा नहीं करता ४१ ऐसे तिस महात्मा पुरुषके वचनको सुन प्रियासहित महादेव बदरिकाश्रम में गया ४२ हिमालय पर्वतमें नरनारायणका स्थान है जहां पवित्ररूप और नदियों में श्रेष्ठ ऐसी सरस्वती बहती है ४३ नरनारायण के स्थानमें जा नारायण को देख रुद्रकहने लगा कि हे भगवन्! भिक्षाका दान करो क्योंकि आप अत्यन्त दयावाले हो ४४ ऐसे कथित किये धर्म के पुत्र नारायण महादेव से बोले तब नारायण कहने लगे कि हे महेश्वर! बायें हाथको त्रिशूल से ताड़न-

कर ४५ तब नारायण के बचनको सुन वेगवाला महादेव त्रिशूल से नारायण की बाईं भुजा को ताड़ित करता भया ४६ तब त्रिशूल से कटेहुये मार्ग से तीन धारा निकलीं तिन्होंमें से एक धारा तारागणों से मण्डितहुये आकाशमें स्थितहुई ४७ और दूसरीधारा पृथ्वी में पड़ने लगी तिसको तप करनेवाले अत्रिमुनि ग्रहण करते भये तिस अत्रिमुनिसे महादेवके अंशसे दुर्बासा मुनि उत्पन्न हुये ४८ और तीसरी धारा रौद्रदर्शनवाले कपाल में पड़तीभई तिससे कवचको पहनेहुये और जवान ४९ और श्यामरूप वाला और धनुषबाण को धारण करनेवाला और बर्षाकाल के बादल के समान गर्ज्जताहुआ और किसके कन्धे से तालफल के समान शिर को काटडारूं ऐसे कहताहुआ ऐसा एक पुरुष उत्पन्न हुआ ५० नारायणकी बाहुसे उत्पन्नहुये तिस पुरुषके समीप में महादेव प्राप्तहोकर कहने लगे कि हे नर! दुष्टात्मा वाला और १०० सूर्यों के समान प्रकाशवाला ऐसे इस ब्रह्म पुत्रको युद्ध में जीतो ५१ ऐसे महादेव के बचनको सुन पीछे आद्यरूप अजगव धनुष और अक्षयरूप बाणों को ग्रहणकर वह बीर युद्धके लिये बुद्धि को करता भया ५२ पीछे महाबलवाला ब्रह्माका पुत्र और नारायण की भुजासे उत्पन्न हुआ पुत्र ये दोनों आपस में युद्ध करने लगे तब दिव्य हजार बर्षों तक युद्ध रहा पीछे ब्रह्माजीके समीप में जाके महादेव कहने लगे ५३ कि हे ब्रह्माजी! दिव्य और अद्भुत कर्म करनेवाले पुरुषने

बलवाला भी तेरा पुत्र जीत लिया है अर्थात् बाणों से ताड़ित किया यह दश दिशाओं में अद्भुत हुआहै ५४ तब ब्रह्माजी महादेव से कहनेलगे कि हे शम्भो! इस जन्ममें इसमेरे पुरुषका पराजय नहीं दीखता है क्योंकि तेरा पुरुष नर है और मेरा पुरुष महात्मा है ५५ ऐसे बचनकह ब्रह्माजी अपने पुरुषको और महादेवजी नारायणसे उपजे अपने पुरुषको सूर्यमें प्रेरित करतेभये५६॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांहरललितेनरोत्पत्तिप्रलयोनाम द्वितीयोऽध्यायः २॥

## तीसरा अध्याय॥

पुलस्त्य जी बोले हेनारद! पीछे दारुण रूप कपाल जब महादेव के करतलमें स्थित रहा तब हे ब्रह्मन्! चिंतासे व्याकुल रूप इन्द्रियों वाला महादेव संताप को प्राप्त हुआ १ पीछे रौद्ररूप वाली और नीलांजन को चय अर्थात् समूह के समान कांतिवाली और लाल रंगके बालों वाली और भयानक ऐसी ब्रह्महत्या महादेवजीके समीप में प्राप्तभई २ पीछे बिकराल रूप वाली ब्रह्महत्या को देख महादेवजी पूँछनेलगे हेरौद्रे! तू कौन है और किस प्रयोजनसे आईहै यहकह ३ पीछे कपाल वाले महादेव से वह कहनेलगी कि मैं ब्रह्महत्या आई हूँ हे त्रिलोचन! मेरेको ग्रहण कर ४ ऐसे कहकर ब्रह्महत्या त्रिशूलको हाथमें लेनेवाले और रुद्र और सम्यक् प्रकारसे दग्धहुये शरीरवाले ऐसे महादेवजी के शरीर में प्रवेश करती भई ५ पीछे ब्रह्महत्यासे युक्त हुआ महादेव

बदरिकाश्रम में गया जब नर नारायणको नहीं देखता भया ६ तब चिन्ता और शोकसे समन्वित महादेव जब यमुनामें स्नान करनेको गया तब यमुना काभी जल सूखगया ७ तब सूखगयाहै जल जिसमें ऐसी यमुनाको देख पीछे महादेव सरस्वती नदीमें स्नानके लिये गया तब वह भी अन्तर्द्धानको प्राप्त भई ८ तिसकेपीछे महा-देव पुष्करारण्य और मागधारण्य और सैंधवारण्य इन तीर्थों में जाके इच्छा पूर्वक स्नान करता भया ९ पीछे निमिषारण्यमें और धर्मारण्य में स्नान करताभया परन्तु तिस रौद्ररूपवाली ब्रह्महत्यासे छुटानहीं १० पीछे बहुतसी नदी और तीर्थ और पवित्र आश्रम और देवस्थान इन्हों में स्नान और दर्शन भी योगसे युक्त हुआ महादेव करताभया परन्तु ब्रह्महत्याके पापसे छुटा नहीं ११ पीछे खेदित हुआ महादेव कुरुजांगल देशोंमें जाके तहां हाथ में चक्रको धारण करनेवाले और गरुड़पै स्थितहुये ऐसे विष्णुको देखताभया १२ और कमल के समान नेत्रोंवाले और शंख चक्र गदा इन्हों को धारण करनेवाले ऐसे विष्णु को देख पीछे अंजलीबांध महादेव स्तोत्र को पढ़ने लगा १३ महा-देवने कहा हे देवताओं के नाथ ! आपको नमस्कारहो हे गरुड़ध्वज ! आपको नमस्कारहो हे शंख चक्र गदा को हाथमें लेनेवाले! हे वासुदेव ! आपको नमस्कारहो १४ हे निर्गुण ! हे अनन्त ! आपको नमस्कार हो और नहीं तर्कणाके योग्य और जगत्को पालनेवाले आप

को नमस्कारहो हे ज्ञानाज्ञान! हे निरालम्ब! हे सर्वालंब आपको नमस्कार हो १५ हे रजोगुण से युक्त! हे ब्रह्म मूर्त्ते! हे सनातन! आपको नमस्कार हो हे नाथ! यह चर और अचर रूपी जगत् आपने रचाहै १६ हे सत्वाधिष्ठित! हे लोकेश! हे विष्णु मूर्त्ते! हे अधोक्षज! हे प्रजापाल! हे महाबाहो! हे जनार्दन आपको नमस्कार हो १७ आपके अंश और क्रोधसे उपजा और तमोगुण की प्रधानता वाला और अन्यगुणों के आवेशसे युत ऐसा मैं हूँ हे सर्व ब्यापिन्! हे देवेश! आपको नमस्कार हो १८ हे जगन्नाथ! यह पृथिवी भी आपही हैं और पानी, आकाश, अग्नि ये भी आपही हो और वायु, बुद्धि, मन ये भी आपही हो और रात्रिभी आपही हैं आपको नमस्कार हो १९ धर्म्म, यज्ञ, तप, सत्य, अहिंसा, शौच, कोमलता, क्षमा, दान, दया, लक्ष्मी, ब्रह्मचर्य्य ये सब आपही हैं २० अंगों सहित वेदभी आपही हो और वेद्य रूपभी आपही हो और वेदोंकेपारको गमन करनेवाले भी आपही हो हे ईश! उपवेद भी आपही हो और सर्व रूपभी आपही हो आपको प्रणामहो २१ हे अच्युत! हे चक्रपाणे! हे बामन! हे मीन मूर्त्ते! आपको बारंबार प्रणाम है लोकमें आप दयावाले हो इसलिये मेरे को पापरूपी बन्धसे हे केशव! रक्षित करो २२ जो ब्रह्महत्या से उपजाहुआ पाप मेरे शरीर में स्थितहुआ है तिसका नाशकरो मैं दग्धहुआ हूँ मैं नष्टहुआहूँ मैं बिना बिचार कर्म्म को करनेवाला हूँ हे नाथ! मेरे को

पवित्रकरो आपको बारंबार प्रणाम हो २३ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ऐसेमहात्मा शङ्करने जब बिष्णुकी स्तुति करी तब ब्रह्महत्या को दूरकरनेके लिये भगवान् बचन को कहते भये २४ हरिने कहा हे महेश्वर! मधुर शब्दोंवाली और ब्रह्महत्या को नाशनेवाली और शुभको देनेवाली और पुण्यको बढ़ानेवाली ऐसी इस मेरी बाणी को सुन २५ जो पवित्ररूप पूर्ब मण्डलमें मेरे अंशसे उत्पन्नहोनेवाला और अविनाशी और योगशायीनामसे बिख्यात प्रयागमें नित्य बसताहै २६ तिसके दाहने पैरसे निकसीहुई पापोंको हरनेवाली और शुभ ऐसी बरणानदी बिख्यातहै २७ और असिनामसे बिख्यात दूसरी नदी है ऐसे ये दोनों नदी लोकमें पूजनेके लायक होतीभई २८ तिनदोनों नदियों के बीचमें जो देश है वह योगशायी का क्षेत्र है और त्रिलोकी में श्रेष्ठ और सब पापोंको नाशनेवाला ऐसा तीर्थ है २९ तहां तैसीही पवित्र और बाराणासी नामसे बिख्यात ऐसी काशीपुरी है जिसमें हे ईश! बसनेवाले भोगी जनभी शिवलोक में प्राप्त होजाते हैं ३० और जहां नारियों की जीभ के शब्द करके और श्रेष्ठ ब्राह्मणोंके मुखसे वेदोंके शब्द करके ऊँचे स्वरको गुरु सुनके और बारंबार स्त्रियों को देखके हास्य से युक्त है ३१ और चौपटके मार्ग में चलतीहुई स्त्रियोंके मेहँदी से लालहुये पैरों को देखके जहां चन्द्रमा आश्चर्य मानता भया और कहता भया कि यह काशीपुरी स्थल पद्मिनी है ३२ और जहां

ऊँचे ऊँचे देवमन्दिर सन्ध्यासमय में चन्द्रमाके दर्शन को रोकलेतेहैं और दिनमें हालतीहुई और लम्बीपताकाओं से संयुक्त देवमन्दिर सूर्यके दर्शनको रोकते हैं ३३ और जहां चन्द्रमणिसे युक्तहुई भीतों में प्रतिबिम्बितहुये स्त्रियों के मुखरूपी कमलों में भ्रम से लोभितहुये भौंरे फूलों के बीचमें नहीं जाते हैं ३४ और जहां संमोहन के लिये और क्रीड़ा के लिये पराजित हुये मनुष्यों में परिश्रम नहीं है और जहां हेशंभो! जलकीक्रीड़ाकेलिये बावड़ी में प्राप्तहुई स्त्रियोंमें परिश्रमनहीं है ३५ और जहां बायु के बिना कोई भी पराये मंदिर को नहीं रोकता है और जहां अपने पतिके संग मैथुन समयके बिना स्त्रियों को कामदेव पीड़ित नहीं करता है ३६ और जहां हाथियों के पाश ग्रंथि है अर्थात् चोरों के नहीं और मद के झिरने में मदकानाशहै और जहां युवान अवस्था में मान और मद हाथियोंकेही है और मनुष्यों के नहीं ३७ और जहां प्रियदोष अर्थात् रात्रि है प्यारी जिन को ऐसे उल्लूपक्षीही अन्य मनुष्य नहीं और जहां तारागणों की अकुलीनपना है और मनुष्यों में नहीं औरजहांव्रतच्युतिपना मेघोंमेंही है और मनुष्यों में नहीं अर्थात् सब मनुष्य अपने २ धर्मोंमें तत्पर हैं ३८ और जहां ऐश्वर्य कर के लोभित और धूर्त्तों से परिवारित और चन्द्रमणि के गहनों से भूषित देहोंवाली तेरीतरह ऐसी वेश्याही है अन्यजन नहीं है हेशंकर! ३९ हे देव! ऐसी काशीपुरी में जहां महाश्रम है तहां

सबपापों को हरनेवाला और लोल नाम से विख्यात ऐसा सूर्य बसताहै ४० और जो दशाश्वमेधतीर्थ कहावै है तहां मेरे अंशवाला केशव भगवान् बसै है हे सुरश्रेष्ठ! तहां गमनकरके पापों से रहित होवेगा ४१ ऐसे गरुड़-ध्वज भगवान् के वचन को महादेव जी सुन औ शिर से नमस्कारकर पापों को दूरकरनेकेलिये वेगसे काशी-पुरी को गमन करते भये जैसे गरुड़ पीछे पवित्र और सुन्दर तीर्थोंवाली ४२ ऐसी काशी में जाके और दशा-श्वमेध तीर्थ सहित लोलनामक सूर्य के दर्शन कर और तहां तीर्थोंमें स्नानकर पापोंसेरहितहो महादेव केशव भगवान्को देखनेके लिये समीप गया ४३ तहां केशव भगवान् को देख और नमस्कारकर महादेव यह वचन कहता भया कि हे देव! आपके प्रसाद से ब्रह्म हत्याका नाशहुआ ४४ परन्तु हेदेवेश!यहकपाल अर्थात् खोपरी मेरे हाथसे नहीं छुटती सो मैं इसके कारणको नहीं जा-नता आप मेरे लिये कहने को योग्यहो ४५ पुलस्त्यजी बोले हेनारद!ऐसे महादेवके वचनको सुन केशव वाक्य कहनेलगे कि हेपुत्र! जो इसमें कारणहै वह सम्पूर्ण तेरे को कहूंहूँ ४६ जो मेरे अगाड़ी यह दिव्य और कमलों करके युत और पवित्र और देवगन्धर्वोंसे पूजित ऐसा ह्रदरूपी तीर्थ है ४७ इस तीर्थ में हे महादेव! स्नानकर स्नान करतेही कपाल छुटजावेगा ४८ पीछे हे रुद्र!क-पाली नामसे विख्यात होवेगा और कपालमोचन नाम से विख्यात यहतीर्थ कहावेगा ४९ पुलस्त्यजी बोले

हे नारद! केशवके वचनको सुनके महादेवजी तिस कपा-लमोचन तीर्थमें बिधिसे स्नान करनेलगे ५० सो स्नान करतेही महादेवजी के हाथसे वह कपाल छुटगया ऐसे भगवान्‌के प्रसादसे तीर्थों में उत्तम कपालमोचन तीर्थ हुआहै ५१ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांपुलस्त्यनारदसंवादे हरललितोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

## चौथा अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले—हेनारद! ऐसे महादेवजी कपाली हुये हैं और इसी कारण से दक्षप्रजापतिने महादेवको यज्ञमें निमंत्रित नहीं किया १ इसी अन्तरमें सतीजी के दर्शन को गौतमकी पुत्री जया सुन्दर कन्दरावाले मन्दराचल पर्वत पै प्राप्तभई २ तब आवतीहुई जया को देखके सती कहनेलगीं किसवास्ते बिजयानागा जयन्ती अपराजिता ये नहींआई ३ जया सतीके बचनको सुन कहनेलगी कि निमंत्रितकरी सब मातामह दक्षकी यज्ञमें गईं ४ पिता गौतमजी और माता अहल्याके साथ और गमनके उत्साहवाली मैं तुमको देखने के लिये आईहूं ५ सो आप और महादेवजी क्या गमन नहीं करोगे और आश्चर्यहै कि पिताकी बुलाई हुई नहीं चलोगी ६ सब ऋषि और ऋषियोंकी स्त्रियें और देवते और मेरी माताकी बहनोंका स्वामी चन्द्रमाभी अपनी स्त्रियों सहित यज्ञमें प्राप्त भयाहै ७ और चौ-दह भुवनमें चर और अचर जो प्राणीहैं उन्हें सबको

पैने बाणोंकी बर्षा करनेलगा जैसे बर्षा ऋतु में बादल २७ पीछे बाण और धनुष्को धारण करनेवाले दोनों आपसमें युद्ध करने से केसुओंकी तरह रुधिर से सींचे हुये अंगोंवाले शोभित होनेलगे २८ पीछे बीरभद्रने उत्तम अस्त्रों करके बेगसे और हठसे धर्मराजको जीत लिया जब पराङ्मुख और बिगड़े हुये मनवाला ऐसा धर्मराज होगया उसी वक्त हे नारद! वह बीरभद्र यज्ञ में प्रबेश करताभया २९ पीछे हे नारद! यज्ञमें प्रबेश करते हुये वीरभद्रको देखके तत्काल हथियारोंको धारण करने वाले देवते उठते भये ३० महाभागों वाले आठ बसु और दारुणरूपी नवग्रह और इन्द्र आदि देवते और बारह आदित्य और ग्यारहरुद्र और बिश्वेदेवते साध्य और सिद्ध, गन्धर्व, दिव्यसर्प, यक्ष, किन्नर और भूत खग अर्थात् आकाशचारी और चक्र को धारण करनेवाले और सूर्यबंश में उत्पन्न हुये अनेक बिख्यात राजे और सोमबंशसे उत्पन्नहुये राजे और भोजकीर्ति राजा और दैत्य दानव और बाकी जो अन्य यज्ञमें आयेथे वे सब अपने अपने हथियारोंको धारणकर २ भयानकरूपवाले बीरभद्रके सम्मुख दौड़नेलगे ३१-३४ तब आवतेहुये तिन्हों को देख धनुष्बाणको धारण करनेवाला बीरभद्र भी बाणोंसे सबोंके सम्मुख दौड़ा ३५ पीछे वे सब बीरभद्रके लिये अस्त्रोंकी बर्षा करनेलगे तब बीरभद्र उत्तम अस्त्रों से तिन्होंको छेदित और भेदित करनेलगा। ३६ वीरभद्रसे बाण और शस्त्रों करके निरन्तर मरते

और कटते हुये सब देवते आदि भागते भये ३७ पीछे बीरभद्र बिस्तृत रूपी यज्ञके मध्यमें प्राप्त हुआ जहां ऋषिजन द्रव्यको अग्नि में होम रहे थे ३८ तब सिंह के मुख को धारण करनेवाले बीरभद्र को देख के हवन को त्याग भयभीत हुये सब ऋषि बिष्णु की शरण में गये ३९ पीछे पीड़ित और तप्तमन वाले ऋषियों को देखके बिष्णु भगवान् कहनेलगे कि भय मतकरो ऐसा कहके उत्तम शस्त्रों को धारणकर खड़े हुये ४० पीछे शार्ङ्ग नामवाले धनुष् को नवाय और तिसपै कवच को काटनेवाले और सर्प्पोंकेसमान उपमावाले ऐसे बाणों को चढ़ाय वीरभद्रके लिये छोड़नेलगे ४१ वे बिष्णु के अमोघरूपी बाण दिशाओं को काटते हुये बीरभद्र के शरीरमेंप्राप्तहो पृथ्वीपर गिरतेभये जैसे नास्तिकपुरुष से याचक ४२ तब अमोघरूपी बाणों को फलसे रहित देख बिष्णु भगवान् दिव्य अस्त्रों करके बीरभद्र को आच्छादित करनेको उद्यत हुये ४३ बिष्णु के फेंके हुये अस्त्रों को बीरभद्र त्रिशूल गदा बाण इन्हों से निवारित करताभया ४४ तब निष्फलरूपी अस्त्रोंको देखके बिष्णु भगवान् गदाको फेंकतेभये तब बीरभद्र त्रिशूलसे गदा को काट पृथ्वी में गिराता भया ४५ निष्फल हुई तिस गदाको देख बिष्णु वीरभद्रपर हलको फेंकते भये तब बीरभद्र गदा करके हलको तोड़ पृथ्वी में गिराता भया ४६ पीछे क्रोधसे व्याप्तहुये बिष्णु बीरभद्र के लिये मुसलको फेंकतेभये पीछे नष्ट हुये मुसलको और निवा-

रित किये हलको देख बीरभद्र के लिये क्रोध से विष्णु सुदर्शनचक्र को फेंकतेभये ४७ तब सौ सूर्यों के समान कान्तिवाले सुदर्शनचक्र को देख बीरभद्र त्रिशूल को त्याग सुदर्शनचक्रको मुखमें निगलताभया जैसे मच्छ के शरीरको धारण करनेवाले विष्णु मधुदैत्य को ४८ जब बीरभद्र ने चक्र निगल लिया तब क्रोध से अति रक्त और कृष्ण और सुन्दर ऐसे नेत्रोंवाले विष्णु बीरभद्र के समीप में प्राप्तहो और कौलीभर अधर उठाय बेगसे पृथ्वी में गेर पीसनेलगे ४९ विष्णुकी बाहू और गोड़ों के बेग से पीसाहुआ बीरभद्र के मुखसे लोहूकी बूकके संग सुदर्शनचक्र मुखसे बाहर निकसा ५० पीछे मुखसे निकसे हुये चक्रको देख और ग्रहण करि विष्णु भगवान् बीरभद्रको छोड़तेभये ५१ विष्णु भगवान् से छूटाहुआ बीरभद्र महादेवजी के समीप में गमन कर विष्णु के सकाशसे अपने पराजय को कहताभया ५२ फिर लोहू से भीजाहुआ व सर्प के समान श्वास लेताहुआ ऐसे बीरभद्र को देख महादेव क्रोध करते भये ५३ फिर क्रोध से युक्तहुये महादेवजी ने शस्त्रों को धारण करनेवाला बीरभद्र को पूर्वोद्दिष्ट स्थान में स्थापितकर और बीरभद्र व भद्रकाली को शिक्षा दे क्रोध से लाल नेत्रोंवाले और जटाको धारण करनेवाले व नाशको करनेवाले व त्रिशूल को धारण करने वाले ऐसे महादेवजी यज्ञस्थानमें प्रवेश करतेभये ५४ त्रिशूलको हाथमें धारण करनेवाले व देवताओं में

श्रेष्ठ ऐसे महादेवजी जब दक्षप्रजापतिकी यज्ञमें प्रवेश करनेलगे तब सब ऋषियों को अति भयहुआ ५५ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषार्थापुलस्त्यनारदसंवादे हरललितोनामचतुर्थोऽध्यायः४ ॥

## पांचवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! क्रोधसे लाल नेत्रोंवाले महादेवजीको विष्णु भगवान् देखके अपने स्थानको छोड़ कुब्जरूप आश्रममें अन्तर्द्धान होके स्थितहुये १ और आठों बसु महादेवजी को देख बेगसे भागतेभये तहां नदियों में श्रेष्ठ और सीता नामसे विख्यात ऐसी सरस्वती नदी होतीभई २ और तीन नेत्रोंवाले और बैलहै ध्वजामें जिनके ऐसे ग्यारहरुद्र महादेवजीको देखके किस दिशामें गमनकरें ऐसे कहकर महादेवजी में लय होतेभये ३ और विश्वेदेवा और दोनों अश्विनी-कुमार और साध्य और अग्नि और सूर्य ये सब पुरोडास को खानेवाले होके महादेवजीको देख भागते भये ४ और नक्षत्रों के समूह करके सहित चन्द्रमा रात्रिको दिखाता हुआ ऊपरको उछल और आकाश में प्राप्त हो अपने स्थान में स्थितहुआ ५ और शतरुद्रियस्तोत्र के जपनेवाले कश्यप आदि ऋषि पुष्पाञ्जलियों को ग्रहणकर नम्ररूपहो सम्यक् प्रकार से स्थित रहे ६ और हे नारद! अतिबलवाले महादेवको बारंबार देख दक्षप्रजापतिकी भार्या इन्द्रादि देवतों के सम्मुख अत्यन्त विलाप करनेलगी ७ पीछे क्रोधसे व्याप्त हुये

महादेवने तलप्रहारों करके बहुतसे देवते पातितकरे ८ और बहुतसे पैरके प्रहारों से और बहुत से त्रिशूल करके और बहुतसे हस्तीकी अग्नि करके देवता आदि नाशको प्राप्तहुये पीछे देवतों और दैत्यों के मारने वाले महादेवको देख क्रोधसे बाहुओं को पसार पूषादेव महादेवके सम्मुख दौड़ा ९-१० आवतेहुये तिस पूषाको देख महादेवजी बाहुओं से पूषाके दोनों बाहुओं को एक हाथसे ग्रहण करतेभये ११ दोनों हाथोंको ग्रहणकिये पूषा के हाथोंकी अंगुलियों से चारोंतरफ लोहूकी धारा पड़नेलगी १२ पीछे अति वेग करके पूषादेवको निरंतर भ्रमातेभये जैसे बालक मृगको सिंह १३ हे नारद! अति बेग करके भ्रमाये हुये पूषादेव के टूटी हुई नस और बंधनोंवाले और छोटे ऐसे दोनों हाथ होगये १४ तब रुधिरसे भीजेहुये सब अंगोंवाला पूषाको महादेव जी देखके छोड़देते भये और २ जगह गमन करतेभये १५ पीछे दांतोंको दिखाता हुआ और विशेष करके हँसता हुआ पूषादेव बारंबार महादेवजी से कहने लगा कि हे कपालिन्! यहां आ यहां आ कहांजाता है १६ तब क्रोध से प्राप्तहुये महादेवजीने बेग करके मुक्का से पूषाके दांत तोड़ पृथ्वी में गिरादिये १७ तब टूटेहुये दांतोंवाला और लोहूसे भीजेहुये मुखवाला और संज्ञा से रहित ऐसा पूषा पृथ्वी में पड़ा जैसे वज्रसे हतहुआ पर्वत १८ पीछे रुधिरसे भीजे हुये और पतित हुये पूषाको देखके भगदेवता घोररूप नेत्रों करके महादेव

को देखनेलगा १९ तब क्रोधको प्राप्तहुये महादेव जी तलसे नेत्रों को फोड़ और सब देवताओं को क्षोभकरा भगको पृथ्वीमें गिरातेभये २० पीछे सब आदित्य इन्द्र को अगाड़ी कर मरुद्गण और अग्नियों से सहित होके भयसे दशदिशाओं को गमन करते भये २१ जब सब देवते चलेगये तब हे नारद! प्रह्लादआदि सब दैत्य महादेवजी को प्रणामकर अञ्जलीबांधके स्थितहुये २२ पीछे तिस यज्ञस्थानको और सब देवते और दैत्यों को दग्ध करनेको महादेवजी देखनेलगे २३ तब किननेक देवते और दैत्य अन्तर्हित होते भये और कितनेक प्रणाम करते भये और कितनेक भागते भये और कितनेक महादेवजीको देख भयसे मरतेभये २४ पीछे जो यज्ञमें तीन अग्नि स्थित थे वे महादेवजीको देखने लगे परन्तु महादेवजीसे देखहुये अग्नि तत्काल नष्टहोतेभये २५ जब अग्नि का नाश होगया तब यज्ञदेव दिव्य शरीर वाला और शिथिल गतिवाला और दक्षिणा से सहित ऐसा मृगबन आकाशमें भागता भया २६ पीछे तिसके कालरूपी महादेवजी धनुष नवाय और पाशुपत नामक शरको चढ़ाय तिसके पश्चात्को भागे २७ अर्थात् आधे शरीर से यज्ञस्थान में जटाधर नाम से स्थितरहे और आधेशरीर से कालरूपी नामसे आकाशमें उड़े २८ इतनी कथासुन नारद ने पुलस्त्यजी से पूछा कि हे महाराज! आपने आकाश में उड़ने वाला कालरूपी महादेव कहा तिसके सब लक्षण और स्वरूप मेरे लिये

कहनेको योग्यहौ २९ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! काल रूपी महादेवजी के स्वरूपको कहूंगा संसार के कल्याणकी इच्छाकरने वाले जिससे हे मुनिश्रेष्ठ! आकाश ब्याप्तहुआ है ३० जहां अश्विनी भरणी कृत्तिकाका एकअंश यह सब मेषराशि है और मङ्गलका क्षेत्रहै यह कालरूपी महादेवजीका शिर कहाता है ३१ और हे नारद! कृत्तिकाके तीन अंश और रोहिणी और मृगशिर के दो अंशोंतक जो शुक्रकास्थान बृषराशिहै यह काल रूपी महादेवजीका मुख कहाजाता है ३२ और मृगशिरके पिछले दो अंश और आर्द्रा और पुनर्बसु के तीन अंशों तक बुधका स्थान मिथुनराशि है यह काल रूपी महादेवजीके भुजाकहे हैं ३३ और पुनर्बसुका एक अंश पुष्य और आश्लेषा तक चन्द्रमा का स्थान कर्क राशि है यह कालरूपी महादेवजी के दोनों पांसू कही हैं ३४ मघा और पूर्बाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी का एक अंशतक सूर्यकाक्षेत्र सिंहराशि है यहकालरूपी महादेवजी का हृदय कहाता है ३५ उत्तराफाल्गुनी के तीन अंश और हस्त और आधा चित्रातक बुध का दूसरा स्थान कन्याराशि है यह कालरूपी महादेवजी का उदर कहा है ३६ चित्रा के दो अंश और स्वाति और विशाखाके तीन अंशों तक शुक्र का दूसरा स्थान तुलाराशिहै ३७ यहकालरूपी परमेश्वर की नाभिकही है और विशाखा का एकअंश और अनुराधा और ज्येष्ठा तक मङ्गलका दूसरा स्थान बृश्चिक राशि है यह काल-

रूपी महादेवजीका लिङ्गकहाहै ३८ मूल पूर्वाषाढ़ उत्तराषाढ़का एकअंशतक बृहस्पतिजी का दूसरा स्थान धनराशि है यह कालरूपी महादेवजी के दोनों ऊरूकहाते हैं ३९ उत्तराषाढ़के तीन अंश श्रवण और धनिष्ठाके दो अंशोंतक शनिका दूसरा स्थान मकर राशि है यह कालरूपी महादेवजी के दोनों गोड़े कहाते हैं ४० आधा धनिष्ठा और शतभिषा और पूर्वाभाद्रपद के तीन अंशों तक शनैश्चर का स्थान कुंभराशि है यह कालरूपी महादेवजीकी दोनों जंघा कही हैं ४१ पूर्वाभाद्रपदका एक अंश और उत्तराभाद्रपद और रेवती तक बृहस्पतिका दूसरा स्थान मीन राशिहै यह कालरूपी महादेवजी के दोनों पैर कहे हैं ४२ ऐसे कालरूप को महादेवजी धारणकर बाणोंकरके यक्षको मारनेलगे तब बिद्ध हुआ और पीड़ायुक्त बुद्धिवाला और तारागणोंसे युक्त अंगोंवाला ऐसा यक्ष आकाश में स्थित रहा ४३ इतनी कथा सुन नारदने कहा हे ब्रह्मन्! आपने बारह राशि मेरेलिये कहीं सो तिन राशियोंके बिशेष करके लक्षण और स्वरूपको कहिये ४४ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! राशियोंका स्वरूप तेरे लिये मैं कहताहूं सुन जैसे बिचरतीहैं और जिस स्थानमें बसती हैं ४५ अन्य रत्नोंकी खान इन आदियोंमें नवीन हरीदूबसे आच्छादित हुई पृथ्वीके चारोंतरफ इन सबोंमें मेषका संचार स्थानहै ४६ और खिलेहुये पुष्पों में और पानी से निकसीहुई पृथ्वी में और बकरा भेड़ आदि धनों में

मेढ़ा के समान. मूर्त्तिवाला मेषराशि नित्य बिचरता है ४७ बृषराशि गाय बैल आदि समूह में बिचरता है और किसानकी पृथ्वी में बसता है ४८ स्त्री पुरुष के समान रूप वाला और शय्यासन में स्थान वाला और बीणा और बाजों को धारण करनेवाला ऐसा मिथुनराशि गीत नाचना शिल्प इन कर्मों के जानने वालों में बिचरता है ४९ और क्रीड़ा में नित्य आसक्त रहता है और दो आत्मा वाला है और कल्याणरूप है ऐसा मिथुनराशि कहा है ५० कर्कराके समान जलमें स्थित होने वाला और खेत बावड़ी पानी से निकसी पृथ्वी एकांत स्थान पृथ्वी इन्होंमें बसनेवाला ऐसाकर्क राशिहै ५१ सिंहराशि पर्वत बन किला खंदक व्याधपल्ली अर्थात् पारधियोंके स्थान गह्वर स्थान गुहा इन्हों में ब-सताहै ५२ ब्रीहिसंज्ञक अन्न और दीपकको हाथमेंलेने वाली औरभावपै आरूढ़ कन्याराशि स्त्रियोंके रतिस्थान में बिचरता है और नड्वल स्थानमें अर्थात् जलप्राय देशमें बसताहै ५३ ताखड़ी को हाथमें लेनेवाला तुला राशिरूपी पुरुष बाजार और दूकानोंमें बिचरताहै और नगर मार्ग और शाला इन्होंमें बसता है ५४ बिच्छूके समान आकृतिवाला बृश्चिकराशि छिद्र और बांवी में बिचरताहै और बिष गोबर कीड़ा सर्प पत्थर इन आदि में बसता है ५५ अश्वके समान जंघावाला और प्रका-शित और धनुषको धारण करनेवाला और अश्वकर्म और शूरवीरके अस्त्र इन्हों के जानने वाला और वीर

ऐसा धन राशिहै यह हस्ती रथ आदि में बसता है ५६ और बैलके समान कन्धे और नेत्रों वाला और मृग के समान मुखवाला मकर नामवाला ऐसा मकरराशि नदी में बिचरता है और समुद्रमें बसताहै ५७ पुरुष के कन्धेपै एक खाली कुम्भ और एक जलसे पूर्ण कुम्भ ऐसा कुम्भ राशिहै यह जुवाकी शाला में बिचरता है और चतुर मनुष्यों के स्थानों में बसता है ५८ दोमच्छियों वाला मीन राशिहै यह तीर्थ और समुद्रमें बिचरता है और पवित्र देश देव और ब्राह्मणके स्थान में बसताहै ५९ हे नारद! मेष आदि राशियों के लक्षण तेरे लिये मैंने कहे तुझको किसी के भी आगे नहीं कहने योग्य हैं यह आख्यान गुप्त करने योग्य है और पुरातन है ६० और हे नारद! ऐसे यक्षको महादेवजी मथतेभये यह पवित्र और मनुष्यों के पापों को हरनेवाला और कल्याणरूप और परमार्थरूप ऐसा आख्यान मैंने तेरे लिये प्रकाशित किया ६१ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांहरलालितोनामपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

## छठवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजीबोले हे नारद! दिव्य शरीरकोधारण करने वाला और बहृच ब्राह्मण ऐसा धर्म हुआ तिसके संकाशसे अहिंसा भार्य्यामें १ हरि, कृष्ण, नारायण, नर इन नामोंवाले चार पुत्र होते भये तिन्हों में हरि और कृष्ण ये दोनों योगाभ्यासमें प्रीतिवाले होतेभये २ और नरनारायण ये दोनों जगत्के हित की कामनाके वास्ते

प्रालेय पर्वत के समीपमें ३ बद्रिकाश्रम तीर्थ में प्राप्तहो गङ्गाजी के तटपै परब्रह्मको जपते हुये ४ उग्र तप को करनेलगे पीछे इन दोनोंने हे नारद! तपकरके यह चराचर जगत् तापित किया क्षोभको प्राप्तहुआ ५ पीछे इन दोनों के तपसे तापित हुआ इन्द्र क्षोभ को प्राप्त होकै रम्भा आदि अप्सराओं को और बसन्तऋतु करके सहित कामदेवको बद्रिकाश्रम की तरफ भेजता भया ६ पीछे कन्दर्प के प्रति ऐसे कहताभया कि हे महायुध! अपने सहचर बसन्तऋतु के संग होकै अपनी लीलाकर ७ पीछे बसन्तऋतु और कामदेव और अप्सरा ये सब बद्रिकाश्रम में प्राप्तहो इच्छापूर्वक क्रीड़ा करने लगे ८ और जब बसन्तऋतु प्राप्तहुआ तब अग्नि के समान कान्तिवाले और पत्तों से रहित और पृथ्वीको शोभित करनेवाले ऐसे केसू होनेलगे ९ और हस्तीरूपी शिशिर ऋतुको नखों से बिदारण करताहुआ की तरह बसन्त रूप सिंह प्राप्तहुआ १० और कहनेलगा कि मैंने अपने तेजसे शिशिरऋतु जीतलिया है ऐसे बसन्तऋतु में ११ अनेक प्रकारके बृक्षों से युत बन पुष्पितहोके शोभित होनेलगे जैसे राजाओं के पुत्रों के सुबर्ण के गहने १२ तिन्हों के पीछे नीपसंज्ञक कदम्ब किङ्करोंके समानहोके शोभित होनेलगे जैसे स्वामिसे लब्ध मानवाले नौकर राजपुत्रोंके प्रति होते हैं १३ तैसे पीछे लालरङ्गसे युक्त अशोकआदि बृक्षोंकीबेल अति पुष्पितहोके प्रकाशित होनेलगीं जैसे राजा के संग्राममें लोहूसे भीजे हुये नौ-

कर वसते हैं १४ तैसे पीछे अनेक प्रकारके बृक्षोंकी मं-
जरी तिस बनमें प्रकाशित होनेलगीं जैसे मित्रके आ-
गमनमें सज्जन पुरुष रोमावलियोंसे आवृत होते हैं
तैसे १५ और नदीके कूलोंमें मंजरियों करके आवृत
और हमारे सदृश अन्य कौन बृक्षहै ऐसे अँगुली करके
कहनेकी कामनावाले १६ बेतवृक्ष प्रकाशित होने लगे
पीछे लाल अशोक बृक्षरूपी हाथोंवाली और केसूके
फूलोंरूप सूक्ष्म शरीरवाली और नीले अशोक वृक्ष
रूप चोटी वाली और श्यामरंग वाली और प्रकाशित
कमलके समान मुखवाली १७ और कमलके समान
नेत्रोंवाली और बिल्वफल के समान कुचोंवाली और
फूलेहुये कुन्दरूपी दांतोंवाली और मञ्जरी रूपी हाथोंसे
शोभित १८ और जीया पोता आदि रूपी अधर ओष्ठ
वाली और सुन्दर सिंहरूपी नखान्तरोंवाली और पुरुष
रूपी कोकिलाके शब्द सरीखे शब्द वाली और दिव्य
और अङ्कोलरूप बस्त्रों वाली १९ और मयूरों के पां-
खरूपी कलापवाली और सारस के शब्द रूपी पाजे-
बों वाली और बंशरूप जीभवाली और मदवाले हंसों
के चलने समान चलनेवाली २० और जीया पोता
आदि बृक्षों के संगरूप रोमराजी से बिराजित ऐसी ब-
सन्तऋतुकी शोभा हे नारद! बद्रिकाश्रममें प्राप्तभई २१
तब बदले हुये रूप वाले आश्रमको नारायण देख पीछे
सबदिशाओं को चारोंतर्फसे देखपीछे नारायण अनङ्गको
देखतेभये २२ नारदने पूंछा हे ब्रह्मर्षे! यह अनङ्ग कौनहै

जिसको बद्रिकाश्रम में जगत्के स्वामी नारायण देखते भये २३ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! आनन्दका पुत्र जो कन्दर्प कामदेव नाम से कहा जाताथा वह जब महादेव जीने दग्धकिया तबसे अनङ्ग कहाता है २४ नारद ने पूछा हे स्वामिन्! किसवास्ते और किसकारणकरके महादेवजीने कामदेव दग्धकिया यह कहने को मेरे लिये आप योग्यहो २५ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! जब दक्षप्रजापतिकी पुत्री सती मरगई तब दक्षप्रजापति की यज्ञका बिनाशकर महादेव जी बिचरते भये २६ तब भार्या से रहित बिचरते हुये महादेवजी को देख फूलहैं शस्त्रजिसके ऐसा कामदेव उन्मादरूपी अस्त्रकरके ताड़ित करता भया २७ तब उन्मादरूप बाणसे ताड़ित हुये महादेव जी मदोन्मत्त होकै अनेक जोहड़ों में और बनों में बिचरने लगे २८ और उन्माद से ताड़ित महादेवजी सती का स्मरण करते हुये सुखको नहीं प्राप्तहुये जैसे बाणसे बींधाहुआ हस्ती २९ पीछे हेनारद! महादेवजी यमुना नदी में प्राप्तभये जब महादेव जी जल में गोता मारनेलगे तब यमुनाका जल दग्ध होकै कृष्णभाव को प्राप्तहुआ ३० तबसे लगायत भिन्नहुये सुरमाके समान कांतिवाला और पुण्यतीर्थों का आस्पद अर्थात् स्थान और पृथ्वीका केशपाश की तरह ऐसा यमुना का जल होरहा है ३१ पीछे पवित्र नदियों में और तालाब छोटीनदी और रमणीक नदी का किनारा और बावड़ी और नलिनी ३२ और रमणीक पर्वत और बन और

पर्वत का शिखर इन्हों में इच्छापूर्वक बिचरते हुये महा-
देवजी सुखको नहीं प्राप्तहोतेभये ३३ हे देवर्षे! क्षणभ-
रमें गानकरै और चणभरमें रुदन करे और चणभरमें
दक्षकी पुत्री सती का ध्यान करै ३४ पीछे क्षणभर
में ध्यानकरके शयनकरै और स्वप्नमें दक्षकी कन्या को
देखके ३५ महादेवजी ऐसे कहे कि हे प्रिये! तू यहां ठहर
और हे प्रिये! तू दया से रहितहोके मेरे को त्यागती है
और हे सुन्दरि! तेरे से रहित मुझे कामदेवकी अग्निने
दग्ध कर दिया है ३६ हे सती! कोप को प्राप्तहुई तू मेरे
पै कोपमतकरै और हे सुन्दरि! तेरे पैरोंकी प्रणाम से नम्र
रूपहुये मुझको रक्षितकर हे प्रिये! तू नित्य सुनीजाती
है देखीजाती है और बंदित कीजाती है और आलिं-
गित कीजाती है परन्तु किसवास्ते नहीं बोलती ३७
और बिलाप करतेहुये अपने मित्र को देखके किसके
दया नहीं उपजती है और बिशेष करके तू पतिके लिये
दयासे हीन होरही है ३८ और हे कृशोदरी! तेरे कहे
हुये बचनोंका स्मरण करके तेरे बिना मैं जीऊंगा नहीं
इसवास्ते हे सुन्दर नेत्रोंवाली! यहां प्राप्त होके ३९
कामसे सन्तप्तरूप होतेहुये मेरेसे मिलाप कर अन्यथा
मेरा ताप नष्ट नहीं होवेगा यह सत्यसे मैं सौगंद खाता
हूं ४० ऐसे स्वप्नके अन्तमें बिलापकर उसी समय
जागउठे पीछे बनमें ऊंचे स्वरसे वारंवार रोनेलगे ४१
तब अतिबिलापसे पुकारते हुये महादेवजीको समीपमें
देख कामदेव अपने धनुष्को नवाय सन्तापनास्त्ररूपी

बाण करके ४२ बींधताभया तब बींधे हुये और अति सन्तापसे दुःखित हुये ऐसे महादेवजी होते भये पीछे सम्पूर्ण जगत्को फुत्कार अर्थात् फूंकारकर जगत्को दुःखित करनेलगे ४३ पीछे फिर महादेवजीको बिजृंभणास्त्रसे कामदेव बींधताभया तब बींधेहुये महादेवजी चारोंतरफ को भ्रम के कुबेरके पांचालिक नामवाले पुत्र को देखतेभये ४४ तब तिस के समीपमें जा महादेवजी कहनेलगे कि हे भ्राताके पुत्र! तेरे अगाड़ी मैं जो बचन कहूं तिसको तू कर क्योंकि तू अनन्त बिक्रमवाला है ४५ पांचालिकने कहा हे नाथ! जो मेरे से आप कहोगे वह करूंगा और देवताओंके समूहसे भी नहीं होनेके योग्यहो वह कार्य मेरेसे कहो हे ईश! मैं आपकी भक्तिसे युत दासहूं ४६ महादेवजी कहने लगे हे बरद! जबसे सती मरगई है तबसे कामाग्निसे दग्ध हुआ मैं बिजृंभण और उन्मादरूपी शरोंकरके भिन्न हुआ धृति और रति सुख इन्होंको नहीं प्राप्त हुआहूं सो हे पुत्र! जृंभण ताप उन्माद ४७ इन्होंको दूर करने वास्ते तेरे बिना अन्य कोई पुरुष नहीं है इसवास्ते इन्होंको तू ग्रहणकर ४८ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ऐसे महादेवजी के बचनको सुन बिजृंभणादि अस्त्रोंको यक्ष ग्रहण करता हुआ तब महादेवजी आनंदित होके ४९ बचन कहने लगे हे पुत्र! जो तैंने दुर्द्धररूप बिजृंभण आदि धारण किये हैं इसवास्ते लोकमें हास्यकारिरूपी बर तेरेलिये देता हूं ५० और जो वृद्ध बालक युवा व नारी तेरेको चैत्रके

महीनेमें देखेगा व स्पर्श करेगा व भक्तिसे पूजेगा वे सब तिसीकालमें उन्मादको धारण करेंगे ५१ अर्थात् गाने लगेंगे और नाचने लगेंगे और रमण करेंगे और यत्न से बाजोंकोभी बजाने लगेंगे और तेरे अगाड़ी हास्य रूप बचनसे युक्त मनुष्य होवेंगे ५२ और मेरेही नाम से संसारमें बिख्यात और पूज्य और मेरे प्रसाद से अन्य मनुष्योंके लिये बरोंका देनेवाला ऐसा तू होवेगा ५३ ऐसे महादेवजीके बचनको सुन पांचालिक केश नामवाला यक्ष बेगसे सब देशोंमें गमन करता हुआ कालंजर पर्वतके उत्तर भागमें और हिमवान् पर्वतके दक्षिणभागमें जो पवित्रदेशहै ५४ तिस देशमें स्थित हुआ महादेवजी के प्रसादसे पूजाको प्राप्त होता है और जब यह यक्ष चलागया तब महादेवजी बिंध्या-चलमें प्राप्तभये ५५ पीछे कामदेव तहां जाके महादेव जीको देख प्रहार करनेके लिये सम्मुख चला ५६ तब कामदेवसे प्रेरितहुये महादेव जहां पत्नियों सहित ऋषि जन बास करतेथे ऐसे घोरकाष्ठके बनमें चलेगये ५७ तब महादेवजी को देख सब ऋषि प्रणाम करनेलगे पीछे सब मुनियोंसे महादेवजी कहनेलगे कि मेरेलिये भिक्षाका दानकरो ५८ तब मौनको धारणकर सब मुनि स्थित हुये पीछे महादेवजी तिन पवित्ररूप आश्रमों में भ्रमतेभये ५९ पीछे प्रविष्टहुये महादेवजी को देख पतिव्रता धर्म्मवाली अरुंधती और अनसूया इन दोनों के बिना ६० भार्गव और आत्रेयवंशके ऋषियों की

स्त्रियां लोभको प्राप्तभईं तब जहां जहां महादेवजी गमन करें ६१ तहां तहां मदसे बिह्वलित इंद्रियोंवाली सब स्त्रियां भी गमन करनेलगीं अर्थात् शून्यरूप आश्रमोंको त्यागके मुनियोंकी स्त्रियां कामार्त्त ६२ महादेवजीके संग होतीभईं जैसे मत्तहुये हस्ती के संग बहुतसी हस्तिनियां पीछे हे नारद! तब भृगुबंशके और आंगिरसबंशके ऋषि ६३ क्रोधसे व्याप्तहो कहनेलगे कि इस महादेवका लिंग पृथ्वीमें गिरे तब महादेवका लिंग पृथ्वीको बिदारण करताहुआ पड़ा ६४ तब त्रिशूलको धारण करनेवाले महादेवजी अन्तर्द्धान होगये तब पृथ्वीतलको भेदन करके ६५ लिंग रसातल में प्रवेश कर ब्रह्मांडको ऊर्ध्वभाग से भेदन करता भया तब पृथ्वी सब पर्बत सब नदियां सब बृक्ष चलायमान होनेलगे ६६ और पाताललोकके भी स्थावर जंगम सब क्षोभको प्राप्तभये ऐसे क्षुभित हुये सबों को देख ब्रह्माजी ६७ बिष्णुको देखनेके लिये क्षीरसमुद्रमें गये तहां बिष्णु भगवान्को देखकर और भक्तिसे नमस्कार कर ६८ ब्रह्माजी कहनेलगे हे देव! ये सब भुवन किस वास्ते क्षुभित हुये तब बिष्णु भगवान् कहने लगे कि हे ब्रह्मन्! महर्षियोंने महादेव का लिंग गिरादिया ६९ तिसके भारसे पीड़ित सब लोकलोकांतर चलायमान होरहेहैं पीछे इस अद्भुत बचनको सुन ब्रह्माजी कहने लगे ७० कि हे देवेश! जहां वह लिंगहै तहां गमन करना उचितहै तब ब्रह्माजी और बिष्णु ७१ जिसजगह

में वह लिंग स्थित था तहां दोनोंगये पीछे अनन्तरूप वाले तिस लिंगको देख आश्चर्यसे गरुड़पै सवार हो ७२ पातालमें प्रवेश करतेभये और ब्रह्माजी पद्म बिमानमें स्थितहो आकाशमार्ग को चढ़े ७३ जब आकाशमें ब्रह्माजी लिंगके अन्तको नहीं प्राप्त भये पीछे विष्णुभी पृथ्वी के नीचे सात लोकोंतक गमनकर ७४ जब लिंगके अन्तको नहीं प्राप्तहुये तब तिसी देशमें फिर आके प्राप्त होगये पीछे विष्णु और ब्रह्मा ये दोनों महादेवजीके लिंगको प्राप्तहो ७५ अंजली बांध महादेवजीकी स्तुति करने लगे ७६ अब हरि भगवान् और ब्रह्माजी स्तुति करते हैं हे शूल को हाथ में धारण करने वाले! आपको नमस्कार है हे बृषभध्वज! आपको नमस्कार है हे जीमूतबाहन! आपको नमस्कार है हे कवे! आपको नमस्कारहै हे शर्व! आपको नमस्कार है हे त्र्यम्बक! आपको नमस्कार है ७७ हे शङ्कर! आपको नमस्कार है हे महेश्वर! आपको नमस्कार है हे हर! आपको नमस्कारहै हेईशान! आपको नमस्कारहै हे सुबर्णाक्ष! आपको नमस्कारहै हे बृषाकपे! आपको नमस्कारहै और दक्षकी यज्ञको नाशनेवाले आपको नमस्कारहै हे काल! आपको नमस्कारहै हे रुद्र! आपको नमस्कारहै ७८ और हे परमेश्वर! इस जगत्के आपही आदि हैं और आपही मध्यहैं और आपही अन्तहैं और हे भगवन्! आपही सर्वगत हैं सो आपको नमस्कार है ७९ पुलस्त्य जी बोले हे नारद! तिस दारु वनमें ऐसे स्तुति किये महा-

देवजी स्वरूपको धारणकर ब्रह्मा बिष्णु से यह बचन कहतेभये ८० कि हे देवताओं के नाथो ! कामसे तापित शरीरवाला और मर्यादाको छोड़नेवाला और निरन्तर अस्वस्थ ऐसे मेरेको किस कारणसे स्तुति करतेहो ८१ ब्रह्मा बिष्णु कहनेलगे कि हे शङ्कर ! आपका पतित हुआ लिंग इस पृथ्वीमें स्थितहै सो इसको फिर ग्रहण कीजिये इसवास्ते स्तुति करीगई है ८२ महादेवजी कहने लगे हे ब्रह्मन् ! हे विष्णो ! जो देवते मेरे लिंगका अर्चन करें तब मैं इसको फिर ग्रहण करूं अन्यप्रकारसे कभी नहीं ८३ बिष्णु कहनेलगे कि ऐसेही होवेगा पीछे आप ब्रह्माजी तिस लिंगको ग्रहण करते भये ८४ पीछे बिष्णु भगवान् चारों बर्णों को महादेवजीके लिंगके पूजनमें तत्पर करातेभये और नाना प्रकारकी उक्तियों से रचे हुये ८५ मुख्य शास्त्रहुये पीछे पहला शैव बिख्यात हुआ और दूसरे पाशुपत बिख्यात हुआ और तीसरे कालदमन बिख्यात हुआ और चौथे कपाली बिख्यात हुआ ८६ अर्थात् शैव नाम से बशिष्ठका पुत्र शक्ति हुआ पीछे शक्तिका शिष्य गोपायन हुआ ८७ पाशुपत नामसे भरद्वाजमुनि हुये तिसका शिष्य बृषभ राजा हुआ ८८ और कालदमन नाम से बिख्यात आपस्तंबमुनि हुये तिन्होंका शिष्य क्रोधेश्वर ८९ वैश्य हुआ और कपालीनामसे धनद हुआ तिसका शिष्य अर्णोदर नामसे बिख्यात शूद्र हुआ ९० ऐसे ब्रह्मजी शिवके पूजनके लिये चारों बर्णोंको युक्त करके आप

ब्रह्मलोकमें गये जब ब्रह्माजी चलेगये ६१ तब महा-
देवजी भी अपने लिंगको ग्रहणकर तीनों भुवनों में
सूक्ष्मरूपी लिंगको स्थापितकर बिचरतेभये ६२ पीछे
बिचरतेहुये महादेवजीके समीपमें कामदेव स्थित हो
धनुष्को ग्रहणकर सन्ताप देनेको उद्यत हुआ ६३ तब
अपने अगाड़ी स्थित हुये कामदेवको क्रोधसे जलता
हुआ नेत्रसे देख पीछे चोटीके अग्रभागसे लगा ६४
पैरोंतक देखा जब महादेवने देखा तब कामदेव जलता
भया जैसे सूखा घास ६५ जब कामदेव जलते हुये
अपने पैरोंको देख धनुष्को पांचप्रकारसे त्यागता भया
६६ अर्थात् सोना की पृष्ठवाला और महाकांतिवाला
ऐसा जो मुष्टिबंधथा तिसके स्थानमें सुगन्धिसे युक्त
और भुजाके समान आकृतवाला ऐसा चम्पकवृक्ष
बनगया ६७ और जो सुन्दर वज्रसे भूषित जो नाह
स्थानथा वह केशर वनमें बकुल नाम बृक्ष बना ६८
और जो इन्द्र नील बिभूषित सुन्दर कोटिथी वह भृंग-
राजोंसे विभूषित पाटलाबृक्ष बना ६९ और चन्द्रमा
मणिके समान कांतिवाला जो मुष्टिके नीचे के भागमें
नाह स्थानथा वह चन्द्रमाकी किरणोंसे प्रकाशित और
पांच अंगुलकी चमेली वनी और मुष्टि के ऊपर जो
विमल भूषित आपस्थान था वह वहुत पुटोंवाली म-
ल्लिका वनी और जब कामदेवका शरीर दग्ध होने
लगा तब वाणों को पृथ्वीमें छोड़ता भया तिन्हों करके
फलवाले १०० और सुगन्धि और देवताओं के भो-

जन करने योग्य ऐसे नाना प्रकारके हजारहां वृक्ष होते भये १०१ ऐसे महादेवजी कामदेवको दग्धकर पीछे अपने शरीरको बशमें कर तप करनेके लिये हिमालय पर्वतको गमन करतेभये १०२ ऐसे पहिले देवताओं में उत्तमरूपवाले महादेवजी ने बाण और धनुष्सहित कामदेव को दग्ध किया है पीछे महाधनुष्का धारण करनेवाला अनंग देवतों ने स्तुति किया और देवतों में उत्तम देवतोंने पूजित किया १०३॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांपुलस्त्यनारदसंवादेकामदाहो नामषष्ठोऽध्यायः ६॥

## सातवां अध्याय॥

पुलस्त्यजीबोले हे नारद! नारायण अनंगकोदेख और हँसके यह बचन कहनेलगे हे कन्दर्प! यहां स्थित होजा १ तब क्षोभ से रहित नारायण को देख कामदेव आश्चर्य को प्राप्तहुआ और बसंतऋतुभी शीघ्र महा चिंता को प्राप्तहुआ २ पीछे नारायण अप्सराओंको देख और स्वागत करके पूजाकर बसंत से कहनेलगे कि हे बसंत! आवो यहां स्थित होजा ३ पीछे नारायण हँसके फूलोंसे आवृतहुई मंजरीकोग्रहणकर अपनीऊरू से सब सुन्दर अंगों से संयुक्त ऐसी उर्वशी रचतेभये ४ सबअंगों से सुन्दरबनीहुई तिस उर्वशी को कामदेव मानताभया क्या यह मेरी प्रिया रति है अर्थात् मेरी भार्या रति है ५ क्योंकि उसी की तरह सुन्दर और

सुन्दर नेत्र, भृकुटी, टेढ़े बाल इन्हों से संयुक्त और सुन्दर नासिका और सुन्दर अधर ओष्ठ से संयुक्त और देखने में परायण ऐसा मुख है ६ और पुष्ट और भीतरकोहुये बिटकनोंवाले ऐसे दोनों स्तन अर्थात् दोनों चूंची इसके शोभित होरहे हैं जैसे मिलेहुये दो सज्जन मनुष्य ७ और रोमावली से बिभूषित और सूक्ष्म और त्रिबलिसे शोभित ऐसा इसका उदर शोभित होरहाहै और रोमों की पंक्ति जघन स्थान से स्तनों के किनारोंतक प्राप्तहुई शोभित होती है ८ जैसे भ्रमरों की माला जलसे निकसेहुये रेतके समूहसे नदी के पानीतक ९ और इसका अतिबिस्तृत और रसना से आवृत ऐसा कटिका अग्रभाग शोभित होरहा है जैसे समुद्रके मथनेमें बासुकी सर्प से आवेष्टित किया मन्दराचल १० और केलाके स्तम्भों के सदृश और ऊपर को है मूल जिन्हों का ऐसे ऊरूओं से यह सुन्दर अंगोंवाली और कमल की केशर के समान कांति वाली यह उर्वशी प्रकाशित है ११ और गूढ़हैं टाकने जिसमें ऐसे दोनों गोड़े दीखतेहैं और रोमोंसे वर्जित दोनों जांघ दीखती हैं और अलक्तक अर्थात् अग्नि की टीमी के समान कांतिवाले दोनों पैर शोभित हो रहेहैं १२ ऐसे सुन्दरनेत्रोंवाली उस उर्वशीको चिन्तवन करनेवाला कामदेव कामातुर होगया अन्य जनों की क्या कथाहै १३ और बसन्तभी तिस उर्वशीको देखके चिन्तवन करनेलगा कि कुछिक कालतक कामरूपी

इन्द्रकी राजधानीमें यह स्थितहुई है अथवा रात्रिके क्षयमें चन्द्रमा की कांति यह प्राप्तहुई है अथवा सूर्य की किरणों के प्रताप से भयभीत हुई हमारे शरणमें आके स्थितहुई है १४ ऐसे चिन्तवन करता बसन्त अप्सरागणोंके समीप में मुनिजन की तरह प्राप्तहो ध्यान को स्थितहुआ १५ पीछे हे नारद! बिस्मितहुये कामदेवआदि को देख मन्दमुसकान सहित नारायण कहनेलगे १६ कि मेरे ऊरू से उपजीहुई और सब अप्सराओं में उत्तम ऐसी इस उर्बशी को स्वर्गलोक में लेजाके इन्द्रकेलिये देवो १७ ऐसे नारायण के बचन को सुन कम्पितहुये कामदेवआदि तिस उर्बशी को ग्रहणकर स्वर्गलोकमें जा इन्द्रको ग्रहण करते भये १८ और बद्रिकाश्रम में जो जो चरित्रहुआ वह भी सब कहतेभये ऐसे यहचरित्र पृथ्वी में और पातालमें और आठोंदिशाओंमें बिख्यातहुआ १९ एक समयमें जब हिरण्यकशिपु मारागया तब राज्यस्थानपै तिसकापुत्र प्रह्लाद नामवाले दैत्यका अभिषेचन हुआ २० और देव ब्राह्मणों को पूजनेवाला जब प्रह्लाद राज्य करने लगा तब पृथ्वीमें सब राजे बिधिपूर्बक यज्ञकरनेलगे २१ और ब्राह्मण तप धर्म तीर्थयात्रा इन्हों को करने लगे और वैश्य व्यवहार बृत्तिमें स्थितरहे और शूद्र शुश्रूषामें रतरहे २२ ऐसे चारोंवर्ण अपने अपने धर्म और कर्म में स्थितरहे २३ पीछे एक समयमें महातप करनेवाला च्यवनऋषि नर्मदानदी में स्नान करनेको

और वैनाकुलेश्वर महादेवके देखने को गमन करतेभये २४ तहां महादेव को देख नर्मदा नदीमें स्नानके लिये गोता मारनेलगे २५ तब एक सर्प च्यवनमुनि को ग्रहण करताभया पीछे तिस सर्पसे गृहीत किये च्यवन मुनि मनमें बिष्णु का स्मरण करनेलगे जब बिष्णुका स्मरणकिया तब वह सर्पभी बिषसे रहित होगया २६ परन्तु वह अतिबलवालासर्प पाताललोकमें च्यवनमुनि को लेजाके त्यागताभया २७ जब सर्पने च्यवनमुनिको छोड़दिया तब सर्पोंकी कन्याओं से पूजित च्यवनऋषि बिचरनेलगे पीछेबिचरतेहुये २८ दैत्योंकेबृहतपुरमें प्राप्त हुये तहां दैत्योंसे पूजित प्रह्लाद भृगुजी के पुत्र च्यवन ऋषिकोदेख पूजनकरताभया २९ जब अच्छीतरह पूजा कर और अच्छीतरह बैठाके च्यवनसे प्रह्लाद ने पूछा कि आपका आगमन यहां किसवास्ते हुआ ३० तब च्यवनमुनिबोले कि हे महाराज! महाफलको देनेवाला महातीर्थ है तहां स्नान करने को और वैनाकुलेश्वर के देखनेको ३१ नर्मदानदीमें मैं प्राप्तभया तब सर्पने अपने बलसे मेरेको ग्रहणकर इस पाताललोक में प्राप्त किया सो यहां आपके दर्शन हुये ३२ तब ऐसे च्यवन के बचन को सुन वाक्य में चतुर प्रह्लाद धर्म से युक्त वाक्य कहनेलगा ३३ अब प्रह्लाद कहता है कि हे भगवन्! पृथिवी में कौन कौन तीर्थ हैं और स्वर्ग में कौन कौन तीर्थ हैं और पातालमें कौन कौन तीर्थ हैं यह मेरेलिये आप कहने को योग्यहो ३४ च्यवन कहनेलगे

पृथिवी में नैमिषतीर्थ है और आकाशमें पुष्कर तीर्थ है और हे महाबाहो! पाताल में चक्रतीर्थ है ३५ पुलस्त्य जी बोले हे नारद! ऐसे च्यवनमुनि के बचनको सुन नैमिषतीर्थ में गमन करने को ३६ प्रह्लाद दैत्य दानवों से कहने लगा कि हे दानवो! उत्थान करो नैमिष तीर्थ में स्नान करने को हम गमन करेंगे और पीत बस्त्रों को धारण करनेवाले और कमल के समान नेत्रोंवाले ऐसे बिष्णुको देखेंगे ३७ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ऐसे दैत्यराज प्रह्लाद के बचन को सुन सब दैत्य अतिउद्योगकर पाताल लोकसे निकस ३८ नैमिषारण्य में प्राप्तहो नैमिष तीर्थ में स्नान करने लगे पीछे प्रह्लाद सैर करने को पृथिवी में बिचरनेलगा ३९ तब बिचरता हुआ सुन्दरजलसे भरीहुई सरस्वतीनदी को देखता भया ४० तिस नदी के समीप में महाशाखाओंवाला और शरों से संचित ऐसा शालबृक्ष देखा तहां बृक्षके मुखमें आपस में लगेहुये बहुतसे बाणों को देखता भया ४१ पीछे अद्भुत आकारवाले और सर्परूपी यज्ञोपवीतवाले ऐसे बाणों को देख अतिक्रोध करता हुआ ४२ पीछे तिस बृक्षसे थोड़ीसीदूर कृष्णमृगछालाको धारण करनेवाले और ऊंची जटा के भारको धारण करनेवाले और तप में आसक्त मनवाले ४३ ऐसे दो मुनियों को देखता भया और तिन मुनियों के समीपमें दिव्य और लक्षणों से युक्त शार्ङ्ग और आजगव इननामों से विख्यात ऐसे दो धनुष् और अक्षयरूपी ४४ दो तरकस धरेहुये

हैं तब तिन दो मुनियों को देख प्रह्लाद दांभिक अ-
र्थात् कपटवाले मुनि मानताभया अर्थात् दोनों पाखंडी
हैं ऐसे मानताभया ४५ पीछे दोनों से कहनेलगा कि
तुम दोनों ने धर्म्म का नाश करनेवाला पाखण्ड क्यों
धारणकिया है क्योंकि कहां तप और कहां जटाकाभार
और कहां ये दोनों धनुष् ४६ तब नर प्रह्लाद से कहने
लगे कि हे दैत्यराज ! तेरेको क्या चिन्ताहै सामर्थ्य होने
पै जो कुछ करै वही उसको योग्य है ४७ तब प्रह्लाद
कहनेलगा कि धर्म के सेतुको प्रवृत्त करनेवाले मेरेको
स्थितहुये तुम दोनों की क्या शक्तिहै ४८ तब नर क-
हनेलगा कि हम दोनों की शक्ति बड़ी है अर्थात् हम
दोनों के संग युद्धकरने को कोई भी समर्थ नहीं है ४९
तब क्रोध को प्राप्तहुआ प्रतिज्ञा करताभया कि किसी
प्रकार करके नरनारायण नामवाले इन दोनों को युद्ध
में जीतूंगा ५० ऐसे वचन को कहकर प्रह्लाद अपनी
सेना को बनके समीप में स्थापितकर और अतिगुण-
वाले अपने धनुष्को खैंच खैंच तलध्वनि करताभया
५१ पीछे नर आजगव धनुष् को नवाय तिसपै अति
पैने बाणोंको चढ़ा छोड़नेलगे तब दैत्यने अपने बाणों
से सब बाण काटदिये ५२ और जब दैत्यने नरके सब
बाण काटदिये तब क्रोध को प्राप्तहुआ नर नाना प्र-
कार के बाणों को फिर छोड़नेलगा ५३ अर्थात् एक
बाण नरने छोड़ा तब प्रह्लादने दो बाण छोड़े पीछे नर
ने तीनबाण छोड़े तब प्रह्लाद ने चार बाण छोड़े पीछे

नरने पांचबाण छोड़े तब प्रह्लाद ने छः बाण छोड़े ५४ पीछे नरने सातबाणछोड़े तब प्रह्लाद ने आठबाण छोड़े पीछे नरने नौबाणछोड़े तब प्रह्लादने दशबाणछोड़े ५५ पीछे नरने बारह बाणछोड़े तब प्रह्लादने पन्द्रहबाणछोड़े पीछे नरने छत्तीस बाण छोड़े तब प्रह्लादने बहत्तर बाण छोड़े ५६ पीछे नरने सौ बाण छोड़े तब प्रह्लाद ने तीनसौ बाण छोड़े पीछे नरने छःसौ बाण छोड़े तब प्रह्लादने एक हजार बाण छोड़े पीछे असंख्येय बाणों को कोपसे दोनों छोड़ते भये ५७ पीछे नरने असंख्येय बाणों के समूहसे पृथ्वी दश दिशा आकाश आच्छादित करदिया तब प्रह्लाद ने पैने पैने बाण छोड़ सब बाण काट दिये ५८ पीछे अतिप्रकार से नर और प्रह्लाद आपसमें बाणों की बर्षा करते भये ५९ पीछे क्रोधको प्राप्त हुये प्रह्लादने ब्रह्मास्त्र छोड़ा तब नरने माहेश्वरास्त्र छोड़ा तब दोनों अस्त्र आपसमें लड़तेहुये पृथ्वी में पड़ते भये ६० जब ब्रह्मास्त्र शांत होगया तब क्रोधसे मूर्च्छित हुआ प्रह्लाद गदाको ग्रहणकर रथसे कूदता भया ६१ पीछे गदाको हाथमें लेनेवाले प्रह्लादको नरके प्रति आवता हुआ देख नारायण शार्ङ्गधनुष्को धारण कर स्थित हुआ ६२ तब दूरसे धनुष्को धारण करनेवाले नारायणको देखके प्रह्लाद नर को त्याग नारायण के सम्मुख हे नारद! प्राप्त हुआ ६३ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांप्रह्लादयुद्धंनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

---

# आठवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! शार्ङ्गधनुष्को हाथमें लेने वाले नारायणको देख प्रह्लाद अपनी गदाको भ्रमा के नारायण के मस्तक में मारता भया १ जब नारायण के मस्तकमें गदालगी तब नेत्रों से अग्निकी समान कांति वाले पानीकी वर्षा पृथ्वी में होती भई २ और नारायण के मस्तक में लगने से वह गदा सौ प्रकारसे टूटगई ३ पीछे प्रह्लाद रथमें बैठ धनुष्को धारणकर तरकस से बाणों को काढ़ धनुष्पै चढ़ा ४ नारायण के सम्मुख छोड़नेलगा तब दैत्यके छोड़ेहुये बाणों को नारायण चंद्रमा सूर्यकी समान कांतिवाले अपने बाणों से काटते भये ५ और दैत्यको भेदन करते भये तब नारायण प्रह्लाद को और प्रह्लाद नारायण को आपसमें पैने पैने बाणों करके बींधते भये ६ तब युद्धको देखनेवाले देवताओं का समूह आकाश में स्थित भया पीछे देवते नक्कारे और अनेक प्रकारके बाजों को बजा के ७ नारायण के ऊपर पुष्पोंकी वर्षा करनेलगे पीछे देवताओंके देखते देखते ८ आपस में अपनी प्रीति को बढ़ानेवाले दोनों अति युद्ध करने लगे अर्थात् बाणोंकी वर्षा करके ९ आकाश दिशा और विदिशा इन्हों को दोनों आच्छादित करते भये पीछे हे नारद! नारायण अपने धनुष को खैंच १० पैने बाणों करके प्रह्लाद के मर्मस्थानों में भेदन करते भये तब क्रोध को प्राप्त हुआ ११ प्रह्लाद

धनुष्को खैंच नारायण के हृदय बाहू मुख इन्होंको भेदन करता भया तब बाणों को छोड़नेवाले प्रह्लाद के मुष्टिबंध १२ बाणको नारायण एक बाण करके काटतेभये तब टूटेहुये धनुष्को छोड़ और अन्य धनुष् को धारणकर लाघवसे पैने बाणों को बर्षाने लगा १३ तब नारायण भी अपने बाणों करके दैत्य के बाणों को काटते भये १४ पीछे नारायण छुरासे दैत्य के धनुष् को काटते भये तब दैत्यराजने अन्य धनुष् धारणकिया १५ अर्थात् बारंबार नारायणने दैत्यराजके धनुष् तोड़ दिये और बारंबार दैत्यराज नये नये धनुषों को धारणकरताभया १६ पीछे जब फिर दैत्यराजने धनुष्धारण करा तब फिर नारायणने धनुष् अपने बाण करके तोड़ दिया तब टूटेहुये धनुष् को त्याग और परिघ शस्त्रको ग्रहणकर १७ भ्रमानेलगा तब नारायणने अपने बाण से परिघभी काटदिया १८ पीछे जब परिघभी टूटगया तब प्रह्लाद मुद्गरको ग्रहणकर भ्रमाके नारायण के सम्मुख छोड़ताभया १९ तब आवतेहुये मुद्गरको नारायण दश बाणों से दशप्रकारसे काट पृथ्वी में गिरावते भये २० जब मुद्गर कटगया तब दैत्यराज पाशको ग्रहणकर नारायण के सम्मुख फेंकने लगा तब वह भी नारायणने काटदिया २१ पीछे जब पाशभी तोड़दिया तब दैत्यराज शक्तिको ग्रहणकर नारायणके सम्मुख छोड़नेलगा तब नारायणभी छुराकरके शक्तिको काटते भये २२ जब सब शस्त्र काटे गये तब दैत्यराज फिर

धनुष्को धारणकर बाणोंकी वर्षा करनेलगा २३ पीछे एक बाण करके नारायण दैत्यराजको हृदयमें ताड़ित करते भये २४ तब नारायणके हाथसे लगे हुये बाण करके मूर्च्छितहो रथमें पड़ताभया तब सारथी रथको भगाता भया २५ पीछे बहुत कालमें फिर संज्ञाको प्राप्तहो दैत्यराज दृढ़रूपी धनुष्को धारणकर फिर युद्ध करने को प्राप्त हुआ २६ तब आवते हुये दैत्यको देख नारायण कहने लगे कि हे दैत्येन्द्र! गमन कर अर्थात् आह्निक कर्मका आचरणकर प्रभात में फिर युद्ध करेंगे २७ तब प्रह्लाद नैमिषारण्य में जाके आह्निककर्म क्रिया को करताभया २८ ऐसे देवके संग युद्ध करने वाला प्रह्लाद दैत्य रात्रि में चिन्तवन करने लगा कि इस दाम्भिकमुनि को युद्धमें कैसे जीतूंगा २९ ऐसे नारायण के संग दिव्य हज़ार वर्षोंतक प्रह्लाद दैत्य युद्ध करता भया परन्तु नारायणको नहीं जीतता भया ३० पीछे दिव्य हज़ार वर्षों के अन्तमें पीत वस्त्रोंवाले विष्णुके समीप में हो प्रह्लाद वचन कहने लगा ३१ कि हे देवदेवेश! साध्य नारायण हरि इन नामोंवाले इस दाम्भिकमुनि को किसवास्ते अब जीतने को मैं समर्थ नहीं हूं यह कारण मेरेलिये कहो ३२ विष्णु कहने लगे हे प्रह्लाद! यह धर्मका पुत्र और महाबाहु ऐसा साध्य युद्धमें देवता और दैत्यों से जीतने में नहीं आसक्ता ३३ तब प्रह्लाद कहने लगा कि हे देव! जो यह साध्य युद्धमें दुर्जय है तो मेरी प्रतिज्ञा सत्य कैसे होवेगी ३४ और हे देवेश!

हीन प्रतिज्ञावाला मेरे कैसा जीव कैसे जीसक्ता है इस वास्ते हे विष्णो! आपके आगे शरीरका शोषण करूंगा ३५ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ऐसे बिष्णु के आगे दैत्यराज बचन कहके शिरको नवाकर सनातन ब्रह्मको जपताहुआ स्थितहुआ ३६ पीछे पीत बस्त्रों को धारण करनेवाले बिष्णु प्रह्लादसेकहनेलगे हे प्रह्लाद! गमनकर तिस नारायणको भक्तिसे तू जीतेगा युद्धसे कभीभी नहीं ३७ तब प्रह्लादकहनेलगा कि हे देव! जो त्रिलोकीसे भी वह जीतने में नहीं आसक्ता तो आपके प्रसाद करके मैं तिसके आगे स्थितहोनेको समर्थनहींहूं हे अज! अब मैं क्याकरूं ३८ तब बिष्णुकहनेलगे हे दानवशार्दूल! लोकों पै कृपाकरके धर्मकोप्रबर्त्तनकरने के लिये वह तप करताहै ३९ जो तिससे जयकीइच्छाकरैहै तो हे दानव! तिसीकी आराधनाकर भक्ति करके तिसको तू जीतेगा इसवास्ते धर्मकेपुत्र नारायणकी शुश्रूषाकर ४० पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ऐसे बिष्णुके बचनको सुन प्रसन्नहुआ प्रह्लाद अंधकदैत्यको बुला कहनेलगा ४१ अब प्रह्लादने कहा हे अन्धक! दैत्य और दानव आपको पालने योग्य हैं और मेरे छोड़ेहुये इसराज्य को तू ग्रहण करे ४२ ऐसे प्रकार कहाहुआ अंधक राज्य को ग्रहणकरताभया तब प्रह्लाद बद्रिकाश्रममें जा ४३ नरनारायणको देख अंजलीबांध दोनों के चरणों में नमस्कार करताभया ४४ तब महातेजवाले नारायण कहनेलगे हे दैत्यराज! मेरे को पराजितकराये बिना क्यों नमस्कार करताहै ४५ प्र-

ह्लाद कहनेलगा हे प्रभो! आपको जीतने को कौन समर्थ है और आपसे अधिक कौन पुरुष है और अंत से रहित और पीतबस्त्रों वाला ४६ और दुष्टजनों को पीड़ा देनेवाला ऐसे नारायण आपही हैं और कमल के समान नेत्रोंवाले आपही हैं शार्ङ्गधनुष् को धारण करनेवाले आपही हैं और अव्यय महेशान शाश्वत पुरुषोत्तम ४७ इन नामोंवाले भी आपही हैं और योगीजन आपको चिन्तवन करते हैं और बुद्धिमान् आपको पूजते हैं और ब्रह्मचारी आपको जपते हैं और यज्ञ करनेवाले आपको पूजते हैं ४८ आपही अच्युत हैं और हृषीकेश चक्रपाणि ऐसे नामोंवाले भी आपही हैं और पृथ्वी को धारण करने वाले भी आपही हैं और मत्स्यके अवतार को धारनेवालेभी आपही हैं और हयग्रीव अवतारभी आपही हैं और कच्छप अवतार भी आपही हैं ४९ और हिरण्याक्ष के बैरी बाराह अवतारभी आपही हैं और मेरे पिताको नाशने वाले नरसिंहभी आपही हैं ५० और ब्रह्मा, शिव, इन्द्र, अग्नि, धर्मराज, बरुण, पवन, सूर्य, चन्द्रमा, स्थावर और जंगम इनरूपोंवाले भी आपही हैं और हे नाथ! हे गरुड़ध्वज! ५१ पृथ्वी तेज आकाश जल बायु इनरूपोंवाले भी आपही हैं और आपसे समस्तजगत् व्याप्त होरहा है और हे माधव! कौन आपको जीतेगा ५२ और हे जगद्गुरो! भक्ति करके आप प्रसन्नताको प्राप्तहोते हैं अन्यथा आप को जीतने को कौन समर्थ है ५३ नारायण कहने

लगे हे दैत्य! तेरे इस स्तवन करने से मैं प्रसन्न हुआ और उत्तमभक्ति से तैंने मुझे जीतलिया ५४ और हे दैत्य! पराजित हुये पुरुष दण्डदिया करैहैं इसलिये दण्ड के लिये मेरे से मनोवाञ्छित बरमांग ५५ प्रह्लाद कहने लगा हे नारायण! मैं बरमांगताहूँ तिस बरको आप देने के योग्यहो हे देव! आप दोनों के संग युद्ध करने में मेरा शारीरिक मानसिक ५६ वाचिक पापहै वह नाशको प्राप्त होजावै यह बरदान मुझको देवो नारायण कहने लगे ५७ हे दैत्येन्द्र! ऐसेही होजायगा अर्थात् तेरे पाप नाश को प्राप्त होंगे परन्तु हे दैत्य! मुझसे दूसरा बरमांग जो मैं तेरे को देऊंगा प्रह्लाद कहनेलगे हे विष्णो! आप से आश्रित और आपके पूजन में रत और आपमें चित्तवाली और आपमें परायण ऐसी बुद्धि मुझको उत्पन्न होतीरहै ५८ नारायण कहने लगे ऐसेही होजावैगा परन्तु अन्यवर मांग मैं तुझको बिना बिचारे देऊंगा ५९ प्रह्लाद कहने लगा हे अधोक्षज! आपके प्रसाद से मुझे सर्बस्व लब्धहुआ परन्तु आपके चरणारबिन्दों के लिये सब काल में मेरी रत्यातिरहै नारायण कहने लगे ऐसेही होगा परन्तु अक्षय अबिनाशी अजर अमर ऐसा तू मेरे प्रसादसे होजावैगा ६० हे दैत्यशार्दूल! अपने स्थान को गमनकर और कर्मों का आचरणकर और मेरे बिषे चित्तलगाने वाला जो तू है सो तेरा कर्मबन्ध नहीं होगा ६१ और दैत्यदानवों को शिक्षादे अपने देशकी निरन्तर पालनाकर और हे दैत्य! अपनी जाती

के सदृश उत्तमकर्मकर ६२ पुलस्त्यजी बोले हेनारद! ऐसे नारायण के बचन को सुन प्रह्लाद कहनेलगा हे जगत्स्वामिन्! त्यागेहुये राज्य को कैसे ग्रहणकरूं ६३ तब नारायण कहनेलगे कि हे प्रह्लाद! अपने स्थानमें जाके दैत्य और दानवों को हितका उपदेशकर ६४ ऐसे नारायणके बचनकोसुन पीछे नमस्कारकर प्रह्लाद अपने स्थान को जाताभया ६५ पीछे हे नारद! जब अपने नगरमें प्रह्लादगया तब दानवों और अंधकने प्रीति से राज्यको ग्रहण करने के लिये निमंत्रित किया परन्तु प्रह्लाद राज्यको नहीं अंगीकार करताभया ६६ ऐसे राज्य को त्याग सन्मार्ग में नियुक्तहो प्रह्लाद विष्णुभगवान् का ध्यानकर स्थितहुआ ६७ ऐसे पहले हे नारद! नारायण से पराजित किया प्रह्लाद दैत्य राज्यको त्याग परमेश्वर में मनको लगाय स्थितहोताभया ६८ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांप्रह्लादवरप्रदानं नामाष्टमोऽध्यायः ८ ॥

## नवां अध्याय

नारदजीने पूछा कि हे स्वामिन्! राजधर्मको जानने वाले प्रह्लाद ने नेत्रों से हीन अंधक कैसे राज्य पै प्राप्त किया १ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! हिरण्याक्ष के जीवते हुये लब्धहुआहै राज्य जिसको ऐसा अंधक फिर प्रह्लाद ने अपने राज्य स्थान पै प्राप्त किया २ नारद ने पूछा कि हे सुव्रत! राज्यपै अभिषेचित किया अन्धक क्या करता

भया और देवता आदिकों के संगकैसे स्थितरहा यह मुझसेकहो ३ पुलस्त्यजीबोले हे नारद! हिरण्याक्षकापुत्र अन्धक जब राज्यपैस्थितहुआ तब तपसे महादेवजी की आराधनाकर ४ किसी से पराजितनहींहोऊं और किसीके हाथसे मरूँ नहीं अर्थात् देवता सिद्ध ऋषि इन्होंसे भी पराजित नहींहोऊँ और अग्निकरके दग्ध नहीं होसकूँ और जलकरके डूबनहींसकूँ ५ ऐसेवरोंको प्राप्तहो अंधकराज्यकी पालना करनेलगा पीछे शुक्राचार्यकोपुरोहित बना अन्धक सम्यक् प्रकारसे स्थित हुआ ६ पीछे देवताओं के प्रति उद्योग करने लगा अर्थात् समग्र पृथ्वी को आक्रमणकर तहां राजाओंको जीत ७ और शेषरहे क्षत्रियों को जीत के अपनी सहायता के लिये नियुक्त कर अद्भुत दर्शनवाले मेरु पर्वतके शिखर पै प्राप्तहुआ ८ पीछे इन्द्रभी देवताओंकी सेनाको सङ्ग ले और ऐरावत हस्ती पै चढ़ और अमरावती नगरी की रक्षाकर निकसा ९ पीछे इन्द्रके मतके अनुसार अति बलवाले सब लोकपाल शस्त्रोंकोले और अपने अपने बाहनों पै सवारहो निकसे १० और देवताओं की सेनाभी इन्द्र के सङ्ग हस्ती घोड़ा रथ आदि करके बेगसे निकसती भई ११ अर्थात् अगाड़ी बारह आदित्य और पृष्ठभागमें ग्यारहरुद्र और मध्यमें आठों बसु और बिश्वेदेवा और साध्य और मरुद्गण १२ और यक्ष और विद्याधर येभी अपने अपने बाहनोंपै सवारहो स्थितहुये १३ नारदजीने पूँछा कि हे सर्वज्ञ!

रुद्र आदिकों के वाहनों को कहो और हे धर्मज्ञ! एक एक के बाहनको कहो मुझको अति आश्चर्य है १४ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! सबोंके और आनुपूर्व से एक एकके विस्तार से बाहन कहूँगा १५ सुन सफ़ेद वर्ण वाला हस्ती इन्द्र का बाहन है और रुद्र के पराक्रम से उत्पन्न हुआ और कृष्ण वर्णवाला और मनके समान वेगवाला १६ और पौण्ड्रक नामसे विख्यात ऐसा भैंसा धर्मराजका बाहनहै और रुद्र के कान के मैल से उत्पन्न हुआ और श्यामरंगवाला और जलधिनामसे विख्यात १७ और दिव्यगतिवाला ऐसा शिशुमारमच्छ बरुण जीका बाहन है और गाड़ा के चक्रों में भयानक और पर्वत के आकारवाला १८ और अम्बिका के पैर से उत्पन्न ऐसा नर कुबेर का बाहन है और हे नारद! १९ महावीर्य्य वाले गन्धर्व और दारुण सर्प्प और सफ़ेद रंगवाले और उग्र बलवाले ऐसेबैल ये सब ग्यारहरुद्रों के वाहनहैं २० और हजार घोड़ोंसे संयुक्त रथ चन्द्रमा का वाहनहै और घोड़े ऊँट रथ ये आदित्यों के वाहनहैं २१ और हस्ती वसुओं केबाहनहैं और मनुष्य यक्षों के बाहनहैं और सर्प किन्नरों के वाहनहैं और दोघोड़ेदोनों अश्विनी कुमारों के वाहन हैं २२ और चातक अर्थात् पपीहा मरुद्गणों का बाहनहै और तोते कवियों के वाहन हैं और गन्धर्व पियादे रहते हैं २३ ऐसे सब देवता अपने अपने वाहनों पै चढ़ और वर्म अर्थात् कवच आदिको पहन प्रसन्नहुये युद्धके लिये निकसते भये २४

नारदजी ने पूछा हे मुने! देवता आदिकों के बाहन आपने कहे परन्तु अब दैत्यों के बाहनों को कहने को आप योग्यहैं २५ पुलस्त्यजी बोले हे द्विजोत्तम! दैत्य आदिकों के बाहनों को सुन मैं यथार्थ करके कहता हूँ तू सुनने को योग्य है २६ दिव्य और उत्तम घोड़ों से युक्त और कृष्ण वर्णवाला और हजारहां पखुड़ियों वाला २७ और बारहसौ हाथ के अनुमान परिमाणवाला ऐसा रथ अन्धकका है और प्रह्लादका दिव्य और सफेद आठ घोड़ों से युक्त और श्वेत रत्नों से जटित ऐसा रथहै २८ और बिरोचनका हस्तीबाहनहै और कुंभज का अश्व बाहन है और सोने के समान कांति वाले घोड़ों से युक्त और दिव्य ऐसारथ जंभकाहै २९ और शंकुकर्णका घोड़ा बाहन है और हयग्रीव का हस्ती बाहनहै और मयका रथ बाहनहै और दुंदुभी का सर्प बाहन है ३० और शम्बर का बिमान बाहन है और शंकुका नाथाहुआसिंह बाहनहै और गदा मूसल को धारण करनेवाले ३१ बल और वृत्त पियादे होके देवताओंकी सेनाको डराने को उद्यत रहते हैं पीछे दैत्य और देवताओं का अति भयंकर युद्ध होनेलगा ३२ तब पीलेवर्ण के रजसे लोक आच्छादित होगया और पिता पुत्रको नहीं जानता भया और पुत्र पिताको नहीं जानता भया ३३ और कितनेक अपनोंको मारनेलगे और कितनेक परायोंको मारनेलगे रथपैरथ पड़नेलगा ३४ और हस्ती पै हस्ती और घोड़े पै घोड़ा और

पियादों पै पियादा ३५ ऐसे अपने अपने जय की आ-
कांक्षावाले आपसमें मारनेलगे हे नारद ! ऐसे उग्ररूपी
इस युद्धमें ३६ रजको शान्तकरनेवाली और लोहूरूपी
जलवाली और रथोंसे आवर्त्त और योद्धाओं के समूहसे
बहनेवाली ३७ और हस्तियों के मस्तकरूपी बड़े बड़े
कछुओंवाली और शररूपी मच्छियों वाली और तीव्र-
अग्रभागवाले प्राशरूपी मच्छों वाली और तलवार
रूपी ग्राहों से युक्त ३८ और आंतरूपी शिवालसे आ-
च्छादित और पताकारूपी झागों की मालावाली और
गीध कंक महा हंस चकवा शिकरा ३९ बगला काक
गीदड़ श्वापद पिशाच इन्हों से आकीर्ण और प्राकृत
जनोंसेदुस्तर ऐसीनदी प्रवृत्तहुई ४० तब रथरूपी नौ-
काओं से तिरतेहुये शूरवीर दुःखित होनेलगे और
टकनोंतक तिसनदी में प्रवेशकर आपस में रुदन करते
हुये ४१ और जयकी इच्छा करतेहुये ऐसे योद्धा वेगसे
तिरनेलगे ४२ पीछे भीरुओं को भयका देनेवाला और
रौद्र ऐसे देवासुर युद्धमें राक्षस यक्ष पिशाचों के समूह
ये रमण करतेहुये और गाढ़े लोहूको पीवतेहुये ४३
और योद्धाओं के मांसोंको खातेहुये और वसाको
काटतेहुये और आपस में अपनी अपनी उमर के
समान गर्जतेहुये ४४ विचरनेलगे और जहाँ शिवा
किलकार शब्दोंको छोड़नेलगी और पृथ्वी में पड़ेहुये
और वेदना से पीड़ित ऐसे योद्धा पुकारनेलगे ४५
ऐसे श्मशान के समान उपमावाला युद्ध होताभया पीछे

हज़ारहों घोड़ोंसे युक्त रथमें स्थितहुआ ४६ हिरण्याक्ष का पुत्र अन्धकदैत्य मदवाले हस्तीपै स्थितहुये इन्द्रके सम्मुख स्थितहुआ ४७ और भैंसापै चढ़ेहुये धर्मराज को सम्यक्प्रकार से आवतेहुये देख आठ घोड़ोंसे युक्त रथमें स्थितहुआ और उद्यत अस्त्रोंवाला ऐसा प्रह्लाद सम्मुख हुआ ४८ और बिरोचन बरुणके सम्मुखगया और जम्भ अतिबलवाले कुबेर के सम्मुखगया और शम्बर बायुकेसंग युद्ध करने लगा और मयअग्नि से युद्ध करताभया ४९ और महाबलवाले हयग्रीव आदि दैत्य और दानव देवते अग्नि सूर्य बसु दिव्य सर्प रुद्र इन्होंको अमोघ शस्त्रोंकरके ताड़ित करतेभये ५० पीछे महाबलवाले देवते और दैत्य द्वन्द्व युद्धको प्राप्तहो संग्राम में आपसमें गर्जनेलगे और कितनेक धनुषों को बेगसे खैंचनेलगे और हज़ारहा बाणोंके समूहोंको छोड़नेलगे ५१ और आइये ठहरिये ऐसे कहतेहुये कितनेक तीक्ष्ण बाणोंसे बींधनेलगे और पिशाच राक्षसों के गणोंको पुष्टि देनेवाली और मन्दाकिनी नदीके समान बेगवाली और भयको देनेवाली ऐसी नदीको प्रक्षत करतेहुये ५२ पीछे देवते और दैत्यों के युद्धको देख आकाश में स्थितहुये मुनि सिद्धों के समूह बाजों को बजाते भये ५३ और जो युद्धमें मरगये तिन्होंको अप्सरा प्राप्त होती भईं ५४ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांदेवासुरयुद्धेनवमोऽध्यायः ९ ॥

# दशवां अध्याय॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! भीरुओंको भयके बढ़ाने वाले तिस संग्राममें बड़े धनुषको ग्रहणकर इन्द्र बाणों को छोड़नेलगा १ और अंधकभी महा वेगवाले धनुष को खैंच इन्द्रके सम्मुख मोरकी पांखसे संयुक्त किये बाणोंको छोड़ता भया २ तब आपसमें तीक्ष्ण अग्र भागवाले और महा वेगवाले बाणोंसे दोनों आपस में मारतेभये ३ तब क्रोधको प्राप्त हुआ इन्द्र हाथसे वज्रको भ्रमाके अंधकके सम्मुख फेंकनेलगा तब अं-धकभी ४ बाण और शस्त्र और अस्त्र इन्होंके समूह से काटनेलगा परन्तु जब वह वज्र कटानहीं ५ तब अति वेगवाले उस वज्रको देख रथसे उतर पृथ्वी में अंधक स्थित हुआ ६ तब रथ सारथी घोड़ा ध्वज चवर इन्हों का भस्म करके वज्र अंधकके समीप में आनेलगा ७ तब आवतेहुये वज्रको देख मुक्कासे तोड़ पृथ्वीमें गिरा के अंधक गर्जनेलगा ८ तब गर्जतेहुये अंधकको देख इन्द्र बाणोंकी वर्षा करनेलगा तब इन्द्रके समीपमें अं-धक प्राप्त होके ९ ऐरावत हस्तीके मस्तकमें और सूंड़ में मुक्काको मार और घोड़ामार हस्तीके दांतको काटता भया १० तथा वामी मुष्टिसे हस्तीकी पांशुमें चोट मार अति वेगवाला अन्धक प्रहारोंसे जर्जरीभूत हुये ऐ-रावत हस्तीको पृथ्वीमें गिराताभया ११ तब पड़ते हुये हस्ती से इन्द्र कूदके हाथ में वज्रको ग्रहणकर

अपनी अमरावती पुरीमें प्रवेश करताभया १२ जब इन्द्र का पराजय हुआ तब देवताओंकी सेनाको पैर मुक्का हथेलीकी चोट इन्हों करके अन्धक पृथ्वी में गिराने लगा १३ पीछे हे नारद! धर्मराज अपने दंडको भ्रमा के प्रह्लाद को मारने के लिये सम्मुख भागा १४ तब आवते हुये धर्मराजको देखके प्रह्लाद अपने धनुषको नवाय बाणों की बर्षा करनेलगा १५ तब अतुल रूप बाण बर्षा को धर्मराज अपने दंडसे नाश पीछे लोकमें भय देनेके योग्य दंडको १६ फेंकताभया तब वह धर्मराजके हाथसे प्रेरितकिया दंड वायुके मार्गको प्राप्तहो जगत्को दग्ध करनेवाला १७ प्रलय अग्नि की तरह प्रकाशित हुआ तब आवतेहुये तिस दंडको देखके सब दैत्य कहनेलगे कि धर्मराजके दंडसे प्रह्लाद कष्टको प्राप्त होवेगा १८ पीछे इस शब्दको हिरण्याक्ष का पुत्र अंधक सुनके कहनेलगा कि हे प्रह्लाद! भयको मत मानै मेरे स्थित होतसंते कौन सुराधम है ऐसे बचनको कह बेगसे सर्प्पताहुआ अर्थात् चलताहुआ १९ अंधक अपने बायें हाथसे दंडको ग्रहण करता भया पीछे तिस दंडको ग्रहणकर बेगसे अंधक भ्रमानेलगा २० और गर्ज्जनेलगा जैसे बर्षाकालमें बादल जब अंधक करके धर्मराजके दंडसे रक्षित किये प्रह्लाद को देख २१ सब दैत्य और दानव साधु बाद करतेभये २२ पीछे दुःसह और दुर्द्धर और महादंडको भ्रमानेवाला ऐसे अंधकको देख धर्मराज अन्तर्द्धान होगया जब

धर्मराज अन्तर्हित होगया तब बलवाला प्रह्लादभी २३ देवताओं की सेना को चारोंतर्फ से काटनेलगा पीछे शिशुमार मच्छपै स्थित हुआ बरुण पाशोंसे महादैत्यों को बांध २४ गदासे मार देनेलगा तब बरुणके सम्मुख विरोचन दैत्य जाके वज्रके समान स्पर्श वाले भालों से और शक्तिसेऔरबाणों से ताड़ना देनेलगा२५ पीछे वरुण भी अपनी गदा से और मुद्गर से विरोचनको पृथ्वीमें गिराके २६ पीछे पाशोंसे बांधता भया जैसे मदवाले हस्तीको बलवाला मनुष्य पीछे विरोचन भी बेगसे तिन पाशोंको सौ प्रकारसे भेदन कर २७ पीछे हस्तीसे वरुणको मध्यभाग में ग्रहण कराके वह हस्ती वरुणके समीप में आके हाथी पै चढ़ा हुआ बिरोचन वरुणको फेंकता भया २८ और पीछे पैरों से मर्दन करनेलगा पीछे मर्दितहुये वरुणको देख शीतल किरणोंवाला चन्द्रमा २९ समीप में प्राप्तहो शरीरको दारण करने योग्य वाणोंसे तिस हस्तीको ताड़न करनेलगा ३० तब वह हस्ती परम पीड़ाको प्राप्त हुआ परन्तु बरुणजीको पैरों के तलसे बारंबार मर्दन करनेलगा ३१ तब मर्दित हुआ वरुण तिस हस्तीको अपने पैरोंसे हस्तीके पैरोंको दृढ़ ग्रहणकर और हाथोंसे पृथ्वीका स्पर्शकर और मस्तकको बलसे उठा ३२ और अपनी अंगुलियों करके तिस हस्तीकी पूंछको ग्रहण कर और नागरूपी फांसीसे बांधके विरोचन सहित फीलवान और हस्तीको वरुण फेंकता भया ३३ तब

हस्ती सहित बिरोचन दैत्य पृथ्वीतलमें पड़ा जैसे सूर्य का गेराहुआ। सुकेशीका पुर ३४ पीछे गदा और पाशों को धारण करनेवाला बरुण बिरोचनके मारनेको भागा तब सब दैत्यों ने एकबार मेघके शब्दके समान शब्द से युक्त ३५ हाहा बचन बोला कि हे प्रह्लाद ! हेजम्भक ! हेकुम्भक ! हे अन्धक ! अब आप रक्षा करो ३६ और दानवोंकी सेनाको पालनेवाला बिरोचन बरुणने पृथ्वी में प्राप्त करदिया है और बाहनों सहित दैत्यों को चूर्णित करनेवाला बरुण फांसी से बांधके और गदासे मारताहै जैसे अश्वमेध यज्ञमें इन्द्र पशुओंको ३७ तब दैत्योंके कहेहुये शब्दको जम्भक आदि सब दैत्य सुनके बरुणके सम्मुख प्राप्त होनेलगे जैसे अग्निके सम्मुख पतंग ३८ पीछे आवतेहुये बिरोचनको बरुण त्यागके और अपनी फांसियोंको बिस्तारकर और गदाकोभ्रमा और जंभ आदि दैत्यों के सम्मुख भागा ३९ पीछे पाश करके जंभ को बांध और बज्र के समान हाथ के मुक्के से मार पीछे अपने पैरके वेग से कुम्भक को और मुक्के के बलसे दैत्योंकी सेनाको पृथ्वी में गिराता भया ४० तब बरुणजी से अर्दितहुये सब दैत्य शस्त्रों का त्यागकर दिशाओंमें भागतेभये पीछे संक्षुभित हुआ अंधक बरुणजीके संग युद्ध करनेको प्राप्त भया ४१ तब आवतेहुये अंधकको पाश से बांध गदा करके बरुण ताड़ित करता भया पीछे पाशको तोड़के गदाको ग्रहणकर अंधक वरुणके सम्मुख गया ४२ तब वरुणजी वेगसे

समुद्रमें प्राप्तहुये तब अंधक देवताओंकी सेनाको म-
र्दित करनेलगा ४३ पीछे पवन से बढ़ाहुआ अग्नी दैत्यों
की सेनाको दग्ध करनेलगा तिसके सम्मुख महात्मा
और अस्त्रों का जाननेवाला और उग्रबीर्य वाला और
दानवोंका विश्वकर्मा ऐसा मयनामक दैत्य प्राप्तहुआ
४४ तब शम्बरके संग आवते हुये मयनामा दैत्यको
पवन सहित अग्नि देखके शक्तिसे मय और शम्बरके
कंठमें ताड़नादे और बलसे ग्रहण करता भया ४५
तब शक्तिकी चोट लगनेसे कटीहुई देहवाला मय और
शम्बर पृथ्वीमें पड़ा ४६ और दोनोंदैत्य अग्निसे दग्ध
होतेहुये विस्तारपूर्वक घोर शब्द को करने लगे जैसे
सिंहसे पीड़ितहुआ हस्ती ४७ पीछे तिस शम्बरके शब्द
को सुनके क्रोध करके लाल नेत्रोंवाला अंधक कहने
लगा यह क्याहै और किसने युद्धमें मय और शम्बर
को जीतलिया ४८ तब दैत्योंके योद्धा कहने लगे कि
अग्निसे ये दग्ध होते हैं सो हे दैत्यस्वामिन्! इन्होंकी
रक्षाकर और यह अग्नी किसी दैत्यसेभी निवारण
नहीं कराजाता ४९ ऐसे दैत्योंसे प्रेरित किया अंधक
वेगसे परिघ शस्त्रको उठा अग्निके सम्मुख ठहरठहर
ऐसे कहता हुआ भागा ५० तब अंधक के वचन को
सुन क्षोभित हुआ अग्नी दैत्यको पृथ्वीमें गेर पीसने
लगा पीछे अंधक अग्निके सम्मुख प्राप्तहो ५१ उत्तम
शस्त्र करके अग्निको काटताभया तब समाहत हुआ
अग्नी शम्बर और अंधक को छोड़ वेग से अंधक के

सम्मुख भागा ५२ तब आवतेहुये अग्निको फिर अंधक परिघकी चोट मस्तकमें मारता भया ऐसे अंधक से ताड़ित हुआ अग्नी भयसे युद्धभूमिसे अलग भागता भया ५३ पीछे अंधक वायु चन्द्रमा सूर्य साध्य सब रुद्र अश्विनीकुमार बसु दिव्य सर्प इन्होंको बाणों से पराङ्मुख अर्थात् दौड़ाताभया ५४ ऐसे देवताओंकी सेना और इन्द्र रुद्र यम चन्द्रमा इन आदिको जीत और दैत्य गणोंसे पूजित ऐसा अंधक पृथ्वी में प्राप्त हुआ ५५ पीछे पृथ्वीमें प्राप्त हो करके देनेवाले राजाओं को कर और चराचर जगत्को बशमें स्थापित कर पाताल लोकमें अश्मकापुरमें प्रवेश करताभया ५६ तहां स्थित होनेवाले अंधकके समीपमेंभी गन्धर्व विद्याधर सिद्ध इन्होंके समूह और अप्सरा परिचार कर्म के लिये पातालमें बसनेलगे ५७॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांअंधकविजयोनाम
दशमोऽध्यायः १०॥

# ग्यारहवां अध्याय॥

नारद ने पूछा कि हे भगवन्! जो आपने कहा कि सुकेशीका नगर आकाशसे सूर्यने पृथ्वीमें गिरा दिया सो यह आख्यान कब हुआ और वह नगर कबहुआ और किसने किया १ और यह सुकेशी कौन हुआ और किसने इसके लिये नगर दिया और किसवास्ते सूर्यने आकाशसे पृथ्वीपै गिरादिया २ पुलस्त्यजी

बोले हे नारद ! सावधान होके मेरेसे सुन जैसे ब्रह्माजी ने कहा है तैसे ३ बिष्वक्सेन नाम से बिख्यात एक निशाचर होता भया ४ तिसके अति गुणवाला सुकेशी पुत्र हुआ तिस सुकेशी पै प्रसन्न हुये महादेवजी आकाश में विचरनेवाला पुर और शत्रुओं से जीता नहीं जावे और शत्रुओं से मारा नहीं जावे ५ इन तीन बरोंको देते भये तब महादेव से आकाशचारी नगरको प्राप्तहो धर्म मार्गमें स्थितहुआ सुकेशी निशाचरोंके संग रमण करता भया ६ पीछे एक समय में वह निशाचर मागध बनमें जाके तहां भावित आत्मावाले ऋषियों के आश्रमों को देखता भया ७ और ऋषियों को देख प्रणाम कर और ऋषियों के सकाश से दियेहुये आसनपै स्थितहो सब ऋषियों से सुकेशी कहने लगा ८ सुकेशीने कहा कि मेरे हृदय में एक संशयहै सो मैं पूछनेकी इच्छा करूं हूं सो आप मेरेसे कहो मैं नहीं जानता ९ संसारमें और परलोकमें कल्याणरूपी क्या है और किस करके पूजने के योग्य प्राणी होसक्ताहै और किस करके सत्पुरुषों में सुखको प्राप्त होताहै १० पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! ऐसे सुकेशी के वचन को सुन इस लोकमें और परलोक में कल्याणरूपी पदार्थ को विचार ११ सब ऋषि कहने लगे हे राक्षसपुंगव ! हम कहते हैं सुन जो इस लोकमें और परलोक में उत्तम और अविनाशी ऐसा धर्म है तिसके आश्रय होके पूज्य और सुखी होजाता है १२ सुकेशी कहनेलगा किन लक्षणोंवाला धर्म होताहै

किन आचरणोंवाली सत्क्रिया होती है और जिसके आश्रित होके देवता आदि दुःखित नहीं होते वह धर्म कहना उचितहै १३ ऋषि कहनेलगे कि सब काल में यज्ञ आदि क्रिया और स्वाध्याय और बेदके सार को जानना और बिष्णुकी पूजामें प्रीति और बिष्णुका स्मरण १४ यह देवताओं का परमधर्म है और युद्धका करना और मात्सर्य्य और युद्धमें सत्क्रिया करनी और नीति शास्त्रों का जानना और महादेव की भक्ति यह दैत्यों का परमधर्म है १५ और योगाभ्यास करना और बेदका पढ़ना और ब्रह्मका जानना बिष्णुमें और शिव में स्थिर भक्ति यह सिद्धोंका परमधर्म है १६ और आपसे बड़ेकी उपासना करनी नाचने और गानेकी बिद्या में कुशलता और सरस्वती में स्थिरभक्ति यह गंधर्वों का परमधर्म है १७ और बिद्याओं को धारण करना अतुल ज्ञान और पुरुषार्थ में बुद्धि और देवीमें भक्ति यह बिद्याधरोंका परमधर्महै १८ और गंधर्वोंकी बिद्याओं को जानना और सूर्य में स्थिर भक्ति और सब शिल्प बिद्याओं में कुशलता यह किन्नरोंका परमधर्म है १९ ब्रह्मचर्य और मानका त्याग और योगाभ्यास में अति प्रीति और सब जगह इच्छापूर्वक बिचरना यह पितरों का परमधर्म है २० ब्रह्मचर्य और प्रमाणित भोजन करना और जाप करना और नियम और धर्मों को जानना यह ऋषियों का परमधर्म है २१ और बेद का पढ़ना ब्रह्मचर्य दान पूजा और कृपणता का त्याग

और परिश्रमका त्याग और दया और जीवोंकी रक्षा करनी और क्षमा २२ और इन्द्रियोंको जीतना और शरीरकी शुद्धि और मंगलकर्म और महादेव सूर्य देवी इन्होंमें भक्ति यह मनुष्योंका परमधर्महै २३ और धनों कास्वामीपना और भोग और वेदकापढ़ना और महादेवकी पूजा और अहंकार और धूर्त्तता यह गुह्यकोंका परमधर्म है २४ और पराई स्त्रीको खोश लेना और पराये धनमें बांछा और वेदका पढ़ना और महादेवमें भक्ति यह राक्षसोंका परमधर्म है २५ अविवेक और अज्ञान और शरीरकी अशुद्धि और मिथ्या बोलना और सब कालमें मांसकी इच्छा रखनी यह पिशाचों का परमधर्म है २६ हे राक्षस! ऐसे इन बारह योनियों में बारहधर्म ब्रह्माजीनेकहे हैं २७ सुकेशी कहनेलगा जो तुम्होंने शाश्वत बारह धर्मकहे वे ठीकहैं परन्तु मनुष्य के धर्मोंको फिर कहो २८ ऋषि कहनेलगे हे राक्षस! मनुष्य आदिके धर्मोंको सुन जो पृथ्वी के पृष्ठपै सात द्वीपोंमें मनुष्य बसतेहैं २९ और पचासकिरोड़ योजन विस्तार वाली यह पृथ्वी जलपै स्थित है जैसे नदीके जलमें नौका ३० और तिस पृथ्वीपै देवताओंके ईश ब्रह्माजी कर्णिकाके आकार ऊंचा उत्तम शैलेंद्र को स्थापित करते भये ३१ तिस पर्वतके चारों दिशाओं में इस पवित्र प्रजाको ब्रह्मा रचताभया और सप्तद्वीप भी ब्रह्माजीने करेहैं ३२ सो पृथ्वीके मध्यभाग में एक लक्ष योजन परिमाण वाला जम्बूद्वीप विख्यातहै और

तिसके अगाड़ी दो लाख योजन बिस्तार वाला ३३ क्षाररूप जलका समुद्रहै और तिसके बाहर चारलाख योजन बिस्तारवाला प्लक्षद्वीप है तिसके बाहर आठ लाख योजन बिस्तार वाला ३४ ईखके रसका समुद्र है और तिसके बाहर सोलहलाख योजन बिस्तार वाला शाल्मलीद्वीपहै ३५ और तिसके बाहर बत्तीस लाख योजन बिस्तारवाला मदिराका समुद्र है और तिसके बाहर चौंसठलाख योजन बिस्तार वाला कुश द्वीपहै ३६ तिसके बाहर एक किरोड़ और अट्ठाईस लाख योजन बिस्तार वाला घृतका समुद्रहै और तिसके बाहर दो किरोड़ और छप्पनलाख योजन बिस्तार वाला क्रौंचद्वीपहै और तिससे बाहर पांचकिरोड़ और बारहलाख योजन बिस्तार वाला जलका समुद्र है ३७ और तिसके बाहर दशकिरोड़ और चौबीसलाख योजन बिस्तार वाला शाकद्वीप है और तिससे बाहर बीस किरोड़ और अड़तालीसलाख योजन बिस्तार वाला दूधका समुद्रहै और जहां शेषकी शय्यापै बिष्णु भगवान् शयन करते हैं ३८ ऐसे ये आपस में दुगुने दुगुने बिस्तारवाले स्थित होरहे हैं और हे राक्षसेन्द्र! इन द्वीपोंकी चालीस किरोड़ और पंचानबेलाख योजन बिस्तारकी संख्या हुई ३९ और क्षीरसमुद्रके बाहर चार किरोड़ और बावनलाख योजन बिस्तार वाला पुष्करद्वीप है ४० और तिसके बाहर शेषरहे योजनों के बिस्तार वाला लाखके मंडसे पूरित कटाह करके

चारोंतरफसे पूरित होरहाहै ४१ ऐसे अलग अलग धर्मोंवाले और अलग अलग क्रियाओंवाले सातद्वीप हैं ४२ तिन्होंके वर्तावको सुन प्लक्षद्वीपसे लगायत और शाकद्वीप तक सनातन मनुष्य बसतेहैं तिन्हों में युगोंकी अवस्था कभीभी नहीं है ४३ और तहां देव-ताओंके समान मनुष्य आनन्दित रहते हैं और तहां दिव्य धर्महै और तहां कल्पके अन्तमें तिन्होंका नाश होताहै ४४ और जो भयानकरूप पुष्करद्वीपमें मनुष्य वसते हैं वे पैशाच धर्म के आश्रितहुये कर्मके अन्त में नष्ट होजाते हैं ४५ सुकेशी कहनेलगा शौचसे र-हित और घोर और कर्मके अन्तमें नाश करनेवाला ऐसा पुष्करद्वीप आपने किसवास्ते प्रकाशितकिया ४६ ऋषि कहनेलगे हे निशाचर! तिस पुष्करद्वीपमें रौरव आदि दारुण नरकहैं ४७ सुकेशी कहनेलगा हे ऋषियो! रौद्ररूपी नरक कितने हैं और मार्गकरके कितने प्रमाण वालेहैं और कैसा तिन्होंका स्वरूपहै ४८ ऋषि कहने लगे हे राक्षसश्रेष्ठ! सब रौरव आदि नरकों के प्रमाण और लक्षण सुन वे रौरव आदि इक्कीस नरकहैं ४९ तिन्हों में दोहजार योजन ज्वलित अंगारों से विस्तृत प्रथम रौरव नरकहै ५० और जहां नीचे स्थितकरा अग्निसे तपाईहुई ताँबाकी पृथ्वी है और रौरवसे दुगुना विस्तार में महारौरव नरकहै ५१ और महारौरवसे दुगुना ता-मिश्र नरक है और तामिश्र से दुगुना विस्तार वाला अन्धतामिश्र नरक है ५२ और तिससे आगे पांचवाँ

कालचक्र नरक है और तिससे आगे छठा अप्रतिष्ठ नरक है और तिससे आगे सातवाँ घटीयंत्र नरक है ५३ और तिससे आगे बहत्तरहजार योजन बिस्तार वाला असिपत्रबन नामसे बिख्यात आठवाँ नरक है ५४ और तिससे आगे तप्तकुंड नामसे बिख्यात नवाँ नरक है और तिससे आगे कूटशाल्मली नाम से बिख्यात दशवां नरक है और तिससे आगे करपत्र नरक है और तिससे आगे श्वानभोजन नरक है ५५ और तिससे आगे संदंश नरकहै और तिससे आगे लोहापिंड नरक है और तिससे आगे करंभसिक्ता नरक है और तिससे आगे घोररूपी चारनदी नरकहै और तिससे आगे क्रिमिभोजन नरक है ५६ और तिसके आगे घोररूपी बैतरणी नरक है ५७ और तिसके आगे शोणितपूयभोजन नरक है और तिसके आगे क्षुराग्रधार नरक है तिसके आगे संशोषण नरक है हे सुकेशीराक्षस! ऐसे इक्कीस नरक तहां स्थितहैं ५८॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांभुवनकोशेपुष्करद्वीपवर्णन न्नामैकादशोऽध्याय: ११॥

## बारहवां अध्याय॥

सुकेशी कहनेलगा हे विप्रेन्द्रो! किसकर्मकरके इन नरकोंमें कैसे प्राप्तहोते हैं यह कहो मुझको अति आ-श्चर्य है १ ऋषि कहनेलगे हे निशाचर! जिस जिस कर्म करके अपने कर्मके फलको भोगनेके लिये जहां

जन्मतेहैं तिन नरकों का मेरेसे सुन २ जिन्होंने वेद देवता ब्राह्मण इन्होंकी निरंतर निन्दा करी है और जो पुराण इतिहास इन्होंके अर्थोंको नहीं मानतेहैं ३ और जो पापी गुरुकी निन्दा करतेहैं और जो यज्ञमें विघ्न करतेहैं और जो दाताको दानसे निवारण करते हैं वेसब तिन नरकोंमें पड़ते हैं ४ और जो मित्रों से मित्र स्त्रीसे पति और स्वामीसे नौकर और पिता से पुत्र और याज्यसे उपाध्याय ये जो आपसमें अधर्म से भेद करतेहैं ५ और जो एकको कन्यादेके फिर उस कन्याको दूसरेको देतेहैं ऐसेमनुष्य धर्मराजके किंकरों से दुःखित करे करपत्र नरक में पड़ते हैं ६ और जो दूसरेको उपताप देनेवालेहैं कपूर और खसको हरने वाले हैं और जो चँवर और व्यजना के हरनेवाले हैं वे मनुष्य करंभसिक्ता नरकमें गेरेजातेहैं ७ और जो श्राद्धमें और देवकर्ममें और पितृकर्ममें निमंत्रितकिया ब्राह्मण अन्यजगह भोजनकरलेता है वह मूढ़ तीक्ष्ण तुण्डोंवाले पक्षियोंसे दोप्रकार करके खैंचाजाता है ८ और जो साधुमनुष्यों के मर्मोंको वाणियों से काटता है तिसके शरीरपै पीड़ादेनेवाले पक्षी स्थित होतेहैं ९ और जो साधुपुरुषोंकी चुगलीकरताहै तिसकी जीभको वज्रके समान तुंडोंवाले और वज्रके समान नखोंवाले काक खैंचते हैं १० और माता पिता गुरु इन्हों की अवज्ञा करतेहैं वे मनुष्य राद विष्ठा मूत्र इन्होंसे पूरित अप्रतिष्ठित नरकमें नीचेको मुख करके डूबते हैं ११

और जो देवता अतिथि अर्थात् अभ्यागत भृत्यअभ्यागत बालक माता पिता अग्नि इन्होंको भोजनकराये बिना आप भोजन करलेतेहैं १२ वे दुष्ट मनुष्य लोहू रादसे मिलाहुआ अन्नको भोजन करते हैं पीछे मरिके भूखसे पीड़ित और सूईकेसमान मुखवाले और पर्वतों के समान शरीरवाले ऐसेहोके जन्मतेहैं १३ और जो एकपंक्तिमें स्थितकिये मनुष्योंको दो प्रकारके भोजन कराते हैं वह बिष्ठारूप भोजन है और नरक में प्राप्त होते हैं १४ और जो एक अपनेही मतलबके वास्ते किसीको प्राप्त होते हैं अर्थात् दूसरे का कभी भला नहीं चाहतेहैं और जो भोजनको बिना बिभागकरे खालेतेहैं वे खखाररूपी भोजनवाले नरकमें प्राप्तहोते हैं १५ और जो उच्छिष्टहोके गौ ब्राह्मण अग्नि इन्हों का स्पर्श करते हैं तिन्होंके हाथ तप्तकुंभमें प्राप्त कराये जाते हैं १६ और जो उच्छिष्टहुये सूर्य, चन्द्रमा, तारा गण इन्होंको देखते हैं तिन्होंके नेत्रोंके मध्यमें धर्मराज के किंकर अग्नि लगादेतेहैं १७ और जो मित्रकी भार्या और अपनी माता और ज्येष्ठ भ्राता और पिता और बहन और कुलकीबहू गुरु बृद्ध इन्होंको पैरोंसे स्पर्श करते हैं १८ वे अग्निमें तपाईहुई बेड़ियोंसे पैरोंके द्वारा पीड़ित होतेहैं और मूड़ांसे पैरों तक रौरव नरकमें गेरे जाते हैं १९ और जो जानके अन्यप्रकारसे शास्त्रका उपदेश करते हैं तिन्होंके मुखमें तप्तकरा बालुरेत गेरा जाताहै २० और जो दूधकी खीर मोहनभोग आदि

पदार्थ और मांस इन्हों को देव आदिके बिना वृथा भोजन करतेहैं तिन्होंके मुख में अद्भुत रूपी लोहाके गोले फेंकेजाते हैं २१ और जो गुरु देवता ब्राह्मण इन्होंकी निंदाको सुनतेहैं तिन्हों के कानोंमें अग्नि के समान जलतेहुये २२ लोहेकी कीलें धर्मराजकेदूत ठोंक देते हैं और जो प्रपा देवस्थान बाग ब्राह्मण का स्थान सभा विद्यार्थियों आदिकोंका स्थान २३ कूप बावड़ी तालाब इन्होंका भेदनकर बिध्वंस करदेतेहैं तिन्होंकी देहसे चाम अलग कीजाती है और वे बिलाप करते रहतेहैं २४ और जो गौ ब्राह्मण सूर्य अग्नि इन्हों के सम्मुख मल मूत्र करतेहैं तिन्होंकी गुदाकी आंतों को काक काटतेहैं २५ और जो अपने शरीर की पालना करे और द्रव्यसे रहित पुत्र नौकर स्त्री भ्राता २६ इन आदिको दुर्भिक्षमें त्यागै वह कुत्ताकी योनिमें जन्मता है और जो शरणागतको त्यागते हैं और जो निन्दक की पालना करतेहैं २७ वे किंकरोंसे पीड़ित हुये कोल्हूमें पेरेजाते हैं और जो ब्राह्मणोंको क्लेशितकरतेहैं २८ वे शिलाआदि से पीसे जाते हैं और शोषक द्रव्यों से सुखायेजातेहैं २९ और जो न्यास अर्थात् धरोहर को हरलेते हैं वे बेड़ियों से बांधे हुये और क्षुधासे पीड़ित और सूखगये हैं तालू ओष्ठ जिन्हों के ऐसे होके बीछुओंके स्थानमें गेरेजाते हैं ३० और पर्वकालमें मैथुन करनेवाले और पापी और पराई भार्यासे भोग करने वाले ऐसे मनुष्य अग्निसे तपाकिये शाल्मली वृक्षसे

और जो देवता अतिथि अर्थात् अभ्यागत मृत्यअभ्यागत बालक माता पिता अग्नि इन्होंको भोजनकराये बिना आप भोजन करलेतेहैं १२ वे दुष्ट मनुष्य लोहू रादसे मिलाहुआ अन्नको भोजन करते हैं पीछे मरिके भूखसे पीड़ित और सूईकेसमान मुखवाले और पर्बतों के समान शरीरवाले ऐसेहोके जन्मतेहैं १३ और जो एकपंक्तिमें स्थितकिये मनुष्योंको दो प्रकारके भोजन कराते हैं वह बिष्ठारूप भोजन है और नरक में प्राप्त होते हैं १४ और जो एक अपनेही मतलबके वास्ते किसीको प्राप्त होते हैं अर्थात् दूसरे का कभी भला नहीं चाहतेहैं और जो भोजनको बिना बिभागकरे खालेतेहैं वे खखाररूपी भोजनवाले नरकमें प्राप्तहोते हैं १५ और जो उच्छिष्टहोके गौ ब्राह्मण अग्नि इन्हों का स्पर्श करते हैं तिन्होंके हाथ तप्तकुंभमें प्राप्त कराये जाते हैं १६ और जो उच्छिष्टहुये सूर्य, चन्द्रमा, तारागण इन्होंको देखते हैं तिन्होंके नेत्रोंके मध्यमें धर्मराज के किंकर अग्नि लगादेतेहैं १७ और जो मित्रकी भार्या और अपनी माता और ज्येष्ठ भ्राता और पिता और बहन और कुलकीबहू गुरु बृद्ध इन्होंको पैरोंसे स्पर्श करते हैं १८ वे अग्निमें तपाईहुई बेड़ियोंसे पैरोंके द्वारा पीड़ित होतेहैं और मूड़ोंसे पैरों तक रौरव नरकमें गेरे जाते हैं १९ और जो जानके अन्यप्रकारसे शास्त्रका उपदेश करते हैं तिन्होंके मुखमें तप्तकरा बालुरेत गेरा जाताहै २० और जो दूधकी खीर मोहनभोग आदि

पदार्थ और मांस इन्हों को देव आदिके बिना वृथा भोजन करतेहैं तिन्होंके मुख में अद्भुत रूपी लोहाके गोले फेंकेजाते हैं २१ और जो गुरु देवता ब्राह्मण इन्होंकी निंदाको सुनतेहैं तिन्हों के कानोंमें अग्नि के समान जलतेहुये २२ लोहेकी कीलें धर्मराजकेदूत ठोंक देते हैं और जो प्रपा देवस्थान बाग ब्राह्मण का स्थान सभा बिद्यार्थियों आदिकोंका स्थान २३ कूप बावड़ी तालाब इन्होंका भेदनकर विध्वंस करदेतेहैं तिन्होंकी देहसे चाम अलग कीजाती है और वे बिलाप करते रहतेहैं २४ और जो गौ ब्राह्मण सूर्य अग्नि इन्हों के सम्मुख मल मूत्र करतेहैं तिन्होंकी गुदाकी आंतों को काक काटतेहैं २५ और जो अपने शरीर की पालना करे और द्रव्यसे रहित पुत्र नौकर स्त्री भ्राता २६ इन आदिको दुर्भिक्षमें त्यागै वह कुत्ताकी योनिमें जन्मता है और जो शरणागतको त्यागते हैं और जो निन्दक की पालना करतेहैं २७ वे किंकरोंसे पीड़ित हुये कोल्हूमें पेरेजातेहैं और जो ब्राह्मणोंको क्लेशितकरतेहैं २८ वे शिलाआदि से पीसे जाते हैं और शोषक द्रव्यों से सुखायेजातेहैं २९ और जो न्यास अर्थात् धरोहर को हरलेते हैं वे बेड़ियों से बांधे हुये और क्षुधासे पीड़ित और सूखगये हैं तालू ओष्ठ जिन्हों के ऐसे होके बीछुओंके स्थानमें गेरेजाते हैं ३० और पर्वकालमें मैथुन करनेवाले और पापी और पराई भार्यासे भोग करने वाले ऐसे मनुष्य अग्निसे तप्तकिये शाल्मली वृक्षसे

स्पर्श करायेजाते हैं ३१ और उपाध्यायको नीचे कर जिन दुष्ट ब्राह्मणोंने अध्ययन किया है तिन्होंका अध्यापकरूपी गुरुके शिर पै पत्थर रक्खा जाता है ३२ और जिन्होंने पानीमें मूत्र खखार बिष्ठा इन्होंकी प्राप्ति करी है वे बिष्ठा, मूत्र, दुर्गंध, राद इन्होंसे पूरित नरकमें गेरेजाते हैं ३३ और जो श्राद्धके भोजनको आपसमें खाते हैं वे मूर्ख अपनेमांसोंका भोजनकरतेहैं ३४ और जो देवता अग्नि गुरु भार्या माता पिता इन्हों को त्यागते हैं वे पर्वतके शृंगसे नीचे गेरदिये जाते हैं ३५ और जो दूसरे बिवाहीहुई स्त्रीके पतिहैं और कन्याका विध्वंस करते हैं और जो स्त्रीका गर्भ गिरादेते हैं वे कीड़े और कीड़ियों को भक्षण करते हैं ३६ और जो चांडाल से और नीचजाति से यज्ञ कराके दक्षिणा लेते हैं वे यजमान और ब्राह्मण पत्थर में कीड़ाकी योनिको प्राप्त होते हैं ३७ और जो जीव के पृष्ठभाग के मांसको खाते हैं और जो ईखके द्वारा जीविका करते हैं वे जहां भेड़िये भक्षण करलें ऐसे नरक में गेरेजाते हैं ३८ और सुवर्ण की चोरीकरनेवाला और ब्राह्मण को मारनेवाला और मदिरा का पान करनेवाला और गुरुकी शय्यापै स्थित होनेवाला गाय और पृथ्वी को हरनेवाला और गाय स्त्री बालक इन्होंको मारनेवाला ३९ ऐसे मनुष्य मात्र और पीठीको बेचनेवाले और अशुद्ध नित्य नैमित्तिकको नाशनेवाले ४० और झूठी साक्षीको भरने वाले ऐसे ब्राह्मण दशहजार बर्षों तक महारौरव नरक

में स्थित होके पीछे दशहजार बर्षोंतक तामिश्र नरक में स्थित होके ४१ पीछे दशहजार बर्ष अंधतामिश्र में बसके पीछे दशहजार बर्ष असिपत्र बनमें बसके पीछे दशहजार बर्ष घटीयंत्रमें बसके पीछे दशहजार बर्ष तप्त कुंभनरक में बसताहै ४२ और कृतघ्नी मनुष्य भी इन्हीं लोकोंमें इसीप्रकार से बसताहै ४३ और जैसे देवताओं में श्रेष्ठ बिष्णु भगवान् हैं और जैसे पर्वतों में श्रेष्ठ हिमवान् पर्वतहै और शस्त्रों में श्रेष्ठ सुदर्शनचक्र है और पक्षियों में श्रेष्ठ गरुड़जी हैं ४४ और महा सर्पोंमें श्रेष्ठ शेषनाग हैं और पंच महाभूतों में श्रेष्ठ पृथ्वी है और नदियों में श्रेष्ठ गंगाहैं और जलसे उपजनेवालों में श्रेष्ठ कमल है और जैसे पूजने के योग्योंमें महादेवके चरणों की भक्तिहै ४५ और क्षेत्रों में उत्तम कुरुजांगल है और तीर्थोंमें श्रेष्ठ पृथूदक तीर्थ है और सरों में उत्तम उत्तर मानसरोवर है और सेवनेके योग्य बनों में उत्तम नन्दनवन है ४६ और सब लोकोंमें श्रेष्ठ ब्रह्मलोकहै धर्मकी बिधि और क्रियामें सत्य बोलना श्रेष्ठ है और यज्ञों में श्रेष्ठ अश्वमेध यज्ञ है और स्पर्श करनेवालों में श्रेष्ठ पुत्र है ४७ और तपस्वियों में श्रेष्ठ बशिष्ठजी हैं और शास्त्रों में श्रेष्ठ बेदहैं और पुराणों में श्रेष्ठ मत्स्यपुराणहै और संहिताओं में श्रेष्ठ स्वायंभुवमनुकी उक्ति है ४८ और स्मृतियों में उत्तम मनुस्मृति है और तिथियों में उत्तम अमावास्या है और मेषकी और तुलाकी संक्रांति में जब दिन और रात्रि समान होते हैं तिस काल

में दान श्रेष्ठहै और तेजवालों में श्रेष्ठ सूर्य हैं और तारा गणों में श्रेष्ठ चन्द्रमा है और ह्रदोंमें श्रेष्ठ जलका समुद्र है ४९ और राक्षसों में उत्तम तू सुकेशीराक्षस है और पाशों में श्रेष्ठ नागपाश है और तिमितों में श्रेष्ठ बंध है और अन्नों में श्रेष्ठ चावल है और दो पैरवालों में श्रेष्ठ ब्राह्मण है और चार पैरवालों में श्रेष्ठ गायहै और श्वापदों में श्रेष्ठ सिंह है ५० और पुष्पों में श्रेष्ठ चमेलीका पुष्प है और नगरों में श्रेष्ठ कांचीनगर है और नारियों में श्रेष्ठ रम्भानारी है और आश्रमवालों में श्रेष्ठ गृहस्थ है और पुरों में श्रेष्ठ द्वारकापुरी है और देशों में श्रेष्ठ मध्यदेश है ५१ और फलों में श्रेष्ठ आम्रफल है और मुकुलों में श्रेष्ठ अशोकबृक्ष है और सब ओषधियों में श्रेष्ठ हरड़ै हैं और मूलोंमें श्रेष्ठ कंदहै और रोगों में श्रेष्ठ अजीर्ण है ५२ और श्वेतरंगवालों में श्रेष्ठ दूधहै और आच्छादित करनेवालों में श्रेष्ठ कपासहै और कलाओं में गणितबिद्या का जानना श्रेष्ठहै और बिज्ञान मुख्यों में श्रेष्ठ इन्द्रजाल है ५३ और शाकोंमें श्रेष्ठ मकोह का शाकहै और रसों में श्रेष्ठ लवण है और फलों में श्रेष्ठ ताड़का फल है और नलिनियों में श्रेष्ठ पंपाहै और बन बासियों में श्रेष्ठ ऋक्षराजजाम्बवान् हैं ५४ और सुबृक्षों में श्रेष्ठ वटका बृक्षहै और ज्ञानियों में श्रेष्ठ महादेवजी हैं और सतियों में श्रेष्ठ पार्वती हैं और मुनियों में श्रेष्ठ कपिलजी हैं ५५ और बैलों में श्रेष्ठ नीलरंग का बैल है और भयंकर दुःसह रूपस्थानों में बैतरणी नदी है ५६

और पापियों में मुख्य कृतघ्न है और ब्रह्महत्यारा गोहत्यारा आदिकाभी पाप हटजाताहै ५७ परन्तु कृतघ्नी और बिश्वासघाती इन्होंका पाप किरोड़हों बर्षों तक भी दूर नहीं होता ५८ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांकर्मविपाकोनामद्वादशोऽध्यायः १२॥

# तेरहवां अध्याय ॥

सुकेशी कहनेलगा हे ऋषियो ! तुम्होंने पुष्करद्वीपका आख्यानकहा अब जम्बूद्वीपका संस्थान कहो १ ऋषि कहनेलगे—हे राक्षसवर ! जम्बूद्वीपका संस्थान हमारे से सुन स्वर्ग मोक्षरूपी फलको देनेवाला नवभेदों से बिस्तृत जम्बूद्वीप है २ तिसके मध्यभाग में इलाबृत खंडहै और तिसकी पूर्बदिशा में भद्राश्व खण्ड है और तिसकी अग्निदिशा में ईरावान् खंडहै ३ और तिसके दक्षिणभाग में भारतखंडहै और तिसकी नैर्ऋत्यादिशा में हरिखंडहै और तिसकी पश्चिम दिशा में केतुमाल खंडहै ४ और तिसकी बायव्य दिशामें रम्यक खंड है और तिसकी उत्तर दिशा में कुरुखंड है और ईशान दिशामें किंपुरुषखंडहै हे राक्षसोत्तम ! ऐसे ५ पवित्र और रमणीय नवखंड जम्बूद्वीप में कहेहैं और एक भारतखंड को छोड़ के अन्य इलाबृत आदि आठ ६ खंडों में युगोंकी अवस्था जरा और मृत्युका भय नहींहै तिन्हों में सुखपूर्वक स्वाभाविकी सिद्धि रहती है ७ और तहां विपर्यय नहीं है और इस भारतखंड में भी नवखंडहोरहे

हैं ८ और समुद्र करके अंतरित हुये सब भारतखंड के नवोखंड आपसमें अगम्यहैं अर्थात् इन्द्रद्वीप, केसेरु, ताम्रबर्ण, गभस्तिमान् ९ नागद्वीप, कटाहसिंहल, बारुण, कुमाराख्य इन नामोंवाले नवखंड हैं १० तिन्हों में दक्षिण उत्तर के बीच में कुमाराख्य खंड है और पूर्व में किरातस्थितहैं और पश्चिम में यवन स्थितहैं ११ और दक्षिण में अंध्र स्थितहैं और उत्तरमें तुरुष्क स्थित हैं और पूजा युद्ध व्यवहार शुश्रूषा इन्होंके करनेवाले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये मध्यभाग में बसते हैं १२ इन्हों के स्वर्ग और मोक्ष और पुण्य और पाप इन्होंकीप्राप्ति कर्मों के अनुसार होतीहै और महेंद्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान् १३ ऋक्ष, बिंध्य, पारियात्र ये सात यहां कुल पर्वत हैं और बिस्तार और उँचाई से युक्त और बिपुल और सुन्दर सानुओंवाले ऐसे लाखोंपर्बत मध्यभाग में अन्य भी हैं १४ अर्थात् कोलाहल, बैभ्राज, मन्दर, अम्बुदाचल १५ बातन्धम बैद्युत् मैनाक सुरस तुंगप्रस्थ नागगिरी गोबर्द्धन १६ पर्वत उज्जयन्त, पुष्पगिरी, अर्बुद, रैवत, ऋष्यमूक, गोमंत, चित्रकूट, कृतस्वन १७ श्रीपर्बत, कोंकण इन आदि सैकड़े अन्यभी बहुत से पर्वत हैं इन्हों से मिले हुये भाग से संयुक्त १८ म्लेच्छ और आर्य लोगों के देश बसते हैं जिन नदियों के जलको म्लेच्छ और आर्य्यजन पीते हैं तिन्होंको सुन सरस्वती, पंचरूपा, कालिंदी, हिरण्यवती १९ शतलज, इंद्रिका, नीला, बितस्ता ऐरावती, कुहू, मधुरा, हारराबी, उशीरा, धातुकी, रसा २०

गोमती, धूतपापा, बाहुदा, दृषद्वती, निश्चिरा, गंडकी, चित्रा, कौशिकी, धूसरा २१ सरयू, लोहिनी, गंगा, बेद स्मृति,बेदसिनी, बृत्रघ्नी, सिंधु २२ पर्णाशा, नन्दिनी, पाविनी, मही,पारा, चर्मण्वती, नूपी, बिदिशा, बेणुमति २३ क्षिप्रा,अवन्ती,पारियात्रा, महानद, रूपशोण, नर्मदा, सुरसा, कृपा, मन्दाकिनी दशार्णा २४ चित्रकूटके समीपमें बहनेवालीचित्रा,उत्पला,बैतसी, करतोया, पिशाचिका २५ पिप्पल, श्रेणी, बिपाशा, बञ्जलावती, मत्स्यभोजा, शुक्तिमति, मञ्जिष्ठा, कृतिमा, बसु २६ ऋक्षपाल, प्रसूता, बल्गुबाहिनी, शिवा, पयोष्णी, निर्बिन्ध्या, तापी, निषधावति २७ बैतरणी, सिनिबाहू, कुमुद्वती, तोया, महागौरी, दुर्गाधा,शिला २८ बिंध्यपाद, प्रसूता, गोदावरी, भीमरथी, कृष्णा, बेणी, सरस्वती २९ तुङ्गभद्रा, सुयोगा, बाह्या, काबेरी, दुग्धोदा, नलिनी, रेवा, चारिसेना, कलस्वना ३० ये सह्यपर्बत से निकसी हुई नदी हैं और कृतमाला, ताम्रपर्णी, बंजुला उत्पलावती ३१ सिनी, सुदामा ये नदी शुक्तिमान् पर्वत से निकसी हुई हैं ये सब नदियें पापके हरनेवाली ३२ और जगत्की माता और समुद्र की भार्या ऐसी कही हैं और हे राक्षस! अन्य भी हजारहांक्षुद्रनदी सबकालमें बहनेवाली और क्षुद्रकाल में बहनेवाली हैं ३३ उत्तर और मध्यदेश के उपजेहुये प्राणी इन नदियों के जलको पीते हैं ३४ और मत्स्य मुकुन्द,कुणि, कुण्डल, पंचालकारुष्य, कोशल,वृष, शवर, कोबीर, सुलिंग ३५ शक समाशंख ये मध्यदेश के जनहैं

और बाह्लिक, बाटधान, आभीर, कालतोपक ३६ पश्चिम तक्कशूद्र, पह्लव, खेटक, गांधार, यवन, सिन्धु, सौवीर, भद्रक ३७ शीतद्रव, नलित्य, पारावत, समूषक, माठर, उदकधार, कैकेय, दंशन ३८ क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, कांबोज, दर्द, बर्बर, अंग, नीलिक ३९ चीन, तुष, बाह्यतोदर, आत्रेय, भरद्वाज, प्रस्थल, दशेरक ४० लेपक, तारका, रामचन्द्रिका, यामुण्ड, अंतश्चली, मद्र, किरातोंकीजाती ४१ तामस, कसमासा, सुपार्श्व, पाण्डुक, उल्लूक, कुहूक, चूर्ण, स्तूणीपाद, अश्म, कुक्कुट ४२ मांडव्य, मालतीय, उत्तरापथबासी, अंग, बंग, मुद्गर, अन्तरगिरी, बहिरगिरी ४३ प्रबंग, गौर्य्य, नाशाह, बलदंतिका, ब्रह्मोत्तर, प्रावजया, भार्गव, केशव बेरा ४४ प्राग्ज्योतिष, प्रष्ट, बिदेह, ताम्रलिप्तक, माल, मगध, सोनन्द ये पूर्व दिशाकेदेश कहेहैं ४५ और पुंड्रकेरल, चोल, कुल्यराक्षस, जानुष, मूषिकाध्र, कुशा, बाँदा ४६ महासक, महाराष्ट्र, मासिक, कलिंग, आभीर, सहनैषीक, आरण्य, शबर ४७ बलिंद्य, बिन्ध्यशैलप, बैदर्भ, दण्डक, खैरिक, सौशिक, आश्वक, भोगदर्शन ४८ बैशिक, कुलताश्रंध्र, उद्भिद, नल, कारक ये दक्षिणके देशहैं ४९ और सूर्य, उरक, बाटधान, दुर्गाश्व, अलिकट, पुलीय, शशिनील, तापस्, तामस् ५० कारस्कार, सुरभी, नाशिक्य, अंतर, नर्मदा, भारुकच्छ, समाहेय, सारस्वत ५१ बातसेय, सुराष्ट्र, आवन्त्य, आर्बुद ये देश पश्चिमदिशामें स्थित हैं ५२ और कारूष, एकलव्य,

मेकल,उत्कल, उत्तमर्ण, दशार्ण, भोज, किंकठर ५३ तो-
शल, कोशल,त्रैपुर, खल्लिक,तुरष,तुंबर, बहन,नैषध ५४
सूर्य्य, तुंडिकेर, वीतहोत्र,अवंती, हे राक्षस! ये देश बि-
न्ध्यपर्वत की मूलमें स्थित हैं ५५ अब पर्व्वत के आ-
श्रय रहनेवाले देशोंको कहते हैं निराहार, हंसमार्ग,
कुपथ, त्वंगण,खस ५६ कुथ, प्रावर्ण, कुण, पुण्य, कुहूक,
त्रिगर्त, किरात, तोमराशि, शिखाद्रिक ५७ ये पर्वतों के
समीप देश कहे हैं हे निशाचर! ये सबदेश कुमारखण्ड
में बसतेहैं सो इनदेशों में जो देशों के धर्म हैं तिन्होंको
मेरे से सुन ५८॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांभुवनकोशोनाम
त्रयोदशोऽध्यायः १३॥

## चौदहवां अध्याय॥

ऋषि कहनेलगे हे निशाचर! अहिंसा, सत्य, चोरी
का त्याग,दान, क्षमा,इन्द्रियोंका दमन, शांति, कृपणता
का त्याग, शौच,तप १ ये दश अंगोंवालाधर्म सब वर्णों
के वास्ते कहा है और ब्राह्मणको चारों आश्रम धारण
करने कहेहैं २ सुकेशी कहनेलगा हे तपोधनो! ब्राह्मणों
के चारों आश्रम बिस्तारसे मेरेलिये कहो मेरी इसआ-
ख्यानको श्रवण करनेसे तृप्तिनहींहुई ३ ऋषि कहनेलगे
कि यज्ञोपवीत संस्कार को धारणकर ब्रह्मचारीहो गुरु
के समीप में वासकरै तहां जो धर्म कहा है वह वर्णन
करते हैं ४ और स्वाध्याय, अग्निमेंहवन, स्नान, भिक्षा

केलिये अटनकरना और अन्नको गुरु के लिये निवेदन कर और गुरुकी आज्ञासे सबकालमें युक्तरहना ५ और गुरुके कर्म में उद्योग रखना और सम्यक् प्रकार से प्रीति करना और गुरुसे बुलायाहुआ और गुरुमें ध्यान करनेवाला और अन्य जगह नहीं चित्तवाला ऐसा होके पठनकरै ६ और एक व दो व चार बेदोंको गुरुके मुखसे प्राप्तहो अनुज्ञाले और गुरुको दक्षिणा दे ७ गृहस्थाश्रम की कामनावाला ब्रह्मचारी गृहस्थाश्रममें बसे अथवा बानप्रस्थाश्रम में बसै अथवा अपनी इच्छा के अनुसार संन्यासाश्रममें बसै ८ अथवा गुरुकेही गृहमें ब्रह्मचारी निष्ठाको प्राप्त होवे अर्थात् गुरुकी शुश्रूषा करतारहै गुरु के अभाव में गुरु के पुत्र की अथवा गुरु के शिष्यकी शुश्रूषाकरै ९ परन्तु ब्रह्मचर्याश्रममें बसताहुआ शिष्य गुरुके पुत्री की शुश्रूषा नहीं करे ऐसे ब्राह्मण मृत्युको जीतलेता है १० और ब्रह्मचर्याश्रमसे पीछे जो गृहस्थाश्रमकी इच्छाकरै तो अपने गोत्रसे दूसरे गोत्रकी कन्याको बिवाह के और अपने कर्म्मसे धनकीप्राप्तिकर और सदाचारमेंरतहुआ ब्राह्मण सम्यक् प्रकारसे भक्तिकरके पितर, देवता, अभ्यागत इन्हों को प्रसन्नकरतारहै ११ सुकेशी कहनेलगा हे सुव्रताहो! तुम्होंने सदाचार कहा सो तिससदाचारके लक्षणोंको कहो मैं सुनने की इच्छाकरूंहूँ १२ ऋषि कहनेलगे जो तुमको हमने आदरसे सदाचारकहा है तिसके लक्षणों को हे निशाचर! हम कहते हैं सुन १३

गृहस्थी में सब कालमें आचारकी पालना करनी चाहिये आचारसे हीन पुरुषका इसलोकमें और परलोक में कल्याण नहीं है १४ जो सदाचारको छोड़के प्रवृत्त होताहै तिस मनुष्यके यज्ञ, दान, तप ये भूति अर्थात् ऐश्वर्य्यके लिये नहीं होते १५ अर्थात् दुराचारी पुरुष इस लोकमें और परलोकमें आनंदित नहीं होता इस वास्ते सब कालमें यत्नकरना उचित है उत्तम आचार बुरे लक्षणोंको हरता है १६ हे राक्षस! जो तू कल्याण की इच्छा करे है तो एक तरफको चित्त लगा सदाचार के स्वरूप को सुन हम कहते हैं १७ धर्म सदाचारकी जड़है और धन शाखा है और कामना फूलहै और मोक्ष फलहै ऐसे सदाचाररूपी बृक्ष स्थितहै वह पुण्यात्मा पुरुषोंको सेवना उचितहै १८ अर्थात् ब्राह्ममुहूर्त्त में जागके देवते और महर्षियोंका स्मरण करे और प्राभातिक मंगल का उच्चारण करे जो महादेवजी ने कहा है १९ सुकेशी कहनेलगा महादेवजी ने प्रभात में मंगल रूप क्या कहाहै जिसको प्रभात में पठन करने से मनुष्य पापरूपी बंधनों से छूटजाता है २० ऋषि कहनेलगे हे राक्षसश्रेष्ठ! महादेवजी के कहे हुये सुप्रभात को सुन जिसका श्रवण और स्मरण करके मनुष्य सब पापों से छूटजाता है २१ अब सुप्रभात रूपीस्तोत्र वर्णन कियाजाताहै ॥ ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारिर्भानुःशशीभूमिसुतोबुधश्च ॥ गुरुश्चशुक्रःसहभानुजेनददन्तुसर्वेममसुप्रभातम् २२ भृगुर्वशिष्ठःक्रतुरङ्गि

राश्चमनुःपुलस्त्यःपुलहश्चगौतमः ॥ रैभ्योमरीचिश्च्य वनोरुषड्ददन्तुसर्वेममसुप्रभातम् २३ सनत्कुमारःस नकःसनन्दनःसनातनोप्यासुरिपिङ्गलौच ॥ सप्तस्वराः सप्तरसातलाश्चददन्तुसर्वेममसुप्रभातम् २४ पृथ्वीस गन्धासरसास्तथापःस्पर्शीचवायुर्ज्वलितंचतेजः ॥ न भःसशब्दंमहतासहैवददन्तुसर्वेममसुप्रभातम् २५ स प्तार्णवाःसप्तकुलाचलाश्चसप्तर्षयोद्वीपवराश्चसप्त ॥ भूरादिकृत्वाभुवनानिसप्तददन्तुसर्वेममसुप्रभातम् २६ ऐसे प्रभात में इस परम पवित्ररूपी स्तोत्र को जो पठनकरै व स्मरण करै व भक्ति से श्रवणकरै तिसके दुःस्वप्नका नाशहोकै भगवत्के प्रसादसे सत्यरूपीमनो-रथ होजाताहै २७ पीछे अच्छीतरह उठ और शय्या का त्यागकर धर्म और अर्थको चिन्तवनकरै २८ पीछे देव, गौ, ब्राह्मण, अग्नि इन्होंके मार्गको और राजमार्ग को और चतुष्पथ, गोशाला इन्होंको त्यागके और पूर्व और पश्चिमदिशा को त्यागके मल, मूत्र का त्यागकरै २९ पीछे शौचकेलिये मिट्टीसे तीनबारगुदाको और एक बार माटी से लिङ्गको और बायेंहाथको माटी से सात बार और दोनों हाथों में माटी नवबार लगाके पानी से धोडालै ३० और जलके भीतरकी और मूसाके बिल को और शौचसे शेषरही और बांबीकी ऐसी माटीसे सदाचारको जाननेवाला पुरुष शौचकर्म नहीं करे ३१ पीछे भागोंसे रहित पानीकरके पैरोंकोधो पीछे उत्तरका-नीमुख कर और तीन कुल्लेकर पीछे जल के छींटे मार

शिरको हाथ से स्पर्शकरै ३२ पीछे सन्ध्याकाल से निबृत्त हो और कर्म से केशोंकी शुद्धिकर और दन्तधावन कर और शीशा में मुखको देख शिर सहित अङ्गों का स्नान करै ३३ पीछे जलकरके पितर और देवताओं की पूजा कर पीछे अग्निमें हवन कर शुभ पदार्थों को ग्रहण करै पीछे स्थानसे बाहर गमनकरै ३४ तब दूब, दही, घृत, जलसे पूरित घड़ा बच्छा सहित गाय अच्छाबर्ण का बैल, माटी, गोबर, मंगलीकपदार्थ, चावल, धानकी खील, शहद, ब्राह्मण की पुत्री, श्वेतफूल व सुन्दरफूल, अग्नि, चन्दन, सूर्यका बिम्ब और पीपलबृक्ष इन्हों को प्राप्तहोवे पीछे अपनी जाति के अनुसार धर्म्म करै ३५ और देशमें शिक्षित और उत्तम और अपने गोत्रमें प्रचलित ऐसे धर्मका आचरण करै और देश में अनुशिष्टरूपी कुलधर्म्म को और स्वगोत्र के धर्म्मको नहीं त्यागै अर्थात् तिसकरके अर्थकी सिद्धि प्राप्तकरै. और मिथ्याप्रलाप और सत्यसेहीन ३६ और कठोर और आगमशास्त्रके हीन ऐसे बाक्यको नहीं कहै और किसीकी निन्दा नहीं करै और निन्दाके योग्य आपभी होवै नहीं और धर्मका भेद नहीं करे और दुष्ट मनुष्योंसे संगनहीं करै ३७ और सन्ध्या समय में और दिनमें और सब प्रकारकी परस्त्रियों में और रजस्वलाहुई अपनी स्त्री से मैथुनको नहीं करै ३८ जलमें और पृथ्वीमें बृथा अटन नहीं करे और बृथा दान नहीं करे और यज्ञके विना पशुको मारेनही और गृहस्थी समयके बिना बृथा स्त्री

संग करैनहीं ३९ क्योंकि बृथा अटनसे नित्यप्रति हानि होती है और बृथा दान से धनका नाश होता है और यज्ञके बिना पशुको मारने से नरकको प्राप्त होताहै ४० और बृथा स्त्रीसंग करने से सन्तान की हानि श्लाघा और वर्णसंकरताका भय रहता है इसवास्ते बृथा स्त्री संगसे लोकमें भयकरना चाहिये ४१ और पराये द्रब्य में और पराई स्त्रीमें बुद्धिमान् मन नहीं लगावे क्योंकि पराया द्रब्य नरक में लेजाताहै और पराई स्त्री मृत्यु को प्राप्त करती है ४२ और नग्नहुई पराई स्त्री को देखै नहीं और चोरों से सम्भाषण नहीं करे और रज· स्वला स्त्री का दर्शन, स्पर्शन, सम्भाषण इन्हों को बर्जि देवै ४३ और सुन्दर रूपवाली पराई स्त्री के संग और अपनी माताकेसंग और अपनी पुत्री के संग बुद्धिमान् एक आसन पै स्थित नहीं होवे ४४ और नग्नहोकै स्नान नहींकरे और नग्नहोकै शयनभी नहीं करे और नग्नहोकै भ्रमण नहींकरे ४५ और टूटा आसन और फूटा बर्तन को दूरसे त्यागदे ४६ और १, ६, ११ इन नन्दा तिथियों में उबटना नहीं मलै और ४, ९, १४ इन रिक्ता तिथियों में क्षौर नहीं करावे और ३, ८, १३ इन जयातिथियों में मांसको नहींखावे और ५, १०, १५ इन पूर्णा तिथियों में स्त्रीसंग नहीं करे और २, ७, १२ इन भद्रा तिथियों में पूर्वोक्त सबकरने चाहिये ४७ और रविवार को तेलका अभ्यंग नहीं करे और मंगलवार को दुधका पान नहीं करे और शुक्रबारको और शनिवार

को मांस को नहीं खावे और बुधबार को स्त्रीसङ्ग नहीं करे और शेषरहे बारोंमें सब कर्म्मकरे ४८ और चित्रा, हस्त, श्रवण इन्हों में तैल नहीं लगावे और बिशाखा, अभिजित, शतभिषा इन नक्षत्रोंमें क्षौर नहीं करावे और मूल, मृगशिर, भाद्रपद इन नक्षत्रों में मांस नहीं खावे और मघा, कृत्तिका, तीनों उत्तरा इन्हों में स्त्री सङ्ग नहींकरे ४९ और उत्तरकी तर्फ़ और पश्चिम की तर्फ़ शिरकरके शयन नहींकरे और हे राक्षस! दक्षिण कानि और पश्चिम कानि मुख करके भोजन नहीं करे ५० और देवालय, चैत्यवृक्ष और चौराहा और आ-यास बिद्यामें अधिक ब्राह्मण और गुरु इन्हों को दा-हनेदेके गमनकरे और फूलोंकी माला और अनुपान, बस्त्र अन्यके धारेहुये इन्होंको बुद्धिमान् धारण नहीं करे ५१ और शिरको धोके नित्यप्रति स्नानकरे और कारणके बिना रात्रिमें स्नान करेनहीं अर्थात् ग्रहण अपने पुरुष की मृत्यु और जन्म के नक्षत्रपै चन्द्रमा स्थितहोवे तब इनसमयमें रात्रिमेंभी स्नानकरै ५२ और तैल आदिसे मालिश किये शरीर का स्पर्श नहीं करे और स्नान करके केशोंको कँपावे नहीं और स्नानकरके पहनेहुये बस्त्रको हाथ में लेके गात्रोंकी शुद्धि नहीं करे ५३ और राज्यसहित देशों में और बुद्धिमान् मनुष्यों में बासकरे और क्रोधके बिना पाप करनेवाले और मत्सरतावाले और खेती करनेवाले और दुष्ट मनुष्य ५४ ऐसे जहां बसतेहों तिसदेशमें बुद्धिमान् बसैनहीं

और नित्यप्रति सबों से बैर करनेवाला मनुष्य बुरा होताहै ५५ ऋषि कहनेलगे हे महाबाहो! धर्म में स्थित होनेवाले मनुष्यों करके जो बर्ज्य और ग्राह्यहै वह हम तुझसे कहते हैं ५६ घृत में पकाया हुआ पक्वान्न और घृतमें पकायेहुये चावल और दूधके बिकार ये बासी भी भोजनकरने योग्यहैं ५७ और शशा, शल्लकी, गोधा, मछली, कछुआ, तीतर इन आदि जीवों के मांसभी खाने के योग्य मनुजी ने कहेहैं ५८ और मणि, रत्न, मूंगा, मोती, पत्थर, काष्ठ, तृण, गुल्म, औषध, छाज ५९ अन्न, मृगछाला, कपड़ा सब प्रकारके बक्कल इन्होंकी जलसे शुद्धि कही है ६० और स्नेह से संयुक्त इन पदार्थों की गरम पानी से शुद्धि कही है और भेड़की चर्मकी तिलों का कल्ककरके शुद्धि होजाती है और रुईके कपड़ोंकी भस्म सहित जलसे शुद्धि कही है ६१ और हस्तीका दांत और हाड़ और अन्य जीवका सींग इन्होंकी तत्काल शुद्धि होजाती है और मट्टीके पात्रोंकी फिर पकाने से शुद्धि होती है ६२ भिक्षा और तिमिरका हाथ और बेश्याका मुख और बिनाजाने गलीमें पड़ी वस्तु और विना जाने दासोंका किया पदार्थ ६३ और पूर्व श्रेष्ठ और चिरकाल से आयाहुआ पदार्थ बालक और वृद्धों से बेष्टित और बालकका मुख ये सब काल में पवित्र रहते हैं ६४ और चूंचीप्यानेवाली स्त्रियां और ब्राह्मणोंकी घाणी और निरन्तर पानी के बूंद ये सब काल में पवित्र कहे हैं ६५ और खात, दाह, मार्जन, गौओंका

हटाना, लेप, उल्लेखन, पानीकी सेक, बुहारी से संमार्जन इन्हों करके पृथ्वी शुद्ध होती है ६६ और केश, कीट, माखी इन्हों करके दूषित अन्न और गौसे सूंघा हुआ अन्न ऐसे अन्नकी प्राप्ति में शुद्धिके लिये माटी, जल, भस्म, खार इन्होंका लेपकरना उचितहै ६७ और औदुम्बर अर्थात् गूलर के पात्रोंकी खट्टे पदार्थ से शुद्धिहोती है रांगा और सीसाकी खार करके शुद्धि होती है और कांसके पात्रोंकी भस्म और पानी से शुद्धि होती है ६८ और अमेध्य पदार्थ से भीजे हुये पात्रकी माटी और जलसे शुद्धि होती है और अन्य द्रव्योंकी गन्धके हरने से शुद्धि होती है ६९ और माताके थनोंको चूखने के समय बछड़ा शुद्धहै और फलके पातनमें पची शुद्ध है और भारके बहने में गर्दभ अर्थात् गधा शुद्ध है और मृगोंके शिकार में कुत्ता शुद्धहै ७० और गलीकी कीच और जल और नाव और मार्ग के तृण और पक्की ईंटों से रचेहुये स्थान इन्होंकी पवन करके शुद्धिहै ७१ और एक द्रोण अर्थात् १०२४ तोलेसे अधिक तोलका अन्न अमेध्य पदार्थ से युक्त होजावे तब अग्रभाग को त्याग और शेषरहे अन्नको जलसे छिड़क देना उचित है ७२ और बिनाजाने दूषित हुये अन्नको भोजन करने में तीन रात्रि उपबास करै और जानके दूषित हुये अन्नको भोजन करने में शुद्धि नहीं होती है ७३ रजस्वला और नङ्गी और सूतिका ऐसी स्त्री और म्लेच्छ चांडाल और मरेको वहनेवाले इन्होंका स्पर्श होने से शौचके लिये

स्नान करना उचित है ७४ और गीले हाड़का स्पर्श
होनेसे बस्त्र सहित स्नान करना चाहिये और सूखेहाड़
का स्पर्श करने से जलकी आचमन करै और सूर्य्य-
कानी देखना उचित है ७५ और बिष्ठा,लोहू और शरीर
का उबटना इन्होंको उल्लङ्घनकरै नहीं और बिष्ठा मूत्र
उच्छिष्ट पैरोंको धोनेका जल इन्होंको स्थान से बाहर
गिरावै ७६ और पराये जलमें स्नान करे नहीं और
देवखात, सर, नदी,ह्रद, तालाब इन्होंमें स्नानकरना चा-
हिये ७७ और उद्यान आदि में समयके बिना कभी भी
ठहरै नहीं और मनुष्य के बैरको अन्यों के आगे कहै
नहीं और बिधवा स्त्रीसे भाषण करै नहीं ७८ और दे-
वता, पितर, सत्य, शास्त्र, यज्ञ, बेद इन्होंकी निन्दा करने
वालोंका स्पर्श व भाषण होजावे तो सूर्यकानी देखने
से शुद्धि होजाती है ७९ और सूतिका, खण्ड, मार्जार,
आखु, कुत्ता, मुर्गा, पतित, अपविद्ध, नग्न, चांडाल,
नीच इन्होंके अन्नको भोजन करै नहीं ८० सुकेशी कहने
लगा तुम्होंने यह सूतिका आदि प्रकाशित किये इन्हों
के लक्षणों को तत्त्वसे सुनने की इच्छा करूंहूं ८१ ऋषि
कहनेलगे ब्राह्मणकी स्त्री अन्य ब्राह्मण को पतिकरलेवे
ये दोनों सूतिक कहाते हैं इन्होंका अन्न निन्दित है ८२
और जो समय पै स्नान, हवन, पितर और देवताओं
का पूजन इन्होंको नहींकरे वह खंड कहाता है ८३ और
जो पाखंड के लिये जापकरै तपकरै यज्ञकरै और पर-
लोकके वास्ते कछु करै नहीं वह मार्जार कहाता है ८४

और जो बिभव होने पै न अच्छी तरह आप भोजन करे और न दानकरे और न हवन करे वह आखु कहाताहै तिसके अन्नको खाके कृच्छ्र ब्रतसे मनुष्य शुद्ध होताहै ८५ और जो दूसरोंके धर्मोंको काटनेकी तरह बोले और पराये गुणोंमें द्वेष करै वह श्वान अर्थात् कुत्ता कहाताहै ८६ और जो आप सभ्यरूप होके समागत मनुष्यों के पक्षपात को आश्रित होवे तिसको देवते कुक्कुट अर्थात् मुर्गा कहते हैं तिसकाभी अन्न गर्हितहै ८७ और जो अपने धर्मको त्यागके परधर्मको प्राप्तहोवे वह पतित कहाता है ८८ और बेद, पितर, गुरुकी भक्ति इन्हों को त्यागनेवाला और गौ, ब्राह्मण, स्त्री इन्हों को मारनेवाला हो वह अपविद्ध कहाता है ८९ और आशावालों को जो नहींदेवे और दान करनेवालों को दानसेबर्जे और शरणागत को त्यागदे वह चाण्डाल और नीच कहाता है ९० और जो बांधव, साधु, ब्राह्मण इन्होंसे त्यागाहुआ हो वह कुण्डाशी कहाता है ९१ तिसके अन्नको खानेसे चांद्रायण ब्रत करना चाहिये और जो नित्य नैमित्तिक कर्म की हानि करैहै तिसके अन्नको खानेसे तीन उपवास करने चाहिये ९२ और केवल मृत और जन्ममें नित्य कर्म की हानि करनी चाहिये और नैमित्तिक कर्म का त्याग कभीभी करना चाहिये नहीं ९३ क्योंकि जब पुत्र का जन्महोवे तब पिता को सचैल स्नान करना चाहिये और मृत्युमें सबबन्धुओंको सचैल स्नान करना चाहिये

ऐसे भृगुजीने कहा है ९४ और मृत मनुष्य को ग्राम से बाहर दग्ध करके गोत्री मनुष्यों को प्रेत के लिये जलदेना चाहिये और प्रथम चतुर्थ सप्तम इन दिनों में अस्थि संचय करना चाहिये ९५ और अस्थि संचयनसे उपरान्त अंगका स्पर्श कहाहै और सातपीढ़ी के भीतरवाले मनुष्योंको क्रियाकरनी चाहिये ९६ और विष, बन्धन, शस्त्र, जल, अग्नि, ऊंचेसेपड़ना इन्होंके द्वारा मरने में और बालकके मरनेमें और संन्यासी के मरने में और देशांतर के मरने में ९७ तत्काल शौच कहा है परन्तु हे वीर! वह चारप्रकारका है सो गर्भस्राव में यहकहाहै और पूर्णकालमें नहीं ९८ अर्थात् ब्राह्मणोंको एकदिन और रात्रिकहाहै और क्षत्रियोंको तीनदिन और वैश्यों को छः रात्रि और शूद्रों को बारहदिन ९९ ऐसे गर्भस्रावका सूतक कहा है और पूर्णरूप सूतक और पातक ब्राह्मणोंको दशदिन क्षत्रियोंको बारहदिन और वैश्योंको पन्द्रहदिन और शूद्रको एकमहीना ऐसेकहा है सबवर्ण इसक्रमसे अपनी अपनी क्रियाओं को करें १०० और प्रेतका उद्देश करके एकोद्दिष्ट करतेरहें और एक वर्षमें प्रेतका सपिण्डी कर्मकरें १०१ तब पितर भावको प्रेतप्राप्तहोजावे तब अमावास्या पूर्णिमाआदि तिथियों करके वेदके अनुसार तृप्ति करतारहै १०२ और जब पिताका क्षयाहदिनहोवे तब पृथ्वी और खजाना आदि धनों का दानकरे और श्राद्धकरे १०३ जिससे प्रसन्नहुये पितर मनोवांछित फलकोदेते हैं और

जो मनोबांछितहोवे वह भी श्राद्धमें गुणवान् पुरुषके
लिये देना चाहिये १०४ और अक्षय की इच्छावाले
पुरुषको सबकालमें तीनबेदों का पाठकरना चाहिये और
धर्म से धनकी प्राप्ति करनी चाहिये और शक्तिसे यज्ञ
करना चाहिये १०५ जिसके करनेसे आत्मानिन्दाको
प्राप्त नहीं होसकै वह कर्तव्य करना चाहिये जो मनुष्यों
में छिपाया न जावे १०६ ऐसे लोकमें आचरण करने
वाले सत्पुरुषके धर्म, अर्थ, काम इन्होंकी प्राप्ति होतीहै
और परलोकमें और इस लोकमें सुख उपजता है १०७
ऐसे उत्तम गृहास्थाश्रम उद्देशसे कहा है अब बानप्रस्थ
धर्म कहेंगे तू धारणकर १०८ पुत्रके संतान को और
देह के नवने को देखके अपनी शुद्धिका कारण बानप्र-
स्थाश्रममें प्राप्तहोवै १०९ तहां आरण्य उपभोग और
तप इन्हों करके आत्माको सुखावै और भूमिमें शय्या,
ब्रह्मचर्य, पितर, देवता, अभ्यागत इन्हों की पूजा ११०
होम, स्नान, जटा, बल्कलधारण इन्हों को करतारहै और
वनगत स्नेह को सेवतारहै यह बानप्रस्थ बिधिहै १११
और सबोंके संग को त्यागना और मनको त्यागना
और ब्रह्मचर्य रखना और इन्द्रियों को जीतना और
वासमें चिरकाल किसी को नहीं बसनेदेना ११२ और
सब आरम्भों का त्याग और भोजन के लिये क्रोधको
त्यागके भिक्षालेना और आत्मज्ञान की इच्छा करना
और आत्माकी शुद्धि रखना ११३ ये संन्यासाश्रमके
धर्म कहे हैं और हे निशाचर ! अब अन्यवर्ण धर्मोंको

सुन ११४ ब्रह्मचर्य, गृहस्थधर्म, बानप्रस्थ ये तीन आश्रम क्षत्रिय को भी कहे हैं परन्तु जो क्षत्रिय ब्राह्मणके आचार रखता हो ११५ और गृहस्थ और परमहंसवृती ये दो आश्रम बैश्य को कहे हैं और अकेला गृहस्थधर्म शूद्र को कहा है ११६ इस वास्ते अपने अपने वर्णाश्रम के योग्य कहे धर्मों को बुद्धिमान् नहीं त्यागै और जो त्याग देता है तिसपै सूर्य कुपितहोके ११७ रोगकी बृद्धिके लिये यत्न करताहुआ कुलको नाशदेता है ११८ इस वास्ते अपने धर्मको त्यागै नहीं और अपने बंशसे अलगहोवे नहीं जो अपने निजधर्मको त्यागताहै तिसके लिये सूर्य कुपित होते हैं ११९ पुलस्त्य जी बोले हे नारद! ऐसे मुनियों के बचनों से उक्तहुआ सुकेशी सब महर्षियों को नमस्कार कर और बारंबार अपने धर्म को देखता हुआ अपने पुरमें ऊपरको प्राप्त हो गमन करता भया १२०॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसुकेश्यनुशासनं
नामचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

## पन्द्रहवां अध्याय॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! पीछे वह सुकेशी अपने पुरमें प्राप्त हो सब राक्षसों को बुलाके धार्मिक बचन कहनेलगा १ कि अहिंसा, सत्य, चोरीका अभाव, शौच, इन्द्रियों को जीतना, दान, दया, क्षमा, ब्रह्मचर्य, मानका अभाव २ और शुभ, सत्य, मधुर ऐसी वाणी, सत्

क्रिया और सत्पुरुषों का आचार इन्हों को सेवनेसे प-
रलोक में सुख होताहै ३ ऐसे पुरातन धर्मको मेरे लिये
मुनिजन कहतेभये हैं सो मैं तुम सबोंको आज्ञादेता हूँ
कि संशयों को त्यागके करना उचित है ४ पुलस्त्यजी
बोले हे नारद ! सुकेशीके बचनसे सबराक्षस त्रयोदशांग
धर्म को करतेभये ५ तब पुत्र पौत्रों से युक्त और सदा-
चारसे समन्वित ऐसे राक्षस बृद्धिको प्राप्त होतेभये ६
और तिन राक्षसों के तेज की ज्योतिको सूर्य और नक्षत्र
और चन्द्रमा नहीं समर्थ होतेभये ७ पीछे हे ब्रह्मन् !
त्रिभुवन में वह पुर दिनमें चन्द्रमा के सदृश और रात्रि
में सूर्यके सदृश ८ ऐसा प्रकाशित होताभया तब रात्रि
को चिन्तवन करतेभये चारों वर्ण कर्मों को त्यागने
लगे ९ और उल्लू रात्रि जानके अपने स्थानों से बा-
हर निकसनेलगे तब काक दिनजानके तिन उल्लुओं
को मारनेलगे १० और स्नान जप में परायण ब्रह्म-
चारी और सज्जनपुरुष रात्रिजानके ११ कंठतक जलमें
मग्नहुये स्थित रहनेलगे १२ और चकवा चकवी दिन
जानके ऊँचेप्रकार से बोलतेहीरहे और भार्य्यासे रहित
किसीक चक्रपक्षी ने १३ शून्यरूप नदीके तटपै फूत्कार
कर जीवित प्राण त्याग दिया तब कृपा करके आविष्ट
हुआ सूर्य अपनी किरणों से १४ जगत्को संताप देता
हुआ कभीभी अस्त नहीं होने लगा और अन्य पक्षी
कहनेलगे कि चक्रपक्षी मरगया १५ तब तिसकी भार्या
तप करनेलगी सो तप करके आराधित हुआ सूर्य्य १६

अस्त नहीं होनेलगा और यज्ञ करनेवाले ऋत्विक् होमशालाओं में रात्रिमें भी कर्मों को करतेही रहे १७ और महाभागवत भक्तिसे विष्णुकी पूजा करनेलगे १८ और कितनेक सूर्यकी कितनेक चन्द्रमा की कितनेक ब्रह्माकी कितनेक महादेवकी ऐसे पूजा करनेलगे १९ और कितनेक कामी तिस समयको उत्तमरात्रि मानते भये और कहतेभये कि चन्द्रमा अच्छेप्रकार से प्रकाश कररहाहै २० और कितनेक कहनेलगे कि हमोंने उत्तम गन्धवाले फूलों करके विष्णु भगवान् की पूजाकरी है २१ सो पूजित किया विष्णु लक्ष्मी के संग आकाशादि चतुष्पथों में २२ शून्य शयन करते हैं तिससे यह सूर्य अस्त नहीं होताहै २३ और कितनेक कहनेलगे कि चन्द्रमा के क्षयको देख रोहिणी ने महादेव का घोर तप किया है २४ तब महादेव ने इसके लिये बरदान दिया है तिसकरके यह चन्द्रमा आकाश में स्थित हो-रहा है २५ और कितनेक कहनेलगे कि चन्द्रमा ने निश्चय विष्णुकी आराधना करी है २६ तिससे अखं-डरूपी चन्द्रमा आकाशमें प्रकाशित है और कितनेक कहनेलगे कि चन्द्रमाने अपनी निश्चय रक्षाकरीहै २७ अर्थात् अमित तेजवाला विष्णुके दोनों पैरों की पूजा कर यह चन्द्रमा सूर्यका निरादर कर अतिप्रकाशित होरहा है २८ इसवास्ते हमारे को आनन्द करनेवाला चन्द्रमा दिन में सूर्यकी तरह तपता है और बहुत से कारणों करके यह भी सत्य दीखता है २९ कि चन्द्रमा

से जीताहुआ सूर्य्य पहलेकीतरह नहीं प्रकाशित होता ३० ऐसे कहते हुये मनुष्यों के वाक्यों को सूर्य्य मानने लगा ३१ कि यह संसार शुभाशुभ क्या वर्णन करता है ऐसे सूर्य चिंतवन करके ध्यान करनेलगा ३२ तब चारों तरफसे राक्षसों करके ग्रस्तरूपी जगत् होरहा है पीछे ऐसे सूर्य जानके चन्द्रमाकी बृद्धिको चिंतवन करता भया ३३ पीछे सत् आचार में रत और पवित्र और देव ब्राह्मण की पूजामें संशक्त और धर्म में तत्पर और सदाचार में रत और पवित्र ३४ ऐसे राक्षसों को जानके पीछे राक्षसों का नाश करनेवाला सूर्य्य राक्षसों के छिद्र को जानते भये ३५ पीछे सब धर्मोंकी नाश करनेवाली अपनी बिच्युति को देख पीछे क्रोधको प्राप्तहुआ ३६ सूर्य्य क्रोधरूपी नेत्र करके आकाशचारी पुरको देखनेलगा ३७ तब वह पुर आ-काशसे पृथ्वी में पड़ा जैसे क्षीण पुण्यवाला ग्रह पीछे वह केशीराक्षस पड़तेहुये पुरकोदेख ३८ (भवायशर्वाय) ऐसामंत्र ऊँचेप्रकार से कहने लगा तब तिस केशी के वचन को सुनके आकाशमें बिचरनेवाले चारण ३९ हाहाकार पुकारने लगे और कहनेलगे कि महादेवका भक्त पड़ता है पीछे तिन चारणों के वचनों को महादेव सुनता भया ४० और चिंतवन करनेलगा कि यह पुर किसने गेरा पीछे जानताभी भया कि यह पुर सूर्य्य ने गेराहै ४१ पीछे क्रुद्धरूपी हुआ महादेव सूर्य की तरफ तीनों नेत्रोंसे देखनेलगा ४२ तब सूर्यभी आकाशसे

भ्रष्टहुआ बायुमार्ग में पड़ा जैसे यंत्रसे छुटा पत्थर पीछे बायुमार्ग से पड़नेलगा ४३ तब किन्नर और चारण ऋषि ये सब ४४ इकट्ठेहो पड़तेहुये सूर्य से कहने लगे ४५ हे सूर्य! जो तू कल्याणकी बांछा चाहताहै तो हरिक्षेत्रमें पड़ना उचितहै तब पड़ता हुआ सूर्य तिन ऋषियों से कहने लगा ४६ कि वह हरिक्षेत्र क्या है और कैसा पवित्र है मुझको जल्दकहो तब सब मुनि कहने लगे कि महाफलवाला ४७ और श्रीकृष्ण और महादेवका बिख्यातकिया और योगशायी से लगाके केशव दर्शन तक ४८ हरिक्षेत्र कहाहै सो बाराणसीपुरी अर्थात् काशीपुरी नामसे बिख्यात है तब महादेव के नेत्रोंकी अग्नि करके तापितहुआ सूर्य ४९ सुनके बरणा और असी इनदोनों नदियों के बीचमें पड़ताभया ५० पीछे दग्ध होताहुआ सूर्य असीनदी में गोतामार बरणानदी में यथेच्छ गोता मारता भया पीछे फिर बारंबार कभी असी में और कभी बरणा में अलात चक्रकी तरह सूर्य भ्रमनेलगा हे ब्रह्मन्! इसी अन्तर में ऋषि, यक्ष, राक्षस ५१ सर्प, बिद्याधर, पक्षी, अप्सरा, सूर्य के रथके समीपमें स्थितहोनेवाले भूत प्रेत आदि जो थे वे सब ५२ ब्रह्मलोकमें यह बृत्तान्त कहने को गये तब सबों के बचनको सुन सब देवताओं के संग ब्रह्माजी ५३ सूर्यके लिये मन्दराचल पर्वत में गये तहां महादेवजीको देख ५४ सूर्य्य के लिये काशीपुरी में लाये तब महादेव सूर्यको हाथसे ग्रहणकर ५५ लोलानाम

धर फिर रथमें आरोपित करतेभये ५६ पीछे ब्रह्माजी बान्धव और नगर सहित सुकेशी दैत्यको आकाश में स्थापित कर महादेवजी को मिल और केशव देवको प्रणामकर ब्रह्माजी अपने स्थानको गये ५७ सो हे नारद! पहले सूर्यने ऐसे सुकेशी का पुर पृथ्वी में गिरा दिया है और दृष्टिरूप अग्निसे दग्ध हुआ ५८ पृथ्वी तल में आक्षिप्त हुआ ऐसा सूर्य्य फिर महादेव ने प्रकाश करने केलिये आरोपित किया ऐसे यह आख्यान हुआ है ५९ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसुकेशीचरितेलोलार्कजनन्नामपञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥

## सोरहवां अध्याय ॥

नारदने पूछा कि हे महापुरुष! बिष्णु और महादेव जीके आराधनके लिये कामनावाले मनुष्यों ने चन्द्रमा के जो जो ब्रतकहेहैं तिन्होंको बर्णनकरो १ पुलस्त्य जी बोले हे नारद! कामियों के कहेहुये और पवित्र ऐसे ब्रत महादेव और विष्णुकी आराधनाकेलिये जो हैं तिन्होंको सुन २ जब आषाढ़के महीनेमें दक्षिणायन सूर्य आता है तब लक्ष्मीकापति विष्णु शेषशय्यापै शयन करता है ३ और जब विष्णु शयन करनेलगै हैं तब देव गंधर्व गुह्यक देवताओं के मातृगण ये सब क्रमसे शयन करते हैं ४ नारद ने पूँछा हे भगवन्! विष्णु आदि सब देवताओं के शयन की विधि क्रमसे कहो ५ पुलस्त्यजी बोले

हे तपोधन! जब मिथुन का सूर्यहो तब आषाढ़ सुदी एकादशी के दिन शेषशय्या बना के तिसपै विष्णु शयन करै है ६ अर्थात् शेषशय्यापर केशवको पूज और सब ब्राह्मणों की पूजाकर ७ एकादशी को सब सामग्री तैयारकर पीताम्बर धारणकर बिष्णु द्वादशी को शयन करता है ८ और उसी महीने की त्रयोदशी के दिन सुन्दर गंधसे संयुक्त कदम्बों के फूलोंसे परिकल्पितकरी शय्या पै कामदेव शयन करते हैं ९ और चतुर्दशीको सुख शीतल और सोना सरीखे कमलों के फूलोंकी बनाई हुई और सुखरूपी बिछौनासे बनाईहुई ऐसी शय्याओं पै यक्ष शयन करते हैं १० और तिसी महीने की पौर्णमासी के दिन सिंहकी चर्म्म से अपनी जटाको बांध और बाघम्बर की शय्या बना तिसपै महादेवजी शयन करते हैं ११ और जब सूर्य्य कर्कराशि पै स्थित होता है तब दक्षिणायन अर्थात् देवताओं की रात्रिहोतीहै १२ और हे अनघ! नीले कमलोंकी शय्यापै प्रतिपदाके दिन ब्रह्मा शयन करता है और लोकोंको उत्तम मार्ग दिखाता हुआ १३ बिश्वकर्म्मा द्वितीयाके दिन सुन्दर शय्या पै शयन करता है और तृतीया के दिन पार्वती शयन करती हैं और चतुर्थी के दिन गणेशजी शयन करते हैं और पंचमी के दिन धर्मराज शयनकरते हैं १४ और षष्ठी के दिन स्वामिकार्तिक शयनकरते हैं और सप्तमीको सूर्य्य और अष्टमी को कात्यायनी और नवमीको दुर्गा १५ और दशमी को सर्पराज ऐसे

शयन करते हैं और कृष्णपक्ष की एकादशी को साध्य देवते शयन करते हैं १६ हे नारद! ऐसे क्रम तेरे लिये कहा और शयन करतेहुये तिन्हों के बर्षाकाल प्राप्तहुआ १७ और बलाकाओं के संग कंकपक्षी बृक्षोंपै आरोहण करते हैं और काकभी अपने अपने घोंसले बनाते हैं १८ और गर्भोंको धारण करनेवाली काकों की स्त्रियें भी शयन करती हैं और तिसी महीनेकी द्वितीया तिथी में जो बिश्वकर्मा शयन करैहै १९ तिस तिथी में पर्य्यंक पै लक्ष्मी के संग स्थित और चतुर्भुज २० ऐसे बिष्णु का गंध पुष्प आदि से पूजनकर पीछे देवके लिये शय्या पै क्रमसे फलोंका प्रक्षेपकरै २१ और प्रार्थनाकरै कि जैसे हे त्रिविक्रम! हे अनन्त! हे जगन्निवास! आप लक्ष्मी से बियोग नहीं करते हैं और जो अशून्य शयनहै तैसे हमाराभी शयन सब कालमें रहे २२ और हे देवेश! जैसे लक्ष्मी के संग अशून्य शयनहै तिस सत्यकरके हे विष्णो! हे अमितवीर्य्य! हे देव! मेरा गृहस्थका नाश मतहो २३ ऐसे उच्चारणकर विष्णु को प्रणाम और बारंबार प्रार्थितकर पीछे तैलक्षार आदि से बर्जित अन्नको रात्रि में भोजन करै २४ और दूसरे दिन उत्तम ब्राह्मण के लिये फलका दानकरै और ( लक्ष्मीधरःप्रीयतांमे ) इस मन्त्र का उच्चारणकर निवेदनकरै २५ इस विधानकरके चातुर्मास्य ब्रतका आचरणकरै और जबतक बृश्चिकराशि पै सूर्य्य स्थित हो तबतक २६ और सब देवते क्रमसे जागते हैं अर्थात् तुलाराशि पै स्थित सूर्य्य में २७

कार्त्तिकसुदी एकादशी के दिन बिष्णु कामदेव शिव ये जागते हैं २८ और द्वितीया तिथी में शय्या और आस्तरणों से संयुक्त लक्ष्मीधर की मूर्त्तिका दानकरै २९ और हे नारद! यह प्रथम ब्रत तेरेलिये कहा ३० और भाद्रपद महीने की कृष्णाष्टमी के दिन जब मृगशिर नक्षत्रहोवै तिसको कालाष्टमी कहते हैं ३१ तिस में सब लिंगों विषे शिव शयन करता है तब लिंग के समीप में बसता है तहां अक्षयरूप पूजाकही है ३२ तहां गोमूत्र और जल करके स्नानकरै और पीछे धतूराके फूल ३३ केशरकी धूप नैवेद्य शहद घृत इन्हों से पूजाकरै और (प्रीयतांमेविरूपाक्ष) इस मन्त्रका उच्चारणकर ब्राह्मणके लिये दक्षिणा ३४ नैवेद्य सोना इन्होंका दानकरै और ऐसेही आश्विन के महीने में ब्रतकरनेवाला और जितेन्द्रिय ऐसा मनुष्य ३५ नवमी के दिन गायके गोबर से संयुक्त जलकरके स्नान करै और कमल के फूलों से पूजा करै और सब प्रकारके शाल आदि द्रब्यों से धूप देवै शहद और मोदक का नैवेद्य ३६ और अष्टमी के दिन उपबास और नवमी के दिन स्नान करै और (प्रीयतांमेहिरण्याक्ष) इस मन्त्र से तिलों सहित दक्षिणा का दान करै ३७ और कार्त्तिक में दूध से स्नान और कनेर के फूलों से पूजन और बेलपत्र वृक्ष के निर्यासका धूप देवै शहद और खीरका नैवेद्य ३८ और नैवेद्य सहित चांदीका दान ब्राह्मण के लिये देवै और (प्रीयतांभगवान्स्थाणु) इस मन्त्रका उच्चारण करै ३९

और अष्टमी के दिन उपवास कर नवमी में स्नान करै
और मार्गशिरमें दही और कटेलीसे स्नानकहाहै ४०
और बेलपत्र बृक्षके निर्यास का धूप चावल और श-
हद का नैवेद्य और नैवेद्य सहित लालचावलों की द-
क्षिणा कही है ४१ और (नमोस्तुप्रीयतांशर्व) इसमन्त्र
का पण्डितों के द्वारा जापकरावै और पौषमासमें घृत
और तगरसे पूजाकरै ४२ और महुआके निर्यासका
धूप शहद और पूरीकी नैवेद्य और मूंगोंसहितदक्षिणा
ऐसे जगद्गुरुकी प्रसन्नताकेलिये कहाहै ४३ (ॐ नमस्ते
देवदेवेश) इस मन्त्रका उच्चारणकरै और माघमास में
कुशोदकसेस्नान और कस्तूरीसेपूजा ४४ और कदम्बके
निर्याससे धूप तिल और चावलों का नैवेद्य दूध और
चावलों का नैवेद्य देवताकेलिये निवेदनकरै ४५ और
(प्रीयतांमेमहादेव) इसमन्त्रका उच्चारणकरै ऐसे छः म-
हीनों करके पारण कहा है ४६ और पारण के अन्त में
महादेवका क्रमसे स्नान करावै अर्थात् गोरोचन और
सहदेई गुड़ इन्हों करके पूजनकरै ४७ और (प्रियस्वदी
नोस्मिभवन्तमीशमशोकराशिप्रकुरुष्वयोग्यं) इस मन्त्र
का उच्चारण करै ४८ पीछे फाल्गुन महीने की कृष्णा-
ष्टमीमें उपवासकरै ४९ पीछे दूसरेदिन पञ्चगव्य करके
स्नान करावै और कुन्दपुष्पों से पूजनकरै चन्दन की
धूपदेवै ५० और घृतसहित नैवेद्य देवै और तांबा के
पात्रमें गुड़ और चावल और नैवेद्य धरके ब्राह्मणों के
लिये दक्षिणादेवै ५१ और रुद्रनामका उच्चारण कर दो

बस्त्र ब्राह्मण के लिये अर्पणकरै और चैत्रके महीने में गूलरके फलों से स्नान और आम्रबृक्षके फूलोंसे पूजन ५२ और भैंसागूगल को घृत में भिगो धूपदेना लड्डू और घृतमिलाके भोग और नैवेद्य ५३ और मृगछाला की दक्षिणा और (नादेश्वरनमस्तेस्तु) इसमन्त्रका उच्चारणकरै ५४ और बैशाखमासमें सुगंधित फूलोंकेजल से स्नान ५५ और आमकी मंजरियों करके महादेव का पूजन कहा है और घृत सहित फलके निर्यास का धूप और फल और घृतका नैवेद्य ५६ और (कालघ्न) इस नाम का उच्चारणकरै और जलके कलशोंपर नैवेद्य और जनेऊ इन्होंको स्थापितकर ५७ ब्राह्मणकेलिये दानदेवै और ज्येष्ठमास में महानदी में स्नानकरै आंवला तथा आम्रकेफूलोंसे पूजा ५८ और सत्तू घृत दही इन्हों को मिलाके निवेदन करै ५९ और जूती जोड़ा का दानकरै और (नमस्तेभगनेत्रघ्नपूष्णोदशननाशन) ६० इसमन्त्रका उच्चारणकरै और आषाढ़मासमें बेल फलों से स्नान ६१ धतूरा के सफ़ेद फूलों से पूजन और लोबान का धूप और घृत मालपूआ इन्हों को निवेदन करै घृत और यवों की दक्षिणा देवै ६२ और (नमस्ते दक्षयज्ञघ्न) इस मन्त्र का ऊंचे प्रकार से उच्चारणकरै और श्रावणमासमें इन्द्रायण की जड़से संयुक्त पानी से स्नानकरै ६३ और बेलफलों से पूजनकरै और अगर की धूपदेवै घृत और दही से संयुक्त मोदक ६४ और दही चावल और कसार और उड़द और पूरी इन्हों

की नैबेद्यदेवै और सफेदबैल और कपिलागाय ६५ और सोना और लालबस्त्र इन्हों का ब्राह्मण के लिये दानदेवै और हे गंगाधर! इस मन्त्रका जापकरै ६६ ऐसे इन छः महीनों करके उत्तम पारण होता है ऐसे एक बरसतक महादेव का पूजन करै तो ६७ अक्षयरूपी कामों को मनुष्य प्राप्तहोवै जैसे महादेव का बचन तैसे और पवित्र और सब प्रकारसे अक्षय का करनेवाला ६८ और शुभ ऐसा यह ब्रत आप महादेवजीने प्रकाशितकिया है सो यह पूर्वोक्त फलका देनेवाला है और अन्यथा नहीं ६९ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायामशून्यशयनद्वितीयाकालाष्टमीकथानामषोडशोऽध्यायः १६ ॥

## सत्रहवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे ब्रह्मन्! आश्विन मासमें जब ईश्वरकी नाभि से कमल निकसा तब देवतों के भी कछुक उत्पन्न होताभया १ अर्थात् कामदेव के हाथके अग्र भाग में सुन्दर दर्शनवाला कदम्ब उत्पन्न होता भया तिसकरके परमप्रीति कामदेव की कदम्ब में बढ़ी २ और यक्षों के स्वामी कुबेरके बटवृक्षहुआ इसवास्ते बड़ में प्रीति होतीभई ३ और महादेवके हृदयमें धतूराका वृक्ष उपजा इसवास्ते महादेव की धतूरे में प्रीति बढ़ी ४ और ब्रह्मा की देहके मध्यभाग से मरकतमणिके समान कांतिवाला खैर उपजा और विश्वकर्मा के शरीर से क-

ण्टकि बृक्ष उपजा ५ और पार्बती के हाथ के तलवे में कुन्दबृक्ष उपजा और गणेशजी के मस्तक में संभालू बृक्ष उपजा ६ और धर्मराज के दाहिनेपांसू में पलाश बृक्षउपजा और बायें पांसू में कालागूलर बृक्ष उपजा ७ और स्वामिकार्त्तिक के शरीर से जीयापोता बृक्ष उपजा और सूर्य्य के शरीर से पीपलबृक्ष उपजा और कात्यायनी के शरीर से जांटी उपजी और लक्ष्मी के हाथमें बेलपत्रबृक्ष उपजा ८ और सर्पों से शरस्तंब उपजा और बासुकी सर्प की फैलीहुई पूँछ के पृष्ठ भागमें सफेद और कालीदूब उपजी ९ और साध्य देवतों के हृदय में हरिचन्दन बृक्षउपजा ऐसे जो जो जिसके शरीर से उत्पन्न हुये तिन्हों में तिस तिस की प्रीति होतीभई १० और आश्विन के महीने में जो शुक्लएकादशी में बिष्णुका ११ पुष्पपत्र गंधबर्णरस इन्हों से संयुक्तफल और मुख्य ओषधी इन्हों करके पूजनकरै १२ और घृत तिल चावल यव सोना मणि मोती मूँगा और नाना प्रकारकेबस्त्र १३ और छः प्रकार के रस और अखंडरूपी और तिक्तरूपी फल इन्होंको १४ बिष्णुकेलिये अर्पणकरै ऐसे एक बर्षतक पूर्णकरै १५ और व्रतकरके पीछे दूसरेदिन सावधानहुआ मनुष्य तिसी स्नान करके स्नातहुआ १६ और सरसों तिल इन्होंका उबटनाबना शरीर को मल बिष्णु के द्रब्यसे स्नान करै १७ और शक्ति के अनुसार दान करै और पैरोंसे लगायत मस्तकतक फूलों से पूजन करै १८ और नाना प्रकार का

धूप देवै और सोना रत्न वस्त्र इन्होंकरके पूजनकरै १९ और राग और छः प्रकार के रस और चोष्य और हविष्य इन्हों को निवेदन करै पीछे पद्मनाभ और जगत्के गुरू ऐसे विष्णु को २० इस बक्ष्यमाण मन्त्रसे स्तवन करै ( नमोस्तुतेपद्मनाभ पद्माधवमहाद्युते। धर्मार्थकाममोक्षाणि त्वखण्डानिभवन्तुमे २१ विकासिपद्मपत्राक्ष यथाखण्डोसिसर्वतः। तेनसत्येनधर्माद्यास्त्वखण्डाः सन्तुकेशव )२२इसमन्त्रकाउच्चारणकरै ऐसे एक बर्षतक जितेन्द्रिय मनुष्य होकै २३ अखंड ब्रतका पारण करै और जब यह ब्रत पूर्ण होजाता है तब सब देवता प्रसन्न होजाते हैं २४ और धर्म अर्थ काम मोक्ष इन्हों की प्राप्ति होतीहै ऐसे कामनावालोंके कहेहुये ब्रत तेरे लिये बर्णन किये २५ अब बैष्णवपंजरस्तोत्र बर्णन कियाजाता है २६ नमोनमस्तेगोविन्दचक्रंगृह्यसुदर्शनम्। गदांकौमोदकींगृह्यपद्मनाभामितद्युते २७ प्राच्यांरक्षस्वमांविष्णोत्वामहंशरणंगतः। हलमादायसौनन्दंनमस्ते पुरुषोत्तम २८ प्रतीच्यांरक्षमेविष्णो भवन्तंशरणंगतः। मुशलंशोभनंगृह्य पुण्डरीकाक्षरक्षमाम् २९ उत्तरस्यांजगन्नाथभवन्तंशरणंगतः। शार्ङ्गमादायचधनुरस्त्रंनारायणोहरिः ३० नमस्तेयक्षरक्षोघ्नऐशान्यांशरणंगतः। पाञ्चजन्यंमहाशङ्खं चक्रंमध्येचपङ्कजम् ३१ प्रगृह्यरक्षमांविष्णोआग्नेय्यांरक्षशूकर। चर्म्मसूर्य्यशतंगृह्यखड्गंचन्द्रशतंतथा ३२ नैर्ऋत्यांमांचरक्षस्वदिव्यमूर्त्तेनृकेशरे। वैजयन्तीम्प्रगृह्यत्वं श्रीवत्संकण्ठभूषणम् ३३ वायव्यांरक्षमांदेव

अश्वशीर्षनमोस्तुते। वैनतेयंसमारुह्य अन्तरिक्षेजनार्द
न ३४ मांत्वंरक्षाजितसदा नमस्तेत्वपराजित। विशाला
क्षं समारुह्यरक्षमांत्वंरसातले ३५ अधोक्षजनमस्तुभ्यं
महामीन नमोस्तुते। करशीर्षाङ्घ्रिपार्श्वेषु तथाष्टबाहुपञ्ज
रम् ३६ कृत्वारक्षस्वमांदेव नमस्तेपुरुषोत्तम ३७ यह
विष्णुपंजरस्तोत्र. महादेवजीने कात्यायनीकेलिये कहा
है ३८ इसीके प्रतापसे कात्यायनीदेवी महिषासुर चा-
मर रक्तबीज इन आदि अनेक दैत्यों को नाशतीभई
३९ नारदने पूछा हे भगवन्! महिषासुर कौनहुआ और
रक्तबीजआदि कौनहुये और इन पूर्वोक्तदैत्यों को मारने
वाली कात्यायनीदेवी कौनहुई ४० और महिष किसके
कुलमेंहुआ ४१ और रक्तबीज कैसाहुआ और चमर
किसका पुत्रहुआ हे तात! यह बिस्तारपूर्वक आप क-
हने को योग्य हैं ४२ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! पापको
नाशनेवाली कथा मैं कहताहूँ सुन यह कात्यायनी दुर्गा
सबकालमें बरके देनेवालीहै ४३ और पहले रौद्र और
जगत्मेंक्षोभकरनेवाले रम्भ और करम्भ इनदोनामों से
बिख्यात ऐसे दो दैत्य हुये ४४ पीछे वे दोनों पुत्र
की सन्तान के लिये पंचनदके समीपमें बहुत बर्षोंतक
तप करनेलगे ४५ तिन्होंमें एक जलके मध्यमें स्थित
होनेलगा और एक पञ्चाग्नि से तप करने लगा
४६ पीछे जलमें स्थित हुये एक को ग्राह रूप करके
इन्द्र पैरों से ग्रहणकर मारताभया पीछे जब भ्राता
जलमें मारागया ४७ तब कोपसे परिपूरित हुआ रम्भ

दैत्य अपने शिरको काटने की इच्छा करने लगा ४८ अर्थात् अपने केशों को ग्रहणकर तलवारसे अपने शिरको काटने लगा तब अग्निने प्रतिषेधित किया ४९ अर्थात् अग्नि कहनेलगा कि हे दैत्यबर! अपनी आत्मा को मत नाशै ५० जिस बातकी तू इच्छा करता है वह मनोबांछित तुझको दूँगा और मरैमत और मृत हुये के बाद कथा नष्टहोजाती है ५१ तब रम्भ कहने लगा जो आप मेरे को बर देतेहैं तो त्रिलोकीको बिजय करने वाला और आपके तेजसे अधिक ५२ और देवता पुरुष दैत्य इन्होंसे अजेय अर्थात् तू नहीं जीताजावै और बायुकी तरह अतिबलवाला और कामरूपी और महास्त्रों का जाननेवाला ऐसा पुत्र मेरे होवै ५३ तब अग्नि कहनेलगा कि ऐसेहीहोगा और जिसमें तू चित्तलगावेगा वही तेरे कार्यको करेगा ५४ ऐसे अग्निके बचन को सुन रम्भ दैत्य यक्षों से परिवारित मालबटयक्षके प्रति जाताभया ५५ और तहां हस्ती घोड़े भैंस बकरी गाय भेड़ ये अनेक प्रकार की बसें थीं ५६ पीछे रूपसे संयुक्त और तीनबरसकी उमरमें ऐसी महिषी में ५७ रम्भ दैत्य भावीके अधीन हुआ मैथुन करता भया तिस में गर्भकी स्थिति भई तब तिस महिषी को ग्रहणकर पातालमें प्रवेश करता भया तब दैत्योंने देखा ५८ पीछे उसे दैत्योंने त्यागकिया तब फिर वह अकार्य्यको करने वाला मालबटके समीप गया ५९ और सुन्दर दर्शन वाली महिषी भी तिसी पति के साथ पवित्ररूपी तिस

यक्षमण्डल में प्राप्तभई ६० पीछे तहां बसते हुये वह महिषी कामरूपी महिषरूप पुत्र को जनतीभई पीछे जब फिर ऋतुमती महिषीहुई तब अन्य भैंसा तिसको देखता भया तब महिषी अपने शीलकी रक्षा करती हुई रम्भ दैत्य के समीप में आई ६१ तब उन्नमित नासिकावाले भैंसाको देख रम्भ दैत्य बेगसे तलवारको निकास भैंसा के सन्मुख भागा ६२ तब तिस भैंसाने भी अपने सींगों से दैत्यकी छातीमें टक्करमारी तब टूटगया है हृदय जिसका ऐसा रम्भ दैत्य पृथ्वी में पड़ा और मरताभया ६३ जब पतिका मृत्युहोगया तब वह महिषी यक्षों की शरणमें प्राप्तभई तहां गुह्यकोंने तिसकी रक्षा करी और तिस भैंसा का निवारण किया ६४ पीछे वह कामदेवसे पीड़ितहुआ भैंसा दिव्य सरोवर में पड़ता भया ६५ तब महाबल पराक्रमवाला और चमरनामसे बिख्यात ऐसा दैत्य मरकेहुआ ६६ और यक्षोंके आश्रयहोके समयको व्यतीत करतीहुई वह महिषी स्थित रही पीछे वह मृतहुआ रम्भ दैत्य चितामें स्थापित कियागया और वही महिषी तिसके साथ दग्ध होती भई ६७ पीछे अग्नि के मध्यसे रौद्रदर्शनवाला और तलवारको हाथमें लिये और भयंकर ऐसा पुरुष उठ तिन यक्षों को भगाताहुआ ६८ पीछे इस पुरुषने सब भैंसेमारदिये एक केवल रम्भदैत्यका पुत्र भैंसाके विना ६९ अर्थात् यही रक्तबीज नामसे बिख्यात हुआ और यही चारों तर्फसे देवते इन्द्र रुद्र सूर्य मारुत इन सबों

को जीतताभया ७० ऐसे प्रभाववाले सब दैत्यों में अतिप्रभाववाला महिषासुर सब संभूत्त तारक आदि दैत्यों ने राज्य पै स्थापित किया ७१ और यही महिषासुर देवते, लोकपाल, इन्द्र, सूर्य्य, अग्नि, चन्द्रमा इन आदिको जीतके बशमें करताभया ७२ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांमहिषासुरोत्पत्तिर्नाम सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

# अठारहवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! पीछे सब देवते महिषासुरने जीतलिये तब स्थानों को त्यागके ब्रह्माजी को अगाड़ीकर बिष्णु भगवान्को देखने के लिये गये १ पीछे तिन देवताओंको बिष्णु और शिव आपस में देखतेभये और देवतेभी दोनोंको देखके नमस्कारकर महिषासुरके चेष्टितको निवेदन करनेलगे २ कि हे प्रभो! अश्विनीकुमार, सूर्य्य, चन्द्रमा, पवन, अग्नि, वेधा, वरुण, इन्द्र इन आदि देवतों के सब अधिकारों को धार महिषासुरकरके हम सब देवते पृथ्वीतलमें स्थित कियेगये ३ सो शरणागतको प्राप्त हुये हमारे वचनको सुन आप दोनों हित कहो अन्यथा अब हम दैत्यके दुःखित किये पातालल्लोकमें जावेंगे ४ तब ब्रह्मा विष्णु तिन्होंके वचन को सुनके और विप्लुतचित्तवाले तिन देवताओं को देखके अव्ययात्मा विष्णु वेगसे कोपको करतेभये ५ पीछे ब्रह्मा और सब इन्द्रादि देवते भी कोप करतेभये ६

अर्थात् सबों के मुखों से निकसा हुआ कोप पर्बत के समान इकट्ठा होताभया ७ पीछे कात्यायन मुनि के तेजसे मिलाहुआ वह कोपरूपी तेज प्रकाशमान हजार सूर्य्योंके तेजके समान तेजवाला हुआ तिससे योग करके बिशुद्ध देहवाली कात्यायनी देवीहुई ८ अर्थात् महादेवके तेजसे देवीका मुख हुआ और अग्निके तेजसे तीन नेत्रहुये और धर्मराजके तेजसे केश उपजे और बिष्णु के तेजसे अठारहभुजा हुईं ९ और चन्द्रमा के तेजसे दोनों स्तन अर्थात् चूंची हुईं और इन्द्रके तेज से कटिहुई और बरुणके तेजसे गोड़े जांघ नितम्ब अर्थात् चूतड़ ये स्थान हुये १० और ब्रह्माके तेज से दोनों पैरहुये और सब आदित्योंके तेजसे अंगुलियां हुईं और इन्द्रके तेजसे हाथोंकी अंगुलियां हुईं ११ और प्रजापतियोंके तेजसे दांतहुये और यक्षोंके तेजसे नासिका हुई और पवन के तेजसे दोनों कान हुये और साध्य देवताओंके तेजसे कांतिवाले और कामदेवके बाणके सदृश असी दोनों भृकुटियां हुईं १२ ऐसे उत्तम तेजोंसे संयुक्त और पृथ्वीमें कात्यायनी नाम से प्रसिद्ध ऐसी देवी हुई १३ पीछे तिस देवीके लिये महादेवजी त्रिशूलको देतेभये और बिष्णु चक्रको देते भये और बरुण शंखको देतेभये और अग्नि शक्तिको देतेभये और पवन धनुष और सूर्य्य अक्षयरूपी बाण १४ और इन्द्र घंटा सहित बज्र और धर्मराज दंड और कुबेर गदा और ब्रह्माजी कमलोंकी माला और कमं-

डलु और कालउग्ररूपी तलवार और चर्म १५ चन्द्रमा चमर और हार और समुद्रमाला और हिमवान् पर्वत सिंह और विश्वकर्मा चूड़ामणि और अर्द्धचन्द्ररूपी कुण्डल और कुहाड़ा १६ और गन्धर्वराज चांदी से लिपाहुआ मदिरासे पूर्ण पात्र और शेषनाग सर्पों का हार और सब ऋतु अम्लानरूपी पुष्पों की माला १७ ऐसे देवीके लिये देवते देतेभये तब प्रसन्नहुई देवी अट्टा-ट्टहासशब्दको छोड़नेलगी और तिस देवीको इन्द्र आदि देवते और विष्णु, रुद्र, चन्द्रमा, पवन, अग्नि, सूर्य १८ये स्तवन करनेलगे कि देवताओं से पूजितकी जो देवी है तिसको नमस्कारहो और योगसे शुद्ध देहवाली जो देवीहै तिसको नमस्कारहै और निद्रा स्वरूपकरके पृथ्वी में विस्तार करनेवाली तृष्णा और लज्जा और क्षुद्, भय इन्होंको नाशनेवाली १९ और कान्ति, श्रद्धा, स्मृति, पुष्टि, क्षमा, छाया, शक्ति, कमला, लया, धृति, दया, भ्रांति, माता इन नामोंवाली जो देवीहै तिसको नमस्कारहै २० ऐसे देवतोंसे स्तुतिकरी देवी सिंहपै सवारहो विंध्यपर्वत में प्राप्तभई जिस पर्वतको अगस्त्यमुनि निम्नरूप करते भये २१ नारदजीने पूँछा हे देव! किसवास्ते अगस्त्यमुनि विन्ध्यपर्वत को निम्न शृङ्गवाला करतेभये और किसके लिये और किस कारण करके यह मेरे प्रति कहो २२ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! पहले विन्ध्याचलने आकाश में विचरनेवाले सूर्यकी गति रोकदी तब होमके अन्त में अगस्त्यजी से सूर्य कहनेलगा २३ हे द्विज! दूरसे मैं

आपके समीप में आके प्राप्तहुआ हूँ आप मेरा उद्धार करो अर्थात् मनोवांछित दान मुझको देवो जिस करके मैं तीनों लोकोंमें आनन्द से बिचरूँ २४ ऐसे सूर्य के बचनको सुन अगस्त्यमुनि कहनेलगे हे सूर्य! तुझको मनोवांछित दान देऊँगा क्योंकि कोई भी अर्थी मेरे से बिमुख होके नहीं जाताहै २५ ऐसे अगस्त्यमुनिके बचन को सुन और हाथ को अपने मस्तक पै धारणकर सूर्य कहनेलगा कि हे प्रिय! यह बिन्ध्यपर्बत मेरे मार्गको रोकता है इसवास्ते इस पर्वत को निम्न करने में आप यत्न करो २६ ऐसे सूर्यके बचन को सुन अगस्त्य जी कहनेलगे तेरी किरणों से जीताहुआ यह पर्बत होवेगा २७ ऐसे अगस्त्यमुनि कहके और सूर्यकी स्तुति कर दण्डोंकोत्याग बिन्ध्याचलमें गये जहांजायके बिन्ध्यपर्बत से कहनेलगे २८ कि हे पर्बत! मैं दक्षिण दिशामें पवित्र रूपी तीर्थ के लिये गमन करता हूँ वृद्ध और असमर्थ ऐसा मैं हूँ इसवास्ते ऊँचेको चढ़ नहीं सक्ता इसवास्ते तू नीचाहीरह २९ ऐसे अगस्त्यके बचनको सुन नीचेशृङ्ग वाला बिन्ध्यपर्ब्बत होगया और पर्ब्बत को उल्लङ्घकर कहनेलगा ३० कि जबतक मैं फिर अपने आश्रम में आके प्राप्त नहीं होऊं तबतक तू ऐसेही रह और जो तू ऐसे नहीं मानेगा तो मैं तुझको शाप दूँगा ३१ ऐसे अगस्त्यमुनि कहके दक्षिण दिशामें गमनकर आकाश मार्गमें स्थित होतेभये सो बिन्ध्याचलभी अगस्त्यमुनि के भयसे वृद्धिको प्राप्त नहीं होताभया ३२ अर्थात्

अगस्त्यमुनि कब आवेंगे इस निश्चय को याद करता हुआ उसीही तरह स्थित होरहा है ३३ ऐसे अगस्त्य मुनि ने नीचशृंगवाला विंध्यपर्वत किया है तिसके ऊर्ध्व शृंगमें मुनियोंसे संस्तुत ३४ और दैत्योंके नाशके लिये विन्ध्याचल पर्वतके ऊर्ध्वशृंग में स्थितहुई देवीको ३५ देवते, सिद्ध, सर्प, विद्याधर, भूतगण, सब अप्सरा ये स्तुति करनेलगे ३६ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांदेवीमाहात्म्यवर्णनंनामाष्टादशोऽध्यायः १८

## उन्नीसवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हेनारद! बिन्ध्यपर्वतके शृंगमें बसती हुई कात्यायनी देवीको चंड और मुंड देखते भये १ और देखके पर्वत से उतरकर अपने स्थानपै आके दोनों महिषासुर से कहने लगे २ कि हे असुरेंद्र! अब आप स्वस्थ हैं और हमारेसंग होके बिन्ध्याचलको देख तहां महानुभाववाली और दिव्यरूपवाली और अप्सराओंसे भी सुन्दर रूपवाली ३ और जिसने जुल्फों करके बादल जीतलिये हैं और जिसने मुखकरके चन्द्रमा जीतलिया है और जिसने तीनों नेत्रोंकरके तीनों अग्नि जीतलिये हैं और जिसने कंठ करके शंख जीत लिया है ४ और सुन्दर गोल अग्रभाग में निकलनेवाले ऐसे स्तनों को धारण करनेवाली और [illegible] वाले तुझको प्रतर्पण करके ५ पीन और शस्त्र इन्होंसे युक्त और परिघ के समान अठारह भुजाओं से युक्त ६

और तिसका मध्यभाग त्रिबली के तरंगकरके प्रकाशित और रोमोंकरके प्रकाशित होरहाहै और रणमें कातर रूपी जो आप सो आपके भयसे कामदेव के ऊपर को चढ़नेकी पैड़ियोंकी तरह प्रयुक्त होरही है ७ और तिसके वह रोमराजी पुष्टरूप कुचों पै लगीहुई अच्छेप्रकार से प्रकाशितहै और आपकेभयकरके कामदेवसे उत्पन्न हुये पसीनोंसे युक्तहै ८ और तिसकी गंभीररूपवाली नाभि अच्छीतरह प्रकाशित होरहीहै और लावण्यगृह की मुद्रा तिसके लिये कामदेव ने आपहीदीहै ९ और तिस मृगाक्षीके चारोंतर्फसे मेखलाकरके अवघृष्टहुआ और रमणीक ऐसा जघन अंगहै और कामदेव राजा का कोट से रक्षित और दुर्गम ऐसा नगर है १० गोल और रोमोंसे रहित और कोमल ऐसे दोनों ऊरूहैं और जैसे कामदेव ने मनुष्य के बसने के लिये मानो सन्नि-बिष्टहुये दो देश हैं तैसे ११ और तिसके अर्द्धोन्नत रूपी दोनों गोड़ेहैं और मानो जानकर ब्रह्माके रचेहुये दोनों हस्ततल हैं १२ और सुन्दर गोल रोमों से र-हित ऐसी दोनों पीड़ियां हैं और सब लोकों को आ-क्रमण करके रचेहुये की तरह दोनों ओष्ठ हैं १३ और तिसके कमल के समान उपमावाले दोनों पैर हैं और जैसे नक्षत्रों की माला आकाशमेंहै तैसे १४ नखरूपी रत्नों की माला है ऐसे रूपवाली और उग्रशास्त्रोंको धा-रणकरनेवाली ऐसी देवीरूपी कन्या हम लोगोंने देखीहै सो किसी की पुत्री है या देवतों की अंगना है १५ सो

स्वर्ग को त्यागकर पृथ्वीतल में उत्तम रत्नरूप स्थित हो रही है सो हे असुरेंद्र! विंध्याचल में गमनकर आपही देख और पीछे जैसा योग्य जानो वैसा यत्न करो १६ ऐसे चण्ड मुण्ड के सकाशसे कमनीय रूपवाली कन्या को सुन तिस को देखने के लिये बुद्धिकरी और कछु विचार किया नहीं ऐसे महिषासुर चलने को तैयारहुआ १७ और मनुष्यके पहलेही शुभ और अशुभ विधाताने रचदिये हैं इसवास्ते जैसी भावी होती है तैसेही पुरुष कार्यको करताहै १८ पीछे मुण्ड, चमर, चंड, बिडालनेत्र, पिशंग, बाष्कल, उग्रायुध, चिक्षुर, रक्तबीज इन आदि दैत्यों से महिषासुर कहनेलगा १९ कि हे दैत्यो! नक्कारों को बजा के रण में कर्कशरूप सब तुम स्वर्ग का परित्यागकर और पर्वत के समीप में शिविर अर्थात् बसने के स्थान बना स्थित होजावो २० पीछे महिषासुर ने दानवों के समूह को पालनेवाला और मयका पुत्र और शत्रुओं की सेनाको मर्दन करनेवाला और नक्कारा के समान शब्द करनेवाला ऐसा दुंदुभि दैत्य भेजा २१ तब वह आकाशमें स्थित हुआ दुंदुभि तिस देवी से कहनेलगा कि हे कुमारि! रम्भका पुत्र और युद्धमें अति उत्तम ऐसे महिषासुर का मैं दूतहूं २२ तब देवी कहनेलगी हे दैत्येंद्र! भयको त्यागके तू यहां आके प्राप्तहो जो रम्भका पुत्र तुझ से कहताभया है वह विस्तारपूर्वक कह २३ ऐसे देवी के वचन को सुन आकाश त्याग पृथ्वीतलमें २४ सुखपूर्वक सुन्दर आस-

नपै स्थित हुआ दुंदुभि वाक्य कहनेलगा २५ हे देवी! महिषासुर दैत्य तुझको ऐसे आज्ञा देता है कि जैसे बलसे हीन हुये और मेरेकरके पराजितकिये ऐसे सब देवते पृथ्वी में भ्रमते हैं २६ और स्वर्ग, पृथ्वी, पवनके मार्ग मेरे बशमें हैं और पाताल भी मेरे बशमें है और मैंही इन्द्रहूँ और मैंही रुद्रहूँ और मैंहीसूर्यहूं और मैंही लोकों बिषे लोकपालहूँ २७ और ऐसा कोई स्वर्ग में व पृथ्वी में व पातालमें देवता व दैत्य व यक्ष नहीं है २८ जो मुझको संग्राममें प्राप्तहोवै और हे मुग्धे! जितने रत्न पृथ्वी में व स्वर्ग में व पाताल में हैं २९ वे सब मेरे बीर्य्य से जीते हुये मेरे पास आगये हैं और सम्पूर्ण रत्नों में स्त्री- रत्न उत्तम होता है इस वास्ते तेरे कारण करके मैं इस पर्बत में प्राप्त हुआहूँ ३० इसवास्ते तू मेरे को भज समर्थ और प्रतापवाला ऐसा मैं तेरा पति होने योग्य हूँ ३१ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ऐसे दूतके बचन सुन कात्या- यनी देवी दूत से कहनेलगी ३२ कि पृथ्वीमें दानवों का राजा है यह सत्य है और युद्ध में देवताओं को जीत लिया यह भी सत्य है ३३ परन्तु मेरे कुल में शुल्काख्य धर्म प्रसिद्ध है जो शुल्क धर्म के अनुसार मेरे को महि- षासुर शुल्क देवेगा ३४ तो मैं सत्यकरके तिसीको भजूंगी तब देवी के बाक्यको सुन दूतकहनेलगा कि हे बिस्तृत कमल के समान नेत्रोंवाली! शुल्कको कह ३५ वह दैत्य- राज अपने शिरको भी तेरे लिये देवेगा और अन्य शुल्ककी कौन कथा है तब ऐसे दूत के बचन को सुन ऊंचे

प्रकारसे शब्द करके कात्यायनी ३६ हँसके और च-
राचर सब जगत्के कल्याणके लिये कहनेलगी ३७
हे दैत्य! जो हमारे कुलसें शुल्क हमारे पूर्वजोंने कियाहै
वहसुन ३८ कि जो हमारे कुलकी कन्याको युद्धमें जीत
लेताहै वही उसका पति होताहै ३९ पुलस्त्यजी बोले
हे नारद! ऐसे देवीके बचनको सुन दुन्दुभि दैत्य यथा-
योग्य महिषासुरके प्रति कहताभया ४० तब महातेज
वाला महिषासुरभी सब दैत्योंके अग्रभागमें स्थितहो
और तिस देवीके संग युद्ध करनेकी इच्छावाला विं-
ध्याचलके शिखरमें आगमनकर ४१ चिक्षुर नामवाले
दैत्यको सेनापति करताभया और सेनाके अग्रभागमें
गमन करनेवाला चमरको बनाताभया ४२ और च-
तुरंगसेना को प्राप्तकर पीछे दैत्यराज देवी के सन्मुख
वेगसे दौड़ा ४३ तब आवतेहुये दैत्यराजको देख ब्रह्मा
आदि सब देवते देवी से कहने लगे कि हे अम्बिके! क-
वचको धारणकर ४४ तब देवी कहनेलगी कि हे देव-
ताओ! मैं कवचको नहीं पहनसक्ती क्योंकि मेरे अगाड़ी
न दैत्य ठहरसक्ता है ४५ और जब देवी ने कवच
नहीं धारण किया तब देवी की रक्षाके लिये विष्णुवैष्णव-
पंजरस्तोत्रको कहते भये ४६ जो पहले कहचुके हैं
हे ब्रह्मन्! तिस करके रक्षितहुई देवी देवताओं से
अवध्यरूप महिषासुर को पीड़ित करती भई ४७ ऐसे
पहले महादेवजीने वैष्णवपंजर कहा है तब पैरों के
तलेसे देवी ने महिषासुरको मारा है ४८ ऐसे प्रभाव

वाला बिष्णुपंजर सब रक्षाओं में अधिक कहा है ४९ जिसके चित्त में बिष्णु भगवान् स्थित होते हैं तिसकी युद्ध में गर्बकी हानि कौन करसकै है ५० ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांदेवीमाहात्म्यपरिकीर्त्तनन्नाम एकोनविंशतितमोऽध्यायः १९ ॥

## बीसवां अध्याय ॥

नारद ने पूंछा हे भगवन्! कैसे कात्यायनी देवी सेना और बाहन सहित महिषासुर को मारती भई तैसे बिस्तारपूर्बक कहो १ हे ब्रह्मन्! यह संशय मेरे हृदयमें वर्तता है कि बिद्यमान शस्त्रों के होतेहुये कैसे पैरोंसे देवी महिषासुर को मर्द्दन करती भई २ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! सावधानहोकै पाप और भयोंको दूर करनेवाली और पवित्र और देव युगकी आदि में प्रबृत्तहुई और पुरातन ऐसी कथाको सुन ३ ऐसे क्रुद्ध हुआ चमरदैत्य हस्ती, घोड़े, रथ इन्हों करकेसहित बेगसे देवीके सन्मुख प्राप्त हुआ ४ पीछे दैत्य धनुष को नवाय बाणोंसे पर्वत पै बर्षा करनेलगा जैसे बादल ५ पीछे उद्धत हुई और देवी करके त्रासित हुई ऐसी दैत्योंकी सेना सुबर्ण पुष्प की तरह प्रकाशित होनेलगी जैसे बादलमें बिजली ६ पीछे देवी कितनेक दैत्योंको बाणोंसे और कितनेक दैत्यों को तलवार से और कितनेक दैत्यों को मूसल से और कितनेक को गदा और चर्मसे पृथ्वी में गिराती भई ७ और कालके समान देवीका सिंह केशरसटों को कँपाता

हुआ दैत्यों को मारताहुआ ८ और कितनेक दैत्य बज्र से मारेगये और कितनों की छाती शक्तिसे तोड़ी गई और कितनेक दैत्य दण्डसे मारेगये और कितनेक फरसासे काटे गये ९ और कितनोंके दण्डों से शिर काटे गये और कितनों का चक्र से गल काटागया ऐसे बहुत से दैत्य चलायमान होनेलगे और पृथ्वी में गिरने लगे और कितनेक ग्लानिको प्राप्त होगये और कितनेक रणभूमि को त्यागतेभये १० ऐसे देवीसे दुःखित हुये और कालरात्रिको मानतेहुये और भयसे पीड़ित ऐसे दैत्य भागनेलगे ११ पीछे सेना के अग्रभागको भग्न रूप देख और सन्मुख स्थितहुई देवीको देख मदवाला हस्तीपै स्थितहुआ १२ चमर दैत्य देवी के सन्मुख प्राप्त हुआ पीछे देवी के सन्मुख शक्तिको छोड़ताभया और सिंह के सन्मुख त्रिशूल को छोड़ता भया १३ तब देवी ने हुंकार शब्द करके शक्ति और त्रिशूलको भस्म करदिया पीछे दैत्यके हस्ती ने मध्यभाग से सिंह को ग्रहण किया १४ तब सिंह बेगसे कूद और डहाथड़ करके दैत्यको मार और हस्तीको फाड़ देवी के लिये निवेदित करताभया १५ पीछे मध्यभाग से दैत्यको ग्रहणकर और बायें हाथ से भ्रमा देवी बजानेलगी जैसे डोरूको १६ पीछे बाजा को बजातीहुई देवी अट्टहास शब्द को छोड़नेलगी तब देवी के हँसने से नाना प्रकार के प्राणी उत्पन्न होनेलगे १७ अर्थात् कितनेक भगेराके मुख के समान मुखवाले और कितनेक भेड़िया

के आकारवाले और कितनेक घोड़ा के मुख के समान मुखवाले और कितनेक भैंसा के मुख के समान मुखवाले और कितनेक शूकर के मुखके समान मुखवाले १८ और कितनेक तोता और मुर्गा के मुखके समान मुखवाले और कितनेक गाय बकरी भेड़ इन्हों के मुखके समान मुखवाले और कितनेक नानाप्रकारके मुख नेत्र पैरोंवाले और किननेक नानाप्रकार के शस्त्रों को धारण करनेवाले १९ और कितनेक गानकरतेहुये और कितनेक हँसतेहुये और कितनेक रमणकरतेहुये और कितनेक बीणाको बजातेहुये और कितनेक देवी की स्तुति करतेहुये २० पीछे इन भूतगणों करके देवी सब दैत्यों की सेनाको काटनेलगी जैसे खेतीको बज्र २१ जब सेना का अग्रभाग और चमर दैत्य मारागया तब सेनाको पालनेवाला चिक्षुर दैत्य युद्ध करनेलगा २२ अर्थात् दृढ़रूपी धनुषको खैंच बाणोंकी बर्षा करनेलगा जैसे मेघ पृथ्वी पै २३ पीछे देवी अपने बाणोंकरके दैत्य के बाणोंको काटनेलगी पीछे सोलह बाणोंको ग्रहण करके २४ चार बाणों से दैत्य के चारघोड़ों को मार पीछे एकबाणसे सारथीको मार पीछे एकबाणसेध्वजाकोकाट २५ पीछे एकबाण से दैत्यका बाणसहित धनुषको काटतीभई जब दैत्य का धनुष टूटगया तब दैत्य चर्मढालको ग्रहण करताभया २६ पीछे देवी चारबाणों से खड्ग और ढालको तोड़ती भई पीछे दैत्य त्रिशूलको ग्रहणकर २७ और ऊपरको उठा देवीकेसन्मुखभागा जैसे गीदड़ सिंह-

नी के सन्मुख २८ तब भागते हुये दैत्यके दोनों पैर और दोनों हाथ और शिर इन पांच अंगों को पांचबाणों से काटती भई तब मृत्युको प्राप्तहुआ चिक्षुर दैत्य पृथ्वी में गिरा २९ पीछे उदग्राख्य, करालास्य ३० बाष्कल, उद्धत, उग्रास्य, उग्रकार्मुक, दुर्द्धर, दुर्मुख, बिडालनयन ये नव ३१ दैत्य नानाप्रकार के शस्त्रों को ग्रहणकर देवी के सन्मुख भागे तब आवते हुये तिन दैत्यों को देख लीला करके देवी हाथ से बीणा को ग्रहणकर और दूसरे हाथमें डमरू को ग्रहणकर बजाने लगी ३२ और हँसनेलगी जैसे जैसे बाजों को देवी बजाने लगी तैसे तैसे भूतों के गण नाचनेलगे और हँसनेलगे ३३ पीछे शस्त्रों को धारण करनेवाले दैत्य देवीको काटने को आने लगे तब देवी ३४ सब दैत्यों के चोटोंको पकड़के सिंह से उतर बीणाको बजातीहुई नाचनेलगी और मदिरा कोपीनेलगी ३५ तब देवी के हाथसे कंपित और विशीर्ण गर्ववाले सब दैत्य शस्त्र और प्राणों को त्यागते भये पीछे मरेहुये बहुतसे दैत्यों को देख ३६ अतिबलवाला महिषासुर भूतगणों के सन्मुखभागा अर्थात् कितने को तो तुंडसे और कितनेको तो पुच्छसे और कितने को तो बलसे और कितनेको तो श्वासकी पवन से और कितनेको तो ३७ वज्र के समानरूपी शब्द से और कितनेको तो सींगों से मथने लगा और पीछे युद्धमें सिंहको मारनेकी इच्छा करके सन्मुखभागा तब देवी क्रोधको प्राप्तभई ३८ अर्थात् दैत्यको लीला करके

फेरतीभई पीछे कोप से तीक्ष्ण शृंगोंवाला ३९ पर्वत, पृथ्वी, समुद्र, बादल इन्हों को कँपाताहुआ ऐसा दैत्य देवी के सन्मुख आया ४० तब देवी तिसदुष्टको पाशसे बांधतीभई तब वह दैत्य हस्ती के रूपको धारणकरता भया फिर देवी तिसहस्ती के सूंड़को काटतीभई तब वह दैत्य फिर भैंसा होताभया ४१ पीछे देवी तिसभैंसाके लिये शूलको छोड़तीभई तब वह शूल टूटके पृथ्वी में गिरा ४२ पीछे देवी अग्निकीदीहुई शक्तिको छोड़तीभई तब वह शक्तिभी टूटके पृथ्वी में गिरी ४३ पीछे देवी बिष्णु के दिये चक्रको छोड़तीभई तब वह चक्र भी निष्फल होगया ४४ पीछे देवी कुबेर की दीहुई गदा को छोड़ती भई फिर वह गदा भी टूटके पृथ्वी में गिरी ४५ फिर देवी ने बरुण का पाशभी बांधने के वास्ते फेंका परन्तु वह पाशभी तुंड और खुरों करके दैत्यने तोड़दिया पीछे देवी धर्मराजके दिये दण्ड को छोड़तीभई तब तिस दण्डकेभी अनेकटुकड़े होगये ४६ पीछे देवी इन्द्रके दियेहुये बज्रको छोड़तीभई तब वह बज्रभी सूक्ष्मरूपको प्राप्तभया तब सिंहको त्याग देवी महिषासुरके पृष्ठभागपै आरोहण करतीभई ४७ तब महिषासुरभी कूदनेलगा तब देवी अपने कोमलरूपी पैरोंकरके गीले मृगछाला की तरह मर्दन करनेलगी ४८ तब देवी के मर्दन करने से पर्वत के समान दैत्य बल से हीन होताभया पीछे देवी त्रिशूल से महिषासुरके कंठको काटतीभई तब कण्ठ से तलवारको धारण

करनेवाला एकपुरुष निकसा ४९ तब देवी निकसतेही तिस पुरुष के हृदय में पैरकी लात से मारती भई और पीछे महिषासुरके केशोंको ग्रहणकर ५० उत्तम तलवार से महिषासुरके शिरको काटती भई तब दैत्योंकी सेना हाहाकार करनेलगी ५१ पीछे चण्ड, मुण्ड, धूम्र, तारक, असिलोमा, भयकातराक्ष ५२ इन आदि दैत्य देवी से पीड़ितकिये पातालमें प्रवेश करते भये ५३ पीछे देवताओं के गण देवी के जयको देख दिव्य स्तुतियों करके स्तवन करनेलगे ५४ हे नारायणि ! हे सर्व्वजगत्प्रतिष्ठे ! हे कात्यायनि ! हे घोरमुखि ! हे स्वरूपे आपको धन्य है ऐसे देवते और सिद्धों से संस्तूयमान देवी कहनेलगी ५५ हे देवताओ ! तुम्हारे प्रयोजन के लिये फिर मैं जन्म लेऊँगी ऐसे कहकर तिनसब देवताओं के शरीरों में प्रवेश करतीभई ५६ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांदेवीमाहात्म्येमहिषासुरवधो नामविंशोऽध्यायः २० ॥

## इक्कीसवां अध्याय ॥

नारदनेपूछा हे पुलस्त्यजी! देवीका फिर जो अवतार हुआहै वह मेरे प्रति फिर विस्तारसे कहो १ पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! फिर देवीकी उत्पत्तिको मैं कहताहूँ सुन शुम्भदैत्यके नाश के लिये और लोक के कल्याण के लिये २ वह हिमवान्पर्वत के जो पुत्रीहुई फिर वह महादेवने बिवाही और उमा और कौशिकी नामसे विख्या-

तहुई ३ फिर वह बिंध्य पर्वत में गमन कर और भूत गणोंसेपरिवृतहो उत्तमशस्त्रों से शुम्भ और निशुम्भको मारेगी ४ नारद ने पूछा हे ब्रह्मन्! आपने दक्षकी पुत्री सतीकी मृत्युकही और वह फिर हिंमवान्पर्वतकी पुत्री हुई यह मेरे लिये आप कहने को योग्य हैं और जैसे वह पार्वती कोशसे उत्पन्न हुई कौशिकी कहाई और जैसे वह देवी शुम्भ और निशुम्भ को मारती भई ५ शुम्भ और निशुम्भ किसके पुत्र हुये यह आख्यान मेरे लिये तत्त्वसे आप कहनेको योग्यहो ६ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! पार्वतीकी उत्पत्ति और स्कन्दकी उत्पत्ति तुमसे मैं कहूंगा सावधान होके सुन ७ जब सती का देहांत होगया तब ब्रह्मचारी ब्रतमें स्थित महादेवजी निराश्रम भावको प्राप्तहो तप करनेको व्यग्रस्थितहुये ८ तब सबदेवते सेनाके स्वामी महादेव के बिना ९ दैत्योंके इन्द्र शुम्भ ने पराजित किये तब सब देवते चक्र गदाको धारण करनेवाला और श्वेतद्वीपमें स्थित ऐसे विष्णु की शरण भये १० तब आवतेहुये इन्द्र आदि सब देवताओंको देख और हँसके मेघकी गम्भीरता की तरह बचनको बिष्णु कहतेभये ११ कि हे देवताओ! देवताओं के इन्द्र शुम्भने तुमसबकोजीतलिये जिसकरके तुमसब इकट्ठे होके मेरे समीप में प्राप्त हुयेहो १२ सो तुम्हारे कल्याणके लिये जो मैं कहूं वह करो जिसके आश्रय होने से जयकी प्राप्तिहोवे १३ जो ये अग्निष्वात्ता इन आदि नामों से बिख्यात पितरदेव हैं इन्होंकी मानसी कन्या

मेना नामसे विख्यात है १४ सो महातिथी अर्थात् अमावस्या आदि तिथि में तिन्हों की आराधना कर यह कहो कि मेना हिमवान् पर्वतकी रानी बनै तिसमें रूप से संयुक्त और तपस्विनी और जिसने दक्षके कोपसे प्राण त्यागदिये हैं वह सती फिर जन्म लेवेगी १५ पीछे वही महादेवके तेज से पुत्रको जन्मेगी तब वह पुत्र इस दैत्येन्द्रको मारेगा १६ इस वास्ते पवित्र और महाफलवाले कुरुक्षेत्र देश में गमनकरो तहां पृथूदक तीर्थ में अविनाशीरूप जे पितरहैं १७ तिन्होंको महातिथीकेदिन पूजो जो शत्रुओंका पराभव चाहतेहो तो ऐसेकरो १८ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ऐसे विष्णुके वचनको सुन इन्द्र आदि सबदेवते अंजलियोंको बांध विष्णुसेपूछनेलगे १९ किहेदेव! ऐसा कुरुक्षेत्रदेश कहांहै जहां पवित्ररूपी पृथूदकतीर्थ है सो हे देव! तिसपृथूदक तीर्थकी उत्पत्ति हमारे लिये कहो २० और सब तिथियों में उत्तमतिथी कौनहै जिसमें यत्नसे पितृ देवोंका पूजन करना चाहिये २१ तब देवताओं के वचन को सुन विष्णु भगवान् कुरुक्षेत्रकी उत्पत्ति और उत्तम तिथीको कहनेलगे २२ भगवान् कहते हैं कि सोमवंश में उत्पन्न होनेवाला ऋक्षनाम राजा कृतयुग की आदि में हुआ और ऋक्षके संवर्ण पुत्रहुआ २३ यह संवर्णको पिताने बालक अवस्थामें राज्य पै बैठाया और धर्मोंमें रत और मेराभक्त ऐसा संवर्ण राजा बालक अवस्थाही में हुआ २४ पीछे संवर्ण का पुरोहित वशिष्टमुनि हुआ तब

मुनिने राजाको अङ्गोंसहित सब वेद पढ़ादिये २५ पीछे अनध्यायमें वह राजाका पुत्र बनमेंगया अर्थात् सबकर्मों में बशिष्ठजीको तत्परकर २६ पीछे मृगयाके मिससे अकेला बनको गया २७ पीछे आश्चर्य से आविष्टहुआ और सुगन्धसे तृप्तहुआ और प्रकाशित ऐसा राजपुत्र सबऋतुओं के फूलों से परिबृत बनमें चारों तर्फ बिचरनेलगा २८ तहां बनकेअंतमें कह्लार और कमलके फूलों से ब्याप्त २९ और अनेक प्रकार के पक्षियों के शब्दों से शब्दित ऐसा एकजगहमें अप्सरा और देवताओंकी कन्या क्रीड़ा करतीहुई देखी ३० और तिन्हों के मध्यमें एक अधिक रूपवाली कन्याको देख कामदेवसे राजाका पुत्र पीड़ितहुआ और वह कन्याभी राजाके पुत्रको देख के कामसे आतुरहुई ३१ ऐसे दोनों कामदेव के बलसे पीड़ितहुये मोहकोप्राप्तहुये पीछे वहराजा घोड़ासे पृथ्वी में गिरा ३२ पीछे महात्मारूपी और कामरूपी गन्धर्व तिसराजाके समीपमें प्राप्तहो पानीसे सींचनेलगे ३३ तब राजाको फिर संज्ञा उपजी और उसी समय में वह कन्याभी कामदेवके बाणों से पीड़ितहुई मूर्च्छाको प्राप्त भई ३४ तब अप्सराओं ने उठाके वहभी पिताके स्थानपै पहुँचाई और अतिचतुर अप्सराओं ने मधुर और बचनरूपी पानीसे आश्वासितकरी ३५ पीछे राजा घोड़ेपरचढ़ सुमेरुपर्वतके शिखरपै प्राप्तभया जैसे कामचारी देवता ३६ परन्तु जबसे सुन्दर नेत्रोंवाली और तपती नामसे बिख्यात ऐसी वह कन्या देखी तबसे

राजा न दिनमें भोजनकरै न रात्रि में शयनकरै ३७ पीछे सबके अन्तःकरणकी बार्त्ताको जाननेवाला बशिष्ठजी तपती कन्यासे तापितहुये राजाको जानते भये ३८ तब योगबलसे बशिष्ठ आकाशमें रबिमंडल में प्राप्त हो रथमें स्थितहुये सूर्यको देखके ३९ प्रणाम करतेभये और सूर्यभी बशिष्ठजी को प्रणाम करता भया तहां दूसरा सूर्यकी तरह प्रकाशमान हुआ बशिष्ठ ४० रथमें स्थितहुआ पीछे सूर्यने अनेक प्रकारके पुष्पोंसे बशिष्ठ जीकी पूजाकरी और आगमनका कारण पूछा ४१ तब सूर्यसे बशिष्ठजी कहनेलगे कि हे देवेश! आपसे याचना करने को मैं प्राप्तहुआहूं ४२ सो अपनी पुत्री को संवर्ण राजाको देनेके लिये आप योग्यहैं तब सूर्य ने अपनी तपती नामवाली पुत्री बशिष्ठ के लिये देदी ४३ तब तिस सूर्यकी पुत्रीको सङ्गले बशिष्ठमुनि अपने आश्रम में प्राप्त हुये ४४ पीछे वह सूर्यकी पुत्री तिस पूर्वोक्त राजाके पुत्रका स्मरणकर अंजली बांध बशिष्ठसे कहने लगी ४५ हे ब्रह्मन्! मैंने वेद पढ़नेके समय अप्सराओं के सङ्ग बनमें देवताओं के गर्भकी तुल्य लक्षणोंसे युक्त राजाका पुत्र देखा और मैंने जाना ४६ जिसके चक्र, गदा, तलवार इन्होंसे चिह्नित दोनों पैरहैं और जिसके हस्तीके सूंड़के समान जङ्घा और ऊरूहैं और जिसके सिंहकी कटिके समान कटि है और जिसका वाम और त्रिवलीसे बँधाहुआ मध्य है ४७ और जिसकी सोना की शिलाके समान छाती है और जिसकी शङ्खके स-

मानं आकृतिवाली ग्रीवा है और जिसके पुष्ट और कठिन और दीर्घ ऐसे बाहूहैं और जिसके कमलकी डंडी सरीखे दोनों हाथ हैं ४८ और जिसका छत्रके समान आकृतिवाला शिरहै और जिसके नील और कुटिल ऐसे केशहैं और जिसके दोनों कांधे दोनों कान और दोनों नासिका ये आपसमें समान हैं और जिसकी सुन्दर पर्बोंवाली हाथ पैरोंकी अंगुलियां लंबी हैं ४९ और जिसके ऊंचे और श्वेत दांत हैं और जो पांचों प्राण और छठा मन तिन्हों करके उदार वीर्य वाला है ५० और लंबी लंबी तीन त्रिबलियों से गंभीर है और पांचों इन्द्रियोंमें रक्तहै और रजोगुण तमोगुण सत्त्वगुण इन्हों करके निवाया हुआ है जीवात्मा और परमात्मा से शुक्त है और सत्य, धर्म, दया, क्षमा इन्हों करके सुगन्धवाला है और दश कमलरूपी दशद्वारों वाला है ऐसा वह पति मैंने पहले बर लिया है ५१ सो तिस राजपुत्रको बिचारके और तिसीके लिये मुझको देना उचित है क्योंकि गुणों से सम्पन्न पुरुषके लिये कन्याको दिया करते हैं और मूर्ख के लिये नहीं ५२ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ऐसे सूर्यकी पुत्रीके बचनको सुन और ध्यान में तत्पर हो और सूर्य की पुत्री जिस समयमें तिस राजपुत्रको देखती भई तिसका बिचार कर बशिष्ठजी कहनेलगे ५३ कि हे पुत्री! वही ऋक्षका पुत्र संवर्ण मेरे आश्रममें आनेवाला है ५४ पीछे वह राजपुत्र तिस बशिष्ठके आश्रममें आगमनकर वशिष्ठ

जीको देख और मस्तकसे प्रणामकर पीछे विशालनेत्रों वाली और पहले देखीहुई ऐसी तिस कन्याको देखता भया और पूछनेलगा कि हे द्विजेन्द्र! यह कन्या कौनहै तब वशिष्ठजी कहनेलगे कि हे नरेंद्र! ५५ सूर्यकी पुत्री और पृथ्वी में तपती नामसे प्रसिद्ध यह कन्याहै सो मैंने तेरे लिये सूर्य की याचना करी तब सूर्यने यह मेरे सङ्ग भेजी है ५६ तब मेरे आश्रममें प्राप्त भई है तिससे तू उत्थानकर और इस तपती कन्याके हाथको बिधानपूर्वक ग्रहणकर ऐसे वशिष्ठजी के वचनको सुन प्रसन्नहुआ राजा बिधिसे तपती के संग बिवाह करताभया ५७ पीछे तपतीभी मनोबाञ्छित रूपी और इन्द्र के समान प्रभा वाला ऐसे पति को प्राप्तहो उत्तम स्थान में प्रकाशित होतीभई जैसे दैत्यकी कन्या इन्द्रके संग स्वर्गमें ५८ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांडमालम्भवेतपत्याख्याने एकविंशोऽध्यायः २१ ॥

## बाईसवां अध्याय ॥

विष्णु कहनेलगे तिस तपती में संवर्ण राजा के सकाशसे राजाके लक्षणोंसे संयुक्त पुत्रहुआ पीछे जात-कर्मादि संस्कार से बढ़ने लगा जैसे घृत से अग्नि १ और वशिष्ठजीने तिसका चूड़ाकर्म कराया और नवें वर्षमें यज्ञोपवीत कर्म कराया पीछे वेदोंमें और शास्त्रों में पारग हुआ २ पीछे चौबीसवें वर्ष में सर्वज्ञता को प्राप्तहुआ और पृथ्वी में कुरुनाम से विख्यात हुआ ३

पीछे संबर्ण राजा धार्मिक पुत्रको देख बिवाहके लिये सुदामा राजाकी सौदामिनी पुत्रीको कुरु के लिये बरता भया ४ और सुदामा राजाभी अपनी पुत्री को कुरुके लिये देता भया पीछे धर्म अर्थ को बिचारनेवाला कुरु तिस भार्य्या के संग रमण करता भया जैसे इन्द्राणी के संग इन्द्र ५ पीछे संबर्ण राजा राज्य भार के योग्य पुत्र को जान के यौवराज्य के लिये अभिषेचन करता भया ६ पीछे पिता से अभिषेचित किया कुरु पुत्रोंकी तरह प्रजा को पालने लगा अर्थात् आपही लोकपाल हुआ ७ और आपही पशुपाल हुआ और आपही सबोंकी पालना करने लगा ८ पीछे तिसकी बुद्धि उत्पन्न हुई अर्थात् जितनी कीर्त्तिरहै तितने काल तक मनुष्यका स्वर्गलोक में बास होताहै ९ ऐसे मान के और यथायोग्य बिचार के कीर्त्ति के लिये समस्त पृथ्वीपै बिचरने लगा १० पीछे द्वैत बनमें प्राप्तहो प्रसन्न हुआ भीतर गमन करता भया ११ तहां पवित्र और पापों को दूर करनेवाली और प्लक्षसे उत्पन्न होनेवाली और ब्रह्मा की पुत्री और सरस्वती नाम से बिख्यात १२ सुदर्शन की जननी और बिस्तार पूर्वक ह्रद को कर स्थितहुई और किरोड़हों तीर्थों से संयुक्त १३ ऐसी सरस्वती नदीको देखता भया पीछे तिसके जलको देख तहां स्नानकर राजा प्रसन्न हुआ पीछे ब्रह्माकी उत्तर बेदीको गया १४ जहां बीस बीस कोस चारोंतर्फ को स्यमन्तपंचक नाम क्षेत्र है १५

देवते कहनेलगे कि हे पुरुषोत्तम! ब्रह्माजी के कितनी वेदीहैं जिसकरके तैंने उत्तर बेदी कही १६ बिष्णु कहनेलगे कि ब्रह्माजी करके सेवित पांचवेदीहैं जिन्हों में ब्रह्माजी ने यज्ञकरी है १७ तिन्हों में प्रयागजी मध्यम बेदीहै और गया पूर्व बेदी है और बिरुजा दक्षिण बेदी है यह अनन्तफल के देनेवाली है १८ और तीन कुण्डों से अलंकृत प्रतीची बेदी पुष्कर है और स्यमन्तपञ्चक नामसे उत्तर बेदी है १९ तिस स्यमन्तपञ्चक क्षेत्रको राजर्षि कुरु उत्तम मानता भया और इसी जगह मनोांछित सबकामों को करूँगा २० ऐसे मनसे चिन्तवन र उत्तम रथको त्याग कीर्ति के लिये सुन्दर स्थान ो करता भया २१ अर्थात् सोना का हल बना और हादेव का बृष और धर्म्मराज का पौण्डुक नाम भैंसा न दोनोंको जोड़ पृथ्वीको वाहने लगा २२ तब हल ो वाहते हुये कुरु राजा के समीप में इन्द्र प्राप्त होके हने लगा कि हे राजन्! क्या वाहताहै २३ तब राजा कहा कि तप, सत्य, क्षमा, दया, शौच, दान, योग, ब्रह्मचर्य्यता इन्हों को वाहता हूँ २४ तब इन्द्र कहने गा हे राजन्! बीज कहां ते लिया तब राजा ने कहा ष्टांग योगसंज्ञक बीज ग्रहण किया है २५ पीछे जब द्र चलागया तब कुरु राजा रोज के रोज तिसी हल सात कोस चारों तर्फ पृथ्वी को वाहने लगा २६ छे में तहां गमन करके कहनेलगा कि हे राजन्! यह ा करता है तब तिस राजा ने अष्टांग महाधर्म वर्णन

किया २७ तब मैंने कहा कि हे नृप! बीज कहां है तब राजा ने कहा कि मेरी देहमें बीज स्थितहै २८ तब मैं कहनेलगा कि बीज मुझको दे मैं बोऊँगा हलको तू बाहता रह तब कुरु राजाने दाहनी भुजा पसारदी २९ तब मैंने अपने चक्रके बेगसे हजार टुकड़े बनाके तुम्हारे लिये दिये ३० पीछे राजा ने बाईं भुजा पसार दी तब वहभी मैंने चक्रसे काट तुम्हारे लिये अर्प्पण करी पीछे राजाने दोनोंजांघ मेरेलिये पसारदी तब मैंने दोनोंजांघ भी काटके तुम्हारे लिये अर्पण करी ३१ पीछे वह राजा मेरे सन्मुख शिरको देताभया तब मैं प्रसन्नहोके कहने लगा कि हे राजन्! तू बरमांग ३२ तब राजा बरों को मांगता भया कुरु कहनेलगा कि हे भगवन्! जहां तक मैंने यह पृथ्वी बाही है वह धर्म्मक्षेत्र होजावे और यहां स्नान करने वाले मनुष्यों को महापुण्य फल मिलै ३३ और उपबास, दान, स्नान, जाप, होम, यज्ञ, शुभ और अशुभ जो इस क्षेत्रमें कियाजावे ३४ वही हे भगवन्! अक्षयगुणा होजावे ३५ और हे पुंडरीकाक्ष! आप भी महादेव और सब देवताओं के संग मेरेनामसे प्रकटहुये इसक्षेत्रमें बासकरो ३६ ऐसे कुरुराजाके बचनको सुन मैं अंगीकार करताभया और राजासे कहनेलगा कि हे महीपते! तू दिब्य शरीर को धारण करनेवालाहो ३७ और अन्तकाल में तू मेरे बीचमें लयहोवेगा और तेरी निरन्तर कीर्तिरहेगी इसमें संशय नहीं ३८ और तिसी क्षेत्रमें याजक यज्ञोंको करेंगे अर्थात् चक्रनामा यक्ष और

वासुकीसर्प और विद्याधर शंकुकर्ण और सुकेशीराक्षस ३९ महादेव और पावक ये सब जहां तहां इकट्ठे हुये कुरुजांगल देशकी रक्षाकरते हैं ४० और इनपूर्वोक्तरा-जाओं के धनुषको धारण करनेवाले आठ हजार नौकर पापियों को कुरुक्षेत्रमें स्नान नहीं करने देते हैं ४१ और तिसकुरुक्षेत्रके मध्यमें पापों को हरनेवाला और कल्या-णरूपी और पवित्र ऐसा पृथूदक तीर्थहै ४२ यह तीर्थ महाभुज राजाने प्रकाशित किया है ४३ विष्णु कहने लगे कि सरस्वती और दृषद्वती के उत्तर कुरुजांगल देश में स्थितहुये लोमहर्षणजी को ४४ बहुतसे ऋषि सरोवरका प्रभाव पूछतेभये ४५ कि हे भगवन्! सरोवरका प्रमाण कहो और तीर्थोंका विशेषकरके ४६ और देव-ताओंका माहात्म्य और वामनजी की उत्पत्ति यह आ-ख्यान कहो ऐसे ऋषियों के वचनको सुन लोमहर्षण कहनेलगा ४७ कि कमलासनपै स्थितहोनेवाले ब्रह्माजी को और लक्ष्मी से समन्वित विष्णुको और महादेव को मस्तकसे प्रणामकर तीर्थों में उत्तमरूपी ब्रह्मसर तीर्थको कहताहूं ४८ यह सन्निहितसर ब्रह्माजी ने पहलेही कह दियाहै ४९ कलि और द्वापर के मध्यमें व्यासजीने जो इस सरका प्रमाण कहाहै वह सुनो ५० और विश्वेश्वर तीर्थ से लगा और त्रिपुरतीर्थ और कन्या और जाह्न-वी और जहांतक ओघवती कही है तहांतक सन्निहित तीर्थ है ५१ और हे द्विजश्रेष्ठो! जो मैंने तीर्थ का प्र-माण सुना है वहभी सुनो ५२ विश्वेश्वर तीर्थ से लगा

के और एकरात्री और पवित्ररूपी सरस्वतीतक चारों तर्फको दोकोसतक सन्निहिततीर्थ कहाहै ५३ इसतीर्थ के आश्रयहो देवते और ऋषि मुक्तिके और स्वर्ग के लिये सेवन कररहे हैं ५४ सृष्टि की कामनावाले और महायोगी ऐसे ब्रह्माजीने यह क्षेत्र विस्तृत कियाहै और स्थितिकी कामनावाले बिष्णुनेभी इसी तीर्थका सेवन कियाहै ५५ और तीर्थके मध्यमें प्रवेशकरनेवाले महादेवजीने इसीतीर्थका सेवन किया है ५६ और आदि मे यह ब्रह्माजीकी बेदीकहाई है पीछे रामह्रदनाम से बिख्यात हुआ है और कुरुराजाने हलसे बाहा इसलिये यह कुरुक्षेत्र कहाता है ५७ तरन्तुक और अरन्तुक के अन्तर में रामह्रदपंचकतक यह कुरुक्षेत्र में स्यमंतपंचक ब्रह्माजीकी उत्तर बेदी कही है ५८ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्येद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

## तेईसवां अध्याय ॥

ऋषि पूछतेभये हे देव! बामनजी के माहात्म्य को और बिशेषसे उत्पत्तिको कहो और जैसे बलिको दण्ड दिया और इन्द्र को राज्यदिया १ लोमहर्षणजी बोले हे मुनिजनो! प्रसन्नहुये आप महात्मारूपी बामनजी की उत्पत्ति और प्रभाव और कुरुजांगल देशमें निवासको सुनो २ हे द्विजसत्तमो! तैसेही दैत्योंके बंशोंको भी सुनो जिस बंशमें पहले बिरोचनका पुत्र बलिहोता भया ३ और दैत्योंका आदिपुरुष हिरण्यकशिपु हुआ

तिसके अतितेजवाला प्रह्लादनाम दैत्य हुआ ४ तिस से विरोचन जन्मा और विरोचन से वलि जन्मताभया जब हिरण्यकशिपु मारागया तिसके पीछे सब जगह से देवतों को दूरकर ५ त्रिलोकी में तिस दैत्य ने राज्य किया और यज्ञों के भागोंको भी दैत्यही ग्रहण करनेलगे और त्रिलोकी दैत्यभावको प्राप्तहोगई ६ तथा मय और शंबर नामवाले दैत्यों की जय होनेलगी और शुद्धहुई सब दिशाओं में धर्म कर्म प्रवृत्त होगया ७ और दैत्योंका मार्ग प्रवृत्तहुआ और अयन पै स्थित सूर्य हुआ और प्रह्लाद शंबरआदि प्रधान दैत्योंने प्रीतिसे ८ सब दिशा रक्षित करदीं और आकाश भी दैत्यों से रक्षित हुआ और स्वर्ग में स्थित होनेवाले यज्ञकी शोभा को जब वेद दिखाते भये ९ और प्रकृति में स्थित और सत् मार्ग में वर्त्तमान ऐसा लोक होगया और सब पापों का लेश भी नहीं रहा और धर्म भाव सब प्रकार से प्रकाशित हुआ १० और जब चार पैरोंवाला धर्म स्थित हुआ और एक पैरवाला पाप स्थित हुआ और प्रजाकी पालनामें युक्त हुये राजालोग प्रकाशितहुये और अपने २ धर्मोंमें सब आश्रमवासी युक्तहुये ११ तब दैत्योंने राज्य पै वलिका अभिषेक किया जब दैत्योंके समूह आनन्दित और सुन्दर शब्द बोलनेलगे १२ तब पद्मांतरके समान कांतिवाली और कमलको हाथमें लिये और वरको देने वाली और सुन्दर भेषवाली ऐसी लक्ष्मी वलिके समीप प्राप्तभई १३ लक्ष्मी बोली हे बलवालोंमें श्रेष्ठ बलिराजा!

हे दैत्यराज ! हे महाकांतिवाले ! इन्द्रका पराजय होगया तब मैं तुझपै प्रसन्नहुई हूँ तेरा कल्याण हो १४ जो आपने युद्ध में पराक्रमसे इन्द्र पराजित किया इसलिये तेरे उत्तम पराक्रम को देख मैं आपही आई हूँ १५ हे दैत्यों में सिंहके समान ! कुछ आश्चर्य नहीं है क्योंकि हिरण्यकशिपु के कुलमें उत्पन्न हुये आपके ऐसा कर्म है १६ हे राजन् ! तैंने अपना प्रपितामह हिरण्यकशिपु प्रकाशित किया जिसने यह अव्ययरूपी सम्पूर्ण त्रिलोकी युक्त करी १७ ऐसे कहकर वह देवी लक्ष्मी दैत्यों के राजा बलिको बरके देनेवाली और सेवने के योग्य और सब देवतों के मनों में रमनेवाली ऐसी वह लक्ष्मी प्रविष्टहुई १८ पीछे प्रसन्नहुई देवी, प्रबरा, ह्री, कीर्त्ति, द्युति, प्रभा, धृति, क्षमा, शक्ति, ऋद्धि, दिब्यरूपवाली महामति १९ श्रुति, बिद्या, स्मृति, कांति, शांति, पुष्टि, क्रिया, दिब्यरूपवाली और नाचने तथा गाने में कुशल ऐसी सब अप्सरा २० ये सब दैत्योंके इन्द्र बलिराजा को प्राप्त भई क्योंकि जिस ब्रह्मबादी बलिराजाको चराचर सहित त्रिलोकी का सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य जिसलिये प्राप्तहुआ २१ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्येत्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

## चौबीसवां अध्याय ॥

ऋषि कहने लगे देवतों के कर्म को कहो जैसे पराजित हुये देवते बर्ताव बर्तते भये और कैसे देवतों के देवते विष्णु बामनअवतार को प्राप्तभये १ लोमहर्षण

जी बोले हे मुनिजनो! बलिराजा के अधीन हुई त्रि-
लोकी को देखकर इन्द्र देव अपनी माता के सुमेरुपर्वत
पै स्थित हुये सुन्दर स्थान को जाता भया २ तहां
माताके समीप प्राप्तहोके वचन कहनेलगा अदिति के
सब पुत्र युद्ध में दैत्यने जीतलिये ३ अदिति बोली
हे पुत्र! जो तुम युद्ध में तिसको मारने के लिये समर्थ
नहीं हो और जो मरुद्गण देवते भी तिसको मारने को
समर्थ नहीं हो तो ४ केवल सहस्रशिरोंवाले भगवान्
तिसको मारनेके लिये समर्थ हैं हे हजारनेत्रोंवाले इन्द्र!
तिसी एक से मरसक्ता है अन्य किसी से नहीं ५ इस
लिये ब्रह्मवादी पिता कश्यपजी से पूछो महात्मा दैत्य
बलि का पराजय के लिये ६ पीछे सब देवते कश्यपजी
के समीप प्राप्तहुये तहां प्रकाशित हुये तप के समुद्र
७ और आदि में होनेवाले और देवतों के गुरु और
दिव्य और ब्रह्मतेज से प्रकाशित और तेजसे सूर्य
के समान आकारवाले और अग्नि की शिखा के स-
मान स्थित हुये दण्ड को न्यस्त किये हुये और तप से
युक्त और कृष्णमृग के चर्म के वस्त्रों को धारण किये
और वक्कल तथा मृगछाला से युक्त और तेजसे प्रदीप्त
की तरह और अग्नि के तरह प्रकाशित हुये और घृत
तथा गंध को समीप में प्राप्तकिये और वेदके पाठ को
करते हुये और मानो शरीरवाले अग्नि हैं ऐसे और
ब्रह्मको जाननेवाले और अति उग्ररूप और चराचर
के गुरु और सामर्थ्यवाले और लक्ष्मी करके ब्रह्माजी

के समान और दीप्त तेज वाले और सब लोकों को रचनेवाले और प्रजा के पति और उत्तम और अपने भावविशेष करके मानो तीसरे प्रजापति ऐसे कश्यप जी को देखतेभये ८। १२ पीछे आदित्यों सहित और ब्रह्मण्य और हित में मनवाले ऐसे सब देवते प्रणाम कर और अंजली बांध कहनेलगे १३ बल से अधिक हुआ बलिदैत्य इन्द्रकरके युद्धमें नहीं पराजित होता इसकारण से देवतों की पुष्टिको बढ़ानेवाला कल्याणकरो १४ ऐसे तिन पुत्रों के बचन को सुन प्रभु कश्यपजी बोले हे पुत्रो! ब्रह्मलोक के लिये गमनकरने को बुद्धिको करो वे ब्रह्माजी तुम्हारे लिये उपायको कहेंगे जैसे तुम दैत्यराजको जीतोगे १५ हे इन्द्र! ब्रह्माजी के परम अद्भुत रूपी लोक में हम चलेंगे पीछे जैसे पराजय हुआ था तैसे ब्रह्माजी के आगे कहने को उद्यत होंगे १६ पीछे आदित्यों सहित देवते ब्रह्मर्षिगण से सेवित हुये ब्रह्मलोक को गमन करनेलगे १७ सुन्दर तेजवाले व दिव्य और मनोबाञ्छित चलनेवाले और यथायोग्य और अति बेग से संयुक्त ऐसे बिमानों के द्वारा एक मुहूर्त्त अर्थात् दो घड़ी करके ब्रह्मलोक में प्राप्त हुये १८ तप के समूह और अबिनाशी ऐसे ब्रह्माजी को पूछनेकी इच्छावाले वे देवते ब्रह्माजी की बिस्तृत हुई परम सभा में प्राप्त भये १९ भौंरों के सुन्दर गानसे मधुर हुई और सामवेद को गानेवालेमुनियों से अच्छी तरह उदीरित हुई और कल्याण को करनेवाली और शत्रुओं को ना·

शनेवाली ऐसे तिस सभा को देखके अतिआनंदित हुये २० उत्तम महर्षियोंसे क्रमपद अक्षर इन्होंसे उक्त करी ऋचाओंको बिस्तृतहुये कर्मों में वे देवते सुनते भये २१ यज्ञ, विद्या, बेद इन्हों को जाननेवाले और पद तथा क्रम को जाननेवाले ऐसे महर्षियों के स्वर करके वह सभा शब्दित हुई २२ यज्ञ और स्तोत्र को जाननेवाले और शिक्षा को जाननेवाले और वेदों को जाननेवाले और सब प्रकार की विद्याओंमें कुशल २३ और संसारके प्रधान जनोंमें मुख्य ऐसे मुनिजनों से कहे हुये स्वरको सुनते भये और तहां तहां नियमको धारण करनेवाले और उग्रव्रतोंको करते हुये २४ जप और होममें लगेहुये औरमुख्य ऐसे ब्रह्मर्षियोंको देखते देखते भये तिस सभाके मध्यमें लोकों के पितामह ब्रह्माजी स्थित होरहे हैं २५ चराचरके गुरु ब्रह्माजी को वेदरूपी विद्या से तहांही प्रजाके पति उपासित कर रहे हैं २६ दक्ष, प्रचेता, पुलह, मरीचि, भृगु, अत्रि, बशिष्ठजी, गौतम, नारद, विद्या, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, प्रकृति, विकार जो अन्य कारण महत्तत्त्व अंग और उपांगों सहित चारोंवेद, लोकपाल, तप, यज्ञ, संकल्प, प्राण ये सब और अन्य भी बहुतसे ब्रह्माजीको उपासित कररहे हैं २७। ३० और धर्म, अर्थ, काम, क्रोध, आनन्द, शुक्रजी, बृहस्पति जी, संवर्त्त, बुध, शनैश्चर, राहु, सब ग्रह, मरुद्गण, विश्वकर्मा हे द्विजोत्तमो ! सब

वसुदेवते और सूर्य, चन्द्रमा, दिन, रात्रि, पक्ष, महीना, छहोंऋतु ये सब स्थित होरहेहैं ३१। ३३ ब्रह्माजी की सब कामना को देनेवाली और दिव्य ऐसी तिस सभा में धर्मको धारण करनेवालों में श्रेष्ठ कश्यपजी और इन्द्र सब प्रकारके तेजों से प्रधानहुई और दिव्य और महर्षि गणोंसे सेवित और ब्राह्मशोभासेसेव्यमान और अचिन्त्य और ग्लानिसे रहित ऐसी तिस सभा में प्रवेश कर ३४। ३५ परम आसनपै स्थित हुये ब्रह्माजीको सब देखते भये और शिरोंसे प्रणाम करते हुये देवते ब्रह्मर्षियों के साथ ३६ पीछे नियत हुये देवते तिस महात्मा ब्रह्माजी के चरणों को स्पर्श कर सब पापोंसे बिमुक्त और क्लेशोंसे बर्जित ऐसे होगये ३७ कश्यपजी के साथ आये हुये सब देवतोंको देख देवतों के गुरु और ईश्वर और महातेजवाले ऐसे ब्रह्माजी बोलते भये ३८॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्येचतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

## पच्चीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले हे महाबलो! जिस प्रयोजनके लिये तुम सब प्राप्तहुये हो सो इसी प्रयोजन को संशयसे रहित मैं चिंतवन करताहूं १ हे देवताओ! तुम्हारा जो बाञ्छित है वह होगा और दैत्योंकाराजा इसबलिको जीतनेवाला होगा २ केवल दैत्योंकाही नहीं किंतु मेरी गति और विश्वका करनेवाला और त्रिलोकीकानेता और देवतों का स्वामी और सब लोकों का जो प्रभु है और जो

सनातन विश्वरूप है और जो मुझसे भी पहले जन्मा है और जो आदिदेव और सनातन है जिस महात्मा को देवते भी नहीं जानते भये कि यह कौनहै और वह पुरुषोत्तम देवतों को और हम सबों को और बिश्व को जानता है ३ । ५ तिसी देवकी कृपासे परमगति को कहूंगा जो योगको प्राप्त होके क्षीरसागर के उत्तर तीरपै उत्तर दिशा में बिश्व को करनेवाले ईश्वर उग्र तप को करते हैं पीछे सुन्दर शब्दसे संयुक्त और मेघके समान गम्भीर शब्दवाली और रंजितहुई और स्पष्ट अक्षरों वाली और रमणीक और भय से रहित और सब काल में कल्याणरूप और उत्तम संस्कारोंसे संयुक्त ऐसी ब्रह्म-वादियों की वाणी को सुनोगे ६ । ८ जब तिस ईश्वरकी दिव्य और सत्यआकार से संयुक्त और सब प्रकार के पापों को नाशनेवाली ऐसी वाणी को सुनोगे तिसके पश्चात् आत्मा करके वह होवेगा ९ तिसके व्रत की समाप्ति में और योग व्रत के विसर्ज्जन में विश्वके तेज से महात्मारूपी तिस देव का वचन अमोघ अर्थात् सफल होवेगा १० हे वरको देनेवाले के समीप स्थित हुये देवताओ ! कश्यपजी को मैं वरदूंगा और देवतों में श्रेष्ठो जो तुम समीप में प्राप्त हुये यह आप सबों का आगमन सफलहो जब ऐसे वह देव कहै तब तिस समय में अदिति और कश्यप तिस देव से वर को ग्रहण करो ११ तिस देवके पैरों में अपने शिरसे प्रणाम कर कहो कि हे देव ! आपही हमारे पुत्रभाव को प्राप्त हो-

जाओ और हमारे पर प्रसन्नहो १२ ऐसे उत्तमबाणी से उक्त किया वह देव तैसेही हो ऐसे कहेगा सो सब देवते कश्यप अदिति ये सब ऐसे कहो १३ पीछे सब लोकों का कर्त्ता वह श्रीमान् तैसेही हो ऐसे कहेगा हे देवतों में श्रेष्ठो ! तिस देवसे ऐसे बरको ग्रहण कर १४ पीछे कृतकृत्य हुये तुम सब अपने २ स्थानों पै गमन करो तैसेही हो ऐसे देवते शिर से ब्रह्माजी को प्रणाम कर १५ श्वेतद्वीप का उद्देश कर उत्तर दिशा को गमन करतेभये पीछे वे देवते अल्पकाल मेंही नदियों के पति क्षीरसागर को प्राप्त हुये १६ जैसे सत्यबादी ब्रह्माजी ने कहा था तैसे वे देवते सब समुद्र और बनों सहित पर्वत और अनेक प्रकार की पबित्र नदी इन सबों को उल्लंघित कर सब प्राणियों से बर्जित और घोर ऐसे अंधेरे को देखते भये १७ । १८ और सूर्य्य से रहित और मर्य्यादा से रहित और अंधेरे से सब जगह आवृत्त ऐसे अमृतस्थान को प्राप्तहोकर महात्मा कश्यपजी १९ हजार बर्षोंमें पूर्ण होसकै ऐसे ब्रतकी दीक्षाको ग्रहणकर प्रसन्न करने के लिये देवतोंके ईश और योगरूपी और बुद्धिके समुद्र और नारायण अर्थात् जलमें बसने वाले और दिब्यशरीरवाले और हजारहां नेत्रोंवाले और ऐश्वर्य्यरूपी ऐसे तिस देवके लिये ब्रह्मचर्य, मौनस्थान, बीरासन इन्होंकरके क्रमसे सब देवते तपके योगको स्थितहुये और तहां ऐश्वर्य्यवाले कश्यपजी तिस देवको प्रसन्न करने के लिये २० । २२ बेदोक्त स्तोत्रको

कहतेहुयेस्थितरहे जिसस्तोत्रको परमस्तवककहतेहैं २३ ॥

इतिश्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्येपंचविंशोऽध्यायः २५ ॥

## छब्बीसवां अध्याय ॥

कश्यपजी कहते हैं हे एकशृंग ! हे वृषसिंधो ! हे वृषाकपे ! हे सुरवृष ! हे अनादिसंभव ! हे रुद्र ! हे कपिल ! हे विष्वक्सेन ! हे सर्वभूतपते ! हे ध्रुव ! हे वैकुण्ठ ! हे वृषावर्त्त ! हे अनादिमध्यनिधन ! हे धनंजय ! हे शुचिश्रव ! हे पृश्नितेज ! हे निजजय ! हे अमृतशय ! हे सनातन ! हे त्रिधामन् ! हे तुषित ! हे महातत्त्व ! हे लोकनाथ ! हे पद्मनाभ ! हे विरंचे ! हे बहुरूप ! हे अक्षय ! हे अक्षर ! हे हव्यभुक् ! हे खंडपरशो ! हे शक्र ! हे मुंजकेश ! हे हंस ! हे महादक्षिण ! हे हृषीकेश ! हे सूक्ष्म ! हे महानियमधर ! हे रजसे रहित ! हे लोकप्रतिष्ठ ! हे अरूप ! हे अग्रज ! हे धर्मज ! हे धर्मनाभ ! हे गभस्तिनाथ ! हे शतक्रतुनाथ ! हे चन्द्ररथ ! हे सूर्यके समान तेजवाले ! हे समुद्रवास ! हे अज ! हे सहस्र शिरोंवाले ! हे सहस्रपैरोंवाले ! हे अधोमुख ! हे महापुरुष ! हे पुरुषोत्तम ! हे सहस्रबाहो ! हे सहस्रमूर्त्ते ! हे सहस्रास्य ! हे सहस्र सम्भव ! आपको मुनिजन विश्व कहतेहैं हे पुष्पहास ! हे चरम ! आपही वौषट् हैं और वषट्काररूपी आपको मुनिजन प्रधान कहते हैं और यज्ञों में भोजन करनेवाले और शत अर्थात् १०० धारोंवाले और हजार धारोंवाले आप होने योग्य हैं हे भूतेश ! हे भूनाथ ! हे भृगुपुत्र ! हे देवदेव !

हे ब्रह्मशय ! हे ब्राह्मणप्रिय ! आपही आकाशहो और आपही बायुहो और धर्महोता पोताहंता मन्ता नेता होम हेतु ऐसे आपहीहो और तेजवालों में प्रधानरूप आपही हो और बेदों करके सुभांडभी आपहीहो और इज्यभी आपही हो और शुद्ध बुद्धि वालेभी आपहीहो और समिधरूपभी आपहीहो और बुद्धि, गति, दाता ऐसेभी आपहीहो आपही मोक्षरूपहो आपही योगहो आपही रचनेवालेहो आपही धाताहो आपही परमयज्ञहो आपही चन्द्रमा हो आपही दीक्षावालेहो आपही दक्षिणाहो और बिश्वभी आपही हैं हे स्थविर ! हे हिरण्यगर्भ ! हे नारायण! हे त्रिनयन ! हे आदि बर्ण ! हे आदित्यतेज ! हे महापुरुष! हे पुरुषोत्तम ! हे आदिदेव ! हे भूमिक्रम ! हे त्रिबिक्रम ! हे प्रभाकर! हे शम्भो ! स्वयंभूनामवाले और भूतों के आदि और महाभूत ऐसे आपही हैं हे बिश्वभूत ! बिश्वरूप आपही हैं रक्षाकरनेवालेभी आपही हैं पबित्ररूपभी आप ही हैं हे बिश्वभव ! हे ऊंचेकर्मोंवाले ! हे अमृत ! हे दिवस्पते ! हे बाचस्पते ! हे घृताचे ! हे अनन्तकर्म्म ! बंशप्राग्बंशधी और अश्वमेध आपही हो और बरकी इच्छावालों को बरके देनेवाले आपहीहो और चारोंकरके और दोओं करके और पांचों करके फिर दोओं करके हवन कियाजाता है ऐसे होतात्मा जो आपहैं सो आपको प्रणामहो १॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्ये

षड्विंशोऽध्यायः २६॥

---

# सत्ताईसवां अध्याय ॥

लोमहर्षणजी कहते हैं ऐसे भगवान् नारायणजी ब्रह्मकुलमें उत्पन्न हुये कश्यपजी के कहेहुये परमस्तव को सुनकर १ प्रसन्नहो पुष्टपद और अक्षरों से संयुक्त सम्यक्वचनको कहतेभये श्रीमान् और प्रसन्नमनवाले ऐसे प्रभु ईश्वर ऐसे बोले २ कि देवतों में श्रेष्ठो बरको मांगो और तुम्हारा कल्याण होगा और मैं बरको देनेवालाहूं कश्यपजी कहते हैं हे सुरश्रेष्ठ हम सबों के निश्चयसे आप प्रसन्न हुयेहैं ३ इन्द्रके छोटे भ्राता और ज्ञातियोंके आनंद बढ़ानेवाले और श्रीमान् और भगवान् ऐसे आप अदितिके पुत्र होजावो ४ देवतोंकी माता और बरकी इच्छावाली ऐसी अदिति पुत्रके लिये इसी प्रयोजनको बरके देनेवाले भगवान्से कहतीभई ५ देवते कहते हैं हे महेश्वर! सब देवतोंके कल्याणके लिये रक्षा करनेवाले और पोषणेवाले और दाता ऐसे आप हम सबोंके आश्रयस्थानहो ६ लोमहर्षणजीबोले पीछे तिन देवतों से आप विष्णु भगवान् बोले सब तुम्होंके जो शत्रु होवेंगे वे सब मेरे आगे दो घड़ीभी नहीं स्थित रहेंगे ७ यज्ञ भागमें आगे भोजन करनेवाले दैत्योंके गणोंको मारके और हवनको ग्रहण करनेवाले देवते और कव्य को भोजन करनेवाले पितरों को ८ पारमेष्ठ्यकर्म करने में करूंगा हे देवतों में श्रेष्ठो! जिस मार्ग करके तुम सब आये हो तिसी

मार्ग करके गमन करो ९ जब ऐसे बिष्णु भगवान् ने कहा तब प्रसन्न मनवाले सब तिस ईश्वरको पूजते भये १० बड़ी आत्मावाले बिश्वेदेवा, कश्यप जी, अदिति ये सब देवतोंकेईश तिसदेवको बेगसे प्रणाम कर ११ पूर्वदिशामें बिपुल रूपी कश्यपजी के आश्रम को प्राप्तभये पीछे कश्यपजीके आश्रममें जाके कुरुक्षेत्र के महत् बनमें १२ अदितिको प्रसन्न कर तपके लिये नियुक्त करतेभये तब वह अदिति दशहजार बर्षोंतक घोर तप को करती भई १३ तिसी के नाम से दिव्य और सब कामोंका देनेवाला और शुभ ऐसा बन होता भया और बिष्णु का आराधन के लिये मौनको धारण करनेवाली और बायु का भोजन करनेवाली ऐसी अदिति होती भई १४ दैत्यों से निराकृत हुये और भयसे अन्वित ऐसे तिन देवतोंको देखकर वृथा पुत्रों वाली मैं हूँ ऐसी पीड़ासे बिष्णुको प्रणाम करती भई १५ हे तपोधनाहो! वह अदिति बाञ्छित बाणियों से और स्तुतियों से शरण्य रूपी और शरणरूपी और प्रणाम करनेवालोंके प्रिय १६ देव और दैत्योंमें व्याप्त और मध्यमांत स्वरूपवाले ऐसे बिष्णुकी स्तुतिकरने लगी १७ अदिति कहती है कृत्या और पीड़ाको नाश करनेवालोंको प्रणामहै और कमलकी मालाको पहनने वाले को प्रणाम है हे परम कल्याण! हे कल्याण रूप! हे आदिके बिधाता! आपको प्रणामहै १८ कमल के समान नेत्रोंवालेको प्रणामहै कमलहै नाभिमें जिसके

तिसको प्रणाम है और कमल की संभूति से उत्पन्न होने
वाले और आत्मयोनि ऐसे आप को प्रणाम हो १९
लक्ष्मी के पति और दांतस्वरूप और दृश्यरूप और चक्र
को धारनेवाले आपको प्रणाम है कमल और तलवार
को हाथ में धारनेवाले को प्रणाम है और सोना के व-
स्त्रोंवाले को प्रणाम है २० आत्म, ज्ञान, यज्ञ, को प्रणाम
है और योगीजनों से चिंतवन करने के योग्यको प्रणाम
हो और योगी को और निर्गुण को और विशेष को
और हरिको और ब्रह्मरूप को प्रणामहै २१ जहां जगत्
स्थित होताहै और जो जगत् को नहीं दीखता है जो
स्थूल और अतिसूक्ष्म है ऐसे तिस शार्ङ्ग धनुष को
धारण करनेवाले देव को प्रणाम है २२ और संपूर्ण
जगत् को देखते हुये भी जिस को नहीं देखते हैं और
जो जगत् को नहीं देखने वाले हैं तिन्हों को हृदय में
वह दीखता है २३ और जो बहिर्ज्योति है और जो
अलक्ष्य है और जो ज्योति से भी परे प्रकाशित है और
जिसके विषे और जिसतें और जिसका यह अखिल
जगत् है २४ ऐसे समस्त जगतों के स्वामी को प्रणाम
है और जो आद्य है और जो प्रजापति है और जो
पितरों से परे है और जो पति है २५ और जो देवतों
का पति है तिसको प्रणाम है और जो कृष्ण है और
जो वेधा है और जो प्रवृत्त निवृत्त हुये कर्मों से विरक्त है
२६ जो स्वर्ग और मोक्ष के फल को देता है और जो
गदा को धारता है तिस देवको प्रणाम है और जो

चिंतवन किया देव तत्काल पाप को नाशता है २७ तिस बिशेष शुद्ध को प्रणाम है और पररूपी और हरि मेधारूपी ऐसा जो है तिसको प्रणाम है और सबों का आधार और ईशान और अज और अबिनाशी ऐसे ईश्वर को देखतेहैं २८ वे फिर जन्म मरणको नहीं प्राप्त होते तिस ईश्वर को प्रणाम है और जो यज्ञों से यज्ञ में आस्थित हुआ यज्ञपुरुष पूजित कियाजाता है २९ तिस यज्ञ पुरुष बिष्णु को प्रणाम है और जो सब बेदों में बेद के जानने वालों कोबिदांगति ऐसे नाम से गाया है ३० और जो बेदोंसे जानाजाताहै और जो बिष्णुओर जिष्णुहै तिसको प्रणाम है और जिस से यह बिश्व उपजाहै और जिसमें यह बिश्व लीन होजाता है तिसको प्रणाम है ३१ बिश्व की उत्पत्ति से प्रतिष्ठ और महात्मा जो है और ब्रह्म से लगायत स्तंब पर्य्यन्त जिस करके यह चराचर जगत् ब्याप्त होरहा है तिसको प्रणामहै ३२ जिस ने माया का जाल दूर किया है तिस उपेन्द्र को प्रणाम करता हूँ और जो तीसरे स्वरूप में स्थित हुआ ईश्वर इस संपूर्ण जगत् को धारण करता है ३३ और बिश्वरूप और बिश्वका पति और प्रजा का पति और जो तिस के बिना मूर्त्तिमान् असुरों की प्रधानतावाला तमोगुण है तिसको नाशता है तिस बिष्णु को प्रणाम है ३४ चन्द्रमा रूपी और सूर्यरूपी जो उपेन्द्र है तिसको मैं प्रणामकरता हूँ जिसके नेत्ररूपी चन्द्रमा सूर्य संपूर्ण लोक में शुभ और अशुभ को ३५

देखते हैं कर्म में निरंतर युक्तहुये तिस उपेंद्रको मैं प्रणाम करता हूँ जिस सबों के ईश्वर में यह मेराकहा नित्य प्रति सत्यहै ३६ जो मिथ्यारूपी नहीं है और जो प्रभु तथा अविनाशी है ऐसे तिस विष्णु को मैं प्रणाम करता हूँ जो यह मैंने वारंवार सत्यकहा है इसवास्ते हे जनार्दन! तिस सत्य करके मेरे मनोरथ पूर्ण होजाओ ३७॥

इतिश्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्येसप्तविंशोऽध्यायः २७॥

## अट्ठाईसवांअध्याय॥

लोमहर्षणजी कहते हैं ऐसे स्तुति किये भगवान् वासुदेव और सब भूतों को नहीं दीखनेवाले और तिसको दर्शन देनेवाले ऐसे विष्णु अदित से कहने लगे १ श्री भगवान् कहते हैं हे अदित! जिन वांछित मनोरथों को तू चाहती है हे धर्म को जानने वाली! तिन्हों को तू मेरे प्रसाद से प्राप्त होवेगी संशय नहीं २ हे महाभागे! तू सुन जो वरतेरे हृदयमें स्थित है वह दूंगा क्योंकि सो मेरा दर्शन कभी भी निष्फल नहीं होगा ३ जो यहां मेरे वनमें स्थित होके तीन रात्रि तप करेगा वह जिन कामों को मनसे चाहता है तिन्होंको निश्चय प्राप्त होवेगा ४ हे अदित! दूर स्थित हुआ भी जो मनुष्य इस वनका स्मरण करेगा वहभी परम स्थान को प्राप्तहोवेगा और यहां वसतेहुये मनुष्यकी कौन कथा है ५ जो इस वनमें पांच, तीन, दो व एक ऐसी संख्यावाले ब्राह्मणों को श्रद्धा से युक्त हुआ मनुष्य भोजन करावेगा

वह परम गति को प्राप्त होगा ६ अदित कहती है हे भक्तवत्सल! जो आप मेरी भक्तिसे प्रसन्न हुयेहो तो मेरा पुत्र इन्द्र त्रिलोकी का अधिपति होजावे ७ दैत्यों ने राज्य और यज्ञभाग हरलिया है हे बरों के देनेवाले! आपकी प्रसन्नता होने के पश्चात् तिस राज्य को और यज्ञभाग को मेरा पुत्र प्राप्त हो ८ हे केशव! मेरे पुत्रका राज्य वशमें करनेवाले दुःख के लिये नहीं हरा है किन्तु मेरा पुत्र राज्यसे भ्रष्ट करदिया है यह विभ्रंश मेरे हृदयमें पीड़ाको करता है ९ भगवान् कहते हैं हे देवि! मैंने तेरे बाञ्छित के अनुसार प्रसन्नता की है क्योंकि तेरे गर्भ में कश्यपजी के सकाश से अपने अंश करके मैं हूंगा १० तेरे गर्भ से उत्पन्न हुआ मैं देवतों के बैरियोंको मारूंगा इसलिये हे नंदिनि! तू निर्वृत्त अर्थात् निफ़रामहो ११ अदित कहती है हे देवदेवेश! हे विश्व भावन आप प्रसन्नहो आप के लिये प्रणाम है और हे ईश! हे केशव! आपको पेटमें बहने को मैं समर्थ नहीं हूं क्योंकि जिसमें यह सम्पूर्ण जगत् स्थित होरहा है ऐसे विश्वयोनिरूप ईश्वर आपहीहो १२ श्रीभगवान् कहते हैं हे नंदिनि! मैं तुझको और अपने आत्मा को आपही बहूंगा और पीड़ाको नहीं होने दूंगा और आपका कल्याणहो मैं गमन करताहूं १३ लोमहर्षणजी कहते हैं ऐसे कहकर जब भगवान् अंतर्हित हुये तभी अदित गर्भ को धारतीभई १४ पीछे जब गर्भ में कृष्ण भगवान् स्थित हुये तब सम्पूर्ण पृथ्वी चलायमान हुई और बड़े

पर्वत भी कम्पते भये और बड़े समुद्र क्षोभको प्राप्त हुये १५ हे द्विजश्रेष्ठो ! जहां जहां से अदिति गमनकर उत्तम पैरको धरती है तहां तहां से खेदकरके पृथ्वी नवती भई १६ जब भगवान् विष्णु गर्भ में स्थितहुये तब सब दैत्योंके तेजकी भी हानि होनेलगी जैसे परमात्मा ने कहा है तैसे १७॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्ये अष्टाविंशतितमोऽध्यायः २८॥

## उन्तीसवां अध्याय॥

लोमहर्षणजी कहते हैं तेज से रहित सब देवतों को देखके दैत्यों का राजा बलि अपने पितामह प्रह्लादजी से पूछता भया १ बलि कहता है हे तात ! तेजसे रहित और अग्नि से दग्धहुओंकी तरह और ब्रह्मदण्डसे हत हुओंकी तरह ये दैत्य ऐसे एकहीबार होगये यह क्याहै २ दैत्यों को क्या कुछ अरिष्ट है क्या देवतों की रची हुई कृत्या दैत्यों के नाशके लिये उपजी है जिस करके तेज से रहित दैत्य होगये ३ लोमहर्षण जी कहते हैं हे ब्राह्मणो ! ऐसे तिस पौत्रसे पूछाहुआ दैत्यवर प्रह्लाद बहुत काल तक चिन्तवनकर तिस बलिदैत्य को कहनेलगा ४ प्रह्लाद कहताहै पर्वत चलते हैं और पृथ्वी साथ उपजी हुई स्थिति को त्यागती है नदी और समुद्र क्षुभित होगये हैं जिनसे तेज करके रहित दैत्य होगये हैं ५ सूर्यादिकों ग्रहों पहले ये तैसे ग्रह नहीं गमन करते हैं और

देवतोंके उत्तम लक्ष्मी कारणसे अनुमान करीजातीहै ६ हे दानवेश्वर! हे महाबाहो! यह महत्‌कारण है और अल्पमान के इसकी क्रिया कभी भी नहीं करनी ७ लोमहर्षणजी कहते हैं असुरों में उत्तम प्रह्लाद ऐसे कहकर पीछे बिष्णुका अत्यन्तभक्त प्रह्लाद मनसे देवतों के ईश बिष्णु को प्राप्त होताभया ८ पीछे प्रह्लाद दैत्य प्रथम ध्यान करके पीछे देवजनार्द्दनको बिचारता भया ९ पीछे वह प्रह्लाद तिस अदिति के उदरमें बामन आकारवाले बिष्णुको देखताभया और तिसीके भीतर सबबसु, सब रुद्र, अश्विनीकुमार, मरुद्गण, १० साध्य, बिश्वेदेवते, गन्धर्व, सर्प, राक्षस, बिरोचनपुत्र, देवता, इन्द्र, बलि ११ जम्भ, कुजम्भ, नरक, बाणासुर अन्य नामोंवाले भी दैत्य अपना आत्मा, आकाश, बायु, मन, जल, अग्नि १२ समुद्रआदि वृक्ष और द्वीप, सब प्रकार के सरोबर, पशु, पृथ्वी, अवस्था, सबप्रकारके मनुष्य, सबप्रकारके सर्प १३ और सब लोकों को रचनेवाले ब्रह्माजी और महादेवजी और ग्रह, नक्षत्र, तारगणआदि सब ऋषि, प्रजापति १४ इन सबों को देखता हुआ और आश्चर्य से संयुक्त और प्रकृति में स्थित ऐसा प्रह्लाद फिर क्षण भरमें बिरोचन के पुत्र और दैत्यों के इन्द्र ऐसे बलिसे बोला १५ हे पुत्र! मैंने सब जानलिया जिसके लिये तुम सबों के तेजकी हानि हुई है तिसको विस्तारसे सुन १६ देवों के देव और जगत्‌की योनि और जगत्‌की आदि सें उत्पन्न होनेवाले और अज और प्रभु और अनादि

और विश्वकी आदि और वरेण्य और वरको देनेवाले और हरि १७ और परावरोंके परम और परावर वालों की गति और प्रभु और मानोंके मध्यमें प्रमाण और सात लोकोंके गुरु और जगत्के नाथ ऐसे विष्णु स्थिति करनेको अदितिके गर्भमें प्राप्तहुये हैं १८ सामर्थ्यवालों के सामर्थ्यवाले और परों में परम और आदि मध्य अन्त इन्होंसे वर्जित ऐसे अकेले भगवान् नाथवाली त्रिलोकीको करने के लिये देवतों में अवतारको प्राप्त हुये हैं १९ जिसके स्वरूप को महादेव, ब्रह्माजी, इन्द्र सूर्य्य, चन्द्रमा, मरीचि इन आदिभी नहीं जानते ऐसे भगवान् वासुदेव कला करके अवतारको प्राप्त हुये हैं २० जिसको वेद के जाननेवाले अक्षर नामसे कहते हैं और पापोंसे रहित हुये वेदवादी जिसमें प्रवेश करते हैं और जिसमें प्रविष्ट हुये फिर नहीं जन्मतेहैं तिस आद्यरूपी वासुदेवको मैं प्रणाम करताहूं २१ और जिससे सब प्राणिगण होते हैं जैसे समुद्र में नित्य-प्रति तरंग और जिसके प्रलयमें सब प्राणी नाशको प्राप्त होजाते हैं ऐसे अचिंत्यरूपी वासुदेवजी को मैं प्रणाम करताहूं २२ नेत्रके ग्रहणमें रूपहै और स्पर्श के ग्रहणमें यह त्वचा है और रसके ग्रहणमें जीभ है और गन्धके ग्रहणमें नासिका है और जिनके त्वचा, नासिका, नेत्र ये नहीं हैं २३ और सबोंका ईश्वर और युक्ति करके जाननेके योग्य और आदि तथा मध्यसे वर्जित और पापोंसे रहित और देव और हरि और

ऐश्वर्य्यवाला और लोकका एक नाथ और संसारके भय को नाशनेवाला ऐसे तिस बिष्णु को मैं प्रणाम करता हूं २४ जो आपनेही चलतीहुई पृथ्वी इस संसार को धार रही है यही जिसने एक जाड़से धारण करीहै और जो इस सम्पूर्ण जगत् को हरनेवाला है और स्तुति के योग्य है ऐसे तिस बिष्णु को मैं प्रणाम करताहूं २५ और अपने अंशकरके अवतीर्णहुये जिसने सब दैत्योंके तेज हरलिये हैं और जो देव और अनन्तहै और सम्पूर्ण संसाररूपी बृक्षके काटने को कुल्हाड़ा है ऐसे तिस देव को मैं प्रणाम करताहूं २६ देव और जगत्की योनि और सोलहवें अंश करके महात्मा यही है हे दैत्यपते! देवतोंकी माताके उदरमें प्रविष्टहुये इसने तुम्हारे बल और शरीर हर लिये हैं २७ बलि कहता है हे तात! जिससे हमको भय प्राप्तहुआ वह हरि नामवाला कौन है क्योंकि हरिके बलसे अधिक बलवाले सैकड़ों दैत्य मेरे प्रियहैं २८ बिप्रचिति, शिबि, जंभ, कुंभ, हयशिरा, अश्वशिरा, भंगकार, महाहनु २९ बातापि, प्रबश, शम्भु, दुर्जयरूपी कुक्कराक्ष ये और अन्यभी दैत्य और दानव मेरे हैं ३० महाबलवाले और बहुत बीर्य्यवाले और पृथ्वी के भार को हरने में कुशल ऐसे मेरे दैत्य और दानवों में से एक एक के भी बल बीर्य्य में समान बिष्णु नहीं हैं ३१ लोमहर्षणजी कहते हैं पौत्र के ऐसे बचन को दैत्यों में श्रेष्ठ प्रह्लाद जी सुनके और क्रोधको प्राप्तहो बिष्णु को आक्षेप कहनेवाले बलि से कहने

लगे ३२ दैत्य और दानव नाशको प्राप्तहोवेंगे क्योंकि जिन्होंका दुष्ट बुद्धिवाला और विवेक से रहित ऐसा तू राजाहै ३३ देवों के देव और महाभाग और अज और विभु ऐसे वासुदेवको तेरेविना पापसंकल्पवाला अन्य कौन ऐसे कहेगा ३४ जो तैंने सब दैत्य और दानव कहे हैं और ब्रह्माजी सहित देवते और स्थावर तक जाति ३५ मैं और तू औरपर्वत, नदी, वृक्ष, वन इन्हों सहित यह जगत् और समुद्र, लोक, द्वीप और चेष्टा वाला और चेष्टासे रहित ३६ ये सब जिस व्यापी और परमात्मा की एकएक अंशकलाके से जन्मेहैं तिसविष्णु को ऐसे कौन कहेगा ३७ विनाश के सन्मुख हुआ और विवेक से वर्जित और दुष्ट बुद्धिवाला और अजितात्मा और वृद्धों की शिक्षा को उल्लंघनेवाला ऐसे एक तेरे बिना ३८ मैं शोच के योग्य हूं कि जिस मेरे घरमें तेरा नीच पिता उत्पन्न हुआ क्योंकि जिसका तू विष्णु का निरादर करनेवाला ऐसा पुत्र है ३९ अनेक संसार का संघात के समूह को नाश करनेवाली भक्ति कृष्ण में है सो आदि में तैंने में क्या नहीं देखा ४० महात्मा कृष्ण भगवान् से मुझको अतिप्रिय नहीं है ऐसे यह लोक जानता है और तू तो दैत्यों में नीच है ४१ मेरे प्राणों से भी अतिप्रियरूपी विष्णु को जानता हुआ भी तू मेरे पक्षपात को दूरकरके निन्दकी निन्दा करता है ४२ हे बले! तेरा गुरु विरोचन है और विरोचन का गुरु मैं हूं मेरे और सब जगतों के गुरु

अर्थात् मान्य हरि नारायण हैं ४३ सो गुरु का गुरु के गुरु जी कृष्ण बिषे तू निन्दा करता है जिस तिस कारण से तू शीघ्रही ऐश्वर्य्य से भ्रष्ट होजावेगा ४४ हे बले! मेरा और सब जगतों का स्वामी वह जनार्दन है तेरे पिता का पिता जो मैं अपमान को योग्य नहीं हूँ ४५ जगत् के गुरुकी निन्दा करते हुये तैंने इतनाभी मेरा मान नहीं किया तिससे तुझको मैं शाप देताहूँ ४६ जैसे मेरे शिरको काटने से भी अतिभारी और बिष्णु की निन्दा से युक्त ऐसा बचन तैंने कहा है तिससे तू राज्य से भ्रष्ट होजा ४७ जैसे इस संसाररूपी समुद्र में बिष्णु से दूसरा रक्षा करनेवाला नहीं है तैसे शीघ्रही राज्य से भ्रष्ट हुये तुझको मैं देखूंगा ४८ ॥

इति श्रीबामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्येएकोन त्रिंशोऽध्यायः २९ ॥

# तीसवां अध्याय ॥

लोमहर्षणजी कहते हैं ऐसे गुरु के अप्रिय बचन को दैत्य पति बलि राजा सुन के बारंबार प्रणाम करताहुआ गुरु प्रह्लादजी को प्रसन्न करनेलगा १ बलि कहता है मोहसे हतहुये मेरे बिषे हे तात! कोप को मत करै किन्तु प्रसन्नहो क्योंकि बलके गर्व से मूढ़हुये मैंने यह बाक्य कहाहै २ हे दैत्य सत्तम! मोहकरके नष्टहुआ बिज्ञानवाला और पापी और बुरे आचारोंवाला ऐसा मैं शाप से युक्त किया यह आपने बहुत सुन्दर किया ३

इस केपश्चात् राज्य भ्रंश को और यश के भ्रंशको मैं प्राप्त हूंगा जैसे मैंने दुष्टपना किया है तैसेही आप खेदित हुये हैं ४ त्रिलोकी का ऐश्वर्य्य अथवा अन्य भी कछु पदार्थ दुर्लभ नहीं है परन्तु हे तात! संसारमें आप सरीखे गुरु दुर्लभ हैं ५ हे दैत्यों के स्वामी! मुझ पै प्रसन्न हो और कोपको मतकरो क्योंकि आप के कोप से परिदग्ध हुआ मैं दिन राति दग्धरहूँगा ६ प्रह्लाद कहता है हे वत्स! कोप से मेरे मोह उपजा तिसकरके तुझ को शाप और विवेक मैंने दिया और तू भी मोह करके मेरा अपकार करता भया ७ हे महासुर! जो मोह करके मेरा ज्ञान आच्छादित नहीं होता तो सर्वगत हरि को जानताहुआ मैं कैसे तुझको शापदेता ८ हे दैत्य पुंगव! मैंने जो शापतुझ को दिया है तिसकरके तेरे विषे निश्चय भावी होनी है तिस करके तू विषाद को मत करे ९ अब से लगायत देवतों के ईश और अच्युत और हरि और ईश ऐसे विष्णु में भक्तिवाला हो वही विष्णु तेरी रक्षाकरेंगे १० हे वीर! मुझ से शापको प्राप्त हो तैं विष्णु का स्मरण करना जैसे तू कल्याण को प्राप्त होवेगा तैसे मैं कहूँगा ११ लोमहर्षणजी कहते हैं सब कामों की समृद्धि को देनेवाले वर को प्राप्त हो गर्भ से अतियशवाले विष्णु वृद्धि को प्राप्त भये हैं १२ पीछे दशवें महीने में जब प्रसवकाल आके प्राप्तहुआ तब वामन आकृतिवाले गोविन्द भगवान् जन्मे हैं १३ तब सब देवतों के ईश्वर वामनजी अवतार लेते भये

तब सब देवते और देवतोंकी माता अदिति दुःखको छोड़ती भई १४ और सुखपूर्वक स्पर्शवाले वायु चलते भये और धूली से रहित आकाश होता भया और सब प्राणियों की धर्म में बुद्धि उपजती भई १५ हे द्विजोत्तम! मनुष्यों के देह में उद्वेग नहीं होता भया और तब सब मनुष्यों की धर्म में बुद्धि होतीभई १६ जन्मते हुये तिस को लोकों के पितामह ब्रह्माजी जातकर्म आदि क्रिया करवाके स्तुति करते भये १७ ब्रह्माजी कहते हैं हे अधीश! जय को प्राप्तहो हे अजेय! जयको प्राप्तहो हे सर्वगुरो! हे हरे! जयको प्राप्तहो हे जन्म मृत्यु जरा इन्हों को उल्लंघन करनेवाले! जय को प्राप्त हो हे अच्युत! जय को प्राप्त हो १८ हे अजित! जीत को प्राप्त हो हे अशेष! जय को प्राप्त हो हे अव्यक्त! स्थितिवाले जय को प्राप्तहो हे परमार्थार्थ सर्वज्ञ! हे ज्ञानज्ञेयार्थ! निश्चित जय को प्राप्तहो १९ हे शेष जगत् के साक्षी! हे जगत् को करनेवाले! हे जगत् के गुरु! जयको प्राप्त हो हे स्थावर जंगम के ईश! स्थिति में रक्षाकर और जय को प्राप्तहो २० हे अखिल! जय को प्राप्त हो हे अशेष! जय को प्राप्त हो हे सबों के हृदय में स्थितहोनेवाले! जयको प्राप्तहो हे आदि मध्यांतमय! जयको प्राप्तहो हे सर्वज्ञानमयों में उत्तम! जयको प्राप्तहो २१ हे मोक्षकी इच्छावालोंसे अनिर्देश्य! हे योगी और मोक्षकी कामना वालों से नित्य आनंदित! हे ईश्वर! जय को प्राप्तहो हे दमादि गुणरूपी गहनोंवाले! जयको प्राप्तहो २२ हे अति

सूक्ष्म हे दुर्ज्ञेय ! हे जगन्मूल ! हे जगन्मय ! जयको प्राप्त हो हे सूक्ष्मसेभी अतिसूक्ष्म ! जयको प्राप्तहो हे योगिन् ! हे अतींद्रिय ! जयको प्राप्तहो २३ हे मायायोगस्थ ! हे शेष भोगशयाक्षर ! जयको प्राप्तहो हे एक जाड़के प्रांत करके समुद्धृत पृथ्वीतलवाले ! जयको प्राप्त हो २४ हे नरसिंह ! हे देवतों के वैरियोंकी छातीरूपी स्थलको विदारण करनेवाले ! हे विश्वात्मन् ! हे माया वामन ! हे केशव ! जयको प्राप्तहो २५ हे अपनी मायासे पटलको आच्छादित करनेवाले ! हे जगत्के धाता ! हे जनार्दन ! जयको प्राप्तहो हे अचिंत्य ! हे अनेकस्वरूपैकनिधे ! हे प्रभो ! जयको प्राप्त हो २६ हे वर्द्धितानेक विकार प्रकृते ! हे हरे ! वृद्धिकोप्राप्त हो हे देव ! आप करके धर्मके मार्गवाली यह पृथ्वी स्थित होरही है २७ हे ईश ! हे हरे ! आपको जानने के लिये मैं और महादेवजी और इन्द्रआदि देवते और सनकादि योगिजन ये सब समर्थ नहीं हैं २८ हे जगत्पते ! इस जगत् में आप मायारूपी वस्त्र से वेष्टित हो इसलिये हे सर्वेश ! आपके प्रसाद विना आपको कौन जानेगा अर्थात् कोई भी नहीं २९ हे प्रसाद सुमुख ! हे प्रभो ! जिसने आपका आराधन किया है वही आप को जानता है अन्य दूसरा मनुष्य नहीं ३० हे नन्दीश्वरेश्वर ! हे ईशान ! हे विभो ! हे वामन ! हे विश्वात्मन ! हे पृथुलोचन ! इस संसार की उत्पत्ति के लिये आप वृद्धिको प्राप्तहो ३१ लोमहर्षणजी कहते हैं ऐसे स्तुति किये भगवान् वामनजी गम्भीर हंसके आनन्द सम्पदावाले ब्रह्माजी

से बोले ३२ पहले आपने और इन्द्रआदि देवतों ने और कश्यपजीने मेरी स्तुतिकरी तब मैंने इन्द्रके लिये त्रिलोकीका राज्यदेनेकी प्रतिज्ञाकरी ३३ फिर अदिति ने मेरी स्तुति करी तिसके लियेभी मैंने वही बाञ्छित फलदेना किया और जैसे इन्द्रके लिये कंटकरूप दैत्यों से बर्जित त्रिलोकी के राज्यको दूंगा ऐसे कहाहै ३४ सो मैं तैसेही करूंगा जैसे हजार नेत्रोंवाला इन्द्र जगत्का पतिहोगा यहतुम सबोंसे मैं सत्यकहताहूं ३५ पीछे तिस बामनजीको ब्रह्माजी मृगछाला देतेभये और भगवान् बृहस्पतिजी तिसको यज्ञोपबीत अर्थात् जनेऊ देतेभये ३६ ब्रह्माजीके पुत्र मरीचिमुनि तिसको पलाशकादंड देतेभये और बशिष्ठजी तिसको कमंडलु देतेभये और अङ्गिरामुनि तिसको कुशा और चीरदेतेभये और पुलहमुनि तिसको आसन देतेभये और पुलस्त्यमुनि तिस को दो पीतांबर देतेभये ३७ ॐकारके उच्चारसे भूषित हुये बेद तिसको उपस्थितहुये और सबप्रकार के शास्त्र तथा सांख्ययोगकी युक्तिभी तिसको आपही उपस्थित हुई ३८ जटा और दण्डको धारण करनेवाला छत्र और कमंडलुको धारण करनेवाला और सब देवतों के अंशोंसे युक्त ऐसे बामनजी बलिके यज्ञमें प्राप्तहुये ३९ हे ब्राह्मणो! जहां २ बामनजी पृथ्वीके भागमें पैरको देते भये तहां २ सबतर्फ से पीड़ित हुई पृथ्वी छिद्रको देती भई ४० मंदगतिवाले बामनजी कोमल चलने से भी पर्वत, द्वीप, बन इन्होंसे संयुक्तहुई पृथ्वीको चलायमान

करता भया ४१ तब बृहस्पति हौले २ सुन्दर मार्ग को दिखाते हैं तथा क्रीड़ाका विनोद के लिये जगत्‌में वहहोताभई ४२ पीछे यह महानागशेष पातालसे निकसके देवतों के देखते और चक्रको धारण करनेवाले ऐसे वासनजीकी सहायता करता भया ४३ इसकाभी वह महाविपुल और उत्तम ऐसा स्थान विख्यातहै तिसके दर्शन करके निश्चय सर्पों से भय नहीं होताहै ४४ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्येत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

## इकतीसवां अध्याय ॥

लोमहर्षणजी कहते हैं संक्षोभ को प्राप्त हुई पर्वत और वनोंसहित पृथ्वी को देख बलिराजा अंजली बांध के शुक्राचार्य से पूछता भया १ हे आचार्य ! समुद्र, पर्वत, वन इन्हों से युक्तहुई पृथ्वी क्षोभको प्राप्तहुई है और किस कारणसे असुरों के भागोंको अग्नि नहीं ग्रहणकरते २ ऐसे बलिराजा से पूछेहुये वेदविदों में श्रेष्ठ शुक्राचार्य से बहुतकालतक विचार पीछे दैत्यों के राजाको महामति वाले शुक्रजी कहने लगे ३ कश्यपजी के घरमें जगत् के योनि हरिने अवतार लियाहै सो वामनरूप करके सनातन वह परमात्मा ४ निश्चय हे दैत्यों में श्रेष्ठ ! तेरे यज्ञ में आते हैं जिनके पैरके पैंकने से यह पृथ्वी चलायमान होरही है ५ और पर्वत कांपते हैं और समुद्र क्षोभ को प्राप्त होरहे हैं क्योंकि इन भूतपति ईश्वरको वहने के लिये यह पृथ्वी समर्थ नहीं है ६ क्योंकि देवता,दैत्य,

गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, सर्प, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, संपूर्ण देवते, सब मनुष्य, सब दैत्य इन सबों को धारनेवाले हैं ७ जगत्के धाता कृष्णकी यह माया दुस्सह जैसे धार्यधारक भावकरके जगत् संपीड़ित होरहा है ८ तिसके सन्निधानसे असुरों के भागों को देवते ग्रहण करेंगे इसलिये ये तीनों अग्नि असुरों के भागों को नहीं ग्रहण करते ९ शुक्रजी के बचनको सुन खड़े हुये हैं रोम जिसके ऐसा बलि बोला कि मैं धन्य हूँ और पुण्यों को करनेवाला हूँ जिससे यज्ञपति विष्णु आपही १० हे ब्रह्मन्! यज्ञमें प्राप्त हुये मुझसे अधिक पुरुष दूसरा कौन है अर्थात् कोई भी नहीं और परमात्मा तथा अविनाशी ऐसे जिस ईश्वरको सब कालमें पुरुषार्थवाले मुनि देखने की इच्छा करते हैं वह देव मेरे यज्ञमें आवेंगे ११ हे आचार्य्य! जो मुझे करना उचितहै वह मुझको उपदेश कराने के लिये आप योग्य हैं १२ शुक्रजी कहते हैं हे दैत्य! बेदके प्रामाण्यसे यज्ञके भागको भोजन करनेवाले देवते हैं और देने यज्ञभाग को भोजन करनेवाले दैत्य करादिये हैं १३ सत्त्वगुण में स्थित हुआ यह देव स्थिति और पालना को करता है और पीछे यही प्रभु प्रलय कालमें रचीहुई प्रजाको आपही भक्षण करलेता है १४ और तैंने देवते ठगलिये हैं और विष्णु निश्चय स्थिति में स्थितहै हे महाराज! ऐसे जानके जो आपके मनमें हो वह कर १५ हे दैत्याधिपते! तुझे छोटी वस्तुमें भी प्रतिज्ञा नहीं करनी किन्तु तैसेही फलवाला साम बचन कहना

योग्यहै १६ कृतकृत्य हुये और देवतोंके कर्मको करने वाले ऐसे देवको और हे देव! याचनाको करनेवाले आपने जो कहने को योग्यहै तिसको देनेके लिये मैं समर्थ नहींहूँ १७ वलि कहता है हे ब्रह्मन्! अन्य पुरुषसे भी याचित किया मैं नहीं है ऐसे नहीं कहता और हे देवेश! संसारके पापोंके समूह को हरनेवाले ईश्वर के सन्मुख तो कैसे कहूँ १८ अनेकप्रकारके व्रतउपवास इन्होंकरके जो प्रभु हरि ग्रहण कियेजाते हैं सो गोविन्द देव ऐसा वचन कहेंगे इससे अधिक क्याहै १९ शौच गुणों में युक्त पुरुषोंको जो प्रीतिकरने के वास्ते यज्ञमें कियेजाते हैं वह देव मुझको देहि अर्थात् दो ऐसा वचन कहेंगे २० सो हमारा शुभचरित सुन्दर कृत्यहै और उत्तम कर्म तपहै क्योंकि जो मुझसे दियेहुये को ईशाहरी आप ग्रहणकरेंगे २१ हे गुरो! नहीं है ऐसे आयेहुये ईश्वर को मैं कैसे कहूँ प्राणोंका त्याग करूँगा परन्तु नास्ति ऐसा मेरे कहींभी नहींहै २२ सो निश्चय मेरावांछित यहप्राप्त हुआ इसमें संशयनहीं क्योंकि जो यदि इसयज्ञमें मुझसे यज्ञेश जनार्दन भगवान् मांगेंगे २३ विना विचारकिये हुये निश्चय उन्होंके वास्ते अपने मस्तककोभी देऊंगा क्योंकि वह गोविंद मेरे वास्ते देही ऐसा वचन कहेंगे २४ और अन्योंके मांगतेहुये भी मुझको नास्ति ऐसा वचन नहीं कहाहै सो तिस अच्युत भगवान् के अभ्यागत आनेमें कैसे कहूँगा २५ धीर पुरुषोंको दानसे जो आपद् अर्थात् दुःखोंका समागमहै वह श्लाघ्य अर्थात्

गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, सर्प, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, संपूर्ण देवते, सब मनुष्य, सब दैत्य इन सबों को धारनेवाले हैं ७ जगत्के धाता कृष्णकी यह माया दुसमजाहै जैसे धार्यधारक भावकरके जगत् संपीड़ित होरहा है ८ तिसके सन्निधानसे असुरों के भागों को देवते ग्रहण करेंगे इसलिये ये तीनों अग्नि असुरों के भागों को नहीं ग्रहण करते ९ शुक्रजी के बचनको सुन खड़े हुये हैं रोम जिसके ऐसा बलि बोला कि मैं धन्य हूँ और पुण्यों को करनेवाला हूँ जिससे यज्ञपति बिष्णु आपही १० हे ब्रह्मन् ! यज्ञमें प्राप्त हुये मुझसे अधिक पुरुष दूसरा कौन है अर्थात् कोई भी नहीं और परमात्मा तथा अबिनाशी ऐसे जिस ईश्वरको सब कालमें पुरुषार्थवाले मुनि ११ देखने की इच्छा करते हैं वह देव मेरे यज्ञमें आवेंगे हे आचार्य्य ! जो मुझे करना उचितहै वह मुझको उपदेश कराने के लिये आप योग्य हैं १२ शुक्रजी कहते हैं हे दैत्य ! बेदके प्रामाण्यसे यज्ञके भागको भोजन करनेवाले देवते हैं और देने यज्ञभाग को भोजन करनेवाले दैत्य करदिये हैं १३ सत्त्वगुण में स्थित हुआ यह देव स्थिति और पालना को करता है और पीछे यही प्रभु प्रलय कालमें रचीहुई प्रजाको आपही भक्षण करलेता है १४ और तैंने देवते ठगलिये हैं और बिष्णु निश्चय स्थिति में स्थितहै हे महाराज ! ऐसे जानके जो आपके मनमें हो वह कर १५ हे दैत्याधिपते ! तुझे छोटी बस्तुमें भी प्रतिज्ञा नहीं करनी किन्तु तैसेही फलवाला साम बचन कहना

योग्यहै १६ कृतकृत्य हुये और देवतोंके कर्मको करने वाले ऐसे देवको और हे देव! याचनाको करनेवाले आपने जो कहने को योग्यहै तिसको देनेके लिये मैं समर्थ नहींहूँ १७ बलि कहता है हे ब्रह्मन्! अन्य पुरुषसे भी याचित किया मैं नहीं है ऐसे नहीं कहता और हे देवेश! संसारके पापोंके समूह को हरनेवाले ईश्वर के सन्मुख तो कैसे कहूँ १८ अनेकप्रकारके व्रतउपवास इन्होंकरके जो प्रभु हरि ग्रहण कियेजाते हैं सो गोबिन्द देव ऐसा बचन कहेंगे इससे अधिक क्याहै १९ शौच गुणों में युक्त पुरुषोंको जो प्रीतिकरने के वास्ते यज्ञमें कियेजाते हैं वह देव मुझको देहि अर्थात् दो ऐसा बचन कहेंगे २० सो हमारा शुभचरित सुन्दर कृत्यहै और उत्तम कर्म तपहै क्योंकि जो मुझसे दियेहुये को ईशहरी आप ग्रहणकरेंगे २१ हे गुरो! नहीं है ऐसे आयेहुये ईश्वर को मैं कैसे कहूँ प्राणोंका त्याग करूँगा परन्तु नास्ति ऐसा मेरे कहींभी नहींहै २२ सो निश्चय मेराबांछित यहप्राप्त हुआ इसमें संशयनहीं क्योंकि जो यदि इसयज्ञमें मुझसे यज्ञेश जनार्दन भगवान् मांगेंगे २३ बिना बिचारकिये हुये निश्चय उन्होंके वास्ते अपने मस्तककोभी देऊंगा क्योंकि वह गोबिंद मेरे वास्ते देही ऐसा बचन कहेंगे २४ और अन्योंके मांगतेहुये भी मुझको नास्ति ऐसा वचन नहीं कहाहै सो तिस अच्युत भगवान् के अभ्यागत आनेमें कैसे कहूँगा २५ धीर पुरुषोंको दानसे जो आपद अर्थात् दुःखोंका समागमहै वह श्लाघ्य अर्थात्

सराहने लायक है २६ जो दान बाधा कार्य नहींहै वह अंगके बल्कके समान है और मेरे राज्य में कोई दुःखी नहीं है कोई दरिद्री नहीं है कोई मूर्ख नहींहै २७ और आभूषण से रहित नहीं है उद्विग्न मनवाला नहीं है प्रसन्नतासे रहित नहींहै किन्तु सबजन प्रसन्न और तुष्ट हैं तृप्त और सबगुणोंसे युक्तहैं हे महाभाग! सदा सुंदर बुद्धिवाला मैं सुंदर उत्तम प्राप्तहुये इन्हों को क्या दान रूप बीजफल को नहीं देऊँ २८। २९ हे मुनिशार्दूल! जो आपके मुखसे निकसा जो मुझको जाना परन्तु हे गुरो! जो दानरूपी बीज पड़ताहै यही बीज श्रेष्ठ है ३० महापात्र जनार्दन भगवान्‌बिषे क्या मुझे दाननहीं प्राप्त हो इस वास्ते यह दान तो मेरा बिशेष करके उत्तम है इस से देवताभी तुष्ट होंगे ३१ उपभोग अर्थात् भोगने में बर्तने से दान सौगुना सुख को करनेवाला है सो निश्चय यज्ञ करके आराधित हरी मेरी प्रसन्नताके वास्ते हैं ३२ इसी वास्ते प्राप्त हुये हैं इस में सन्देह नहीं दर्शन से उपकार को करनेवाले हैं और जो यदि देवताओं के भाग को रोंकनेवाले मुझको मारने को कोप से प्राप्तहुये हैं तो भगवान् से बध अर्थात् मरनाही श्लाघ्य है अर्थात् सराहने लायक है सो निश्चय वह हृषीकेश भगवान् मुझको मारने को कैसे प्राप्तहुये हैं ३३। ३४ सो हे मुनिश्रेष्ठ! बिघ्न में तत्परहुये आपको जहां जगन्नाथ गोबिन्ददेव उपस्थित हैं तहां प्राप्तहोना चाहिये ३५ लोमहर्षणजी बोले ऐसे कहते हुये तिसके यज्ञके मार्ग

में बृहस्पति आदि देवताओं के समूह से युक्तहुये भग-
वान् प्राप्त होते भये ३६ पश्चात् बलिराजा अपने
पुरोहित शुक्रसे फिर यह बचन बोला कि जो घर में
आयेहुये हरी मुझको मांगनेको प्राप्तहुये हैं ३७ सो
चित्तके साक्षि वे जनार्द्दन भगवान् सर्ब देवमय और
अचिंत्यरूप अपने आत्माकी इच्छासे और मायाकरके
बामन रूपको धारण करनेवाले हैं ३८ तिसके अन-
न्तर यज्ञके मार्गमें प्रविष्टहुये तिस प्रभुको असुरदेखके
गमन करतेभये और कांतिवाले तिसके तेजसे कांति
से रहित हुये वे असुर क्षोभको प्राप्त होतेभये ३९ और
तिस महायज्ञमें जो मुनि इकट्ठे होरहे थे वे कांपते भये
बशिष्ठ, गाधिज अर्थात् बिश्वामित्र और गर्ग इत्यादिक
मुनि और अन्य उत्तम मुनि सब कांपते भये ४० और
बलिराजा अपने सम्पूर्ण जन्मको सफल मानता भया
तिससे अनन्तर क्षोभको प्राप्तहुआ कोई पुरुष किंचित्
भी नहीं कहताहुआ ४१ सो वह बलिराजा प्रत्येक देव
देवेशका तेज करके पूजन करता भया इस से अनन्तर
असुरपति बलिराजा को और तिन उत्तम मुनियों को
वे बामनजी देखते भये ४२ देवदेवपति वह साक्षात्
बिष्णु भगवान् बामनरूप को धारण करनेवाले तिस
यज्ञकी और अग्निकी और यजमानकी और पुरोहितों
की स्तुति करतेभये ४३ और यज्ञकर्म्म के अधिकार में
स्थितहुये सभाओंकेमनुष्योंको औरद्रव्योंकी सम्पत्तियों
को सराहते भये और सभामें होनेवाले मनुष्य तिसी

क्षणमें सम्पूर्ण पात्ररूप बामनजी के प्रति साधु साधु ऐसा बचन कहतेभये और यज्ञके मार्ग्ग में स्थित हुये बिप्रभी ऐसेही कहतेभये और वह बलिराजा खड़े हुये रोमोंवाला अर्घ को लेके पूजन करताभया और वह महाअसुर गोबिन्दके प्रति यह बचन बोला ४४। ४५ बलि कहता है सुबर्ण रत्नोंके समूह हस्ती, महिष, स्त्री, बस्त्र, अलंकार, गौ, सुबर्ण आदि सब धातु सम्पूर्ण पृथ्वी जो कुछ आपका इच्छितहै हे श्रेष्ठ! सुनो जो आपको प्रिय है सो देऊंगा ४६। ४७ ऐसे बलिराजा करके कहे हुये बामनरूपी भगवान् प्रीतिसे गर्भित इस बचनको हास्य सहित गंभीर बाणी से कहतेभये ४८ हे राजन्! अग्नियों का रक्षणरूप मेरे वास्ते तीन पैंड़ पृथ्वी देवो और सुबर्ण, ग्राम, रत्नादिक ये सब प्रयोजनों वाले पुरुषों के वास्ते देवो ४९ बलि बोला हे पैरवालोंमें श्रेष्ठ! आपको तीनही पैरों करके क्या प्रयोजन है सौ अथवा सैकड़ों वा हजार पैरोंको आप मांगो ५० श्री बामनजी बोले हे दैत्यपते! मैं इन्हीं पैरों करके कृतकृत्यहूं और तुम अन्य अर्थियों के वास्ते द्रब्यको इच्छा से देवो ५१ ऐसे महात्मा बामनजी के कहे हुये को सुनके वह महाबाहु राजा तिस बामनजी के वास्ते तीनपैंड़ पृथ्वी देताभया ५२ जब हाथमें जल गिरा तब वह बामन अबामन अर्थात् अति उग्ररूप वाले होते भये और तिसी क्षणमें सर्ब देवमय रूपको दिखाते भये ५३ चन्द्रमा सूर्य तो नयन और स्वर्ग पृथ्वी शिर और चरण और

पिशाच पैरोंकी अंगुली और गुह्यक हाथोंकी अंगुली ५४ और गोड़ों में बिश्वेदेव स्थित और जंघों में देवताओं में उत्तम साध्यसंज्ञक देव और अंगों में यक्ष और देवते अप्सरा ये स्थित होतेभये ५५ और सम्पूर्ण नक्षत्र दृष्टी सूर्यकी किरण केशतारे रोमों के खड़े रोमों में महर्षि स्थित होतेभये ५६ और बिदिशा अर्थात् कोण बाहू और तिस महात्मा के कर्ण दिशा होती भई अश्विनीकुमार श्रवण होतेभये बायु नासिका होताभया ५७ और प्रसन्नता में चन्द्रमा मन में धर्म आश्रित होताभया और इसभगवान् के सत्यबाणी होतीभई और सरस्वती जिह्वा होतीभई ५८ देवताओं की माता अदिति ग्रीवा होतीभई और बिद्या तिसका कंकण आभूषण होता भया और मैत्रदेव स्वर्गद्वार होताभया और त्वष्टा और पूषादेव भृकुटी होतीभई ५९ और इसके मुखमें अग्निदेव बृषणों में प्रजापति हृदय में परब्रह्म और कश्यपमुनिपुंस्त्व अर्थात् पुरुषपने की जगह होते भये ६० और इसकी पीठमें बसुदेव और सब सन्धियों में मरुद्गण होते भये बक्षःस्थल अर्थात् छाती में रुद्रदेव और महान् समुद्र इसके धीरता होते भये ६१ और इसके उदरमें गन्धर्ब और महाबलवाले मरुत् देव होते भये और लक्ष्म, मेधा, धृति, कांति ये सब कटिरूप होते भये ६२ सम्पूर्ण ज्योतिरूप यह देव और परममहत् तपरूप होता भया और तिस देवाधिदेव का तेज अतिउत्तम उत्पन्न होता भया ६३ और शरीर में तथा कुक्षियों में वेद और

गोड़ों में महान् यज्ञ स्थितहुये और तहांही सब प्रकार की इष्टि और पशुबन्ध और द्विजों के चेष्टित ये सब स्थितहुये ६४ तिस भगवान् बिष्णुके देवमय इस रूप को महान् बलवाले वे दैत्य देखके प्राप्त नहीं होते भये जैसे अग्नि में पतंगपक्षी तैसे ६५ परन्तु महान् चिक्षुर दैत्य पैरके अंगूठे को ग्रहण करता भया तब हरी भगवान् बायें अंगूठेकरके तिसकी ग्रीवा सहित दांतों को हनन करते भये ६६ इस प्रकार वह हरी भगवान् पैर और हाथों के तलभागकरके सम्पूर्ण दैत्यों को मथ महाकायावाले रूपको कर शीघ्रही पृथ्वी को हरते भये ६७ तब तिसके पृथ्वीको मापते हुये चन्द्रमा और सूर्य छातीके बीचमें आवते भये और तिसके आकाश के मापते हुये ये दोनों साथलों की जगह आवते भये ६८ और परम आकाश को मापतेहुये चन्द्रमा सूर्य गोड़ोंकी जगह आवते भये इसप्रकार देवपालन कर्म में स्थित हुये बिष्णुके ये चन्द्रमा सूर्य्य होते भये ६९ अतिपराक्रमवाले बिष्णु भगवान् सम्पूर्ण त्रिलोकी को जीत के और सब महान् दैत्यों को मारके त्रिलोकी को इन्द्र के वास्ते देते भये ७० और पृथ्वीतलसे नीचे जो सुतल नामवाला पातालहै वह सब जगह होनेवाले बिष्णु भगवान् को बलिराजाके वास्ते दिया ७१ इस से अनन्तर सर्वेश्वर बिष्णु भगवान् दैत्येश्वर बलिके प्रति बोले कि जो तैंने जलदिया और मैंने हाथसे ग्रहणकिया ७२ इस वास्ते कल्प प्रमाण तक तेरी उत्तम आयु होगी तब वैवस्वत

मनुका काल व्यतीत होनेलगा तब ७३ और साव-र्णिमनु प्राप्तहोवेगा जब तू इन्द्रहोवेगा इसवास्ते अब सबलोक इन्द्रकेवास्ते देदियाहै ७४ चारयुगोंकी व्यवस्था इकहत्तर चौकड़ीतक है और तिसके जो चोरहैं वे सब मुझे शान्त करनेयोग्य हैं ७५ इस वास्ते मुझे परमभक्ति करके हे बले! तैंने जो आराधन किया सो मेरे बचनसे सुतलनाम पातालमें तू प्राप्तहो ७६ हे असुर! मेरी आज्ञासे तहां यथावत् पालना करतहुआ तू बस हे दानवेश्वर! तहां देवता असुर इन्होंसे युक्त और सैकड़ों देवता राजाओंके मकानोंसे युक्त और फूलेहुये कमल और बृक्ष और शुद्धनदी इन्होंसे युक्त ऐसे देशमें सम्पूर्ण आभूषणोंसे युक्तहुआ और माला चन्दनआदिकों से लिप्त अङ्गोंवाला और नृत्य गीत मनोहर ऐसा हुआ तू बिपुल महान्भोगोंको भोग ७७। ७९ हे बले! मेरी आज्ञासे तहां सैकड़ों स्त्रियोंसे युक्तहुआ तू स्थित हो और जबतक देवता ब्राह्मण इन्होंसे बिरोध न करेगा तबतक संपूर्णकामनाओं से संयुक्त भोगोंको भोग और जब देवताओंसे और ब्राह्मणोंसे तू बिरोध करेगा तब बन्धमें करनेवाला दारुण घोरपाशसे युक्तहोवेगा ८०। ८१ बलिबोला हे भगवन्! तुम्हारी आज्ञाकरके तहां पातालमें मेरा क्या भोजनहोवेगा और क्याग्रहणकरनाहोगा और क्याउपभोग क्याउपपादक होगा ८२ हे देवेश! कि जिसवास्ते आप्यायित अर्थात् अत्यन्त पुष्ट हुआ मैं सब कालमें आपका स्मरण करतारहूं श्रीभगवान्

बोले बिनाबिधिसे दियेहुये दान और बिनाबेदके पढ़े हुये ब्राह्मणोंके करायेहुये श्राद्ध ८३ श्रद्धाके बिना हवन कियेहुये इन्होंकाफल तेरेवास्ते देवेंगे और दक्षिणाके बिनायज्ञ बिनाबिधिकी कीहुई क्रिया ८४ और बिनानियमके बिना पठन कियाहुआ और जलके बिना पूजा और कुशाओंके बिना क्रिया जोहै इन सबोंका फल तेरे वास्ते देवेंगे ८५ और हे बले! घृतके बिना कियाहुआ होम इन सबों का फल तेरे वास्ते देवेंगे और जो पुरुष इस स्थानमें प्राप्तहोके किसी क्रियाओंको करेंगे वहां दैत्योंका भाग कभी भी नहींहोगा कि ज्येष्ठाश्रम और महापुण्यवाला बिष्णुपदह्रद इन स्थानों में जो पुरुष श्राद्धकरेंगे और ब्रत नियमकरेंगे और जो कछु क्रियाकरेंगे वे सब अक्षयगुणा प्राप्त होजावेगा इसमें संदेहनहीं और ज्येष्ठके महीनेमें शुक्लपक्षमें एकादशी के दिन ब्रतकर द्वादशीमें बामनजीके दर्शनकर और शक्तिके अनुसार दानदेके पुरुष परमपदमें प्राप्तहोता है ८६। ९० लोमहर्षणजी बोले हरिभगवान् बलिराजा केलिये इस बरकोदेके और इन्द्रके वास्ते स्वर्गकोदेके तिस सर्वव्यापिरूप से अदर्शनको प्राप्त होतेभये ९१ और इन्द्र पहिले की तरह त्रिलोकीसे पूजितहुआ राज्य करता भया और अपने स्थान की तरह बलिराजा पाताल के आश्रय हुआ स्थित होताभया ९२ इस प्रकार तिसबिष्णुका उत्तम माहात्म्य कहाहै जो इस बामनजी के माहात्म्यको सुनेगा वह सब पापोंसे मुक्त

होजावेगा ९३ बलिके और प्रह्लादके संबादको बलिके इन्द्रके मंत्री अर्थात् सलाहको और बलि तथा बिष्णु के कथन कियेहुये को जो मनुष्य स्मरण करेंगे तिन्हों के आधि और व्याधि नहीं होवेंगी और हे द्विजश्रेष्ठो! तिन्होंको पाप कभी नहीं होवेगा ९४। ९५ राज्यसे भ्रष्ट हुआ मनुष्य इसकथाको सुनके राज्यको प्राप्त होता है और बियोगको प्राप्तहुआ और बियोगवाला पुरुष मित्र की प्राप्तिको और उत्तम महानूभागों को प्राप्त होता है ९६ और ब्राह्मण बेदको प्राप्त होता है क्षत्रिय पृथ्वीको बैश्य धनकी समृद्धि को शूद्र सुखको प्राप्त होताहै और इस बामनजी के माहात्म्यको सुनताहुआ पुरुष सब पापों से छूटजाता है ९७॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्येवामन बलिचरितंनामएकत्रिंशोऽध्यायः ३१॥

## बत्तीसवां अध्याय॥

ऋषि पूछनेलगे कि सब नदियों में उत्तम और कुरुक्षेत्र में बहनेवाली ऐसी यह सरस्वती नदी कैसे उत्पन्न हुई है १ और हे प्रिय! कैसे सब तीर्थ इस सन्निहित में प्राप्तहुये हैं सो बिस्तारसे कहो २ लोमहर्षणजी कहनेलगे कि हजारहों पर्वतों को बिदारण करके जलके अनुसार द्वैतबनमें सरस्वती प्राप्त भई है ३ तहां प्लक्ष तीर्थ में स्थित हुई सरस्वतीको देखके मार्कण्डेय मुनि मस्तकसे प्रणामकर और स्तुतिकरनेलगे ४ कि हे देवी!

सब लोकों की माता तूहीहै और सत् असत् जो पदार्थ हैं उनको मोक्षके देनेवाली तूही है ५ और अक्षररूप और ब्रह्मरूप तूही है ६ और जैसे काष्ठ में अग्नि होता है और पृथ्वीमें गंधहोताहै तैसे तेरेबिषे ब्रह्म और जगत् स्थितहै ७ और अकार आदि अक्षरोंसे संस्थित जो स्थिर अस्थिर जगत् है सो तीनों मात्रा हैं सो तेरे बिना कुछ भी नहीं है ८ और तीन लोक और तीन बेद और तीनबिधि और तीनअग्नी और तीन ज्योति और तीन बर्ण और धर्म अर्थ काम ९ और तीनगुण और तीन शब्द और तीन देवते और तीन आश्रम और तीन अवस्था और पितर १० ये सब तीन तीन हे देवी! तेराहीरूपहैं और भिन्नरूप दर्शनोंवाली और ब्रह्माकी आद्य पुत्री ११ और अमृत और हव्य पदार्थ से संयुक्त ऐसी तू परमरूपवालीहै तेरे उच्चारण से सब ब्रह्मबादी कहातेहैं १२ अन्य करके अनिर्देश्य और अर्द्धमात्राश्रित और पर और बिकार रहित और अक्षय और दिब्य और परिणाम से बर्जित ऐसा तेरा रूप है १३ तेरे गुणों को प्रकाशित करने को मैं समर्थ नहीं हूँ तथापि जीभ और तालु आदि से कुछ बर्णनकरताहूँ १४ और ब्रह्मा, बिष्णु, शिव, चन्द्रमा, सूर्य्य, ज्योति, बिश्वबास, बिश्वरूप, बिश्वात्माईश्वर १५ सांख्यसिद्धांत इन सबरूपोंवाली तूही है और बहुत शाखाओं से स्थिरीकृत और नहीं है आदि मध्य अंत जिसके और सत् असत् रूप ऐसा तूही है १६ और

एक रूपवाली होकर अनेक रूपोंवाली और नाम से बर्जित और बहुत नामोंवाली और त्रिगुणाश्रय ऐसी तूही है १७ और ऐसे तेरे करके सम्पूर्ण जगत् व्याप्त होरहाहै स्थूल और सूक्ष्मरूपी पदार्थ १८ पृथ्वीमें और आकाश में स्थित हैं वे सब तुझसे प्रकाशित हैं १९ मूर्त्तिमान् और अमूर्त्तिमान् आदि सब जगत् और स्वर व्यञ्जनों करके लिखाहुआ सब कुछ तेरेहीसे उत्पन्न हुआहै २० ऐसे स्तुति करी बिष्णुकी जिह्वारूपी सरस्वती मार्कंडेयजीसे कहनेलगी २१ हे बिप्र! जहां आप गमन करेंगे तहां मैं चलूंगी २२ तब मार्कंडेय कहने लगे कि ब्रह्मसर नामसे बिख्यात पवित्र यह सरहै और कुरुराजा करके कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध है २३ तिसके मध्य भाग करके पवित्र जलको बहातीहुई तू प्राप्तहो २४ ॥

इति श्रीबामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्ये
द्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

## तैंतीसवां अध्याय ॥

लोमहर्षण कहने लगे ऐसे ऋषि के बचनको सुन प्रबाहसे संयुक्त हुई सरस्वती कुरुक्षेत्रमें प्रबेश करती भई १ तहां प्रथम रन्तुक स्थानको प्राप्तहो और कुरुक्षेत्रको पवित्र करतीहुई पश्चिम दिशाको प्राप्त हुई २ तहां ऋषियोंसे सेवित हजारहां तीर्थ हैं सो तीन तीर्थों को मैं ब्रह्माकी कृपासे बर्णन करताहूं ३ और तीर्थों का स्मरण मनुष्यों को पवित्र करदेता है और तीर्थका द-

र्शन पापों को नाशता है और तीर्थका स्नान पापी की भी मुक्ति करै है ४ और जो तीर्थों का स्मरण करते हैं और देवतों को प्रसन्न करते हैं और श्रद्धा करके स्नान करते हैं वेपरमगतिको प्राप्तहोजाते हैं ५ और जो अपबित्र अथवा पवित्र और सब अवस्थाओं को प्राप्त हुआ ऐसा मनुष्य कुरुक्षेत्र का स्मरणकरै वह बाहिर और भीतरसे पवित्र होजाता है ६ और पुरुष को चाहिये कि कुरुक्षेत्र में गमन करूंगा और कुरुक्षेत्र में बसूँगा ऐसे बाणीको कहनेसे वह मनुष्य सबपापों से छूट जाताहै ७ और ब्रह्मज्ञान और गयाश्राद्ध और गायों के स्थानमें मरना और कुरुक्षेत्रमें बास ऐसी चारप्रकारकी मुक्तिकही है ८ सरस्वती और दृषद्वती इन दो नदियों का बीचमें जो अन्तर है वह देव निर्मित ब्रह्मावर्त्त देश कहाता है ९ और दूरस्थित मनुष्यभी कुरुक्षेत्रमें गमन करूँगा और कुरुक्षेत्र में बसूँगा ऐसे जो निरन्तर कहते हैं वे सबपापोंसे अलग होजाते हैं १० और जो मनुष्य सन्निहित तीर्थ में स्नान करके सरस्वती के तटपै स्थित रहते हैं तिनको ब्रह्मज्ञान उत्पन्न होवेगा इसमें संशय नहीं ११ और देवते, ऋषि, सिद्ध ये कुरुक्षेत्रको सेवते हैं तिस कुरुक्षेत्रके सेवनेसे जीवात्मामें ब्रह्मका साक्षात्कार होजाता है १२ और मनुष्य का देह चंचल है इस वास्ते जो पापी सन्निहित तीर्थको सेवते हैं १३ वे सब पापोंसे मुक्तहुये निर्मल और सनातन ऐसे ब्रह्मको हृदयमें देखते हैं १४ कुरुक्षेत्रमें सन्निहिततीर्थ ब्रह्मवेदी है इसको

सेवनकरने से मनुष्य परमपदको प्राप्तहोतेहैं १५ और ग्रह, नक्षत्र, तारा, इन्हों को कालकरके पड़नेका भयभीहै परन्तु कुरुक्षेत्र में मरनेवाले को तहां श्रद्धापूर्वक गमन करनेका भय नहीं है १६ और जहां ब्रह्मा आदि देवते और ऋषि और सिद्ध, चारण, गंधर्व, अप्सरा, यक्ष ये सब बसते हैं १७ तिस स्थाणुह्रदमें स्नानकरनेसे मनोबांछित फल प्राप्तहोताहै इसमें संशय नहीं १८ और जो मनुष्य नियमकर सन्निहितकी परिक्रमाकरै और रत्नुकतीर्थमें प्राप्तहो बारंबार अपराधको क्षमाकराय १९ पीछे सरस्वतीमेंस्नानकर यक्षको देखै और नमस्कारकरै पीछे पुष्प और धूपसे पूजाकर और नैबेद्य को अर्पितकर बाणी का उच्चारणकरै २० कि हे यक्षेन्द्र! आपके प्रसादसे बन बहुतसीनदियां और तीर्थ इन्होंमें मैं बिचरूंगा सो मुझ को सबकालमें बिघ्न मतहो २१ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्येत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

## चौंतीसवां अध्याय ॥

ऋषि कहने लगे हे भगवन्! सात बन और नव नदी और संपूर्णतीर्थ और तीर्थके स्नानका फल इन्हों को मुझसे कहो १ जिन्होंके नाम पवित्र और तत्काल पापकोहरते हैं और पवित्ररूपी काम्यक और अदितिवनहै २ और पवित्ररूपी व्यासजीका वनहै और सूर्यवन और मधुबन ३ और शीतवन और सर्वकल्मषनाशन फलदवन ये सात वन हैं और हे द्विजो!

नदियों को सुनो सरस्वती, बैतरणी ४ आपगा, गंगा, मन्दाकिनी, दृषद्वती, हिरण्वती इन आदि सब नदी ५ सरस्वतीको बर्ज्जिकर बर्षाकालमें बहनेवाली हैं बर्षाकालमें इन्हों का जल अतिपबित्र है ६ और इन्हों को रजस्वलापना कभीभी नहीं होताहै और तीर्थ के प्रभाव करके ये सबनदी अतिपबित्र रहती हैं ७ हे मुनि जनो! तीर्थके स्नानका फल सुनो तीर्थका गमन और स्मरण सब प्रकारके पापोंको नाशताहै ८ और महाब- लवाला और द्वारपाल और रत्नुक नाम से बिख्यात ऐसेयक्षको मनुष्य प्रमाणकर तीर्थयात्राकाप्रारम्भकरै ९ और जहां पुत्रोंके लिये अदिति ने तप किया है तहां स्नानकर पीछे अदिति का दर्शन करनेसे १० शूरबीर और सबदोषोंसे बर्ज्जित ऐसे पुत्रको माता जनै है और सैकड़ों आदित्योंकेसमान प्रकाशवाले बिमानमें स्थित होके बिचरैहै पीछे हे बिप्रेन्द्र! बिष्णुके स्थानमें गमनकरै ११ जहां सबकाल हरि भगवान् सन्निहित रहते हैं तहां बिमलतीर्थमें स्नानकर और बिमलेश्वरका दर्शन कर १२ निर्मल हुआ मनुष्य स्वर्गलोकमें बास करता है और ऊर्ध्वलोक कोभी जाताहै १३ और वहीं सवन नामसे बिख्यात है जहां सबकाल बिष्णु स्थित रहते हैं तिसको देखनेसे परम मोक्षकी प्राप्ति होती है १४ पीछे त्रिलोकी में बिख्यात रूपी पारिप्लव तीर्थमें स्नान कर और बेदोंसे संयुक्त ब्रह्माजीका दर्शनकर १५ निर्म- लहुआ मनुष्य स्वर्गलोकमें बसताहै पीछे संगमतीर्थ

में स्नान करनेसे परमगतिको प्राप्त होसकता है १६ पीछे सब पापोंको नाशनेवाला धरणीतीर्थ है १७ तहां क्षमासे संयुक्तहो जो स्नानकरै तो परमपदकोप्राप्तहोताहै १८ और इस तीर्थमें स्नान करनेसे पृथ्वीपर मनुष्योंसे जितने पाप बन आतेहैं तिन सबोंका नाश होजाता है १९ पीछे दक्षके आश्रममें गमनकर और तहां दक्षेश्वर महादेवके दर्शन करनेसे २० मनुष्य अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्तहोताहै पीछे तालुकिनि तीर्थमें जाके तहां स्नानकर २१ महादेव सहित बिष्णुकी पूजा करने से बांछित लोकोंको प्राप्त होसक्ताहै २२ पीछे घृत और दहीको ग्रहणकर नागतीर्थमें स्नान करनेसे मनुष्य नाग के भयसे दूर होताहै २३ पीछे रत्नुक नामसे बिख्यात तीर्थ पै गमनकर और तहां एकरात्रि बस और तीर्थ में स्नानकर २४ दूसरेदिन द्वारपालकी यत्न से पूजाकर और ब्राह्मणको भोजनकरा और प्रणामकर २५ रत्नुक तीर्थके अगाड़ी ऐसे कहै कि हे यक्षेन्द्र! आपके प्रसाद से पापोंकरके मैं छूटजाऊँ और मुझे सिद्धिकी प्राप्तिभईहै सो मैं संसारमें फिर जन्मनहींलेऊँ २६ ऐसेयक्षकोप्रसन्न कर पीछे पंचनद तीर्थमें गमनकरै तहां पंचनद महादेव जीने करेहैं २७ तिसकरके सबलोकों में पंचनद तीर्थ कहाताहै पीछे जहां किरोड़तीर्थ महादेवजीने इकट्ठे कर दियेहैं २८ तिस कोटितीर्थमें स्नान करनेसे अग्निष्टोम यज्ञके फलको प्राप्त होताहै २९ पीछे अश्विनीकुमारों के तीर्थमें प्राप्तहो जितेन्द्रिय रहै और तहां श्राद्ध करने

से अच्छे रूप और यशवाला मनुष्य होजाताहै ३० और बिष्णुने कुरुक्षेत्रमें बाराहतीर्थ बिख्यात किया है तहां श्रद्धापूर्वक स्नान करने से परमपद की प्राप्ति होतीहै ३१ पीछे हे बिप्रेन्द्र! जहां तपके प्रभावसे चन्द्रमा व्याधि से मुक्त हुआहै ३२ तिस सोमतीर्थमें स्नानकर और सोमेश्वर का दर्शनकर राजसूय यज्ञका फल मिलता है ३३ और सबरोगों से रहित होजाता है और सोम-लोकमें चिरकाल तक रमण करता है ३४ पीछे तहां भूतेश्वर और मालेश्वर इन दो लिंगोंकी पूजा करनेसे मनुष्य फिर जन्मको नहीं प्राप्तहोता ३५ और एक हस्ततीर्थमें स्नान करनेसे हजार गायोंके दानका फल प्राप्त होताहै और पवित्रहोके ३६ पुण्डरीकतीर्थमें स्नान करनेसे शुद्धि होतीहै पीछे महादेव के मुंजबटमें जाके ३७ एक रात्रि बास करनेसे महादेव के गण भाव को प्राप्त होताहै, और तहां लोकमें बिख्यात महाग्राही यक्षिणी है ३८ तहां स्नानकर और यक्षिणीको प्रसन्न कर और पीछे ब्रत करनेसे महापातकों का नाशहोता है ३९ यह कुरुक्षेत्रका द्वार कहाहै इसकी परिक्रमा कर और यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजन करवा ४० पीछे पुष्कर तीर्थमें गमन करै जहां परशुरामजी के कियेहुये तीर्थहैं तिन्होंमें पितरों का पूजन करनेसे ४१ राजा कृतकृत्य हो के अश्वमेध यज्ञ के फलको प्राप्त होता है और जो मनुष्य तहां कार्त्तिकीपौर्णमासीकेदिन कन्याका दान करदेताहै ४२ तिसपै सब देवते प्रसन्न होजाते हैं

और वह मनोबांछित फलको प्राप्तहोता है और कपिल नाम से विख्यात और द्वारपाल ऐसा महायक्ष स्थितहै ४३ यह पापियों को बिघ्नकरै है दुर्गता को दूरकरता है और तिस यक्ष की उलूखलमेखला नामवाली पत्नी है ४४ और वह नक्कारोंको बजाती हुई नित्यप्रति भ्रमती रहती है सो वह यक्षिणी एक समय में पापदेशमें उपजी और पुत्रोंवाली ४५ ऐसी एक स्त्री को देखती भई तब नक्कारा बजाके कहनेलगी कि युगंधर तीर्थ में दही का भोजन कर पीछे अच्युत स्थलमें बासकर ४६ पीछे भूतालय में स्नान कर तू पुत्रों के सहित बासकरना चाहती है सो दिन में यह मैंने तुझसे कहा और रात्रि को मैं तुझको भक्षण करूंगी ४७ ऐसे बचन को सुन यक्षिणी को प्रणामकर दीनबाणी से वह स्त्री कहनेलगी कि हे भामिनि! तू मेरे पर प्रसाद कर ४८ तब यक्षिणी कहनेलगी कि जब सूर्यका ग्रहण होगा ४९ तब सन्निहित तीर्थ में स्नान कर पवित्र हुई तू स्वर्ग लोक में गमन करेगी ५० ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्ये चतुस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३४ ॥

## पैंतीसवां अध्याय ॥

लोमहर्षणजी कहनेलगे पीछे तीर्थको सेवनेवाला रामहृद में गमनकरै जहां दीप्त तेजवाले परशुरामजी ने १ सब क्षत्रियों को मारके क्षत्रियों के रुधिरों से पांच

ह्रद पूरितकिये हैं ऐसे मुझने सुना है २ और जब परशुरामजी अपने पितरों को तृप्त करते भये तब प्रसन्नहुये पितर कहनेलगे ३ कि हे राम! हे राम! हे महाबाहो! हे भार्गव! तेरे पै इस पितृभक्ति करके और पराक्रम करके हम प्रसन्न हुये ४ तेरा कल्याण हो हे सज्जन! तू हमारे से बरमांग ऐसे पितरों के बचनको सुन परशुराम ५ अंजली बांधके आकाश में स्थित होनेवाले पितरों से कहनेलगे कि जो तुम मुझपै प्रसन्नहुये अनुग्रह करते हो ६ तो मैं यह चाहताहूं जो क्रोधसे मैंने क्षत्रियोंका नाश किया है ७ तिस पाप से आपके तेजकरके मैं अलग हो जाऊं और ये पांचोह्रद संसार में उत्तम तीर्थ नामों से बिख्यात होवें ८ ऐसे परशुराम के बचनको सुन आनंदित हुये पितर कहनेलगे ९ कि हे पुत्र! पितरों की भक्तिसे तेरा तप बढ़े और तैंने क्रोध से जो क्षत्रियों का नाश किया है १० तिस पाप से तू मुक्तहुआ और तेरे पांचो ह्रद तीर्थ भावको प्राप्तहोजायँगे इसमें संशय नहीं ११ और तिन ह्रदों में जो स्नानकर अपने पितरों को तृप्त करेंगे तिन्हों के लिये पितर मनोबांछित फलको प्राप्तकरेंगे १२ औरवे निरन्तर स्वर्ग में बसेंगे ऐसे परशुरामजी के लिये बरदानदेके प्रसन्नहुये पितर १३ वहीं अन्तर्हित होते भये ऐसे पवित्र रूप परशुराम के पांचह्रद बिख्यात हुये हैं १४ तिन्होंमें स्नान करै और ब्रह्मचर्यमेंरहै और श्रद्धावान् रहै और परशुराम की पूजाकरै तब बहुतसा सुवर्ण प्राप्तहोता है १५ पीछे वंशमूल तीर्थमें प्राप्तहोके

स्नानकरने से अपने बंशका उद्धार होसक्ताहै १६ और कायशोधन तीर्थ में स्नानकरने से शरीरकी शुद्धिहोती है इस में संशय नहीं है १७ और यह तीर्थ जन्म मरण से भी छुटाता है १८ पीछे जहां बिष्णुने लोकधारण किये हैं तिस लोकोद्धार तीर्थ में १९ स्नान करने से उत्तम लोक प्राप्तहोता है और तहां बिष्णु और शिव स्थित हैं २० तिन्हों को प्रणाम करने से मनुष्य मुक्तिको प्राप्त होसक्ता है पीछे श्रीतीर्थ और शालिग्राम तीर्थ में गमन कर स्नान करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होतीहै २१ पीछे त्रिलोकी में बिख्यात रूपी कपिला ह्रद में स्नान कर पितर और देवताओं का पूजन करने से २२ हज़ार कपिलागायों के दानका फल प्राप्त होता है २३ और तहां पुरमें स्थित जो कापिल महादेव हैं तिनके दर्शन करनेसे मुक्तिकी प्राप्ति होती है २४ और पीछे सूर्यतीर्थ में स्नानकर और ब्रत करनेवाला मनुष्य पितर और देवताओं का पूजनकरै २५ तो अग्निष्टोमयज्ञके फल को प्राप्त हो सूर्यलोकमें प्राप्त होताहै और त्रिलोकी में बिख्यात और हज़ार किरणों वाले २६ ऐसे सूर्य के दर्शन करने से मनुष्य मुक्ति को प्राप्त होता है पीछे भवानीय तीर्थ में प्राप्त होके २७ तहां अभिषेक करने से हज़ार गायों के दानका फल प्राप्त होता है और ब्रह्माजी को अमृत पीतेहुये २८ जो सूर्यसे सुरभी उत्पन्न हो पाताल लोकमें प्राप्तभई और तिसकी वि-भूतियां जो लोकमातृगण हैं २९ तिन्हों करके यह स-

कल पाताल व्याप्तहोरहाहै पीछे ब्रह्माजीको यज्ञ करते हुये दक्षिणा के लिये ३० समाहूत किये ब्राह्मण छिद्र के द्वारा निकसे हैं तहां छिद्र के द्वारपै गणपति स्थित हो- रहा है ३१ तिसको देखने से सब कामना पूरी होती है पीछे देवीतीर्थ में स्नान करके ब्रह्मज्ञानी मनुष्य ३२ अपनी इच्छापूर्वक प्राणों को त्यागता है ३३ पीछे हे बिप्रेन्द्र ! अरत्नुक द्वारपाल तीर्थमें गमनकरै तहां यक्षेन्द्र स्थित होरहा है ३४ तहां व्रत को धारण करनेवाला मनुष्य स्नानकरै तो यक्षके प्रसाद से मनोवांछितफल को प्राप्त होता है ३५ पीछे मुनि का पुत्र ब्रह्मावर्त्तमें गमन कर तहां स्नानकरने से मनुष्य ब्रह्मको प्राप्त होसक्ता है ३६ पीछे सुतीर्थ में गमनकर पीछे सत्तीर्थकमें गम- न कर अभिषेक करै ३७ तहां देवताओं के संग पितर बसतेहैं ३८ यह तीर्थ हजार अश्वमेध यज्ञों के फल को देता है और पितरों को तृप्तकरैहै पीछे अवंती तीर्थ में प्राप्त हो ३९ पीछे कामेश्वरतीर्थ में स्नान करने से सर्व व्याधियों से निर्मुक्त हुआ मनुष्य ब्रह्मलोकको प्राप्त होता है ४० पीछे मातृतीर्थ में गमनकर स्नान करने से प्रजाकी वृद्धि और अनन्त लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ४१ पीछे शिवबनमें गमनकरै तहां दुर्लभरूप अन्यभी तीर्थ स्थित हैं ४२ पीछे दण्डकतीर्थमें गमनकरै इसमें केशों को भिगोवने से मनुष्य पवित्र होजाता है ४३ पीछे लोमापनतीर्थ में गमनकरै तहां बिद्वान्मुनि गण स्थित हैं ४४ तहां वे मुनि प्राणायामोंकरके लोमों

को काटकर पवित्र हुये परमगति को प्राप्त होते हैं ४५ दशाश्वमेध तीर्थ में स्नान करने से उत्तम फल प्राप्त होता है ४६ पीछे श्रद्धावान् मनुष्य मानुष तीर्थ में स्नान करै दर्शन करै तो पापों से मुक्त होजाता है ४७ तहां पहिले व्याधने शरों से पीड़ित मृग किये हैं तब वे मृग इस सरमें स्नान करने से मनुष्य भाव को प्राप्त हुये ४८ तब वह व्याध ब्राह्मणों से पूछने लगा कि हमारे करके शरोंसे पीड़ितकिये मृग इस मार्गकरके आये हैं ४९ सो वे इससरमें मग्नहोगये परन्तु न जाने कहां गये तब वे ब्राह्मण कहनेलगे ५० कि हे पारधि ! वे मृग इस तीर्थ के प्रभावसे मनुष्यभाव को प्राप्तभये तिससे तुम भी श्रद्धापूर्वक इस तीर्थ में स्नान करोगे तो ५१ सब पापों से निर्मुक्त होजाओगे इसमें संशय नहीं पीछे वे सब पारधी तिसतीर्थ में स्नान करतेभये तब शुद्धशरीरवाले होके स्वर्ग को प्राप्त भये ५२ यह मानुष तीर्थ का माहात्म्य है जो इसको श्रद्धापूर्वक श्रवण करते हैं वे परमगति को प्राप्त होते हैं ५३ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्येपञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

## छत्तीसवां अध्याय ॥

लोमहर्षणजी कहनेलगे कि मानुष तीर्थ के पूर्व की तरफ़ एक कोशपर द्विजोंकरके सेवित आपगा नदी विख्यात है १ तिसपर स्थित होके दूधमें सिद्ध सामकियों को घृत से संयुक्तकर ब्राह्मणोंके लिये दानदेते हैं तिन्हों

के पाप नहीं रहता २ और जो आपगा नदी पै श्राद्ध करतेहैं वे सब कामनासे सन्तुष्ट होजाते हैं इसमें संशय नहीं ३ और सब पितर सब काल स्मरण करते रहते हैं कि हमारे कुल में ऐसा पुत्र व पौत्रहो ४ जो कि आपगानदी पै गमनकर तिलों से तर्पण करै तिससे हम सौ कल्पों पर्यन्त तृप्त रहेंगे ५ और जो भाद्रपद के महीने में कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को मध्याह्न समय में पिण्ड देता है वह मुक्ति को प्राप्त होजाता है ६ पीछे हे बिप्रेन्द्र! सब लोकोंमें बिख्यातरूपी ब्रह्मोदुम्बरतीर्थ में गमन करै ७ तहां ब्रह्मर्षियों के कुण्डों में स्नान करने से सप्तर्षियों के प्रसाद से सप्त सोमफलको प्राप्त होताहै ८ और भरद्वाज, गौतम, जमदग्नि, कश्यप, बिश्वामित्र, बसिष्ठ, अत्रि ९ इन सात ऋषियों ने इकट्ठे होके तहां दुर्लभरूपी कुण्ड कल्पित कियाहै और जो ब्रह्माजीने सेवन किया है इसवास्ते ब्रह्मोदुम्बर कहाता है १० तिसमें स्नान करने से निश्चय मनुष्य ब्रह्मलोक को प्राप्त होजाता है ११ और तहां देवते और पितरों का उद्देशकर जो मनुष्य ब्राह्मण को भोजन कराता है तिसके पितर दुर्लभ फलको देते हैं १२ और तहां सप्तऋषियों के उद्देश्य से पृथक् पृथक् नाम उच्चारण करके जो स्नान करताहै सो ऋषियों के प्रसाद से सात लोकोंका स्वामी बनजाताहै १३ और सब पातकों को नाशनेवाला और जहां साक्षात् बृद्धकेदार संज्ञक देव स्थित हैं ऐसे कपिस्थल तीर्थ में स्नानकर १४ पीछे डींडी नाम से

विख्यात रुद्रका पूजन करने से मरकेशिवलोकमें आनंदित होताहै १५ और जो तहां तर्पण कर पीछे तीन चुल्लू पानी पीता है और डींडीदेवको नमस्कार करता है वह केदार के फलको प्राप्त होताहै १६ और जो मनुष्य चैत्र शुक्ला चतुर्दशी के दिन शिवके उद्देश्य से श्राद्ध करै है वह परमपद को प्राप्त होता है १७ पीछे कलशी तीर्थ में गमन करै जहां दुर्गा, कात्यायनी, भद्रा, निद्रा, माया, सनातनी १८ इन नामोंवाली देवी साक्षात् स्थित होरही है पीछे तहां स्नानकर और तटपै स्थित हुई देवीका दर्शन कर संसाररूपी बनसे पार होजाता है इसमें संशय नहीं १९ पीछे त्रिलोकी में दुर्लभ रूपसरक तीर्थ में गमन करै तहां कृष्णपक्षकी चतुर्दशी के दिन महादेव के दर्शन करने से २० सब कामना और शिवलोक प्राप्त होता है और हे ब्राह्मणाहो! तीन किरोड़ तीर्थ सरकतीर्थ में बसते हैं २१ पीछे सरक के मध्य में जो कूप है तहां रुद्रकोटि तीर्थ है तहां स्नानकर और स्मरण करने से और रुद्रकोटिकी पूजा करने से २२ रुद्रों के प्रसाद करके ज्ञानसे संयुक्त हुआ मनुष्य परमपद को प्राप्त होताहै २३ और तहां पापों के भयको दूर करने वाला इन्द्रारूपद तीर्थ है इसके दर्शन से मुक्तिकी प्राप्ति और मनोवाञ्छित फल प्राप्त होता है २४ और सब पापों को नाशनेवाला केदार तीर्थ है तहां स्नान करने से सब दानोंका फल मिलता है २५ और इसी तीर्थको महा तीर्थ कहते हैं यह सब यज्ञों के फल को देनेवाला

है २६ और सरक तीर्थ से पूर्वकी तरफ़ त्रिलोकी में वि-
ख्यात और सब पापों को नाशनेवाला मनोज्ञ तीर्थ है
२७ जहां नरसिंह के रूपको धारणकर और दैत्य को
मार और तिर्यग्योनि में स्थित हुये बिष्णु सिंहिनियों से
रमण करनेलगे २८ तब देवते और गन्धर्व बर को
देनेवाले शिवकी आराधनाकर बिष्णु के रूपको बरते
भये २९ तब बिष्णु और महादेव दिब्य हजार बर्षों
तक युद्ध करते भये ३० पीछे युद्ध करते हुये दोनों सर
के मध्य में पड़े तिस सरके तटपै ३१ पीपल के बृक्ष के
नीचे ध्यान में तत्पर हुआ नारद मुनि देखता भया कि
चार भुजाओं वाले बिष्णु और लिंगके आकार शिव
स्थितहैं ३२ स्तुति करनेलगा कि शिवको नमस्कार है
और बिष्णुको नमस्कार है ३३ और हरिको नमस्कार
है और पार्बती के पति को नमस्कार है स्थिति और
काल को धारण करनेवाले जो तुम दोनोंहो तिन्हों को
नमस्कार है और बहुत रूपोंवाले महादेवको नमस्कार
है और बिश्वरूपी बिष्णुको नमस्कार है ३४ और
त्र्यंबक, सुसिद्ध कृष्णज्ञान हेतु इन नामोंवालों को नम-
स्कार है और मैं धन्यहूं और मैंने बड़े सुकृत किये जो
आप दोनों पुरुषों को देखता भया ३५ और आप दोनों
ने मेरा आश्रम स्वच्छ और पवित्र करदिया अब से
लगा के ऐसा प्रतीत होता है कि त्रिलोकी ने फिर जन्म
लिया ३६ क्योंकि जो मनुष्य यहां आगमन कर
और स्नान कर पितरों का तर्पण करेगा तिन श्रद्धा-

वाले मनुष्योंको दिव्य ज्ञान प्राप्तहोवेगा ३७ और इस पीपलकी जड़में सब काल में बसताहूं सो पीपलको नमस्कार कर शिव और कृष्णको देखेगा ३८ पीछे नाके ह्रदमें गमन करै पीछे पौंडरीक तीर्थ में स्नानकरै ३९ जो चैत्रमास के शुक्लपक्ष की दशमी को स्नान, जप, श्राद्ध इन्हों को करेगा उसके भक्तिकी वृद्धि होवेगी ४० पीछे त्रिविष्टप तीर्थमें गमनकरै तहां पापोंसे छुटानेवाली और पवित्र ऐसी बैतरणीनदी स्थितहै ४१ तहां भक्तिमान् पुरुष स्नानकरै तो उत्तम सिद्धि को प्राप्तहोता है और चैत्रशुक्ल चतुर्दशी के दिन पापलेपक तीर्थमें ४२ शिव का पूजन करै तो पापका लेशमात्र भी रहै नहीं पीछे फल्की बनमें गमनकरै ४३ जहां देवते, गंधर्व, साध्य, ऋषि स्थित हुये ४४ दिव्य हजारोंबर्षों तक तप करते भये पीछे दृषद्वती नदी में स्नानकर और तहां देवताओंका तर्पण करने से ४५ अग्निष्टोम और अतिरात्र इनयज्ञोंके फलको मनुष्य प्राप्तहोताहै ४६ और जो सोमवती अमावस्याकेदिन फल्की बनमें श्राद्ध करैहै तिसके पुण्यके फलको सुन ४७ जैसे गया श्राद्ध पितरों को तृप्त करताहै तैसे फल्की बनमें सोमवती अमावस्या के दिन कियाश्राद्ध पितरों को तृप्त करताहै ४८ और जो मनुष्य मन करके फल्की वनका स्मरण करताहै तिसके पितर तृप्त होतेहैं इसमें संशय नहीं ४९ और तहां सब देवताओं से अलंकृत सुमहत तीर्थहै तिसमें स्नान करने से हजार गायों के दानका

फल होताहै ५० और जो निखात तीर्थ में स्नानकर पितरों का तर्पण करै है वह राजसूयके फलको प्राप्तहो सांख्य योगको प्राप्त होजाताहै ५१ पीछे मिश्रकतीर्थ में गमनकर तहां बेदव्यास जी ने दधीचि ऋषि के लिये बहुतसे तीर्थ मिलादिये हैं ५२ इसवास्ते जिसने मिश्रक तीर्थमें स्नान कियाहै उसने सबतीर्थों में स्नान करलियाहै ५३ । ५४ पीछे नियम पूर्बक भोजन करता हुआ मनुष्य ब्यासबनमें गमनकरै तहां मनोजव तीर्थ में स्नानकर और देवमणिशिवका दर्शन करै तो ५५ मनोबाञ्छित फलकीसिद्धि होतीहै पीछे मधुबटमें गमन कर तहां देवी के तीर्थ में ५६ स्नानकर देवते और पितरोंका पूजनकर देबीकी अनुज्ञा से सिद्धिको प्राप्त होताहै ५७ पीछे जहां कौशिकी का संगम हुआ है तहां दृषद्वती में प्रमाणिक अन्न को खानेवाला मनुष्य स्नानकरै तो सबपापोंसे छूटजाताहै ५८ पीछे ब्यासस्थलीमें गमनकरै जहां पुत्र शोकसे दुःखित हुये बेदब्यासने देहत्यागनेके लिये निश्चय किया ५९ तबदेवताओंने समझाके उठाये हैं तहां बासकरनेसे मनुष्य पुत्र के शोकको नहीं प्राप्तहोसक्ता है ६० और तहां एक कूपरूपी तीर्थ है तिसके समीप में चौंसठ तोले तिलोंका दान करनेसे सर्बसिद्धिकी प्राप्ति और मरके मुक्तिकी प्राप्तिहोतीहै ६१ और पृथ्वीभरमें दुर्लभरूपी अह्न और मुनिन ये दो तीर्थहैं इन्होंमें स्नानकरने से विशुद्धरूपहोके सूर्यलोकमें प्राप्तहोसक्ताहै ६२ पीछे

त्रिलोकी में बिख्यात कृतजप्य तीर्थ है तहां गंगाजी में अभिषेक करै ६३ और महादेवका पूजनकरै तो अश्वमेध यज्ञकाफल प्राप्तहोता है ६४ और तहां कोटितीर्थ है तिसमें स्नानकर पीछे कोटीश्वर महादेवके दर्शनकरै तो किरोड़यज्ञों के फलोंकी प्राप्तिहोती है ६५ पीछे तीन लोक में बिख्यातरूपी बामनतीर्थ में गमनकरै ६६ जहां बामनरूपको धारण करनेवाले बिष्णु ने बलिराजा का राज्यहरके इन्द्रको दियाहै ६७ तहां बिष्णुपद तीर्थ में स्नानकर और बामनजी का पूजन करै तो सब पापों से शुद्धात्माहोके मनुष्य बिष्णुलोक में बसताहै ६८ और तहां सब पातकों का नाशनेवाला ज्येष्ठाश्रम तीर्थ है तिसको देखने से मनुष्यमुक्तिको प्राप्तहोताहै इसमें संशयनहीं ६९ और ज्येष्ठमास के शुक्लपक्षकी एकादशी में तहां बासकर पीछे द्वादशी में स्नानकरै तो मनुष्यों में श्रेष्ठ भावको प्राप्तहोसक्ता है ७० और तहां दीक्षा और प्रतिष्ठा से संयुक्त और बिष्णुकी प्रीति में तत्पर ऐसे ब्राह्मण बिष्णु भगवान् ने प्रतिष्ठित कियेहैं ७१ तिन्हों के लिये दियेहुये नानाप्रकार के श्राद्ध मन्वंतर तक अक्षयरूप होजाते हैं ७२ और तहां त्रिलोकीमें बिख्यात कोटितीर्थ है तहां स्नानकरने से कोटियज्ञका फलप्राप्त होता है ७३ और तिसतीर्थ में कोटीश्वरको देखने से महादेव के गणभावको प्राप्तहोताहै ७४ और तहांसूर्य का सुमहत्तीर्थ है तहां भक्तिसे युक्त मनुष्य स्नानकरै तो सूर्य लोक में प्राप्त होता है ७५ पीछे बिष्णुका कल्पित

किया और सब पापोंको नाशनेवाला ७६ वर्णोंका और आश्रमों का तारण के लिये निर्मल ऐसे कुलोत्तारण तीर्थमें ब्रह्मचर्यसे परममोक्षकी इच्छाकरनेवाले ७७ मनुष्यभी परमपद को प्राप्तहोते हैं और ब्रह्मचारी गृहस्थी बानप्रस्थ, यती ७८ ऐसे मनुष्य इस तीर्थ में स्नान करैं तो आगे के सातकुल और पीछे के सातकुल ऐसे चौदह कुलों को तारदेते हैं ७९ और ब्राह्मण, क्षत्रिय, बैश्य, स्त्री, शूद्र ये भी इस तीर्थ में स्नानकरैं तो परमपदको प्राप्तहोतेहैं ८० और दूर स्थितहुआ मनुष्यभी कुरुक्षेत्र में बामनजीका स्मरणकरता हो वह भी मुक्तिको प्राप्तहोता है और तहां बसनेवालेकी कौनकथाहै ८१॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्ये
षट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

## सैंतीसवां अध्याय ॥

लोमहर्षणजी कहनेलगे कि बायु के ह्रदमें स्नान कर और महादेवके दर्शनकरै तो सब पापोंसे बिमुक्तहो शिवलोकमें प्राप्तहोताहै १ जहां पुत्रके शोककरके बायु देवता लीन होगया है पीछे ब्रह्माआदि देवतों ने फिर प्रकट किया है २ पीछे अमृततीर्थ में गमन करै जहां महादेव का स्थान है जहां देवते और गंधर्बोंने हनुमान प्रकट किया है ३ तहां स्नानकरने से मनुष्य अमर होजाता है और कुलोत्तारण तीर्थ में बासकरने से ४ सातकुल मातापक्ष के और सातकुल पितापक्ष के इन्होंको

तारदेताहै और शालिहोत्र राजऋषिका त्रिलोकी में बिख्यात तीर्थहै ५ तहां स्नानकरै तो देहके पापोंसे मनुष्य बिमुक्तहोजाताहै और सरस्वतीका त्रिलोकी में बिख्यात श्रीकुंजतीर्थ है ६ तहां भक्तिपूर्वक स्नान करने से अग्निष्टोम यज्ञके फलकी प्राप्ति होती है और नैमिष कुंजतीर्थ में ७ स्नानकरै तो नैमिष के फल की प्राप्ति होती है ८ और रावण ने बेदवती के केशों का ग्रहणकिया तब रावण के बधके लिये प्राणों को छोड़ ९ फिर जनक राजाकी स्त्री में जन्मले सीता नाम से बिख्यात होके रामचन्द्रकी पतिब्रता स्त्री हुई १० सो अपने नाशकेलिये रावण ने हरली तब रामचन्द्र ने रावण को मार और बिभीषण का अभिषेककर ११ वही सीता फिर अपने गृहमें प्राप्तकरी तिसका सीतातीर्थ है तिसमें स्नान करनेसे कन्यायज्ञका फल प्राप्तहोता है १२ और सब पापों से बिमुक्त होके परमपदको प्राप्त होता है पीछे जहां ब्रह्माजी का उत्तम स्थान है १३ ऐसे सुमहत् तीर्थ में गमनकरै तहां क्षत्रिय बैश्य आदि वर्णका मनुष्य ब्राह्मण वर्णको प्राप्त होजाता है और तहां ब्राह्मण स्नानकरै तो परमपदको प्राप्त होता है १४ पीछे त्रिलोकी में दुर्लभ रूपी चन्द्रमाके तीर्थ में गमन करै जहां चन्द्रमा तपकरके ब्राह्मणोंका राजा बनताभया १५ तहां स्नानकर देवते और पितरों का पूजनकर शुद्धहोके मनुष्य स्वर्ग में प्राप्तहोताहै जैसे कार्त्तिककी पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा १६ और

त्रिलोकी में दुर्लभरूपी सप्तसारस्वततीर्थहै जहां सातों सरस्वती इकट्ठी होके बहती हैं १७ अर्थात् सुप्रभा कांचनाक्षी, विमला, मानुषी, ह्रदा, ओघनामा, सुवर्णा, विमलोदका ये सातों सरस्वतियों के नाम हैं १८ और पुष्करजीमें यज्ञकरतेहुये ब्रह्माजी को सब ऋषि कहने लगे कि यह यज्ञ अतिश्रेष्ठ नहीं है १९ क्योंकि यहां सब नदियों में श्रेष्ठरूपी सरस्वती नहीं दीखतीहै तब इस बचन को सुन प्रसन्नहुये भगवान् सरस्वती का स्मरण करतेभये २० तब ब्रह्माजीने पुष्करजीमें सुप्रभानामवाली सरस्वतीका आह्वान किया है २१ तब बेगसे युक्त और ब्रह्माजीको मानतीहुई ऐसी सरस्वती को मुनिजन देख अतिप्रसन्न होतेभये २२ और यही पुष्कर में स्थित होनेवाली सरस्वती मंकण मुनि ने कुरुक्षेत्र में प्राप्तकरी है २३ और एक समय में नैमिषारण्य में स्थित हुये शौनकादिक ऋषि लोमहर्षण से पूछनेलगे २४ कि हमारा यज्ञफल सन्मार्ग में कैसे वर्तेगा तब सब ऋषियों को नमस्कार कर लोमहर्षण कहने लगा २५ कि जहां सरस्वती नदी स्थित है तहां यज्ञफल पूर्ण होताहै ऐसे बचन को सुन नानाप्रकार के शास्त्रोंके अर्थों को जाननेवाले मुनि २६ इकट्ठेहोके सरस्वती का स्मरण करने लगे तब ऋषियों करके ध्यान करी सरस्वती यज्ञमें २७ तिन्होंको पवित्रकरने के लिये नैमिषारण्य में कांचनाक्षी सरस्वती प्राप्तहुई है और मंकण ऋषिने २८ पवित्र जलवाली सरस्वती कुरुक्षेत्र

में प्राप्तकरी है और गयराजा की यज्ञमें बुलाई हुई बि-
शालानाम सरस्वती प्राप्तभई है २९ यह भी सरस्वती
संकण ऋषिने कुरुक्षेत्र में प्राप्तकरदी है और उत्तर को-
शलदेश में उद्दालक मुनि करके बुलाईहुई सरस्वती प्रा-
प्तभई है ३० तब मुनिजनों ने बल्कल और मृगछाला
आदि से पूजी है ३१ तब सब पापोंको नाशनेवाली म-
नोरमा नाम से बिख्यात सरस्वतीहुई है यह भी संकण
ऋषिने कुरुक्षेत्र में बुलाली है ३२ तब ऋषि के मानके
लिये तीर्थ में प्रबेश करती भई और सुबेणुनाम से बि-
ख्यात ३३ और सब पापों को हरनेवाली ऋषि और
सिद्धों से सेवित ऐसी जो सरस्वती केदार में स्थित थी
वह भी संकण मुनिने परमेश्वर की आराधना कर ३४
ऋषियों के उपकारके लिये कुरुक्षेत्रमें प्रबेश करदी है
और यज्ञकरने के समय दक्षप्रजापतिने ३५ बिमलोद-
कानामवाली सरस्वती गङ्गातटपै प्रकटकरी है वह भी
संकणमुनि ने कुरुक्षेत्रमें प्रबेशकरी ३६ और कुरुक्षेत्रमें
यज्ञ करने के समय कुरुराजाने सरस्वती प्रकटकरी है
वह भी कुरुक्षेत्रमें मुनिने प्रबेशकरी ३७ और मार्कण्डेय
मुनिने पवित्र जलवाली सरस्वती का अभिषेचन किया
है और जहां सप्तसारस्वत तीर्थपै स्थितहुआ ३८
संकण ऋषि जब नृत्य करनेलगा तब महादेवजी ने
निवारित किया है ३९ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्ये
सप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

# अड़तीसवां अध्याय ॥

ऋषि कहने लगे कि कैसे मंकण ऋषि सिद्धहुआ और किससे उत्पन्नहुआ और किसवास्ते नृत्यकरता हुआ महादेवजी ने निवारण किया १ लोमहर्षण कहने लगे कश्यपजी के मनसे मंकणमुनि जन्मा पीछे स्नान करने को ब्यवसितहुआ और बल्कल को धारण करता भया २ तहां रम्भाआदि दिब्य अप्सरा मुनि के संग स्नान करनेलगीं ३ तब मंकण का बीर्य स्खलित होगया पीछे तिस बीर्य को मंकणमुनि कलश में धारण करता भया ४ पीछे कलशहीमें बीर्यके सात बिभाग होगये५ तब बायुबेग, बायुबल, बायुहा, बायुमंडल, बायुज्वाल, बायुरेता, बायुचक्र ६ इन नामों वाले सात ऋषिजन्मे ये सातोंऋषि चराचर जगत्को धारणकररहेहैं और पहलेसुनाहै कि मंकण मुनि के हाथ में कुल्हाड़ालगा ७ तब हाथसे शाकके रसके समान द्रव भिरनेलगा तब तिस शाकरसको देखके आनंदित हुआ मुनि नाचने लगा ८ पीछे तिस मुनिके तेजसे मोहितहुआ स्थावर जंगम जगत्भी नाचनेलगा ९ तब ब्रह्माआदि सबदेवते और ऋषियोंने महादेवजीसे जाके कहा १० कि हे देव! जैसे यहमुनि नृत्य नहीं करे तैसे आप यत्नकरनेको योग्यहैं तब महादेवजी हर्षसे आबिष्टहुये मुनि को देखके ११ देवताओं के कार्यके लिये कहनेलगे कि

हे मुनिसत्तम! धर्ममार्ग में स्थितहुआ जो तू है तेरेको यह आनंद कहां से प्राप्तभया १२ तब मंकण बोला कि हे देव! मेरे कटेहुये हाथ से शाकका रस झिरता है १३ इसको देखके मैं अतिआनंद से आनंदित हुआहूँ तब हँसके राग से मोहित हुये मुनिको १४ महादेव कहनेलगे कि हे बिप्र! मैं बिस्मय को नहीं प्राप्तहोता तू मेरे को देख ऐसे कहकर महादेव १५ अंगुली के अग्रभाग से अपने हाथके अंगूठे को ताड़नाकरने लगे तब घाव से हिम के समान भस्म निकसा १६ तिस को देखके लज्जितहुआ मंकणमुनि महादेव के पैरों में पड़के कहने लगा कि हे देव! महादेव से उपरांत मैं अन्यदेवको नहीं मानता १७ और आपके प्रसाद करके भयसे रहित हुये देवते आनंदित रहते हैं और चराचर जगत् के आप ही परमदेव हैं १८ और हे अनघ! ब्रह्मा आदि देवते आपके आश्रय सब दीखते हैं और सब देवताओं का कर्त्ता और कारयिता भी आपही है १९ ऐसे महादेव की स्तुतिकर नम्रहुआ मुनि कहने लगा कि हे भगवन्! आपके प्रसाद से मेरा तप क्षीण नहीं होना चाहिये २० तब प्रसन्न हुये महादेवजी कहनेलगे कि हे बिप्र! मेरे प्रसादसे हजार प्रकार करके तेरातप बढ़े २१ और तेरे संग इसआश्रम में मैं वासकरूंगा और जो मनुष्य इस सप्तसारस्वततीर्थ में स्नान करके मेरी पूजा करेगा २२ तिसको इसलोक में और परलोक में दुर्लभ कुछभी नहीं रहेगा और वे मनुष्य सारस्वत लोक में गमन करेंगे २३

और शिवके प्रसाद से परमपद की भी प्राप्तिहोवेगी २४
इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्येऽष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८॥

# उन्तालीसवां अध्याय ॥

लोमहर्षण कहने लगे पीछे औशनसतीर्थ में गमनकरै जहां शुक्राचार्य्य ग्रहभावको प्राप्त भये १ तहां स्नानकरने से जन्मभर के पातकों से मनुष्य छुटजाताहै पीछे परब्रह्म को प्राप्तहोता है जहां से फिर आगमन नहीं होता २ जहां तीर्थ के माहात्म्य के दर्शन से हरोदरमुनि मुक्तहुआ है ३ ऋषिकहने लगे कैसे हरोदरमुनि ग्रस्तहुआ और कैसे मोक्षको प्राप्त हुआ और तिसतीर्थ के माहात्म्य के सुनने की इच्छाकरै हैं ४ लोमहर्षण कहने लगे कि पहले दंडकबन में बसते हुये रामचन्द्रने बहुतसे राक्षसमारे ५ तिन्हों में से एकराक्षसका छुरी से काटाहुआ शिर महाबन में गिरा ६ तब हरोदर के पैर में यदृच्छाकरके लगा तब हाड़को भेदनकर प्रवेश करता भया ७ तब वह हरोदर मुनि तीर्थआदिका गमनहीं करतारहा और न शयनकरते चैनपड़ै और न गमन करते पीछे सबतीर्थों में मुनि गमन करताभया ८ परन्तु वेदना नहीं मिटी पीछे अपनी पीड़ा का हाल सबमुनियों के अगाड़ी कहताभया ९ तब बहुतसे ऋषि कहने लगे कि औशनस तीर्थके प्रतिगमनकर १० तब तिन मुनियों के बचन को सुन औशनस तीर्थ में गया तहां पानी का स्पर्श करतेही राक्षसका शिर जलके भीतर गिरा

पीछे पूतात्मा मुनि होके ११ अपने आश्रम में आगमन कर सम्पूर्ण बृत्तांत को मुनियों के अगाड़ी कहता भया १२ तब सब मुनि तीर्थ के माहात्म्य को सुन कपालमोचन नाम औशनस तीर्थ का धरते भये और तहां संसार में बिख्यातरूपी बिश्वामित्र का सुमहत्तीर्थ है १३ जहां बिश्वामित्र मुनि ब्राह्मण बर्ण को लब्ध हुआ तहां अन्यबर्ण का मनुष्य स्नान करै तो ब्राह्मण बर्ण को प्राप्तहोवै १४ और ब्राह्मण स्नान करै तो परमपद को प्राप्तहोवै पीछे प्रमाणिक भोजन करनेवाला और नियमवाला मनुष्य पृथूदकतीर्थ में गमनकरै १५ जहां ससंगू नाम ब्रह्मर्षि सिद्धहुआ है अर्थात् गंगा द्वार पै सदा स्थित रहनेवाला और जातिका स्मरण करनेवाला १६ ऐसा ससंगू मुनि अपने अंतसमय को देख पुत्रों से कहनेलगा कि यहां मैं कल्याण को नहीं देखताहूँ १७ इस वास्ते पृथूदक तीर्थ में मुझ को प्राप्तकरो ऐसे मुनि के बचन को सुनके १८ तपस्वी पृथूदक में मुनि को लेगये तहां तपकरने से फिर जन्म मरण नहीं होता और तहीं ब्रह्माजी का रचाहुआ ब्रह्मयोनि तीर्थ है १९ जहां चारवर्णों की सृष्टिके लिये ध्यान करते हुये ब्रह्माजी के मुखसे ब्राह्मण जन्मे और बाहुओं से क्षत्रिय जन्मे २० और ऊरुओं से वैश्य जन्मे पैरों से शूद्र जन्मे ऐसे ब्रह्मयोनितीर्थ में मुक्ति की कामनावाला २१ मनुष्य स्नान करै तो फिर जन्म को नहीं प्राप्त होता २२ और तहां अनुकीर्णतीर्थ है जह

दाल्भ्य मुनि धृतराष्ट्र राजा को वाहनों के साथ होमताभया और राजा भी तहां ज्ञान को प्राप्त भया २३ ऋषि कहनेलगे कैसे अनुकीर्णतीर्थ प्रतिष्ठित हुआ और धृतराष्ट्र राजाने कैसे मुनिको प्रसन्नकिया २४ लोमहर्षण कहनेलगा कि नैमिषारण्य में बसनेवाले मुनिदक्षिणा के लिये धृतराष्ट्र राजा के पासगये और दाल्भ्य मुनि भी धृतराष्ट्र से कहता भया २५ परन्तु धृतराष्ट्र ने कुछ भी जवाब नहीं दिया तब क्रोध से जलताहुआ दाल्भ्य मुनि अपने अंगों के मांस को काट २६ पृथूदक तीर्थान्तर्गत अनुकीर्णतीर्थ में धृतराष्ट्र राजा के राज्य को होमने लगा २७ तब राजा के दोष से देशों का नाशहोने लगा पीछे राजा दाल्भ्य मुनि के कर्त्तव्य का चिन्तनकर पुरोहित के संग बहुत से रत्नों को ग्रहण कर २८ मुनि को प्रसन्न करनेके लिये अनुकीर्ण तीर्थ को गया पीछे प्रसन्न हुआ दाल्भ्य मुनि राजा से कहने लगा २९ जाननेवाले पुरुषको ब्राह्मणोंकी अवज्ञा नहीं करनीचाहिये क्योंकि अवज्ञात किया ब्राह्मण तीनपीढ़ियों को नाशता है ३० ऐसे राजासे कहकेराजा को माफकरता भया ३१ तिस तीर्थ में जो जितेन्द्रिय पुरुष स्नान करै तो मनोवांछित फलको प्राप्त होता है ३२ और गयराजाकी नदी में शहद झिरता भया तहां स्नान करै तो सब पापों से मुक्तहुआ मनुष्य अश्वमेध यज्ञ के फलको प्राप्तहोता है और तहां अतिपवित्र मधुस्रवतीर्थ है ३३ तिसमें स्नानकर और शहद से पितरों

को तृप्तकरै और तहां बसिष्ठोद्वाह तीर्थ है तहां स्नान करै तो बसिष्ठलोक प्राप्तहोता है ३४॥

इतिश्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्ये एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९॥

## चालीसवां अध्याय॥

ऋषि कहनेलगे कैसे बसिष्ठजी बहतेभये और किसवास्ते सरस्वती नदी बसिष्ठजीको बहाती भई १ लोमहर्षण कहनेलगे बिश्वामित्र राजर्षिका और बसिष्ठ मुनि का तपरूपी ईर्षाकरके अतिबैर होताभया २ सो बसिष्ठजी का आश्रम स्थाणु तीर्थमें था और बिश्वामित्र का आश्रम तिसके पश्चिमभाग में था ३ जहां महादेवजी सरस्वती की पूजाकर लिंग के आकार सरस्वती को स्थापित करतेभये ४ और घोररूपी तप करके संयुक्त बसिष्ठजीथे और तब तपसेहीन बिश्वामित्र ५ सरस्वती को बुलाके कहनेलगा कि हे सरस्वति! अपने बेग करके बसिष्ठमुनि को यहां प्राप्तकर ६ और यहां आगमन करेंगे तब मैं बसिष्ठको मारूंगा इसमें संशय नहीं पीछे ऐसे बचन को सुन सरस्वती दुःखित होनेलगी ७ तब क्रुद्धरूप हुआ बिश्वामित्र कहनेलगा कि जल्द बसिष्ठ को यहां प्राप्तकर पीछे सरस्वती रोतीहुई बसिष्ठजी के समीप में जाके ८ बिश्वामित्र के बचनको कहती भई तब दुःखितहुई नदी को देख ९ बसिष्ठजी कहने लगे कि हे सरस्वति! तू मुझसे निःशंकहो

कह तब बसिष्ठके बचनको सुन जल के प्रवाहसे बसिष्ठ को बहानेलगी १० तब बहतेहुये बसिष्ठमुनि सरस्वती की स्तुति करनेलगे कि हे सरस्वति ! ब्रह्माजी के सरसे तू प्रवृत्त हुई है ११ और तेरे करके जलों के द्वारा सब जगत् व्याप्त होरहा है और तूही आकाश में होके मेघों में जलको रचती है १२ और तेरे पुत्रकी तरह है इस वास्ते हम तेरा ध्यान करते हैं और पुष्टि, धृति, कीर्त्ति, सिद्धि, कांति, क्षमा १३ स्वाहा, स्वधा, बाणी इन नामों वाली तू है और तेरे करके यह जगत् बिस्तृत होरहाहै और तूही सब प्राणियों में बाणीरूप करके संस्थित है १४ ऐसे जब सरस्वती की स्तुति करी तब सुख पूर्वक बसिष्ठ को बहातीहुई बिश्वामित्र के लिये अर्पण करने लगी १५ तब सरस्वती करके प्राप्त किये बसिष्ठ को देख कोप से अन्वित हुआ १६ बिश्वामित्र बसिष्ठ को मारनेकेलिये प्रहार करनेलगा तब क्रुद्धहुये बिश्वामित्रको देख ब्रह्महत्या के भय से १७ सरस्वती नदी बसिष्ठमुनि को उलटा बहाती भई १८ तब क्रोध करके लाल नेत्रोंवाला बिश्वामित्र कहने लगा १९ कि हे सरस्वति ! तू मेरे को ठगि उलटी बहनेलगी तिससे तू लोहू को बहातीहुई राक्षसों के गणों से सेवित रहेगी २० ऐसे बिश्वामित्र ने सरस्वती को शाप दिया तब लोहू से मिले पानीको एक बर्ष तक बहाती भई २१ पीछे ऋषि, देवते, गन्धर्ब, अप्सरा ये सब सरस्वती को देख दुःखित होनेलगे २२ और भूत, पिशाच

राक्षस तिस नदी के रुधिररूपी जलको पीवनेलगे २३ पीछे तिस रुधिर को पीते हुये तृप्त होके और खेदसे रहित होके नाचतेहुये और हँसते हुये स्वर्ग की तरह बिचरने लगे २४ पीछे किसी कालमें बहुतसे मुनि तीर्थयात्रा के अर्थ सरस्वती में गये २५ तहां राक्षसों करके व्याप्त हुई नदी को देख सब मुनि सरस्वती को बुला कहने लगे २६ कि हे देवि! जो तेरे बीच में लोहू बहताहै यह क्या कारण हुआ २७ तब सरस्वती ने सब बिश्वामित्र का कारण बर्णन किया पीछे प्रसन्न हुये २८ सब मुनि पवित्रजल के समूहसे संयुक्त और सब पापों को नाशनेवाली २९ ऐसी अरुणा नदी को सरस्वती में मिलातेभये ३० तब सरस्वती के जल को देख दुःखितहुये राक्षस मुनियों से कहनेलगे कि धर्म से हीन जो हमहैं सो सबक्षुधित रहेंगे ३१ इसवास्ते हमारे लिये तुमने बुराकिया और जो वैश्य, शूद्र, क्षत्रिय थेसब बुरेकर्मों करके ३२ ब्राह्मणों से द्वेषकरते हैं वे राक्षस हो जातेहैं और जो आचार्य, माता, पिता इन्होंसे द्वेषकरतेहैं ३३ और बृद्धोंका माननहीं करतेहैं वेभी सब राक्षसहो जातेहैं ३४ ऐसे तिन राक्षसों के बचनों को सुन कृपाशील सब मुनि ३५ आपसमें कहनेलगे कि छींक, कीड़ा, मापी, उच्छिष्ट ३६ केश इन आदिसे मिलाहुआ जो अन्न होगा वह राक्षसोंका भाग होताहै ३७ इसवास्ते तिस अन्नको वर्जना उचितहै जो इस तरहके अन्नको खावे वह राक्षसों के भाग को खाताहै ३८ पीछे वे सब

मुनि तिस तीर्थको शुद्धकर तहां राक्षसों की मुक्ति के सङ्गम तीर्थको कल्पित करते भये ३९ और अरुणा और जो सरस्वती के सङ्गममें तीन रात्रि बासकर स्नान करता है वह सब पापोंसे छूटजाता है ४० और घोर कलियुग में भी अरुणा सङ्गममें स्नानकरै तो मनुष्य मुक्तिको प्राप्तहोसक्ताहै ४१ पीछे वे सब राक्षस अरुणा सङ्गममें स्नान करनेसे पापों से रहितहो दिव्य माला और बस्त्रों को धारण कर स्वर्गमें प्राप्तभये ४२॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्येचत्वारिंशोऽध्यायः४०॥

# इकतालीसवां अध्याय॥

लोमहर्षण कहने लगे कि पहले दर्भीमुनि ने तहां चार समुद्र रचे हैं तिन्हों में अलग अलग स्नान करने से हजार गायों के दान का फल मिलता है १ और जो कुछ तिस तीर्थ में किया जाता है वही परिपूर्ण होजाता है २ पीछे शतसाहस्त्रिक और शतक ये दो तीर्थ हैं इन दोनों में स्नान करने से मनुष्य हजार गायों के दान के फल को प्राप्त होताहै ३ और सरस्वती के तटपै सोम तीर्थ है तहां स्नान करने से राजसूययज्ञका फल मिलता है ४ पीछे रेणुकाश्रम तीर्थ में स्नानकरै तो मातृभक्ति के समान फल मिलता है ५ पीछे ब्राह्मणों से सेवित ऋण-मोचन तीर्थ है तहां कुमारिका औजसनामसे विख्यात ६ अभिषेक हुआ है तहां स्नानकरै तो यशसे समन्वित हुआ पुरुष कुमारके लोकमें प्राप्तहोताहै ७ और चैत्रके

महीने में शुक्लपक्षकी षष्ठीके दिन जो तहां श्राद्ध करता है वह गयाश्राद्ध के समान फलको प्राप्तहोता है ८ और जैसे सूर्यके ग्रहणमें सन्निहित तीर्थ में श्राद्ध किये का फल है ६ वह भी औजस तीर्थ में मिलता है और औजस तीर्थ में किया श्राद्ध अक्षयगुणा होजाता है यह पहले बायुने कहा है इसवास्ते सब यत्न करके तहां श्राद्ध करै १० और जो चैत्रकी षष्ठी के दिन तहां श्रद्धापूर्वक स्नानकरै तिसके पितरों को दिया हुआ जल अक्षयगुणा होजाताहै ११ और तहां त्रिलोकी में विश्रुत पञ्चबट तीर्थहै तिसमें योगमूर्त्तिको धारण करने वाले महादेवजी स्थित होरहे हैं १२ तहां स्नान कर पीछे महादेवकी पूजा करने से गणभावको व देवताओं के सङ्ग आनन्दित होताहै १३ और पीछे कुरुक्षेत्र तीर्थ है जहां कुरुराजाने क्षेत्रको बाहने के लिये घोर तपकिया है १४ तिसके घोर तप करके प्रसन्न हुआ इन्द्र कहता भया कि हे राजर्षे! तेरे तप करके मैं प्रसन्न हुआ १५ और इसकुरुक्षेत्र में जो यागकरेंगे वे सुकृत लोकों में जाके प्राप्त होवेंगे १६ पीछे बारंबार कुरुराजा से पूछके जब इन्द्र स्वर्गको जानेलगा तब कहनेलगा १७ कि हे राजन्! बाहने में यत्नको कह कुरु कहने लगा कि जो श्रद्धावाले मनुष्य इसतीर्थमें स्नान करेंगे १८ वे ब्रह्मलोक में जाके बासकरेंगे और अन्य जगह पाप करनेवाले १९ मनुष्य इस तीर्थ में स्नान करने से मुक्तहुये परमगतिको प्राप्त होते हैं और जो पवित्ररूप कुरुतीर्थ में स्नान करेंगे २०

तो परमपदको प्राप्त होंगे यह कुरुराजाने प्रतिज्ञाकरी है पीछे स्वर्गद्वार में गमन कर २१ पीछे शिवद्वार में स्नान करने से परमपद प्राप्त होताहै पीछे छेद नरक तीर्थ में गमनकरै २२ जहां ऋषियोंके सङ्ग पहले ब्रह्मा जी स्थित हुये हैं और पार्बती के संग महादेव स्थित हुये हैं २३ और तिसके मध्यमें अनरक तीर्थहै तिसमें स्नान करने से मनुष्य पापोंसे दूर होजाते हैं २४ और बैशाखके महीने में षष्ठी तिथिको जब मङ्गलबारहो तब तहां स्नान करने से पापोंसे मनुष्य मुक्त होजाताहै २५ और जो चार कांसे के बर्तन और दूधसे पूरित कलश इन्होंका दान करे तो मनोबांछित फल मिलताहै २६ और इस तीर्थमें स्नान करनेसे परमपदकी प्राप्ति होती है २७ और अन्य महीनों में भी षष्ठी तिथिके दिन मंगलबारहो तब भी इस तीर्थमें क्रिया करनी अतिफलदायकहै २८ और सब तीर्थोंमें जो स्नान करनेका फल है सो इस तीर्थ में मिलताहै २९ पीछे सब पातकों को नाशनेवाला और पवित्र और रमणीक ऐसा काम्यक बनहै जिसमें प्रवेश करतेही सब पापों से मनुष्य छूट जाताहै ३० और जिसके आश्रममें आश्रितहो सूर्यदेव प्रकट हुआ स्थितहै और तिसके दर्शन करनेसे मनुष्य मुक्तिको प्राप्तहोताहै ३१ और सूर्यबारके दिन काम्यक बनमें बसनेवाला मनुष्य शुद्ध मनवाला होके मनोवांछित फलको प्राप्त होता है ३२ ॥

इतिवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्येएकचत्वारिंशोऽध्यायः४१॥

# बयालीसवां अध्याय ॥

ऋषि कहने लगे काम्यकबन के पूर्वकी तरफ जो ऋ-षियों से सेवित कुरुतीर्थ है तिसका माहात्म्य बिस्तार पूर्बक कहो १ लोमहर्षण कहने लगे कि इस तीर्थ के मा-हात्म्यको सब मुनि सुनो क्योंकि ऋषियों के चरित्र को सुनने से मनुष्य पापों से रहित होजाता है २ और एक समय नैमिषारण्य में बसनेवाले ऋषि कुरुक्षेत्र में ग-मन कर सरस्वती में स्नानके लिये प्रवेश को नहीं प्राप्त होते भये ३ तब वे मुनि यज्ञोपबीतिन तीर्थ को कल्पना करते भये और शेषमुनि नहीं प्रवेश करते भये ४ तब रत्नुक और अरत्नुक इन दोनों तीर्थों को ब्राह्मणों से परिपूर्ण हुये देखकर सरस्वती ५ सब ब्राह्मणों के कल्याण के लिये पश्चिम मार्गको प्राप्त भई ६ सो जो पूर्वप्रवाह में स्नानकरै वह गंगा के स्नान के फलको प्राप्त होता है और दक्षिण प्रवाहमें स्नान करै वह नर्मदा के स्नान के फलको प्राप्त होताहै ७ और पश्चिम प्रवाहमें स्नान करै वह यमुना नदी के स्नान के फलको प्राप्त होता है और जो उत्तर प्रवाहमें स्नानकरै वह सिन्धु के स्नान के फलको प्राप्त होताहै ८ ऐसे दिशाओं के प्रवाह करके पवित्ररूप हुई सरस्वती में स्नान करै तो सब तीर्थों के स्नानका फल मिलताहै ९ पीछे त्रिलोकी में विख्यात विहार नाम तीर्थ में गमनकरै १० जहां शिवके दर्शनों की आकांक्षावाली सरस्वती गमनकर पार्वती सहित

महादेवको प्रणामकर ११ पीछे नन्दी और गणेशजी को नमस्कार करती भई तब प्रसन्न हुआ नन्दीश कहने लगा १२ कि यह महादेव पार्बतीका बिहार स्थान है यहां सब देवताओंने अपनी अपनी पत्नियां बुलाके क्रीड़ा करी है १३ इस वास्ते प्रसन्न हुये महादेव कहने लगे कि इस तीर्थ में क्रीड़ा और श्रद्धापूर्बक जो मनुष्य स्नानकरै १४ वह धन धान्य प्रिय इन्होंसे युक्तहोताहै इसमें संशय नहीं पीछे देबी करके सेवित जो दुर्गा तीर्थ है तहां स्नान करे १५ और पितरों की पूजा करने से दुर्गति का नाश होता है और तहां त्रिलोकी में बिख्यात चमरतीर्थ है १६ तिस के दर्शन करने से सब पापों का नाश होके मुक्ति की प्राप्ति होती है और जो श्रद्धा करके इस तीर्थ में पितर १७ और देवताओं को तृप्तकरै वह अक्षय भावको प्राप्त होताहै और जो माता पिता ब्राह्मण इन्हों को मारनेवाला और गुरू की शय्या पै प्राप्त होने वाला १८ ऐसा मनुष्य इस प्राची सरस्वती में स्नानकरै तो शुद्ध होताहै १९ और प्राची सरस्वतीपै तीनरात्रि बास करने से २० मनुष्य के शरीर में कुछ भी पापनहीं रहता और नरनारायण ब्रह्मा सूर्य २१ और इन्द्रआदि सब देवते ये प्राची सरस्वती में निवास करते हैं और जो मनुष्य प्राची सरस्वतीपै श्राद्ध करेंगे २२ तिन्हों को इस लोकमें और परलोक में कुछभी दुर्लभ नहीं है इस वास्ते सब कालमें प्राची सरस्वती सेवनी उचितहै २३ और पंचमी के दिन विशेष करके सेवनी उचितहै और

पञ्चमी तिथिके दिन प्राची सरस्वती में स्नान करने से लक्ष्मीवान् मनुष्य होजाता है २४ और तहां औशनस तीर्थ है जहां परमेश्वर का आराधन करने से सिद्धि की प्राप्ति होती है २५ और इस तीर्थको सेवने से मनुष्य पापों से मुक्त होजाता है यह तीर्थ शुक्राचार्य्य ने सेवन किया है २६ इस तीर्थको सेवनेवाले मनुष्य परमगति को प्राप्त होते हैं और जो मनुष्य भक्ति करके इसतीर्थ में स्नान करेंगे २७ तिनके पितर उत्तम लोक में प्राप्त होंगे इसमें कुछ संशय नहीं और सब मर्य्यादाओं से स्थित और चारमुखों वाला ऐसा ब्रह्मतीर्थ है २८ तिसमें जे चैत्रमास के कृष्णपक्षकी चतुर्दशी व अष्टमी के दिन स्नान करेंगे २९ वे सूक्ष्म ब्रह्म को प्राप्त होंगे जिससे फिर आगमन नहीं होसकै पीछे हजार लिङ्गोंसे शोभित हुये स्थाणु तीर्थ में गमन करै ३० और तहां स्थाणुवट का दर्शन करने से मनुष्य सब पापों से छूट जाताहै ३१ ॥

इतिश्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्ये
द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

## तेंतालीसवां अध्याय ॥

ऋषि कहने लगे हे महामुने ! स्थाणु तीर्थ का और स्थाणुवट का माहात्म्य और सन्निहिततीर्थकी उत्पत्ति पीछे धूली से पूरना १ और लिङ्गों के दर्शन से क्या पुण्य होता है और स्पर्शन से क्या फलहोता है और

सरका क्या माहात्म्य है इन्हों को बिस्तार से वर्णन करो २ लोमहर्षण कहने लगे वामनपुराण को सम्पूर्ण देवता सुनो जिसको सुन बामनजी के प्रसाद से मनुष्य मुक्ति को प्राप्त होता है ३ और स्थाणु के समीप में बालखिल्य आदि ऋषियों के सङ्ग स्थित हुये सनत्कुमारजी से नम्रहुये ४ मार्कण्डेयमुनि सरका माहात्म्य और प्रमाण और स्थिति को पूछतेभये ५ मार्कण्डेय कहनेलगे हे ब्रह्मपुत्र! हे महाभाग! हे सर्बशास्त्रबिशारद! सब पाप और भयों को नाशनेवाले सर के माहात्म्य को मुझसे कहो ६ और हे द्विजसत्तम! कितने तीर्थ दृश्यमान हैं और कितने लिंग पबित्र हैं ७ जिनके दर्शनमात्र से मनुष्य मुक्तिको प्राप्त होजावे और बटके दर्शनका पुण्य और उत्पत्तिको मुझसे ८ और परिक्रमा से जो पुण्य है इनको मुझ से कहो और तीर्थस्नान करके जो फल है और गुप्तरूपी तीर्थों के दर्शन से जो पुण्य होता है ९ और जैसे महादेवजी सर के मध्य में व्यवस्थित हुये हैं और किस वास्ते इन्द्र धूली करके तीर्थको पूरित करता भया १० और स्थाणुतीर्थका माहात्म्य और चक्रतीर्थ का फल और सूर्य्यतीर्थ का और सोम तीर्थ का फल मुझसे कहो ११ और महादेव के और बिष्णुके गुप्तस्थान और सरस्वती का बिस्तार पूर्वक माहात्म्य इनको हे महाभाग! मुझ से कहो १२ और ईश्वर का माहात्म्य मुझसे कहो क्योंकि ब्रह्माजी के प्रसादसे आप सब पदार्थ को जानते हो १३ ऐसे

मार्कंडेय के वचन को सुन वे महात्मा सनत्कुमार मुनि १४ अच्छी तरह सावधान होके जैसे ब्रह्माजी के मुख से सुना था तैसे तीर्थों का माहात्म्य कहने लगे १५ सनत्कुमार ने कहा कि बरके देनेवाले और शिव अर्थात् कल्याणकारी ऐसे महादेवजी को नमस्कार कर तीर्थोंकी ब्रह्मभाषित उत्पत्ति को मैं कहता हूँ १६ पहले जब एकार्णव पृथ्वी होगई स्थावर और जंगम नष्ट होगये तब प्रजा को उत्पन्न करनेवाला एक बड़ा अंडा उत्पन्न हुआ १७ तिस अंडे में स्थित ब्रह्मा हजारहों युगों पर्यंत शयन करके पीछे जागा १८ तब सत्त्वगुण की अधिकता से युक्त ब्रह्माजी शून्यरूप लोकको देखते भये पीछे रजोगुण से मोहित और सृष्टि को चिन्तवन करते हुये ऐसे ब्रह्माजी के १९ सृष्टिगुणवाला रजोगुण कहाहै और स्थितिगुणवाला सत्त्वगुण कहा है और स्थितिगुण सत्त्वगुण से उत्पन्न होता है और संहार काल में तमोगुण उत्पन्न होता है २० ऐसे गुणों से रहित भगवान् व्यापक और पुरुष कहाहै और तिसी ईश्वरसे यह संपूर्ण जगत् व्याप्त होरहा जो कि जीव संज्ञक है २१ और वही ब्रह्मा है और वही गोविन्द है और वही ईश्वर है और वही सनातन है और जो तिस ईश्वर को जानता है वही निश्चय को जानता है २२ और गुणों से रहित हुआ और परमात्मा और सनातन ऐसा वह पुरुषहै जो सोनको जानने वाला पुरुष तिसको जानता है वह सबको जानता

है २३ और जिनका अनन्त भाववाला चित्त आत्मा में लगाहुआ है तिनको सब तीर्थों से और आश्रमों से क्या प्रयोजन है २४ और संयमरूपी पवित्र तीर्थों से संयुक्त और सत्यरूपी जलसे बहती हुई शीलता और शांति से युक्त ऐसी आत्मारूपी नदी है तिसमें स्नान करने से पवित्र कर्मोंवाला मनुष्य शुद्ध होता है क्योंकि अन्तरात्मा पानी से शुद्ध नहीं होता २५ और जो आत्मप्रबोधरूपी सुख में प्रविष्ट है वही पुरुष का प्रधानरूपी कर्म है तिसको संत ज्ञेय कहते हैं तिसको जानने से सब कामनाओं का त्याग होताहै ब्राह्मणका ऐसा चित्त नहीं है जैसे एकता, समता, सत्यता, शील, स्थिति, दंडधारण, कोमलता और इनसे उपरान्त क्रियों में शान्ति २६। २७ यह बिस्तारसे हे द्विजोत्तम! तुझसे मैंने कहा इसको जानके तू परब्रह्म को प्राप्तहोवेगा इसमें संशय नहीं २८ अब परमात्मारूपी ब्रह्मकी उत्पत्ति को सुन इस बक्ष्यमाण श्लोक के अनुसार नारनाम जलकाहै तिसमें जो शयनकरै तिस करके नारायण कहाताहै २९ और बिशेष करके शुद्धहुये तिस जल के भीतर प्राप्त हुये जगत्को जान और अंडे का बिभाग किया तिससे ॐ ऐसा अक्षर उपजता भया ३०। ३१ पीछे तिससे भूः शब्द और भुवः शब्द और स्वः शब्द ये उपजे अर्थात् भूर्भुवःस्वः इस संज्ञावाले भूलोक पाताल लोक स्वर्ग लोक ये उपजे ३२ और भूर्भुवःस्वः इन्हों से ईश्वर का तेज उपजा वह तेज जलको सुखाता भया ३३ पीछे

तेजसे शोषित जल कलल भावको प्राप्तहुआ पीछे क-
ललसे बुद्बुद हुआ पीछे बुद्बुदसे काठिन्य भावको प्राप्त
हुआ ३४ पीछे उस काठिन्यभावसे भूतोंको पालनेवा-
ली पृथ्वी हुई और जिस स्थान में अंडा स्थित हुआ
तहांही यह सन्निहित सरोवरहै ३५ और जो आदिका
निकसा तेजहै तिससे आदित्य उत्पन्नहुआ और अं-
ड के मध्य में लोकका पितामह ब्रह्माजी उत्पन्न हुआ
३६ और तिसका गर्भ सुमेरुपर्वतहै और सबपर्बत जे-
रूपी कहेहैं और सबसमुद्र और हजारहा नदी तिसके
गर्भका जल कहा है ३७ और तिसके नाभिस्थानसे जो
निर्मलरूपी जल निकसा है तिसकरके पूर्णसरहै ३८
तिसके मध्यमें स्थाणुरूपी बटबृक्ष है तिससे ब्राह्मण
क्षत्रिय बैश्य उपजेहैं ३९ और तिन्होंकी शुश्रूषाकेलिये
शूद्र उपजाहै पीछे सृष्टिको चिन्तवन करतेहुये ब्रह्मा
जीके ४० शुद्धरूपवाले ऊर्द्धवीर्यवाले अट्ठासी हजार
बालखिल्य मुनि उत्पन्नहुये हैं ४१ पीछे सृष्टिका चिं-
तवन करनेवाले ब्रह्माजी के मनसे सनकादि मुनि
उत्पन्नहुये हैं ४२ फिर प्रजाको उत्पन्नकरनेवाले ब्रह्मा
जीके चिन्तवन करने से सप्तऋषि उत्पन्न हुये हैं ये
सातों प्रजाके पति होतेभये ४३ फिर रजोगुण से मो-
हितहुये ब्रह्माजीके तप और स्वाध्यायमें तत्पर और
वेदमेंरत और देवताके पूजनमें परायण ऐसे बालखि-
ल्यहुये ४४ सबकालमें स्नानमें रतहुये और देवतोंकी
पूजामें तत्पर ऐसे वे मुनि उपवासों करके शरीरको सु-

खानेलगे ४५ तब दिव्य हजारवर्षके अंतमें नाड़ियों से बिस्तृत और कृश ऐसेहोके ईश्वरकी आराधनाकरनेलगे परन्तु ईश्वर प्रसन्न नहीं हुआ ४६ तब बहुतसे कालमें पार्वती महादेव आकाशमार्ग करके गमनकरनेलगे तब तिनको देखके दुःखितहुई देवी ४७ महादेवजीको प्रसन्नकर कहनेलगी कि हे देव! काष्ठके बनोंमें आश्रितहुये मुनिगण क्लेशको प्राप्तहोरहे हैं ४८ तिनके क्लेशका क्षयकरो और मुझपै दयाकरो हे देव! बेद और धर्मोंमें निष्ठित ऐसे इन मुनियोंके पापका अंतनहींहै ४९ शुष्क शरीरवाले और अस्थिमात्र शेषरहे हुये ऐसे जो ये मुनिहैं इन्होंकी शुद्धि अबभी नहींहुई ऐसे देवीके बचनको सुन हँसतेहुये ५० महादेवजी कहनेलगे कि हे देवि! तत्त्वकरके तू नहीं जानती धर्मकीगहनगतिहै ये मुनिधर्मको नहीं जानते और कामोंसे वर्जित नहींहुये हैं ५१ और क्रोधकरके मुक्त नहीं हुयेहैं ये केवल मूढ़ बुद्धिहैं ऐसे महादेवके बचनको सुन देवी कहनेलगी हे देव! ऐसे मतकहो ५२ इन धर्मात्माओंको दर्शनदेवो मुझको बड़ा आश्चर्य्य है ऐसे कथितकिये महादेवजी कहतेभये ५३ कि हे देवि! तू यहीं स्थितरह और जहां ये मुनिजन तपकरते हैं तहां मैंजाताहूं और मैं इन्हों के चेष्टितको दिखाऊंगा ५४ ऐसे देवके बचनको सुन देवी कहनेलगी कि महाराज आप गमनकीजिये ५५ जहां काष्ठ और लोष्टके समान स्थितहुये और बेदोंको पढ़नेवाले और हवन आदि क्रियाओंको करने

वाले ऐसे मुनि स्थितथे ५६ पीछे तिन मुनिजनोंको देख सब अंगोंसे सुन्दर और नग्न और बनके फूलों की मालाओं को शिरपै धारण करनेवाले और जवान और भिक्षाओंके कपालको धारण करनेवाले ५७ और भिक्षाके लिये मुनियों के आश्रम में बिचरनेवाले ऐसे महादेव भिक्षांदेहि ऐसे कहके मुनियोंके आश्रमसें भ्रमनेलगे ५८ पीछे तिस ब्रह्मबादिको आश्रममें प्राप्त हुये देख आश्चर्य भावसे संयुक्त और तिसके रूपसे मोहित ऐसी स्त्रियें ५९ आपससें कहनेलगीं कि यहां आवो भिक्षुकको हम देखती हैं ऐसे आपसमें अत्यन्त कहके और मूलफल आदिको ग्रहणकर ६० मुनियोंकी स्त्रियें तिस देवसे कहनेलगीं भिक्षा को ग्रहणकर तब भिक्षाके लिये कपालको पसारके महादेव कहनेलगे ६१ कि भिक्षा देओ तुम्हारा कल्याण होगा पीछे हँसते हुये महादेवको तहां देवीने देखा ६२ पीछे तहां तिस भिक्षा को देके काम से आतुरहुई मुनियोंकी स्त्रियें पूछनेलगीं नारियें बोलीं हे प्रिय ! यह ब्रत विधि कौन है जिसको आप सेवते हैं ६३ जहां नंगेहुये और बनकी मालाओं से विभूषित हुये होरहे हो और आप तपस्वी दीखते हैं और हमको अतिमनोहर प्रतीत होती है सो आप कहो ६४ ऐसे तिन स्त्रियोंके वचनोंको सुन हँसते हुये महादेवजी कहनेलगे यह मेरा ब्रत एकांतमें प्रकाशित करनेके योग्यहै ६५ जहां बहुतसे सुनैं तहां प्रकाशित नहीं कियाजाताहै ऐसे मानके गमनकरो ६६ ऐसे कही

हुई स्त्रियें महादेवसे कहनेलगीं आप चलिये हम सब एकांतमें गमन करती हैं ६७ ऐसे तिस भिक्षुकको कितनेक स्त्रियें हाथोंसे ग्रहण करतीभईं और कोई कंठको ग्रहण करतीभई ६८ और कोई गोड़ों को ग्रहण करतीभई और कोई बालों को ग्रहण करती भई और कोई कटिछिद्र को ग्रहण करती भई और कोई पैरों को ग्रहण करतीभई ६९ ऐसे आश्रममें अपनी स्त्रियों के क्षोभको देख मारो ऐसे कहकर काष्ठ और पत्थरको हाथमें लेनेवाले मुनि ७० तिस भिक्षुकके ऊर्द्धगत और भयानक लिंगको गिराते भये जब लिंग गिरगया तब महादेवजी अन्तर्द्धान होगये ७१ पीछे कैलास पर्वत में प्राप्त हुये महादेवजी पार्वतीके साथ हँसते भये जब महादेवजीका लिंग पृथ्वीपै गिरा तब ७२ मुनियों को अत्यन्त क्षोभ हुआ ऐसे जानके सब ऋषि व्याकुल हुये ७३ तब तिन्होंमें एक श्रेष्ठ मुनि बोले कि हम तिस तपस्वीके श्रेष्ठभावको नहीं जानते ७४ अब ब्रह्माजी के शरण चलेंगे वह इस चेष्टितको जानेंगे ऐसे कथित किये मुनि ७५ सब देवतोंसे सेवित किये ब्रह्मलोकमें गये तहां ब्रह्माजीको प्रणामकर लज्जासे नीचेको मुख कर स्थित हुये ७६ पीछे तिन दुःखित हुये मुनियों को देख ब्रह्माजीको ले आश्चर्य है क्रोध करके मैले और मूढ़ होगये ७७ और मूढ़बुद्धिवाले होके धर्मको और किसी क्रियाको नहीं जानते हे क्रूरकर्म करनेवाले मुनियो! धर्मके सर्वस्वको सुनो ७८ जिसको विद्वान् जानके

शीघ्र धर्मके फलको प्राप्तहोजावै जो यह इस आत्मा और देहमें विभु और नित्यरूप होके व्यवस्थितहै ७९ वही अनादि है वही महास्थाणुहै वही पृथक्पनेमें सूचितहै जैसे वर्ण करके स्वच्छ हुई मणि उपधान से स्वच्छपनेको प्राप्तहोतीहै ८० अर्थात् तन्मय होजातीहै तैसे आत्माभी मन करके किया हुआ है और मनके भेदको आश्रित होके कर्मोंसे संचित होताहै ८१ पीछे कर्मके बशसे स्वर्ग और नरकके भोगों को भोगता है इसलिये बुद्धिमान् तन्मय होके उपक्रमोंसे ज्ञान योग को शोधै ८२ तिसके जाने पश्चात् वह अन्तरात्मा आपही आकुलपनेसे रहित और दग्धपने से बर्जित हुआ वह आत्मा शरीरके क्लेशोंसे दुःखित नहीं होता ८३ और जिसका मन शुद्ध नहीं हुआ है वह पुरुष शुद्धिको प्राप्त होता है और क्रिया के नियमके लिये देह पातकोंके वास्ते कहे हैं ८४ जिससे अति मैला यह देह शीघ्र नहीं निश्चय शुद्ध होताहै तिस कारण करके लोकों में श्रेष्ठमार्गको प्रवृत्त करनेवाला यह मार्गहै ८५ क्रोध कामसे तिरस्कृत किये तुम आश्रममें स्थितहो और ज्ञानियोंके आश्रमही स्थान होता है और अयोगियोंके स्थानही आश्रम होता है ८६ कहां सम्पूर्ण इच्छा का त्याग और कहां स्त्रियों विषयक भ्रम और घोर रूपी यह क्रोध कहां जिस करके तुम आत्माको नहीं जानते ८७ जो क्रोधी मनुष्य पूजा करताहै और दान देता है और नित्य प्रति तप को करता है और

हवनकरताहै तिसके फलको नहीं प्राप्तहोता क्योंकि तिस क्रोधी मनुष्य का सुकृत निष्फलजाता है ८८॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३॥

## चवालीसवां अध्याय॥

सनत्कुमार कहनेलगे ऐसे ब्रह्माजीके बचनको सुन सब मुनि फिर जगत् के कल्याणरूपी कारण को पूछते भये १ ब्रह्माजी कहते हैं शूल है हाथमें जिनके और तीन नेत्रोंवाले ऐसे महादेवजी के शरण चलेंगे तिस देव के प्रसाद से तुम जैसे पहलेथे तैसे होजावोगे २ ऐसे कथित किये देवते ब्रह्माजी के साथ उत्तम रूपी कैलास पर्वत को गये तहां अच्छी तरह स्थितहुये पार्वतीके संग महादेवजीको देखतेभये ३ पीछे लोकोंके पितामह ब्रह्मा महादेवजीकी स्तुतिका आरम्भ करनेलगे ४ ब्रह्माजी कहते हैं अनंतजीकेलिये प्रणाम है बरको देनेवाले केलिये प्रणाम है पिनाकी को प्रणामहै और महादेव, देव, स्थाणु, परमात्मा इन नामोंवालोंकेलिये प्रणाम है ५ जगत् के ईश को प्रणामहै हे तारक! आपको सब कालमें प्रणाम है और ज्ञानों को देनेवाले देव एक पुरुषोत्तम रूप आपहीहैं ६ पद्मगर्भको प्रणाम है और हृदयरूपी कमल में शयन करनेवाले को प्रणाम और घोर से दूरकिये हैं पाप जिसने तिसको प्रणाम है हे चंड क्रोधवाले! आपको प्रणामहै ७ हे देव! हे विश्वेश! हे देवतों के स्वामिन्! आप को प्रणामहै हे शूल

को हाथमेंलेनेवाले ! हे विश्वभावन ! आपको प्रणाम है ८
ऐसे ब्रह्माजी ने और ऋषियोंने स्तुतिकी तब महादेव
जी बोले हे मुनिजनाहो ! तुम्हारा बांछित होवेगा ९
शीघ्र मेरे बचन को करो जिससे मुझको लिंगकी प्रति-
ष्ठामें उत्तमप्रीतिहोगी इसमें संशयनहीं १० जो भक्ति
के आश्रित हुये मेरे लिंग को पूजेंगे तिन को कभीभी
कुछ दुर्लभ नहीं होवेगा ११ जानके कियेहुये सबपापोंकी
भी लिंगकी पूजासे शुद्धिहोवेगी इसमें संशयनहीं है १२
तुम ने महत्सर को तारित कर लिंग गिराया वही
लिंग सन्निहत तीर्थ में प्रतिष्ठितहोके शीघ्र बिख्यात
हुआ १३ पश्चात् ब्राह्मण मनोबांछित फलको प्राप्त
होवेंगे और लोकों में स्थाणु नाम से बिख्यात और
देवतोंसे पूजने योग्य १४ जिससे स्थाण्वीश्वरमें स्थित
है तिसीकारणसे स्थाण्वीश्वर कहाता है जो सबकालमें
स्थाणुका स्मरण करेंगे वे सब पापोंसे मुक्तहोजावेंगे १५
और दर्शन से शुद्धदेहवाले और मुक्त ऐसेहोजावेंगे ऐसे
ब्रह्माजी के साथ सब मुनि महादेवजीने कथित किये
१६ तिसदारुवन से लिंगको लेचलने के लिये उपाय
करनेलगे परन्तु देवतों सहित मुनिजन लेचलने को
समर्थ नहींहुये १७ बहुत से परिश्रमसे युक्तहुये देवते
और मुनिजन ब्रह्माजी के शरणगये तब ब्रह्माजीतिन
से ऐसे वचनबोले १८ बहुतसे परिश्रम करनेसे क्या
है तुम सब इसलिंगको उठाने में समर्थ नहीं हो क्योंकि
महादेवजीने अपनी इच्छा से लिंगगेरा है १९ तिस

कारण से हे देवताओ! हम सब तिसी देवकी शरण प्राप्तहोवेंगे क्योंकि प्रसन्नहुये महादेवजी आपही ति-सलिंगको लेचलेंगे २० ऐसे ब्रह्माजी सहित देवते और मुनि कैलास पर्वत को प्राप्तहो महादेव के दर्शन की इच्छा करने लगे २१ जब तिस देवको नहीं देखतेभये तब चिन्ता से अन्वितहुये सब ब्रह्माजी से पूछनेलगे वह महेश्वरदेव कहां है २२ पीछे ब्रह्माजी देवतों वे देव और हस्तीके रूप में स्थित हुये और मुनियों से स्तुत ऐसे देव को चिन्तवनकर २३ पीछे ब्रह्माजी के साथ सब देवते जहां देव स्थित थे तहां पवित्ररूपी महत्सर में गये २४ पीछे तहां तहां ढूंढ़तेहुये वे तिस देव को नहीं देखतेभये पीछे ब्रह्माजी के सहित देवते चिन्ता को प्राप्तहोतेभये २५ पीछे सुन्दर प्रसन्नहुई और कमण्डलु से बिभूषित ऐसी देवीको देखके प्रसन्नहुये देवते यह बचन बोले २६ हे माताजी! सबकाल में समान दीखते हुये और सब कामना को देनेवाले और सम ऐसे महादेवजी कहां हैं तिस महेश्वरको ढूंढ़ते हुये हम अति परिश्रम से युक्तहुये हैं २७ पीछे कृपा से आविष्ट हुई देवी बचनको कहतीभई हे महाभागो! शीघ्रही महादेव जीको तुम देखोगे २८ हे देवताओ! अमृत को पान करो तिसके पश्चात् महादेव जी को जानोगे ऐसे पार्बतीजी के बचनको सुन २९ सुखपूर्बक स्थितहुये देवते पवित्ररूपी अमृत को पीतेभये पीछे पार्बतीजीको पूछतेभये ३० किहस्तीकेरूपको धारणकर-

नेवाला यहां जो प्राप्तहुआहै सो कहांहै तब देवीने सर के मध्यमें व्यवस्थित हुआ दिखाया ३१ तब आनन्द से युक्तहुये इन्द्र आदि सबदेवते और महर्षि तिसदेव को देख पीछे ब्रह्माजी को आगेकर ऐसे वचन कहने लगे ३२ कि हे महादेव! त्रिलोकी में उत्तमरूपी लिंग आपने त्यक्त किया तिसके उठाने में अन्यकोई समर्थ नहींहै ३३ ऐसे ब्रह्मादिक देवतों करके उक्तकिये महादेवजी ऋषियोंके संग दारु बनाश्रममें गये ३४ तहां जाके हस्तीके रूपको धारण करने वाले महादेव जी अपने सूंड़करके लीलासे तिसको ग्रहणकर ३५ और ऋषि जनों से स्तूयमान हुये सरकी पश्चिम पार्श्व में निवेशित करते भये ३६ तब सब देवते और ऋषि सफल हुये अपने आत्मा को देखके महादेवजी की स्तुति करनेलगे ३७ सो वह स्तोत्र प्रकाशित किया जाताहै हे परमात्मन्! आपको प्रणामहो हे अनन्तयोने! हे लोकसाक्षिन्! हे परमेष्ठिन्! हे भगवन्! हे सर्वज्ञ! हे क्षेत्रज्ञ! हे ज्ञानज्ञेय! हे सर्वेशान! हे सर्वेश्वर! हे महा विरंचे! हे महाविभूते! हे महाक्षेत्रज्ञ! हे महापुरुष! हे सर्वभूतावास! हे मनोनिवास! हे आदिदेव! हे महादेव! हे सदाशिव! हे ईशान! हे दुर्विज्ञेय! हे दुराराध्य! हे महाभूतेश्वर! हे महायोगेश्वर! हे त्र्यम्बक! हे महायोगिन्! हे परब्रह्म! हे परमज्योति! हे ब्रह्मवित्तम! हे ओंकार! हे वषट्कार! हे स्वाहाकार! हे स्वधाकार! हे परमकारण! हे सर्वगत! हे सर्वदर्शन! हे सर्वशक्त! हे

सर्वदेव ! हे अज ! हे सहस्राचिं ! हे सुधामन् ! हे हर धाम ! हे वंशकर्त्त ! हे संवर्त्त ! हे सङ्कर्षण ! हे बडवानल ! हे अग्निसोमात्मक ! हे पवित्र ! हे महापवित्र ! हे महा मेघ ! हे महाकामहन् ! हे हंस ! हे परमहंस ! हे महारा जिक ! हे महेश्वर ! हेमहाकामुक ! हे महाहंस ! हेभवत्तय कर ! हे सुरसिद्धार्चि ! हे हिरण्यवाह ! हे हिरण्यरेतः ! हे हिरण्यनाभ ! हे हिरण्याग्रकेश ! हे मुञ्जकेशिन् ! हे सर्व लोकवरद ! हे सर्वानुग्रहकर ! हे कमलेशय ! हे हृदये शय ! हे ज्ञानोदधे ! हे शंभो ! हे विभो ! हे महायज्ञ ! हे महायाज्ञिक ! हे सर्वयज्ञमय ! हे सर्वयज्ञसंस्तुत ! हे निराश्रय ! हे समुद्रेश ! हे अत्रिसंभव ! हे भक्तानुकंपक ! हे अभग्नयोग ! हे योगधार ! हे वासुक ! हेमहाहे ! हे विद्योतित ! हेविग्रह ! हेवह्निनयन ! हेत्रिलोचन ! हे जटा धर ! हे नीलकंठ ! हे चन्द्रार्द्धधर ! हे उमाशरीरार्द्धधर हेशूलधर ! हे पिनाकधर ! हे खड्गचर्मधर ! हे गजच धर ! हे दुस्तर संसार ! हे महासंहारक ! हे भक्तजनवत्सल प्रसन्न हो ३८ ऐसे इस स्तोत्र करके भक्तिद्वारा देवगण ने और ब्रह्माजीने स्तुतिकी तब हस्तीके स्वरूपको त्याग शिवलिंग में सन्निधान करते भये ३९ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

## पैंतालीसवां अध्याय ॥

सनत्कुमार कहने लगे कि पीछे ब्रह्माआदि देवते और ऋषियों केलिये प्रत्यक्ष तीर्थके माहात्म्यको कहने

लगे कि १ अति पवित्र और उत्तम और सबदेवताओं से सेवित ऐसा यह सन्निहित तीर्थ मुक्ति को देनेवाला है २ सो इस तीर्थके समीपमें जो लिंगहै तिसके दर्शन करने से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ये परमपदको देखते हैं ३ और रोजके रोज मध्याह्न के समयमें सब समुद्र और सब सर स्थाणुतीर्थमें इकट्ठे होतेहैं ४ और जो मनुष्य भक्तिसे इस स्तोत्र करके मेरीस्तुति करेगा तिसके लिये मैं सदाही सुलभहूँगा इसमें संशय नहीं ५ ऐसे कहके महादेवजी अन्तर्हित होगये पीछे देवते और ऋषि अपने अपने स्थानोंको चलेगये ६ पीछे स्थाणु लिंग के दर्शन के माहात्म्यसे निरन्तर मनुष्योंसे स्वर्गपूर्ण होने लगा ७ तब सब देवते ब्रह्माकी शरणमेंगये तब ब्रह्मा जी कहनेलगे हे देवताओ! तुम्हारा आगमन किसवास्ते हुआ ८ तब देवते कहनेलगे कि हे पितामह! मनुष्यों सेतीव्रभय होरहाहै तिनसे रक्षाकरो ९ तब ब्रह्मजी इन्द्र से कहनेलगे कि हे इन्द्र! तू धूलीसे इस सरको पूर्ण करदे १० तब इन्द्र सातदिन तक धूलीकी वर्षा करता भया तब सर आच्छादित होगया ११ परन्तु तिसधूली की वर्षाको देख महादेवजी लिंग, तीर्थ, वट इन्होंको हाथ से धारण करतेभये १२ इसवास्ते स्थाणुतीर्थको आद्य तीर्थ कहते हैं इसमें स्नान करने से सब तीर्थोंका फल मिलता है १३ और जो मनुष्य वट और लिङ्गके अन्तरमें श्राद्ध करै तिसकेलिये प्रसन्नहुये पितर पृथ्वी में दुर्लभ पदार्थ को भी देसक्ते हैं १४ पीछे ऋषिगण

धूलीसे पूरितहुये तीर्थको देख श्रद्धासेयुतहुये सब अङ्गों को धूलीसेही स्पर्शन करनेलगे १५ तब भी पापोंको दूरकर और देवताओं से पूजितहुये ब्रह्मलोकमें प्राप्त हुये १६ और जो महात्मा इस लिङ्ग की पूजाकरते हैं वे परमसिद्धि को प्राप्त होजाते हैं जिसकी प्राप्ति से फिर आगमन नहीं होता १७ ऐसे तब ब्रह्माजी जानके पत्थरके लिङ्ग को तिस आद्य लिङ्गके ऊपर स्थापित करतेभये १८ पीछे बहुत से काल में तिसके तेज से रंजित हुये तिसलिङ्ग के स्पर्शन करने से मनुष्य परमपद को प्राप्त होनेलगे १९ तब देवताओं ने फिर ब्रह्माजी से बर्णन किया कि ये मनुष्य लिङ्ग के स्पर्शसे परमसिद्धिको प्राप्तहोतेहैं २० तिसको सुन और देवताओंके हितकी कामनाकरके ब्रह्माजी तिस के ऊपर ऊपर सातलिङ्गोंको करते भये २१ तब भी मुक्तिकी कामनावाले और शान्ति में परापारा ऐसे मुनि तिसके दर्शनसे परमपदको प्राप्तहोनेलगे २२ अर्थात् धूलीकरके भी कुरुक्षेत्रमें स्पर्शित कियेहुयेभी पापीमनुष्य परमपदको प्राप्तहोने लगे २३ और स्थाणुतीर्थके प्रभावसे जाने व बिनजाने स्त्रीके व पुरुषके पापका लेशमात्र नहींरहा २४ और लिङ्गके दर्शनसे और बटके स्पर्शनसे और तिसके जलमें स्नान करने से मुक्ति और मनोवांछित फल इन्होंकी प्राप्ति होतीहै २५ और जो मनुष्य तिसजलमें पितरोंका तर्पणकरै तो जलकी एक एक बूंदमें अनन्त गुणा फल मिलताहै २६

और लिंगके पश्चिमभाग में स्थितहुआ मनुष्य कृ-
ष्ण तिलों करके तर्पण करै वह तीनयुगों तक पितरों
को तृप्तकरता है २७ जबतक दिव्य युगों की ७१ चौ-
कड़ी होवेंगी तबतक इस लिंगकी स्थिति रहेगी तबतक
प्रसन्न हुये पितर उत्तमजलको पीते रहते हैं २८ और
कृतयुग में सन्निहित तीर्थ कहा है और त्रेतायुग में
वायुसंज्ञक तीर्थ कहाहै कलि और द्वापर के मध्यमें कूपां-
तर्गतरुद्रह्रद कहा है २९ सो बुद्धिमान् मनुष्य चैत्र महीने
के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दिन रुद्रकर तीर्थ में स्नान
करै तो परमपद को प्राप्तहोता है ३० और जो मनुष्य
स्थाणुवट के समीप में एकरात्रि वास करै पीछे महादेव
का ध्यानकरै तो मनोवांछित फलको प्राप्तहोता है ३१॥

इतिश्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्ये
पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ४५॥

## छियालीसवां अध्याय॥

सनत्कुमार कहनेलगे स्थाणुवट के उत्तरकी तरफ
शुक्रतीर्थ कहा है स्थाणुवटके पूर्वकी तरफको सोमतीर्थ
कहाहै १ स्थाणुवट के दक्षिण की तरफ दक्षतीर्थ कहा है
स्थाणुवट के पश्चिमकी तरफ स्कन्दतीर्थ कहा है २ ये
सब पवित्र तीर्थ हैं और इनके मध्यमें स्थाणु तीर्थ है
तिसके दर्शन करनेसे परमपद की प्राप्ति होती है ३ और
जो मनुष्य अष्टमी व चतुर्दशी के दिन इन्हों की परि-
क्रमा करे और तत्र लिंगरूप करके पार्वती महादेवजी

के पार्श्व को नहीं छोड़ती है ४ तिसके दर्शनमात्र से म-
नुष्य सिद्धिको प्राप्तहोता है और बटके उत्तर पार्श्व में
महात्मा तक्षकने ५ सब कामनाओं का देनेवाला महा-
लिंग प्रतिष्ठित किया है और बटके पूर्वभाग में बिश्वक-
र्मा का रचा ६ पश्चिमकी तरफ मुखवाला लिंग है तिसके
दर्शन से मनुष्य सिद्धिको प्राप्तहोता है और तहांहीं लिंग
रूपसे सरस्वती स्थित है ७ तिसको प्रणामकर मनुष्य
शुद्ध बुद्धिको प्राप्तहोता है बटके पार्श्व में जो ब्रह्माजीने
प्रतिष्ठित किया है वह लिंग स्थित है ८ बटेश्वर देव
को देखकर मनुष्य परमपद को प्राप्तहोता है पीछे स्था-
णुबटको देख के परिक्रमा करे ९ तिसने सात द्वीपों
सहित पृथ्वी की परिक्रमा करी है स्थाणु बटके पश्चिमकी
तरफ नकुलीशगण कहा है १० तिसको यत्नसे पूजकर
मनुष्य सब पापों से छूटजाता है तिसके दक्षिण दिशा
की तरफ रुद्रकर तीर्थ कहा है ११ तिस में स्नात हुआ
मनुष्य सब तीर्थों में स्नात होजाता है तिसकी उत्तर
दिशा में महात्मा रावण ने १२ गोकर्णनाम से बिख्यात
महालिंग प्रतिष्ठित किया है आषाढ़ महीने में कृष्ण
पक्षकी चतुर्दशी को १३ तहां ब्रत करनेवाला मनुष्य
स्नान करै तो सब पापों से छूटजाता है और तहां
हीं सिद्धिद लिंग मेघनाद ने स्थापित किया है १४
तिसको यत्न से पूजै तो मनुष्य बहुतसी लक्ष्मी को
प्राप्तहोता है तिसकी पश्चिम दिशा में कुंभकर्णका पूजि-
त लिंग है १५ ज्येष्ठ मास के शुक्लपक्षकी अष्टमी को

श्रद्धा करके जो मनुष्य व्रत को कर बसता है तिसके पुण्यके फल को सुन १६ पैंड २ में यज्ञके फलको मनुष्य प्राप्तहोताहै इसमें संशय नहीं ये सब लिंग मुनि, साध्य, आदित्य, बसु १७ मरुद्गण, अग्निगण इन्हों ने यत्न से सेवित कियेहैं और अन्य भी कितनेक प्राणी स्थाणु में प्रविष्ट हुये १८ वे सब पापों से छूट परमपद को प्राप्त भये और इस के समीप महादेवजी का अन्य लिंग स्थित है १९ तहां पार्वती लिंगरूप करके महादेवजी के पार्श्वको नहीं छोड़ती और जो गोकर्ण को देखता है वह तिस लिंगके फलको प्राप्तहोता है २० तिसने जानकर व बिना जानकर जो पाप सूचित कियाहै वह महादेवजी की पूजाकर पवित्र हुआ मनुष्य तिस पाप से छूटजाता है २१ कुमार अवस्था में व ब्रह्मचर्य्य से जो पुण्य मनुष्यों को प्राप्तहोता है वह पुण्य जो अष्टमी को शिवकी पूजाकरै तिसका कल्याणकारी हो जाता है २२ और जो मनुष्य परमरूप और सौभाग्य और धन सम्पदा इन्होंकी इच्छाकरै तो महादेवकी कृपा से प्राप्त होती है इस में संशय नहीं २३ और तिसके उत्तर दिग्भाग में लिंगकी पूजाकर बिभीषण अजर और अमर होता भया २४ और आषाढ़ महीने के शुक्लपक्षकी अष्टमी के दिन जो मनुष्य शिवकी पूजा और उपवास करै तो स्वर्ग में प्राप्तहोता है २५ और तिस स्थान में पूर्वकी तरफ जो लिंग है तिसकी पूजा और व्रतकरै तो सब कामनाओं को प्राप्तहोता है २६ और दूसरा त्रिशिरा

ये दोनों तहां महादेवकी पूजा करने से मनोबांछित फ-
लों को प्राप्तहुये हैं २७ और चैत्र महीने के शुक्लपक्ष में
जो इन देवोंकी पूजाकरै तिसको मनोबांछित फल मि-
लता है २८ और स्थाणुबट से पूर्वको हस्तिपादेश्वर
शिव स्थित है तिसको देखनेसे अन्य जन्मों के पापों से
मनुष्य छूटजाता है २९ और तिसके दक्षिण में हारीत
ऋषिका लिंग स्थित है जिसको प्रणाम करने से मनुष्य
सिद्धि को प्राप्त होताहै ३० और तिसके दक्षिण पार्श्व
में वापीत मुनि का त्रिलोकी में विख्यात हुआ लिंग
स्थित है यह सब पापों का हर्ता है और कल्याणकारी
है ३१ और कंकालरूपी रुद्र ने सब पापों को नाशने
वाला महालिंग प्रतिष्ठित कियाहै ३२ यह लिंग मुक्ति
और भुक्तिका देनेवाला है और दर्शन से अग्निष्टोम
के फलको देनेवालाहै ३३ और तिसके पश्चिमभाग में
सिद्धसे प्रतिष्ठित किया सिद्धेश्वर लिंगहै यह लिंग सब
सिद्धिको देनेवाला है ३४ और तिसके दक्षिण भाग में
मृकण्डमुनि ने लिंग प्रतिष्ठित किया है यह दर्शन से
सिद्धिको देताहै ३५ तिसके पूर्वदिग्भाग में सूर्यने लिंग
प्रतिष्ठित कियाहै यह सब पापोंको नाशताहै ३६ और
चित्रांगदगन्धर्व और रम्भा अप्सरा ये दोनों आपस में
प्रीतिवाले और महादेव के दर्शनकी आकांक्षावाले ३७
दोनों महादेवको पूज पहले दोनों चित्रांगदेश्वर और
रम्भेश्वर इन दोनों लिंगोंको स्थापन करतेभये तिन्हों
के दर्शन से सुन्दर ऐश्वर्यवाला और दर्शनीय ऐसा

मनुष्य उत्तम कुलमें जन्मको प्राप्तहोताहै ३८ और तिस से दक्षिणकी तरफ इन्द्रने लिंगस्थापित कियाहै तिसके प्रसाद से मनोबांछित फल मिलताहै ३६ और पराशर मुनि को महादेवकी आराधनाकरनेसे परम बिद्वत्ता प्राप्त हुईहै ४० और वेदव्यासमुनिको महादेवकी आराधना से सर्वज्ञता और ब्रह्मज्ञान प्राप्तहुआहै ४१ और स्थाणु के पश्चिम भागमें वायुने महालिंग स्थापन किया है तिसके दर्शन से पापों का नाशहोता है ४२ और तिस के दक्षिणभागमें हिमवान् पर्वतने लिंग प्रतिष्ठित किया है तिसके दर्शन से सिद्धिकी प्राप्ति होती है ४३ और तिसके पश्चिम भागमें पापों को हरनेवाला लिंग कार्त्तवीर्य ने स्थापित किया है तिसके दर्शन से पुण्यकी प्राप्ति होतीहै ४४ तिसके उत्तर भागमें समीप फिर स्थापित किये लिंगकी आराधनाकर हनुमान्जी सिद्धि को प्राप्त भये ४५ और तिसके पूर्वदिग्भागमें विष्णुभगवान् को महादेवकी आराधना करनेसे सुदर्शनचक्र लब्धहुआ है ४६ और तिसके पूर्वदिग्भागमें इन्द्र ने और वरुणने सब कामनाओं के देनेवाले दो लिंग प्रतिष्ठित किये हैं ४७ और ये सब लिंग मुनि, साध्य, देवते, वसु, आदित्य इन्हों करके सेवित हैं और सब पापों को हरते हैं ४८ और तत्त्वदर्शी ऋषियों ने इतने लिंग स्थापित किये हैं कि जिन्हों की संख्या नहीं है ४९ और तिसके उत्तर की तरफ ओघवती नदी तक [illegible] लिंग स्थित हैं ५० और तिसके पूर्वदिग्भाग में

सन्निहित सरनक बालखिल्य मुनियों ने करोड़ लिंग स्थापित कियेहैं ५१ और तिसके दक्षिणकी तरफ गंधर्व यत्त किन्नर इन्होंने असंख्य लिंग स्थापित किये हैं जिन्होंकी संख्या नहीं है ५२ साढ़े तीनकरोड़ लिंग स्थापित कियेहैं ऐसे बायुने कहा है अर्थात् स्थाणुतीर्थके चारों तरफ अनन्तलिंगहैं ५३ इसवास्ते श्रद्धावान् मनुष्य इस बिषयको जान स्थाणु लिंगके आश्रितहोवै जिसके प्रसाद से मनोबांछितफल मिलताहै ५४ और कामनावाला व निष्काम ऐसा मनुष्य स्थाणु मन्दिरमें प्रबेश करै तो घोरपातकों से बिमुक्तहोके परमपदको प्राप्तहोता है ५५ और चैत्रके महीने में त्रियोदशी के दिन दिव्यनक्षत्र के योगसे और शुक्र, सूर्य, चन्द्र इन्होंके संयोगमें और अतिपवित्रदिनमें ५६ ब्रह्माजी ने यह स्थाणुलिंग स्थापित किया है पीछे ऋषि और देवताओं ने बहुत से बर्षों तक पूजा है ५७ तिसकालमें श्रद्धा से समन्वित और निराहार जे मनुष्य शिवको पूजते हैं वे परमपदको प्राप्त होते हैं ५८ और तहां आरूढ़हुये इसको जान जो परिक्रमा करते हैं तिन्हों ने सातद्वीपों सहित पृथ्वी की परिक्रमा करी है ५९ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्ये षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥

---

## सैंतालीसवां अध्याय ॥

मार्कंडेय ने कहा कि हे मुने ! स्थाणुतीर्थ के प्रभाव

को सुनने की मेरी इच्छा है यहां सब पापों को नाश· नेवाली सिद्धिको कौन प्राप्त हुआहै १ सनत्कुमार कहने लगा कि विस्तार से स्थाणुतीर्थ के माहात्म्य को सुन जिसको सुननेसे सब पापोंसे मनुष्य छूटजाताहै २ जब एकार्णव जगत् हुआ और स्थावर जंगम नष्टहोगया तब अव्यक्त जन्मवाले विष्णु की नाभिसे कमल उ- त्पन्नहुआ तिस में सब लोक का पितामह ब्रह्मा उत्पन्न हुआ ३ तिस ब्रह्मासे मरीचि उत्पन्न हुआ और म- रीचि के कश्यपपुत्रहुआ और कश्यपके सूर्यपुत्रहुआ और सूर्य के मनुपुत्र हुआ ४ और एक समयमें छींक लेने के समय मनुके मुखसंभव पुत्रहुआ ५ यह सम्पूर्ण पृथ्वी का राजा हुआ मुखसंभव की भार्या मृत्यु के सकाशसे उपजी और कालकी पुत्री ऐसी हुई ६ पीछे तिस भार्या में मनुके पुत्रसे दुरात्मा और देवनिन्दक ऐसा वेन पुत्र हुआ राजा वेनके मुखको देख क्रुद्ध हुआ आप बन को गया ७ तहां घोर तप और धर्म करके पृथ्वी और आकाश को आच्छादित कर पीछे फिर पृथ्वी में आगमन नहीं होवे ऐसे ब्रह्मलोक को प्राप्त हुआ ८ तब सम्पूर्ण पृथ्वीमंडलमें वेन राजा हुआ सो मातामहके दोष करके कालका दौहित्रकहाया ९ पीछे वेदोंकी निन्दा करनेवाला वह वेन नगर में मनादी कराता भया कि कोई दान मतकरो और कोई यज्ञ मत करो और कभीभी हवनकरना उचित नहीं है १० और हे पुरुषाओ! अकेला मेंही जगत्में वंद्यहूं और मेंही तुम

सबोंके पूजने योग्यहूं और मेरे करके पालितहुये तुम सब सुखपूर्वक बसते हो ११ और मेरे से ऊपर और कोई देव नहीं है ऐसे बेनके बचनको सुन १२ आपस में इकट्ठेहुये सब मुनि बेनसे कहने लगे कि हे राजन्! धर्मका प्रमाण बेद है तिस बेदसे यज्ञ प्रतिष्ठित हुआ है १३ और यज्ञके बिना स्वर्गनिवासी देवते प्रसन्न नहीं होते और अप्रसन्न हुये देवते खेतीकी बृद्धिके लिये बर्षा नहीं करते १४ इसवास्ते यज्ञों करके और देवताओं करके यह चराचर जगत् धारण कियागया है इस बचनको सुन क्रोधसे पूर्ण दृष्टिवाला बेनराजा बारंबार कहनेलगा १५ कि यज्ञ मत करो और दान मत करो तब क्रोधसे आविष्ट हुये सब ऋषि १६ मंत्रपूत कुशाओं करके बेनको मारतेभये पीछे राजाके बिना अँधेरासे आबृत लोक होगया १७ और धाड़ियोंसेपीड़ितहुई प्रजा राजाकी शरणमेंगई तब सब ऋषि तिस बेन राजाके बायेंहाथको मथनेलगे १८ तब अद्भुत दर्शनवाला एकपुरुष उत्पन्न हुआ तिसको सब ऋषि कहने लगे कि भवान् निसीदतु अर्थात् तू स्थित हो १९ इस शब्दसे इस पुरुषसे बेनके पायोंसे उपजे हुये निषाद उत्पन्न हुये पीछे सबऋषि बेनराजा के दाहिने हाथ को मथने लगे २० तब बड़ा ताल बृक्ष के समान लम्बा और दिव्य लक्षणों से लक्षित २१ धनुष और बाणों से अंकित हाथोंवाला चक्र और ध्वजासे समन्वित ऐसा पुरुष उत्पन्नहुआ तब इन्द्रसहित देवते

इसपुरुषको देखके २२ राजगद्दी पै अभिषेचित करते भये पीछे यह राजा धर्मके अनुसार पृथ्वीको पालने लगा २३ और पिताके पीछे यह विख्यातहुआ इस वास्ते पृथुनाम कहाया २४ पीछे राज्यको प्राप्तहो यह पृथुराजा चिन्तवन करनेलगा कि मेरापिता यज्ञकाछेदन करनेवाला और पापिष्ठ ऐसा हुआ २५ कैसे तिस की परलोकमें सुख देनेवाली क्रियाकरनी चाहिये ऐसे विचारतेहुये तहां नारद मुनि प्राप्तभये २६ तब राजा नारदजीको आसनदेकै और प्रणामकर पूछनेलगा कि हे भगवन्! सबलोकके शुभाशुभको आप जानतेहो२७ और दुष्ट आचारोंवाला देवते और ब्राह्मणोंका निंदक और सुकर्मसे रहित ऐसा मेरापिता परलोकको प्राप्त हुआ २८ तब दिव्य चक्षुकरके राजाके पिताको जान नारद कहनेलगे कि हे राजन्! क्षयरोग और कुष्ठरोग से समन्वित २९ तेरापिता म्लेच्छों के मध्यमें उत्पन्न हुआहै तब नारदके वचनको सुन दुःखितहुआ राजा चिन्तवन करनेलगा कि अब मुझको क्याकरना चाहिये ३० पीछे राजाकी यहबुद्धि उत्पन्नहुई कि जो पिता माता आदिको भयसे रक्षाकरै वह पुत्र कहाताहै ऐसे चिन्तवनकर राजा नारद मुनिसे पूछने लगा कि हे भगवन्! ऐसा उपाय मुझसे कहो जिसकरके मेरा पिता स्वर्गमें वासकरै ३१ तब नारदजी कहनेलगे कि हे राजन्! जिस देशमें कुरुतीर्थहै और जहां स्थाणुतीर्थ और सन्निहित तीर्थ है तिस देश में गमनकर पिताके देहको स्नान

करा ३२ ऐसेनारदके बचनकोसुन राजा जिसदेशमेंपिता जन्माथा तिस देशका चिंतवनकरके गमन करता भया ३३ पीछे उत्तराखंडकी भूमिमें गमनकर तहां म्लेच्छों के मध्यमें कुष्ठ और क्षयरोगोंसे समन्वित एकपुरुषको देखता भया ३४ पीछे अतिशोकसे संतप्तहुआ राजा ये बाक्यकहनेलगा हे म्लेच्छाओ! इस रोगीपुरुषको मैं अपने स्थानपै लेजाताहूं ३५ तहां इसके रोगको निवृत्तकरूंगा जो तुममानोगे तो तब सब म्लेच्छ तिस दयावान् राजाके प्रति ३६ कहनेलगे कि जैसे तू जानताहै तैसे कर तब पुरुष पालकी को लाके ३७ तिसमें सुखेबस्त्रादिका बिछावनाबना तिसपै तिस रोगीपुरुष को शयन कराते भये ३८ पीछे राजाके बचनको सुन पालकीको उठा सुखपूर्बक कुरुक्षेत्रांतर्गत स्थाणुतीर्थमें प्राप्त करतेभये ३९ पीछे पृथुराजा मध्याह्नमें तिसरोगी पुरुषको स्थाणुतीर्थ में स्नान करानेलगा तब आकाश में बायुबचन कहने लगे ४० कि हे तात! आनंदितरूपी यह तीर्थ रक्षाकरनेके योग्यहै क्योंकि यह पुरुष घोरपापकरके अतिबेष्टितहै ४१ बेदकी निंदाकरने से वहपापहोताहै कि जिसका अंतनहीं आता सो इसपा के स्नानकरनेसे यहतीर्थ तत्काल नाशहोजावेगा ४२ ऐसे बायुकेबचनकोसुन दुःखसे दुःखितहुआ राजाकहनेलगा कि इस घोर पापसे जो तीर्थ परिबेष्टित होता ४३ तो हे देवताओ! जो प्रायश्चित्त आप कहोगे वह करूंगा तब सबदेवतेकहनेलगे ४४ किहेराजन्! तीर्थों

तू स्नानकरके पीछे जलसे अभिषेचनकर ४५ श्रद्धा से अन्वित पुरुष स्नानकरके मुक्ति को प्राप्त होता है यह अपने पोषने में तत्पर और देवतों के दूषण में तत्पर ४६ और ब्राह्मणों से परित्यक्त ऐसा यह कभी भी शुद्ध नहीं होगा इसवास्ते इसके उद्देश से तीर्थों में भक्ति से तू स्नान करके ४७ जलसे अभिषेचनकर तब यह पवित्र होवेगा ऐसे देवताओं के बचन को सुन और तिस रोग-रूपी अपने पिता का आश्रमबना ४८ अपने पिता की शुद्धिके लिये तीर्थयात्रा को गया तब सब तीर्थों में रोज के रोज स्नान करताहुआ ४९ तीर्थ के जल से अपने पिताका नित्यप्रति अभिषेक करता भया तब इसी काल में एक कुत्ता आके प्राप्तहुआ ५० अर्थात् स्थाणु के मठमें समूहका पति और देव द्रव्यकी रक्षा करनेवाला और सब कुटुम्बकी पालना करनेवाला और सब लोकों में प्रिय और देवकार्यमें परायण और धर्ममार्ग में स्थित ऐसे एक पुरुषकी ५१। ५२ देवद्रव्य को नाशकरनेवाली बुद्धी समय करके प्रकट हुई तिस अधर्म करके युक्त हुआ वह पुरुष जब मृत्यु को प्राप्तहुआ ५३ तब तिस पुरुषको देख धर्मराज कहने लगे तू कुत्ताकी योनिको प्राप्तहो देर मतकरै तब वह सौगंधिक वनमें कुत्ता उत्पन्नहुआ ५४ पीछे बहुत कालकरके अन्य कुत्तों के समूह में परिवारित और बहुत दुःखमें आवृत्त ऐसा वह कुत्ता तिस वनको त्यागके पवित्ररूपी सन्निहित तीर्थ को गया तहां प्रवेश करनेसे स्थाणुके प्रताप करके ५५। ५६

पीछे अति तृषा से युक्त हुआ वह सरस्वतीमें स्नान करताभया तब स्नानकरनेसे सब पापोंसे बिमुक्तहुआ ५७ पीछे भोजन के लोभ करके तिस पूर्वोक्तरोगी के आश्रममें प्रवेश करनेलगा तब प्रवेश करतेहुये और भयसे अन्वित ऐसे तिस कुत्तेको देख ५८ वह रोगी हौले हौले छूताभया और स्थाणुतीर्थ में डूबताभया और पहले तीर्थों के किनकोंसे परिषेचित वह पतित ५९ इस कुत्ताके शरीरके फड़फड़ाहटसे उत्पन्नहुये जल की बूंदों से सिंचित ऐसा वह क्षणमात्रमें बिरक्तदृष्टि वाला होके कुत्ता सहित ६० स्थाणुतीर्थ के माहात्म्य से वह पुत्रसे तारित किया वह तत्काल दिव्य देह से समन्वित वह पुरुष स्थाणु देवको प्रणामकर स्तुति करनेलगा ६१ बेनबोला चन्द्रमाके आभूषणवाले देवों के ईश सम्पूर्ण जगत्के पति ऐसे महादेवजी के मैं शरणहूं ६२ हे देवदेवेश सर्व शत्रुनिषूदन देवेश! हे बलीको बन्ध करनेवाले! हे देवते और दैत्यों से पूजित! आपको नमस्कारहै ६३ हे बिरूपाक्ष! हे सहस्राक्ष! हे त्र्यक्ष! हे यक्षेश्वर प्रिय! आपके हाथ और पैर और नेत्र ये सब जगह स्थित हैं ६४ संसारमें सब जगह श्रवणवाले हो और सब जगह आवृत होके ठहरते हो हे शंकुकर्ण! हे महाकर्ण! हे कुम्भकर्ण! हे समुद्रमें स्थान करनेवाले! ६५ हे गजेंद्रकर्ण! हे गोकर्ण! हे पाणिकर्ण! हे शतजिह्व! हे शतावर्त! हे शतोदर! हे शतानन! आपको नमस्कार है ६६ वेदके गानेवाले आपको गाते हैं और अर्की अर्करूप

वाले आप को अर्कित करते हैं और इन्द्र से परे ब्रह्मा
जीरूपी आपको सब देवते मानतेभये ६७ हे महामूर्त्ते!
समुद्र पृथ्वी सम्पूर्ण देवते ये सब आपही की मूर्त्ति में
स्थित रहते हैं जैसे गोशालामें गाय ६८ और आपके
शरीरमें चन्द्रमा, अग्नि, वरुण, नारायण, सूर्य्य, ब्रह्मा, बृ-
हस्पति इन्होंको देखताहूं ६९ हे भगवन्! आप कार्य्य
कारणहो और क्रियाके कारणहो और उत्पत्ति प्रलय
रूप हो और सत् असत् दैवत हो ७० भव और सर्व
और वरके देनेवाले और उग्ररूपी और अन्धकासुरके
मारनेवाले और पशुओं के पति ऐसे आपको नमस्कार
है ७१ तीन जटाओंवाले तीन शिरोंवाले और त्रिशूल
से युक्त हाथवाले त्र्यम्बक और त्रिनेत्र और त्रिपुरको
मारनेवाले ऐसे आपको नमस्कारहै ७२ दंडरूप चंड
रूप उत्पत्तिके हेतुके वास्ते अंडरूप और डेरूसे युक्त
हाथवाले और दंड मुंडको धारण करनेवाले ऐसे आप
को नमस्कारहै ७३ और ऊपरको केशोंवाले और ऊंची
जाड़ांवाले शुक्लरूप और विकरालरूप धूम्र लोहित
कृष्ण ऐसे वर्णवाले और नीलग्रीवावाले ऐसे आपको
नमस्कारहै ७४ और अप्रतिमरूपवाले और त्रिरूप
वाले शिवरूप और सूर्य्यकी मालावाले और सूर्य्यरूप
और अपने रूपके समान ध्वजा और मालावाले ऐसे
आप को नमस्कारहै ७५ अनेक प्रकारके रमणकरने
वाले और अति चतुर और गणेन्द्रों के नाथ और बृ-
षस्कन्धनामवाले और धनुषको धारण करनेवाले ऐसे

आपको नमस्कार है ७६ संक्रन्दन और चंड अर्थात् अति उग्र और पर्णधार और पुटरूप और सुवर्ण सरीखा वर्णवाले और सुवर्ण सरीखा तेजवाले ऐसे आपको नमस्कारहै ७७ और स्तुतरूप और स्तुति करने लायक और स्तुतिमें स्थित और सर्वरूप और सर्वभक्त ऐसे आपको नमस्कार है ७८ हवन करनेवाले और हनन करनेवाले और सफ़ेद अग्रभागवाली पताकावाले नमनरूप मंत्रवाले और कटकट शब्दवाले ऐसे आपको नमस्कार है ७९ और कृशरूपको नाश करनेवाले और शयितरूप और उत्थितरूप और स्थित रूप और सारधामवाले और मुंडरूप कुटिलरूप ऐसे आपको नमस्कार है ८० नृत्य करनेमें शील साम्य बजानेमें चतुर नाट्यके उपहार में लुब्ध मुखके बाजे में चतुर ऐसे आपको नमस्कार है ८१ ज्येष्ठरूप और श्रेष्ठरूप और बलवाले तथा अतिबलवाले को नाश करनेवाले कालरूप और कालनाशक और संसारकेनाशक ऐसे आपको नमस्कारहै ८२ हिमवान्पर्वतकी पुत्री केभर्त्ता उग्ररूप और दशभुजाओंवाले ऐसे आपको नमस्कारहै ८३ और चिताकीभस्मसे प्यारकरनेवाले और कपालसे आसक्त हाथवाले अतिभयंकररूप तथा भयंकररूपवाले और हिमवृतको धारण करनेवाले ऐसे आपको नमस्कारहै ८४ विकराल मुखवाले और मुखके समीप उग्रदृष्टिवाले और कच्चा तथा पक्का मांस पै लोभकरनेवाले और तन्तुवीणासे प्यारकरनेवाले ऐसे

आपको नमस्कारहै ८५ और वृषकेचिह्न से वृष्टहुये और गोमिन् नमन कटंकटरूप तथा भीमरूप और पचपच रूप ऐसे आपको नमस्कार है ८६ और सबों में श्रेष्ठ रूप और वररूप और वरके देनेवाले और विरक्तसुख वाले और भावनावाले और अक्षों की मालावाले ऐसे आपको नमस्कारहै ८७ और विभेद भेदसे भिन्न छाया रूप और आतपरूप अघोररूप तथा घोररूप अघोर से भी घोररूप ऐसे आपको नमस्कार है ८८ और शिवरूप शांतरूप अतिशांतरूप बहुतनेत्र और कपाल वाले एकमूर्त्तिवाले ऐसे आपको नमस्कारहै ८९ क्षुद्र रूप और लोभी और यज्ञके भागमें प्यार करनेवाले पांचाल देशमें होनेवाले सफ़ेद अंगोंवाले शांति करने वाले ऐसे आपको नमस्कारहै ९० और विचित्र महान् घंटावाले और घंटाघंट निघंटी और हजारों सैकड़ों घंटाओंकीमालाका विभूषणवाले ऐसे आपको नमस्कार है ९१ प्राणियोंके समूहके घंटावाले किलकिल शब्दसे प्यारवाले हुंहुंकारवाले पारको जाननेवाले और हुंकार को प्रियवाले और शमानमेंभी समान रहनेवाले गृह रूपीवृक्षमें स्थानवाले और गर्भमांस शृगालरूप तारकरूप और तररूप ऐसे आपको नमस्कारहै ९२।९३ यज्ञरूप और यजनरूप हुत और प्रहुत यज्ञको प्राप्त करनेवाले हव्यनव्यरूप तपनरूप ऐसे आपको नमस्कारहै ९४ तुण्डरूप तुण्डरूप और तुण्डोंकेपति अन्न देनेवाले अन्नकेपति अनेक अन्नोंके भोजन करनेवाले

ऐसे आपको नमस्कार है ९५ हजारशिरोंवाले और हजार चरणोंवाले हजारों उद्यत शूलवाले हजारों आभूषणवाले ऐसे आपको नमस्कार है ९६ बालकों के अनुचर के गोप्ता और बाललीलामें बिलासकरनेवाले बालरूप और बृद्धरूप क्षुब्धरूप क्षोभणरूप ऐसे आपको नमस्कार है ९७ गंगामें लुलित केशोंवाले और मुंजकेशोंवाले और षट्कर्ममें तुष्ट और तीनकर्मों में निरत ऐसे आपको नमस्कारहै ९८ और नग्नप्राण वाले और खण्डरूप कृशरूप आस्फोटनरूप धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन्होंको कहनेलायक और कथनरूप ऐसे आपको नमस्कारहै ९९ सांख्यरूप और सांख्य योगों में मुख्यरूप बिरथरथ्यरूप और चतुष्पथरूप रथरूप ऐसे आपको नमस्कार है १०० कालीमृगछाला को दुपट्टा की जगह धारण करनेवाले और हरिकेश ऐसे आपको नमस्कारहै त्र्यम्बिका और अम्बिका इन्हों के नाथ व्यक्त और अव्यक्तरूप बिधातारूप ऐसे आपको नमस्कार है १०१ तृप्त और अतृप्तके बिचारकरने वाले और सम्पूर्ण दयामें युक्त और संध्यामें बिचार करनेवाले ऐसे आपको नमस्कार है १०२ हे महासत्व! हे महाबाहो! हे महाबल! हे महामेघधर! हे प्रसिद्ध! हे महाकाल! हे महद्युते! आपको नमस्कार है १०३ हे मेघावर्त्त! हे युगावर्त्त चन्द्रमा सूर्यके पति! आपको नमस्कार है आपही अन्नहो अन्न के भोक्ता हो पवित्र हो अग्निरूप हो १०४ जरायुज, अण्डज, स्वेदज

उद्भिज ऐसे आप को नमस्कार है आप देवदेवों के ईश हो चारप्रकार के भूतग्राम हो १०५ चराचर को रचनेवाले हो पालना करनेवालेहो और हन्ताहो ब्रह्म को जाननेवाले विद्वान् आपको परब्रह्म कहतेहैं १०६ और मनकी परमज्योतिहो और ज्योतियोंकीभी ज्योति हो और हंस हो वृक्षहो मधुकरहो ऐसे आपको ब्रह्मवादी कहते हैं १०७ और यज्ञ की इष्टका हो श्रेष्ठ हो ऐसे आपको मुनि कहतेहैं और वेदउपनिषद् इत्यादिकों की स्तुति करके नित्यआप पठन कियेजातेहो १०८ और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये उत्तमवर्णभी आपही हो मेघों के समूह बिजली वज्र मेघों का गर्जना वर्ष, ऋतु, मास, अर्द्धमास, युग, निमेष, काष्ठा, नक्षत्र, बलवंतग्रह ये सब आपहीहो १०९। ११० वृक्षोंमें अर्जुन वृक्ष पर्वतों में हिमवान् मृगों में सिंह पक्षियों में गरुड़ सर्पोंमें शेषनाग ऐसे भी आपही हो १११ समुद्रों में क्षीरोदधि यंत्रोंमें धनुष शस्त्रों में वज्ररूप व्रतोंमें सत्य रूप ऐसे आपही हो ११२ इच्छा, द्वेष, राग, मोक्ष, क्षमा, अक्षमा, निश्चय, धृति, धारणा, लोभ, काम, क्रोध, जय, अजय ये सब आपही हो ११३ शरको धारण करनेवाले गदावाले खड्गका पाया को धारण करनेवाले शरासन को धारण करनेवाले और छेत्ता भेत्ता मंता प्रहर्त्ता नेता सनातन रूप ऐसे आपही हो ११४ और दश लक्षणों से संयुक्त धर्म, अर्थ, काम, समुद्र, नदी, गंगाजी, पर्वत, सरोवर, बेल, तृण, ओष-

धि, पशु, मृग, पक्षि बृहत् कर्मोंके गुणोंके आरम्भके करने वास्ते पुष्प फलोंको देनेवाले कालरूप और वेदों के आदि अंत और गायत्री और ॐकाररूप लोहित, हरित, नील, कृष्ण, पीत, श्वेत इन रूपोंवाले और कषाय रूप, कपिलरूप, कपोतरूप, मेचकरूप, वर्णसहित और बर्णसे रहित कर्त्ता हर्त्ता ऐसे आपहो ११७।११८ आप इन्द्रहो यमहो बरुणहो कुबेर हो बायुहो उपप्लव, भानु, स्वर्भानु, शिष्य, हौत्र, त्रिसौपर्ण ऐसे और यजुर्वेद के मध्यमें शतरुद्रीयरूप और पवित्रों में पवित्र और मंगलों में मंगलरूप ऐसे आपहीहो ११९।१२० पर्वत में होनेवाले तिंदुक बृक्षहो और सम्पूर्ण जीवों में मुद्ररूप आपहीहो प्राणहो सत्त्वगुण, रजोगुण, तमोगुण इन्होंकी उत्पत्तिरूप हो १२१ और प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान इन बायुओं के रूपवालेहो और उन्मेष निमेषरूपहो क्षुतरूपहो जृंभितरूपहो १२२ और लोहितबर्णके अंतर्गत दृष्टिवालेहो महामुखवाले और महा उदरवाले पवित्र रोमवाले हरिश्मश्रु ऊर्ध्वकेश चलाचल ऐसेभी आपहीहो १२३ और गीत बाजा नृत्य इन्हों को जाननेवाले इन्होंके प्यारे हो मत्स्यहो जालहो जलौकाहो कालसे क्रीड़ा करनेवाले कला कलिहो १२४ और अकाल, विष्काल, दुःकाल, काल, मृत्यु, मृत्युकर्त्ता, यज्ञरूप, भयंकररूप, प्रलयरूप, अन्तकरूप, संवर्त्तक मेघरूप, घंटा, घंटी, महाघंटी, चरीमाली, मातली ऐसेभी आपहीहो १२५।१२६ और ब्रह्म, काल, यम, अग्नि

इन्हों के दंडवालेहो और मुंडवालेहो चतुर्युगरूप चतु-
र्वेदरूप चातुर्होत्र प्रवर्त्तक ऐसे भी आपही हो १२७
और चारों आश्रमोंको प्राप्त करनेवालेहो और चारों
वर्णोंको प्राप्त करनेवालेहो और नित्यलक्ष्य में प्रिय हो
गणाध्यक्षहो १२८ रक्तमाला वस्त्रों को धारण करने
वाले गिरिक गौरिकप्रिय शिल्पि शिल्पिश्रेष्ठ सर्व
शिल्प प्रवर्त्तक १२९ भगनेत्रांकुश शम्भु पूषा के
दन्तनाशक स्वाहास्वधा नमस्काररूप नमनरूप १३०
गूढ़व्रत गुप्ततप करनेवाले तारक तारका मय धाता
विधाता संधाता पृथ्वी के धारण करने में तत्पर ऐसे
आपही हो १३१ ब्रह्मरूप तपरूप सत्यरूप व्रतका
आचरण आर्जवरूप भूतों की आत्मा भूतों को
करनेवाले भूतिरूप और भूतों की उत्पत्ति में उत्पत्ति
रूप १३२ और भूर्भुवःस्वः ऋत ध्रुव दांत महेश्वर
ऐसेभी आपही हो और दीप्तिरूप और कान्तरूप
और दुर्दान्त और दांत सम्भव १३३ और चन्द्रावर्त
रूप युगावर्त्तरूप प्रलयरूप बिन्दुरूप ग्रासरूप अणु
रूप स्थूलरूप कलियों की माला से प्यार करनेवाले
१३४ नन्दीमुख भीममुख सुमुख दुर्मुख शकुनिरूप
... सर्पों के पति विराट्रूप ऐसेभी आपही हो १३५
... को नाशनेवाले महादेव दण्ड को धारण करने
वाले ... गोनर्द गोनतार गोवृषेश्वर के वाहन
वाले ऐसेभी आपही हो १३६ त्रिलोकी की रक्षाकरने
वाले और गोविन्दरूप और गौओंका मार्गरूप और

स्थिररूप श्रेष्ठरूप स्थाणुरूप और बिकोप रूप कोप
रूप ऐसेभी आपही हो १३७ और दुर्बारण दुर्बिष के
हरनवाले और दुःसह तथा दुरतिक्रम दुर्धर्ष दुःप्रकाश
दुर्दर्श दुर्जय अजय ऐसे भी आपहीहो १३८ चन्द्रमा,
अग्नि, शीत, उष्ण, क्षुधा, तृषा, जरा अवस्था, रोग, आ-
धि, ब्याधि के नाशक ऐसेभी आपही हो १३९ समूह
रूप और असमूह रूप और हन्ता सनातनदेव शिखंडी
पुंडरीकाक्ष कमल के बनमें बास करनेवाले १४० और
त्र्यंबक दण्डधार उग्रदंष्ट्र कुलांतक और हलाहल बिष
रूप देवताओं में श्रेष्ठ अमृत को पान करनेवाले हे
मरुत्पते! ऐसे आपही हो १४१ अमृत को भोजनकरने
वाले जगन्नाथ देवदेव गणेश्वर बिषाग्निका पानकर-
नेवाले अमृत दूध घृत इन्हों का पान करनेवाले ऐसे
आपही हो १४२ और च्युतपदार्थों में आप मधुरूप
होके मधुका पान करनेवाले हो ब्रह्मवान् हो घृतच्युत
सर्बलोकके भोक्ता सर्बलोक के पितामह ऐसे आपही
हो १४३ सुबर्णका बीर्यवाले पुरुषरूप एकरूप स्त्री पु-
रुष नपुंसकरूप ऐसे भी आपहीहो बालक जवान बृद्ध
जीर्ण दंष्ट्रावाले पर्बतरूप बिश्वकेकर्त्ता ऐसे भी आपही
हो १४४ बिश्वको रचनेवालों के बिधाता भी आपही
हो और आपको प्रणतहुये सदैव पूजतेहैं चन्द्रमा सूर्य
आपके नेत्र हैं हे देव! आप अग्नि हो प्रपितामह हो
और आपको आराधन करके मनुष्य बाणीको प्राप्तहोते
हैं और अहोरात्रमें निमेष उन्मेषके कर्त्ताहो १४५ और

ब्रह्मा गोविन्द पुरातन ऋषि हे शङ्कर! ये सब सत्य करके आपके माहात्म्य को जाननेको समर्थ नहीं हैं १४६ और जहां इकट्ठे होके सैकड़ों हजारों पुरुष स्थित होते हैं तहां महत्तत्त्वके पारमें आप सदैव गोप्तामन्ताहो १४७ और जिसको निद्रा श्वास जीतलिये और सत्त्वगुण में स्थित जितेन्द्रिय ऐसे योगी पुरुष देखते हैं तिस योगात्मा को नमस्कार है १४८ और जो आप की सूक्ष्म मूर्त्तिहैं वे देखनेको समर्थ नहीं हैं तिन्हों करके मुझको निरन्तर रक्षित करो जैसे औरस पुत्रको पिता १४९ हे अनघ! यह मैं रक्षणीयहूँ मेरी रक्षाकरो आपको नमस्कार है आप भक्तों पै दया करनेवाले हो मैं आपका सदा भक्त हूँ १५० जगको धारण करनेवाले लम्बा उदरवाले यज्ञरूप दीर्घ जिह्वावाले महादंष्ट्रावाले ऐसे तिस रुद्रात्माको नमस्कारहै १५१ जिसके केशोंमें मेघ नदी हैं और सब अङ्ग की सन्धियों में कुक्षि में चार समुद्रहैं तिस तोयात्मा को नमस्कार है १५२ जो युग के अन्तमें संपूर्ण जीवों को भक्षणकर जलके मध्यस्थित हुये सोवते हैं तिन्होंकी मैं शरणहूँ १५३ और जो राहु के वदनमें प्रवेशहो रात्रिमें अमृतको पीवते हैं और आपके तेजसे ग्रसताहुआ सूर्य रक्षित होताहै १५४ और जो रुद्रलोक की रक्षावाले गर्भ पतित होते हैं वे आपकी कृपासे आनन्दित होते हैं ऐसे स्वाहा स्वधाकार रूप आप को नमस्कार है १५५ और जो देहधारियों के देह में अंगुष्ठमात्र पुरुष स्थित हैं वे देहधारियों की

और मेरीभी रक्षाकरो १५६ जो नदियों में समुद्रों में पर्वतों में गुहाओं में वृक्षोंके मूलों में गौओं के स्थानोंमें गह्वर बनों में १५७ चुराहा स्थानों में गलियों में अँगनों में सभाओं में हाथी अश्व रथ इन्हों के शाला-ओंमें जीर्णमकान बन इत्यादिक स्थानों में १५८ पंच-भूतों में दिशाओं में विदिशाओंमें स्थितहैं और चन्द्र-मा सूर्य के मध्यमें गत हैं तथा चन्द्रमा सूर्यकी किरणों में हैं १५९ और जो पातालमें हैं और तिससे भी जो परे प्राप्तहैं ऐसे आपके रूपोंको नित्य नमस्कार है १६० जिन रूपों की संख्या और प्रमाण नहीं है और जो रुद्रके असंख्य गणहैं तिन्होंको नित्य नमस्कारहै १६१ हे देव ! आपके भाग्यमें गतहुये मुझपै प्रसन्नहो आप का भद्रहो हे देव! आपमें मेरा हृदाहो मेरी मतीहो बुद्धी हो वह द्विजोत्तम इसप्रकार महादेवकी स्तुति करके वि-रामको प्राप्तहुआ १६२ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्ये सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

## अरतालीसवां अध्याय ॥

सनत्कुमार कहनेलगे पीछे इसको आश्वासनकर त्रि-लोकीकेपति महादेवजी उत्तमवाक्य कहनेलगे १ कि हे राजन् ! तेरे इस स्तोत्र करके मैं प्रसन्नहुआहूं सो बहुत कहने से क्याहै तू मेरे समीप में गमनकरेगा २ पीछे बहुत काल तक तहां बसके फिर मेरे शरीर से उत्पन्न

हुआ और देवताओंको जीतनेवाला ऐसा अंधकनामसे विख्यात ३ और हिरण्याक्षकेपुत्रभावको प्राप्तहो बुद्धिको प्राप्त होवेगा वेदकी निंदारूप ४ पूर्व जन्मके घोर पाप करके तू जगत्की माता पार्वतीमें अभिलाषा करेगा जब तुझको त्रिशूलसे मार मैं पवित्रकरूंगा ५ तहां फिर मेरी स्तुति करके तू मेराही भृंगीऋषि नामसे विख्यातही गणहोवेगा ६ फिर मेरे समीपमें वासकर सिद्धिको प्राप्तहोवेगा और जो इस वेनकृतस्तोत्रको कीर्त्तन करेगा व सुनेगा ७ वह मनुष्य अशुभको नहीं प्राप्त होवेगा और दीर्घआयुको प्राप्त होवेगा और जैसे सब देवताओंमें श्रेष्ठ महादेव है ८ तैसे सबस्तोत्रोंमें श्रेष्ठ यहवेन कृतस्तोत्र है और यश राज्य सुख ऐश्वर्य्य धन मान अर्थ इन्होंकी कामनावालोंको ९ और विद्याकी कामना वालोंको यह स्तोत्र भक्तिके द्वारा सुनना उचितहै और रोगी दुःखितदीन चौर और राजके भयसे समन्वित १० और राजकार्यसे विमुक्त इतने मनुष्य अतिभय से छूटजातेहैं और इसी स्तोत्रके प्रतापसे इसी देहकरके श्रेष्ठवर्ण को मनुष्य प्राप्त होसक्ता है ११ और तेज करके और यशकरके युक्तहुआ मनुष्य निर्मल होजाताहै और जहां राक्षस पिशाच भूत विनायक ये विघ्न करें १२ तहां इस स्तोत्रका पाठकरै और जो नारी पतिकी आज्ञालेके इस स्तोत्रको सुनै १३ वह नारी पिताके पक्षमें व माताके पक्षमें देवताके समान पूजन के योग्य होजाती है और जो मनुष्य इस दिव्य स्तोत्र को

सुनै अथवा सावधान होके कीर्त्तन करै १४ तिसके नित्यप्रति सब कार्य सिद्धिको प्राप्त होतेहैं और जो मन से चिंतवनकरै और बाणीसे कीर्त्तनकरै १५ वह सब पूर्णभावको प्राप्त होताहै इस स्तोत्रके प्रताप से मन और बाणीसेकिया पाप नष्ट होजाताहै १६ जो तैंने मन से बांछित कियाहै तिसको तू बर तेरा कल्याण होवेगा १७ बेन बोला इस लिंग के माहात्म्य से तथा लिंगके दर्शनसे तथा आपके दर्शनसे निश्चयमैं सब पापों से मुक्त हुआ १८ हे देवेश ! जो आप मुझपै प्रसन्नहो और जो मुझको बरदेना योग्यहै तो देवताके द्रव्य को भक्षणकरने से जो कुत्ताकी योनिमें यह आपका सेवकहै १९ हे शङ्कर ! इसपैभी प्रसाद करनेको आपयोग्यहो क्योंकि इसके प्रतापसे मैं पवित्रहुआहूं २० इस तीर्थ में स्नानकरनेको मैं देवतोंको निवारित किया तब इसने मेरा उपकार किया इसलिये इसको बर दिवाना चाहताहूं २१ तिसके तिसबचनको सुन प्रसन्नहुये महादेवजी बोले कि यहभी सब पापों से मुक्तहोजावेगा इस में संशय नहीं २२ हे महाबाहो ! मेरेप्रसादसे यह शिवलोक में गमन करेगा तथा इस स्तोत्र को सुनके और इससरके सबपापोंसे मुक्तहोजावेगा २३ कुरुक्षेत्रके माहात्म्य को और मेरे लिङ्गकी उत्पत्तिको सुनके मनुष्य सब पापों से छूटजाता है २४ सनत्कुमार कहने लगे कि ऐसे सर्वलोक नमस्कृत महादेवजी कहकर सबलोकों के देखतेहुये तहां अन्तर्हित होगये २५ और तब

वह पूर्वोक्त कुत्ता भी पूर्वजन्मका स्मरणकर और दिव्य मूर्त्तिको धारण करनेवाला होके राजाके समीप में प्राप्त हुआ २६ स्नानकरके पश्चात् पिताके दर्शनकी इच्छा वाला पृथुराजा स्थाणुतीर्थ पै शून्य कुटी को देख शोक से अन्वित हुआ २७ तब आनन्दसे अन्वित बेनराजा पुत्रसे कहनेलगा कि हे वत्स! नरकरूपी समुद्रसे तैंने मेरी रक्षाकरी २८ और तीर्थ के तटपै स्थित करके मेरा नित्यप्रति अभिषेक किया और इस साधु के प्रताप से और स्थाणुलिंग के दर्शन से २९ मुक्त पापोंवाला मैं जहां शिवजी स्थितहैं तहां उत्तम लोकमें गमनकरता हूं ऐसे राजा से कहकर और महादेवजी को स्थापनकर ३० तिस पुत्र से तारितहुआ स्थाणुतीर्थ में सिद्धि को प्राप्त भया और वह कुत्ता भी स्थाणुतीर्थ के प्रभाव से सब पापों से मुक्तहोके ३१ शिवलोक में प्राप्तभया और राजा भी पितरोंके ऋणोंसे मुक्तहो और पृथ्वी की परिपालना कर ३२ और धर्मकरके पुत्रोंको उत्पन्नकर अतिदक्षिणासे संयुक्त यज्ञों को कर और ब्राह्मणों के लिये मनोवांछित दानदेके और नानाप्रकार के भोगों को भोगके ३३ और मित्रों को ऋणसे छुटाके और कामों से स्त्रियों को तृप्तकरके और पुत्रको राज्य पै स्थापित करके राजा कुरुक्षेत्र को गया ३४ तहां घोरतपको कर और महादेव को पूज पीछे अपनी इच्छापूर्वक शरीर का त्याग कर परमपद को प्राप्त भया ३५ जो मनुष्य स्थाणु तीर्थ के इस प्रभाव को सुनै वह सब पापों

से मुक्त हुआ परमगति को प्राप्त होता है ३६॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्ये अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८॥

---

# उनचासवां अध्याय॥

मार्कण्डेयने कहा हे अनघ! ब्रह्माके, चारमुखोंकी उत्पत्तिको बिस्तारकरके सुननेकी इच्छा करूंहूं १ सनत्कुमार कहनेलगे कि हे प्रिय! सृष्टिकी कामनावाले ब्रह्मा का जो वृत्तांत हुआ है वह बिस्तारसे तुझको कहताहूं सुन २ उत्पन्नहुये ब्रह्माजी स्थावर जंगमरूपी सब जगत् को रचतेभये ३ पीछे सृष्टिको चिन्तवन करनेवाले ब्रह्माजी की यज्ञमें नीलकमल के पत्तोंके समान श्याम और सुन्दर मध्यभागवाली और सुन्दर नेत्रोंवाली और मनोहर ऐसी कन्या उत्पन्नहुई ४ पीछे तिस कन्या को देखके ब्रह्माजी मैथुन करनेको बुलाते भये ५ तिस पाप करके ब्रह्माका शिर कटगया पीछे तिस कटेहुये शिर करके सहित ब्रह्मा त्रिलोकी में बिश्रुत ६ और पवित्र और सब पापों को नाशनेवाले ऐसे सन्निहित तीर्थ को गये तहां ऋषि सिद्धों से निषेवित ७ स्थाणु तीर्थमें सरस्वती के उत्तर तीरपै चार मुखोंवाले शिव को प्रतिष्ठापन कर धूप गन्ध नानाप्रकार की बलि ८ भेट और महादेवसूक्त इन्हों करके ब्रह्माजी आराधना नित्यप्रति करने लगे ९ तब भक्ति से युक्त और शिव की पूजा में तत्पर ऐसे ब्रह्माजी के समीपमें साक्षात् महा-

देवजी प्राप्तभये १० तब प्राप्तहुये महादेवजी को देख लोक का पितामह ब्रह्मा शिर से पृथ्वी में प्रणामकर स्तुति करनेलगा ११ ब्रह्माजी कहनेलगे हे महादेव ! आपको नमस्कार है हे त्रिकालभव ! आपको नमस्कार है और हे स्तुति नित्य ! आपको नमस्कारहै १२ और हे त्रिलोकी को पवित्र करनेवाले ! आपको नमस्कार है और हे पवित्र देहवाले ! और हे सब पापोंको नाशनेवाले! आपको नमस्कार है और हे गुप्तपदार्थों को प्रकाश करनेवाले ! आपको नमस्कार है १३ और जो वैद्यों से जिन रोगों की शान्ति नहीं होती तिन रोगों को आप शांतकरते हैं और हे मृगछालाओंको सेवन करनेवाले ! और हे वीतलोक ! १४ आप को नमस्कार हो और आपके नामको जपनेवाले आपके आश्रय नहीं रहते १५ और हे नित्यरूप ! आपको नमस्कार हो और श-ङ्कर अप्रमेय व्याधिनाशक परपरिणाम सर्वभूत प्रिय १६ योगेश्वर हे देव सर्व पापक्षय भूतसंहार दुर्ग वि-श्वरूप ! इन नामोंवाले आपको नमस्कार हो १७ और शेषनाग भी आपकी महिमा को नहीं जानता और हे सर्पोंके हारको पहननेवाले ! और हे मारस्वरूप ! आपको नमस्कारहो १८ ऐसे स्तुति किये महादेवजी ब्रह्मा से कहनेलगे १९ कि हे ब्रह्मन् ! भार्याके लिये आपको कभी भी क्रोधकरना नहीं चाहिये और पहले क्रोधकरनेसे आप का मैंने शिरकाट दियाथा २० तब आपके पांचमुख हुये फिर वे कभी भी नाशको प्राप्त नहीं होंगे सो इस ति-

हित तीर्थ में मेरी भक्तिसे २१ लिङ्गोंकी स्थापनाकरैगा तो सब पापों से विमुक्त होगा और सृष्टि की कामना वाले आपने पहले मुझे प्रार्थित किया २२ सो वही मैं तेरे लिये स्थित हूँ और दीर्घ कालतक तप करने को सन्निहित में मग्नरहा २३ पीछे बहुत कालतक आप मेरी प्रतीक्षा करतेभये और सब प्राणियों के रचनेवाले आपने कल्पित करदिये २४ और बिस्तृतरूपी जल में मग्नहुये मुझको देख वह कहनेलगा कि जो मेरे से अग्रज अन्य कोई नहीं हो तब मैं प्रजाको रचूं २५ तब आपने कहा कि तुझ से अग्रज पुरुष अन्य कोई नहीं है और यह स्थाणु जलमें मग्न होरहा है इसवास्ते तू बिबशहुआ मुझको हितकर २६ तब वह देव सब भूतों को और दक्षआदि प्रजापतियों को और चारप्रकार के प्राणियों को रचता भया २७ तब रचतेही क्षुधितहुई प्रजा प्रजापति को भक्षण करने के लिये दौड़ने लगी २८ तब रक्षाके लिये वह देव आप की शरण में जाके कहनेलगा कि हे महामते! इस प्रजाकी आजीविका प्रकाशितकरो २९ तब आपने स्थावरों के वास्ते महौषधि और बलवाले जीवों के वास्ते दुर्बल प्राणि ३० तब बिहित आजीविकावाली सब प्रजा आपसमें वृद्धी को प्राप्त होनेलगी ऐसे आपकी प्रसन्नता से सब जीवमात्र बढ़नेलगे तब तिस जल से उठाहुआ मैं तिस प्रजाको देखनेलगा ३१ अर्थात् अन्य के तेज करके बिहित हुई प्रजाको देखके क्रोध से युक्तहुआ मैं लिङ्ग

को उत्पादन कर अवस्थित हुआ ३२ जब मैं सरके मध्यभाग में ऊपरको स्थित होने लगा तब से लगायत लोक में स्थाणु इस नाम से विख्यात हुआ ३३ सो एक बार भी मेरे दर्शन करे तो मनुष्य सब पापों से विमुक्त होजाता है और परम मोक्ष को प्राप्त होता है ३४ और जो मनुष्य कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथी को सावधान होके इस तीर्थ में वास करे वह अगम्यागमन आदि सब पापों से विमुक्त होजाता है ३५ ऐसे कहके महादेव जी तहांहीं अन्तर्द्धान होगये पीछे पापों से शुद्ध हुये ब्रह्माजी चतुर्मुख देव की पूजाकर ३६ सरके मध्य में महादेव के लिंगों को रचते भये और पवित्ररूप और आद्य ऐसा ब्रह्मसर हरिके पार्श्व में प्रतिष्ठित किया है ३७ और दूसरा ब्रह्मसद और तीसरा आश्वमेधिक और चौथा सरस्वती के तटपै ३८ ऐसे चार तीर्थ ब्रह्माजीने किये हैं और पवित्र रूप इन ब्रह्म तीर्थों को निराहार मनुष्य देखेंगे जब परमगति को पहुँचेंगे ३९ और कृतयुग में हरिकी पार्श्व में लिंगका पूजन करना चाहिये और त्रेतायुग में ब्रह्मा का आश्रम में पूजन करना चाहिये और द्वापरमें तिसके पूर्वभाग में लिंग का पूजन करना चाहिये ४० और कलियुग में सरस्वती के तटपै लिंग का पूजन करना चाहिये और भक्ति से समन्वित मनुष्य इन लिंगों की पूजा करके सब पापों से विमुक्त होके परमगति को प्राप्त होते हैं ४१ और सृष्टि कालमें ब्रह्माजी ने सृष्टिकी आदि में सरस्वती के तीरपै जो चतुर्मु-

रुलिंग पूजित किया है ४२ तिसको श्रद्धा पूर्वक प्रणाम करै तो सब पापों का नाशहोता है ४३ और ब्रह्माश्रम में महादेव के लिंगकी पूजा करने से वर्णसंकर आदि राजसभाओं से मनुष्य बिमुक्त होजाता है ४४ और कृष्ण चतुर्दशी के दिन तिस लिंग की पूजा करने से सब पातकों से बिमुक्त मनुष्यहो जाता है ४५ और कलियुग में अपने आश्रम में स्थितहुआ बसिष्ठ चतुर्मुख लिंगको स्थापन कर उत्तम सिद्धिको प्राप्तहुआ ४६ तहां निराहार और श्रद्धावाले और जितेन्द्रिय ऐसे मनुष्य महादेव को पूजते हैं वे परमसिद्धि को प्राप्तहोते हैं ४७ ऐसे स्थाणु तीर्थ का माहात्म्य तेरे लिये प्रकाशित किया जिसको सुन मनुष्य सब पापों से बिमुक्त होजाता है ४८ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांसरोमाहात्म्ये
एकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ४९ ॥

---

## पचासवां अध्याय ॥

सनत्कुमार जी कहने लगे पीछे बिष्णु भगवान् सब तीर्थोंमें उत्तमरूपी पृथूदक तीर्थको कहने लगे १ कि पाप और भयका नाशनेवाला जो पृथूदक तीर्थ है तहां हे देवताओ ! गमनकरो २ और जब मृगशिर नक्षत्र पै चन्द्रमा, सूर्य, बृहस्पति ये तीनों स्थितहों वह तिथी महापुण्या अर्थात् अक्षया नाम से कहाती है ३ इसवास्ते हे देवताओ ! जहां प्राची सरस्वती है तहां

गमन करो और तहां जाके श्राद्ध और भक्तिके द्वारा पितरों की आराधना करो ४ पीछे पवित्ररूपी पृथूदक तीर्थ में जाके और स्नानकर बृहस्पतिजी से कहनेलगे कि हे भगवन्! ५ जब पुण्य तिथीहो और तहां मृगशिर नक्षत्र पर ६ चन्द्रमा सूर्य ये दोनों होवें तहां आप भी प्रवेश करो ७ और हे गुरो! यह कार्य आपके अधीन है ऐसे देवताओं से उक्तकिये बृहस्पति जी कहने लगे ८ कि जो में वर्षा का स्वामी होजाऊँ तब तहां गमन करूँ तब सब देवते अंगीकार करते भये ९ पीछे आषाढ़ के महीने में मृगशिर नक्षत्र में अमावस्या तिथी के दिन इन्द्र पितरों के लिये भक्तिसे १० तिल, शहद, हविष्य अन्न इन्हों से संयुक्त पिण्डदान कुरुक्षेत्र में करता भया ११ तब प्रसन्न हुये पितर अपनी मेनानामवाली पुत्रीको देवताओं को देतेभये तब देवते तिसकन्याको हिमवान् पर्वत के लिये देतेभये १२ पीछे तिस मेनाको हिमवान् पर्वत लब्ध होके देवताओं में प्रीति करने लगा पीछे हिमवान् पर्वत मेनका नामवाली १३ स्त्री में अति रूप से संयुक्त और देवताओं की स्त्रियों के समान रूप वाली ऐसी तीन कन्याओं को उत्पन्न करता भया १४॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांउमासम्भवेपंचाशत्तमोऽध्यायः ५०॥

## इक्यावनवां अध्याय॥

पुलस्त्यजी कहनेलगे हे नारद! तिसी मेना से रूप और गुण से सम्पन्न तीनकन्या उत्पन्न हुईं और चौथा सु-

नाम पुत्र उत्पन्न हुआ १ और रक्तअंगोंवाली और रक्त नेत्रोंवाली और रक्तबस्त्रों से बिभूषित और रागिणीनाम से बिख्यात ऐसी मेनाकी ज्येष्ठ पुत्री हुई २ और शुभअंगों वाली और कमल के पत्ताके समान नेत्रोंवाली और नील कुंचित केशोंवाली श्वेतमाला और श्वेतबस्त्रोंको धारण करनेवाली और कुटिलानाम से बिख्यात ३ ऐसी मेना की दूसरी पुत्री हुई और हे मुने! नीलपर्बत के समानकां- तिवाली और नीलाकमल के समान नेत्रोंवाली और अत्यन्त रूपवाली ४ ऐसी मेनका की तीसरी पुत्री हुई ऐसे ये तीनों कन्या छः बर्ष से उपरांत तपकरनेको गम- न करती भई ५ तब तिन्हों को देवते देखने लगे पीछे बारह आदित्यों ने और आठबसुओं ने चन्द्रमा के कि- रणों की समान कांतिवाली कुटिला ६ ब्रह्मलोकमेंप्रा- प्तकरी और सब देवते कहने लगे कि हे ब्रह्मन्! महिषा- सुरको मारनेवाले पुत्रको यह जनसक्ती है ७ यह आप कहने को योग्य हो तब ब्रह्माजी कहने लगे कि यह तप- स्विनी महादेव के तेजको धारण करने को समर्थ नहीं है ८ इसवास्ते इस को छोड़दो पीछे क्रुद्धहुई कुटिला ब्रह्माजी से कहने लगी कि हे भगवन्! जैसे होसकेगा तैसे महादेव के तेजको धारण करने के लिये मैं यत्नकरूं- गी ९ अर्थात् हे सत्तम! जैसे शिव के तेज को धारणक- रूंगी तैसे सुन १०मैं उग्रतप करके बिष्णुकी आराधना कर महादेवजी के मस्तक को नवाऊंगी यह मैं अपने कथन को हे देव! सत्यकरूंगी ११ पुलस्त्यजी बोले हे नारद!

सबके स्वामी और आद्यके कर्त्ता ऐसे ब्रह्माजी क्रोध को प्राप्तहोकर कुटिलासे कहनेलगे १२ कि हे पापिनि! जो तैंने मेरावचन नहींसहा सो मेरे पापसे दग्धहुई तू जलरूप नदी बनजा १३ ऐसे ब्रह्माजीके शापसे कुटिला जलमयी नदी बनके ब्रह्मलोक में वेगसे बहनेलगी १४ तब अतिवेगवाली तिसनदीको देखके ब्रह्माजी ऋग्, साम, अथर्व, यजु इन चारोंवेदों के बाणीमयबन्धनोंकरके दृढ़ बांधतेभये १५ तब बँधीहुई वह कन्या तहांही स्थितरही पीछे रागवती नामवाली १६ ज्येष्ठ कन्या देवताओं ने स्वर्ग में प्राप्तकर ब्रह्माजीके लिये निवेदन करी तब तिसको भी ब्रह्माजी देखके कहने लगे १७ कि यहभी महादेवजीके तेजको धारण नहीं कर सकी तबक्रोधको प्राप्तहुई रागवती कहनेलगी कि मैं भी ऐसा तप करूंगी कि तपके प्रभावसे महिषासुरको मारनेवाला पुत्र उपजेगा १८ तब क्रुद्धहुये ब्रह्माजी शाप देनेलगे कि हे पापिनि! तू अपनेबलसे मेरेवचनका उल्लंघनकरती है इसवास्ते तू संध्याहोजायगी १९ तब हे नारद! वहभीसंध्याहोगई पीछे अकेलीपार्वती तपकरने लगी २० तब माता और पिताने उमानामधरा पीछे वह कन्या तपोवनमें जाके २१ मनकरके महादेवको चित्तमें धारणकर तपकरनेलगी तब ब्रह्माजी देवताओंसे कहनेलगे २२ कि हे देवताओ! जल्द गमनकरो क्योंकि हिमालय पर्वतमें हिमवान पर्वतकी पुत्री पार्वती जो तपकरतीहै तिसको यहां प्राप्तकरो २३ तब सब

देवते तहां गमनकर तपकोकरतीहुई पार्वतीको देखते भये परन्तु तेजसेजीतेहुये सब देवते समीपमें नहीं जा- सके २४ तब देवताओंके संग इन्द्रभी तेजसे जीता हुआ होके ब्रह्माजी के आगे पार्वतीजीके तेजका प्रताप कहता भया तब ब्रह्माजी कहनेलगे २५ कि जिसके तेजसे तुम सब विक्षिप्त और हतकान्तिवाले होगयेहो इसवास्ते यही निश्चय महादेवकीभार्या बनेगी २६ इसवास्ते तुम सब दुःखों से रहित होके अपने अपने स्थानोंको गमनकरो २७ और जल्दही तारक और महिषासुरको रणमें मरेहुयोंको जानोगे ऐसे ब्रह्माके वचनको सुन इन्द्रआदि सब देवते अपने अपने स्थान में चलेगये २८ पीछे तपको करती हुई उमाको तप से निवृत्तकर स्त्री सहित हिमवान् पर्वत अपने स्थानको प्राप्तकरता भया २९ पीछे रौद्रव्रतको धारण करनेवा ले महादेवजीभी मेरुआदि पर्वतोंमें विचरताहुआ क दाचित् हिमवान् पर्वतमें प्राप्तहुआ ३० तब श्रद्धासे हिमवान् से पूजितहुआ महादेव रात्रिभर तहां बस पीछे दूसरे दिन हिमवान् पर्वतने महादेवजी निमंत्रित किये ३१ और यहभी कहा कि हे विभो ! तपको साधने के कारणसे आप यहीं स्थितरहो ऐसे पर्वतके बचनको सुन महादेवजी उत्तममती को धारणकर ३२ तहांके अन्यवासोंको त्यागके आश्रम बनातेभये पीछे तहां व सतेहुये महादेवजीके समीपमें ३३ एककालमें गिरिराज की पुत्री पार्वती प्राप्तभई तब फिर उत्पन्नहोनेवाली सत

कोमहादेवजी देख ३४ और स्वागतभावसे पूजित कर योगरत महादेव स्थित हुये पीछे वह वरारोहा पार्वती भी अंजली बांधके ३५ सखियोंके संग महादेवजी के चरणोंमें प्रणाम करतीभई पीछे तिस सुन्दर पर्वत की पुत्रीको महादेवजी देख ३६ युक्त नहीं है ऐसे कहके गणों सहित महादेवजी अन्तर्हित होते भये तब वह पार्वतीभी महादेवके वचनको सुन और ज्ञानसे समन्वित ३७ और अन्तरदुःखसे दग्ध होतीहुई पार्वती पितासे कहनेलगी कि हे तात ! उग्रतप करने के लिये और महादेवजीके आराधनके लिये महावनमें गमन करतीहूं ३८ तब पिताने कहा कि ठीकहै ३९ तब महादेवके आराधनकी कामना करके पार्वती हिमवान् पर्वतके पादमें तप करनेलगी और सब सखियां पार्वती की परिचर्या करनेलगीं ४० पीछे समिध, कुशा, फल, मूल इन्हों करके मृत्तिकाके महादेवकी पार्वती पूजा करनेलगी ४१ और भद्रअस्तु ऐसे कहनेलगी और तिसकी नित्यप्रति पूजाकरै और तिसको वारंवार देखै ४२ तब पार्वतीके तपसे प्रसन्नहुये महादेवजी वटुरूप को धारणकर और मूंजकी मेखला और यज्ञोपवीत ४३ और छत्र और मृगछाला और कमंडलु इन्होंको धारण करनेवाले और भस्मसे आच्छादित शरीरवाले ऐसे महादेवजी आश्रमोंमें विचरतेहुये ४४ पार्वतीके आश्रममें प्राप्तहुये तब सखियोंके संग पार्वती खड़ी होके ४५ अभ्युत्थान कर और यथायोग्य पूजा करके

पूछनेलगी ४६ कि हे भिक्षो ! कहांसे आपका आगमन हुआ और कहां आपका आश्रमहै और कहांको गमन करतेहो यह मुझसे जल्द वर्णनकरो ४७ तब भिक्षुक कहनेलगा हे बाले ! मेरा आश्रम काशीपुरीमें है और अब मैं तीर्थयात्राके लिये पृथूदक तीर्थपै जाताहूं ४८ तब पार्वती कहनेलगी हे विप्रेन्द्र ! तू जहां पृथूदक तीर्थ में जाताहै तहां क्या पुण्य है और स्नान करके क्या फलहै और तू किस पदार्थ को लब्ध होता भया ४९ भिक्षुक कहनेलगा कि प्रथम मैंने प्रयागमें स्नान किया पीछे आम्रतीर्थमें पीछे कुब्जाम्रतीर्थ में पीछे जयन्त चंडिकेश्वर ५० बंधुबृंद, कर्त्तरि, कनखल, सरस्वती, अग्निकुंड, भद्रा, त्रिविष्टप ५१ कौनरु, कोटितीर्थ, कुब्जक इन तीर्थों में निष्कामरूप मैं स्नान करके पीछे तेरे आश्रममें प्राप्तहुआहूं ५२ सो यहां स्थित होनेवाली तुझसे संभाषणकर पृथूदकतीर्थको गमन करूंगा परन्तु मैं कुछ तुझसे पूछताहूं क्रोध नहीं करना ५३ हे कृशोदरि ! मैंने तप करके अपने आत्माको सुखायाहै परन्तु बाल्य अवस्थामें मैंने जो संचित किया है वह ब्राह्मणों के श्लाघा करनेके योग्यहै ५४ सो किसवास्ते प्रथम अवस्थामें रौद्रभावको प्राप्तहो किसवास्ते तपको करती है हे भीरु ! यहां मुझको संशय प्रतिभान होता है ५५ और हे गिरिजे ! प्रथम अवस्थामें स्त्रियोंको भर्त्ताकी अभिलाषा होती है और यौवन अवस्थामें अनेक प्रकार के भोगोंको स्त्रियें भोगा करती हैं ५६ और तप करके

स्त्रियें रूप अभिजन ऐश्वर्य इन्होंकी वांछा किया करती हैं सो पहलेही तेरेको रूप आदि सब ईश्वर ने बहुत सा दियाहै ५७ सो किसवास्ते अनेक प्रकारके गहनों का त्यागकर तैंने जटाधारणकरी है और अनेक प्रकार के वस्त्रोंको त्यागके क्या तैंने वल्कलोंका धारण किया है ५८ पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! तब पार्वतीकी सोम-प्रभा सखी तिस भिक्षुक से कहनेलगी ५९ कि हे द्विज-श्रेष्ठ ! जिस हेतु करके पार्वती तप करती है सो तू सुन यह देवी महादेवको भर्त्ता चाहती है ६० पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! सोमप्रभा के वचनको सुन और शिरको कँपा और महाहासको हँस भिक्षुक कहनेलगा ६१ कि हे पार्वती ! यह बुद्धि किसने तुझको दी है और पल्लव के समान कोमल तेरा यह हाथ कैसे महादेवके हाथ में समर्पित कियाजायगा ६२ और तू नानाप्रकारके दिव्यरूप वस्त्रोंको धारण करनेवाली है और महादेव सिंहकी चर्मको धारण करता है और तू चन्दन आदि को लगानेवाली है और महादेव मुर्दे की भस्मको लगानेवाला है इसवास्ते मुझ को युक्त रूप प्रतिभान नहीं होता ६३ पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! ऐसे वचनको सुन पार्वती भिक्षुक से कहनेलगी कि हे भिक्षो ! ऐसे मत कह क्योंकि सब गुणों से अधिक महादेवजी हैं ६४ और शिव हैं अथवा भीम हैं अथवा धनवाला है व निर्धन है व अलंकृत है व अलंकार से रहित है ६५ और जैसे तैसे महादेवजी हैं वेही मेरे पतिहोंगे और

पूछनेलगी ४६ कि हे भिक्षो ! कहांसे आपका आगमन हुआ और कहां आपका आश्रमहै और कहांको गमन करतेहो यह मुझसे जल्द वर्णनकरो ४७ तब भिक्षुक कहनेलगा हे बाले ! मेरा आश्रम काशीपुरीमें है और अब मैं तीर्थयात्राके लिये पृथूदक तीर्थपै जाताहूं ४८ तब पार्वती कहनेलगी। हे विप्रेन्द्र! तू जहां पृथूदक तीर्थ में जाताहै तहां क्या पुण्य है और स्नान करके क्या फलहै और तू किस पदार्थ को लब्ध होता भया ४९ भिक्षुक कहनेलगा कि प्रथम मैंने प्रयागमें स्नान किया पीछे आम्रतीर्थमें पीछे कुब्जाम्रतीर्थ में पीछे जयन्त चंडिकेश्वर ५० बंधुबृंद, कर्त्तारि, कनखल, सरस्वती, अग्निकुंड, भद्रा, त्रिविष्टप ५१ कौनरु, कोटितीर्थ, कुब्जक इन तीर्थों में निष्कामरूप मैं स्नान करके पीछे तेरे आश्रममें प्राप्तहुआहूं ५२ सो यहां स्थित होनेवाली तुझ से संभाषणकर पृथूदकतीर्थको गमन करूंगा परन्तु मैं कुछ तुमसे पूछताहूं क्रोध नहीं करना ५३ हे कृशोदरि! मैंने तप करके अपने आत्माको सुखायाहै परन्तु बाल्य अवस्थामें मैंने जो संचित किया है वह ब्राह्मणों के श्लाघा करनेके योग्यहै ५४ सो किसवास्ते प्रथम अवस्थामें रौद्रभावको प्राप्तहो किसवास्ते तपको करती है हे भीरु ! यहां मुझको संशय प्रतिभान होता है ५५ और हे गिरिजे ! प्रथम अवस्थामें स्त्रियोंको भर्त्ताकी अभिलाषा होती है और यौवन अवस्थामें अनेक प्रकार के भोगोंको स्त्रियें भोगा करती हैं ५६ और तप करके

स्त्रियें रूप अभिजन ऐश्वर्य इन्होंकी बांछा किया करती हैं सो पहलेही तेरेको रूप आदि सब ईश्वर ने बहुत सा दियाहै ५७ सो किसवास्ते अनेक प्रकारके गहनों का त्यागकर तैंने जटाधारणकरी है और अनक प्रकार के वस्त्रोंको त्यागके क्या तैंने बल्कलोंका धारण किया है ५८ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! तब पार्बतीकी सोम- प्रभा सखी तिस भिक्षुक से कहनेलगी ५९ कि हे द्विज- श्रेष्ठ! जिस हेतु करके पार्बती तप करती है सो तू सुन यह देबी महादेवको भर्त्ता चाहती है ६० पुलस्त्यजी ोले हे नारद! सोमप्रभा के बचनको सुन और शिरको ँपा और महाहासको हँस भिक्षुक कहनेलगा ६१ कि ़ पार्बती! यह बुद्धि किसने तुझको दी है और पल्लव ़ समान कोमल तेरा यह हाथ कैसे महादेवके हाथ ं समर्पित कियाजायगा ६२ और तू नानाप्रकारके ़ेव्यरूप बस्त्रोंको धारण करनेवाली है और महादेव ़िहकी चर्मको धारण करता है और तू चन्दन आदि ो लगानेवाली है और महादेव मुर्दे की भस्मको ल- ानेवाला है इसवास्ते मुझ को युक्त रूप प्रतिभान हीं होता ६३ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ऐसे बचनको ़न पार्बती भिक्षुक से कहनेलगी कि हे भिक्षो! ऐसे मत ़ह क्योंकि सब गुणों से अधिक महादेवजी हैं ६४ ौर शिव हैं अथवा भीम हैं अथवा धनवाला है व ़र्द्धन है व अलंकृत है व अलंकार से रहित है ६५ ़ौर जैसे तैसे महादेवजी हैं वेही मेरे पतिहोंगे और

हे सखि! बोलने की इच्छा करनेवाला और होठों को फरकानेवाला ऐसे इस भिक्षुको निवारणकर ६६ और जैसा सुननेवाला पापीहोजाता है तैसा निन्दक पापी नहींहोता ६७ पुलस्त्यजीबोले हे नारद! ऐसे बचन कहके तहां से सखी भिक्षुक को उठाने की इच्छा करने लगी तब भिक्षुक के रूप को त्यागके सुरूप में स्थितहुये महादेवजी कहनेलगे ६८ कि हे प्रिये! पिता के भवन में तू गमनकर और तेरे वास्ते हिमवान् के स्थान पै महर्षियोंको प्रेषण करूंगा ६९ और जो तैंने मृत्तिकाका महादेवबनाके पूजित कियाहै यह भद्रेश्वर नामसे लोक में बिख्यात होगा ७० और देव, दानव, गंधर्व, यक्ष, किन्नर, सर्प और शुभकी इच्छावाले मनुष्य इसको ये सब निरन्तर पूजेंगे ७१ ऐसे महादेवजी के बचनको सुन अपने पिताके स्थान में पार्वती प्रवेश करती भई ७२ और महातेजवाले महादेवजी भी पार्वती को त्यागके पृथूदक तीर्थमें बिधानसे स्नान करतेभये ७३ पीछे पृथूदक तीर्थ में नन्दीगण आदियों से सहित महादेवजी मन्दराचल पर्बतमें प्राप्तभये जब महादेवजी गणों और ब्रह्मर्षियों करके सहित पर्वत में प्राप्तभये ७४ तब प्रसन्न चित्तवाला पर्वत दिव्य फल और जल और अनेक प्रकार के मूलकन्द आदि से महादेवकी पूजा करनेलगा ७५ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांउमासम्भवेमन्दरागिरिप्रवेशोनाम एकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

# बावनवा अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! पीछे संपूजित हुये महादेवजी पर्बत के संग प्रीतिवाले होतेभये पीछे महादेव जी अरुन्धती सहित महर्षियों को स्मरण करने लगे १ तब स्मरण करतेही सुन्दर कन्दरावाले मंदराचल में महर्षि आनेलगे तब आवते हुये २ महर्षियों को देख अभ्युत्थान आदि से पूजाकर महादेवजी यह बचन कहनेलगे ३ कि हे मुनिजनाहो! धन्य और पर्बतों में श्रेष्ठ और देवताओं करके श्लाघनीय और आपसबों के पैरोंकरके धोयेहुये पापोंवाला ऐसा यह पर्बत होगयाहै ४ सो बिस्तृत और रमणीक और समान और शुभ ऐसे गिरिपृष्ठ पै और कमलके समान बर्णवाली शिलाओंपै आपसब स्थितहोजाओ ५ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! कि ऐसे महादेवजी के बचनको सुन अरुन्धती सहित सब महर्षि पर्बतकी शिलाओं पै प्रबेश करतेभये ६ जब सब ऋषि स्थितहोगये तब नंदीगण अर्घ्यआदि से मुनियोंकी पूजाकर स्थितहुआ ७ पीछे महादेवजी अपने यशकी बृद्धि के लिये बिनयवाले सप्तऋषियों से कहनेलगे ८ हे कश्यप! हे अत्रे! हेबसिष्ठ! हे गांगेय! हे भरद्वाज! हे आंगिरस! आप सब मेरेबचन को सुनो ९ कि मेरे दक्षकी पुत्री भार्याहोती भई सो वह दक्षके कोपसे पहले अपने प्राणोंको त्यागती भई सो वही सती फिर हिमवान् पर्बत के पुत्री उत्पन्न हुई

है १० सो मेरेलिये पर्बत राजकी याचना करो ११ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! सातों ऋषि ठीक हैं ऐसे कहके पीछे (ॐनमःशंकराय) इसमंत्रका उच्चारणकर हिमालय पर्बतको गये १२ पीछे महादेव अरुंधती से कहनेलगे कि हे अरुंधति! तूभी गमनकर १३ तब (नमस्तेरुद्र) ऐसे कहकर अरुंधती भी पतिके संग हिमालय को गई १४ तहां हिमालयकी पुरीको इन्द्रकी पुरीकी तरह सब देखतेभये १५ पीछे पर्बत में स्त्रियोंकरके और सुनामआदि पर्बतों करके और गंधर्ब, किन्नर, यक्ष इन्हों करके १६ पूज्यमानहुये वे महर्षि सुवर्ण करके प्रकाशित रूप पर्वतके पुर में प्रवेश करनेलगे १७ पीछे तपकरके धौतपापोंवाले सब ऋषि द्वारपाल के कारण से स्थानके महाद्वारपैस्थितहुये १८ तब गंधमादन नाम से बिख्यात पर्बत द्वारपाल भावको प्राप्तहुआ और हाथ में पद्मराग मयदंडको धारण करेहुये १९ जो स्थित था तिसके समीपमें जाके सब ऋषि कहने लगे कि हे प्रिय! महत्कार्यके लिये हम प्राप्तहुये हैं सो हमारेको राजाके लिये निवेदनकर २० ऐसेऋषियों के बचन को गन्धमादन सुनके जहांअन्य पर्बतों से परिबृत शैलराज स्थित होरहाथा २१ तहां गंधमादन गोड़ों को पृथ्वीमें टेकके और हाथों को मुखमें देके और दण्डको कक्षामें फेंकके यह बचन कहनेलगा २२ कि हे शैलराज! आपको याचना करनेवाले बहुत से ऋषि प्राप्तहुये हैं और आपके दर्शनकी लालसावाले होके द्वारपै स्थित

होरहेहैं २३ पुलस्त्यजीबोले हे नारद! द्वारपालके बचनको सुनि पीछे उत्तम अर्घ्य आदि को ग्रहणकर आपही हिमवान् पर्व्वत द्वार पै प्राप्तभया २४ तब पूजा और अर्घ्य आदिसे सब ऋषियोंको पूज और सभामें प्राप्त कर और सुन्दर आसनों पै बैठाके २५ हिमवान् कहनेलगा कि जैसे बिना बादलों बृष्टि और जैसे बिना फूलों के फल और हर्ष और अचिन्त्य ऐसा आपका आगमन हुआ है २६ और हे सत्तमाहो! अबसेलगायत मैं धन्य हुआ हूँ और अबहीं मेरा देह शुद्ध हुआ है जो आप संसर्ग से मेरे स्थान को शुद्धकरते भये २७ जैसे दृष्टी से पूत और पैरों से आक्रांत सारस्वत तीर्थ है तैसे और हे ब्राह्मणा हो! मैं तुम्हारादास हूँ २८ और अब मेरा बड़ा पुण्य जागा जिसकरके आप यहां प्राप्त हुये हो सो तुम मुझ पै अनुज्ञा करो २९ सो भार्य्या, पुत्र, नौकर, पौत्र इन्हों करके सहित मैं कहाकरूं अर्थात् आप सब मुझ पै आज्ञा फरमाओ ३० पुलस्त्यजी बोले हे नारद! शैलराजके बचन को सुन सब ऋषि बृद्धरूप अंगिरा ऋषि से कहनेलगे कि हे भगवन्! पर्वतराजके लिये आप निवेदन करो ३१ ऐसे कश्यप आदि ऋषियों से प्रेरित किये ३२ अंगिरा मुनि कहनेलगे कि हे पर्वत श्रेष्ठ! जिसकार्यकरके अरुंधतीसहित हम सब आपके स्थान पै प्राप्तभये हैं ३३ तिसको सुन जो महात्मा और सर्व्वात्मा और दक्षकी यज्ञको नाशनेवाला और शंकर और शूलधृक् और शर्व और

त्रिनेत्र और बृषबाहन ३४ और जीमूतकेतु और शत्रुघ्न और यज्ञभोक्ता और स्वयंप्रभु और जिसको ये सब ईश्वरकहतेहैं और शिव और स्थाणु और भव और हर ३५ और भीम और उग्र और महेशान और महादेव और पशुपति इन नामोंवाले देवने हम सब हे पर्वतराज! आपके समीपमें प्रेषित किये हैं ३६ क्योंकि सर्वलोकों में सुन्दरी और काली नामसे बिख्यात ऐसी जो आप की पार्वती पुत्री है इसको महादेव जी प्रार्थना करै हैं सो आप महादेव के लिये देनेको योग्य हैं ३७ और तिसपिताको धन्यहै जिसकीपुत्री रूप और अभिजन संपत्ति करके युक्त हुये पति को प्राप्तहोजावै ३८ और जितने जंगम और अजंगम चार प्रकारके प्राणी हैं तिन्हों की माता यह तेरी पुत्री है ३९ इस वास्ते इस को जगत्कापिता महादेवही बर मिलना चाहिये और सबदेवते महादेव को प्रणामकर पीछे तेरी पुत्री को प्रणाम किया करेंगे ४० इसवास्ते तू भस्म से परिप्लुत पैर को शत्रुओं के मस्तकपै प्राप्तकर और याचना करनेवाले हम हैं और बर महादेवजी हैं और तू दाताहै और सब जगत्कीमाता उमाबधूहै यहांकल्याणकेलिये कर ४१ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! अंगिरा के बचनको सुन पर्वतकी पुत्री काली नीचे को मुखकर के स्थितहुई और बेगसे आनंदको प्राप्तहो फिर दैन्य को प्राप्तभई ४२ तब शैलराज गंधमादन पर्वतसे कहने लगा कि हे मित्र! यहां प्राप्तहोने के लिये सब पर्वतों

को निमंत्रित करने को तू योग्य है ४३ पीछे शीघ्र बेगवाला गंधमादन पर्बत मेरु आदि पर्बतों को निमंत्रित करताभया ४४ तब सब पर्बत बेगसे अतिकार्य को जान तहां स्थान में प्राप्तहो सुबर्णके आसनोंपैस्थित होनेलगे ४५ अर्थात् मेरु, हेमकूट, रम्यक, मंदराचल, उद्दारक, बारुण, बराह, गरुड़ासन ४६ शक्तिमान्, भानुबेग, दृढ़शृंग, अश्वशृंगवान्, चित्रकूट, त्रिकूट, मंदारकाचल ४७ बिन्ध्य, मलय, पारिपात्र, दर्दुर, कैलास, महेन्द्र, निषध, अंजनपर्बत ४८ ये सब प्रधान पर्बत और अन्य क्षुद्रपर्बत सभा में जाके पीछे ऋषियों को प्रणामकर बैठते भये ४९ पीछे गिरिराज अपनी मेनाभार्याको बुलाताभया पीछे वह कल्याणी पुत्रको संगले तिस सभा में प्राप्तभई ५० पीछे जब सब पर्बत अपने अपने आसनोंपै स्थितहोगये तब ऊंचे-स्वरसे सब से संभाषण कर ५१ हिमवान् पर्बत कहने लगा कि पवित्ररूप ये सातों ऋषि मेरी पुत्रीको महादेव के लिये मांगते हैं सो यह मैंने आपसबों के लिये निवेदन किया ५२ सो तुम मेरे ज्ञातिके पुरुषहो सो तुम अपनी अपनी बुद्धिके अनुसार बर्णनकरो और आपके बचनको उल्लंघन करके मैं नहीं देऊंगा ५३ इसवास्ते आप सब युक्त बचन को कहनेको योग्यहो ५४ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! हिमवान् पर्बतके बचनको सुन मेरु आदि सब पर्बत बचन कहनेलगे ५५ कि जो याचना करनेवाले मुनिहैं और साक्षात् महादेव बर हैं तो

हे शैल! यह काली पुत्री देनीही उचितहै क्योंकि तेरेजा॰ माता महादेवहीहोना उचितहै ५६ पीछे मेनाभी कहने लगी कि हे शैलेन्द्र! मेरे बचनको भी सुन ब्रह्माजी ने यह पुत्री मुझको इसीहेतु करकेदी है ५७ अर्थात् इस में महादेव के सकाश से जो पुत्र जन्मेगा वह महिषासुर को और तारकको मारेगा ५८ ऐसे मेनाके बचनको सुन शैलराज पुत्री से कहने लगा हे पुत्री! महादेव के लिये मैंने अब तेरा दानकिया ५९ पीछे ऋषियों से कहने लगा कि यह मेरीपुत्री और शंकरकीबधू काली भक्ति से नम्रहोके आप सबों को प्रणाम करती है ६० पीछे अरुंधती कालीको गोदमें बैठाके महादेव के गुणों से आश्वासित करनेलगी ६१ पीछे सप्तऋषि कहनेलगे कि हे शैलराज! सुन यामित्र गुणसे संयुक्त और पवित्र और सुन्दर मङ्गलवाली ६२ और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र से युक्त ऐसी तिथि तीसरेदिन प्राप्तहोवेगी तहां मित्रनामक मुहूर्त्तमें ६३ महादेव मन्त्रों के द्वारा तेरी पुत्री के हाथको ग्रहणकरेंगे अब हम गमन करतेहैं आप अनुज्ञादेनेको योग्यहैं ६४ तब फल मूल आदि से ऋषियोंकी पूजाकर शैलराज बिदाकरताभया ६५ पीछे बेग से सब ऋषि मन्दराचल में प्राप्तहोके महादेव जी से प्रणाम करके कहनेलगे ६६ कि हे महादेव! आप भर्त्ता और पार्बती बधूहुई है और ब्रह्माआदि तीनों लोक तुम दोनों के बिवाहको देखेंगे ६७ तब प्रसन्नहुये महादेवजी अरुंधती सहित सब ऋषियों की परिक्रमा

और पूजा करने लगे ६८ पीछे पूजित हुये सब महर्षि देवताओं के सङ्ग सम्भाषण करनेलगे पीछे महादेव के दर्शन करनेको ब्रह्मा, बिष्णु, इन्द्र, सूर्य्य ६९ ये चारों महादेवके लिये प्रणामकरके पीछे स्थानमें प्रवेशकरतेभये पीछे महादेवजी नंदीआदिगणोंको स्मरणकरनेलगा ७० तब सब गण प्रणामकरके समीपमें प्राप्तहोनेलगे पीछे मुक्तरूपजटाके अग्रभागवाला देवते और गणों से परिवृत ऐसे महादेवजी शोभित होनेलगे जैसे बनमें शरल कदंबआदि बृक्षोंकेमध्यमें प्ररोहमूलवालाबनस्पति ७१ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांउमासम्भवेगौरीबिवाहे द्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

## तिरपनवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! प्राप्तहुये सब देवताओं को देख महादेव आप अभ्युत्थान कर बिष्णु भगवान् से मिलताभया १ पीछे ब्रह्माजीको शिरसे नमस्कारकर और इन्द्र से अच्छी तरह सम्भाषण कर और अन्य सब देवताओं को अच्छी तरह देख २ संभावित हुआ पीछे बीरभद्र आदि सब महादेवके गण जय देव ऐसा शब्द का उच्चारणकर मन्दराचल में प्रवेश करतेभये ३ पीछे सब देवताओं के साथ बैवाहिक बिधि करने के लिये महादेव कैलास पर्वत में गमन करतेभये ४ पीछे तिस कैलास पर्वत में देवताओं की माता अदिति और अन्य सुरसा आदि सब मण्डल करनेलागीं ५ पीछे महास्थि

अर्थात् बड़ी हड्डियोंको मस्तकपै धारणकरनेवाला और गोरोचन के तिलकवाला और सिंहके चामके बस्त्रोंको धारणकरनेवाला और नीलेसर्प के कुण्डलों को धारण करनेवाला ६ और सर्पोंही के कङ्कण और सर्पोंही के हार और सर्पोंही के झांझन और नूपुर आदि को धारण करनेवाला ७ और ऊंचीजटा के भारको धारण करनेवाला ऐसा महादेव बैल पै स्थित होके शोभित होनेलगा पीछे तिसके आगे अपने अपने वाहनोंपैसवार होके महादेव के गण गमन करने लगे ८ और तिसके पृष्ठभागमें अग्नि आदि सबदेवते गमन करनेलगे ९ और गरुड़ पै सवारहुये बिष्णुभगवान् लक्ष्मी के सङ्ग गमन करनेलगे और हंस पै सवारहुये ब्रह्माजी भी महादेवके समीप मेंही गमन करने लगे १० और इन्द्र भी शुक्लबस्त्र सहित छत्रको धारणकर हस्ती पै स्थित होके गमन करने लगा ११ और नदियों में श्रेष्ठ यमुना श्वेतरूप बालब्यजन को हाथ में ग्रहणकर कछुआ पै संस्थित होके गमनकरनेलगी १२ और हंसतथा प्रकाशित चन्द्रमा के समान कान्तिवाले बालब्यजन को ग्रहण कर नदियों में श्रेष्ठ सरस्वती हस्ती पै सवार होके गमन करने लगी १३ और छहों ऋतुओं भी गन्ध संयुक्त पांच वर्ण के फूलों को ग्रहणकर गमनकरने लगे और मदवाले हस्ती पै सवार होके पृथूदकतीर्थ भी गमनकरनेलगा १४ और तुंबरुआदि गन्धर्व मधुर स्वरसे गानकरते हुये और बाजों को बजाते हुये

किन्नर और नृत्यकरनेवाली अप्सरा और स्तुतिकरनेवाले मुनि ये सब महादेव के पीछे पीछे गमन करने लगे १६ और ग्यारहकिरोड़ रुद्र और बारह किरोड़ आदित्य और आठकिरोड़ बसु और सरसठ कोटि गण और ऊर्ध्ववीर्यवाले ऋषि चौबीस और यक्ष, किन्नर, राक्षस इन्हों के असंख्यातगण १७ ये सब महादेवके विवाहकेलिये संग गमन करतेभये पीछे क्षणभर में हिमालय पर्वतके १८ पुरमें महादेव प्राप्तभये और हस्तियों पै सवार हुये बहुत से पर्वतभी सन्मुख आके प्राप्तहोनेलगे १९ तब तीन नेत्रोंवाला महादेव हिमालय पर्वत को प्रणाम करताभया और अन्य सब पर्वत महादेवजी को प्रणाम करतेभये २० तब प्रसन्न हुआ महादेव देवते और पार्षदों के संग शैलराज के पुरमें प्रवेश करनेलगा २१ तब मानों जीमूतकेतु आवता है ऐसे नगरकी स्त्रियें निजकर्मको त्यागके दर्शन करने के लिये प्राप्तहोनेलगीं २२ अर्थात् कोईक आधी मालाको पहनती हुई और कोईक एकहाथ से केशों को पकड़े हुई २३ और एक हाथ से केशों को बाँधती हुई महादेवके सन्मुख प्राप्तभई २४ और कोईकस्त्री एक नेत्रको आंजतेही भयानक रूपवाले महादेवके आगमनको सुन प्राप्तभई २५ और कोईक स्त्री अंजन की सलाका को धोवतीहुई प्राप्तभई और कोईक पहनने के वस्त्रको हाथ में धारणकरके आवतीभई २६ और कोईक महादेव के दर्शन की लालसा वाली उन्मत्त

की तरह नग्न होके प्राप्तभई २७ और कोईक स्त्री प्राप्तहुये महादेवको सुनके स्तनके भारसे आलस्ययुक्त हुई प्राप्त होतीभई २८ ऐसे नगरकी स्त्रियोंको क्षोभ करातेहुये और बैलपै चढ़ेहुये महादेव श्वशुरके दिव्य मन्दिरमें प्राप्त भये २९ पीछे श्वशुरके मन्दिरमें प्राप्तहुये महादेवको देख स्त्रियें कहनेलगीं आश्चर्य्य है कि पार्वतीने अति उग्र तपकियाहै ३० तिस करके देवते और पार्षदों करके सहित महादेवजी यहां प्राप्तभये हैं और कामदेवको दग्धकरनेवाले और दक्षकी यज्ञको नाशनेवाले और भगके नेत्रोंको नाशनेवाले और शूलको धारण करनेवाले ऐसे महादेवजी धन्यहैं ३१ और हे शङ्कर! हे शूलपाणे! आपको नमस्कारहै हे सिंहकी चर्म को धारण करनेवाले! हे कालशत्रो! आपको नमस्कारहै और हे बड़े सर्परूप हार और कुण्डलोंसे अङ्कित! आपको नमस्कारहै और हे पार्वती वल्लभ! आपको नमस्कारहै ३२ ऐसे इन्द्र करके धारण किये छत्रसे पूजित और सिद्धोंसे वन्द्य और सुन्दर भस्मसे उपलिप्त ऐसे महादेवजी अग्रभाग में चलनेवाले ब्रह्माजी के संग और पृष्ठभागमें चलनेवाले बिष्णुके सङ्ग हवनसे मुदितहुई बिवाह बेदीको प्राप्तभये ३३ और जब देवते और सप्तऋषियों के सङ्ग महादेवका आगमन हुआ तब गिरिराजके स्थानमें सब जन व्यग्ररूप होगये और सब पर्वत व्याकुलभावको प्राप्तभये और कन्याका बिवाहरूपी उत्सववाले मित्र व्याकुलित होगये ३४ पीछे

आताके दियेहुये अनेक प्रकारके वस्त्रों से आच्छादित करी पार्वती महादेवके समीपमें प्राप्तकरी ३५ पीछे तिस सुवर्णमय सुन्दरस्थान में स्थितहुये देवते शंकरकी चेष्टा को देखनेलगे और महादेवभी पार्वती की चेष्टा को देखनेलगे ३६ पीछे नानाप्रकारकी क्रीड़ा होनेलगी अ-र्थात् अनेक प्रकारसे पार्वती के संग क्रीड़ा करतेहुये ३७ महादेव ऋषियों से सेवित दक्षिण बेदी पै प्राप्तभये पीछे शुक्लवस्त्रोंको धारण करनेवाला और पवित्र और पवित्र हाथवाला ३८ ऐसा हिमवान् पर्वत आगमन करके मधुपर्क और जलको ग्रहणकर स्थित होके पूर्वदिशा की तरफ देखनेलगा ३९ पीछे अच्छीतरह स्थितहुआ हिमवान् पर्वत सप्तऋषियोंकी तरफ देखके सुखपूर्वक स्थित हुये महादेवके सन्मुख धर्मसाधनरूपी बचनको कहनेलगा ४० अब हिमवान् कहताहै कि हे भगवन्! मेरी पुत्री और पितरोंकी दौहित्री ऐसी जो यह काली नामसे बिख्यात पार्वती है सो मेरेसे उदित करी इसको आप ग्रहण करो ४१ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ऐसे पर्वतराज कहकर अपनी पुत्री के हाथको महादेवजी के हाथ में संयुक्त कराके पीछे हे भगवन्! इसको आप ग्रहणकरो ऐसे ऊंचे प्रकारसे कहनेलगा ४२ तब महा-देव कहनेलगे कि मेरे माता नहीं है और न मेरे पिता है और न मेरे ज्ञाति है और न मेरे बांधव है और मैं आश्रय से रहितहूं और पर्वतके संगमें बसनेवाला हूं ऐसा मैं तेरी कन्याको ग्रहण करताहूं ४३ ऐसे कह के

पार्वती के हाथको महादेव अपने हाथमें ग्रहण करत भये पीछे महादेवजी के स्पर्शकरने से पार्वती अतिआनन्दको प्राप्त होतीभई ४४ पीछे वेदीके समीपमें पार्वती के संग स्थितहुये महादेव मधुपर्क का भोजन करके धानकी खीलोंको कलशके मध्य में स्थापित करतभये पीछे ब्रह्माजी पार्वती से कहनेलगे ४५ कि हे कालि! महादेवका चन्द्रमाकी किरण के समान जो मुखहै तिस को तू देख पीछे समदृष्टीवाली और स्थिर ऐसी तू होके अग्निकी प्रदक्षिणाकर ४६ तब पार्वती महादेवके मुख को देख शांतिको प्राप्तभई जैसे सूर्यकी किरणों से संतप्त हुई पृथ्वी वृष्टिसे ४७ पीछे फिर ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे कालि! फिर महादेवके मुखको देख तब लज्जासेयुक्त हुई पार्वती ब्रह्माजी से कहनेलगी ४८ कि मैं देखती हूं पीछेपार्वती के संग महादेव ने अग्नि के द्वारा तीनप्रदक्षिणालीं और घृत में धानकी खीलों को मिला पार्वती और महादेवने अग्निमें हवन किया ४९ पीछे क्षयके कारणसे पार्वती ने महादेवजी का चरण ग्रहण किया तब क्या याचना करती है और मैं दूँगा पैरको छोड़ ऐसे महादेव कहतभये ५० तब पार्वती महादेव से कहने लगी कि हे शङ्कर! ख्याति और निजगात्रका सौभाग्य ये दोनों मुझको देवोगे तब आपका पैर छूटेगा ५१ पीछे महादेव कहनेलगे कि हे मानिनि! तेरे कहने के अनुसार मैंने दिया अब मेरेकोछोड़ परन्तु निजगात्रीय सौभाग्य जिसके है वह मैं तुझको कहताहूं ५२ सुन

यह जो पीतबस्त्रों को धारण करने वाले और शंख को धारण करने वाले ऐसे जो यह मधुसूदन नारायणहैं इन्होंका सौभाग्य हमारे गात्रमें प्राप्तहै ५३ ऐसे महादेव के बचनको सुन पार्बती पैर को छोड़ती भई ५४ परन्तु जब पार्बती ने महादेव का चरण पकड़ा तिस कालमें ब्रह्मा चन्द्रमासेभी अधिक पार्बती के मुखको देखता भया ५५ तब देखके क्षोभको प्राप्त हुआ ब्रह्मा का वीर्य स्खलित होनेलगा तब वह वीर्य्य बालु रेतमें बिस्तार से खान करनेलगा ५६ तब महादेव कहनेलगे कि हे ब्रह्मन्! इन ब्राह्मणों के मारने को आप योग्य नहीं हैं ५७ हे पितामह! धन्यरूपवाले और बालखिल्य नामों से बिख्यात ये सब महर्षि उत्पन्न हुये हैं पीछे महादेव के बचन के अन्तमें ५८ अट्ठासी हजार बालखिल्य नामोंवाले ऋषीश्वर पृथ्वी से उठनेलगे पीछे जब बिवाह कर्म्म निवृत्त हुआ ५९ तब महादेव कौतुकागार में प्रविष्टहोके और रात्रिभर पार्बती के सङ्ग रमण करके प्रभात में फिर उत्थित हुये पीछे पर्वतकी पुत्रीको महादेव ग्रहण करके और देवते भूतगण इन्हों करके सहित ६० कृष्णको पर्वतराज पूजताभया पीछे महादेव सबों के सङ्ग पार्बतीको लेके मन्दराचल में प्राप्तभया ६१ पीछे ब्रह्मा बिष्णु आदि देवताओं को प्रणाम और पूजाकर और यथायोग्य बिसर्जन कर पीछे भूतों के सङ्ग महादेव मन्दराचल में बास करता भया ६२ ॥

इतिश्रीवामनपुराणेउमासम्भवेगौरीविवाहोत्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः॥

# चौवनवां अध्याय॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! पीछे पर्वत में बसतेहुये महादेव अपनी इच्छापूर्वक जहां तहां बिचरने लगे और एक समय में बिश्वकर्मा को बुलाके कहनेलगे हे प्रिय ! मेरास्थान बनादे १ पीछे बिश्वकर्मा चौंसठ योजन प्रमाण करके और स्वस्तिक लक्षणों वाला और सुवर्णमय २ और हाथी दांत के तोरणों से रचाहुआ और मोतियों के जालोंसे जड़ाहुआ और शुद्ध बिल्लौरी पत्थर के पैड़ियों से संयुक्त और बैडूर्य संज्ञक मणियोंसे प्रकाशित ३ और सात कक्षाओं वाला और सबप्रकार के सुन्दर गणों से युक्त और कल्याणकारी लक्षणों से संयुक्त ऐसा मकान बिश्वकर्मा रचता भया पीछे तिस स्थान में महादेव गृहस्थ संबंधी यज्ञको करावते भये४ पीछे महादेव पूर्वोक्त मार्ग से व्यवहार बर्तने लगे पीछे सज्जनरूपी ५ जगत् केपति महादेवजी पार्वती के संग बहुतकालतक रमण करके समयको व्यतीत करतेभये ६ पीछे कदाचित् क्रीड़ा के लिये महादेव पार्वती से हे काली ! ऐसा उग्रबचन कहतभये ७ तब क्रोधसे व्याप्त हुई काली महादेवसे कहने लगी बाणसे बींधेहुये अङ्ग पै फिर अंकुर आजाता है और शस्त्र से कटेहुये बनके वृक्ष फिर उगआते हैं ८ परन्तु बाणीसे भयानक बोला हुआ बचन कभीभी नहीं भूलाजाता और बाणीरूपी बाण मुखसे पड़ते हैं जिन्हों से हतहुआ ९ पुरुष रात्रि

दिन शोक करता है इस कारण से पंडितजन बाणी के बाणों का त्याग करें अर्थात् बाणी से किसी को बींधें नहीं सो वह अधर्म आपने अब किया १० इससे हे देवेश! मैं यहांसे उत्तम तप करनेको गमन करती हूँ तहां जाके मैं ऐसा यत्न करूँगी कि फिर मुझको आप काली नहीं कहसकोगे ११ ऐसे पार्वती कहकर और महादेव को प्रणाम कर और महादेवकी आज्ञा लेके आकाश को उड़तीभई पीछे बेग करके टांकी से छिन्न और बिधातासे रचित ऐसे हिमालय पर्वत के शिखरपै प्राप्त होके १२ जया, बिजया, जयन्ती, अपराजिता इनचार देवताओं का स्मरण करतीभई १३ पीछे ये चारों देवते प्राप्तहोके काली को देखने वास्ते कालीकी सुश्रूषाकरने लगे १४ पीछे जब तपमें पार्वती स्थितहुई तब हिमवान् पर्वतकेबनसे शस्त्ररूपी नखोंवाला और दंष्ट्रावाला ऐसा व्याघ्र तिस देशमें प्राप्तहोताभया १५ पीछे चिन्तवन करनेलगा कि जब यह एक पैर से स्थित हुई पार्वती पड़ेगी तब मैं इसको भक्षण करूंगा १६ ऐसे चिन्तवन करतेहुये दत्तदृष्टी वह सिंह मुख को देखताहुआ एक दृष्टी होताभया १७ पीछे ब्रह्माके मंत्रको कहतीहुई देवी सौ वर्षतक तपकरतीभई तब तहां ब्रह्माजी प्राप्त हुये १८ पीछे ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे देवि! मैं प्रसन्नहुआहूँ और तू तपकरके पापोंसेरहित होगईहै इसवास्तेमनो-वांछित बरमांग १९ तब कालीकहनेलगी कि हे कम-लोद्भव! प्रथम इस व्याघ्र को बरके देनेवाले आप हो

तब मैं प्रीति को प्राप्तहूँगी २० तब ब्रह्मा अद्भुतकर्म वाले व्याघ्र को महादेव का गण होजा और ईश्वरकी भक्ति और धर्म करके किसी से जीता नहीं जावे ऐसे बरदेतेभये २१ ऐसे व्याघ्रकेलिये बरदेके ब्रह्माजी कहने लगे कि हे अंबिके! तू भी मनोबांछित बरको मांग मैं तुझको देऊंगा २२ तब काली कहनेलगी कि हे भगवन्! सुबर्ण के समान मेरा बर्ण होजावे यह बरदानकरो २३ तब यही बरदान देके ब्रह्माजी अपने लोक को गये और पार्बती कृष्णकोशकोत्यागतीभई पीछे कमल की केशर के समान कान्तिवाली हुई २४ और तिसकोश से फिर कात्यायनी नाम से बिख्यात देबी उत्पन्नहुई तब पार्बती के समीप में इन्द्र जाके अपने प्रयोजन के वास्ते कहने लगा २५ कि हे देबी! यह कौशिकी मुझको देनीचाहिये और यह कौशिकी मेरीभगिनी होजा और तुम्हारे कोशसे उत्पन्नहुई कौशिकी यह है और मैं कौशिकहूँ २६ तब गिरिजा तिस कौशिकी को इन्द्रकेलिये देतीभई तब देबी की आज्ञा से तिस कौशिकी देबी को ग्रहणकर इन्द्र बेग से बिन्ध्य पर्बत में गमनकरता भया २७ पीछे तहां जाके कहनेलगा हे कौशिकी! तू यहां स्थितरह और देवताओंसे पूजितहुई तू बिन्ध्यबासिनी नामसे बिख्यात रहेगी २८ ऐसे बिन्ध्यपर्बत में देवीको स्थापितकर और सिंहरूपी बाहनको अर्पणकर पीछे इन्द्रकहने लगा कि तू हमारे शत्रुओं को नाशनेवाली हो ऐसे कहकर स्वर्ग में गया २९ और वह पूर्वोक्त

पार्बती ब्रह्माजीसे बर को ग्रहणकर पीछे मन्दराचलमें जाके और महादेवजी को प्रणामकर नम्रतापूर्बक स्थित हुई ३० पीछे श्रीयुक्त महादेवजी भी पार्बतीके संग महा मोहमें हजारवर्षोंतक स्थितरहे ३१ और जब महामोह में स्थित महादेव होगये तब सब लोक उद्धत होनेलगे और सातोंसमुद्र क्षोभको प्राप्त होनेलगे और देवते भयको प्राप्तहुये ३२ पीछे इन्द्रसहित सब देवते ब्रह्म-लोकमें गये पीछेतहांजाके ब्रह्माजी से पूछने लगे कि हे भगवन्! किसवास्ते यह जगत् क्षोभको प्राप्तहुआहै ३३ तब ब्रह्माजी कहनेलगे कि महादेव मोहमें स्थित हो रहे हैं इस कारणसे तीनोंलोक क्षोभको प्राप्तहुये हैं ३४ ऐसे कहकर ब्रह्माजी चुपहुये तब सब देवते इन्द्रसे कहनेलगे कि हे इन्द्र ! चलो हमभी गमन करेंगे जहां तकयह क्षोभ समाप्त नहीं हुआ है ३५ और मोहकी समाप्तिमें जो बली बालक उत्पन्नहोवेगा वह निश्चय देवराजके पदको हरेगा ३६ ऐसे देवताओं के बचनसे इन्द्रको बिबेक उपजा और भावीकर्म के प्रेरण से भयभी नष्टहुआ ३७ । ३८ तब इन्द्र देवते और अग्निको सङ्ग लेकर मन्दराचलमें गमनकर पीछे तिसके शृङ्गमें प्रवेश करनेलगे ३९ परन्तु प्रवेश करनेमें समर्थ नहीं हुये पीछे बहुत कालतक चिन्तवन कर अग्निको प्रवेश करने के वास्ते तैयार करते भये ४० तब प्रवेश करने के समय अग्नि द्वारपर स्थित हुये नन्दीगण को देख और तहां आप नहीं स्थित होने की सामर्थ्य कर अति चिन्ता को

प्राप्तभया ४१ पीछे चिन्तामें मग्नहुआ अग्नि महादेवके स्थानसे निकसतेहुये हंसोंकी पंक्तिको देखताभया ४२ तब यह उपाय उत्तमहै ऐसे जानके हंसके रूपको धारणकरके अग्निदेव महादेवके स्थानमें प्रवेशकर ४३ पीछे सूक्ष्मरूप को धारणकर महादेव के समीपमें स्थित होकर और गम्भीर हँसकर कहनेलगा कि हे देव ! सब देवते द्वारपर स्थित होरहे हैं ४४ तब सुनतेही पार्वती को त्यागकर जल्द उठकर महादेव अग्निके सङ्ग स्थान से निकसता भया ४५ जब महादेव निकसके आने लगे तब सब देवते आनन्दित होनेलगे तब इन्द्र, सूर्य, चन्द्र, अग्नि शिरोंसे पृथिवीमें पड़नेलगे ४६ तब प्रीतिसे महादेव सब देवताओं से कहनेलगा कि हे देवताओ ! अपने कार्यको कहो और प्रणाम से अवनत जो तुमहोरहेहो तुमको उत्तमबर देऊंगा ४७ देवते कहने लगे कि हे देव ! जो देवताओं पर आप प्रसन्नहुये हैं और बरदेनेकी इच्छा करते हैं तो हे ईश्वर! आदि में इस महा मैथुनका त्यागकरो ४८ महादेव कहनेलगे कि हे देवताओ! तुम्हारा बांछित मैंने अङ्गीकार किया परन्तु इस मेरे तेजको कोईक देवग्रहणकरो ४९ पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! ऐसे जब महादेवने बचनकहा तब इन्द्र, चन्द्रमा, सूर्य्य ये देवते पंकमें मग्नकी तरह होनेलगे ५० तब अग्निदेव महादेव के समीपमें प्राप्तहोकर कहने लगा हे शङ्कर ! तेजको छोड़ मैं ग्रहणकरूंगा ५१ पीछे महादेवजी अपने बीर्यको छोड़तेभये तब जैसे तृषित

मनुष्य जलके अभावमें तैलको ग्रहणकरे तैसे ५२ जब महादेवका तेज अग्निने पानकिया तब स्वस्थहुये देवते महादेवकी आज्ञालेकर स्वर्गको गये ५३ जबदेवतेचलेगये तब महादेव भी अपने मन्दिर में प्राप्तहो कर और पार्बती से यह बचन कहनेलगे ५४ हे देवि ! अग्नि आदि देवोंने यहां आके तेरी पुत्रोत्पत्ति निषेधितकरी ५५ तब पार्बती पतिके बचन को सुन और क्रोधसे रक्तनेत्र बना देवताओं को शापदेतीभई ५६ जिससे दुष्टदेवते तेरेऔरस पुत्रको नहीं चाहतेभये इस वास्ते देवते अपनी स्त्रियोंमें पुत्रोंको नहीं जन्मासकेंगे ५७ ऐसे देवतोंको शाप देकर गौरी शौचशालामें प्राप्त भई पीछे मालिनी को बुला स्नानके लिये मतिकरती भई ५८ पीछे मालिनी सुगंधित द्रव्यको ग्रहणकर हाथों से सुवर्ण के समानकांतिवाले पार्बती के अंगपर उद्वर्त्तन करनेलगी ५९ तब जो पसीना और मैल उतरा तिसको गुणवालाजान पार्बती पसीना नहीं मानती भई पीछे स्नान के कारण से जल्द मालिनी गृहको गई ६० जब मालिनी चलीगई तब पार्बती मैलसे हस्ती के मुखके समान मुखवाला और चारभुजाओंवाला और पुष्टछातीवाला और लक्षणोंसे अन्वित ऐसे पुरुष को रचतीभई ६१ पीछे इस बालककोबना पृथ्वी में त्यागती भई और आप सुन्दर आसनपर स्थित रही फिर मालिनी आकर पार्बतीके शिरको धोनेलगी और हँसतीभई ६२ पीछे हे नारद ! कछुक हँसती

मालिनी को देख पार्वती कहनेलगी हे भीरुमन! मन में तू अति हास क्यों करती है ६३ तब मालिनी कहनेलगी इस वास्ते मैं हँसती हूं कि निश्चय तेरे पुत्र होगा यह महादेव ने नन्दीगण के प्रति कहा है ६४ तिसको सुन हे कृशोदरि! मुझको हास्य उपजा है जिससे देवतों ने पुत्रकार्य से महादेव निवारितकिये ६५ ऐसे सुनकर पार्वती विधानसे स्नान करतीभई पीछे स्नानकर महादेव की पूजाकर गृहमें प्राप्तभई ६६ पीछे तिसी जगह भद्रासन पर स्थित होकर महादेवजी भी स्नान करनेलगे तब स्नान के समय आसन के नीचे पार्वती का रचा मलपुरुष स्थित रहा ६७ और महादेवके शरीरका पसीना और भूति सहित जलजो पड़ा तिसके संपर्क से प्रथम सूंड़ के द्वारा फूत्कार पुरुष उत्थितहुआ ६८ तिस को अपनी संतान जानकर पीछे प्रीतिवाला और भग के नेत्रों को हत करनेवाला महादेव तिसको ग्रहणकर नन्दिगण से कहनेलगा ६९ पीछे महादेव स्नानकर और देवताओं की पूजाकर और जल से पितरों की पूजाकर सहस्र नाम का पाठकर पीछे पार्वती के समीपमें प्राप्तहुआ ७० और शूल को धारणकरनेवाले महादेव हँसकर पार्वती से बचन कहने लगे हेप्रिये! गुणों से संयुक्त हुये अपने पुत्र को देख ७१ ऐसे बचन को सुन पार्वती तहां प्राप्तहोकर अद्भुतरूप वाले पुत्र को देखती भई अर्थात् जो पार्वती ने अपने मलका गजमुख पुरुष रचाथा वही दीखा ७२ तब

प्रसन्नहुई पार्वती तिस पुत्रसे मिलतीभई पीछे तिसपुत्र के मस्तक को सूंघ महादेव पार्वती से कहनेलगे ७३ हे देवि! नायक के बिना यह पुत्र उत्पन्न हुआ है इस वास्ते यह बिनायकनाम से बिख्यात होवेगा ७४ और यह सब देव आदिकों के हजारहा बिघ्नों को हरेगा और हे देवि! चराचर सबलोक इसको पूजेंगे ७५ ऐसे कह महादेव पुत्रकेलिये सहाय करने को घटोदर गण को देतभये ७६ और घोरमातृगण बिघ्नकारक भूत ये भी सब महादेवने पार्वतीकी प्रीतिकेलिये प्रापित किये७७और पार्वती अपनेपुत्रको देखकर परम आनन्द को प्राप्तभई पीछे सुन्दर कन्दरावाले मन्दराचल में महादेव के संग रमणकरतीभई ७८ हे बिभो! ऐसे फिर यह कात्यायनी हुई और इसीने पहले शुंभ और नि-शुंभ इन नामोंवाले दोनों दैत्य मारेहैं ७९ ऐसे पर्वत की पुत्री देवीका स्वर्गमें प्राप्तकरने योग्य और यशको देनेवाला और पापों को हरनेवाला और वलको ब-ढानेवाला ऐसा आख्यान तेरेलिये कहा है ८० ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांविनायकोत्पत्ति नामचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

## पञ्चपनवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे द्विजसत्तम! कश्यप के दनुनाम भार्याहुई तिसमें इन्द्रसे भी बलमें अधिकरूप तीन [illegible] हुये १ ज्येष्ठपुत्र शुंभ और दूसरा निशुंभ और [illegible]

महाबलवाला नमुचिपत्रहुआ २ और जो नमुचिनाम
वाला दनुपुत्र है तिसको इन्द्र वज्रके द्वारा मारने की
इच्छाकरताभया ३ परन्तु आवतेहुये इन्द्रको देख ति
सके भयसे सूर्य के रथमें प्रवेश करताभया तब इन्द्रकी
सामर्थ्य नहीं रही ४ पीछे तिसके संग इन्द्र नियम
करताभया और हे नारद! शस्त्र और अस्त्रों से अव
ध्यपने को देताभया ५ पीछे शस्त्र और अस्त्रोंसे अव
ध्यपने को जानकर सूर्य्य के रथको त्याग पाताल
प्राप्त हुआ ६ और वह दानव जलमें मग्न होता हुअ
समुद्रके झागको ग्रहणकर यह कहनेलगा ७ जो दे
वतोंके पति इन्द्रने बचन कहाहै वहीहो ऐसे कह झाग
को हाथों से ग्रहणकरताभया ८ और मुख नासिका ने
कान इन आदि अंगोंको इच्छापूर्वक मार्जन करनेलग
पीछे तिन झागोंके बीचमें इन्द्र अमोघ बज्रको रचत
भया ९ तिस करके रुद्धमुख और नासिकावाला होत
पृथ्वी पर पड़के मरताभया और नियमके नष्ट होजा
से ब्रह्महत्या इन्द्रको लगती भई १० पीछे इन्द्र इन
तीर्थमें प्राप्तहो स्नान करताभया तब पापसे छुटा पी
नमुचिके बीररूप शुम्भ निशुम्भ दोनों भाई क्रोधव
प्राप्त भये ११ पीछे अति उद्योग कर देवताओं क
पीड़ित करनेके लिये आये तब देवते भी इन्द्रको आ
कर निकसतेभये १२ पीछे दोनों दैत्योंने अपने बल
सेना और पियादों सहित सब देवते जीतलिये औ
इन्द्रका हस्ती और यमका भैंसा हर लिया १३ औ

वरुणका छत्र और मरुतकी गदा और पद्म शंख आदि खज़ाने दैत्यों ने हरलिये और हे नारद! चारों तरफ से तिन दोनों के वशमें पृथ्वी होतीभई १४ तब पृथ्वी के पृष्ठ भागपर जाके महासुर रक्तबीजको देखतेभये और तू कौनहै ऐसे कहतेभये तब वह कहनेलगा १५ महिषासुरका मंत्री और रक्तबीज नामसे बिख्यात और महा बीर्य्यवाला और महाभुज ऐसा मैं दैत्यहूं १६ और रुचिर बीर और चंडमुंड नामसे बिख्यात ऐसे दो भृत्य देबीके भयसे जलमें मग्न होरहे हैं १७ और जो हमारा स्वामी महिषासुर दानव हुआहै तिसने बहुत बार युद्धमें देबीका पराजय कियाहै १८ पीछे तिस देबीने बिस्तृतरूप बिन्ध्यपर्बतमें वह दैत्यराज मारदिया और तुम दोनों किसके पुत्रहो और कौन नामों से बिख्यातहो १९ और क्या बीर्यवालेहो और क्या प्रभाव वालेहो यह शिक्षित करो २० शुम्भ निशुम्भ कहनेलगे प्रथम एक बोला कि दनुका औरस पुत्र और शुम्भनामसे बिख्यात मैंहूं और शत्रुओंके गणको नाशनेवाला और मेरा छोटा भ्राता यह निशुम्भ है २१ इसने इन्द्र रुद्र सूर्य्य इन आदि देवते और अन्यभी बलवाले प्राणी जीतलिये हैं २२ सो कहो कैसे महिषासुर मारागया पीछे हम दोनों सेनासे परिबृतहुये तिस देबीको मारेंगे २३ ऐसे तिन दोनोंके कहतेहुये हेनारद! नर्म्मदाके तटपै जलाशयसे चंडमुंड इन नामोंवाले दोनों दानव निकसे २४ पीछे दोनों दैत्य रक्तबीजके

समीप स्थितहो कहनेलगे कि आपके आगे स्थित हुआ यह पुरुष कौनहै २५ रक्तबीज बोला कि देवताओं को पीड़ित करनेवाला शुम्भदैत्यहै और इसीका छोटा भ्राता और निशुम्भ नामसे विख्यात यह दूसराहै २६ इन दोनोंके आश्रयसे दुष्टरूप और महिषासुरको मारनेवाली और त्रिलोकी में रत्नभूत ऐसी देवी को मैं बिवाहूंगा इसमें संशय नहीं २७ चंड कहनेलगा कि तैंने श्रेष्ठ बचन नहीं कहा क्योंकि अब आप स्त्री रत्न के योग्य कहीं है सो इस रत्नके योग्य और प्रभु ऐसे शुम्भके लिये यह स्त्रीरत्न देना उचित है २८ तब शुम्भ के लिये देवीको और निशुम्भके लिये रूपशालिनी कौशिकीको बिवाह देवेंगे ऐसे कहताभया २९ पीछे शुम्भ सुग्रीव नामवाले अपने दैत्यरूप दूतको विन्ध्य बासिनीके समीप भेजताभया ३० वह दूत तहां गमन कर देवीके बचनको सुन फिर उलटा आकर क्रोधसे परिप्लुत हुआ शुम्भ निशुम्भके आगे कहनेलगा ३१ सुग्रीव कहनेलगा हे दैत्यराजाओ! तुम दोनोंके बचनसे देवीको शिक्षा देनेके लिये मैं गया सो तिससे मैं वाक्य कहताभयाहूं ३२ कि हे महाभागे! दानवोंमें मुख्य और त्रिलोकीमें प्रभु ऐसा शुम्भ ऐसे तुझको कहता है ३३ हे सुन्दरि! स्वर्ग पाताल मही पृष्ठ इन्होंमें जितने रत्नहैं तितने मेरे स्थानमें स्थितहैं ३४ और हे कृशोदरि! रत्न भूत तू चंडमुंडसे मुक्त हुई है इसवास्ते मुझको अथवा मेरे छोटे भाई निशुम्भको भज ३५ तब वह हँसतीहुई

देवी मेरेसे कहनेलगी हे सुग्रीव! मेरे बचनको सुन और तैंने सत्य कहाहै कि त्रिलोकीकाईश और रत्नों के योग्य ऐसा शुम्भ है ३६ परन्तु दुर्विनीत वाली जो मैं हूं सो मेरे हृदयमें कछु मनोरथ है कि जो युद्ध में मुझको जीतेगा वही महासुर मेरा पति होगा ३७ और मैंने कहा कि तू गर्व करती है क्योंकि जो देवते और दैत्यों को जीतता भया वह तुझको कैसे नहीं जीतेगा इसवास्ते हे भामिनि! तू उत्थान कर ३८ पीछे वह मेरे से कहने लगी जो बिना देखे मनोरथ किया इसवास्ते मैं तेरा क्या करूं परन्तु तहां जाके शुम्भ के लिये निवेदन कर ३९ तिसके कहने से हे महासुर! मैं आपके समीपमें प्राप्त हुआ और वह अग्निकी कोटि सदृश स्थित है यहां जैसे कुशल मानें तैसे कर ४० पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ऐसे सुग्रीवके बचनको सुन शुम्भदानव दूर स्थित हुये धूम्रलोचन दानव से कहनेलगा ४१ शुम्भ बोला हे धूम्रलोचन! जल्द गमन कर केशोंके आकर्षणसे बिह्वलरूप हुई तिस दुष्ट देवी को यहां प्राप्तकर जैसे अपराध करनेवाली दासीको ४२ और जो तिसकी सहाय करनेवाला महाबलवाला ब्रह्माभीहो तब भी बिना बिचारेही मारने के योग्यहै ४३ ऐसे शुम्भ करके उक्तकिया धूम्राक्ष सौ अक्षौहिणी सेनाको ग्रहणकर बिन्ध्यपर्वत को गमन करता भया ४४ पीछे तहां तिस देवी को देख भ्रांतदृष्टीवाला धूम्राक्ष कहनेलगा हे मूढे! हे कौशिकि! यहां प्राप्तहो और शुम्भ पतिकी इच्छाकर ४५ जो तू

नहीं चलेगी तो केशोंके खैंचने से विह्वलकर तुझको बल से प्राप्तकरूंगा देवीकहनेलगी निश्चय तुझे बलकेद्वारा मुझको लेचलने के लिये शुम्भने भेजाहै सो अबलरूप मैं क्याकरूं जैसे तेरीइच्छाहो तैसे तू कर ४६ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ऐसे देवीकरके उक्त किया बलवान् धूम्रलोचन गदाको ग्रहणकर वेगसे देवीके सन्मुख भागा ४७ तिस आवतेहुये गदावाले सेना सहित धूम्राक्ष को हुंकार से कौशिकी देवी भस्मकरती भई जैसे अग्नि सूखे इन्धन को ४८ पीछे इस चराचर जगत् में हाहाकार होनेलगा पीछे तिस महान् शब्द को शुम्भ भी सुनता भया पीछे बलवाले चण्डमुण्ड दैत्यों को आज्ञा देने लगा ४९ और बलवालों में श्रेष्ठ रुरुदैत्य को आज्ञा देनेलगा पीछे ये तीनों आके प्राप्त हुये और तिन्होंकी हस्ती घोड़ा रथ इन्हों से संकुल और अतुल ऐसी सेना प्राप्तभई ५०।५१ जहां वह कौशिकी देवी स्थितथी पीछे कोटिशत से भी अधिक तिस सेनाके आगमन को देख ५२ कंपितशटवाला सिंहयुद्ध में दानवोंको पाटता हुआ अर्थात् कितनेकों को तलके प्रहार से और कितनेकों को लीला के द्वारामुख से ५३ और कितनेकों को नखों से फाड़ पीछे छाती से मथता भया तब पर्वतकी कन्दरा में बसते हुये सिंह से बध्यमान हुये ५४ और चण्डमुण्ड पीड़ितरूप अपनी सेना को देख पीछे कोप से स्फुरित ओष्ठोंवाले दोनों दैत्य देवीके सन्मुख भागे जैसे पतंग अग्नि के ५५ पीछे रौद्ररूप तिन दोनों दैत्यों के आग-

मन को देख क्रोधसे आप्लुतहुई देवी तीनशिखाओं से संयुक्त भृकुटी को करती भई ५६ पीछे तिस देवी के भृकुटि करके कुटिलरूप मस्तक से तत्काल कराल मुखवाली और योगिनी और शुभा ऐसी काली निकसतीभई ५७ और खट्वाङ्ग तथा भयानक और काला अंजनकोशवाला और उग्र ऐसे तलवारको हाथ में ग्रहणकर ५८ और सूखे अंगोंवाली और रक्तसे भीजे हुये अंगोंवाली और मस्तकपै मालाको धारण करतीहुई ५९ और कितनों को तलवारसे और कितनों को रणमें खट्वाङ्गसे काटतीभई और अतिक्रुद्धहुई रथ, घोड़े, हस्ती, शत्रु इन्होंको सूदन करती भई ६० और ढाल, अंकुश, मुद्गर, घंटासहित धनुष, यंत्रसहित हस्ती इन्होंको देवी अपने मुखमें फेंकतीभई ६१ और चक्र, कूबरसहित रथ, सारथि, अश्व, योधा इन्होंको मुखमें प्राप्तकर चाबने लगी ६२ और एकको केशोंमें और दूसरेको ग्रीवामें ग्रहण करतीभई और अन्यको पैरसे आक्रमणकर मृत्युकेलिये प्रेषण करनेलगी ६३ पीछे स्वामियों सहित सब सेनाका भक्षण देवीने करलिया तब देखकर रुरुदैत्य भाजनेलगा तिसको चंडी देखती भई ६४ पीछे खट्वांगसे महासुरको मारतीभई तब हन हुआ दैत्य पृथ्वीमें पड़ा जैसे छिन्नजड़वाला वृक्ष ६५ पीछे पतितहुये तिसको देख और पशुकी तरह तिसके शरीरसें कानसे लगायत पैरोंतक जो चामथी तिसको उत्कर्तन करती भई ६६ पीछे नानाप्रकारकी जटा से

तिस चामको ग्रहणकर एकांतमें जाकर पृथिवी संयुक्त तिस चामको ग्रहणकर एकांतमें जाकर पृथिवी
में गेरती भई ६७ पीछे वही देवी रौद्ररूपको धारण कर और तेलसे शिरके केशोंको भिगो और आधा
कृष्ण और आधा शुक्ल ऐसे अपने शरीरको धारणकर ६८ कहनेलगी। महादैत्यरूप इस चंडको मारूंगी तब
तिसका चंडमारी नाम बिख्यात हुआ ६९ तब देवी अपनी तिसशक्तिसे कहनेलगी हे सुभगे! तू गमनकर
और चंड मुंडको यहां प्राप्तकर आपही मैं मारूंगी और तिन दोनोंको तू ल्यानेको योग्यहै ७० ऐसे देवीके ब-
चनको सुन देवी चंड मुंडके सन्मुख दौड़ी तब भयसे दोनों दैत्य दक्षिण दिशाको भागनेलगे ७१ जब दोनों
दैत्य बेगसे बस्त्रोंको त्यागकर भागे तब गरुड़के समान उपमावाले बाहनपर चढ़के ७२।७३ जहां जहां वे दैत्य
जावें तहां तहां पृष्ठभागमें देवीभी प्राप्तभई पीछे यह देवी धर्मराजके पौंड़नामवाले भैंसाको देखतीभई ७४
तब तिसके सर्पसरीखे सींगको उखाड़ और हाथ में ग्रहणकर दानवों के संग बेगसे दौड़नेलगी ७५ जब
दोनों दैत्य पृथिवीको त्याग आकाश में गये तब रास-भके बेगकरके यहभी चलनेलगी ७६ पीछे सर्पोंका
राजा और गरुड़ और कर्कोटक सर्प इन्होंको देख स्त-ब्धरोमोंवाली होतीभई ७७ तब भयसे पीड़ित गरुड़
मांसके पिंडके समान होगया और तिसके रौद्ररूप पांखभी सब तर्फ से पड़ते भये ७८ पीछे गरुड़के पंखों
को और कर्कोटक सर्पको ग्रहणकर बेगसे चंड मुंडके

पीछे भागी ७९ तब दोनों दैत्यों को प्राप्तहो कर्कोटक सर्प से बांध बिंध्याचल में प्राप्तभई ८० पीछे तिन दैत्यों को कौशिकी के लिये निवेदनकर और भैरवरूपकोशको ग्रहणकर और दानवेंद्रों के शिरों करके और सुन्दररूप गरुड़ के पंखोंकरके ८१ सुन्दर माला बना चंडके लिये पूजा निवेदन करती भई और सिंह की चामके बालोंको भी समर्प्पण करती भई ८२ और गरुड़ के अन्यपंखों की माला को अपने माथापर बांध मदिरा को और दैत्यों के रक्त को पान करनेलगी ८३ पीछे देवी असुरों में मुख्यरूप चंड और मुंड को ग्रहणकर पीछे क्रोध को प्राप्तहो दोनों के शिरको काटती भई ८४ पीछे तिन दोनों के प्रकाशितरूप शिरों को सर्प से बांध चंडमारी देवी कौशिकी के समीप में जातीभई ८५ तहां जाके कहने लगी हे देवि ! इस शेखरको ग्रहणकर अर्थात् नागराज से बेष्टित और दोनों दैत्यों के शिरों से ग्रथित यह शेखर है ८६ पीछे तिस शेखरको देवी ग्रहणकर चंडा के बिस्तृ-तरूप मस्तक पर बांध के कहनेलगी कि तैंने दारुण कर्म किया ८७ और जो तू चंड मुंड के शिरों से संयुक्त इसशेखर को धारण करती है इसवास्ते संसार में चामुं-डानाम से तू बिख्यात रहेगी ८८ ऐसे तीन नेत्रोंवाली देवीकहकर चंड मुंड के शिरों की मालाको धारनेवाली ८९ और दिशारूप बस्त्रोंवाली ऐसी चंडी से कहनेल-गी कि तू शत्रुओं की इस सेनाको भी मार ९० ऐसे उक्त करी देवी सींग की कोटि से और वेगवाले रासभ से ९१

शत्रुओं की उग्ररूप सेना को और बहुत से राक्षसों को श-
रों के द्वारा मारती भई ९२ पीछे सिंह से और भूतगणों
से निपात्यमान हुये सब दानव ९३ सब दानवों में मु-
ख्यरूप शुंभ के समीप में जाके प्राप्तहोते भये ९४॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांदेवीमाहात्म्येचण्डमुण्डवधोनाम
पञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५५॥

## छप्पनवां अध्याय॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! निहतरूप चंड मुंड को
और बिद्रुत हुई सेना को देख शुंभ अतिबलवाले रक्त-
बीज को आज्ञा देता भया १ तीस किरोड़ अक्षौहिणी
से परिवारित रक्तबीज के आगमन को देवी देखकर २
दोनों शक्तियों के संग माहेश्वरी सिंह के समान शब्द
को करनेलगी और शब्द करती हुई देवी के मुख से ब्र-
ह्माणी उत्पन्न हुई ३ यह हंसयुक्त बिमान पर स्थित
और अक्ष सूत्र कमण्डलु इन्हों को धारण करती भई
और तीन नेत्रोंवाली और बैलपर स्थित और त्रिशूल
को धारण करनेवाली ४ और बड़े सर्पों के कंकणों को
धारण करनेवाली और रौद्ररूप और क्षणभर में जटा
के मंडल को धारण करनेवाली ऐसी माहेश्वरी शक्ति
प्राप्तहुई और मयूरकी पंखों के गहनों को और शक्तिको
धारण करनेवाली ५ और मयूरपर स्थित हुई ऐसी
स्वामिकार्त्तिक की शक्ति उत्पन्न हुई और गरुड़ पर
स्थित हुई और शंख, चक्र, गदा, तलवार ६ धनुष, बाण

इन्हों को धारण करनेवाली और सुन्दर रूपवाली ऐसी विष्णुकी शक्ति उत्पन्न हुई उग्र और महान् ऐसे मूशल को धारण करनेवाली और रौद्ररूपवाली और जाड़ों करके पृथिवीलोक को खोदनेवाली ७ और शेषनाग पर स्थित हुई ऐसी बाराही शक्ति पृष्ठ से उत्पन्न हुई ८ और बज्र, अंकुश इन्हों को हाथों में लिये और अनेक प्रकार आभूषणों से भूषित और हस्तीके पृष्ठ भागपर स्थित ऐसी माहेंद्री शक्ति स्तन मंडल से उत्पन्न हुई ९ और सटों के आक्षेपों से ग्रह, नक्षत्र, तारा इन्हों को फेंकनेवाली और नखोंवाली और दारुणरूप और नारसिंही शक्ति हृदयसे उत्पन्न हुई १० और तिन शक्तियों करके निपात्यमान तिस राक्षस सेनाको देख पीछे शत्रुओं को भय देनेवाली चंडिका बारंबार शब्द को करनेलगी ११ पीछे त्रिलोकी में पूरितहुये तिस अति शब्द को सुन त्रिशूल को धारण कर महादेवजी प्राप्त हुये १२ पीछे देवीके समीपमें प्राप्तहो और प्रणामकर आनन्द से कहनेलगे हे अम्बिके! मैं प्राप्त हुआ हूँ हे दुर्गे! मुझ को आज्ञादे और मैं तेरा क्याकरूँ १३ तिस बाक्य को देवीके देह से उत्पन्न हुई शिवा सुन के कहने लगी हे शंकर! दूतभावसे तू गमनकर १४ शुंभ निशुंभ को जाके कह जो तुम जीवने की इच्छा करतेहो तो हे दुष्टो! सातवें रसातल में गमनकरो १५ और इन्द्र स्वर्ग को प्राप्तहो और पीड़ा से रहित सब देवते होजावें और ब्राह्मण आदि वर्ण यज्ञोंको करें १६ और जो

तुम बलके गर्व से युद्ध करनेकी इच्छाकरतेहो तो यहां
आवो अग्ग्रग्ररूप स्थित हुई मैं मारूँगी १७ जो हे
नारद ! दूतभाव से शिव को युक्त करती भई सो देवीका
शिवदूती नाम हुआ १८ पीछे वे दैत्य महादेवके गर्व
समन्वित बचनको सुन और हुंकारकर जहां देवी स्थित
थी तहां प्राप्त भये १९ पीछे शर, शक्ति, सुन्दर भाले,
फरसा, पत्थर, बन्दूक, पट्टिश २० पाश, पैने और बिस्तृत
ऐसे परिघ इन्हों करके दोनों दैत्य देवी के सन्मुख बर्षा
करते भये २१ पीछे देवी भी सुन्दर धनुष से छुटे हुये
बाणों करके दैत्यों के बाहुओं सहित शस्त्रों को काटती
भई २२ और युद्ध में उग्रपराक्रम वाले अन्य दैत्यों को
भी सैकड़ों बाणों करके मारती भई २३ पीछे जल के
फेंकने से हतप्रभाववाले दैत्योंको ब्राह्मी करती भई और
माहेश्वरी शूल करके दैत्यों की छाती को काटती भई
और बैष्णवी बहुत से दैत्यों को दग्ध करती भई २४
और शक्ति करके कुमारी और बज्र करके ऐंद्री और
तुण्ड करके बाराही और नखों करके नारसिंही और
अट्टाट्टहासों करके शिवदूती ये सब दैत्योंको मारती भई
२५ और त्रिशूल करके रुद्र और फरसा करके गणेश
ये भी दैत्योंको मारतेभये २६ ऐसे देवीके अर्थात् भयंकर
शब्दों से नानाप्रकारके रूपोंकरके निपात्यमान हुये दानव
पृथिवीमें पड़ते भये और तहां भूतों करके दुःखित हो
प्राणोंको त्यागनेलगे २७ और देवते तथा मातृगण
इन्हों से बध्यमान और बिमुक्त केशोंवाले ऐसे दैत्य

होके भयसे रक्तबीज दैत्यके शरणमें गये २८ तब कोप करके स्फुरित ओष्ठोंवाला रक्तबीज उत्तम अस्त्रों को ग्रहणकर और चारोंतर्फ से भूतगणों को द्रावण कर मातृमण्डल में प्रबेश करनेलगा २९ तिस दैत्य के आगमनको देखकर सब मातृगण पैने शस्त्रोंसे रक्तबीज के ऊपर बर्षाकरनेलगे ३० तब जो रक्तबीजके शरीरसे पृथिवीमें बूँदपड़े तिन्होंकेही प्रमाण संख्यासे दैत्य जन्मते भये पीछे तिस आश्चर्य को देख कौशिकीदेवी चण्डासे कहनेलगी ३१ हे चंडे! बड़वानल अग्नि के समान कांतिवाले मुखका बिस्तार इस दैत्यके रुधिर को पीजा ऐसे उक्तकरी देवी बिकरालरूप मुखका बिस्तार करतीभई ३२ एक ओष्ठको आकाशका स्पर्श करा और दूसरे ओष्ठको पृथिवीका स्पर्शकरा स्थित हुई पीछे देवी के केशों से खैंचेहुये दैत्य देवी के मुखमें प्राप्त होनेलगे ३३ और क्षतसे उत्पन्न हुये जो मुखमें पड़नेलगे तिन्हों को शूलसे काटतीभई तब रक्तबीज का रक्त शेषभाव को प्राप्तहुआ और रक्तक्षय होनेपर हीन बलवाला दैत्य होताभया ३४ पीछे तिसको सौ प्रकारसे करतीभई अर्थात् पैने चक्र से काटतीभई जब दानवोंकी सेनाका नाथ वह मारागया तब दानव दीनतर शब्द करनेलगे ३५ और पीछे हे भ्रातः! हम हत हुये ऐसे कहतेहुये फिर बोले कि कहां गमन करता है दोघड़ी तक तो स्थितरह ३६ और ललित रूप केश पाशोंवाले और बिशीर्ण होगयेहैं वर्ण, आभूषण, माला,

बस्त्र जिन्हों के और पृथिवीतल में पतित ऐसे दैत्य देवी के भयसे दौड़नेलगे ३७ और टूटगये हैं कवच, शस्त्र, भूषण जिन्होंकी ऐसी सेनाको देख निशुम्भ दैत्य क्रोध से देवी के समीप जाताभया ३८ पीछे तलवार और प्रकाशित हुई ढालको ग्रहण कर और देवी के रूपको देख शिरको कँपाताहुआ और मोहको स्तंभित करताहुआ और ज्वरसे पीड़ित हुआ ऐसा निशुम्भ दैत्य होताभया जैसे भीतिपर लिखाहुआ चित्र ३९ पीछे स्तंभितरूप तिस दैत्यको देख हँसके देवी वचन कहनेलगी हे दुष्ट! इस बलसे तैंने देवते जीतलिये और इसी बल करके मेरी प्रार्थना करताहै ४० ऐसे देवीके बचनको सुन बहुत काल तक चिंतनकर बचन कहने लगा ४१ हे भीरु! मेरे शस्त्रके पातसे तेरे इस सुकुमार शरीरके सौ टुकड़े होजावेंगे जैसे कच्चे पात्रके जलसे ४२ हे सुन्दरि! यह चिन्तन करता हुआ मैं तेरे पर प्रहार नहीं करताहूं इसवास्ते हे बिस्तृतनेत्रोंवाली! तू मेरे को भज ४३ और मेरी तलवार के पातको इंद्र भी नहीं सहसक्ता इसवास्ते युद्धसे बुद्धिको हटाके अब भी तू मेरीभार्याहोजा ४४ हे नारद! ऐसे निशुंभके बचनको सुनके हँसतीहुई योगीश्वरी निशुंभ को भावगंभीर बाक्यको कहतीभई ४५ हे बीर! शिवकी भार्यामैं हूं सो किसी से जीतीनहींहूं और जो तू भार्याकी इच्छा करताहो तो युद्धमें मुझकोजीत ४६ ऐसे जब देवीने बचन कहा तब तलवारको उठा दैत्य देवीके सन्मुख

बेगसे छोड़नेलगा ४७।४६ नारद! तिस आवतेहुयेको छः बाणोंसे चर्म्म सहित खड्गको काटती भई तब अद्भुत की तरह होताभया ४८ जब खड्ग और चर्म कट गये तब गदाको ग्रहणकर और बायुके समान बेगको धारणकर देवीके सन्मुख भागा ४९ तब आवते हुये दैत्यके गदासहित दोनोंहाथोंको क्षुरप्रशस्त्रसे देवी काटतीभई ५० जब भयंकररूपी दैत्य पृथिवीमें पड़ा तब घंटाआदि सबशक्तियां प्रसन्नहोकर किलकिल ध्वनि करनेलगीं ५१ और आकाशमें स्थित इन्द्रआदि सब देवते कहनेलगे कि हे देवि! जयको प्राप्तहो ५२ तब चारोंतर्फको बाजे बजनेलगे और देवते कात्यायनी के ऊपर पुष्पोंकी बर्षा करतेभये ५३ पीछे पतितहुये निशुंभको देख हे नारद! क्रोधसे व्याप्तहुआ शुंभ सुन्दर हस्तीपर सवारहोकर और हाथोंमें फांसीको ग्रहणकर दौड़ा ५४ तब आवते हुये हस्तीसहित शुंभको देख पीछे अर्द्धरूपी चन्द्रमाके आकार तेजवाले चारबाणों को ग्रहणकरतीभई ५५।५९ पीछे दो दो क्षुरप्रशस्त्रोंसे हस्ती के दोपैरोंको काटतीभई और लीलाकरके हँसती हुई देवी दो क्षुरप्रोंसे हस्तीके मस्तकको काटती भई ६० तब कटेहुये पैरोंकरके हस्ती पड़ताभया जैसे इन्द्र के बज्रसे हिमालय पर्व्वतका शिर ६१ पीछे हस्ती से रहित हुये तिस आवतेहुये शुम्भके कुण्डलों से अलंकृत शिरको बाणसे देवी काटतीभई ६२ जब शिरकटगया तब शुंभदैत्य पृथिवीमें पड़ा जैसे महिषासुर ६३ पीछे

देवीके हाथसे शुम्भकी मृत्युकोसुन प्रसन्नहुये सूर्य, मरुत्, अश्विनीकुमार, वसु इन आदि देवते विंध्यपर्व्वतमें आकर और बिनयसे नम्ररूपी होकर देवीकी स्तुति करनेलगे ६४ देवते कहतेहैं हे भगवति! आपको प्रणामहो हे पापनाशिनि ! आपको प्रणामहो और हे दैत्यगर्बनाशिनि ! आपको प्रणामहो और हे बिष्णु और महादेवको राज्यदेनेवाली ! आपको प्रणामहो ६५ और हे मनोवांछितदायिनि ! आपको प्रणामहो और हे शतमखपादपूजिते ! आपको प्रणामहो ६६ हे महिषविनाशकारिणि ! आपको प्रणामहो और हे हरिहरभास्करस्तुते ! आपको प्रणामहो ६७ हे अठारहबाहुओंवाली! आपको प्रणामहो और हे शुम्भनिशुम्भघातिनि ! आपको प्रणामहो ६८ हे संसारकी पीड़ाको नाशनेवाली! आपको प्रणामहो और हे त्रिशूलिनि ! हे नारायणि ! हे चक्रधारिणि ! आपको प्रणामहो ६९ और सबकालमें हे पृथिवी को धारनेवाली बाराहि ! आपको प्रणामहो हे नारसिंहि ! आपको प्रणामहो ७० हे बज्रधरे ! हे गजध्वजे! तेरे अर्थ प्रणामहो और हे कौमारि ! हे मयूरबाहिनि! आपको प्रणामहो ७१ और हे हंसके बाहनवाली ब्रह्माणि ! आपको प्रणामहो और हे मालाबिकटे ! आपको प्रणामहो और हे सुकेशिनि सुंदरबालोंवाली ! आपको प्रणामहो और हे गर्दभकी पृष्ठपैचढ़नेवाली ! आपको प्रणामहो ७२ और हे सबोंके दुःखोंको हरनेवाली ! हे जगत्में प्रधान रूपवाली ! आपको प्रणामहो

और हे बिश्वेश्वरि ! बिश्वकी रक्षाकर ७३ हे ब्राह्मण देवते इन्होंके शत्रुओं को नाशनेवाली ! आप को प्रणामहो औरहे बरोंको देनेवाली ! हमारेपर प्रसन्नहोजा ७४ और ब्राह्मी भी तूही है और सुन्दर अग्नि के समान गमन करनेवाली माहेश्वरी भी तूहीहै और शक्तिको हाथ में धारणकरनेवाली कुमारी भी तूहीहै ७५ और सुन्दर मुखवाली बाराही भी तूही है और गरुड़के समान गमन करनेवाली और शार्ङ्गधनुष को धारण करनेवाली ऐसी बैष्णवी भी तूही है ७६ और घुरघुरित शब्दवाली और दुर्दश्य ऐसी नारसिंही भी तूही है और बज्र को धारण करनेवाली ऐंद्रीभी तूही है ७७ और महामारी तथा मुरदेपर सवारहोके गमनकरनेवाली चण्डमुंडा भी तूही है और योगसिद्धा योगिनी भी तूहीहै ७८ औरहे त्रिनेत्रे! हे भगवति! आपकेचरणोंसे हमेशा निकसे हुये हम शिरसे अवनतहोरहे हैं ७९ औरजो निरंतर तेरी पूजा और बलिदान करते हैं वे सब अशुभता को नहीं प्राप्त होते हैं ८० ऐसे देवतों से स्तुतिकरी देवीहास्यकर देवता, सिद्ध, महर्षि इन्हों से कहनेलगी ८१ तुम्हारे प्रताप से युद्ध में शत्रुओंका जय मुझको प्राप्तहुआ यह अति अद्भुत है ८२ भक्ति में तत्पर मनुष्य तुम्हारी करी इस स्तुतिको अनुकीर्त्तन करेंगे तिन्हों के दुःस्वप्नकाफल नाशित होवेगा इस में संशय नहीं है और हे देवताओ ! अन्य वांछितरूपी बरको मुझसे ग्रहणकरो ८३ देवते कहते हैं जो देवतों को वरदेनेवाली है तो द्विज, बालक,

गौ इन्होंके हितकेलिये फिर अन्य दैत्योंको दग्धकर हे अग्निके समानशरीरवाली ८४ देवी कहती है रक्तसेउचितमुखवाली मैं फिर होऊंगी जब महादेव के पसीना के पानी से उत्पन्न दैत्यहोवेंगे तब अघासुरके प्रतिपेषण में रतरूप में अष्टत्रर्षिका नाम से विख्यातहोऊंगी ८५ फिर उपजकर कंसका निरादरकर और नंदजी के सकाश से यशोदा में उत्पन्न होऊंगी तब विप्रचित्ति, लवण, शुम्भ, निशुम्भ इन्होंको नाशूंगी ८६ और हे देवताओ! फिर तिष्ययुग में निवास करनेवाली और इन्द्र के गृह में निरीक्ष्यमाणा ८७ ऐसी सात प्रकार से मैं शाकम्भरी नाम से उत्पन्न होऊंगी ८८ और हे देवताओ! फिर शत्रुओं के पक्षको नाशने के वास्ते और मुनियोंकी रक्षाके वास्ते बिंध्याचलमें प्राप्तहूंगी ८९ तब दुर्वृत्त चेष्टावाले दैत्यों को मार फिर देवालयमें प्राप्तहूंगी और जब अरुणाख्य दैत्य उत्पन्न होवेगा तब हे देवताओ! फिर मैं उत्पन्न हूंगी ९० तहां तुम्हारे कल्याणके लिये दैत्यों को मार कर फिर स्वर्गमें प्राप्त होजाऊंगी ९१ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ऐसे बरको देनेवाली देवी कहकर पीछे ऋषिजनोंको प्रणामकर ९२ और प्राणियोंका बिसर्जन कर और सिद्धों के समूह से अनुगम्यमान देवी आकाशको प्राप्त होतीभई ९३ देवीका जयरूपी और पवित्र और परम और मंगलको देनेवाला ऐसा यह पुराण है ९४ और यह सब कालमें नियमवाले मनुष्योंको श्रवण करना योग्य है और सब कालमें यह

राक्षस दोषको हरताहै ऐसे भगवान् कहतेभये ६५ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांदेवीमाहात्म्येशुम्भनिशुम्भवधो नामषट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

## सत्तावनवां अध्याय ॥

नारदने कहा कि हे सुव्रत ! कैसे महिषासुर सहित क्रौंचपर्वत स्वामिकार्त्तिकजीने भेदितकिया यह हे अमितद्युते! बिस्तारकर मुझसे कहो १ पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! पवित्ररूपी और पुरातनी ऐसी कथाको मैं कहताहूं सुन और हे नारद ! स्वामिकार्त्तिकके यशकी वृद्धिको भी सुन २ जो महादेवजीका स्कन्नरूप बीर्य अग्निने पान कियाथा तिसकरके आक्रांत हुआ अग्नि मंद तेजवाला होगया ३ पीछे देवतोंके समीपमें जाता भया पीछे तिन्होंका भेजाहुआ अग्निब्रह्मलोकमेंगया ४ तब गमन करता हुआ अग्नि देवमार्गमें कुटिला देवी को देखता भया ५ पीछे तिसको देखकर कहनेलगा हे कुटिले ! दुर्द्धररूपी यह तेज महादेवने त्यागा है यह त्रिलोकी को दग्ध करसक्ता है ६ इस वास्ते इसको तू ग्रहणकर तेरे उत्तम पुत्र उपजेगा ऐसे अग्निसे उक्त करी कुटिला अपने पुत्रके उत्तम प्रभावको सुनके ७ वह नदी अग्निसे कहनेलगी कि मेरे जलमें तेजको छोड़ पीछे देवी अपूरुषरूपी महादेवके तेजको धारण करती भई ८ पीछे कामचारी अग्नि भी भ्रमता हुआ पांचहजार वर्षोंतक धारण करताभया पीछे मांस, हाड़,

लोहू, मेद, मज्जा, डाढ़ी, त्वचा, रोम, नेत्र, बाल ये भी सब अग्निके सुवर्णमय होतेभये ९ और इसी करके अग्नि हिरण्यरेता नामसे संसारमें विख्यात हुआ और पांच हजार वर्षतक कुटिलाभी १० अग्निके समान उपमा वाले गर्भको धारणकर ब्रह्मलोकमें प्राप्तभई पीछे तप्त हुई कुटिला को ब्रह्माजी देखकर ११ पूछते भये कि किसके सकाश से तुझ में यह गर्भ स्थित हुआ तब कुटिला कहनेलगी कि जो महादेव का वीर्य्य अग्नि ने पान किया था १२ वह असमर्थ हुये अग्नि ने हे सत्तम! मेरे विषे प्राप्त किया है और हे पितामह! तिस गर्भ को धारण करने में पांचहजार बर्ष १३ काल व्यतीत हुआ कभीभी यह नहीं चुवता यह सुन के ब्रह्माजी कहनेलगे हे सुन्दरि! उदय पर्बत में तू गमनकर १४ जहां चारसै कोस बिस्तारवाला और भयानक ऐसा बड़ा शरों का बन है तहां हे सुश्रोणि! बिस्तृतरूपी पर्बत के शिखर में इस बीर्य्य को छोड़ १५ पीछे दशहजार बर्षों के अन्त में बालक उत्पन्न होवेगा तब वह ब्रह्माजी के बचन को सुन पर्बतपै प्राप्त भई १६ पीछे तहां तिस गर्भको मुख के द्वारा त्यागतीभई ऐसे तिस गर्भको त्याग ब्रह्माजी के समीप में गई १७ और जलमयी मंत्र के सकाश से उत्पन्न हुई और सती ऐसी कुटिलादेवी महादेव के तेज से सुवर्ण के समान रूपवाली होती भई १८ और तहां निवास करनेवाले बृक्ष, मृग, पक्षी ये भी तिस तेज से सुवर्ण रूपवाले होते भये पीछे जब दशहजार वर्ष पूर्ण

होगये १९ तब कन्या राशिपै स्थित हुआ सूर्य्य के समान कांतिवाला अथवा उदय हुये सूर्य्य के समान कांतिवाला और कमल के समान नेत्रोंवाला और उत्तान शयन करनेवाला और अति ऐश्वर्य्यवाला और दिव्य रूप शरों में स्थितहुआ ऐसा बालक उत्पन्न हुआ २० और मुख में अंगुष्ठ को प्राप्त किये क्रीड़ाकरने लगा पीछे इसी अंतर में तिस देश में सुन्दर तेजवाले छहों कृत्तिका प्राप्तहुये २१ पीछे इच्छापूर्वक गमनकरते हुये शरों के बन में स्थित बालक को देखतेभये पीछे जहां वह बालक स्थित था तहां दया से संयुक्त हुये गये २२ तब मैं प्रथम प्राप्तहुआ ऐसे सब कहनेलगे पीछे ऐसे बिबाद करने वाले कृत्तिकाओं को देख स्वामिकार्त्तिक छः मुखोंवाला होताभया २३ पीछे स्नेह से सब कृत्तिका तिस बालकको पोषते भये ऐसे तिन्होंसे पुष्टहुआ बालक वृद्धिको प्राप्तहुआ २४ पीछे यह बलवालों में श्रेष्ठ और कार्त्तिकेय नामसे बिख्यात ऐसाहुआ पीछे इसी अंतरमें ब्रह्माजी अग्निसे कहनेलगे २५ कितने प्रमाणवाला तेरापुत्र स्वामिकार्त्तिक अब बर्त्तता है तब अग्नि तिसके बचनको सुन और अपने पुत्रको नहीं जानताभया २६ और कहनेलगा हे देवेश! मैं नहीं जानता कि स्वामिकार्त्तिक कौनहै तब ब्रह्माजी कहनेलगे जो महादेवकातेज तैंने पहलेपानकियाथा २७।२८ तिस तेजसे शरों के बन में बालक उत्पन्नहुआ है तब ब्रह्माके बचनको सुन अग्नि जल्द तहां गमन करताभया २९

और वेगवाले मेढ़ापर चढ़कर कुटिला तिस को देख-
तीभई पीछे कुटिला पूछनेलगी हे अग्ने ! जल्द कहांगम-
नकरते हो ३० तब अग्नि कहनेलगा कि शरबनमें
बालक उत्पन्नहुआहै तिस पुत्रको देखनेके लिये ३१
तब कुटिला कहनेलगी वह मेरा पुत्रहै और अग्नि बो-
ला मेरापुत्र है ऐसे बिबादकरते हुये दोनों को स्वेच्छा-
चारी बिष्णु देखतेभये ३२ और पूछनेलगे किसवास्ते
तुम बिबाद की तरह बोलते हो तब बिष्णु से दोनों
कहनेलगे कि महादेवके बीर्यसे उत्पन्नहुये पुत्रकेलिये ३३
तब बिष्णु बोले कि तुम दोनों महादेव के समीप में
गमनकरो और जो कुछ महादेव कहैं सो करनाचाहिये
इसमें संशय नहीं ३४ ऐसे बिष्णु के बचन को सुन
कुटिला और अग्नि महादेव के समीप में गये और
तहां जाकर कहनेलगे कि हे देव ! वह किसका पुत्रहै ३५
आनंदित मनवाला महादेव तिस वाक्य को सुनकर
अतिमंगल है २ ऐसे कहताहुआ और उद्भुत रोमों
वाला होकर पार्वती से बोला ३६ पीछे पार्वती महादेव
से बोली हे देव ! तिस बालकको देखनेके लिये हम दोनों
गमन करेंगे और जिस के समीप में वह बालक आ-
श्रित होवे तिसीका पुत्र होगा ३७ ऐसे अंगीकार कर
महादेव खड़ेहुये और पार्बती, कुटिला, अग्नि येभी खड़े
हुये ३८ पीछे गमनकर चारों शरबनमें गये तहां कृ-
त्तिकाओंकी गोद में शयन करतेहुये बालकको देखते
भये ३९ पीछे वह बालक तिन्होंके चिंतनको आदर

से मान छःमुखोंवाला बालक योगबिद्या से चार मूर्त्तियों को धारताभया ४० तब कुमारनामवाला बालक महादेवके समीप गया और बिशाख नामवाला बालक पार्बती के समीप गया और शाख नामवाला बालक कुटिलाके समीप गया और नैगमेषनामवाला बालक अग्नि के समीप गया ४१ तब प्रीतिवाले महादेव, पार्बती,कुटिला,अग्नि ये चारों अतिआनन्द को प्राप्तभये ४२ पीछे छहोंकृत्तिका कहनेलगीं कि छःमुखों वाला यह क्या महादेव का पुत्र है तब तिन कृत्तिकाओंसे प्रीतिपूर्बक महादेव कहनेलगे कि बिशेष बचन का श्रवणकीजिये ४३ कार्त्तिकेय नामसे बिख्यात यह तुम्हारा पुत्र होगा और कुमार नाम से बिख्यात यह कुटिला का पुत्र होगा ४४ और स्कंदनामसे बिख्यात यह पार्बती का पुत्र होगा और गुहनाम से बिख्यात यह मेरा पुत्र होगा ४५ और महासेननामसे बिख्यात यह अग्नि का पुत्र होगा और सारस्वत नाम से बिख्यात यह शरवन का पुत्र होगा ४६ ऐसे यह महायोगी पृथ्वीमें ख्यातिको प्राप्तहोवेगा और छः मुखों वाला होनेसे इसको षण्मुख भी कहेंगे ४७ ऐसे कह कर महादेव देवतों सहित ब्रह्माजी का स्मरण करते भये तब ब्रह्माजी और सब देवते प्राप्तहुये ४८ महादेव और पार्बती को प्रणामकर और अग्नि, कुटिला, कृत्तिका इन्हों को प्रीति से देख ४९ पीछे अतिउग्र और छः मुखोंवाला और सूर्यके समान कान्तिवाला

और अपने तेजसे प्रकाशित ऐसे बालकको देवते देखते भये ५० पीछे आश्चर्यसे व्याप्तहुये सबदेवते कहनेलगे हे देव! आपने और देवीने और अग्नि ने देवतों का कार्यकिया ५१ सो उत्थानकरो कुरुक्षेत्र में सरस्वती के समीप जो औजसतीर्थ है तहां गमनकरके इस स्वामि-कार्त्तिक का अभिषेक करेंगे ५२ और हे देव, गन्धर्व, किन्नराओ! यह सेना का पति कियाजावेगा और यह महिषासुर को तथा तारकासुर को मारेगा ५३ पीछे जब इस कर्म को महादेवजी अंगीकार करतेभये तब सब देवते खड़े होकर स्वामिकार्त्तिकको संगले महाफ-लवाले कुरुक्षेत्र में गये ५४ तहां महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि देवते ये सब मुनिगणों के संग स्वामिका-र्त्तिक के अभिषेचन वास्ते उपाय करनेलगे ५५ पीछे सातसमुद्रों का जल, नदीजल, सुन्दरफल, हजारहा त-रहकी ओषधी इन्हों करके महादेव विष्णु आदि दे-वते अभिषेक करनेलगे ५६ और जब दिव्यरूपवाला कुमार सेनानीपने में अभिषेचित किया तब गन्धर्व गानकरनेलगे और अप्सराओं के गण नाचनेलगे ५७ पीछे अभिषिक्त हुये कुमार को पार्वती देखकर स्नेहसे गोदमें बैठा बारंबार मस्तकको सूंघतीभई ५८ पीछे कुमारके मुख को सूंघतीभई जैसे पहले इन्द्र के मुख को अदिति ५९ तब अभिषिक्तरूपी पुत्र को देख म-हादेव भी परमानन्द को प्राप्तभये और अग्नि, कुटि-ला, कृत्तिका ये भी अतिआनन्दित होतेभये ६० पीछे

अभिषिक्त हुये कुमारके लिये इन्द्रके समान पराक्रमवा-
ले चारप्रमथों को देते भये ६१ घंटाकर्ण १ लोहिताक्ष २
दारुणरूप नन्दिषेण ३ और बलवालों में मुख्य कु-
मुदमाली ४ इन नामोंवालों को महादेवजी देतेभये ६२
हे नारद ! महादेव के दिये गणों को देखकर ब्रह्मा
आदि सब देवते अपने २ प्रमथों को देतेभये ६३ ब्र-
ह्माजी स्थाणु गणको और विष्णु सक्रम, विक्रम, परा-
क्रम इन तीन गणोंको देतेभये ६४ उत्क्लेश, पंकज
इन्हों को इन्द्र और इन्द्र, कपिंगल इन्हों को सूर्य और
मणि, सुमणि इन्हों को चन्द्रमा और नन्दि, नन्दिन
इन्हों को अश्विनीकुमार ६५ हुताशन, ज्वालाजिह्व
इन्हों को अग्नि और कुंद, निकुंद, कुसुम इन तीनों को
धाता ६६ चक्र, अनुचक्र इन्होंको त्वष्टा और स्थिर, सु-
स्थिर इन्होंको विधाता और महाबलवाले प्रणिपत्य, जव
ल इन्हों को पूषा ६७ और स्वर्णमाल, घटाह्व इन्हों
को हिमवान् पर्वत और अद्भुत, अतिशृंग इन्हों को
विंध्याचल पर्वत ६८ और सुवर्चा, अतिवर्चा इन्हों को
वरुण और संग्रह, व्यग्रह इन्होंको समुद्र और जय, महा-
जय इन्होंको सर्पराज ६९ और उन्माद, शंकु, कर्ण, पुष्प-
क इन्हों को पार्वती और घस, अतिघस इन्होंको वायु
७० और परिघ, चटक, भीम, दाह, अतिदहन इन पांचों
को सूर्य ७१ और प्रमाद, उन्माथ, कालसेन, महा-
मुख, तालजंघ, नाड़ीजंघ इन छहों को धर्मराज ७२
और सुप्रभ, सुकर्मा इन्हों को विधाता और सुव्रत,

सत्यसंध इन्हों को मित्र ७३ और अनंत, शंकु, पीठ, निशुम्भ, कुमुदोम्बुज, एकाक्ष, कुनखी, बक्रकिरीटी, कलशोदर ७४ सूचीबक्त्र, कोक, नद, प्रहास, प्रियक, अच्युत इन नामोंवाले पन्द्रह गणों को यक्ष ऐसे सब कुमारकेलिये देतेभये ७५ और फलकन्दको कालिंदी और रणोत्कट को नर्मदा और गोदावरी सिद्धयात्र को और तमसा पंकज को ७६ और सीता सहस्रबाहु को और बज्जेला सितोदर को और मन्दाकिनी नन्दी को और बिपासा प्रियंकर को ७७ और ऐरावती चतुर्दंष्ट्र, षोड़श, ब्योषित इन्हों को ऐसे ये नदियां भी अपने अपने पार्षदों को कुमार के लिये देतीभई ७८ और मार्जारी को कौशिकी और कथ, क्रौंच इन्हों को गौतमी ७९ और शतशीर्षको बाहुदा और गोनंद, नंदि इन्हों को बाहा और भीम को भीमरथा और बेगा को सरयू ८० और अष्टबाहु को कोसी और सुबा को गंडकी और चित्रदेव को महानदी और चित्रर को चित्रा ८१ और कुबलय को कुहु और मधुबर्ण को निषद्की और जम्बूक को धूतपापा और श्वेतान को बेला ८२ और सुतार को पर्णाशा और सागरबे को रेवा और सुब्रज को प्रभावा और कनकप्रभ को कांचना ८३ और गृध्रपत्र, अनुरक्त, मनोहर इन्हों को बिमला और महारावको धूतपापा और बिद्रुम, सन्नि को बेणा ८४ और सुप्रसाद, सुबेणु, जिष्णु इन्हों को ओघवती और यज्ञबाहु को बिशाला, सरस्वती ऐसे

ये भी अपने अपने गणों को कुमार के लिये देतीभई ८५ और इन्द्रके समान बलवाले दशपुत्रोंको कुटिला देतीभई ८६ और कराल और श्वेतकेश, जटाधर, कृष्णकेश, मेघनाद, चतुर्दंष्ट्र, बिद्युज्जिह्व, दशानन, सोमाप्यायन, देवयाजी ऐसे कुटिलाके पुत्रोंके नाम भये ८७ और हंसास्य, कुंजररव, बहुग्रीव, हयानन, कूर्मग्रीव इन पांचोंको कुमार के लिये कृत्तिका देतीभई ८८ और स्थूलजंघ,कुंडबक्क, लोहजंघ, महानन, पिंडारक इनपांचोंको कुमारकेलिये ऋषि देतेभये ८९ और नागजिह्व, चन्द्रभास, पाणिकूर्म, सशिक्षक,बासवक्क, सजंबूक इन्हों को कुमार के लिये पृथूदक तीर्थ देताभया ९० और सुचक्राख्यको चक्रतीर्थ और मकराख्य को गयाशिर तीर्थ और पंचशिखनाम गणको कनखल देताभया ९१ और बंधूदत्तको बालशिख और बालशालको पुष्कर तीर्थ और माहिषक को औजस तीर्थ और पिंगलको मानस तीर्थ ९२ और रुद्रको औशनस तीर्थ और अन्य नाम वालों को मातृगण देता भया और सोम तीर्थ बसुदाक को और प्रभासतीर्थ नन्दिनी को ९३ और इन्द्रतीर्थ बिशोषाको और उदपान, ओघनिस्वन इन्होंको देताभया ९४ और गीतप्रिया, माधवी, तीर्था, स्मितानना इन चार मातृयों को सप्तसारस्वत देतेभये ९५ और शक्रचूड़ाको नागतीर्थ और पलासदा को कुरुक्षेत्र और चण्डशिलाको ब्रह्मयोनितीर्थ और भद्रकाली त्रिविष्टपको ९६ और पेंडी,भेंडी, योषभेंडी इन्हों

को बरदलोचन और सोपानीयाको पृथ्वी और छात्तिका को मानसह्रद ९७ और शतघंटा, शतानन्दा, उलूखल, मेखला, पद्मावती, माधवी इन्हों को बदरिकाश्रम ९८ और सुखमा, एकचूड़ा, धर्मबना, उत्काथनी, देवमित्रा इन्होंको केदारजी ९९ और सुनक्षत्रा, कद्रुला, सुमंगला, देवमित्रा, चित्रसेना इन्होंको महानद १०० और कोटरा, ऊर्ध्वबेणी, श्रीमती, बहुपुत्रिका, यक्षिता, कमलाक्षी इन्हों को प्रयाग जी १०१ और सूपला, मधुकुम्भा, रूयाति, दहदहा, परा, स्नेटकटा इन्हों को सर्वपापबिमोचनतीर्थ १०२ और सन्तानिका, बिकलिका, क्रमुचत्वर बासिनी, जलेश्वरी, कुकुटिका, सुदामा, लोहमेखला १०३ बपुष्मती, उल्मुकाक्षी, कौंकनासा, महाशिनी, रौद्री, मार्जारिका, तुंडा इन्होंको श्वेततीर्थ १०४ ऐसे ये सब अपने अपने गणोंको कुमारके लिये देतेभये पीछे इन नामवाले गणोंको देख महात्मारूपी गरुड़भी महाबेग वाले अपने पुत्र मयूरको और ताम्रचूड़ और अरुण ऐसे पुत्रको देता भया १०५ और अग्नि शक्ति को और पार्बती बस्त्रों को और गुरु दण्ड को और कुटिला कमण्डलु को और बिष्णुजी माला को और महादेवजी पताका को और इन्द्र अनुरक्तरूपी कण्ठ गत हारको १०६ और गणों से परिबृत और मातृगणों से उपागत और मयूर पर स्थित और उत्तम शक्तिको हाथमें धारण कियेहुये और महादेव करके देवतोंका सेनानी हुआ ऐसा सूर्यसे भी ज्यादह

प्रकाशित शरीर वाला शोभित होता भया १०७ ॥

इतिश्रीवामनपुराणभाषायांकार्त्तिकेयोत्पत्तिर्नाम सप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

## अट्ठावनवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! जब सब देवतों ने सेना का स्वामी कुमार बनादिया तब महादेव, पार्वती, अग्नि इन्हों को प्रणामकर १ और छहोंकृत्तिका और कुटिला को शिर से प्रणामकर और ब्रह्माजी को प्रणामकर यह वचन कहने लगा २ कुमार कहता है हे भागवत देवताओ! आपको प्रणामहो हे तपस्वियो! आपको प्रणामहो और आप के प्रसाद से महिष, तारक इन शत्रुओं को मैं जीतूँगा ३ और हे देवताओ! मैं बालकहूँ इसवास्ते कुछभी कहने को नहीं जानता और ब्राह्मणों के संग अनुज्ञात हुये मुझको अभी प्राप्त करो ४ ऐसे जब कुमार ने बचन कहा तब पापों से रहित सब देवते कुमार के मुख को देखने लगे ५ और पुत्र के स्नेह से महादेव भी खड़े होकर पीछे ब्रह्माजी के हाथ को ग्रहण कर कुमारके समीप में प्राप्त हुये ६ पीछे पार्वती कुमार से कहने लगी हे पुत्र! हे शत्रुहन! यहां आकर प्राप्तहो इस विष्णु के लोक नमस्कृत चरणों में प्रणामकर ७ पीछे हँसकर कुमार बोला हे माता! यह कौन है मुझ से वर्णनकर जिसका आदर के लिये मेरेसरीखेजन प्रणाम करते हैं ८ तब कुमार से पार्वती बोली कि जब तू इस

को बरदलोचन और सोपानीयाको पृथ्वी और छालिका को मानसह्रद ९७ और शतघंटा, शतानन्दा, उलूखल, मेखला, पद्मावती, माधवी इन्हों को बदरिकाश्रम ९८ और सुखमा, एकचूड़ा, धर्मबना, उत्काथनी, देवमित्रा इन्होंको केदारजी ९९ और सुनक्षत्रा, कद्रुला, सुमंगला, देवमित्रा, चित्रसेना इन्होंको महानद १०० और कोटरा, ऊर्ध्वबेणी, श्रीमती, बहुपुत्रिका, यक्षिता, कमलाक्षी इन्हों को प्रयाग जी १०१ और सूपला, मधुकुम्भा, ख्याति, दहदहा, परा, स्नेटकटा इन्हों को सर्बपापबिमोचनतीर्थ १०२ और सन्तानिका, बिकलिका, क्रमुचत्वर बासिनी, जलेश्वरी, कुकुटिका, सुदामा, लोहमेखला १०३ बपुष्मती, उल्मुकाक्षी, कौंकनासा, महाशिनी, रौद्री, मार्जारिका, तुंडा इन्होंको श्वेततीर्थ १०४ ऐसे ये सब अपने अपने गणोंको कुमारके लिये देतेभये पीछे इन नामवाले गणोंको देख महात्मारूपी गरुड़भी महाबेग वाले अपने पुत्र मयूरको और ताम्रचूड़ और अरुण ऐसे पुत्रको देता भया १०५ और अग्नि शक्ति को और पार्बती बस्त्रों को और गुरु दण्ड को और कुटिला कमण्डलु को और बिष्णुजी माला को और महादेवजी पताका को और इन्द्र अनुरक्तरूपी कण्ठ गत हारको १०६ और गणों से परिबृत और मातृगणों से उपागत और मयूर पर स्थित और उत्तम शक्तिको हाथमें धारण कियेहुये और महादेव करके देवतोंका सेनानी हुआ ऐसा कुमार सूर्यसे भी ज्यादह

प्रकाशित शरीर वाला शोभित होता भया १०७॥
इतिश्रीवामनपुराणभाषायांकार्त्तिकेयोत्पत्तिर्नाम सप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५७॥

---

# अट्ठावनवां अध्याय॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! जब सब देवतों ने सेना का स्वामी कुमार बनादिया तब महादेव, पार्वती, अग्नि इन्हों को प्रणामकर १ और छहोंकृत्तिका और कुटिला को शिर से प्रणामकर और ब्रह्माजी को प्रणामकर यह बचन कहने लगा २ कुमार कहता है हे भागवत देवताओ! आपको प्रणामहो हे तपस्वियो! आपको प्रणामहो और आप के प्रसाद से महिष, तारक इन शत्रुओं को मैं जीतूँगा ३ और हे देवताओ! मैं बालकहूँ इसवास्ते कुछभी कहने को नहीं जानता और ब्राह्मणों के संग अनुज्ञात हुये मुझको अभी प्राप्त करो ४ ऐसे जब कुमार ने बचन कहा तब पापों से रहित सब देवते कुमार के मुख को देखने लगे ५ और पुत्र के स्नेह से महादेव भी खड़े होकर पीछे ब्रह्माजी के हाथ को ग्रहण कर कुमारके समीप में प्राप्त हुये ६ पीछे पार्वती कुमार से कहने लगी हे पुत्र! हे शत्रुहन! यहां आकर प्राप्तहो इस विष्णु के लोक नमस्कृत चरणों में प्रणामकर ७ पीछे हँसकर कुमार बोला हे माता! यह कौन है मुझ से वर्णनकर जिसका आदर के लिये मेरेसरीखेजन प्रणाम करते हैं ८ तब कुमार से पार्वती बोली कि जब तू इस

कर्म को करचुकेगा तब यह गरुड़ध्वज महात्मा तेरे लिये योग कहेगा ९ और इसके केवल माहात्म्य को तेरा पिता महादेव मुझसे कहता भयाहै कि इस देव से उपरान्त अन्य कोई देव नहीं है १० ऐसे जब पार्वती ने कुमारके प्रति कहा तब विष्णु को प्रणामकर और अंजलीबांधकर कुमार विष्णु से आज्ञा लेनेलगा ११ अंजली बांधे स्थित हुये कुमार को स्वस्तिबाचन करा विष्णु भगवान् आज्ञा देतेभये १२ नारद कहनेलगा जो स्वस्तिबाचन बिष्णुजी कुमारके लिये करते भये वह हे विप्रर्षे! मुझसे कहनेको आप योग्यहो १३ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! जो कुमारकी जयके लिये और महिषासुरके बध के लिये जो पवित्ररूपी स्वस्तिबाचन को भगवान् कहते भये वह सुन १४ और कमल से उपजनेवाले और रजोगुण से व्याप्त ऐसे ब्रह्माजी तेरा कल्याण करें और चक्र से अंकित हाथवाले और अज ऐसे विष्णु तेरा कल्याण करें १५ और पार्बती सहित महादेव तेरा कल्याण करें शिखिबाहनवाला अग्नि तेरा कल्याण करे १६ और सब काल में सूर्य तेरा कल्याण करे और चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर ये भी सब काल में तेरा कल्याण करें १७ और मरीचि, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, क्रतु, बसिष्ठ, भृगु, अंगिरा, मार्कंडेय ये सब तेरा कल्याण करें १८ विश्वेदेवा, अश्विनीकुमार, साध्य, मरुद्गण, बारहसूर्य, एकादश रुद्र, यक्ष, पिशाच, सबबसु, किन्नर ये भी सब

तेरा कल्याण करें १९ और नाग, गरुड़, नदियां, सब तलाव, तीर्थ, पवित्र स्थान, समुद्र और महाबलवाले भूतगण, गणेंद्र येभी सब तेरा कल्याणकरें २० और दो पैरोंवालों से और चार पैरोंवालों से तेरा कल्याणहो और बहुत पैरोंवाले और पैरोंसे रहित ऐसों सेभी तेरा कल्याण हो २१ और पूर्वदिशाकी रक्षा इन्द्रकरें और दक्षिण दिशाकी रक्षा धर्मराजकरे २२ और पश्चिम दिशाकी रक्षा वरुणकरे और उत्तर दिशाकी रक्षा कुबेर करे २३ और अग्नि कोणकी रक्षा अग्नि करे और नैर्ऋत कोणकी रक्षा नैर्ऋत करे २४ और बायव्य कोणकी रक्षा बायु करे और ऐशान कोण की रक्षा शिवकरे और ऊपर से महादेवजी रक्षा करे और नीचे से शेषनाग रक्षा करे २५ और मुसली और लांगली और चक्री और धनुष्मान् ऐसे विष्णु अन्तरों में रक्षा करें २६ और समुद्र में वाराहजी रक्षा करे और दुर्ग स्थान में नृसिंहजी रक्षाकरे और सामबेद की ध्वनिवाले और श्रीमान् ऐसे माधव चारों तरफ से रक्षाकरें २७ पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! ऐसे स्वस्तिबाचन से युक्त और शक्ति को धारण करनेवाला और अग्रणी ऐसा कुमार सब देवतों को प्रणामकर पृथ्वी से आकाश में प्राप्त हुआ २८ पीछे जो आनन्दित हुये देवताओं ने अपने अपने गणदिये थे वेभी सब कुमारके संग आकाशमार्ग में चलने लगे २९ और सब मातृगणभी दैत्यों को मारने के लिये कुमार के संग आकाशमार्ग में चलने लगे ३० पीछे बहुतदीर्घ

माग में गमनकर गणोंसे कुमार कहने लगा हे महावीर्यो ! जल्द भूमि में उतरो ३१ तब कुमारके बचनको सुन पृथ्वी में उतरके पर्वत के समीपमें प्राप्तहो भयंकर शब्दको करनेलगे ३२ वह शब्द सम्पूर्ण पृथ्वीको और आकाश को पूरितकर समुद्र का छिद्र के द्वारा दैत्यों के स्थानरूपी पाताल में प्राप्त भया ३३ तब महिष, तारक, बिरोचन, कुम्भ, निकुम्भ इन राक्षसों ने सुना ३४ पीछे बज्रपातके समान दृढ़शब्द को सुन के यह क्या हुआ ऐसे चिन्तवन करते हुये दैत्य जल्द अन्धकके समीपमें गये ३५ और अन्धकसे मिलके उद्विग्न हुये सब दानव तिस शब्द बिषयक सलाह करनेलगे ३६ और दैत्यों की सलाह होने के समयमें शूकरके मुखके समान मुख वाला पातालकेतु दैत्य पाताल में प्राप्त भया ३७ और बाणसे बींधा हुआ और दुःखित और बारबार कम्पमान ऐसा पातालकेतुदैत्य अन्धक के समीपमें दीन बचन कहताभया ३८ पातालकेतु कहने लगा हे दैत्येंद्र! गालव के आश्रममें मैंने गमनकिया और तिसको बलसे मारने के लिये मैंने यत्नकरना चाहा ३९ परन्तु जब शूकरके रूपसे तिस मुनी के आश्रम बिषे मैं प्रवेश करने लगा तब मैं तिसको नहीं जानता जिसने मेरे बाणमारा ४० तब मैं तिसके भयसे तिस आश्रम से निकस भागा परन्तु वहभी मेरे संग भागा ४१ और अश्व के समान शब्द मैंने सुना और ठहर ठहर ऐसे वह मेरे पृष्ठभाग में कहता भया ४२ तिस के भयसे दक्षिण के समुद्र में

मैं प्राप्त हुआ सो आदिमें तहां स्थित होनेवाले अनेक प्रकार के रूप और आकृतिवाले नरोंको देखता भया ४३ सो कितनेक मेघके समान गर्ज्जते हैं और कितनेक तिन्होंको देखकर गर्ज्जते हैं और अन्य कहते हैं कि निश्चय हम महिषासुरको मारेंगे ४४ और अति तेजवाले अन्य कहतेहैं कि हम तारकासुर को मारेंगे सो हे असुरेश्वर! तिस शब्दको सुन मुझको दुःख उपजताभया ४५ तब महासमुद्रको त्यागकर भयसे पीड़ित हुआ मैं यहां पतित हुआहूँ क्योंकि पृथिवी में जो विस्तृतरूपी गर्त्त है तहां वह बली पड़ताभया ४६ और तिसके भयसे अपने हिरण्यपुर को छोड़ आपके समीपमें प्राप्तहुआ हूँ आप मुझपर प्रसाद करने को योग्य हैं ४७ ऐसे सुनकर मेघस्वर के समान बाक्य को अन्धक कहता भया हे दानव! तिससे तू मतडरै तेरी रक्षा करनेवाला मैं हूँ यह सत्यजान ४८ तब महिष, तारक और बलवालों में श्रेष्ठ बाणासुर ये सब अन्धकसे नहीं कहकर ४९ अपनी अपनी सेनाकोले युद्ध के लिये पृथिवी पर निकसते भये जहां दारुण आकारवाले गण महाशब्द को कररहे थे ५० हे नारद! तहां शस्त्रोंको धारनेवाले और अपनी अपनी सेनाओं से संयुक्त ऐसे दैत्यआतेभये पीछे दैत्यों के आगमनको देख स्वामिकार्त्तिकजी के गण ५१ बेगसे सन्मुख दौड़ने लगे और ऐसेही मातृमंडलभी दौड़े और तिन सबों के अगाड़ी परिघ को धारण करनेवाला स्थाणु ५२

दैत्यों की सेनाको मारनेलगा जैसे क्रुद्धहुआ महादेव पशुओंको ऐसे मारतेहुये स्थाणु को देख कलशोदर गण ५३ कुठारको हाथ में ग्रहणकर सब दैत्योंको मारने लगा और भयकारी ज्वालामुख गणभी हाथसे दैत्य को ग्रहणकर ५४ रथ, हस्ती, अस्त्र इन्होंसहित दैत्यके मुखमें फेंकताभया और पाशको हाथमें धारण करने वाले धर्मराज भी ५५ वाहन सहित दैत्य को उठा समुद्र में फेंकतेभये और मूसल को धारण करनेवाला शंकुकर्ण हलसे दानवोंको खैंच ५६ चूर्णित करनेलगा और पाश, खड्ग, चर्म्म इन्हों को धारण करनेवाला और बीर और गणों का स्वामी ऐसा पुष्पदन्त ५७ दो व तीन व बहुत प्रकारसे दैत्योंको काटनेलगा और पिङ्गलगण दंडको उठा जहां जहां भागता भया ५८ तहां तहां दैत्योंका समूह दीखता भया और गणों का स्वामी सहस्रनयन शूलको भ्रमाकर ५९ अश्व, रथ, हस्ती इन्हों सहित दैत्योंको मारनेलगा और भीमगण भयानक शिलाओंकी बर्षासे और सपुरगण शरवाले दैत्यों को ६० मारनेलगा जैसे इन्द्र बज्र की बृष्टि से पर्वतोंको और रौद्ररूप और गाड़ाका चक्रके समान नेत्रोंवाला और बली ऐसा पञ्चशिख गण ६१ वेगसे मुद्गर को भ्रमाकर बलसे शत्रुओं को मारता भया और गिरिभेदीगण हाथके तलसे हस्ती सहित पीलवान को ६२ और सारथी सहित रथको भस्मकरता भया और नाड़ी, जंघगण, पैरोंकी लात और मुक्का,गोड़ा

इन्हों से दैत्यों को मारता भया ६३ और बज्रसमान
कीलों से दैत्योंको मारनेलगा और कूर्म्मग्रीवगण ग्रीवा,
चरण,शिर इन्हों करके ६४ लण्ठनकर्मके द्वारा बाहनों
सहित दैत्योंको मारता भया और कलिप्रिय, पिंडारक
गण, तुण्ड और शृंगोंकरके युद्ध करतेहुये दानवों को
युद्धमें बिदारण करनेलगा ६५ पीछे गणेश्वरों करके
बध्यमान अतुलरूप सेना और महिषासुर, तारकासुर
ये सब भागनेलगे ६६ पीछे दानवों के उत्तम शस्त्रों से
बध्यमान सबगण चारोंतरफ से परिवारित हो और
कुपितहुये युद्धकरनेलगे ६७ पीछे हंसास्यगण पट्टिशसे
महिषासुरको ताड़ताभया और षोड़शाक्षगण त्रिशूल
से और शतशीर्षगण उत्तम तलवार से ६८ और श्रुता-
युधगण गदाकरके और बिशोकगण मुसल करके और
बंधदत्तगण शूलकरके दैत्यके माथा में मारतेभये ६९
तथा अन्यपार्षदोंनेभी शूल,शक्ति,ऋष्टि,पट्टिश इन्हों से
ताड़ित किया परन्तु नहीं कांपताभय जैसे मैनाकपर्ब-
त ७० और भद्रकाली ने और उलूखलाने और एकचू-
ड़ाने तारकासुर ताड़ित किया तथा परमास्त्रों से दारित
किया ७१ ऐसे प्रमथगण और मातृगणों से ताड्यमा-
न दोनों दैत्य क्षोभको नहीं प्राप्तहुये परन्तु गणोंको क्षो-
भित करतेभये ७२ पीछे महिषासुर गदा तथा प्रहारों
करके गणोंकोजीत पीछे जल्द कुमारके प्रति दौड़ा ७३
तब आवते हुये महिषासुर को देखकर सुचक्राक्षगण
चक्रको उठा महिषासुरको रोकतेभये ७४ पीछे गदा

दैत्यों की सेनाको मारनेलगा जैसे क्रुद्धहुआ महादे
पशुओंको ऐसे मारते हुये स्थाणु को देख कलशोद
गण ५३ कुठारको हाथ में ग्रहणकर सब दैत्योंको मारने
लगा और भयकारी ज्वालामुख गणभी हाथसे दैत्य
को ग्रहणकर ५४ रथ, हस्ती, अस्त्र इन्होंसहित दैत्यको
मुखमें फेंकताभया और पाशको हाथमें धारण करने
वाले धर्मराज भी ५५ वाहन सहित दैत्य को उठा
समुद्र में फेंकतेभये और मूसल को धारण करनेवाले
शंकुकर्ण हलसे दानवोंको खैंच ५६ चूर्णित करनेलगा
और पाश, खड्ग, चर्म्म इन्हों को धारण करनेवाले
और बीर और गणों का स्वामी ऐसा पुष्पदन्त ५
दो व तीन व बहुत प्रकारसे दैत्योंको काटनेलगा औ
पिङ्गलगण दंडको उठा जहां जहां भागता भया ५
तहां तहां दैत्योंका समूह दीखता भया और गणों
स्वामी सहस्रनयन शूलको भ्रमाकर ५९ अश्व, र
हस्ती इन्हों सहित दैत्योंको मारनेलगा और भीमग
भयानक शिलाओंकी बर्षासे और सपुरगण शरवा
दैत्यों को ६० मारनेलगा जैसे इन्द्र बज्र की बृष्टि
पर्वतोंको और रौद्ररूप और गाड़ाका चक्रके सम
नेत्रोंवाला और बली ऐसा पञ्चशिख गण ६१ बेग
मुद्गर को भ्रमाकर बलसे शत्रुओं को मारता भ
और गिरिभेदीगण हाथके तलसे हस्ती सहित पी
वान को ६२ और सारथी सहित रथको भस्मकर
भया और नाड़ी, जंघगण, पैरोंकी लात और मुक्का.गो

इन्हों से दैत्यों को मारता भया ६३ और बज्रसमान कीलों से दैत्योंको मारनेलगा और कूर्म्मग्रीवगण ग्रीवा, चरण,शिर इन्हों करके ६४ लण्ठनकर्मके द्वारा बाहनों सहित दैत्योंको मारता भया और कलिप्रिय, पिंडारक गण, तुण्ड और शृंगोंकरके युद्ध करतेहुये दानवों को युद्धमें बिदारण करनेलगा ६५ पीछे गणेश्वरों करके बध्यमान अतुलरूप सेना और महिषासुर, तारकासुर ये सब भागनेलगे ६६ पीछे दानवों के उत्तम शस्त्रों से बध्यमान सबगण चारोंतरफ से परिवारित हो और कुपितहुये युद्धकरनेलगे ६७ पीछे हंसास्यगण पट्टिशसे महिषासुरको ताड़ताभया और षोड़शाक्षगण त्रिशूल से और शतशीर्षगण उत्तम तलवार से ६८ और श्रुतायुधगण गदाकरके और बिशोकगण मुसल करके और बंधुदत्तगण शूलकरके दैत्यके माथा में मारतेभये ६९ तथा अन्यपार्षदोंनेभी शूल,शक्ति,ऋष्टि,पट्टिश इन्हों से ताड़ित किया परन्तु नहीं कांपताभय जैसे मैनाकपर्वत ७० और भद्रकाली ने और उलूखलाने और एकचूड़ाने तारकासुर ताड़ित किया तथा परमास्त्रों से दारित किया ७१ ऐसे प्रमथगण और मातृगणों से ताड्यमान दोनों दैत्य क्षोभको नहीं प्राप्तहुये परन्तु गणोंको क्षोभित करतेभये ७२ पीछे महिषासुर गदा तथा प्रहारों करके गणोंकोजीत पीछे जल्द कुमारके प्रति दौड़ा ७३ तब आवते हुये महिषासुर को देखकर सुचक्राक्षगण चक्रको उठा महिषासुरको रोकतेभये ७४ पीछे गदा

और चक्र से अङ्कित हाथोंवाले दैत्य और गण लाघ-
वको दिखातेहुये आपस में युद्धकरनेलगे ७५ पीछे म-
हिषासुर गण के लिये गदाको छोड़ताभया और सुच-
क्राक्षगण दैत्यके लिये चक्रको छोड़ताभया ७६ तब
तीक्ष्णरूप गदाकोकाट चक्र महिषासुरके समीप आया
तब सब दैत्य हाहाकार पुकारे कि महिषासुर मरा ७७
तिस शब्दको सुन प्रासको उठा बेगवाला बाणासुर
दौड़ा पीछे पांचसौ ५०० मुक्कों से चक्रको तोड़ ७८
पीछे पांचसौ ५०० बाहुओं से सुचक्राक्ष को बांधता
भया और बलवान् भी सुचक्राक्ष बाणासुर ने प्रयत्न
से रहित करदिया ७९ पीछे सुचक्राख्यको और सुच-
क्रको बाणासुरसे बँधेहुये देख पीछे गदाको हाथमेंधार-
णकर बलवाला मकराक्ष तहां प्राप्तहुआ ८० पीछे बा-
णासुरके मस्तकमें गदा मारताभया पीछे वह भी तिस
महात्मा से संत्यक्त लज्जित होता भया ८१ पीछे तिस
संग्रामको त्यागकर शालग्रामके पासगया और मकरा-
क्षकरके ताड़ितहुआ बाणासुर पराङ्मुख होताभया ८२
हे नारद! ऐसे दैत्यों की सेना के त्रिभाग होगये पीछे
भग्नहुई अपनी सेनाको तारकासुर देखकर तलवारको
हाथमें धारणकर गणेश्वरों के प्रति दौड़ा ८३ पीछे तिस
उत्तमतलवार से ताड़ितहुये हंसास्यआदि नामोंवाले
गण और मातृगण पराजितहोकर भयसे आर्त्तहुये कु-
मारकी शरण में गये ८४ तब भग्न होते हुये गणों को
देखकर और तलवारको लिये तारकासुर को आतेहुये

देखकर स्वामिकार्त्तिकजी शक्तिसे हृदयमें ताड़ना देते भये तब भिन्न मर्म्मवाला तारकासुर पृथिवी में पड़ा ८५ जब भग्नगर्ववाला तारकासुर मरगया तब हे नारद! महिषासुर भी भय से पीड़ित हुआ और युद्धभूमि को त्यागकर हिमाचल पर्वत में गया ८६ और जब तारकासुर मारागया और महिषासुर हिमालयपर्वत को चलागया तब बाणासुर भय से समुद्र में प्रवेशकरताभया तब दैत्योंकी सेना गणोंने पराजितकरी अर्थात् मारदी ८७ ऐसे कुमार युद्ध में तारकासुर को मार और शक्तिको ग्रहणकर और अतिवेगसे मयूरपर स्थित होकर महिषासुरको मारने के लिये चला ८८ तब पृष्ठभाग में शक्ति को धारण करनेवाले कुमार के आगमन को देखकर महिषासुर कैलास और हिमाचलको त्याग कर क्रौंच पर्वतकी गुफामें प्रवेश करताभया ८९ पीछे गुफामें प्रवेशितहुये महिषासुरकी कुमार रक्षा करनेलगा और अपने भाई पर्वत को कैसेमारूं ऐसे चिन्तवन करता हुआ कुमार तहां स्थित होताभया ९० पीछे ब्रह्मा, महादेव, विष्णु, इंद्र ये सब तहां प्राप्तहोकर कहनेलगे कि हे देव! पर्वत सहित महिषासुरको शक्तिसे मारकर देवतों के कार्यकी सिद्धिकरो ९१ तब प्रिय और तथ्यरूपी वचन को सुनकर देवताओं से कुमार बोला कि नहीं मारूंगा क्योंकि माताकेभाई अर्थात् मामाकापुत्र और मेराभ्राता ऐसे पुत्रों सहित क्रौंच पर्वत को कैसे मारूं ९२ और यह पुरातन श्रुतिहै कि जिसको वेदके वक्ता महर्षि गान

करते हैं और जिसके मतको करने से पापी मनुष्य भी स्वर्ग में प्राप्त होजाते हैं १३ गौ, ब्राह्मण, आप्तवाक्य वाला अर्थात् शरणागत, बालक, अदुष्ट, स्त्री इन्होंको और अपराध करनेवाले आचार्य्य और गुरु इन सबों को कभी भी नहीं मारै १४ ऐसे उत्तम धर्म्म को जान कर हे देवताओ! मातुलके पुत्र भ्राता को नहीं मारूंगा १५ और जब यह दैत्य इस गुफा से निकसेगा तब इस शक्तिसे शत्रु को मारूंगा १६ हे नारद! ऐसे कुमार के बचन को सुनके और अपने हृदयमें बुद्धि को कर इन्द्र कुमार से बोला कि तू मत्त अर्थात् बावलाहै और बुद्धिमान् नहीं है और क्या बोलता है जो हरि ने पहले बचन कहा है तिसको सुन १७ एकके लिये बहुतों को नहीं मारै ऐसे शास्त्रों में निश्चयहै और बहुतों के लिये एक को मारने से पाप नहीं लगता १८ ऐसे सुनकर पहले समय में स्थित होनेवाले मैंने छोटा भ्राता भी नमुचि मारदियाहै १९ इसवास्ते बहुतों के लिये क्रौंच पर्वत सहित महिषासुरको अग्निकीदीहुई शक्तिसे मार १०० ऐसे इन्द्रके बचनको सुनकर क्रोधसे लाल नेत्रोंवाला और कम्पायमान ऐसा कुमार इन्द्रसे कहनेलगा १०१ हे मूढ़! हे वृत्राहन्! तेरी बाहुओंका और शरीरका क्या बल है जिस करके मेरा तू तिरस्कार करताहै इस से तू बुद्धिमान् नहीं है १०२ तब कुमारसे इन्द्र बोला हे गुह! तुझ से मैं बलवान् हूं तब कुमार बोला जो तू बलवान् है तो आकर मेरे संग युद्धकर १०३ तब इन्द्र बोला

हे कार्त्तिकेय! जो जल्द इस पर्वत की प्रदक्षिणा अर्थात् परिक्रमा करै वही बलवान् जाना जावेगा १०४ तब इन्द्र के वचन को सुन कुमार मयूर से कहनेलगा इतनेही अन्तर में बेगकर हस्ती से उतरकर पैरों के द्वारा इन्द्र क्रौंच पर्वतकी परिक्रमा करता भया १०५ पीछे बेग से कुमार परिक्रमा करके जो आया तब तहां स्थित हुये इन्द्र से कुमार बोला कि मूढ़की तरह कैसे स्थित होरहे हो १०६ तब इन्द्र बोला मैंने प्रथम परिक्रमा करी है और कुमार बोला कि मैंने प्रथम परिक्रमा करी है १०७ ऐसे बिबाद करते हुये दोनों आकर ब्रह्मा,महादेव,बिष्णु इन्हों के सन्मुख कहते भये १०८ पीछे बिष्णु कुमार से कहने लगे कि इस बिषय में पर्वतसे पूछनायोग्यहै जिसको पर्वत प्रथम परिक्रमा करनेवाला बतलावेगा वही बलवान् होगा १०९ तब विष्णु के बचन को सुन क्रौंच पर्वत के समीप जाकर कुमार पूछनेलगा हे पर्वत! किसने पहले परिक्रमा करी ११० ऐसे उक्त किया पर्वत कहने लगा पहले इन्द्र ने परिक्रमा करी और हे गुह! तैंने पश्चात् परिक्रमा करी १११ ऐसे क्रोध से स्फुरित ओष्ठोंवाला कुमार महिषासुर सहित क्रौंच को शक्तिसे भेदन करता भया ११२ जब क्रौंच मारागया तब क्रौंच का पिता सुनाभनाम पर्वत तहां आया और हतहुये महिपासुर को देख ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र, मरुत्, अश्विनीकुमार, वसु इन आदि देवते स्वर्ग को गये ११३ तब मातुल अर्थात् मामा सुनाभ को देख बलवाला कुमार शक्तिको पाँव

मारने को तय्यार हुआ तब बिष्णुने कहा कि यह तेरा गुरु अर्थात् तुझको मानने योग्य है ऐसे कहकर निवारण किया ११४ पीछे हिमाचल समीपमें प्राप्तहो सुनाभको हस्त में ग्रहणकर तहां से लेगया और मयूर सहितकुमार को बिष्णु ग्रहणकर अलग करते भये ११५ पीछे कुमार बिष्णु से कहनेलगा हे भगवन्! मोहकरके मेरा बिबेक नष्ट हुआ क्योंकि मैंने मातुलका पुत्र भ्राता मार दिया इस वास्ते अब मैं शरीर को सुखाऊंगा ११६ तब बिष्णु बोले कि तीर्थों में उत्तमरूपी पृथूदक तीर्थ में गमनकर यह तीर्थ पापों का कुठार अर्थात् कुल्हाड़ा है तहां ओघवती में स्नानकर पीछे भक्तिसे महादेव के दर्शन करने से सूर्य्य के समान तेजवाला तू होजावेगा ११७ ऐसे बिष्णु से उक्त किया कुमार पृथूदक तीर्थ में प्राप्त हो पीछे महादेव का दर्शनकर और देवतों की पूजाकर और तहां स्नानकर पीछे महादेव के स्थानमें गया ११८ पीछे त्रिनेत्रगण भी अपने आश्रम में पवन का भोजन करता हुआ तप करनेलगा और महादेव की आराधना करने लगा तब तिसके तप से महादेव प्रसन्न होते भये ११९ तब महादेव से शत्रु के बाहुओं का खंडित करने वाला और परमायुध ऐसे चक्र को मांगताभया और यह भी कहताभया कि हे भगवन्! जिस करके बाणासुर के बाहुओं का छेदन करसकूं ऐसा चक्र देओ १२० तिस से महादेव कहने लगे हे प्रिय! आप के लिये ऐसाही चक्र दिया इस करके बाणासुर के बनरूपी बढ़ेहुये बा-

हुओंको तू काटेगा इसमें बिचारना नहीं है १२१ ऐसे जब महादेवने बरदान दिया तब त्रिनेत्रगण कुमारके समीपमें आया और कुमारके चरणोंमें पड़कर प्रसन्न हुआ महादेवके प्रसादको निवेदन करता भया १२२ ऐसे कुमारकी शक्तिके भेदसे महिषासुरका बध और शरणागतसे क्रौंचका मृत्यु तेरे लिये कहाहै यह पापों को हरताहै और पुण्यको बढ़ाताहै १२३ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांकुमारसंभवेमहिषासुरतारक क्रौंचभेदनंनामाष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः५८ ॥

---

# उनसठवां अध्याय ॥

नारदने पूछा हे स्वामिन्! जो दैत्योंके सलाह होनेके समय शरसे ताड़ित पातालकेतु प्राप्त हुआथा वह दैत्य किसने ताड़ित किया यह मेरे प्रति बर्णन करो १ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! शत्रुओंको जीतनेवाला और रघुकुलमें उत्पन्न हुआ ऐसा रिपुजित् राजा हुआ तिनके गुणोंके समूहका समुद्ररूपी और महात्मा और शूरवीर और शत्रुओं की सेना को दमन करनेवाला और बलवान् और आनन्दितरूप और विप्र, अन्धा, दीन, कृपण इन्होंमें समान भाववाला २ ऐसा ऋतध्वज नाम राजा हुआ वह गालवके लिये अश्वपर स्थित हुआ अर्द्धचन्द्र समान बाण से पातालकेतु को पृष्ठ भाग से ताड़ित करता भया ३ नारद ने पूछा किस वास्ते गालव मुनि के मनोरथ को सिद्ध करताभया

जिसके लिये वह राजाका पुत्र बाणसे दैत्यको बाँधता भया ४ पुलस्त्यजीबोले हे नारद! पहले अपनेआश्रममें स्थित हुआ गालवमुनि निरन्तर तप करताभया तब पातालकेतु दैत्य मूढ़ भावसे तिसके तपमें बिघ्न और समाधि भंग करवाता भया ५ और वह तपस्वी तिस दैत्य को तप से भस्म करनेकी इच्छा नहीं करताभया परन्तु आकाशकी तर्फ देख दीर्घकाल तक उष्णरूप श्वास को निकासता भया ६ तब आकाश से सुन्दर अश्व पड़ताभया और आकाशबाणी भी भई कि यह अश्व एक दिनमें चारहजार कोस चलता है ७ पीछे तिस अश्वको मुनि ग्रहणकर शस्त्रों को धारण करने वाले ऋतध्वज राजाको युक्तकर आप फिर तप करने लगा तब वह राजपुत्र तिस दैत्यको बाणों से बाँधता भया ८ नारद ने पूछा हे सुब्रत! किसने आकाशतल से अश्व रचकर गेरा और किसकी वह आकाशबाणी हुई यह मुझको अतिआश्चर्य्य है ९ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! महेन्द्र के गायन करनेवाला और गंधर्वराज ऐसा बिश्वाबसु अश्वको रचकर स्वर्गसे पृथिवीमंडल मेंऋतध्वजकेलिये छोड़ताभया १० नारदनेपूछा हे भगवन्! गन्धर्बराज का कौन प्रयोजनथा जिसकरके अति बेगवाले अश्वको पृथिवी में भेजता भया और राजा के पुत्रेका क्या प्रयोजनथा ११ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! शील और गुणों से संपन्न और त्रिलोकीमें श्रेष्ठ और पुरन्ध्री और लावण्य की राशि और चन्द्रमा की

कांतिके समान कांतिवाली और मदालसा नामसे बि-
ख्यात १२ ऐसी बिश्वाबसु की पुत्री नन्दन बन में
क्रीड़ा करने लगरहीथी तिस रूपवती को पातालकेतु
दैत्य देखताभया पीछे तिसको हरलेगया तिसके लिये
वह अश्व पृथिवी में प्रवृत्तहुआ १३ पीछे वह पूर्वोक्त
राजाका पुत्र पातालकेतु दैत्य को मारकर और सुन्दर
जंघावाली स्त्रीको ग्रहणकर स्थित होताभया पीछे तिस
भार्याके संग वह राजपुत्र ऐसे क्रीड़ा करताभया जैसे
इन्द्र इन्द्राणीके संग १४ नारद ने पूछा हे मुने ! ऐसे
महिषासुर और तारकासुर मारागया तब हिरण्याक्ष
का पुत्र अन्धक क्या चेष्टा करता भया १५ पुलस्त्यजी
बोले हे नारद ! तारकासुर और महिषासुरकी मृत्युको देख
दुर्बुद्धि और देवतोंकी सेनाको मारनेवाला ऐसा अन्धक
देवतोंपर क्रोधकरनेलगा १६ पीछे स्वल्पकुटुम्बवाला
अन्धक हाथमें परिघको धारणकरके पातालसे निकस
कर पृथिवीपर बिचरनेलगा १७ पीछे बिचरतेहुये अंधक
ने सुन्दरकंदरावाले मंदराचलमें सखियोंकेमध्यमें स्थित
हुई पार्वती देखी १८ तब कामदेवके बाणों से पीड़ित
हुआ अन्धक तिस सुंदर सब अंगोंवाली पार्वतीको देख
कर १९ हे नारद! कामदेवसे पीड़ित वह मूढ़ दैत्य कहने
लगा कि बनमें बिचरनेवाली यह सुन्दरी किसकीहै २०
और जो यह मेरी भार्या नहीं बनेगी तो निष्फलरूपी
मेरेजीवने करके क्याहै २१ और जो इससुन्दररूपवा-
लीसे मेरामिलाप नहीं होवेगा तो मेरेरूपको धिक्कारहै

और मेरीस्थिरतासे क्या प्रयोजनहै २२ और जो काले केशोंवाली इस मृगलोचनास्त्री से मुझको युक्तकरावे वही मेराबंधुहै औरवहीमेरामंत्री है और वही मेरा साम्प्रदायिकभ्राताहै २३ ऐसे जब वह दैत्य कहनेलगा तब बुद्धिका समुद्ररूपी प्रह्लाद अपने हाथोंसे दोनों कानों को आच्छादितकर और शिरको कँपावताहुआ होकर बचनबोलता भया २४ हे दैत्येन्द्र! ऐसेमतकहै क्योंकि यह जगत्की माताहै और त्रिशूलको धारणकरनेवाले और लोकके नाथ ऐसे महादेव की भार्या है २५ इसलिये कुलका नाश करनेवाली इस दुर्बुद्धि को तू मत करै और तू रसातलमें परस्त्रियों में मनको मत लगावे २६ और सत्पुरुषोंमें तथा असत्पुरुषोंमें कुत्सितरूप परस्त्रीगमन को तेरे शत्रु अंगीकार करें २७ और हे दैत्यनाथ! परस्त्री में प्रसक्तहुये बिप्रचित्ति को देख तथ्य और पथ्य और सब लोकमें हित ऐसा श्लोक गाधि राजा ने कहा है कि वह तैंने नहीं जाना है २८ वह श्लोक प्रकाशित कियाजाता है कि प्राणों का त्यागना अच्छाहै परन्तु शत्रुओंके बिनाशमें मनको नहीं लगावे और मौनको धारना अच्छाहै परन्तु गुणवालों के आगे मिथ्या नहीं बोलै और हिजड़ों के संग बसना अच्छा है परन्तु परस्त्रीगमन नहींकरै और भिक्षा मांगकर भोजन करना अच्छाहै [illegible] पराये धनोंकी चोरी नहीं करै २९ [illegible] द [illegible] को सुन क्रोधसे अन्धा आ और [illegible] अ[illegible] शत्रुओं

की जननी है ऐसे कहकर पार्बती के सन्मुख भागा ३० तब नन्दीश्वर बज्र को हाथ में धारणकर सब मय आदि दैत्यों को निवारण करता भया पीछे बज्र से हतहुये दानव जल्द दशोंदिशाओं को दौड़ते भये ३१ पीछे तिन अर्दित हुये दैत्यों को देखकर अन्धक दैत्य परिघ करके नंदिगण को गिराता भया ३२ जब नंदिगण गिरपड़ा और अंधक दौड़ता हुआ आनेलगा तब तिस दुरात्मा के भय से शतरूपोंवाली पार्बती होती भई ३३ पीछे तिन देवियोंके गणके मध्यमें स्थित हुआ अंधक भ्रमने लगा जैसे मदोन्मत्त हस्ती हस्तिनियों के मध्यमें भ्रमताहै तैसे ३४ तब अनेक रूपोंवाली पर्बतोंकी पुत्रियों को अंधक नहीं जानताभया तहां ये चार आश्चर्य्यको नहीं देखतेहैं ३५ अर्थात् जात्यंध मनुष्य नहीं देखताहै और रागांध मनुष्य नहीं देखताहै और मदोन्मत्त नहीं देखताहै और लोभाक्रांत मनुष्य भी नहीं देखता है ३६ सो अंधक पार्बतीको नहीं देखता हुआ भी तिन देवियोंको युवति जानकर तिन्हों के लिये प्रहार नहीं करताभया पीछे देवियोंने वह दुष्टात्मा अंधक शस्त्रों से काटदिया तब पृथ्वीमें पड़ता भया ३७ पीछे पतित हुये अंधकको देख शतरूपोंवाली पार्बती तिस स्थान से चलकर अन्तर्द्धानको प्राप्त भई ३८ पीछे पड़े हुये अंधकको देख दैत्य और दानवोंके समूह महाशब्दों को करतेहुये युद्ध करने के लिये दौड़नेलगे ३९ पीछे तिन आवतेहुयोंके शब्दको सुन गणेश्वर बज्रको ग्रहण

और मेरीस्थिरतासे क्या प्रयोजनहै २२ और जो का-
लेकेशोंवाली इस मृगलोचनास्त्री से मुझको युक्तकरावे
वही मेराबंधुहै औरवहीमेरामंत्री है और वही मेरा साम्प-
रायिकभ्राताहै २३ ऐसे जब वह दैत्य कहनेलगा तब
बुद्धिका समुद्ररूपी प्रह्लाद अपने हाथोंसे दोनों कानों
को आच्छादितकर और शिरको कँपावताहुआ होकर
बचनबोलता भया २४ हे दैत्येन्द्र! ऐसेमतकहै क्योंकि
यह जगत्की माताहै और त्रिशूलको धारणकरनेवाले
और लोकके नाथ ऐसे महादेव की भार्या है २५ इस
लिये कुलका नाश करनेवाली इस दुर्बुद्धि को तू मत
करै और तू रसातलमें परस्त्रियों में मनको मत लगावे
२६ और सत्पुरुषोंमें तथा असत्पुरुषोंमें कुत्सितरूप
परस्त्रीगमन को तेरे शत्रु अंगीकार करें २७ और हे
दैत्यनाथ! परस्त्री में प्रसक्तहुये बिप्रचित्ति को देख तथ्य
और पथ्य और सब लोकमें हित ऐसा श्लोक गाधि
राजा ने कहा है कि वह तैंने नहीं जाना है २८ वह
श्लोक प्रकाशित कियाजाता है कि प्राणों का त्यागना
अच्छाहै परन्तु शत्रुओंके बिनाशमें मनको नहीं लगावे
और मौनको धारना अच्छाहै परन्तु गुणवालों के आगे
मिथ्या नहीं बोलै और हिजड़ों के संग बसना अच्छा
है परन्तु परस्त्रीगमन नहींकरै और भिक्षा मांगकर भो-
जन करना अच्छाहै परन्तु पराये धनोंकी चोरी नहीं
करै २९ ऐसे प्रह्लाद के बचन को सुन क्रोधसे अन्धा
हुआ और कामदेवसे पीड़ित ऐसा अन्धक यह शत्रुओं

की जननी है ऐसे कहकर पार्बती के सन्मुख भागा ३०
तब नन्दीश्वर बज्र को हाथ में धारणकर सब मय आदि
दैत्यों को निवारण करता भया पीछे बज्र से हतहुये दा-
नव जल्द दशोंदिशाओं को दौड़ते भये ३१ पीछे तिन
अर्दित हुये दैत्यों को देखकर अन्धक दैत्य परिघ करके
नंदिगण को गिराता भया ३२ जब नंदिगण गिरपड़ा
और अंधक दौड़ता हुआ आनेलगा तब तिस दुरात्मा
के भय से शतरूपोंवाली पार्बती होती भई ३३ पीछे
तिन देवियोंके गणके मध्यमें स्थित हुआ अंधक भ्रमने
लगा जैसे मदोन्मत्त हस्ती हस्तिनियों के मध्यमें भ्र-
मताहै तैसे ३४ तब अनेक रूपोंवाली पर्बतोंकी पुत्रियों
को अंधक नहीं जानताभया तहां ये चार आश्चर्य्यको
नहीं देखतेहैं ३५ अर्थात् जात्यंध मनुष्य नहीं देखताहै
और रागांध मनुष्य नहीं देखताहै और मदोन्मत्त नहीं
देखताहै और लोभाक्रांत मनुष्य भी नहीं देखता है
३६ सो अंधक पार्बतीको नहीं देखता हुआ भी तिन
देवियोंको युवति जानकर तिन्हों के लिये प्रहार नहीं
करताभया पीछे देवियोंने वह दुष्टात्मा अंधक शस्त्रों
से काटदिया तब पृथ्वीमें पड़ता भया ३७ पीछे पतित
हुये अंधकको देख शतरूपोंवाली पार्बती तिस स्थान
से चलकर अन्तर्द्धानको प्राप्त भई ३८ पीछे पड़े हुये
अंधकको देख दैत्य और दानवोंके समूह महाशब्दों
को करतेहुये युद्ध करने के लिये दौड़नेलगे ३९ पीछे
तिन आवतेहुयोंके शब्दको सुन गणेश्वर बज्रको ग्रहण

कर प्राप्तहुआ जैसे क्रुद्ध हुआ इन्द्र ४० तब सब दैत्य दानवोंको शान्त करके गणेश्वर पार्वतीसे मिल चरणों में पड़ताभया ४१ पीछे देवी अपनी मूर्त्तियों से कहने लगी कि अपनी इच्छापूर्वक तुम गमन करो और मनुष्योंसे पूज्यमान होतीहुई तुम पृथ्वीपर रमणकरो ४२ और उद्यान, बन, बनस्पति, बृक्ष इन्होंमें तुम्हारे बसने के योग्य स्थान होवेंगे तहां तुम बिगतज्वर होकर गमन करो ४३ ऐसे पार्वतीके बचनको सुन पीछे क्रमसे पार्बतीको प्रणामकर किन्नरोंसे स्तूयमान होतीहुई सब दिशाओंमें गमन करतीभई ४४ पीछे अंधक दैत्य भी स्मृतिको प्राप्त होकर तहां पार्बतीको नहीं देखता हुआ और अपनी सेनाका पराजयकर पाताल में प्रवेश करता भया ४५ पीछे हे नारद! वह दुष्टात्मा अंधक पातालमें गमनकर दिनमें भोजन नहीं करै और रात्रिमें शयन नहीं करै ४६ कामदेवके बलसे पीड़ित हुआ अन्धक हरवक्त पार्वती का स्मरण करतारहै ४७ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांएकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९ ॥

## साठवां अध्याय ॥

नारदने पूछा हे भगवन्! महादेवजी कहां गये थे जिससे पार्वती नन्दीश्वरकी सहायसे अंधकसे युद्धकरती भई यह आप कहने के योग्य हैं १ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! जब हजार बर्ष तक महामोह में महादेवजी स्थित रहे तब से लगायत तेज से रहित और क्षीण

वीर्य्यवाले ऐसे महादेवजी देखतेभये २ पीछे महादेव तेजसे रहित अपने आत्मा और अंगको देख तहां से उठकर बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठहोकर उत्तमबुद्धिको करतेभये ३ और महाव्रत को उत्पादन कर और पार्व्वती को आश्वासन कर और रक्षा करनेवाले पर्व्वत को स्थापित कर पृथ्वी पर विचरते भये ४ पीछे महामुद्रा से अर्पित ग्रीवावाले और महासर्पोंके कुण्डलों को धारण करने वाले और महाशंखकी मेखलाको कटि देश में धारण करनेवाले ५ और दाहिने हाथ में कपालको धारण करने वाले और बायें हाथमें कमंडलुको धारण करनेवाले ६ और सर्पोंके हारको धारण करनेवाले और वृक्ष, पर्व्वत, शिखर इन्हों में रक्षा करनेवाले और त्रिलोकी में वसने वाले और मूलरूप आहार और पानी का भोजन करनेवाले ७ और वायुके आहारको करनेवाले ऐसे महादेवजी जब स्थित होगये तब क्रमसे सौ वर्षोंतक नहीं वर्षताभया तब वीटाको मुखमें स्थापितकर श्वास से रहित होगये ८ पीछे विस्तृतरूपी हिमवान् पर्वत के रमणीक पृष्ठभागमें ईश्वर के कपाल वीटाका विदारण कर ९ तब प्रकाशवाली वीटा जटा के मध्य से पृथिवीतल में पड़ी तब पड़तीहुई वीटासे दारितहुआ पर्वत पृथिवी के समान होताभया १० तहां तीर्थों में उत्तम केदार तीर्थ विख्यात हुआ पीछे महादेवजी केदारतीर्थ के लिये वरदान करते भये ११ हे ब्रह्मन्! पुण्यकी वृद्धि करनेवाला और पापों को नाशनेवाला

और मोक्षका साधन ऐसा यह केदारतीर्थ है १२ जो मनुष्य तिस तीर्थ के जलका पानकर संयम से रहेंगे और मदिरा, मांस इन्हों से निवृत्त रहेंगे और ब्रह्मचारी ब्रतमें स्थित रहेंगे १३ और परपाकसे निवृत्त रहेंगे वे छः महीनों में संसाररूपी समुद्रको तिरजावेंगे और तिन्हों के हृदयरूपी कमल में मेरा निश्चय चिह्न होवेगा १४ और तिन मनुष्यों की पापमें कभी भी रति नहीं होवेगी और पितरों का अक्षय श्राद्ध होवेगा इस में संशय नहीं १५ और मनुष्यों के स्नान, दान, तप, होम, जप ये आदि क्रिया अक्षयरूप होजाती हैं और तिस तीर्थ में मरने से मोक्ष होजाता है १६ ऐसे महादेव से भी श्रेष्ठरूपी यह तीर्थ देवतों को पुष्ट करता है और मनुष्यों को यह केदारतीर्थ पवित्र करता है जैसे महादेव का बचन १७ पीछे केदार के लिये बरदान करके बेग से महादेवजी सूर्य्य की पुत्री और पापों को नाशनेवाली ऐसी कालिंदी नदीमें स्नान के लिये गये १८ पीछे तहां स्नान करके पवित्ररूप हो उत्तम तीर्थों से परिवृत और अक्षयरूप और सब पापों को नाशनेवाली ऐसी सरस्वतीको गमन करतेभये १९ तहां जाके बिमान से उतर सरस्वती के जलमें स्नानकर और जलके भीतर ही द्रुपदानाम गायत्रीका जाप करनेलगे २० हे नारद! सरस्वती के जलमें मग्नहुये महादेवजी को कईकमहीनों सहित एकबर्ष व्यतीत हुआ परन्तु महादेवजी जलसे बाहर नहीं निकसे २१ पीछे इसी अन्तर में हे ब्रह्मन्!

सब समुद्रों सहित सब लोक चलायमान होनेलगे और नक्षत्र तारागण इन्होंके सङ्ग पृथिवीमें पड़नेलगे २२ और इन्द्र आदि देवते अपने अपने आसनों से प्रचलित होगये और महर्षिगण लोकों के लिये कल्याणहोवे ऐसे जपनेलगे २३ पीछे जब क्षुभितरूपी लोक होगये तब देवते ब्रह्माजी के समीप जाकर कहने लगे हे देव! क्षुभितहुये सबलोक संशय को प्राप्तहुये यह क्या हुआ २४ तब ब्रह्माजी देवतों से बोले कि इसके कारण को मैं नहीं जानता इसवास्ते तुम सब विष्णुके दर्शनकरने को गमनकरो २५ ऐसे ब्रह्माजीसे उक्तकिये इन्द्रआदि देवते ब्रह्माजीको आगेकर मुरारिके स्थान में गये २६ नारदने पूछा हे मुने! वह मुरारि कौन है अथवा देव है व यक्षहै व किन्नरहै व दैत्यहै व राक्षस है व राजा है यह मेरेप्रति कहो २७ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! जो रजोगुण, सत्त्वगुण, तमोगुण इन्होंसे व्याप्त है और जो इन्हों से रहित होकर निर्गुण कहाता है और सर्वगत और सर्व्वव्यापी और मधुसूदन ऐसा मुरारि अर्थात् मुरदैत्य को मारनेवाला विष्णु है २८ नारदने पूछा हे देव! जो मुरनाम दैत्यहुआ वह किसका पुत्रथा और उसे युद्धमें विष्णुने कैसे मारा यह मुझ से कहो २९ पुलस्त्यजी बोले देवते और दैत्योंका वशमें करनेवाला और पवित्र और पापों को नाशनेवाला ऐसे आख्यान को मैं कहूँगा सुन ३० कश्यपजी का मुरनाम से विख्यात औरस पुत्र उत्पन्न हुआ वह

दितिका पुत्र दैत्य बनमें महादेवजी को देखता भया ३१ पीछे वह दैत्य मृत्यु से भीतहुआ बहुत वर्षोंतक तप करके ब्रह्माजी की आराधना करनेलगा ३२ तब प्रसन्नहुये ब्रह्माजी कहनेलगे हे पुत्र! मुझसे बरको ग्रहणकर तब वह दैत्य ब्रह्माजी से यह बर मांगताभया ३३ हे विभो! युद्धमें मैं जिस जिस को अपने हाथ के तलभागसे स्पर्शकरूँ सो अमरभी हो तबभी मेरेहाथ के संस्पर्श से मृत्युको प्राप्तहोजावे ३४ तब ब्रह्माजी प्रसन्नहो इसबरको दैत्यके लिये देतेभये तब अतितेज वाला मुरनामदैत्य देवपर्बतपर प्राप्तहुआ ३५ पीछे वह दैत्य, देव, यक्ष, किन्नर इन्होंको युद्धकेलिये बुलाताभया परन्तु हे नारद! तिस दैत्य के सङ्ग कोईभी युद्ध नहीं करता भया ३६ पीछे क्रुद्धहुआ वह दैत्य अमरावती में गमन कर इन्द्रको बुलाता भया परन्तु तिसके संग युद्ध करने को इन्द्र बुद्धि नहीं करता भया ३७ पीछे वह दैत्य हाथ को उठाकर अमरावती में प्रवेश करने लगा तब प्रवेश करते हुये दैत्य को कोई भी देव निवारण करने को समर्थ नहीं हुआ ३८ पीछे इन्द्र के स्थान में गमनकर मुरदैत्य कहने लगा हे सहस्राक्ष! मुझसे युद्ध कर और जो नहीं करै तो स्वर्गको त्यागदे ३९ हे नारद! ऐसे मुरसे उक्तकिया इन्द्र स्वर्ग को त्यागकर पृथिवी में बिचरने लगा ४० तब इन्द्रका बज्र और ऐरावत हस्ती भी मुरदैत्य ने हरलिया तब इन्द्राणी और इन्द्र पुत्र सब देवते इन्हों के संग ४१ कालिंदी नदी के द-

क्षिण वेलामें अपना पुरबना स्थित हुये पीछे स्वर्ग में स्थित होनेवाला सुरभी महाभोगों को भोगनेलगा ४२ और उग्ररूपवाले मय, तार इनआदि दानवभी मुर को प्राप्तहो आनन्दित होतेभये जैसे स्वर्ग में सुकृति मनुष्य ४३ पीछे किसीक समय में मुरदैत्य पृथिवीपर आताभया अर्थात् अकेला हस्ती पर स्थित होकर सरयू नदीके समीप गया ४४ पीछे सरयू नदी के तट पर सूर्य वंश में उत्पन्न और वीर और रघुनाम से विख्यात ऐसे राजाको यज्ञकर्म में दीक्षितहुये को देखता भया ४५ पीछे तिसके समीप में जाकर दैत्य कहनेलगा हे राजन्! मुझसे युद्धकर और जो नहीं करेगा तो यज्ञ की निवृत्तिको करो और देवतोंकी पूजा मतकरै ४६ तब दैत्यके समीपमें बुद्धिमान् और तपस्वियों में श्रेष्ठ ऐसे वसिष्ठजी बोले ४७ हे दैत्य! मनुष्यों को जीतने में क्याहै क्योंकि जो नहीं जीतेजावें तिन्हों को शिक्षाकर और जो प्रहार करने की इच्छाकरै है तो धर्मराज का निवारणकर ४८ हे महासुर! वह बलवाला धर्मराज तेरी आज्ञा नहीं करताहै और तिसको जीतने में संपूर्ण पृथ्वीतल को जीताहुआजान ४९ तब वह दैत्य वसिष्ठ जीके वचनको सुन दण्डको धारण करनेवाले धर्मराज को जीतनेके लिये गया ५० तब तिस दैत्यके आगमनको सुन और युद्धमें अवध्यरूप दैत्यको जानकर धर्मराज भैंसापर चढ़कर विष्णुके समीपमें गया ५१ तहांगमन कर प्रणामकर विष्णु के लिये मुर दैत्यके चेष्टितको कहना

भया तब विष्णु बोले कि तू गमनकर और तिस दैत्यको मेरे समीपमें भेजदे ५२ तब विष्णुके बचनको सुन धर्मराज बेगसे अपने स्थानपर आया तब इसी अन्तरमें दैत्य धर्मराजकी पुरीमें प्राप्तहुआ ५३ तब आवतेहुये दैत्य से धर्मराज बोला कि हे दैत्यराज! आप क्या करने की इच्छा करते हैं ५४ मुर कहनेलगा हे यम! प्रजाके संयमनसे निवृत्तिको कर और जो तू मेरे कहने को नहीं करेगा तो तेरे शिरको काटकर पृथ्वीमें गिरादूंगा ५५ तब तिससे धर्मराज बोला कि जो मेरे से अपने मनोरथ को कराना चाहते हो तो मेरा यंता अर्थात् स्वामी अन्य है तिसको शिक्षादे ५६ तब मुर बोला कि हे धर्मराज! तेरा कौन यंताहै तू मेरे प्रति कह पीछे मैं तिसका पराजयकर निवारण करूंगा इस में संशय नहीं है ५७ तब धर्मराज बोला कि शंख, चक्र, गदा इन्हों को धारण करनेवाले और श्वेतद्वीपमें निवास करनेवाले ऐसे विष्णु मेरे यंताहैं ५८ तब दैत्य बोला कि वह दुर्जयरूपी तेरा यंता कहां बसता है तहां मैं गमनकर तिसको शिक्षितकरूंगा ५९ तब दैत्यसे धर्मराज बोला कि जहां क्षीरसागरहै तहां लोकके स्वामी और जगन्मय ऐसे विष्णु बसते हैं ६० पीछे मुर तिसके बचनको सुन कहनेलगा कि अब मैं विष्णु के समीप में जाताहूं परन्तु हे धर्म! तुम अबसे लगायत मनुष्यों को दण्ड नहीं देना ६१ ऐसे कहकर मुर दूधके समुद्रमें गया जहां शेषकी शय्या पर चतुर्भुजी भगवान् शयन करते हैं ६२ नारद ने

पूँछा हे स्वामिन्! चारमूर्त्तियोंवाला बिष्णु कैसे अकेला कहाता है और सर्वगत होने से और अविनाशिहोनेसे कैसे केवल रूपहै यह मुझसे कहो ६३ पुलस्त्यजी बोले हे महामुने! अव्यक्तभी और सर्वगत भी विष्णु एकही है परन्तु हे ब्रह्मन्! जैसे चारमूर्त्तिवाला है तैसे सुन और तर्कना से रहित और निर्देशसे रहित और शुक्ल और शांत और परमपद और अव्यक्त और वासुदेव नाम से विख्यात और बारहपत्रकों वाले ऐसे बिष्णु हैं ६४ नारद ने पूँछा कैसे शुक्ल हैं और कैसे शांत हैं और कैसे तर्कना से रहित हैं और कैसे निर्देश से रहितहैं और तिसके बारहपत्रक कौनसेहैं ६५ पुलस्त्य जी बोले हे नारद! ब्रह्माजी का वर्णनकिया और पीछे ब्रह्माजी से सनत्कुमार का सुनाहुआ और पीछे सनत्कुमार ने मेरेलिये कहाहुआ ऐसे परम और गुप्त आख्यान को मुझसे सुन ६६ नारद ने पूँछा हे स्वामिन्! जिसकेलिये इस आख्यान को ब्रह्माजी कहतेभये ऐसा सनत्कुमार कौनहुआहै तिसको और तिसके कथित आख्यान को मुझसे अनुपूर्वता से कहो ६७ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! धर्म की अहिंसा नामवाली भार्या में योगशास्त्र को जाननेवाले चार पुत्र उत्पन्न भये हैं ६८ तिन्हों में ज्येष्ठ सनत्कुमार और दूसरा सनातन और तीसरा सनक और चौथा सनंदन ६९ पीछे सांख्य को जाननेवाला ऐसा कपिल और वोढु, आसुरि ये हुये और योग से युक्त और तप का समुद्र और ज्येष्ठ ऐसे

पंचशिखको ७० ज्येष्ठरूपभीये छोटेको ज्ञाननहीं देतेभये तब मानको छोड़ वह महायोगी कपिलआदिके समीप प्राप्त हो उपासना करने लगा ७१ और सनत्कुमा ब्रह्माजी के समीप आकर योग विज्ञानको पूँछताभय पीछे ब्रह्माजी सनत्कुमार के प्रति कहतेभये ७२ ब्रह्मा जी कहनेलगे तेरे लिये साध्य को कहूंगा और जो तू पुत्र इस मेरे बचनको मानेगा इसवास्ते तत्त्वज्ञान और सांख्यसे युक्त होकर सुन ७३ सनत्कुमार कहनेलगा हे देवेश ! मैं तुम्हारा पुत्रहीहूँ क्योंकि जिसके शिष्यहूँ इस वास्ते हे पितामह ! पुत्रमें और शिष्यमें बिशेषता नहीं है ७४ ब्रह्माजी कहनेलगे हे धर्मनन्दन ! पुत्र और शिष्य में भेदनहीं है धर्म, कर्म, समायोग में तथापि कहतेहुये मुझसे सुन ७५ पुत्नाम नरकमे जो रक्षाकरै वह पुत्र कहाता है और शेषपापोंको हरै वह शिष्य कहाता है यह बेदकी श्रुति है ७६ सनत्कुमार कहनेलगा हे देव पुत्नामनरक से रक्षाकरनेवाला पुत्र कौन है और किससे शेषरहे पापों को शिष्यहरैहै यह मेरेप्रति कहो ७७ ब्रह्माजी कहनेलगे हे महर्षे ! परम और योगांग से युक्त और उग्र और भयकारी और पुरातन और प्रमाणित ऐसे आख्यान को मैं तेरेलिये कहताहूं सुन ७८ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांषष्टितमोऽध्यायः ६० ॥

## एकसठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी कहनेलगे पराई स्त्रियों में अभिगमन करना

और अति पापियों का उपसेवन और सब प्राणियों की निन्दा करनी यह प्रथम नरक कहाहै १ और फलों की चोरी करना और उग्र पापकरना फलसेहीन बृथा गमन करना और बृक्षोंके समूहको पाड़ना यह दूसरा नरक कहाहै २ और बर्ज्य पदार्थ को ग्रहण और दुष्टपना और अबध्य अर्थात् नहीं मारने के योग्यको मारना और बन्धन और बिबाद और झूठ का बोलना यह तीसरा नरक है ३ और सब प्राणियों को भयका देना और संसारकी भूतिका बिनाश और अपने धर्मों को त्यागना यह चौथा नरक कहाहै ४ और प्राणियोंको मारना और मित्रसे कुटिलता करनी और झूठी कसम खाना और मिष्टपदार्थको अकेलाहोकर खाना यह पांचवां नरकहै ५ पुरका नाशकरना और मिथ्या पत्रको बनादेना और बिना अपराधके दण्डदेना और योगका नाश और सवारी का पहिया व जूआ आदिको चोरना यह छठा नरक कहा है ६ और छिपाकर राजा के भागको हरना और राजा की भार्या से भोगकरना और राज्य में अहित करना यह सातवां नरक कहा है ७ लोभपना और चंचलपना और लब्ध धर्म और धन को नाशना और सब कीलालोंका मिलाना यह आठवां नरक कहा है ८ देव और ब्राह्मणके द्रव्य को हरना और ब्राह्मणों की निन्दा करनी और बंधुओं के संग उग्रविरोधकरना यह नववां नरक कहा है ९ और शिष्टों के आचार का बिनाश और शिष्ट पुरुष से वैरभाव और

बालक को मारना और शास्त्र की चोरी और धर्म्म का नाश यह दशवां नरक कहाहै १० और राजसम्बन्धी छः अंगों का नाशकरदेना और छः गुणों का प्रतिषेध करना यह सत्पुरुषों ने ग्यारहवां नरक कहाहै ११ और सब कालमें सत्पुरुषोंमें बैरकरना और अनाचार और निषिद्धक्रिया और संस्कारसे हीनपना यह बारहवां नरक कहाहै १२ और धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन्होंका नाश यह तेरहवां नरक कहाहै १३ और कृपणता और धर्म से हीनता और अग्नि का लगादेना यह सत्पुरुषों ने निंदितरूप चौदहवां नरक कहा है १४ अज्ञान और पराये गुणोंमें दोषों का आरोपण करना और मलीनपना और अशुद्धबाणी और झूठा बचन बोलना यह पन्द्रहवां नरक कहा है १५ और आलस्य और विशेषकर क्रोधकाकरना औरसबोंके मारने में उद्यतरहना और बसने के योग्य स्थानों में अग्निलगाना १६ और परस्त्री में इच्छा करनी और सबजीवों से ईर्ष्या करनी और निन्दितवृत्त यह सोलहवां नरक कहाहै १७ इन पापोंवाले नरकों से संयुक्त मनुष्य महादेवजी को प्रसन्न करने से पापों से छूटजाता है १८ अब इसके उपरन्त शेषपाप के लक्षण कहताहूँ १९ और देव, ऋषि, भूत, मनुष्य, पितर इन्हों के विशेषकर ऋणोंको कहताहूँ यहसबबर्णोंमें एकविधिहै २० और ॐकार के उच्चारण से भी पापों से निश्चय निवृत्ति होजाती है और मछलियों का खाना और अगम्या अर्थात् नहीं भोगने के योग्य में भोगकरना ये दोनों महा-

पाप हैं २१ और घृतआदि का बेचना और चाण्डाल आदि का प्रतिग्रहलेना और अपने दोषों को छिपाना और पराये दोषों को प्रकाश करना २२ और मर्म्म का बींधना और बाणी से चतुराई करना और कठोर बचन कहना और आडम्बर और नामकरके डाकीपना और बाणीकरके बालकों के संग बाद करना २३ और दारुणपना और अधर्म्मता ये सब नरकको देने वालेकहेहैं और इन पापों से संयुक्त मनुष्य जो महादेव जीको प्रसन्नकरै तो २४ शेषपापों को जीतलेताहै और शारीरिकपाप और वाचिकपाप और मानसिकपाप और कायिकपाप २५ और पितृ, मातृकृत पाप और मनुष्यों से आश्रितपाप और भ्राता, बांधव इन्हों से आश्रितपाप २६ यह सम्पूर्ण नाशको प्राप्तहोताहै यह धर्म पुत्र और शिष्यका है इसवास्ते विद्वान् को पुत्र और शिष्यकरना उचितहै २७ इस अर्थ के विचार करने से पुत्र शिष्य से श्रेष्ठकहा है और शेषपापसे शिष्य तारण करताहै और सबपापों से पुत्र तारताहै २८ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ब्रह्माजी के वचनको सुन सनत्कुमार बोला कि मैं आपका पुत्रहूं इसवास्ते मेरेलिये योग को वर्णनकरो २९ तब ब्रह्माजी तिस सनत्कुमार से कहने लगे कि जो तेरे माता पिता तुझको मेरेलिये देवेंगे तब तू मेरापुत्र होवेगा ३० पीछे सनत्कुमार बोला कि जो पुत्रोंकी कल्पना आपनेकहीहै वह आप मेरेलिये कहनेके योग्यहैं ३१ ऐसे सनत्कुमार के वचन को सुनकर

पीछे ब्रह्माजी हँसकर कहनेलगे हे पुत्र! सुन ३२ ब्रह्मा
जी कहतेहैं औरस, क्षेत्रज, दत्त, कृत्रिम, गूढ़ोत्पन्न, अप-
विद्ध ये छःपुत्र उत्तम कहेहैं ३३ और इन छःपुत्रोंमें
ऋण पिंड धन क्रिया और कुलबृत्ति और निरंतर प्रति-
ष्ठा ये सबहोतेहैं ३४ और कानीन, सहोढ, क्रीत, पौनर्भव,
स्वयंदत्त, पारसव ऐसे छः पुत्र अधम कहेहैं ३५ इन्हों
में ऋण पिंड इनआदि कथा बिद्यमान नहीं है ये केवल
नाममात्र पुत्रहैं इन्हों में गोत्र और कुल के नियम नहीं
हैं ३६ पीछे ब्रह्माजी के बचन को सनत्कुमार सुनकर
कहनेलगा कि इन सब पुत्रोंका बिशेष आख्यान कह-
नेके आप योग्यहो ३७ तब ब्रह्माजी कहनेलगे हे पुत्र!
बिशेष आख्यानको सुन और जो अपने प्रतिबिम्बकी
तरह अपने बीर्य से पुत्र उत्पन्नहोवे तिस को औरस
पुत्र कहते हैं ३८ और क्लीब अर्थात् हिजड़ा, उन्मत्त
ब्यसनवाला ऐसापति होवे तब तिसकी आज्ञासे दीन
और आतुरहुई भार्या पुत्रकोजने वह क्षेत्रजपुत्र कहा
ताहै ३९ और जो माता पिता से दियागया हो वह दत्त
पुत्र कहाताहै और मित्र अपने पुत्रको मित्रकेलियेदेवे
वह कृत्रिम पुत्र कहाताहै ४० और गृह में नहीं जाना
जावे कि किससे उपजाहै वह गूढ़क पुत्रकहाताहै और
जो बाहरसे आपही प्राप्तहोजावे वह अपबिद्ध पुत्र क
हाताहै ४१ और जो कन्या में उत्पन्नहोवे वह कानीन
पुत्र कहाता है और जो गर्भसहित कन्याविवाही जा
तिसमें जो पुत्र उपजै वह सहोढक पुत्र कहाता है ४२

और जो मोल लियाजावै वह क्रीत पुत्रहोता है और पुनर्भव पुत्र दो प्रकार का है ४३ जो एक पुरुष के लिये कन्या का दानकर पीछे दूसरे पुरुषको देवै तिस में उत्पन्न हुआ पुत्र पौनर्भव कहाता है ४४ और दुर्भिक्ष में व व्यसन में जिसने अपना आत्मा दूसरे के लिये निवेदन किया इस हेतु से अन्य कारणों से वह स्वयंदत्त पुत्र कहाता है ४५ और हे सुव्रत! जो ब्राह्मण के सकाश से बिवाहीहुई अथवा बिना बिवाही हुई शूद्री में उत्पन्नहोवे वह पारसव पुत्र कहाता है ४६ इस कारण से तू अपने आत्मा को आप देने को योग्य नहीं है इसलिये जल्द गमन करके अपने माता पिता को बुला ४७ तब ब्रह्माजी के वचन से सनत्कुमार माता पिता का स्मरण करने लगा तब हे नारद! वे दोनों माता पिता तिस ब्रह्माजीको देखने के लिये तहां प्राप्तहुये ४८ पीछे धर्म्म और अहिंसा ब्रह्माजी को प्रणामकर तहां स्थित भये पीछे जब सुखपूर्वक वे दोनों बैठगये तब सनत्कुमार वचन कहता भया ४९ सनत्कुमार कहता है जो मैं योगज्ञान को जानने के लिये ब्रह्माजी से कहने लगा तब ब्रह्माजी मुझको पुत्र भाव के लिये वरते भये इस वास्ते तुम दोनों मुझको ब्रह्माजी के लिये निवेदन करो ५० ऐसे पुत्र से उक्त किये माता पिता ब्रह्माजीसे कहने लगे हे प्रभो! जो यह हम दोनों का पुत्र है ५१ सो अब से लगायत हे ब्रह्मन्! यह आपका पुत्र होवेगा ऐसे कहकर दोनों स्वर्ग को चले गये जैसे अभ्यागत ५२ तब ब्रह्माजी भी सद्विनय अर्थात्

श्रेष्ठ नम्रता से युक्तहुये सनत्कुमार के लिये द्वादश पत्र-
कवाले योग को कहने लगे ५३ जिसकी शिखापर स्थि-
तहुआ ॐकार है और जिस के शिरपर मेषराशि स्थित
है और बैशाखमास तिसका प्रथम पत्र कहा है ५४ और
नकार मस्तक रूप है-तहां बृषराशि स्थित है और ज्येष्ठ
मास यह दूसरा पत्र कहा है ५५ और मोकार दोनों
भुजाओं में है और तहां मिथुनराशि स्थित है और
आषाढ़ महीना है यह तीसरा पत्र कहा है ५६ और भ-
काररूप दोनों नेत्र हैं तहां कर्कराशि और श्रावणमास
स्थित है यह चौथापत्र कहाहै ५७ और हृदयरूप गकारहै
तहां सिंहराशि और भाद्रपद मास स्थितहै यह पांचवां
पत्र कहा है और कवचरूप वकार है तहां कन्या राशि
और आश्विनमास स्थित है यह छठापत्र कहा है ५८
और शस्त्र समूहरूप तेकार है तहां तुलाराशि और का-
र्त्तिक मास स्थित है यह सातवां पत्र कहा है ५९ और
नाभिरूप वाकार है तहां बृश्चिकराशि और मार्गशिर
मास स्थित है यह आठवां पत्र कहा है ६० और ज-
घनरूप सुकार है तहां धनुषराशि और पौषमास स्थित
है यह नववां पत्र कहा है ६१ और ऊरू युगलरूप दे-
कार है तहां मकरराशि और माघमास स्थित है यह
दशवां पत्र कहा है ६२ और दोनों गोड़ोंरूप वाकार
है तहां कुम्भराशि और फाल्गुन मास स्थित है यह
ग्यारहवां पत्र कहा है ६३ और दोनों पैररूप यकार है
तहां मीनराशि और चैत्रमास स्थित यह बिष्णुजी का

बारहवां पत्र कहाहै ६४ सो बारह आरोंवाला चक्र तहां है और छः नाभियोंसे युक्त और दो अश्वोंसे युक्तहुआ और तीन व्यूहोंवाला और एक मूर्त्तिवाला ऐसा परमेश्वर कहा है ६५ ऐसे ईश्वरका द्वादशपत्रवाला रूप तेरेलिये मैंने कहा जिसके जानने से हे मुनिश्रेष्ठ! फिर मरण नहीं होता ६६ और सत्त्वगुण से युक्त और चार वर्णोंवाला और चारमुखोंवाला और चारबाहुओंवाला और उदार अंगोंवाला और लक्ष्मी के चिह्नको धारण करनेवाला और अबिनाशी ईश्वरका ऐसा दूसरारूप कहाहै ६७ और तमोगुणसेयुक्त और शेष मूर्त्ति और हज़ार पैर और हज़ार मुखोंवाला और प्रजाको पालने वाला ऐसा तीसरारूप ईश्वरका कहाहै ६८ और रजोगुण से युक्त और रक्तवर्णवाला और चारमुखोंवाला और दो भुजाओंवाला और मालाको धारण करनेवाला और सृष्टिकाकर्त्ता और आदिपुरुष ऐसा चौथारूप ईश्वरका कहाहै ६९ और हे महामुने! ये तीनों व्यक्तरूप अव्यक्त रूप ईश्वरसे उत्पन्नहोते हैं और इसीवास्ते मरीचीआदि मुनी और हज़ारहां मुनी इसीसे उत्पन्न हुये हैं ७० हे मुनिवर्य! पुराण और अति पुष्टिको बढ़ानेवाला ऐसा रूप तेरे लिये कहा पीछे वह दुरात्मा दैत्य ईश्वरके समीप में फिर प्राप्त होताभया ७१ तब आवतेहुये दैत्यसे भगवान् बोले कि हे असुर! किसकारण करके तू प्राप्तहुआ है तब वह बोला कि तेरे संग युद्धकरनेको फिर मैं प्राप्तहुआ ७२ तब विष्णु बोले कि जो मेरेसंग युद्धकरने

को प्राप्त हुआ है तो ज्वररोगी की तरह बारंबार तेरा हृदय क्यों कांपता है इसवास्ते कायररूप जो तू है तेरे संग में युद्ध नहीं करता ७३ ऐसे बिष्णु ने उक्तकिया मुरदैत्य अपने हृदय में अपने हाथ को प्राप्तकर और कहां कांपता हूँ ऐसे बारंबार कहकर बिष्णु को गिराने की इच्छाकरताभया तब लाघवताकरके बिष्णु चक्रको छोड़ते भये तब वह दैत्य हृदयके कटनेसे नाशको प्राप्तहुआ ७४ जब दैत्यमारागया तब सब पीड़ाओं से रहित देवतेहोके पद्मनाभ बिष्णुकी प्रशंसाकरनेलगे ७५ ऐसे मुरदैत्य का नाश भगवान्ने किया है वह तेरेलिये बर्णनकिया ७६ इसी वास्ते बिष्णुभगवान् मुरारि नाम करके प्रसिद्धता को प्राप्त होते भये ७७ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांएकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

---

## बासठवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! तिसके अनन्तर सम्पूर्ण देवता भगवान् के भवनमें प्राप्तहोकर और तहां देवको नमस्कार करके जगत् के संक्षोभ का कारण कहनेलगे १ तिसको सुन भगवान् कहनेलगे कि हे देवताओ! हम महादेवजी के मन्दिर में जायहैं सो महायोगी चराचर जगत् के क्षोभको जानेगा २ ऐसे भगवान् ने कहेहुये इन्द्रादिक देवता जनार्दन भगवान् को आगेकरके मन्दराचलपर्वतको गये ३ तहां महादेवजी और बृष और पार्वतीजी और नन्दीगण इन्होंकरके शून्य मन्दराचल

पर्वतको देखते हुये अज्ञानरूप अँधेरे से आवृत होग-
ये ४ पश्चात् अत्यन्त प्रकाशवाले बिष्णुदेवजी तिन
मूढ़दृष्टिवाले देवताओं को देखकर कहनेलगे हे देव-
ताओ! आगे स्थितहुये महेश को क्यों नहीं देखते हो ५
ऐसे सुन भगवान् से कहनेलगे कि हे भगवन्! हमको
तो गिरिजापति देवेश नहीं दीखते हैं भगवन्! तिसकार-
णको हम नहीं जानते जिससे हमारी दृष्टि नष्टहुई है ६
ऐसे सुन जगन्मूर्त्ति भगवान् तिनसे कहने लगे कि
हे देवताओ! तुम देवके भागके पापिष्ठ हो और तुम
पार्वती गर्भके हंताहो और अपने स्वार्थ में तत्परहो ७
इसवास्ते महादेवजी ने तुम्हारा ज्ञान और विवेक हर
लियाहै क्योंकि जिससे आगे स्थितहुये और दीखते
हुयेभी महादेवजी को नहीं देखते ८ इसवास्ते शरीर
की शुद्धिकेलिये और देवेशको देखनेकेलिये तप और
कृच्छ्र से शुद्धहुये और स्नानकिये ईश्वरको स्नानकरावो
९ हे देवताओ! दूधके डेढ़सौ कलशाओंसे महाराजका
स्नानकरावो और चौंसठ दहीके कलशाओं से और
घृतके तीस कलशाओं से १० और सोलह पंचगव्य
के कलशाओं से और आठ शहदके कलशाओं से हे
देवताओ! इन्होंसे स्नानकराके पश्चात् संपूर्णोंसे दुगुने
जलके कलशाओं से स्नानकराओ ११ पश्चात् अ-
ष्टोत्तरशत स्तोत्र पढ़के स्तुतिकरो और भक्तिसे केसर
और चन्दन चढ़ाओ १२ और बिल्वपत्र और कमल
और धतूरा और सुन्दर चन्दन और आक और पा-

रिजात और बासन्ती इन्होंसे महाराज का पूजनकरो १३ और अगर और सहवाल और चन्दन इन्होंसहित धूपदेवो और ऋग्बेद में कहे पदक्रमों सहित सौरुद्रियोंका जापकरो १४ हे देवताओ ! ऐसे करनेसे देवेशको देखोगे और उपाय नहीं है हे मुने! ऐसेकहे देवताभगवान से कहतेभये १५ कि हे मधुसूदन ! तिस तप्तकृच्छ्र क बिधान हमारेसे कहो कि जिसके करनेसे थोड़ेहीकाल में शरीर शुद्धहोवे १६ ऐसे सुन भगवान् कहनेलगे कि हे देवताओ ! तीनदिन गरमजलको पीवे और तीनदिन गरमदूध को पीवे और तीनदिन गरमघृत को पीवे पश्चात् तीनदिन बायुका भक्षणकरै १७ और नित्य प्रति अड़तालीस तोले जलको पीवे और बत्तिसतोले दुग्ध और अठारहतोले घृत ऐसे नित्य पानकरै १८ पुलस्त्यजी बोले हे मुने ! जब भगवान्ने ऐसे बचनकहे तब सम्पूर्ण इन्द्रसे आदिले देवता शरीरकी शुद्धिके लिये तिस रहस्य तप्तकृच्छ्र को करतेभये १९ तिसके अनन्तर ब्रत करनेसे सम्पूर्ण देवता पापसे मुक्तहोगये और बिमुक्त पापहुये देवता भगवान् से कहनेलगे २० कि हे जगन्नाथ ! हे केशव ! अबकहो वे महादेवजी कहांहैं जिनको हम दुग्धआदि अभिषेकोंसे बिधिपूर्वक स्नान करावेंगे २१ हे मुने ! ऐसेसुन भगवान् बोले हे देवताओ! शङ्कर भगवान् यहांही स्थित हैं योगप्राय मेरे शरीरमें स्थितहुये को क्यों नहीं देखते २२ ऐसे सुन कहनेलगे कि महाराज हमको महादेवजी नहीं दीखते हे भगवन

सत्यकहो महादेवजी महाराज कहां हैं २३ हे मुने! पश्चात् अव्ययात्मा हरिभगवान् महादेवजी के चिह्न को अपने हृदय कमल में सोते हुये को दिखाते भये २४ पश्चात् सम्पूर्ण देवता क्रमसे दुग्धआदिकों से स्नान कराके पश्चात् अव्यय और शाश्वत और ध्रुव २५ ऐसे लिंग को सुगन्धवाले चन्दन से और गोरोचन से लेपित करते भये पश्चात् बिल्वपत्र और कमल इन आदिकों से पूजन करते भये २६ ऐसे भक्तिसे महाराज का पूजनकर और परम ओषधी निवेदन करके पश्चात् शत नामोंका जाप करके प्रणाम करते भये २७ पश्चात् देवता ऐसे चिन्तवन करते भये कि सत्त्वगुण और तमोगुणसे उत्पन्न हुये विष्णु और महादेवजी कैसे योगत्व को प्राप्तहुये २८ ऐसे देवताओं के चिन्तवन को भगवान् जानके विश्वमूर्त्ति होतेभये पश्चात् सम्पूर्ण लक्षणों से संयुक्त और सम्पूर्ण शस्त्रों से युक्त और अव्यय २९ उत्तम दो नेत्रों को धारण किये और शेषजी के समान कुंडलों के कुंडल धारण किये और मूंज सरीखे केशोंवाले और गरुड़ध्वज धारण किये ३० और चन्द्रमा धारण किये और सर्पोंका हार धारण किये और कटि देशमें पीली मृगचर्म को धारण किये ३१ और चक्र, खड्ग, हल, शार्ङ्ग, धनुष इन्हों को धारण किये और जटा, त्रिशूल, अजगव, धनुष, कपर्द, खट्वांग और कपाल और घण्टा और शङ्ख टंकारका शब्द इन्हों से युक्त ३२ ऐसे हरिशंकरजी को देखकर हे मुने! सम्पूर्ण देवता सर्वगत

अव्यय ऐसे कहके प्रणाम करतेभये ३३ पश्चात् ब्रह्मा
जी से आदि लेकर सम्पूर्ण देवता प्रणाम करके और
एकमति सम्पूर्ण करतेभये पश्चात् देवपति हरिभगवान्
तिन देवताओं को एकचित्त जानके और देवताओं को
ग्रहण करके शीघ्रही अपने आश्रम कुरुक्षेत्र को गये ३४
तहां जलमें स्थितहुये स्थाणुभूत भगवान् को देवता
देखते भये पश्चात् तिसको नमस्कार करके सम्पूर्ण
प्रवेश होते भये ३५ पश्चात् इन्द्र कहने लगा कि हे भ-
गवन्! शरीरधारियों को वरदो और हे जगन्नाथ! क्षुब्ध
हुये जगत् का उद्धारकरो ३६ पश्चात् सर्वव्यापी और
निरंजन ऐसे महादेवजी तिस मधुर बाणी को सुन के
और अत्यन्त बेगसे उठ ३७ और हे मुने! हँसते हुये हर
कहने लगे कि सम्पूर्ण देवताओ नमस्कार है पश्चात्
आगे से इन्द्रसहित विनययुक्त सम्पूर्ण देवता ३८ महा-
देवजीसे कहनेलगे कि हे शंकर! तिस महाब्रतको त्यागो
जिसके तेजसे तीनोंलोक क्षुब्ध और पीड़ितहोगये ३९
ऐसे सुन महादेवजी कहने लगे कि हे देवताओ! अच्छा
महाब्रत मैंने त्यागा पश्चात् प्रयत मनवाले प्रसन्न हुये
देवता स्वर्गमें जाते भये ४० पश्चात् हे नारदमुने! स-
मुद्र और द्वीप और पर्बत इन्हों सहित पृथ्वी कँपती
भई ४१ पश्चात् रुद्र तिस पृथ्वी को क्षुभितदेख चिन्ता
करनेलगा कि यह पृथ्वी किसवास्ते क्षुभितहुई पश्चात्
महादेवजी त्रिशूल लेकर कुरुक्षेत्र के चारों तरफ फिरने
लगे ४२ और तहां ओघवती के तीरपर तपोनिधि भा-

र्गवको देखतेभये पश्चात् देखके महादेवजी कहनेलगे ४३ कि हे विप्र! यह जगत्को क्षोभ करनेवाला तप किस वास्ते तपता है ४४ मेरे आगे शीघ्र वर्णनकरो हे नारद! ऐसे महादेवजी के बचन सुन भार्गव कहनेलगा कि हे त्रिलोचन! आपका आराधन कर्म्म के वास्ते यह तप मैं करताहूं और संजीवनी नाम महाबिद्याके जाननेकी इच्छा करताहूं ४५ ऐसे सुन महादेवजी कहनेलगे कि हे तपोधन! तेरे सुन्दर तपसे मैं प्रसन्न हुआ और यह बरभी दिया कि संजीवनी बिद्याको तू तत्त्वसे जानेगा ४६ पश्चात् हे मुने! शुक्र ऐसे बरको प्राप्तहोकर तपसे निवृत्त हुये परन्तु पृथ्वी फिरभी समुद्र और पर्वत और बृक्षों सहित कँपी ४७ पश्चात् फिर महादेवजी सप्तसारस्वत को प्राप्तहुये और तहां मंकण नाम ऋषि नृत्य करता हुआ देखा ४८ और यह भी जाना कि जो यह ऋषि भुजाओं को फैलाके भावसे बालककी तरह जो नृत्य करताहै इस वास्ते वेगसे स्वर्ग और भुवर्लोक पर्वतों सहित पृथ्वी कँपती है ४९ ऐसे जान महादेवजी तिसको प्राप्तहो और हाथों से रोक हँसतेहुये वचन कहनेलगे कि हे महर्षे! आप किसभावसे नृत्य करतेहो और किस हेतु से सो कहो और किसको प्रसन्नकिया चाहतेहो सो कहो ५० हे मुने! ऐसे सुन ब्राह्मण कहनेलगा कि हे देव! मेरी तुष्टि जिसकरके होती है तिसको सुन सो मैं अपने शरीरकी शुद्धिकेलिये बहुतवर्षों से मैं तप करताहूं ५१ सो भेदनहुये हाथसे शाकका रस निकसता है इससे हे त्रि-

जेंद्र इस बहुत दिनके तपसे मैं प्रसन्न हुआ और इस आपके नृत्यसे मैं अधिकही प्रसन्न हुआहूं ५२ फिर महादेवजी कहनेलगे कि हे द्विज! मुझको देखो कि अं-गुलिसे सफेद भस्म प्रवृत्त होताहै परन्तु मुझको आ-नन्द नहीं है और हे द्विजश्रेष्ठ! तू प्रमत्त होरहा है ५३ हे महर्षे! नारद ऐसे महादेवजी के उत्तम बाक्य को मं-कणनाम ऋषि सुनके और नृत्यादिकों को त्यागके वि-स्मितहुआ और बिनयसे नम्रहुआ महाराजके चरणों को प्रणाम करताभया ५४ पश्चात् महादेवजी तिस से कहनेलगे कि हे द्विज! तू अव्यय ब्रह्मके दुर्गलोक को प्राप्तहो और यह पृथ्वी पर तीर्थों में श्रेष्ठ और फल में पृथूदक के समानहो ५५ और यहां देवता और असुर और गन्धर्व और बिद्याधर और किन्नर ये सम्पूर्ण तिस सारस्वत के समीप रहैंगे और यह सारस्वत धर्म्म का निधान होवेगा और प्रधान होवेगा और पाप और मलों का हरनेवाला होगा ५६ और सुप्रभा और कांचनाक्षी और सुवेणु और विमलोदका और महोदरा और ओ-घवती और बिशाला सरस्वती ५७ हे द्विज! ये सात सरस्वती यहां नित्य बास करेंगी और शुभ जलसे सम्पूर्ण नदी सोमपानके फलको भी देंगी ५८ और तू भी कुरुक्षेत्रमें मूर्त्तिको स्थापन करके दुर्लभ और बड़ा ऐसे ब्रह्मलोकको प्राप्त होगा ५९ हे मुने! ऐसे महादेव जीसे कहा हुआ वह तपोधन मंकणकऋषि मूर्त्ति को कुरुक्षेत्र में स्थापन करके ब्रह्मलोक को जाताभया ६०

जब मंकणक चलागया तब पृथ्वी निश्चल होगई और पश्चात् महादेवजी अपने पवित्र स्थान मन्दराचलको जातेभये ६१ हे मुने! जैसे शंकर तपकेवास्ते गया यह तेरेसे कहाहै और यह दुष्टमति शून्यपर्वतमें तपकेवास्ते जैसे योजन करा है सोभी कहा ६२ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

## तिरसठवां अध्याय ॥

नारदमुनिने पूछा कि हे भगवन्! पश्चात् अन्धकनाम दानव जो पाताल में करताभया और मन्दराचल में स्थित महादेवजी जो करतेभये सो कहो १ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! पाताल में स्थितहुआ अन्धक जब मदन रूप अग्निसे वीजितहुआ तब तप्तशरीरहुये दानवोंसे यह वचन कहनेलगा २ कि हे दानवो! मेरा मित्र और बन्धु और भ्राता और पिता वही है कि जो हिमाचल की पुत्रीको मेरेपास ल्यावे ३ हे मुने! कामदेवसे अंधेहुये अन्धक दैत्येंद्र ने जब यह वचनकहा तब मेघकेसमान गम्भीर वाणीसे प्रह्लाद वचन कहताभया ४ कि हे दैत्येन्द्र! जो यह पार्वती है सो तेरी धर्मकी माता है और जो यह महादेवजी हैं सो पिताहैं इसमें कारण सुनो ५ हे दानव! पहले अपुत्र और धर्मनिष्ठ ऐसे तेरेपिताने पुत्र के वास्ते महादेवजीका आराधन किया ६ तब महादेव जीने यह वरदान दिया कि पुत्रकी कामनावाले तेरे पुत्र होगा जब ऐसे वचन कहा ७ तब हिरण्याक्षकी हांसीके

वास्ते पार्बतीजी ने योगमें स्थित महादेवजी के तीनों
नेत्र बन्द करदिये तिससे अन्धतम उत्पन्न हुआ ८
और तिस तमसे मेघ कैसे शब्दवाला तू हुआ तब महा-
देवजी कहने लगे कि हे दैत्य! इस अपने उपकारी पुत्र
को तू ग्रहणकर ९ परन्तु जब यह लोकमें दुष्टकर्म करेगा
और जब यह अधम त्रैलोक्य जननी की बांछा करेगा
१० और जब विप्रों को और देवताओं को ताड़ना
करावेगा तब इसको मैंही हननकरूँगा ११ हे मुने! ऐसे
महादेवजी कहके अपने स्थान मन्दराचल को ग
और हे अन्धक! तेरा पिताभी तेरेको लेकर रसातल म
गया १२ हे अन्धक! इसकारण से पार्बतीजी तेरीमाता
हैं और सम्पूर्ण जनों के और हे अन्धक! तेरे महादेवजी
पिता हैं १३ और गुरुहैं और हे अन्धक! आपभी तप
से युक्तहो और शास्त्रबेत्ताहो और गुणों से युक्तहो इस
वास्ते ऐसे पापसंकल्पमें तुम्हारे कैसोंकी बुद्धि नहींहोनी
चाहिये १४ और हे अन्धक! महादेवजी त्रैलोक्य में
प्रभुहैं और अब्यक्तहैं और सम्पूर्णों से नमस्कृत हैं औ
अजेय हैं इसवास्ते हे देवताओं को पीड़ा करनेवाले!
ऐसे महादेवजीकी भार्या के योग्य तू नहीं है १५ और
हे अन्धक! शैलराजकी पुत्री को तू प्राप्तहोने कोभी स-
मर्थ नहीं क्योंकि गणोंसहित महादेवजी को नहीं जीत
के यह मनोरथ प्राप्त होना दुर्लभहै १६ और जो पुरुष
भुजाओं से समुद्रको जीतले और सूर्यको पृथ्वी में गिरा-
दे और सुमेरुपर्व्वतको जो उलटदे सो महादेवजी को

जीते १७ अहो बड़े आश्चर्यकी बार्त्ताहै जो बलसे इन क्रियाओंको करे सो महादेवजीको जीते हे दैत्येन्द्र! यह सत्यसत्य वचन मैंने कहेहैं १८ और हे दैत्य! आपने क्या यह नहीं सुना है कि परस्त्री से कामवान् मूढ़राजा देशसहित नाशको प्राप्त होजाताहै १९ यहां इतिहास कहतेहैं कि हे अन्धक! पहले सत्ययुगकी आदिमें वृषपर्वानाम महासुर होताभया सो महातेजस्वी पौरोहित्य केवास्ते भार्गवको बरताभया २० और यह शुक्रसे रक्षित किया वृषपर्वाराजा अनेक प्रकारके राजाओंसे यजन करताभया पश्चात् शुक्राचार्य्यके एक अरजानाम कन्या होतीभई २१ सो किसी समयमें शुक्राचार्य्य वृषपर्वाके स्थानमेंगये तहां वृषपर्वाके पूजेहुये भार्गवसत्तम स्थित होतेभये २२ और हे महासुर! शोभनअङ्गवाली अरजा अपने गृह में अग्नि की शुश्रूषा करती हुई ठहरती भई पश्चात् हे दैत्येंद्र! यह नराधिप २३ दण्ड आया और पूछनेलगा कि शुक्राचार्य्य कहांहैं ऐसे सुन यह परिचारिका कहनेलगी कि भगवान् शुक्राचार्य्य तो दनुकेपुत्रको यज्ञकरानेगयेहैं २४ पश्चात् यह कहनेलगा कि भार्गवके आश्रममें स्थितहुई तू कौनहै ऐसे सुन यह कहनेलगी मैं आपके गुरुकी पुत्री हूं और अरजा मेरा नामहै २५ पश्चात् यह इक्ष्वाकुनन्दन शुक्रकी पुत्री के देखनेकेवास्ते आश्रममें प्रवेशहोगया २६ पश्चात् तिस को देखके उसी समय में राजा काममे नष्ट होगया २७ पश्चात् शुक्रकेशिष्य, भृत्य और मित्र इन सम्पूर्णोंको परे

करके अकेला प्राप्तहुआ २८ पश्चात् हे दानव! यहयश-स्विनी शुक्राचार्यकी पुत्री आयेहुये राजाको देखकर प्रस-न्नहुई भ्रातृभावसे पूजन करनेलगी २९ पश्चात् यह नृपति तिसको कहनेलगा कि हे बाले! हे शुभे! कामाग्नि से तप्त होतेहुये मुझको अपने मिलनेरूप जलसे आन-न्दितकर ३० ऐसे सुन यह राजा को कहनेलगी नहीं ऐसा मत कहो मैं कुमारीहूँ और मेरापिता महाक्रोध से देवताओं को भी दग्ध करदेता है ३१ और हे मूढ़बुद्धे! तू मेराभ्राता है और मैं धर्मकी तेरी भगिनीहूँ और तू मेरे पिताका शिष्य है ३२ ऐसे सुन यह कहने लगा कि हे भीरु! शुक्राचार्य तो मुझको किसी काल में दग्धकरेंगे और यह कामरूपी अग्नि मुझे अभी दग्ध करता है ३३ ऐसे सुन अरजा कहनेलगी कि हे राजन्! तुम एक मुहूर्त्त ठहरो और तिस गुरुकोही याचो वही मुझ को आपके लिये देदेंगे ३४ ऐसे सुन दण्ड कहनेलगा कि हे तन्वंगि! मेरा कालक्षेप अब नहीं होवेगा हे सुन्दरि! अ-वसर में यह बिघ्नहै ३५ ऐसे सुन अरजा कहनेलगी कि हे राजन्! अपने आत्मा के देनेको मैं समर्थ नहीं क्योंकि स्त्री स्वतंत्र नहींहोती हैं३६ हे राजन्! बहुत कहनेसे क्या है शुक्राचार्य के शापसे भृत्य और ज्ञाति और बांधवों सहित नाशको प्राप्तमतहो ३७ ऐसे सुनराजा कहनेलगा कि हे सुतनो! चित्रांगदा के चेष्टितको तू सुन हे शुभे! पहलेयुगमें ३८ बिश्वकर्माकीपुत्री साध्वी चित्रांगदानाम होतीभई सो रूप और यौवन सम्पन्न और पद्महीन प-

म्भिनीकी तुल्य ३९ ऐसी चित्रांगदा किसी समय में सखियों सहित नैमिषारण्य स्नान करने को महारण्य में प्राप्तहुई ४० पश्चात् जब यह कमललोचना स्नान करने को उतरी उसी समय में सुदेवका पुत्र बुद्धिमान् सुरथनाम राजा भी वहां आता भया ४१ पश्चात् तिस तन्वंगी चित्रांगदा को सुन्दर अंगोंवाला और कामदेव से पीड़ित ऐसा सुरथ देखता भया और यह चित्रांगदा तिसको देखके सत्ययुक्त सखियों को वचन कहने लगी ४२ अहो देखो यह राजाका पुत्र कामदेव से कैसे पीड़ित होरहा है इस रूपवान् के लिये मेरादान योग्य है ४३ हे मुने! ऐसा वचन सखी सुनके कहने लगी कि हे बाले! हे सुन्दरि! तू प्रगल्भा नहीं है और हे अनघे! आप अपना देना तेरे अधीन नहीं ४४ क्योंकि सम्पूर्ण शिल्पों का जाननेवाला धर्मिष्ठ तेरापिता है सो देगा हे सुन्दरि! तुझे आप अपना शरीर राजा को देना उचित नहीं ४५ हे मुने! पश्चात् इसी अवसर में कामदेव के शरों से पीड़ित और सत्यवादी और बुद्धिमान् ऐसा सुरथनाम राजा इसको प्राप्तहोकर वचन कहने लगा ४६ कि हे मदिरेक्षणे! अहो तू देखनेही से मुझको मोह कराती है हे बाले! तेरीदृष्टिरूप शरपातसे कामदेव से पीड़ितहूँ ४७ इसवास्ते मुझको कुन्दनरूप शय्यापर शयनकरा और जो ऐसे नहीं करेगी तो तेरे दर्शन से वारंवार कामदेव मेरे को दग्ध करदेगा ४८ पश्चात् हे मुने! कमलके से नेत्रोंवाली और सुन्दर अंगोंवाली यह पुत्री चित्रांगदा

को सखियों ने निवारण भी करी ४९ परन्तु यह अपने आत्मा को आपही राजाको देती भई ५० दण्डक राजा कहता है कि सुश्रोणि ऐसे पहले तिस सुतन्वी ने तिस राजाकी रक्षाकरी है इस वास्ते तू मेरी भी रक्षा करने के योग्यहै ५१ ऐसे बचन सुन अरजा तिस दण्डक राजा को कहती भई कि हे राजन्! तिसका बृत्तान्त और उत्तर क्या आपने नहीं जाना ५२ इसवास्ते मैं तुझसे कहतीहूँ हे राजन्! जब तिस तन्वंगी ने सुरथ राजाको स्वातंत्र्य से अपना शरीर देदिया तब तिसको पिता शाप देता भया ५३ हे पुत्रि! तू मन्दचित्त से और स्त्री भावसे जो धर्म्म को त्यागकर अपने आत्मा को देती भई इस वास्ते तेरा बिवाह नहीं होगा ५४ और जो बिवाह रहित होती है सो भर्त्ता से सुखको नहीं प्राप्तहोती और पुत्र फलको भी नहीं प्राप्तहोती और पति के योगको भी नहीं प्राप्तहोगी ५५ हे मुने! जब यह ऐसा शाप देदिया तब सरस्वती इस अकृतार्थ राजा को तेरह योजन बहाती भई ५६ जब यह राजा दूर होगया तब यह चित्रांगदा मोहको प्राप्तहोगई तिसके अनन्तर सम्पूर्ण सखी सरस्वती के जल से तिसको सेचन करती भई ५७ पश्चात् हे महाबाहो! वह बिश्वकर्मा की पुत्री ठंढाजल से सींचीहुई मृत्युतुल्य होगई पश्चात् सखी तिसको मरी जानके बहुत जल्दी से कितनीक तो काष्ठ लानेको गईं ५८ और कितनीक आकुलहुई अग्नि लानेको गईं जब ये सम्पूर्ण उत्तमबन चलीगईं तब यह संज्ञाको प्राप्त

होतीभई ५९ और वह शोभनअंगोंवाली चित्रांगदा दिशाओंकोभी देखतीभई ६० पश्चात् यह राजाको और सखियों को नहीं देखतीहुई और प्याससे व्याकुलहुई सरस्वतीमें गिरगई ६१ पश्चात् हे राजन्! कांचनाक्षी तिसको महानदी गोमतीविषे तरंगों से कुटिल जल में फेंकतीभई ६२ पश्चात् हे राजन्! जब गोमती ने भी तिसका भाव जानलिया तब उसने भी सिंह व्याघ्रों के भयवाले महावन में फेंकदी ६३ ऐसे तिस स्वतन्त्रा चित्रांगदाकी यह अवस्था मैंने सुनीहै इसवास्ते उत्तम शीलकी रक्षा करतीहुई मैं अपने आत्माको कभी नहीं दूँगी ६४ हे मुने! पश्चात् इन्द्रके समान बलवाला दंडक तिसके वचन को सुनकर हँसा और शुक्राचार्य्य की तपस्विनी अरजा कन्या से कहनेलगा ६५ कि हे कृशो-दरि! तिसका उत्तर और वृत्तांत और तिसकापति सुरथ राजाका उत्तर और वृत्तांत तू सुननेको बुद्धि धारण कर ६६ हे सुन्दरि! जब वह राजा सुरथ दूरहोगया और चित्रांगदा जब महावनमें पड़गई ६७ तब आकाश में विचरता हुआ गुह्यकनाम अंजन तिसको देखता भया ६८ पश्चात् बीतेहुये तिसके पिता के वृत्तांत को और जानके और तिस कृशोदरीको जानके और सुरथ राजाके वृत्तांतको जानके यह गुह्यक अत्यन्त दुःखित होतागया ६९ पश्चात् तिस बालाको वह प्राप्तहोकर और यत्नसे शांति [illegible] कहनेलगा ७० कि हे शुभगे! [illegible] और विषाद मतकर तू सुरथ राजा को निश्चय

प्राप्तहोगी और हे सुन्दरनेत्रोंवाली ! तिसके संयोग
कोभी प्राप्त होजायगी इसवास्ते श्रीकंठ महादेवजी के
देखनेको तू शीघ्रजा ७१ हे सुन्दरि ! तिस गुह्यकसे ऐसी
कहीहुई वह सुलोचना कालिन्दी के दक्षिणतटमें शीघ्रही
श्रीकंठको प्राप्तहुई ७२ पश्चात् यमुनाजी में स्नानकरके
और श्रीकंठके दर्शनकरके और शिरसे नमस्कार करके
इतने मध्यमें सूर्य्यआया इतनेमेंही तहां स्थित होतीभई
७३ इसके अनन्तर देवके दर्शनकरनेको और स्नान क-
रनेको तपोधन और शुभ ७४ और सामवेदी और सत्य-
वादी ऐसा पाशुपताचार्य्यमुनि तिसतन्वंगी और शुभ
तिस चित्रांगदा को ऐसे स्थित देखते भये ७५ कि जैसे
कामदेव से रहित रति ७६ पश्चात् तिसको देखके वह
मुनि ध्यान करताभया कि यह कौनहै ७७ पश्चात् यह
अंजलि बांधके ऋषि के आगे स्थितहुई सो ऋषि
तिसको देख कहनेलगा ७८ कि हे पुत्रि ! तू देवता की
पुत्रीके समान किसकी पुत्री है और मृग मनुष्य रहित
इस बनमें किसवास्ते आई है ७९ वह कृशोदरि ऐसे
सुनके तिस ऋषि को यथार्थ बचन कहती भई ऋषि
सुनके कोपको प्राप्तहुआ ८० और पश्चात् विश्वकर्मा
को शाप देदिया कि जिससे पापी विश्वकर्मा ने अपनी
पुत्री भी पतिके साथ नहीं योजनकरी तिससे वह वानर
होजावे ८१ हे मुने ! ऐसे कहके वह महाभाग फिर स्नान
करके और पश्चात् सायंकालकी सन्ध्याकरके शंकरका
पूजन करताभया ८२ और देवदेवेश हरका यथोक्त विधि

पूजन करके और पश्चात् आचमन करके ८३ तिस सुन्दर भृकुटियोंवाली और सुन्दर दांतोंवाली और पति की अभिलाषावाली को वचन कहने लगे ८४ कि हे शुभगे! सप्तगोदावर शुभदेश में तूजा और तहां स्थित हुये हाटकेश्वर महादेवजी का पूजनकर ८५ पश्चात् तहां बहुत विख्यात देववती रम्भा आवेगी और कंदर-माली दैत्यकी पुत्री आवेगी ८६ और मदयन्ती नाम गुह्यककी पुत्री आवेगी और उसीजगह तपस्विनी मेघ की पुत्री भी आवेगी ८७ और अन्यपर्जन्य की पुत्री वेदवतीभी आवेगी पश्चात् जब तहां प्राप्तहोकर महा-देवजीका पूजनकरेगी तब तू संयोगको प्राप्तहोगी ८८ पश्चात् वह शुद्धि में तत्पर हुई फल मूलों को भोजन करती भई ८९ और वह ज्ञानसम्पन्न ऋषि तिसके प्यारकी इच्छाकरके महाख्यान एकश्लोक श्रीकण्ठ के मन्दिरमें लिखताभया ९० कि अहो देवता अथवा असुर अथवा यक्ष अथवा मनुष्य अथवा रजनीचर ऐसा कोई नहीं ९१ कि जो अपने पराक्रमसे इस मृगके समा-ननेत्रोंवालीके दुःखको दूरकरे ९२ वह मुनि ऐसे कहके पश्चात् ईड्य पुष्करनाथ विभुके देखने को और मुनि वृन्दोंसे वन्द्य पयोष्णीनदी के देखनेको विशाल नेत्र को प्राप्त होते भये ९३ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

# चौंसठवां अध्याय॥

दण्डकराजा कहनेलगा कि हे अरजे! सुरथवीर को स्मरण करतीहुई चित्रांगदा का सुखपूर्वक तहां बहुतसा काल जाता भया १ पश्चात् मुनिके शापसे बानरहुआ बिश्वकर्मा भाग्यसे प्रेरित किया मेरुपर्बतकी शिखर से पृथ्वीपर पड़ताभया २ पश्चात् गुल्मसहित घोरबनमें और शालूकिनी नदीमें और शाल्वेयनाम पर्वत में ३ इन्होंमें तहां फल मूल भोजन करताभया बिश्वकर्माके तिस बनमें बहुत बर्षों का काल जाताभया ४ पश्चात् एक समय में दैत्य शार्दूल कंदराख्य अपनी देववती प्यारी पुत्री को ग्रहणकर तहां आताभया ५ पश्चात् पिता सहित बनमें आतीहुई तिस सुन्दर मुखवाली को यह बानर श्रेष्ठबलसे ग्रहण करताभया ६ पश्चात् कंदरदैत्य बलवान् बानर से पकड़ी हुई तिस अपनी कन्याको देखके क्रोधयुक्त हुआ खड्ग लेकर दौड़ता भया ७ पश्चात् यह बानर आतेहुये तिस दैत्येंद्र को देखकर तिस सुन्दर अंगोंवाली सहित वह बलवान् बन्दर हिमाचल को प्राप्त होता भया ८ और तहां यमुनाके तटबिषे श्रीकंठ महादेवजीको देखता भया पश्चात् तिस यमुना से थोड़ीही दूर ऋषिबर्जित आश्रम देखकर ९ पश्चात् वह कपि तिस पवित्र महा आश्रममें देववतीको स्थापन करके पश्चात् कंदरदैत्य के देखतेहुये कालिंदी में डूबताभया १० पश्चात् कंदर

दैत्य तिस वानर सहित पुत्री को मरीहुई जानके यह महातेजा पाताल में अपने आश्रम को जाताभया ११ पश्चात् यह वानर देवी कालिंदी के वेगसे बहुत उत्तम और जनों से आश्रित ऐसा शिवनाम देश में प्राप्तहोगया १२ पश्चात् वेगसे वह कपि तिसको तिरके पश्चात् जहां सुलोचनाथी तिस पर्वत में जानेकी यह महातेजा इच्छा करताभया १३ इसके अनंतर जानेकी इच्छाकरताहुआ कपि मदयंती पुत्री सहित गुह्यकोत्तम अंजन को आताहुआ देखताभया १४ पश्चात् तिसको देखके यह ऐसे मानताभया कि यह निश्चय वही देववती है तिसते जलमें गोतामारने से उत्पन्न हुआ मेराश्रम वृथाहीगया १५ पश्चात् ऐसे चिन्तवनकरता हुआ कपि तिस सुन्दरी को दौड़ताभया पश्चात् वह तिसके भयसे हिरणमयी नदीमें पड़तीभई १६ पश्चात् यह गुह्यक इसपुत्रीको नदीकेजलमें पड़ीहुई देख दुःख शोकसे व्याकुलहुआ अंजन नाम पर्वतको जाताभया १७ तहां यह मौनव्रतको धारणकर पवित्रहुआ तपमें स्थितहोकर तहां बहुतसे वर्षों को यह महातेजाव्यतीत करताभया १८ पश्चात् मदयंतीभी हिरण्मयी के वेगसे बहाईहुई साधुओंयुक्त तिस महापुण्य कोशल देशको प्राप्तहुई १९ पश्चात यह रोतीहुई और चलती हुई डाढ़ियों से व्याप्त एक बड़ेवृक्ष को ऐसे देखती भई मानो जटा धारण किये शिव २० ऐसे बहुत छाया वाले बड़को देखकर तहां यह सुन्दरमुखवाली विश्राम

करतीभई पश्चात् वह शिलापृष्ठपर बैठीहुई यह बचन सुनतीभई २१ कि अहो ऐसा कोई पुरुष नहीं है कि जो तिस ऋषि को यह कहै कि बड़के बृक्ष में एक पुत्र बँधरहाहै २२ पश्चात् स्पष्ट अक्षरों सहित ऐसीबाणी को मदयंती सुनके पश्चात् ऊपर नीचेको और चारों तरफ को देखतीभई २३ पश्चात् बृक्षकी शिखर में पिंगल जटा को धारण किये औ यन्त्रों से बद्ध ऐसे पांचबर्ष के बालक को देखतीभई २४ पश्चात् अनेक प्रकारसे कहतेहुये तिसबालक को देख मदयंती अत्यंत दुःखित होगई और कहनेलगी कि हे बालक तू कह यहां किसपापीने बांधाहै २५ ऐसेसुन वह कहनेलगा कि हे महाभागे! मैं बानरसे बड़बिषे बांधाहूँ और यहां तपके बलसे जटाओंमें जीताहूँ २६ और हे महाभागे! जो पुरोंमें उत्तमपुरहै तहां देवता महेश्वरहै तहांतपकी राशि मेरापिता ऋतध्वज है २७ तिसका मैं पुत्र हूँ पश्चात् तप करतेहुये तिस ऋषि के महायोग उत्पन्न होताभया २८ पश्चात् हे बाले! जाबाली ऐसा नाम धरके यह कहताभया कि तू पांचहजारबर्ष तो बालक ही रहेगा २९ और दशहजारबर्ष कुमारभावमें रहेगा और बीसहजारबर्ष यौबन में स्थितरहेगा ३० और चालीस हजारबर्ष पर्यंत बृद्धभावमें रहेगा ३१ और बालभाव में पांचसौबर्ष दृढ़ बन्धन को भोगेगा ३२ और एक हजारबर्ष कौमारमें कायपीड़न को भोगेगा ३३ और यौबन में दोहजारबर्ष परम रोगोंको भोगेगा और चार

हजार वर्ष वृद्धावस्था में अद्भुत क्लेश को भोगेगा ३४ और भूमि शय्यादिकों को प्राप्त होगा और कुत्सित अन्नों के भोजन को प्राप्तहोगा ३५ पांचवर्ष का मैं बालक ऐसे पिता से कहाहुआ स्नान करने को हिरण्मती को जाता हुआ पृथ्वीपर बिचरता हूँ ३६ हे सुन्दरि! तिसके अनंतर मैं एक कपिवर अर्थात् उत्तम को देखता भया सो मुझको कहता भया कि महाआश्रम में स्थापनकरी इस देववतीको ग्रहण करके कहांजायगा ३७ हे सुन्दरि! पश्चात् फुरती करते हुये मुझको लेकर बड़के अग्रभागमें जटाओं से बांधताभया ३८ और पश्चात् हे भीरु! तिस कपिने गहरी लतापाशों से रक्षा भी करदी ३९ और महायंत्र रचदिया ऐसे ऊपर नीचे और चारोंतरफ ते लतामय यंत्र से ४० रोकके वह कपिवर अमर पर्वत को चलागया हे शुभे! यथेच्छ जो मैंने देखा था सो तेरेप्रति कहदिया ४१ और हे शोभने! स्त्रियों से रहित इस महा वनमें तू कौनहै और हे शोभन अंगोंवाली! यहां किस वास्ते आई है यहसंपूर्ण मेरे आगे वर्णनकर ४२ हे मुने! ऐसेमदयन्ती सुन कहने लगी कि हे बालक! गुह्यकों का स्वामी अंजन नाम मेरा पिता है और प्रम्लोचा के गर्भ से उत्पन्न हुई मदयन्ती मेरानाम है ४३ और हे बालक! मेरे जन्म समय में मुद्गलऋषि ने यह कहा था कि यह ऐसे लग्न में जन्मी है कि राजाकी रानीहोगी इसमें संदेहनहीं ४४ और तिसकाल में देवताओं के नक्कारेबाजे और मंगल शब्द हुये पश्चात फिर मुनि बोला कि इसमें संदेह नहीं

निश्चय राजाकी रानी होगी ४५ और यह कन्या भाव बिषे महाघोर संदेह को प्राप्तहोगी पश्चात् ऋषि ऐसे अद्भुत बचन कहके गमन करता भया ४६ पश्चात् हे बालक! मेरापिता मुझको तीर्थकराने को हिरण्मती के जाने की इच्छा करता भया पश्चात् तीर्थ को एक कपि अर्थात् बानर पड़ता भया ४७ पश्चात् तिस कपि के भय से मैं सागर के जल में गिरगई तिस जलके बेगने यहां मनुष्य रहित देशमें प्राप्तकरदी ४८ पश्चात् जाबालिऋषि तिसके बचन सुन कहनेलगा कि हे सुन्दरि! तू यमुना के तटबिषे श्रीकंठमहादेवजी को प्राप्तहो ४९ तहां मध्याह्न में मेरे पिता महादेवजी का पूजन करनेको आतेहैं सो तिनके आगे तू संपूर्ण बृत्तांत कह उन्हों से शीघ्रही कल्याण को प्राप्तहोगी ५० पश्चात् शीघ्रही वह मदयन्तीबाला रक्षाके वास्ते हिमाद्रिके समीप यमुना में तपस्वी के पास चली ५१ सो कन्द मूल फल भोजन करतीहुई बहुतकाल में शंकरके स्थान पर पहुँची और तहां ऋषिभी आये ५२ पश्चात् यह लोकबंदित देवदेवेश श्रीकंठ को प्रणामकरके पश्चात् हे मुने! यह तिन ऋषियों को देखती भई ५३ और पश्चात् वह सुन्दर हासवाली तिन्होंके प्रयोजनको जानके पश्चात् जावालिका कहाहुआ श्लोक तिसको लिखा ५४ और कहने लगी कि हे भगवन्! मुद्गलऋषिने मेरेप्रति यह कहा था कि यह राजाकी रानी होगी सो वही मैं इसअवस्थाको प्राप्तहुई हे भगवन्! मेरी रक्षाकरने को कोई समर्थभी

है ५५ वह ऐसे शिलापट्टपर लिखकर यमुनाजी स्नान करनेकोगई पश्चात् तहां मत्तकोकिलों से शब्दित एक श्रेष्ठआश्रमदेखतीभई ५६ पश्चात् तहां यह ऐसेजानती भई कि यहां कोई श्रेष्ठऋषि है ऐसे चिन्तवन करतीहुई तिस महा आश्रमको प्राप्तहुई ५७ पश्चात् तहां आश्रममें देवांगनाकीसदृश देववतीको देखतीभई पश्चात् वह दैत्यनन्दिनी भी सूखे मुखवाली और चंचलनेत्रों वाली और मलिन कमलिनी के समान ऐसी आतीहुई ५८ तिस यक्षनन्दिनीको देखतीभई पश्चात् यह कौन है ऐसे चिंतवनकर उठके खड़ीहोगई ५९ और पश्चात् आपसमें बारंबार अत्यन्त मिलतीभई और पश्चात् आपसमें पूछतीभई और सम्पूर्ण वृत्तांत आपसमें कहती भई ६० पश्चात् आपसके संभाषणसे ये तत्त्वों को जानके और अनेकप्रकारकी कथाकहनेलगी ६१ पश्चात् इसी अन्तर में आदर से श्रीकंठजी के स्नानकराने को वह तत्त्वज्ञमुनि श्रेष्ठ अक्षरों को देखके बांचता भया ६२ पश्चात् तिसके अर्थ को जानके और एकमुहूर्त्त ध्यान करके वह तपोनिधि सम्पूर्ण वृत्तांतको जानता भया ६३ पश्चात् वह ऋतध्वज शीघ्रही देवेशका पूजन करके पश्चात् इक्ष्वाकुराजा के देखने को अयोध्याको जाता भया ६४ पश्चात् तिस नृपति श्रेष्ठको देखकर यह तपस्वी ऐसे वचन कहता भया कि हे राजशार्दूल ! हे पार्थिव ! मेरी विज्ञप्ति को आप सुनो ६५ हे राजन् ! संपूर्ण शास्त्रों को जाननेवाला और संपूर्ण गुणों से युक्त ऐसा मेरापुत्र

कपिने तेरेदेशोंके समीपमें बांधरक्खाहै ६६ सो हे राजन्! तिसके छुड़ानेको तेरापुत्र समर्थ है ६७ और अन्य कोई नहीं पश्चात् हे कृशोदरि! सम्पूर्णशास्त्रों को जाननेवाला मेरापिता तिसमुनिके बचनको सुनके पश्चात् प्यारेपुत्र शकुनिको आज्ञा देताभया ६८ पश्चात् मेरे पिता का भेजाहुआ महाभुज मेराभ्राता ऋषिसहित बन्धनोदेश को प्राप्तहुआ ६९ पश्चात् डाढ़ियों से आच्छादित अ-त्यन्तऊँचे तिसबड़को देख पश्चात् शिखर में बँधेहुये ऋषिपुत्र को देखताभया ७० और तिसके चारोंतरफ सम्पूर्ण लताओं के पाशों को भी देखताभया पश्चात् जटाओं से युक्त तिस ऋषिपुत्रको देख ७१ यह बल-वान् धनुषको चढ़ाताभया पश्चात् लाघवसे तिसऋषि पुत्रकी रक्षाकरताहुआ बाणों से सम्पूर्ण पाश छेदनकर-ता भया ७२ पीछे वह मुनि तिस बटपर चढ़ता भया पश्चात् बिधान पूर्वक मस्तक से तिस ऋषि पिता को प्रणाम करता भया ७३ पश्चात् तिसपुत्र से मिल और मस्तक बिषे सूँघ ७४ पश्चात् पुत्र के छुटाने को नहीं समर्थ होताभया पश्चात् शकुनीबली शीघ्रही धनुष और बाणोंको रखके ७५ जटाओं से छुड़ानेको बड़पर चढ़ा पश्चात् जब बानर ने नहीं छुटानेदिया ७६ तब परमर्षि सहित शकुनि उतरा ७७ और धनुर्बाणों को लेकर शरोंका मंडप करदिया पश्चात् लाघव से अर्द्ध-चन्द्र शरों करके तीन प्रकारसे तिसशाखाको छेदन कर-ता भया ७८ पश्चात् कटीहुई शाखाकर यह भारवाह

तपोधन शर सोपानमार्ग करके वृक्ष से उतरा ७९ पश्चात् धनुष धारण किये नरेन्द्रपुत्रने जब अपने पुत्रकी रक्षा करदी तब भारवाह जावालि करके सहित ऋतध्वज श्रीयमुनाजी को प्राप्त होते भये ८० ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांदण्डकोपाख्यानोनाम चतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४ ॥

---

# पैंसठवां अध्याय ॥

हे मुने! पश्चात् राजादण्डक कहने लगा कि हे बाले! इसी अन्तर में यक्षकी पुत्री और असुर की पुत्री ये दोनों योगिनियों में श्रेष्ठ श्रीकंठहरका दर्शन करने को प्राप्तहुईं १ तहां आके पुष्प की तरह कुंभलाये हुये विभु को देखती भईं और बहुत निर्माल्यों से युक्त देखती भईं पश्चात् जब ऋतध्वज चलागया २ तब ये दोनों कन्या देवेश को देखकर विधिपूर्वक स्नान कराती भईं और दिन में और रात्रि में पूजन करती भईं ३ पश्चात् तहां तिन्हों के स्थित होते अव्यक्त श्रीकण्ठ महादेवजी के दर्शन को गालव नाम ऋषि आते भये ४ सो गालवऋषि इन दोनों कन्याओं को देखकर ये किस की कन्या हैं ऐसे चिन्तवन करता भया पश्चात् कालिंदी के सुन्दर जल में यह ऋषि स्नानकरके ५ मन्दिर में प्रवेश होकर श्रीकंठ महादेवजी का पूजन करता भया पश्चात् ये यक्ष और असुर की कन्या सुन्दर स्वर से गान करती भईं ६ पश्चात् गालव तिन्हों के स्वर को सुन यह जानता भया

कि ये दोनों गंधर्वों की कन्या हैं इस में सन्देह नहीं ७
पश्चात् गालव महामुनि महादेवजी महाराजका पूजन
और जाप करके कन्याओं के समीप गये और कन्याओं
ने प्रणामकरी पश्चात् यह मुनि तिन्हों से पूंछता भया
कि तुम किसकी कन्याहो ८ जो महादेव जीके अलंकार
करने में भक्तियुक्त हो पश्चात् हे मुने! वे शोभन मुखो
वाली कन्या तिस मुनि श्रेष्ठ को यथार्थ बचन कहने
लगीं ९ पश्चात् तपस्वियों में श्रेष्ठ यह गालव ऋषि
संपूर्ण बृत्तांत को जान के और तिस रात्रि में वहीं बास
करके तिन कन्याओं से पूजितहुआ मुनि १० प्रातः
काल उठके और बिधान से महादेवजी का पूजन करके
और पश्चात् तिन कन्याओं को प्राप्त होके कहने लगा
कि मैं तो उत्तम पुष्करारण्य को जाऊंगा ११ मैं तुम्हा
को पूँछता हूं मुझको आज्ञा देने को आप योग्य हो प
श्चात् वे कन्या पूँछनेलगीं कि हे ब्रह्मन्! तुम्हारे दर्श
दुर्लभ हैं १२ आप किसवास्ते पुष्करारण्य को जावें
पश्चात् महाकार्य से संयुक्त यह महातेजा तिन्हों को व
चन कहने लगे १३ कि हे कन्याओ! कार्त्तिकी पूर्णिम
पुष्करजी में बहुत पुण्य को देनेवाली है ऐसे सुन ये क
हनेलगीं कि महाराज हम भी वहीं जावेंगी और तुम्ह
बिना यहां स्थित होनेको हमसमर्थ नहीं ऐसे सुन ऋ
बोला अच्छा १४ यह ऋषि श्रेष्ठ स्तुति और नमस्क
करके ऋषि कन्याओं करके सहित पुष्करारण्य को
गया १५ और तैसेही अन्य भी ऋषि तहां हजारों आये

और पार्थिव और जनपदभी आये पश्चात् वे ऋषि कार्तिकी को पुष्करजी में स्नान करतेभये १६ और नाभाग इक्ष्वाकु इन्हों सहित सम्पूर्ण राजास्नान करतेभये पश्चात् गालवऋषि भी तिन कन्याओं सहित आया १७ और धनुषाकृति पुष्करके मध्य में स्नान करने को निमग्नहुआ १८ पश्चात् तहां बहुत मत्स्य कन्याओं से वारंवार प्रीयमाण जलेशय महामत्स्य को देखता भया और वह तिमिनाम मत्स्य तिन्हों से कहता भया कि तुम धर्म को नहीं जानतीहो १९ उल्वण और घोर ऐसे जनापवाद अर्थात् झूठी चुगलीके सहनेको कौन समर्थ है वे तिस महामत्स्य से कहनेलगीं कि गालव ऋषिको क्यों नहीं देखने २० जो तपस्वियोंकी कन्याओं सहित यथेच्छ विचरता है जो यह धर्मात्मा तपोधन भी जनापवाद से नहीं डरता २१ तू किसवास्ते जलचारी भी डरता है पश्चात् वह तिमिमत्स्य तिन्हों से कहने लगा २२ कि यह ऋषि राग से अंधाहुआ सर्वमानव भय को क्याजाने ऐसे मत्स्य के वचन सुनके गालव लज्जायुक्त होगया २३ वह जितेंद्रिय निमग्न हुआ भी नहीं उत्तर देता भया और स्थितही रहताभया पश्चात् वे रंभोरु कन्याभी स्नानकर और निकस के तटपर स्थित होगईं २४ और दर्शनों की अभिलाषा से तिस मुनिवर को देखतीहुई ठहरीं ऐसे पुष्कर यात्राकरके सम्पूर्ण मनुष्य जैसे आयेथे वैसेगये २५ ऋषि और राजा और नानाप्रकार के जनपद अर्थात् देशों के मनुष्य

कि ये दोनों गंधर्वों की कन्या हैं इस में सन्देह नहीं ७ पश्चात् गालव महामुनि महादेवजी महाराजका पूजन और जाप करके कन्याओं के समीप गये और कन्याओं ने प्रणामकरी पश्चात् यह मुनि तिन्हों से पूँछता भया कि तुम किसकी कन्याहो ८ जो महादेव जीके अलंकार करने में भक्तियुक्त हो पश्चात् हे मुने! वे शोभन मुखों वाली कन्या तिस मुनि श्रेष्ठ को यथार्थ बचन कहने लगीं ९ पश्चात् तपस्वियों में श्रेष्ठ यह गालव ऋषि संपूर्ण बृत्तांत को जान के और तिस रात्रि में वहीं बास करके तिन कन्याओं से पूजितहुआ मुनि १० प्रातःकाल उठके और बिधान से महादेवजी का पूजन करके और पश्चात् तिन कन्याओं को प्राप्त होके कहने लगा कि मैं तो उत्तम पुष्करारण्य को जाऊंगा ११ मैं तुम्हारे को पूँछता हूं मुझको आज्ञा देने को आप योग्य हो पश्चात् वे कन्या पूँछनेलगीं कि हे ब्रह्मन्! तुम्हारे दर्शन दुर्लभ हैं १२ आप किसवास्ते पुष्करारण्य को जावेंगे पश्चात् महाकार्य से संयुक्त यह महातेजा तिन्हों को बचन कहने लगे १३ कि हे कन्याओ! कार्त्तिकी पूर्णिमा पुष्करजी में बहुत पुण्य को देनेवाली है ऐसे सुन ये कहनेलगीं कि महाराज हम भी वहीं जावेंगी और तुम्हारे बिना यहां स्थित होनेको हमसमर्थ नहीं ऐसे सुन ऋषि बोला अच्छा १४ यह ऋषि श्रेष्ठ स्तुति और नमस्कार करके ऋषि कन्याओं करके सहित पुष्करारण्य को गया १५ और तैसेही अन्य भी ऋषि तहां हजारों आये

और पार्थिव और जनपदभी आये पश्चात् वे ऋषि कार्तिकी को पुष्करजी में स्नान करतेभये १६ और नाभाग इक्ष्वाकु इन्हों सहित सम्पूर्ण राजास्नान करतेभये पश्चात् गालवऋषि भी तिन कन्याओं सहित आया १७ और धनुषाकृति पुष्करके मध्य में स्नान करने को निमग्नहुआ १८ पश्चात् तहां बहुत मत्स्य कन्याओं से बारंबार प्रीयमाण जलेशय महामत्स्य को देखता भया और वह तिमिनाम मत्स्य तिन्हों से कहता भया कि तुम धर्म को नहीं जानतीहो १९ उल्बण और घोर ऐसे जनापबाद अर्थात् झूठी चुगलीके सहनेको कौन समर्थ है वे तिस महामत्स्य से कहनेलगीं कि गालव ऋषिको क्यों नहीं देखते २० जो तपस्वियोंकी कन्याओं सहित यथेच्छ बिचरता है जो यह धर्मात्मा तपोधन भी जनापबाद से नहीं डरता २१ तू किसवास्ते जलचारी भी डरता है पश्चात् वह तिमिमत्स्य तिन्हों से कहने लगा २२ कि यह ऋषि राग से अंधाहुआ मूर्खमानव भय को क्याजाने ऐसे मत्स्य के बचन सुनके गालव लज्जायुक्त होगया २३ वह जितेंद्रिय निमग्न हुआ भी नहीं उत्तर देता भया और स्थितही रहताभया पश्चात् वे रंभोरू कन्याभी स्नानकर और निकस के तटपर स्थित होगईं २४ और दर्शनों की अभिलाषा से तिस मुनिबर को देखतीहुई ठहरीं ऐसे पुष्कर यात्राकरके सम्पूर्ण मनुष्य जैसे आयेथे वैसेगये २५ ऋषि और राजा और नानाप्रकार के जनपद अर्थात् देशों के मनुष्य

सम्पूर्ण गर्भ और शोभन दांतोंवाली एक बिश्वकर्माकी पुत्री २६ चित्रांगदा देखती हुई स्थितरही पश्चात् तिस स्थित हुई को देखती स्थितरही और गालवको भी देखतीभई २७ पश्चात् यह गालव अंतर्जलमें प्राप्तहुआ पश्चात् वेदवती नाम गंधर्व कन्यका और घृताची के गर्भसे उत्पन्न हुई २८ पर्जन्य कन्यका ये दोनों पवित्र पुष्करजी में स्नान करके पश्चात् तटोंपर स्थित कन्याओं को देखती भई २९ पश्चात् ये चित्रांगदा को प्राप्त होकर मिष्ट बचन कहनेलगी कि तू कौन है और किस कार्य के वास्ते निर्जन देश में स्थित है ३० ऐसे सुनयह कहनेलगी कि हे शोभन जंघाओंवाली ! मुझको देवताओं के शिल्पी बिश्वकर्माकी पुत्री चित्रांगदाजानो ३१ सो हे भद्रे ! मैं पुण्य सरस्वती में स्नान करने को आई थी और नैमिषारण्य में धर्ममाता बिख्यात कांचनाक्षी में स्नान करनेको आई थी ३२ तहां बैदर्भक सुरथराजा ने मुझसे पूँछा और देखके काम से पीड़ितहुआ वह मेरी शरण प्राप्तहोगया ३३ पश्चात् सखियों से बार्यमाणभी मैं अपने आत्मा को तिसके लिये देतीभई पश्चात् पिता ने ऐसे शापदेदिया कि तू पतिरूपीराजासे दूरहोजा ३४ हे भद्रे! जब मैंने मरनेकी बुद्धिकी तब गुह्यकने निवारण करदी पश्चात् मैं श्रीकण्ठदेव के दर्शनको और गोदावरीके जल को प्राप्त हुई ३५ तहां से यहां उत्तमतीर्थ पुष्करजी को आगई मेरे मन को आनन्द करनेवाला सुरथराजाको मैंने देखानहीं ३६ और हे बाले ! तू यहां कौन

है जो यात्राफल निवृत्तहोने के पश्चात् यहां आईहै यह मेरे आगे सत्य कह ३७ ऐसे सुन यह बेदवती कहने लगी कि हे कृशोदरि ! मैं मन्दभाग्या हूँ क्योंकि यात्रा फल निवृत्तहुये पश्चात् जो मैं यहां प्राप्त हुई ३८ हे सुन्दरि ! पर्जन्य करके घृताची बिषे मैं उत्पन्न हुई हूँ सो हे सखि ! मुझे बनमें रमणकरती हुई कपिने देखा ३९ सो मेरे को प्राप्तहोकर कहने लगा कि हे बेदवती ! तू कहांजाती है और सुमेरु पर्वत के आश्रम से यहां भूपृष्ठमें किसने प्राप्त करी है ४० फिर ऐसे सुन मैं कहने लगी कि हे कपे ! मैं बेदवती हूँ और मेरु पर्वत में मेरा आश्रमहै ४१ ऐसे सुन वह दुष्ट बानर सन्मुख दौड़ा सो मैं शीघ्रहीजीयापोता के उत्तम बृक्षपर चढ़गई ४२ फिर तिस ने बृक्ष भी पैर से तोड़दिया फिर मैं तिस बृक्षकी बहुत शाखाओं को आलिंगन करके स्थित होगई ४३ फिर वह बानर मेरे सहित तिस बृक्ष को सागर के जलमें फेंकता भया तहां पड़के मैं ब्याकुल होगई ४४ फिर आकाश से यदृच्छा करके पड़ते हुये तिस बृक्षको स्थावर और जंगम भूतदेख के मुझे पड़तीहुई को देख के ४५ स्थावर और जंगम जीवों ने हाहाकार शब्द किया और महात्मा सिद्ध, गंधर्व तब कहनेलगे कि यह बड़े कष्टकी बार्त्ता है ४६ यह सहस्र क्रतुयाजी शूरबीर मनुजी का पुत्र ऐसे इन्द्रद्युम्न की महिषी आप ब्रह्माने कही है हे शुभे ! तिस मधुरबाणी को मैं सुन के मोहको प्राप्तहोगई ४७ फिर मैं जानती किसी ने वह बृक्ष हजारतरह से छेदनकर

दिया ४८ फिर बेग से मुझे बलवान् बायुने वहां से खैंचकर इस देश में प्राप्तकरदी सो यहां हे सुन्दरि ! तू मुझको देखली ४९ सो अब उठचलें और ये पुष्कर के उत्तर तटपै सुन्दर कन्या कौन स्थित हैं ५० इनको पूंछें तिसकन्या ने ऐसी कही हुई यह बरांगी उत्साह से कन्याओं के देखने को जातीभई ५१ पश्चात् ये दोनों जाके तिन्होंको पूछती भई तिन्हों ने अपना आत्मा यथार्थ निबेदन कर दिया ५२ पश्चात् ये चारो सप्त गोदावरी के जलमें प्राप्त होकर हाटकेश्वर का पूजन करती हुई तहां स्थित रहती भईं ५३ पश्चात् इन्हों के वास्ते शकुनि और जाबालि और ऋतध्वज ये तीनों बहुत काल पर्यंत भ्रमते भये ५४ पश्चात् जब एक हज़ार बर्ष ब्यतीत होगये तब पिता सहित भारबाही जाबालि ज्ञान को प्राप्त होतेहुये साकालपुर में गये ५५ पश्चात् मनु का पुत्र श्रीमान् नरपति इन्द्रद्युम्न अर्घ्यपात्र लेकर प्राप्त हुआ और जाबालि और ऋतध्वज का यथार्थ पूजन किया ५६ और सो बुद्धिमान् इक्ष्वाकु का पुत्र शकुनिभी भ्रातज को पूजित किया तिस के अनन्तर ऋतध्वज मुनि इन्द्रद्युम्न से बचन कहने लगा ५७ कि हे राजाओं में श्रेष्ठ! हमारी मदयन्ती पुत्री नष्ट होगई सो तिस के वास्ते हमने पृथ्वी पै अटन किया है ५८ इस वास्ते अब उठ मार्ग में सहायता करने के आप योग्य हैं हे ब्रह्मन् ! ऐसे सुन वह राजा कहने लगा मेरी भी एक उत्तम स्त्री नष्टहोगई अब महाराज मैं किस से कहूँ ५९ आकाश से पर्वत की

तरह पड़ताहुआ उत्तम सिद्धोंका बाक्यसुनके सहस्रधा अर्थात् हज़ारप्रकारसे वह बाणोंसे काटदिया और मैंने लाघवसे वह भेदन नहींकरी ६०।६१ सो मैं नहींजानता वह कहांहै इसवास्ते तिसको ढूंढ़नेको जाताहूँ ६२ ऐसे कहके वह राजा बेगसे उठा और फिर तिन ब्राह्मणों के लिये और भ्राताके पुत्रकेलिये रथोंको अर्पणकरता भया वे सम्पूर्ण शीघ्रही तिसरथपर सवारहोकर सम्पूर्ण पृथ्वीको क्रमसे देखतेहुये ६३ बदर्याश्रमकोगये पश्चात् तहां तपकानिधि और तपसेदीन और जटाको धारण किये ६४ और प्रथम आयुमें स्थित ऐसे मुनिको प्राप्त होकर महाभुज इन्द्रद्युम्न कहनेलगा ६५ कि हे ऋषे! इस घोरबन में ऐसा दुश्चर तप किसवास्तेकरतेहो सो कहो ६६ ऐसेसुन ऋषि कहनेलगा कि तू ऐसा कौनहै जो शोकसे पीड़ित और परिखिन्न और तपसे युक्त ऐसे से पूछता है ६७ सो कहनेलगा कि हे बिभो! हे तपस्विन्! मैं साकलपुरका राजाहूँ और मनुका प्रियपुत्र हूँ और इक्ष्वाकु का भ्राता हूँ यह आप से कहा है ६८ फिर यह राजा अपना पूर्वचरित सम्पूर्ण तिससे कहताभया वह राजर्षि तिसको सुन कहनेलगा कि हे राजन्! तू अपने कलेवरको मतछोड़े ६९ मैं तेरीतन्वंगीको लाऊँगा क्योंकि जिस से तू मेरा भाई है ऐसे कहके और धमनिसंतत अर्थात् नाड़ीमात्र से व्याप्त शरीरवाले राजासे मिलके फिर रथविषे आरोपण करके तपस्वियों को निवेदन करताभया फिर पुत्रसहित ऋतध्वज तिस

पृथिवीपतिको देख कहनेलगा ७०।७१ कि हे राजन्! तू जा तेराप्रिय हम करेंगे जो चित्रांगदानाम तैंने नैमिषारण्य में देखीथी ७२ सो मैंनेही सप्तगोदावर नाम तीर्थ में भेजीथी इसवास्ते तुम जावो हम जातेहैं फिर सौदेवकेही कारण से ७३ तहां हमारे को तीनकन्या प्राप्तहोवेंगी ऐसे कहके वह ऋषि सुदेवजको आश्वासन कराके ७४ और शकुनिको आगेकरके इन्द्रद्युम्न सहित और पुत्रसहित अश्वयुक्तरथमें बैठनेकी तैयारी करताभया ७५ फिर जहां वे कन्याथीं उस जगह वे सम्पूर्णगये और इसीअन्तरमें शोकसहित घृताची ७६ उदयगिरिको बिचरतीभई और अपनी पुत्रीको देखती भई फिर यह तप्तहुई अप्सरा कपिसे पूछती भई ७७ हे कपे! तू सत्यकह तैंने बाला कहीं देखी या नहीं फिर कपि तिस अप्सरा से कहनेलगा ७८ कि मैंने देखीहै देववतीनाम मेरे आश्रममें स्थितहै सो आश्रम कालिंदी के सुन्दर तीर्थपर मृगपक्षियों से युक्त है ७९ और श्रीकंठ के मंदिरकेआगे स्थितहै यह मैंने तेरेआगे सत्य बर्णन कियाहै फिर सो कहनेलगी कि हे बानरपते! वह तो बेदवती बिख्यातहै ८० और देववती नहीं है तो आ चलें फिर बेगवाला बानर घृताची के बचन सुनके ८१ कौशिकीनदी में स्नान करने को जातीभई फिर वे तीनों राजर्षिप्रवरभी कौशिकी नदी में प्राप्त हुये ८२ फिर परमबेगवाले राजर्षि रथों से उतर नदी में स्नानकरने को जातेभये ८३ और घृताचीभी स्नान

करने को तिस पवित्र नदी में आती भई तिस के पश्चात् पापी कपि भी प्राप्तहुआ सो जाबालिने देखा ८४ और देख के पिता और महाबल राजा से कहने लगा कि हे तात! वही बानर आया ८५ जो पहले मैंने बल से वृक्ष विषे बांधा था फिर जाबालिके ऐसे बचन सुनके शकुनि क्रोधयुक्त हुआ ८६ और फिर शरसहित धनुष लेकर यह बचन कहनेलगा हे ब्रह्मन्! मुझको आज्ञादो इतने एकबाणसे ८७ इसको नहीं मारूं इतने आज्ञादो जब ऐसे राजाने बचन कहा तब सम्पूर्ण भूतोंका हितकारी ८८ यह महर्षि हेतुयुक्त उत्तम बचन शकुनि से कहने लगा हे नृपतिके पुत्र! हे तात! कोई किसीसे न तो बँधता है न मरताहै ८९ ये बध और बन्ध पूर्वकर्म के वश्य हैं ऋषि शकुनिसे ऐसे कहके बानरकेप्रति बचन कहने लगा ९० कि हे बानर! यहां आवो और तुम हमारी सहायताकरनेके योग्यहो हे बाले! मुनिने ऐसे कहा तो कपिकुंजर ९१ अंजलिपुटबांधके और प्रणामकरके यहबचन कहनेलगा हे ब्रह्मन्! मुझको आज्ञादो मैं क्याकरूँ ९२ जब ऐसेकहा तब यह मुनि बानरपतिसे ऐसे बचनकहने लगा हे बानर! मेरापुत्र तैंने बड़केबृक्षविषे जटाओंमेंबांधा है ९३ सो इसको बृक्षसे छुड़ानेको हम यत्नसेभी समर्थ नहीं इसवास्ते इसनरेंद्र ने बृक्षके तीनभाग करदिये पर छूटानहीं ९४ सो यह मेरापुत्र शिरसे शाखाओं को वहता है इसको छुटाओ इसको एक हज़ारवर्ष शाखाबहते व्यतीतहुये ९५ सो ऐसा कोई पुरुषनहीं जो इसके

छुड़ाने में समर्थहोवे सो कपि ऋषिके बचन सुनके जाबालीकी जटाओं को ९६ एकक्षण में हौले २ दूरकरताभया फिर प्रसन्नहुआ मुनिवर ऋतध्वज बर देताभया कि हे कपे! बांछित बरको मांग ९७ ऐसे ऋतध्वज के बचन सुन बर मांगताभया ९८ हे ब्रह्मन्! महातेजा विश्वकर्मा मैं बानरभावमें स्थितहूँ सो हे ब्रह्मन्! जो आप मुझको बरदेनेकी इच्छा करते हैं ९९ तो तुम्हारा दियाहुआ यह महाघोर शापनिवृत्त होजावे और हे तपोधन! मुझको आप चित्रांगदाके पिता त्वष्टाजान १०० हे ब्रह्मन्! आपके शाप से मैं बानरताको प्राप्तहुआहूँ १०१ और हे ब्रह्मन्! चापल्य दोषसे जो मैंने बहुतसे पाप किये हैं सो नाशको प्राप्तहोजावें १०२ ऐसे सुन ऋतध्वज कहनेलगा जब घृताची में महाबल पुत्र जनावेगा तब तेरेशापका अंत होजायगा ऐसे कहाहुआ यह कपिकुंजर प्रसन्नहुआ १०३ शीघ्रही स्नान करने को महानदीबिषेगया फिर हे कृशोदरि! सम्पूर्ण क्रमसे स्नानकरके और देवताओंका पूजनकरके १०४ रथों से गये और घृताची स्वर्ग को जातीभई फिर कूदनियोंमें श्रेष्ठ और महाबेगवाला यह कपिभी तिसकेपश्चात् गया फिर यह प्लवंगमरूपसंपन्न घृताचीको देखताभया सोभी बलियोंमें श्रेष्ठ कपिकुंजरको देखके १०५ और बिश्वकर्माको जानके यह कामिनी बांछाकरतीभई फिर पर्बतोंमें श्रेष्ठकोलाहलनाम १०६ पर्बतमें तिसतन्वीको रमणकरताभया यह घृताची तिस बानरोत्तमको रमण

करातीभई ये दोनों ऐसेरमणकरतेभये विंध्यपर्बतको प्राप्त हूये १०७ और वे पांचनरोत्तमभी रथोंकरके तिसी तीर्थ को प्राप्तहुये फिर मध्याह्नमें येसप्तगोदावर जलमें स्नान करके १०८ और फिर बिश्रामकरके बेगसहित तरतेभये और तिनके सारथि अश्वोंको स्नान कराके १०९ बन के सुन्दरदेश में चरनेके वास्ते छोड़तेभये फिर उत्तम हरियल देशों में वे अश्व एक मुहूर्त्तसेही तृप्तहोगये फिर ये सम्पूर्ण तृप्तहुये उत्तम देवायतनको आतेभये ११० फिर वे स्त्रियों में श्रेष्ठ स्त्री अश्वोंके शब्दको सुनके यह क्याहै ऐसे कहतीहुई चौंकके हाटकेश्वरको प्राप्तहोती भईं १११ और ये डरती हुईं बड़परचढ़के चारोंतरफ को देखतीभईं फिर वे तीर्थके जलमें उत्तमनरोंको स्नान करते देखती भईं ११२ फिर चित्रांगदा जटामंडल धारणकिये सुरथको देखकर रोमांच खड़े होगये ११३ और हँसतीहुई सखियोंसे बचन कहनेलगी कि हे सखियो! देखो जो पहले जवान और नील मेघकी तरह श्याम और लम्बीभुजाओंवाला और शोभनरूप ऐसा राजाकापुत्र मैंने पतिबराथा सो निश्चय यही है ११४ और सुबर्णकेसे बर्णवाले और श्वेतजटाभारको धारण किये और तपस्वियों में श्रेष्ठ ये ऐसे दूसरे ऋतध्वज नाम ऋषि हैं इसमेंसन्देहनहीं ११५ और फिर सखियों को लेजाके कहनेलगी कि यह तीसरा इस ऋषिकापुत्र जाबालि है ११६ चित्रांगदा ऐसे बचन कहके और बड़से उतर के महादेवजी के आगे आई और तहां

शम्भुके ऐसे उत्तमगुणोंको गानेलगी ११७ हे सर्वज्ञ! आपको नमस्कारहै! हेशंभो! आपको नमस्कारहै हेत्रिनेत्र! हे त्रैलोक्यनाथ! हे पार्वतीकेपति! हे दक्षयज्ञको नाशकरनेवाले! हे कामदेवके शरीरका नाश करनेवाले! ११८ और हे महापुरुष! हे महोग्रमूर्त्ते! हे सम्पूर्ण सत्त्वोंकानाश करनेवाले! हे शुभंकर! हे महेश्वर! ११९ हे त्रिशूलधारिन् अस्मरारे! हे गुहाबासिन्! आपको नमस्कारहै हे दिगम्बर! हेमहाशंखशेखर! हेजटाकोधारणकरनेवाले! १२० हे कपालमाला बिभूषित! हे शरीर भीमचक्षु! हे बामदेव! हे प्रजाध्यक्ष! १२१ हे भगाक्ष्णोःक्षयङ्कर! हे भीमसेन! हे महासेन! हेनाथ! हेपशुपते! हेकामांगदहन! १२२ हे चत्वरबासिन्! हेशिव! हेमहादेव! हेईशान! हेशङ्कर! हेभीम! हे भव! हेबृषध्वज! १२३ हे उग्र! हे श्रीप्रौढ! हेमहानघ! हे ईश्वर! हे भूतिरत! हे अबिमुक्तक! हे रुद्र! १२४ हे रुद्रेश्वर! हे स्थाणो! हेएकलिंग! हे कालिंदीप्रिय! हे श्रीकंठ हे नीलकण्ठ! १२५ हे अपराजित! हे रिपुभयंकर! हेसंतोषपते! हेबामदेव! १२६ हे अघोर! हे तत्पुरुष! हे महाघोरमूर्त्ते! हे शांतबेष! हेसरस्वतीकांत! हे कानाम! १२७ सहस्रमूर्त्ते! हे महोद्भव! हे बिभो! हे कालाग्निरुद्र! १२८ हे महीधरप्रिय! हे सर्वतीर्थाधिबास! हे हंसकामेश्वर! हे केदाराधिपते! १२९ हे परिपूर्ण! हे स्वच्छंद! हेमथुरानिवासिन्! हे कपालपाणे! हे भैरव! हे भयंकर! १३० हे विद्याराज! हे सोमराज! हे कामराज! हे करंजकमंजुल! हे मण्डन! हे रत्नबसन! १३१ हेसमुद्रशायिन्! हेगयामुख

हे घंटेश्वर! हे गोकर्ण! १३२ हे ब्रह्मयोने! हे सहस्त्रवक्राक्ति चरण! आपकेलिये नमस्कार है १३३ ॐ हाटकेश्वर आपको नमस्कारहै हे मुने! १३४ इस स्तुतिकेही अंतर सम्पूर्ण ऋषि और पार्थिव त्रैलोक्यकेभर्ता और त्र्यंबक ऐसे हाटकेश्वर महादेवके दर्शनकोआये १३५ फिर वे सुन्दर स्नानकिये और उत्तमगान करतीहुयोंको देखतेभये १३६ फिर सुदेवकापुत्र बिश्वकर्माकी पुत्री अपनी प्यारीको देखकर हर्षित चित्तहुये के रोमांच खड़े होतेभये १३७ फिर ऋतध्वजभी चित्रांगदा, तन्वंगीको स्थितदेखकर और योगात्मामुनि तिसका अभिप्राय जानके प्रसन्नचित्तहोताभया १३८ तिसके अनन्तर तत्काल हाटकेश्वर दैवतको प्राप्तहोकर फिर महादेवजीका पूजनकरतेहुये १३९ और स्तुति करतेहुये क्रमसे स्थितहुये फिर चित्रांगदाभी तिन ऋतध्वज आदिकोंको देखकर सम्पूर्ण सखियों सहित उठके प्रणाम करती भई १४० फिर सो तपस्वी पुत्रसहित तिन्होंको सराहके और राजाओं करके सहित यथासुख बैठताभया १४१ फिर हे सुन्दरि! तहां घृताची सहित कपिवरभी प्राप्तहुआ वह गोदावरीतीर्थ में स्नानकरके १४२ फिर हाटकेश्वर महादेवजीके दर्शनकीबांछाकरताभया १४३ फिर तिसके अनन्तर शुभदर्शनवाली और तन्वी ऐसी पुत्रीको घृताची देखतीभई १४४ सोभी वरवर्णिनी अपनी माता को देखकर, प्रसन्न होतीभई १४५ फिर घृताची अपनी पुत्रीसे मिलके करड़ीबांधभरतीभई १४६

और स्नेहसे नेत्रों में आंसू आगये और वारंवार तिस को सूँघनेलगी तिसके अनन्तर धृतध्वज श्रीमान् कपिसे बचन कहते भये १४७ कि हे कपे! तू अंजनाद्रिमेंजा और वहांसे महांजन गुह्यक को ला १४८ और पाताल से दैत्येश और शूरवीर ऐसे कन्दरमालीको ला और स्वर्ग से शीघ्र गंधर्बराज पर्जन्यको ला १४९ जब ऋषिने ऐसेकहा तब बेदवती कपिसे कहनेलगी कि हे बानर श्रेष्ठ! गालवऋषिकोभी ला ऐसे बचनकहे तब यह पवनकेसे बेगवालाकपि १५० अंजनपर्बतसे तो महाश्रम में महांजनको भेजताभया १५१ और फिर अमरपर्बत से पर्जन्यको भेजताभया १५२ फिर कपि पातालको गया तहां से यह महाबीर्य कन्दरमालीको लाया १५३ फिर तपकीयोनि गालवऋषिको फिर शीघ्रही माहिष्मतीको लातेभये १५४ इन सम्पूर्णों को गोदावरी जलमें लाके और फिर तहां बिधिपूर्बक स्नानकरके हाटकेश्वर के दर्शनोंको प्राप्तहुआ और तहां मदयंती और बेदवती को भी स्थित देखताभया वे दोनों गालव ऋषि को देखकर फिर उठके प्रणाम करती भईं १५५ सो गालव भी महादेवजी का पूजनकरके महर्षियों को प्रणाम करता भया १५६ वे नृपति श्रेष्ठ तिस तपोधन का पूजनकर और अतुल आनन्द को प्राप्तहोकर सुख पूर्बक स्थित होतेभये १५७ जब ये अच्छीतरह बैठगये फिर वानरने निमंत्रणकिये महात्मा यक्ष, गन्धर्ब, दानव आये फिर वे बड़ेबड़ेनेत्रोंवाली पुत्री तिन्होंको आयेहुये

देखकर १५८ फिर स्नेह से आर्द्रनेत्रोंवाली हुई सम्पूर्ण अपने पिताओं से मिलती भई फिर मदयन्तीसे आदि लेकर पिताओंसहित अश्रुयुक्त होगई १५९ फिर सत्यध्वज मुनि तिससे सत्यबचन कहने लगा १६० कि हे पुत्रि! बिषाद मतकर यह बानर तेरा पिताहै सो तिसके बचनों को सुनकर लज्जाकरके अपहृतचित्तसे कहने लगी १६१ कि यह बिश्वकर्मा कैसे बानर भावको प्राप्तहुआ जो मैं खोटी पुत्री जन्मी तो यह बानर हुआ १६२ इसवास्ते मैं शरीरको त्यागूँगी ऐसे मनसे चिंतवनकरके ऋतध्वज से बचन कहनेलगी। १६३ कि हे ब्रह्मन्! पापसे अपहृत बुद्धिवाली की मेरी रक्षाकरो १६४ हे भगवन्! मैं पितृघ्नी हूँ इसवास्ते मरनेकी इच्छा करतीहूँ सो मुझको आप आज्ञा देनेके योग्यहो १६५ ऐसे सुनके मुनि कहनेलगा कि हे तन्वि! अब बिषादमतकरो १६६ हे पुत्रि! भावीका नाश नहीं होता इसवास्ते शरीर को मतत्यागे फिर भी तेरा पिता देवताओं का शिल्पी होजायगा। १६७ जब घृताचीका पुत्रहोजायगा तब फिर भावितात्मा मुनिने १६८ जब ऐसा बचन कहा तब घृताची प्राप्तहोकर चित्रांगदा से बचन कहनेलगी। १६९ कि हे पुत्रि! तू शोकको त्याग तेरे पिताके सकाशसे दशमहीनों में मेरे पुत्रहोगा। इस में सन्देह नहीं १७० जब यह शिल्पी होजायगा ऐसे कही हुई चित्रांगदा प्रसन्नहोती भई १७१ इसवार्त्ताको देखतीहुई स्थितरही फिर जब दशमहीने होचुके तब गोदावरी तीर्थ में नलपुत्र जन्मा १७२ संतानहोनेही विश्व

कर्मा बानरभाव से छूटगया फिर यह प्यारी पुत्री को प्राप्तहोकर आदर से मिलता भया १७३ फिर प्रसन्न मन से यह सुरबर्द्धनका स्मरण करता भया कि फिर देवताओंका आधिपइन्द्र और असुर, किन्नर, रुद्र, सुर, मरुद्गण इन्हों सहित हाटकेश्वर तीर्थपर प्राप्तहुआ १७४ फिर जब देव, गन्धर्ब, अप्सरा प्राप्तहुये तब इन्द्रद्युम्न मुनि श्रेष्ठ ऋतध्वजसे कहनेलगा १७५ कि हे ब्रह्मन्! कंदर मालीकी पुत्री तो जाबालिको दो और यह तेरापुत्र दैत्येय से पाणिग्रहणकरो १७६ और स्वरूपवान् शकुनि मद यन्तीको बिवाहो और बेदवती मुझको और चित्रांगदा सुरथको बिवाहो १७७ ऐसे बचनसुनके मुनि प्रसन्नहुआ और मनुपुत्र को बाढ़म अर्थात् ठीक है यह कहता भया १७८ फिर वे सम्पूर्ण प्रसन्नहुये बिवाहकी उत्तम बिधि करते तहां गालवऋषि ऋत्विजहुआ १७९ और हवन करके बिधिपूर्बक बिवाह किया तहां गन्धर्ब गानेलगे और अप्सरा नृत्यकरनेलगीं १८० आदि में तो जाबालि ने दैत्यकन्या से पाणिग्रहण किया फिर बिधान से इन्द्रद्युम्न बेदवतीके साथ बिवाह करताभया १८१ फिर शकुनि ने यक्षकन्या से बिवाह किया और फिर कल्याणी चित्रांगदा का सुरथ पाणिग्रहण करता भया १८२ हे सूक्ष्म मध्यभागवाली! ऐसे बिवाह निबृत्तहुआ फिर हे आलि! जब बिवाह निबृत्त होगया १८३ तब इन्द्रआदिक देवताओं से कहता भया कि हे देवताओ! यहां सप्तगोदावर तीर्थ में तुमको सदा रहना योग्य है १८४

और इसवैशाखमें तो विशेषकरके बसना योग्यहै तिस बचनको अंगीकार करके देवता प्रसन्नहुये क्रम से स्वर्ग को जातेभये १८५ और मुनि जो हैं सो पुत्रसहित मुनि को आदरसे लेकर जातेभये १८६ और राजा भार्याओं को लेकर अपने अपने नगरों को जातेभये और तहां स्थितहुये अपने २ देशोंको सुखपूर्वक भोगतेहुये स्थित होतेभये हे कल्याणि ! पहले चित्रांगदा का यह बृत्तांत हुआ इसवास्ते हे कमलपत्राक्षि ! हे उत्तम नेत्रोंवाली ! तू मेरेको भज हे मुने ! नरदेवके पुत्रने १८७ जब भूमिदेव की पुत्री के प्रति क्रमसे यह कहा तब सो भी राजा से बचन कहती भई १८८ ॥

इतिश्रीवामनपुराणभाषायांभैरववरप्रादुर्भावदण्डकोपाख्यानं नामपंचषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

# छाछठवां अध्याय ॥

अरजा कहतीहै हे राजन् ! मैं अपने आत्मा को तेरे लिये कभी नहीं दूँगी बहुतकथन से क्याहै तेरेशाप से मैं अपने आत्माकी रक्षाकरूँगी १ प्रह्लाद कहनेलगा कि हे राजन् ! वह कामोपहत चित्तवाला और मन्दबुद्धि वाला राजा भार्गवेंद्रकी पुत्रीको बलसे बिध्वंस करता भया २ फिर यह मोहांध पृथिवीपति तिसको च्युत-चारित्र करके तिस आश्रम से निकस अपने नगर को जाताभया ३ फिर सो भी शुक्रकी पुत्री अरजा रजसे व्याप्त हुई आश्रम के बाहर निकसके नीचेको मुखकरके स्थित

होगई ४ और अपने पिताको चिंतवन करतीभई और बारंबार ऐसे रुदन करतीभई कि जैसे महाग्रहकेपड़नेसे चन्द्रमाकी प्रिया रोहिणी ५ जब बहुतकालमें यज्ञसमाप्त होगया तबपातालसे शुक्राचार्य्य अपने आश्रमको आये ६ और आश्रमके समीप पुत्रीको ऐसे रजस्वलाको देखताभया कि जैसे आकाशमें संध्या रागसे रंजित मेघलेखा ७ऐसीपुत्रीको देखपूछनेलगा कि हे पुत्रि! तुझे किसने धर्षितकिया हे पुत्रि! क्रोधयुक्त सर्पसे जगत्में कौनक्रीड़ा करता है ८ और कौन दुर्मति अभी धर्मराजकी पुरीको जायगा जो शुद्धआचरणवाली तेरेधर्मको बिध्वंसकरता भया ९ तिसके अनन्तर अपने पिता को देख लज्जा युक्तहुई और बारंबार रोती हुई और कम्पतीहुई मंद मंद बचन कहनेलगी १० हे पिताजी! निवारणभी किया परन्तु मुझको अनाथ देखकर बिध्वंस करता भया ११ सो तिसपुत्री के बचन सुनके क्रोधयुक्तहोगया और आचमन करके और पवित्रहोकर ऋषि यह बचन कहने लगा १२ हे पुत्रि! जिससे अबिनीत मत्तने तेरा गौरव तिरस्कृत किया और तुझे च्युतधर्मवाली किया १३ इस वास्ते यह राष्ट्रसहित और बलसहित और भृत्योंसहित और बाहनोंसहित सातरात्रि भीतर पर्वतों की बृष्टि से भस्म होजायगा १४ वह मुनिपुंगव ऐसे कह के और दण्डको शापदेके अपनी पुत्रीसे बचन कहनेलगा कि हे पुत्रि! तू पापको दूरकरने के वास्ते तप आचरण करतीहुई ठहर १५ फिर भगवान् शुक्र इक्ष्वाकुके पुत्र दंड

को ऐसेशापदेकर फिर शिष्यों सहित पातालमें दानवा-
लयको गये १६ और तीव्रपत्थरों की बर्षा से सातदिन
के अन्दर राष्ट्रबल बाहनों सहित दण्डभी भस्महोगया
ऐसे तिस दण्डकारण्यको देवता त्यागते हैं और महा-
देवजीने वह राक्षसोंका स्थान बनादियाहै १७।१८ ऐसे
दूसरों की स्त्री सुकृतियों को भी भस्मरूपको प्राप्तकरदेती हैं
तो प्राकृतों को तो बहुतही तिरस्कारको प्राप्त करदेती हैं
१९ इसवास्ते हे अन्धक! यह ऐसी दुर्बुद्धि नहीं करनी
क्योंकि प्राकृत भी नारी पुरुष को दग्ध करदेती है तो
गिरिपुत्रिका का क्याकहनाहै २० और हे दैत्येश! महादेव
जी को सुरासुर नहीं जीतसक्के और तूतो रण में इनको
देखनेकोभी समर्थ नहीं २१ पुलस्त्यजी बोले कि हे मुने!
जब प्रह्लादने ऐसा बचन कहलिया तब क्रोधसे लाल
नेत्रहोगये और ऊँचा ऊँचा श्वास भरनेलगा फिर जोर
से महातेजा अन्धकअसुर प्रह्लाद से बचन कहनेलगा
२२ कि हे असुर! वह त्रिनयन क्या नामवालाहै जो रण
में नहीं जीता जावे हे असुरेन्द्र! एकाकी और धर्मसेरहित
और भस्मसे अरुणित शरीरवाला ऐसा महादेव युद्धमें
समर्थ नहींहै २३ यह अन्धक असुर इन्द्र से किसीप्रकार
नहीं डरता और मनुष्यों से नहीं डरता ऐसा अन्धक
स्त्रीका मुखदेखनेवाले शंभुसे कैसेडरेगा २४ पुलस्त्यजी
बोले हे नारद! प्रह्लाद तिसघोरबचन को सुनके कहने
लगा कि आपने समीचीन कहा धर्म अर्थ से आपका
बचन अविरुद्धहै २५ परन्तु अग्नि और पतंगका और

सिंह गीदड़का और गजेन्द्र मशकका और रुक्म पाषाण का जैसा अन्तर है २६ ऐसेही हे अन्धक! तेरा और महादेवजी का अन्तर है २७ हे महावीर! तू बारंबार निवारण कियाहै हे अन्धक! असित महात्मा देवर्षि के बचन सुन २८ जो धर्मशील है और जो मानरोषसे रहितहै जो बिद्यासे बिनीतहै और जो परोपतापी नहीं है और जो अपनी स्त्री से तुष्ट है और जो परस्त्री से ब- र्जितहै ऐसे पुरुषको लोकमें कुछभय नहींहै २९ और जो मनुष्य धर्म्म से हीन है और जो कलहप्रिय है और जो सदा परोपतापी है और जो श्रुतिशास्त्रसे बर्जित है और जो परके द्रव्य और स्त्रीकी बाञ्छा करते हैं और जो नीचों का संगकरता है ऐसा पुरुष परलोक में व इस लोक में सुखको प्राप्त होता है ३० भगवान् प्रभाकर धर्मसेयुक्त हैं और बारुणिमुनि क्रोधसे रहित हैं और सूर्यके पुत्र मनु बिद्यासे युक्तहैं और अगस्त्यजी अपनी स्त्रीसे संतुष्ट हैं ३१ इन्हों ने ये पवित्रपुण्य किये हैं सो मैंने कहदिये सो ये सम्पूर्ण शाप बरमें समर्थ हैं और सिद्धसुरोंसे पूजित हैं ३२ और अंगका पुत्र अधर्मयुक्त हुआ और नित्य कलहप्रिय हुआ और दुरात्मा नमु- चि परोपतापी हुआ और स्वर्ग का राजानहुष परस्त्री की बांछावाला हुआ ३३ और दितिके पुत्र हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु दुर्म्मतिमूर्ख हुये और श्रवणसंगी यदुहुआ सो अन्यायसे ये सम्पूर्ण नष्टहुये हैं ३४ इस वास्ते धर्म नहीं त्यागना धर्मही परमगति है हे अन्धक!

धर्महीननर रौरवनरक को प्राप्तहोता है ३५ और स्वर्ग में और इसलोक में तारनेवाला धर्महीवर्णन किया है और अधर्म जो है सो इसलोक में और परलोक में सो केवल पतनके लिये है ३६ धर्मार्थी पुरुषों को पराई स्त्री का सेवन त्याज्य है परस्त्री पुरुषों को इक्कीस नरकों में प्राप्तकरती है ३७ हे अन्धक! सम्पूर्णवर्णोंका यह धर्मध्रुव अर्थात् निश्चय है पहले असित देवर्षि गरुड़ और अरुण के लिये धर्मकी व्यवस्था कहतेभये ३८ इसवास्ते बुद्धिमान् पराई स्त्रीको दूरसे बर्जिजदेवे क्योंकि निश्चय पराभवको प्राप्तकरती है ३९ पुलस्त्यजी बोले हे मुने! जब ऐसा बचन कहा तब अन्धक प्रह्लादसे कहनेलगा कि हे प्रह्लाद! धर्ममें तत्पर तूहै और मैंतो धर्म को आचरण नहींकरूँ ४० अन्धक प्रह्लादसे ऐसे कहके फिर शंबर से कहनेलगा कि हे शंबर! तू स्वर्ग के तुल्य शैलेन्द्रको जा ४१ मन्दर को और शंकर गिरिजा इन्हों को पूछ ४२ कि इन्द्रआदिक देवता मेरीआज्ञामें हैं तुम किस वास्ते मुझे नहीं आदृतकरकेबसे हो ४३ जो शैलेन्द्र तुझ को बांछितहै तो मेरा बचनमानो जो शैलेन्द्रपुत्री पार्वती है सो मुझको शीघ्रदे ४४ ऐसे कहाहुआ शंबर शीघ्र मंदराचलको गया जहां देवी सहित महादेवजी थे जाके ४५ दनुकापुत्र अंधकका बचन यथार्थ कहताभया फिर गिरिकन्याके सुनतेहुये महादेवजी उत्तर कहनेलगे ४६ कि यह मन्दराचल मुझको बुद्धिमान् इन्द्रने दियाहै इसवास्ते इन्द्र की आज्ञा बिना इसको मैं नहीं त्याग-

ता ४७ और जो यह पर्वत की पुत्री है सो यथेच्छ जावे मैं इसको निवारण नहीं करता ४८ फिर हे मुनिसत्तम! गिरिसुता शम्बरसे कहनेलगी कि मेरे बचन अन्धक से जाकेकह ४९ मैं संग्राममें पताकारूपहूँ सो महादेव जी से युद्धकरके प्राणरूप जुवाको जीतेगा सो मेरे को प्राप्तहोगा ५० ऐसे कहाहुआ बुद्धिमान् शम्बर अन्धकके पास, आताभया और तहां महादेवजी और पार्वतीजीका भाषित अन्धकको कहताभया ५१ फिर दानवपति तिसको सुनके क्रोधयुक्त होगया और ऊँचा श्वासलेताभया और दुर्योधन द्वारपालको बुलाके बचन कहनेलगा ५२ कि हे महाबाहो! शीघ्रजा और सान्नाहिक दृढ़भेरी को ऐसे ताड़नाकर जैसे दुःशील स्त्रीकी ताड़ना करतेहैं ५३ ऐसे अन्धक का प्रेरित कियाहुआ दुर्योधन जितना पराक्रम था उतनेही से ताड़ना करता भया ५४ सो बजाईहुई भेरी ऐसे भयानक शब्द करती भई जैसे सुरभी ५५ तिसके स्वरको सम्पूर्ण महासुर सुनके यह क्याहुआ ऐसे चिन्तवन करतेहुये शीघ्रसभा को प्राप्तहुये ५६ तिनसम्पूर्णोंको सेनापतिबलि यथार्थ बचन कहताभया जो बलियोंमें श्रेष्ठथे सो कवचधारण करके युद्धकी बाञ्छाकरतेहुये ५७ आये और गज उष्ट्र अश्व रथ इन्हों को ल्याये फिर अन्धकअसुर रथ में बैठ महादेवजी के जीतने को पुरसे निकला ५८ और फिर जम्भ और कुजम्भ और हुण्ड और तुहुण्ड और शम्बर और बलि ५९ और बाणासुर और कार्त्तस्वर

और हस्ती और सूर्यशत्रु और महोदर और अयः और शंकु और शिवि और शाल्व और बृषपर्वा और बिरोचन ६० और हयग्रीव और कालनेमि और संह्रादि और बालनाशन और शरभ और शलभ और बीर्यवान् बिप्रचित्ति ६१ और दुर्योधन और पाक और बिपाक और काल और शम्बर ये संपूर्णदैत्य और इन से आदि लेकर अन्य महाबली दैत्य ६२ अनेक शस्त्रों को धारण करके रणमें युद्धकरने के उत्साहसे जातेभये हे नारद ! ऐसे शंभुसे युद्धकरनेको दुरात्मा और मन्दधी और कालके बशहुआ ६३ ऐसा अन्धकदैत्य महासेना को मन्दराचलमें प्राप्त करताभया ६४ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायामन्धकसैन्यनिर्याणन्नाम षट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ ॥

---

## सरसठवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! जब शम्बर चलागया तब महादेवजी भी शीघ्र नन्दी को बुला बचन कहने लगे कि हे नन्दिन् ! जो शैलादि तेरी आज्ञा में हैं तिन्हींको बुला १ फिर ऐसे महादेवजी के बचनको सुन नन्दी शीघ्र जल को स्पर्श करके गणनायकों को स्मरणकरताभया २ फिर नन्दीगणके स्मरण किये हज़ारहां गणनाथ शीघ्रही प्राप्तहोकर महादेवजीको प्रणाम करतेभये ३ फिर नन्दी अंजलिबांधके सम्पूर्ण आयेहुये गणों को महात्मा महादेवजी के आगे निवेदन करता-

भया ४ नन्दी कहनेलगा कि हे शंभो! जो ये तीननेत्रों को धारणकिये और जटाको धारण किये पवित्रस्थित सो तो भगवन् ग्यारहकोटिरुद्रहैं ५ और हे भगवन्! जो ये शार्दूलकेसे पराक्रमवाले और बानरकेसे मुखवाले स्थित हैं ६ सो अत्यन्त क्रोधवाले और यशस्वी ये इन्हों के द्वारपाल हैं और जो ये शक्ति हाथमें लिये और मयूरकी ध्वजाओंवाले छासठिकिरोड़ हैं सो कुमारक स्कन्दनाम हैं ७ और जो ये इतनीही कोटि छः मुखोंवाले हैं सो शाखानामहैं और हे शङ्कर! ये इतनेही बिशाख हैं ८ और येही नैगमेषवालेभी हैं और हे शंभो! ये सात किरोड़ प्रमथोत्तम हैं और हे देवेश! एक एकके प्रति उतनीहीमाता हैं ९ और हे भगवन्! भस्मसे अरुण देहवाले और तीनतीन नेत्रोंवाले और त्रिशूल धारण किये ऐसे ये सम्पूर्ण गणेश्वर शैव तुम्हारेभक्त हैं १० और ये अन्यभस्म आयुधोंवाले पाशुपत हैं हे भगवन्! ये असंख्यातगण आपके साहाय्यके वास्ते प्राप्त हुये हैं ११ और ये अन्यकालमुख पिनाकधारी रौद्रगणहैं सोभी आपकेही भक्त हैं और रक्तचर्म से आवृत १२ ये खट्वांगयोधी हैं हे भगवन्! ये महाव्रती उत्तम गण युद्धकरने को प्राप्तहुये हैं १३ और हे जगद्गुरो! जो ये नग्न और मौनी और घंटाआयुधवाले ऐसे ये निरामयनामगण हैं १४ और जो ये अढ़ाईनेत्रों वाले और पद्मकेसे नेत्रोंवाले और श्रीवत्स चिह्नोंवाले गरुड़पर सवार और वृषभध्वजावाले १५ और चक्र

शूल धारणकिये ऐसे ये महापाशुपत नाम हैं इन्होंने बिष्णुसहित भैरव अभेद से अर्चितकिया है १६ और जो ये शूल बाण धनुष को धारण किये और सिंहकेसे मुखवाले बीरभद्र से आदिलेकर जो गणहैं १७ सो तुम्हारे रोमों से उत्पन्नहुये हैं हे भगवन्! ये और अन्य बहुत से सैकड़ों और हज़ारहोंगण आपकी सहायता के वास्ते आये हैं जैसे इन्हों के नामहैं वैसेही गुणहैं १८ फिर सम्पूर्णगण प्राप्तहोकर महादेवजीको प्रणामकरते भये फिर तिन्होंको भगवान् महादेवजी हाथसे आश्वासना कराके उपदेश करतेभये १९ फिर महापाशुपतोंको महेश्वर देखके तिन्हों से मिलतेभये और वे संपूर्ण महेश्वर को प्रणाम करतेभये २० तिसके अनन्तर वे सम्पूर्ण गणेश्वर बिस्मित होकर बैलक्ष्यको प्राप्तहोते भये २१ फिर योगियोंमें श्रेष्ठ शैलादि बिस्मिताक्षगणों को देखकर और शूलपाणि गणाधिप देवेश से हँसके कहनेलगे २२ हे महेश्वर! जो आपने महापाशुपतोंका आलिंगनकिया २३ सो रूप ज्ञान बिबेक इन्होंको इच्छा से वर्णन करो २४ फिर भावाभाव के जाननेवाले महेश्वर प्रमथाधिपतिके बाक्य सुनके सम्पूर्ण गणों से बचन कहतेभये २५ महादेवजी कहनेलगे कि हे गणो! भक्ति से संयुक्त हुये तिन्हों ने हरभाव से पूजित किया और अहंकारसे बिमूढ़ों ने वैष्णवपद निन्दित किया २६ तिस अज्ञानकरके तुम आदरकरने के योग्य नहीं क्योंकि जो भगवान् बिष्णु हैं सो मैं हूँ और जो मैं हूँ

सो बिष्णु हैं २७ हमदोनों में भेदनहीं एकमूर्त्ति दोजगह स्थितहैं इसवास्ते जैसे महापाशुपतों को भक्तिभाव से मैंने जाना २८ ऐसे तिन्होंने नहीं जाना जिससे तुम मूढ़ बुद्धियों से मैं निन्दित किया २९ इसवास्ते ज्ञान नष्ट होगया इसीवास्ते आलिंगन नहीं किये ऐसे बचन कहा तब सम्पूर्णगण महेश्वर से बचन कहनेलगे ३० कि आप और जनार्द्दन बिष्णु कैसे एक हैं तुमतो निर्म्मल और शुद्ध और शान्त और शुक्ल और निरञ्जन ३१ ऐसे हो और जनार्द्दन अंजनसंकाश हैं इसवास्ते कैसे युक्तहैं फिर महादेवजी तिन्हों के अश्राव्य बचन को सुनके ३२ हँसके यह बचन कहनेलगे सुनो अपने यश का बढ़ानेवाला बचन मैं कहूँगा ३३ परन्तु तिस महाज्ञानके योग्य तुम किसी कालमें भी नहीं अपवादके भय से गुह्यरूप तुम्हारे आगे कहूँगा दूध घृतका स्नान चन्दनादि इन्होंकरके मेरीप्रीति नहींहुई ३४ जिस कमलकेसे नेत्रोंवाले भगवान्की निन्दाकरो हे गणेश्वरो! सोही सर्वव्यापी भगवान् सेव्यहै ३५ चराचर लोक में तिसकी सदृश कोई नहीं सो भगवान् श्वेतमूर्त्ति सर्व पूज्यहै और सदा मङ्गलरूपहीहै ३६ फिर शैलादि प्रमथोत्तम कहनेलगे कि हे भगवन्! सदाशिवके विशेषण कहो ३७ फिर प्रमथों के ईश्वर तिन्हों के बचन सुनके सदाशैव निरंजनपुत्रको दिखातेभये ३८ तिस ईशान को हज़ारहांगण देखतेभये ३९ हज़ारहां नेत्र हज़ारहां चरण हज़ारहां भुजा दंडधारणकिये देव आयुधोंसहित

ऐसे देखतेभये ४० तिसके अनन्तर फिर एकमुख महादेवजीको देखतेभये ४१ और तिनतिन चिह्नों करके हजारहांरुद्र बैष्णव शरीर धारणकरते भये ४२ और जोजो रूप महादेवजीने धारणकिये सोही महापाशुपतों नेभी रूपधारणकरलिया ४३ तिसके अनन्तर बहुरूपी शंकर एक रूपवान् होगया फिर द्विरूपहुआ फिर अरूप होगया ४४ और क्षणक्षग में श्वेत, रक्त, पीत, नील, रूप धारण करताभया फिर महापाशुपतभी वैसाहीरूप धारण करते भये ४५ फिर क्षणमें रुद्रेन्द्र है फिर शम्भु प्रभाकरहै फिर क्षणमें बिष्णु होगया फिर क्षण में ब्रह्मा होगया ४६ फिर शैवादिगण अद्भुततमदेखकर फिर ब्रह्मा और बिष्णु और महादेव और भास्कर ४७ फिर देव देव महेश्वर जब ये पार्षद अभिन्नमानतेभये तबसम्पूर्ण निर्द्धूत पापहोतेभये ४८ जबयेपापोंसे रहितहोगये तब प्रीतात्मा शंभुबचन कहताभया ४९ हेसुब्रताहो! मैं ज्ञान अज्ञान से प्रसन्नहोगया वरमांगो मैं तुम्हारेको बांछित वर दूँगा ५० हे भगवन्! जो आपप्रसन्न हुये तो हमारे को यहबरदो कि जो हमारे भिन्नदृष्टिसे उत्पन्नहुआ पाप है नष्टहोजाय ५१ पुलस्त्यजीबोले हे मुने! महादेवजी तिसको अंगीकार करके तिन्होंको पापों से रहित करते भये फिर तिन गणयूथपों से मिलके ५२ महादेवजी ने ऐसे गणपतियोंकी रक्षाकरी फिर प्रमथों से महादेवजी ऐसे भूषित हुये जैसे मेघों से भूषित ५३ गिरिवर अर्थात् उत्तम पर्वत और नीलमृगचर्म से महादेवजी

के बृषभ की चन्द्रमा कीसी शोभा होतीभई ॥ ५४ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायाम्भैरवप्रादुर्भावेसदा
शिवदर्शनन्नामसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७ ॥

## सरसठवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! इसी अन्तरमें दैत्यों स-
हित अन्धकदैत्य प्रमथों से सेवित श्रेष्ठमन्दराचल को
प्राप्तहुआ १ फिर दानव प्रमथों को देखकर किलकिला
ध्वनि करते भये फिर क्रोधयुक्त प्रमथभी अनेक तरह
के बाजोंको बजाते भये २ सो प्रलयके समान महानाद
आकाश और भूमिको आच्छादन करताभया फिर बिघ्न
को नाश करनेवाले बायुमार्ग्ग में स्थित बिनायक तिस
शब्दको सुनतेभये ३ फिर क्रोधयुक्तहुये बिनायक प्रमथों
से युक्त मन्दराचलको प्राप्तहोकर पिताको देखतेभये ४
फिर भक्तिसे महेश्वर को प्रणामकरके बचन कहनेलगे
कि हे जगन्नाथ ! क्या बैठेहो रणका उत्साहकरके उठते
क्यों नहीं ५ फिर जगन्नाथ शंभु बिघ्नेशकेबचन सुनकर
अम्बिका सेकहनेलगे कि हे प्रिये! मैं अंधकके मारनेको
जाऊंगा सो तू निर्भय यहां स्थितहो ६ फिर गिरिसुता
देवदेवको बारम्बार मिलके और स्नेहयुक्त हरको देख
के कहने लगी कि हे भगवन् ! जावो और अन्धक को
जीतो ७ फिर गौरी चंदनादिकों से जगद्गुरुका पूजनकर
और प्रीतिसे अभिवादन करतीभई ८ तिसके अनन्तर
यशस्य और मानिनी और जया और बिजया और

जयंती और अपराजिता इन्हों से कहनेलगे ९ कि तुम गिरिपुत्री की रक्षाकरो ऐसे तिन सम्पूर्णों को आज्ञा देकर १० और प्रसन्नहुये गणेशजीके कपोलों को स्पर्श करके ११ शूलको धारणकिये जयकी इच्छाकरके घरसे निकले और महादेवजीके गणाधिपभी भवनसे निकले १२ और महादेवजी के चारोंतरफ होकर जयशब्द करतेभये हे नारद! जब लोकपाल महेश्वर शूलधारणकिये निकसे तब शंभुके जयकेवास्ते शुभ और सौम्य और सुमंगल चिह्नउत्पन्नहुये १३ और बामभाग में अच्छा शब्दकरतीहुई शिवा स्थितहुई और मांस और रुधिरकी बांछासे तृषितक्रव्यादों के समूह प्रसन्न हुये आये १४ फिर महादेवजीके नखपर्यंत दक्षिण अर्थात् दाहिने अंग फरकनेलगे और मृगोंके शकुनभी उत्तमहुये १५ फिर बिभुमहेश्वर ऐसे निमित्तोंको देख हँसतेहुये शैलादिकों से ऐसे बचनकहनेलगे १६ कि हे नन्दिन! शकुनोंको देखो निश्चय हमारा जयहोगा और पराजय किसीप्रकार सेभी न होगा १७ ऐसे महादेवजीके बचनसुन शैलादि शंकर से बचन कहने लगे कि हे महादेव! जहां आप शत्रुओंको जीतो वहां क्या संदेहहै १८ फिर नन्दी ऐसे बचन कहके रुद्रगणों को युद्धके वास्ते आज्ञादेताभया कि महापाशुपतों सहित प्राप्तहोकर १९ दावनोंकीसेना को मर्दनकरतेभये २० फिर अनेकशस्त्रधारणकियेप्रमथों ने दैत्य बिदीर्णकरदिये फिर कूट, मुद्गरहाथों में लेकर २१ प्रमथों के मारनेको दैत्यआये फिर इन्द्र और विष्णु

आदि लेकर सम्पूर्ण सूर्य, अग्नि आदि लेकर देवता देखनेकेवास्ते प्रविष्टहुये २२ फिर आकाशमें तुमुलशब्द होताभया और गीत बाद्यादि बहुत होतेभये और हे कलिप्रियनारद! २३ फिर सम्पूर्ण देवताओं के देखतेहुये कुपित पाशुपतों के गण दानव सैन्यके मारनेकी इच्छा करते २४ फिर क्रोधयुक्त डुण्डगणेश्वरोंकरके हन्यमान चतुरंग सेनाको देख लोह के घोरपरिघ को लेकरबेग से सन्मुखदौड़ा २५ और इन्द्रध्वजकीतरह ऊंचा शोभा को प्राप्त होताभया २६ फिर डुण्डबलवान् तिस परिघ को भ्रमाताहुआ गणोंको मारताभया अन्यदैत्यभी रुद्र आदि स्कन्द पर्यंतगणोंको भेदनकरताभया २७ फिर गणेश्वर बध्यमान प्रभग्न सेनाको देख बेगसे दनुपुंगव तुहुण्ड की तरफ दौड़ताभया २८ फिर दुरात्मा दैत्य आतेहुये गणपति को देख यह महाबल कुम्भपृष्ठपर परिघको गेरताभया २९ फिर हे ब्रह्मन्! बिनायक के कुम्भ अर्थात् मस्तकपर पड़ाहुआ बज्र भूषण परिघ ऐसे सौटुकड़े होगये जैसे बज्रसे मेरुकूट ३० फिर परिघ को बिफलदेखकर यह दानव आये हुये पार्षद्को बलसे राहुपाशकरके बांधतेभये ३१ फिर महोदर तिसपाश को कुठार से भेदनकरताभया फिर तिसके काष्ठकीतरह दोटुकड़े होकर पृथ्वीपरपड़े ३२ तिन्होंकोभी बलवान दानव राहु नहीं त्यागताभया फिर छुड़ानेके वास्ते यह यत्न करने को नहीं समर्थ होताभया ३३ फिर राहुसे संयुत बिनायक को देख कुण्डोदरनाम गणेश्वर शीघ्र

मुसल को ग्रहण करके दुरात्माराहु को हनन करता भया ३४ फिर गणेश और कलशध्वज ये दोनों कुंत अर्थात् भाले लेकर राहुको हृदयमें भेदन करतेभये और घटोदर गदाकरके हनन करताभया और त्वोधिपति सुकेशी खड्गकरके भेदन करताभया ३५ और चारशरों करके ताड्यमान राहु गणाधिपको छोड़ताभया सो त्यक्तमात्र फरसाकरके तुहुंडके मस्तकको छेदन करताभया ३६ जब तुहुंड बिमुख और राहु जब हनन करदिया तब गणेश्वर क्रोधबिषसे युद्धकरनेकी इच्छा करतेहुये ३७ और पञ्च कालानलों के समान दनु पुंगवोंकी सेनाको प्राप्तहुये फिर पवनकेसे बेगवाला बलवान् बलि तिन्हों करके हन्यमान सेनाकोदेख फिर गदाकोउठा बिनायक के कुम्भतल में और मस्तक में हनन करताभया ३८ फिर कुण्डोदर को भग्नकटि करताभया और महोदर को फटाहुआ शिर कपाल को भेदन करताभया और कुम्भध्वजके संधिबंधको चूर्णित करताभया और घटोदरकी संधियोंको बिभिन्नकरताभया ३९ ऐसे गणाधिपों को बिमुखकरके शूरबीर यह असुरेन्द्र स्कन्द, बिशाख मुख्य गणेश्वरों के हनन करने को सन्मुख दौड़ा ४० फिर महेश्वर भगवान् तिसको आतेहुये देखकर फिर गणोंमेंश्रेष्ठ शैलादिको आमंत्रणकरके बचन कहनेलगे कि हे वीर! जा और दैत्योंको नष्टकर ४१ जब वृषभध्वज ने ऐसे कहा तब शिलाद्रिसूनु बज्रलेकर और बलको प्राप्तहोकर मस्तकमें बज्र मारताभया ४२ सो सम्मो-

हितहुआ पृथ्वीपर प्राप्तहुआ फिर कुजम्भबली ऐसे भ्रातृ सुतको सम्मोहित देखकर कुपितहोकर मुसलको भ्रमाताहुआ बेगसे नन्दिपर छोड़ताभया ४३ फिर नंदी भगवान् आतेहुये तिस मुसलको ग्रहणकरके फिर युद्ध में तिसीकरके कुजम्भ को हनन करतेभये यह कुजम्भ प्राणहीनहुआ पृथ्वीपर पड़ताभया ४४ बीरनंदी मुसल से कुजम्भको मारके फिर बज्रसे सैकड़ोंको मारतेभये फिरगणके बाणोंसे हननहुये दुर्योधनकी शरणजातेभये ४५ फिर दुर्योधन गणाधिपके बज्रके प्रहारोंसे निहत दितीशोंको देखकर बिजलीकेसे प्रकाशवाले भाले को उठाकर नन्दीपर छोड़तेभये और छोड़के माराहै ऐसे कहताभया ४६ फिर नन्दी आतेहुये भालेकोदेख बज्र से ऐसे भेदन करताभया जैसे गुह्यमंत्रको चुगल मनुष्य फिर वह भालेको छेदित देख फिर मुक्कों से मारने को दौड़ा ४७ तब शीघ्रता से नन्दी इसके तालफलकेसे शिरको बज्रसे छेदन करताभया फिर यहतो हतहुआ पृथ्वीपरपड़ा और संपूर्णदैत्य बेगसे दशोंदिशाओं को दौड़े ४८ फिर हस्ती अपने पुत्रको मरादेख बज्रधारण किये नन्दीको प्राप्तहुआ और फिर यमदण्डकेसे बाणों से तिस उग्रबेग नन्दीको हनन करनेलगा ४९ और नन्दीसहित गणोंको और महादेवजी को बाणोंसे ऐसे भेदन करनेलगा जैसे मेघ धाराओंसे पर्वतको फिर वे बली और शूरबीरभी ५० बिनायकगण असुर बाण जालोंसे छाद्यमानहुये भयातुरहोके चारोंतरफसे ऐसे

दौड़े जैसे सिंहके भगाये वृषभ ५१ फिर कुमार तिन गणोंको भागेहुये देखकर अपनी शक्तिसे तिन अलग अलगों को निवारणकर ५२ रिपुको शीघ्र प्राप्तहोकर शक्तिलेके हृदय में भेदन करताभया ५३ और हस्ती भिन्नहृदय होकर पृथ्वीमें पड़ताभया और मरताभया पश्चात् फिर पराङ्मुखी होके शत्रुओंकी सेनादौड़ी ५४ फिर क्रुद्धहुये गणेश्वर दैत्यों की सेनाको भग्न देखकर नन्दीगणको आगेकर दानवों के मारनेकी इच्छा करते भये ५५ फिर प्रमथों से हन्यमान दैत्य पराङ्मुख होगये फिर कार्त्तस्वरसे आदिलेकर बलीदैत्य फिर निवृत्तहुये ५६ फिर क्रोधसे लाल नेत्रोंवाला नन्दीषेण तिन्हों को निवृत्त देखकर ५७ पट्टिशलेके आपभी निवृत्त हुआ हे नारद! जब यह गणोंकापति निवृत्तहुआ तब कार्त्तस्वरभी गदालेकर सन्मुख आया ५८ फिर अग्निकेसे प्रकाशवाले तिस महासुरेन्द्रको आताहुआ देख नंदिषेण पट्टिशको भ्रमाकर कार्त्तस्वर के मस्तकपर मारताभया ५९ फिर यह खोटाशब्द करताहुआ मरगया जब भ्राता और मामा ये दोनों मारदिये तब तुरङ्गकन्धर पाश लेकर पट्टिशसहित नन्दिकेश्वर गणको बांधताभया ६० फिर बलियोंमेंश्रेष्ठ विशाखनंदिगणको बँधादेख कुपित हुआ और शक्ति हाथमें लेकर स्थितहुआ ६१ फिर बलियों में श्रेष्ठ अयःशिरा तिसको देख कुक्कुटध्वज विशाख से युद्धकरने लगा ६२ फिर रणमें विशाख को रुकाहुआ देख विशाखका पुत्र नैगमेष शीघ्र शत्रु को

दौड़ा ६३ और एकतरफ़से नैगमेषने वह अयःशिरा भेदन करदिया फिर वह तीन शम्बर के पुत्रों से पीड्यमान अयःशिरा रणको त्यागताभया ६४ फिर वे निवारण कियेभी गणेश्वर शीघ्र शम्बरको प्राप्तहोकर शक्तिसे पाश छेदन करदिया फिर चार शङ्करके पुत्रों करके शीघ्र ६५ आकाशसे भूतलमें आये हे देवर्षे! जब पाश निराशताको प्राप्तहोगया तब शम्बरडरके दिशाओंको भागता भया ६६ और फिर कुमार सेनाको मर्दन करता भया ६७ हे महर्षे! तिन रुद्रसुतों से और गणों से बध्यमान दानवोंकी सेना भयसे बिह्वल और भयार्त्त और बिषण रूप ऐसेहुई सेना शुक्राचार्यके शरण प्राप्तहोती भई ६८॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायाम्भैरवप्रादुर्भावेदैत्यसेना भंगोनामाष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८॥

---

# उनहत्तरवां अध्याय॥

पुलस्त्य जी बोले हे नारदमुने! फिर अन्धक प्रमथों करके अपनी सेनाको निहत देख शुक्राचार्य से यह बचन कहनेलगा १ कि हे भगवन्! आपके हम आश्रय होकर देवताओंको जीतेंगे और हे विप्रर्षे! अन्य गन्धर्व, सुर देवताओं को भी जीतेंगे २ इसवास्ते मुझसे रक्षा करीहुई सेनाको देखो प्रमथों ने ऐसे दुःखित कररक्खी है जैसे स्वामी से रहित नारी ३ और हे भार्गव! कुजम्भ से आदि लेकर मेरे भाई मारेगये और हे मुने! ये प्रमथ कुरुक्षेत्र के फल की तरह अक्षय होगये ४ और ऐसे

कल्याणकरो जैसे औरोंसे नहीं जीतेजावें और हम औरों को जीतलें ५ शुक्राचार्य ऐसे अंधकके बचन सुनके परम अद्भुतसांत्वनकरताभया ६ और फिर हे देवर्षे! ब्रह्मर्षिशुक्राचार्य दानवेश्वरको यहबचनकहताभया हेदानवेश्वर! तेरेहितकेवास्ते यत्नकरूंगा ७ और तुम्हारा प्रिय करूंगा कवि ऐसे बचनकहके संजीविनीबिद्याको आवर्त्तन करताभया ८ जब उस बिद्याका आवर्त्तन किया तब युद्धमें प्रमथोंने जो दानव मारेथे सो सम्पूर्ण खड़ेहोगये जब कुजंभादि दैत्य फिर खड़ेहोगये ९ और युद्ध के वास्ते आये तब नन्दी शंकरसे बचन कहनेलगा कि हे महादेव! मेरे बचन सुनो १० हे भगवन्! मरेहुओंका जो जीवनाहै सो अबिचिंत्य है और असह्यहै जो प्रमथों ने दैत्यमारे और जो मैंने शक्तिसे मारेथे ११ सो भार्गवने सम्पूर्ण बिद्यासे जिलादिये सो यह तिन्होंने महत् कर्मकिया १२ और शुक्रकी विद्याके आश्रयहोकर स्वर्ग में पहुँचे फिर कुलनन्दी नन्दीने जब ऐसा बचन कहा १३ तब प्रभु महेश्वर प्रीतिसे स्वार्थसाधन उत्तम बचन कहतेभये हेगणपते! तूजा और शुक्राचार्यको मेरेपास ला १४ मैं तिसको रोकूंगा रुद्रने ऐसे कहा नन्दी और गणपतिपुत्र १५ शुक्रके लानेकी इच्छासे दैत्योंकी सेनाको जाताभया फिर हयकंधर बलवान् असुरश्रेष्ठ तिसको देखताभया १६ और फिर मार्गको ऐसे रोकताभया जैसे वनमें सिंह नन्दी तिसको प्राप्त होकरके शतपर्व वज्रसे घातकरताभया १७ फिर वह निःसंज्ञ होकरपड़ा फिर

बेगसे नन्दी जाताभया फिर कुजंभ और जंभ और बल और बृत्त और अयःशिरा १८ ये पंच दानव शार्दूल नन्दी के सन्मुख दौड़े तैसे और भी मयह्लादसे आदिले कर दानव दौड़ते भये १९ फिर भगवान् ब्रह्मा तिसको देखकर इन्द्रआदि देवताओंसे कहनेलगा कि इसी समय में शंभुका उत्तम साहाय्य करो २० फिर इन्द्रसहित देवता ऐसे पितामहके कहेहुये बचनको सुनके फिर तिन्होंके आतेहुवों का बेग २१ प्रमथोंकी सेनामें ऐसे भान होताभया कि जैसे समुद्रमें पड़तीहुई नदियों का बेग २२ फिर दोनों तरफसे हलाहल शब्द हुआ और असुर और प्रमथों की सेनाका घोर संकाश हुआ २३ तिसके अनन्तर नन्दी दानवोंको मोहकराके फिर रथसे उतर भार्गव की तरफ ऐसे दौड़ा जैसे क्षुद्रमृग की तरफ सिंह २४ ऐसे सम्पूर्ण रक्षियों को गिराके फिर शुक्राचार्य्य को लेकर गणनायक हरके पास गया और शुक्राचार्य को अर्पण करता भया २५ फिर महेश्वर आये हुये कबिको मुखमें गेर निगलगये २६ फिर शंभुसे ग्रस्तकिया भार्गव जठरमें स्थितहुआ बाणियों से आदर पूर्बक भगवान्की स्तुति करतेभये शुक्राचार्य ऐसे स्तुति करनेलगा २७ शुक्र कहते हैं हे बरके देनेवाले शंभु! आपको नमस्कारहै हे शंकर! हे महेश! हे त्र्यंबक! आपको नमस्कार है २८ हे जीवनाथ! हे लोकनाथ! हे वृषाकपे! हे मदनारे! हे कालशत्रो! हे बामदेव! आपको नमस्कार है २९ और स्थाणु और बिश्वरूप और बामन हे सदा-

गतेमहादेव! और सेव्य और ईश्वर इन आपकेस्वरूपों को नमस्कारहै३० और हेत्रिनयन! हेहर! हे भव! हेशंकर! हेउमापते जीमूतकेतो! हे गुहागृह! हे श्मशानरत ३१ हे भूतिविलेखन! हेशूलपाणे! हेपशुपते! हेगोपरत! हेतत्पुरुष! हे सत्तम! आपको नमस्कार है ३२ मुझे ऐसे भक्ति से कविवरने स्तुतिकिया हर बोले बरमांग मैं बरदूंगा तब शुक्राचार्य्य जी ऐसेकहनेलगे कि हे देववर! मुझको यह बरदानदो कि तुम्हारे उदरसे युद्धमें मेरानिर्गमहो ३३ ऐसे सुन महादेवजी कहनेलगे कि हे द्विजेंद्र! निकस फिर ऐसे कहाहुआ भार्गवपुङ्गव देवके उदरमें बिचरता भया ३४ फिर भ्रमताहुआ शंभुके उदरमें कवि क्या देखता भया भुवनों और पातालोंको देखताभया ३५ और स्थावर जंगमजीवोंको देखताभया और आदित्य और बसु औररुद्र और बिश्वेदेवगण और यक्ष और किन्नर और गंधर्ब और अप्सरा ३६ औरमुनि और मनुज औरसाध्य और पशु और कीट और पिपीलिका और वृक्ष और गुल्म और पर्वत और फलमूल ओषधि ३७ और जल जीव और स्थलजीव और निमिष और अनिमिष और चतुःपद और द्विपद और स्थावर और जंगम ३८ और अव्यक्तव्यक्त और सगुण और निर्गुण इन संपूर्णों को उदरमें देख आश्चर्य्ययुक्तहुआ भार्गव भ्रमता भया ३९ तहां स्थितहुये भार्गव को एक दिव्य संवत्सर गतहुआ तिसके पश्चात् ब्रह्मको प्रातहोताभया और फिर कवि शांतहोगया ४० फिर यह शांतहुआ अपने

आत्मा को देख निकसने को नहीं समर्थ हुआ फिर भक्तिसे नम्र हुआ महादेवजी के शरण प्राप्त हुआ ४१ और ऐसे स्तुति करनेलगा हे विश्वरूप! हे महारूप! हे विरूप! हे अक्षेश्वर! हे उज्ज्वल! हे सहस्राक्ष महादेव! मैं आपकी शरण में प्राप्तहुआहूं ४२ हे शंकर! आपको नमस्कारहै हे शंकर! हे शर्व! हे शंभो! हे सहस्रनेत्र! हे हज़ारहांपैर और हाथोंवाले! आपको नमस्कार है हे भगवन्! आपके उदरमें सम्पूर्ण भुवनोंको देखकर श्रांत हुआ आपहीके शरणप्राप्तहुआहूं ४३ जब ऐसे भार्गव ने बचन कहा तब महात्माशंभुहँसके बचन कहनेलगे हे पुत्र! तू अब निकस और शुक्रपनेको प्राप्तहो ४४ फिर यह महानुभाव शंभुको प्रणामकरके शीघ्र असुरोंकी सेना को प्राप्तहोगया ४५ जब भार्गव फिर आगया तब दानव मुदितहोगये फिर गणेश्वरोंके साथ युद्धकरनेकी इच्छा करतेभये ४६ फिर गणेश्वरभी तिन असुरोंकेसाथ महाबाणोंसे युद्धकरतेभये और सम्पूर्ण जयकी इच्छाकरते भये ४७ हे तपोधन! फिर असुरोंका और देवताओंका युद्धहोतेहुये घोररूप द्वन्द्वयुद्ध होनेलगा ४८ अन्धक तो नन्दिकेसाथ युद्धकरनेलगा और अयःशिरा शंकुकर्ण के साथ और बलि कुम्भध्वजके साथ और बिरोचन नन्दिषेणके साथ ४९ और अश्वग्रीव बिशाखके साथ और वृत्रासुर शाखके साथ बाणासुर नैगमेय के साथ ५० और दानवोंमें श्रेष्ठ बलि महावीर्य फरसाको धारने वाले बिनायकके साथ युद्धकरनेलगा और क्रोधकोप्राप्त

हुये राक्षस प्रमथोंसे युद्धकरनेलगे और इन्द्रके साथ तुहुण्ड युद्धकरनेलगा ५१ और हस्ती कुण्डजके साथ और ह्राद महावीर घटोदरके साथ ५२ ये बलियों में श्रेष्ठ दानव और प्रमथ देवताओंके छःसौ वर्ष द्वन्द्वयुद्ध करतेभये ५३ और बज्र हाथमेंलिये आयेहुये इन्द्रको जम्भनाम महासुर निवारण करताभया ५४ और शंभुनामा असुरपति ब्रह्माकेसाथ युद्धकरनेलगा और मय धर्मराजके साथ और कुजम्भ दैत्यों के नाश करनेवाले विष्णुके साथ ५५ और बिवस्वान्‌के साथ शाल्व और बरुणके साथ त्रिशिरा और पवनके साथ द्विमूर्द्धा और सोमकेसाथ राहु मित्रकेसाथ विरूपधृक् इन्होंका परस्पर में द्वन्द्वयुद्ध होनेलगा ५६ और जो श्रेष्ठबहुतसे बिख्यात हैं उनको ये आठही निवारण करते भये ५७ सरभ और सलभ और पाक और पुरोधा और विपृथु और पृथु और वातापि और बिल्वल ये अनेक प्रकार के शस्त्र धारण करके युद्ध करतेभये ५८ सम्पूर्ण बिष्वक्सेनसे आदि लेकर बिश्वेदेवताओं के साथ महासुर कालनेमि युद्धकरताभया ५९ और एकादश रुद्रोंके साथ महासुर और तेजस्वी विद्युन्माली युद्धकरताभया ६० और अश्विनीकुमारोंके साथ नरकासुर युद्धकरनेलगा और द्वादश आदित्यों के साथ शम्बर युद्ध करनेलगा और साध्य मरुद्गणों के साथ निवात कवचादिक युद्ध करने लगे ६१ हे महामुने! ऐसे प्रमथ और दानवों के हजारहां द्वंद्व होकर देवताओं के सोलह हजार वर्षपर्य्यन्त युद्ध करतेभये ६२

आत्मा को देख निकसने को नहीं समर्थ हुआ फिर भक्तिसे नम्र हुआ महादेवजी के शरण प्राप्त हुआ ४१ और ऐसे स्तुति करनेलगा हे विश्वरूप! हे महारूप! हे विरूप! हे अक्षेश्वर! हे उज्ज्वल! हे सहस्राक्ष महादेव! मैं आपकी शरण में प्राप्तहुआहूं ४२ हे शंकर! आपको नमस्कार है हे शंकर! हे शर्व! हे शंभो! हे सहस्रनेत्र! हे हजारहांपैर और हाथोंवाले! आपको नमस्कार है हे भगवन्! आपके उदरमें सम्पूर्ण भुवनोंको देखकर श्रांत हुआ आपहीके शरणप्राप्तहुआहूं ४३ जब ऐसे भार्गव ने बचन कहा तब महात्माशंभुहँसके बचन कहनेलगे हे पुत्र! तू अब निकस और शुक्रपनेकोप्राप्तहो ४४ फिर यह महानुभाव शंभुको प्रणामकरके शीघ्र असुरोंकी सेना को प्राप्तहोगया ४५ जब भार्गव फिर आगया तब दानव मुदितहोगये फिर गणेश्वरोंके साथ युद्धकरनेकी इच्छा करतेभये ४६ फिर गणेश्वरभी तिन असुरोंकेसाथ महाबाणोंसे युद्धकरतेभये और सम्पूर्ण जयकी इच्छाकरते भये ४७ हे तपोधन! फिर असुरोंका और देवताओंका युद्धहोतेहुये घोररूप द्वन्द्वयुद्ध होनेलगा ४८ अन्धक तो नन्दिकेसाथ युद्धकरनेलगा और अयःशिरा शंकुकर्ण के साथ और बलि कुम्भध्वजके साथ और बिरोचन नन्दिषेणके साथ ४९ और अश्वग्रीव बिशाखके साथ और वृत्रासुर शाखके साथ बाणासुर नैगमेय के साथ ५० और दानवोंमें श्रेष्ठ बलि महावीर्य फरसाको धारने वाले बिनायककेसाथ युद्धकरनेलगा और क्रोधकोप्राप्त

हुये राक्षस प्रमथोंसे युद्धकरनेलगे और इन्द्रके साथ तुहुण्ड युद्धकरनेलगा ५१ और हस्ती कुण्डजके साथ और ह्लाद महाबीर घटोदरके साथ ५२ ये बलियों में श्रेष्ठ दानव और प्रमथ देवताओंके छःसौ बर्ष द्वन्द्वयुद्ध करतेभये ५३ और बज्र हाथमेंलिये आयेहुये इन्द्रको जम्भनाम महासुर निवारण करताभया ५४ और शंभुनामा असुरपति ब्रह्माकेसाथ युद्धकरनेलगा और मय धर्मराजके साथ और कुजम्भ दैत्यों के नाश करनेवाले विष्णुके साथ ५५ और बिवस्वान्के साथ शाल्व और बरुणके साथ त्रिशिरा और पवनके साथ द्विमूर्द्धा और सोमकेसाथ राहु मित्रकेसाथ विरूपधृक् इन्होंका परस्पर में द्वन्द्वयुद्ध होनेलगा ५६ और जो श्रेष्ठबहुतसे बिख्यात हैं उनको ये आठही निवारण करते भये ५७ सरभ और सलभ और पाक और पुरोधा और विपृथु और पृथु और वातापि और बिल्वल ये अनेक प्रकार के शस्त्र धारण करके युद्ध करतेभये ५८ सम्पूर्ण बिष्वक्सेनसे आदि लेकर विश्वेदेवताओं के साथ महासुर कालनेमि युद्धकरताभया ५९ और एकादश रुद्रोंके साथ महासुर और तेजस्वी विद्युन्माली युद्धकरताभया ६० और अश्विनीकुमारोंके साथ नरकासुर युद्धकरनेलगा और द्वादश आदित्यों के साथ शम्बर युद्ध करनेलगा और साध्य मरुद्गणों के साथ निवात कवचादिक युद्ध करने लगे ६१ हे महामुने! ऐसे प्रमथ और दानवों के हजारहां द्वंद्व होकर देवताओं के सोलह हजार वर्षपर्य्यन्त युद्ध करतेभये ६२

जब देवताओंकेसाथ असुर युद्ध करनेको नहीं समर्थ होतेभये तब मायाके आश्रयहोके देवता ग्रसलिये ६३ फिर सम्पूर्ण प्रमथ और देवताओं करके ६४ शून्य गिरिप्रस्थको देखकर रुद्र क्रोधसे तिन्होंको उत्पादन करताभया ६५ तिसकरके स्पर्शकरे दनुसुतोंको जंभाई आई तब मुखोंको बिकूलकरके शस्त्रोंको त्यागतेभये ६६ जब बिजृंभमाण दानवहुये तब शीघ्रही दैत्यों के देहसे आकुलहुये देवता निकसे ६७ तब ऐसे शोभा हुई जैसे मेघों में उत्पन्नहुई बिजली ६८ हे तपोधन! जब देवताओं के समूहों को निकसेहुये देखतेभये तब फिर ये कुपितहुये युद्ध करतेभये ६९ फिर महादेवजीके रक्षाकियेहुये गणोंने असुर जीतलिये ७० तिसके अनन्तर अठारह भुजाओं वाला अब्यय महेश्वर ७१ जलको स्पर्श करके बिधिपूर्बक सरस्वती में स्नान करताभया और भक्तिसे पुष्पों करके पुष्पांजलि देताभया ७२ फिर हिरण्यगर्भने आदित्यको शिरसे प्रणामकरी और प्रदक्षिणाकरी फिर स्तुति करके जप करने लगे ७३ फिर प्रणाम करके और त्रिशूलको धारण करके गम्भीर भावसे बलसे भुजाओंको कँपातेहुये नृत्य करते भये ७४ जब महेश्वर नृत्य करनेलगे तब सम्पूर्ण देवता और गणभी भावसहित हरके बिलास के वास्ते युद्ध करनेलगे ७५ फिर सन्ध्याबन्दन करके और महादेवजी की इच्छासे गण नृत्य करके दानवों के साथ युद्ध करने के वास्ते फिर बुद्धि करतेभये ७६ फिर महादेवजी की

भुजाओं से रक्षित दानवों को जीतते भये फिर अन्धक दैत्य ७७ अपनी सेना को निर्जित देख और शंकर को अजेयदेख सुन्द को बुलाकर यह बचन कहताभया ७८ किहेसुन्द ! हेवीर ! तू मेराभ्राताहै और सम्पूर्णबस्तुओं में विश्वास्य है सो इसवास्ते जो मैं बाक्यकहूं हूँ तिसको सुनके क्षमाकर ७९ यह रुद्र तो रणबिषे दुर्जयहै और मेरे हृदयमें शैलकीपुत्री पद्माक्षी बसतीहै ८० इसवास्ते उठ सुन्दर हासवाली पार्वती के पासचलें औरहे दानव ! तहां हररूप कर के तिसको मोहकरावें ८१ हे सुन्द ! तू महादेवका अनुचर नन्दी गणेश्वरहो फिर तहां जाके और उसको भोग के प्रमथ और देवतों को जीतलूँगा ८२ यह बचन सुनके सुन्द अंगीकार करताभया फिर सुन्दतो नन्दीहुआ और अन्धक शंकर होताभया ८३ फिर महासुरोंकी सेनाकेपति नन्दी और रुद्रहोकर प्रहारों से घायल शरीरोंवालेहो मन्दरगिरि को प्राप्तहुये ८४ फिर अन्धक सुन्द के हाथ को पकड़ के शंकारहित चित्तसे महादेवजी के मन्दिर में प्रवेश करताभया ८५ फिर गिरिसुता दूरसे आतेहुये अन्धक को महेश्वर शरीरसे आच्छादित देखके ८६ और सुन्दको शैलादिरूप में स्थित देखतीभई फिर मालिनी पार्वती यह देखके सुयशा बिजया और जया इन्हों से बचन कहनेलगी ८७ कि हे जये ! देख मेरेवास्ते अंधकने महेश्वरका शरीरकियाहै ८८ हे जये ! शीघ्रउठ और पुरानन घृतलवण और दधि लेआवो और महादेवजीके में आप

ही व्रणभंगकरोंगी ८९ हे सुभद्रे! अपने भर्त्ताका व्रण नाशतू शीघ्रकर ऐसे बचनकहके और श्रेष्ठ आसन से उठके ९० तिसको बृषध्वजसमानतीहुई सन्मुखउठी ९१ फिर आच्छादित बिग्रह देखके हे मुने! गिरिराजपुत्री तिसका अपमानकरतीभई ९२ फिर यह अंधक देवीके चिंतित को जानके ९३ जिस मार्ग से पार्बतीचली उस मार्गके सन्मुखदौड़ताभया ९४ पश्चात् गिरिजा फिर तिसको आतेहुये देख भय से दौड़ी ९५ और गृहको त्यागके सखियों सहित उपबनमें प्राप्तहोगई हे मुनिपुंगव! तहां भी यह मदांधहुआ सन्मुख दौड़ा ९६ फिर भी तपकेगोपनकेलिये इसको शाप नहींदेतीभई और तिसकेभयसे गौरीसफ़ेद आककेपुष्पमेंप्रबेशहोगई ९७ हे मुने! बिजया आदि महागुल्ममें लयको प्राप्तहोगई जब ऐसेपार्बती नष्टहोगई तब यह हैरण्यलोचन ९८ सुन्दकेहस्त को पकड़ अपनी सेनाको आताभया हे मुनिसत्तम! जबअन्धक फिर अपनी सेनामें आगया ९९ तब फिर प्रमथ और असुरों का महायुद्ध प्रबृत्तहुआ फिर चक्र और गदाको धारण किये १०० अमरगण श्रेष्ठ बिष्णु शंकरके प्रियकी इच्छाकरके असुरोंकी सेना को हनन करतेभये फिर शार्ङ्ग धनुषके छोड़ेहुये बाणोंसे दानवर्षभ १०१ पांच छः सात आठ दानव ऐसे नष्टहोगये जैसे सूर्यकी किरणों से मेघ फिर कितनेक औरोंको जनार्दन १०२ गदासेभेदन करताभया और कितनेक दानवों को षड्ग से सात सात टुकड़े करते

१०३ और कितनेकोंको हलसेखैंचके और मुशलसे
करताभया १०४ और गरुड़पंखोंसे और चोंचों से
छातीसे हननकरताभया १०५ फिर कमलको अ-
हुये ब्रह्माजीभी जलसे सेचनकरतेभये फिर सर्वती-
ब्रह्मजलसे स्पर्शकिये १०६ गण और देवता सौ
योंसेभी अधिकबलवाले होतेभये और तिसीजल
शहुये १०७ दानव बाहनों सहित नाशको ऐसे
होगये जैसे इन्द्रके वज्रसे पर्वत फिर इन्द्र, ब्रह्मा
रि को ऐसे महासुरों को मारतेहुये देख बज्रको ले-
गा १०८ हे मुने! फिर दानवोंमें श्रेष्ठबलिको आते
त्रा १०९ वह भगवान् और ब्रह्माको त्यागकर
नाके इन्द्रसेयुद्धकरनेको आया ११० फिर देव
पे अजेयइन्द्र तिस आते हुयेको देख बज्रको अ-
बलि असुरके मस्तकपर छोड़ताभया १११ और
या कि हे मूढ़! मारा है फिरभी प्रबल तिस वज्र
के मस्तक से हज़ार टुकड़े होगये ११२ तब
ा और यह देवपति डरके युद्धसे पराङ्मुखहो-
१३ फिर जंभ इन्द्रको विमुखदेख कहनेलगा
राचरोंके राजन् इन्द्र! ठहर यह तेरेको युक्तनहीं
राजधर्म मेंभी भागनायुक्तनहीं कहा है ११४
! इन्द्र ऐसे जंभके बाक्योंको सुनके डराहुआ
प्रासहुआ और कहनेलगा कि हे ईश! मेरे व-
हे विष्णो! आप भूत, भव्य, सम्पूर्णोंके नाथहो
यह जंभ मुझको अत्यन्त पीड़ाकरताहै और

मेरेपास शस्त्रभीनहीं हे भगवन्! मैं आपकी शरणमें प्राप्तहुआ मुझको शस्त्रदो ११६ ऐसे सुन हरि इन्द्रसे कहनेलगे कि अभिमानकोत्यागदे और अब तू जाकर अग्निसे शस्त्रमांग वह तुझको निश्चयदेगा ११७ ऐसे जनार्द्दनभगवान्के बचनोंको इन्द्रसुन और बहुत बेग से अग्निके शरणमें प्राप्तहुआ और यह बचन कहने लगा ११८ कि हे अग्ने! मैंने बलिदैत्यको माराथा सो मेरे बज्रके हजारटुकड़ेहोगये और यह जंभ युद्धके वास्ते बुलाता है सो मुझको आप आयुध अर्थात् शस्त्र दो ११९ पुलस्त्यजी बोले हे मुने! तब अग्निबोला कि हे इन्द्र! मैं तुझपर प्रसन्नहुआ क्योंकि जिससे अभिमान को त्यागके मेरे शरणमें प्राप्तहुआ १२० अग्नि ऐसे कहके और भावसे अपनी शक्तिसे शक्ति निकास इन्द्र को देताभया फिर भगवान् इन्द्र प्रकाश करताहुआ स्वर्गकोगया १२१ फिर सौघंटोंवाली दारुण तिस शक्तिकोलेकर यह अरिमर्दन इंद्र जंभके मारनेको सन्मुख प्राप्तहुआ १२२ इन्द्रकोदेख जंभभी सन्मुखआया और अतिक्रोधकरनेलगा १२३ फिर दृढ़मुक्काबनाके गजाधिपके मस्तकपर मारा और उसीसमयमें हस्तीकामस्तक टूटगया और हस्ती ऐसे पड़ा जैसे पहले इन्द्रके बज्रसेहत हुये पर्बत १२४ फिर पड़तेहुये हस्तीसे इन्द्र जल्दी उतर मन्दरगिरिको त्यागकर पृथ्वीतल में पड़ताभया १२५ फिर पड़तेहुयेइन्द्रकोदेख सिद्ध, चारण कहनेलगेकिहेइंद्र! भूतलमेंमतपड़े ठहर १२६। १२७ ऐसे तिन्होंके वचनको

सुनके सहयोगी इन्द्र एकक्षण स्थितरहा और कहनेलगा कि वाहनके बिना मैं शत्रुओं के साथ युद्ध कैसेकरूं १२८ ऐसे सुन देव, गन्धर्व कहनेलगे कि हे ईश्वर! विषादको मत प्राप्त हो हम रथ भेजते हैं १२९ तिसपर चढ़ के तू युद्धकर ऐसे वह बिश्वाबसु से आदि लेकर गन्धर्व ऐसे कहके स्वस्तिलक्षणोंवाला और बहुत बड़ा और वानरध्वजसे युक्त और हरित अश्वों से युक्त १३० और सुवर्णसे जटित और किंकिणीजालों से मंडित ऐसा उत्तमरथ इन्द्रके वास्ते भेजतेभये १३१ फिर सारथिहीन तिस उत्तमरथको इन्द्रदेख कहनेलगा कि मैं कैसे युद्ध करूँगा १३२ और कैसे घोड़ोंको रोकूँगा जो अब मेरा कोई सारथिबनेगा तो मैं शत्रुको मारदूँगा और प्रकारसे नहीं १३३ तिसके अनन्तर गन्धर्व कहनेलगे कि हे विभो! सारथि तो हमारे नहींहै तू आपही घोड़ोंको रोक १३४ जब ऐसे वचन सुना तब भगवान् इन्द्र उत्तम रथ को त्याग पृथ्वीपरपड़ा और वस्त्र,माला दूरगिरगई १३५ और मुकुट हिलगया और बाल खुलगये और आयुध गिरगया फिर पड़ते हुये इन्द्रको पृथ्वी देखके कँपती भई १३६ तब शमीकऋषिकी तपस्विनीभार्याकहनेलगी कि हे प्रभो! बालकको यथासुख बाहरकरो १३७ ऋषि कहनेलगे कि किसवास्ते सो कहनेलगी कि हे नाथ! सुन दैवज्ञों ने यह कहाहै १३८ कि जिससमयमें पृथ्वी कँपे तब इस बालकको बाहर गेरदेना हे मुनिश्रेष्ठ! जो बाह्यवस्तुहोवे सो दुगुनी होजाती है १३९ मुनि ऐसे

बचन सुनके बालकको लेकर शंकारहितहुआ बाहरफेंक के १४० फिर युगल के वास्ते भार्यासहित प्रविष्टहुआ फिर ऐसे निवारणकिया कि जो घड़ी चलीगई तो आधीहानि होजायगी १४१ देवर्षि जब ऐसा बचनकहा तब बेगवान् ऋषि बाहर निकस के रूपवान् दो बालकों को देखताभया १४२ फिर तिन दोनों को देखके देवताओं का पूजन किया फिर अद्भुत दर्शनवाली भार्या से कहने लगा हे प्रिये! इसका तत्त्व मैं नहीं जानता इसवास्ते तुझसे पूँछूहूँ तू कह १४३ इस दूसरे बालकके क्या गुणहैं और कैसाभाग्य है और कर्म कैसा है इसका सोभी कह १४४ ऐसे सुन यह कहनेलगी कि अबैनहीं फिर कहूँगी शमीक कहनेलगा कि हे प्रिये! अभीकह नहींतोमैं भोजन नहीं करूँगा १४५ पश्चात् सो कहनेलगी कि हे ब्रह्मन्! सुनो हितकारी बचन कहूँगा कारण से अब पूंछा इसवास्ते निश्चय करके यह भाग्यकारी है १४६ जब ऐसे कहा तब यह सैन्यका जाननेवाला बालक इन्द्रका संरुध्य करनेको जाताभया १४७ फिर बिश्वावसुसे आदि लेकर गन्धर्व इन्द्र की सहायता के लिये तिस जातेहुये को जानके तिसको तेजसे बढ़ातेभये १४८ फिर गन्धर्व तेजसेयुक्त यह शिशु इन्द्रको प्राप्तहोकर बचन कहने लगा कि हे देवेश! यहां आवो और मैं आप का उत्तम सारथिहूँ १४९ ऐसे सुन इन्द्र कहनेलगा कि हे बालक! तू किसकापुत्र है और अश्वोंको कैसे रोकेगा यह संदेह मुझको भानहोताहै १५० सो कहनेलगा कि हे इन्द्र! मैं

ऋषि तेजसे और पृथ्वी से उत्पन्नभयाहूँ और मुझको गन्धर्ब तेजसे युक्तजान और अश्वों की सवारी का जाननेवाला जान १५१ फिर योगियों में श्रेष्ठइन्द्र ऐसे सुन के आकाशको भजताभया फिर मातलिनामसेबिख्यात हुआ १५२ वह ब्राह्मणका पुत्रभी आकाशको भजता भया फिर देवताओं में श्रेष्ठइन्द्र अपने रथपरचढ़ा और शमीकके पुत्र मातलिने अश्वोंकी रस्सी पकड़ी १५३ फिर मंदराचलको प्राप्तहोकर रिपुओंकी सेनाको प्राप्त हुये फिर यह श्रीमान्इन्द्र तहां प्रबिष्टहोकर तहां बाणों सहित १५४ और पांचबर्णवाला अर्थात् सफ़ेद, रक्त, श्याम, अरुण, पीला इन छायाओं से युक्त ऐसे उत्तम धनुषको तहां पड़ादेख बाणोंसहित यहइन्द्र उठताभया १५५ फिर ब्रह्मा, बिष्णु, महेश इन्होंको प्रणाम करके अधिज्य बिषे शर को योजन करताभया १५६ फिर ब्रह्मा बिष्णुके नामोंसे अंकित और मयूरोंकीपंखोंवाले और असुरों को भेदन करतेहुये १५७ ऐसे उग्रबाण रणमें बिचरनेलगे हे नारद ! आकाश और बिदिक् और पृथ्वी और दिशा इन्होंको तीव्रशरों के समूह से इन्द्र आच्छादित करताभया १५८ और बींधाहुआ गज और भेदनकिया अश्व और रथ पृथ्वीपर पड़े और शरोंसे व्याकुलकिया महावत पृथ्वीपरपड़ा १५९ और इन्द्रके बाणोंसे ताड़ित पदाति पृथ्वी पर प्राप्तहुये फिर उस समयमें इन्द्रने रिपुकी सेना हतप्राय करदी १६० फिर कुजंभ और जंभ असुर इन्द्र के बाणों से दुरासद

सैन्यको हत देखकर और गदा और बाणों को ग्रहण करके अव्यय सुरेशको प्राप्तहुये १६१ फिर भगवान् विष्णु तिन्होंको आते हुये देखके शत्रुओं के नाश करने वाले सुदर्शनचक्रसे बेगकरके कुजंभको मारतेभये १६२ फिर यह संग्राम से दौड़ा और प्राण निकसतेही गिर गया १६३ फिर माधवने जब भ्राता कुजंभकोमारदिया तब जंभ क्रोधवश होकर रण में इन्द्र के सन्मुख ऐसे दौड़ा जैसे अति बिषण्ण बुद्धि मृग सिंह को दौड़ता है १६४ फिर तिस जम्भ को आते हुये इन्द्र देखके यह महात्मा शर और धनुष को त्याग फिर अग्निकी दीहुई यमदण्ड के समान ऐसी शक्ति को ग्रहण कर उस शत्रुके लिये छोड़ताभया १६५ फिर घण्टाओं से कियाहै शब्द जिसने ऐसीशक्तिको आतीहुई देख गदा से हननकरताभया फिर इन्द्र शीघ्रही गदाको भस्मकरके जंभके हृदयको भेदनकरताभया १६६ फिर हृदय को शक्तिसे भेदनकिया यह सुरारि प्राणोंसेरहितहोकर पृथ्वीपर पड़ताभया फिर दैत्येश्वर जंभको पृथ्वीविषे बिसंज्ञदेखकर भयसेब्याकुलहुये दौड़तेभये १६७ फिर जब जंभमारदिया और दैत्योंकीसेना भग्नहोगई तब प्रसन्नहुये गण हरि भगवान् का पूजनकरतेहुये इन्द्रके वीर्य को सराहतेभये और इन्द्रको प्राप्तहोकर स्थित होतेभये १६८॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांभैरवप्रादुर्भावेकुजम्भवधो नामनवषष्टितमोऽध्यायः ६९॥

# सत्तरवां अध्याय॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! जब ऐसे दैत्यकीसेना भग्न होगई तब शुक्राचार्य अन्धक असुरेंद्र से बचन कहने लगे हे शूरबीर ! जल्दआ जल्दआ महासुरचलेगये अब हम शैलको प्राप्तहोकर फिर युद्धकरेंगे १ ऐसे सुन अंधक तिससे कहनेलगा हे ब्रह्मन् ! यह बचन आपने सम्यक् नहींकहा रणसे मैं कभीनहींजाऊंगा और अपने कुलको कभी लाज नहीं लगाऊंगा २ हे द्विजशार्दूल ! अब दुर्द्धर मेरेवीर्यको तू देख इन्द्र महेश्वर सहित देव,दानव,गंधर्वोंको अब जीतूंगा ३ फिर हिरण्याक्षका पुत्र अन्धक ऐसे बचन कहके और आश्वासनाकराके शूरबीर सारथिसे ऐसेमधुर अक्षर कहताभया ४ कि हे सारथे ! महाबलहरके समीपरथकोप्राप्तकर ५ और जितनेमें बाणोंके समूहोंसे प्रमथ और अमरगणोंकीसेनाको नहीं हनन करदूं इतने ठहर ६ सारथि ऐसे अन्धक के वचन सुनके महा बेगवाले और कृष्ण वर्ण वाले ऐसे अश्वोंको चाबुकोंसे ताड़ित करताभया ७ फिर हे मुने ! हरके प्रति यत्नसेभी प्रेर्यमाणकिये वे अश्व जघनों में क्लेशपातेहुये कष्टसे रथको वहतेभये ८ फिर ऐसे दैत्य को वहतेहुये अश्व वायु वेगवालेभी साग्रसंवत्सर अर्थात् कई महीनोंसहित वर्ष करके प्रमथोंकी सेना को प्राप्तहुये ९ फिर दैत्य धनुषकोलेकर बाणजालोंसे गणेश्वर और देवता और इन्द्र और उपेंद्र और महेश्वर

इन्होंको आच्छादन करताभया १० फिर चक्रधारण किये त्रैलोक्यकीरक्षा करनेवाले बिष्णुबाणों से छिन्नहुई सेनाको देख देवताओं से ऐसे बचन कहने लगे ११ कि हे सुरश्रेष्ठाओ! क्या ठहररहेहो अवतो इसके मारने से जयहोगी इसवास्ते बिजयकी इच्छाकरतेहुये हमारा बचन शीघ्रकरो १२ रथकुटुम्बीसहित अश्वोंको शिक्षा करो और रथको तोड़गेरो १३ और जब यह रथटूट जायगा तब इसको शंकरभक्षणकरलेगा १४ और हे देवताओ! दयाकरके शत्रुकात्यागनहींकरना ऐसे देवताओं सहित प्रमथोंसे जब बासुदेवने कहा १५ तब महेंद्र सहित और चक्रधर सहित बेगकरतेभये फिर मेघोंकीसी कांतिवाले अश्वोंको जनार्द्दन १६ एक निमेष मात्रमें मारा जब अश्व मरगये तब स्कंद रथके सारथि को १७ शक्तिसे भेदनकरताभया फिर उसीसमयमें यह प्राणोंसेरहित होकर पृथ्वीपर पड़ताभया १८ हे तपोधन! फिर बिनायकसे आदिलेकर प्रमथ और इन्द्रसे आदिलेकर देवता ध्वजासहितरथको शीघ्रही भंजन करतेभये १९ फिर यह तेजस्वी अंधक रथरहित जब होगया तब धनुष को त्याग कर और गदा को लेकर बलवान् देवताओंके सन्मुखदौड़ा २० फिर आठकदम आगे बढ़कर और यह दैत्येंद्र तहां स्थितहोकर मेघकीसी गंभीर बाणी से यह दैत्य महादेवजीके हेतुवाले बचन कहताभया २१ कि हे भिक्षो! अब तेरे पास तो सेनाहै और मैं अकेलाहूँ परन्तु अबभी मेरे पराक्रमको

देख तुझको मैं जीतूँगा २२ फिर शंकर तिसके ऐसे वाक्यको सुन ब्रह्मा और इन्द्रसहित सम्पूर्ण देवताओं को अपने शरीरमें प्रवेश करताभया २३ हे मुने! ऐसे प्रमथों को शरीरमें स्थितकर शंकर बचन कहनेलगा हे दुष्टात्मन्! अब जल्दआ अब मैंभी अकेलाही स्थित हूँ २४ फिर वह सम्पूर्ण अमरगणकाक्षय महान् आश्चर्य को देख बेगवान् दैत्य गदाको लेकर शंकरकी तरफ़ दौड़ा २५ फिर भगवान्शंकर तिस आतेहुये दैत्य को देख और बृषोत्तम को त्याग शूल धारणकिये पदाति होकर गिरिप्रस्थ में स्थित होतेभये २६ फिर बेगसे पड़तेहुये तिस दैत्यको भैरव हृदयमें भेदन करताभया फिर शाश्वत और शुभ के देनेवाले ऐसे शिव दारुण और महद्रूप और त्रैलोक्यमें भीषण २७ और जाड़ोंसे कराल कोटिरबियोंकीसी कांतिवाला सिंहचर्म से आवृ-त जटा धारणकिये और सर्पोंके हारोंसे भूषित और दश भुजा धारणकिये और तीननेत्रों को धारणकिये २८ ऐसा दिव्यरूप धारणकरके भूतभावन भगवान् शंकर शत्रुको शूल से भेदनकरताभया २९ जब यह हृदयमें भेदनकर दिया तब यह दानव शूलसहित भैरवको ग्रहणकर हेम-हामुने! अत्यंतवेगसे कोसमात्रविहारकरताभया ३० फिर किसीप्रकारसे भगवान् शंकरअपनेआत्मा को आपरोक फिरशीघ्रही त्रिशूलसे गदासहित रिपुको उठातेभये ३१ फिर दैत्याधिप गदाको लेकर महादेवजी के मस्तकपर गदाको गेरताभया फिर शूलको ग्रहणकर वह दानव

फिर उछला ३२ फिर सम्पूर्णोंका आधार यह महायोगी स्थितहोगया फिर गदाकेहुये घाव से चाररुधिरकी धारा निकसीं ३३ सो पूर्वधारा से तो अग्निकेसा तेजवाला भैरव उत्पन्नहुआ तिसका सोमधार नामहुआ और चन्द्रमालासे भूषितहुआ ३४ और दक्षिण धारासे प्रेत मंडितभैरव उत्पन्नहुआ सो श्यामअंजन केसमानकाल राज बिख्यात हुआ ३५ फिर पश्चिम धारा से बाहन भूषित भैरव उत्पन्नहुआ सो अतसी के पुष्पकीसीकांति वाला और कामराजनाम से बिख्यातहुआ ३६ और उत्तर धारासे शूलभूषित अन्यभैरव उत्पन्नभया ३७ और घाव में स्थित रुधिर से शूलभूषित भैरव उत्पन्न हुआ सो इन्द्र आयुधकीसी कांतिवाला स्वच्छराजवि- ख्यातहुआ और भूमि में स्थित रुधिरसे फल भूषित भैरव उत्पन्नहुआ ३८ सो शोभांजन अर्थात् सुरम कीसी कांतिवाला ललितराज बिख्यातहुआ हे मुने! ऐसे सप्तरूप भैरव कहाहै ३९ और आठवां बिघ्नराज ऐसे भैरवअष्टक होगया फिर त्रिशूलीभैरवने यह महासुर दैत्यको त्रिशूलमेंपोहिलिया और छत्रकीतरहधारणकर पश्चात् त्रिशूल भेदित ४० तिसअन्धकके शरीरसेबहुत सा रुधिर निकसा कि सप्तमूर्त्तियां महादेवजीकी कण्ठ पर्यंत निमग्न होगईं इसवास्ते शंकर के श्रमसे पसीने उत्पन्नहुये ४१ तिस ललाटफलक में रुधिर से व्याप्त कन्या उत्पन्नहुई हे मुने! जो महादेवजीके मुख से पृथ्वी पर पसीनापड़ा तिससे ४२ अंगारकीसी कांतिवाला

बालक उत्पन्न होगया सो बालक अत्यन्त तृषित हुआ। अपना रुधिर पीता भया ४३ और वह अद्भुतकन्या भी रुधिर को चाटने लगी फिर बालक सूर्यकीसी प्रभावाली ४४ तिस कन्या से भैरवमूर्त्तिमान् शंकर बचन कहनेलगे और वरद, शंकर, श्रेय और अर्थ के वास्ते लोकों के उत्तम बचन कहने लगे ४५ कि हे कन्ये ! सुर, ऋषि, पितर, दिव्य सर्प, यक्ष, विद्याधर, मानव तेरा पूजन करैंगे ४६ और हे शुभंकरि ! हे महादेवि ! बलि और पुष्पों के समूह से पूजन करेंगे और रुधिर से चर्चितहोगी इस वास्ते चर्चिका ४७ ऐसा शुभनाम होगा फिर बर के देने वाले शंकर से ऐसे कही हुई चर्चिका चारोंतरफ को पृथ्वीपर विचर के यह सुन्दरी हिंगुलतादि उत्तम स्थान को प्राप्त हुई जब यह चली गई ४८ तब सम्पूर्ण वरों में उत्तम बर मंगल को देतेभये कि हे महात्मन् ! जगत् के ग्रहोंका आधिपत्य तुझ को हो ४९ फिर महेश्वर हजारबर्षपर्यंत अपने सूर्य और अग्निरूप दिव्यनेत्र रुधिर से रहित शुष्क करता भया ५० फिर एक नेत्र से उत्पन्न हुये अग्नि से यह असुरराट् शुद्ध और मुक्तपाप होगया फिर अन्धक दैत्य बहुरूप और ईश और सम्पूर्ण चराचरों के नाथ ५१ और सम्पूर्णों का ईश्वर और अव्यय और त्रैलोक्यनाथ वरका देनेवाला और वरेण्य ऐसा जान के और सुरादिकों से स्तुत और ईड्य और आद्य ऐसे महादेवजी को अन्धक जान के यह स्तोत्र पढ़ता भया ५२ अन्धक कहता है कि हे भैरव ! हे भीममूर्त्ते ! हे त्रिलोकी

रक्षा करनेवाले! हे तीव्रशूल को धारण करने वाले! हे दश
भुजाओं को धारणकरनेवाले! हे शेषनाग के हार धारणक
रनेवाले! हे त्रिनेत्र! आपको नमस्कार है और दुष्ट बुद्धिवाले
मुझको रक्षित करो ५३ हे जयेश! सर्वेश्वर! हे विश्व
मूर्त्ते! हे सुरासुरों से वंदित चरणोंवाले! हे त्रैलोक्यमें सूर्य!
हे वृषांक! डरता हुआ मैं आपके शरण में प्राप्त हुआ हूं
५४ और हे नाथ! शिवरूप तुम को देवता प्रणाम करते
हैं और हर रूपकी सिद्ध रक्षाकरते हैं और महर्षि स्थाणु
रूप की स्तुति करते हैं ५५ और यक्ष भीमरूपकी स्तुति
करते हैं और मनुज महेश्वरकी स्तुति करते हैं और भूत
भूताधिपनाम से स्तुति करते हैं ५६ और निशाचर उग्र
की स्तुति करते हैं और पुण्यरूप पितर भवकी स्तुति
करते हैं हे हर! मैं आपका दासहूं और मेरे पापोंका क्षय
करो ५७ और मेरी रक्षाकरो हे भगवन्! तू त्रिदेव है
और त्रिधर्महै और पुष्कर है और हे विभो! हे त्रिनेत्र!
आप त्रय्यारुणिहो त्रिश्रुतिहो अव्ययात्माहो इसवास्ते
मुझको पवित्रकरो मैं आपकी शरणमें प्राप्तहुआहूं ५८
हे भगवन्! आपतृणाचिकेतुहो और त्रिपद प्रतिष्ठितहो
और षडंगवित्हो और विषयों में लुब्धहो त्रैलोक्यनाथ
हो इसवास्ते हे शंभो! मुझको पवित्रकरो और हे शंभो!
मैंआपकादासहूं और आपकी शरणमें प्राप्तहुआहूं ५९
और हे शंकर! हे महाभूतपते! हे गिरीश! कामशत्रुने जीता
है मनजिसका ऐसे मैंने आपका बहुत अपराधकिया इस
वास्ते मैं आपको प्रसन्नकरूंगा और हे भगवन्! मैं आप

को शिरसे नमस्कारकरता हूँ ६० हे देव! हे ईशान! मैं पापीहूँ और पाप करने वाला हूँ व पापात्मा हूँ व पाप से उत्पन्न हुआ हूँ इसवास्ते मेरीरक्षाकरो ६१ और हे भगवन्! सम्पूर्ण पापों केहरने वालेहो हे देवेश! कहो मेरा क्या दोष है मुझे आपने ऐसाही पाप आचरण करनेवाला रचा है हे ईश्वर! मुझपर आप प्रसन्नहोवो ६२ हे भगवन्! आपही कर्त्ताहो और धाताहो और जयहो और महाजयहो और मंगलहो ॐकारहो आप ईशानहो ध्रुवहो अव्ययहो ६३ आपही ब्रह्माहो सृष्टि के करनेवालेहो नाथहो विष्णुहो महेश्वरहो आपही इन्द्रहो और वषट्कारहो आप धर्म हो सुरोत्तमहो ६४ आप सूक्ष्महो व्यक्तरूप हो अव्यक्त हो ईश्वरहो और हे भगवन्! यह स्थावर,जंगम सम्पूर्ण जगत् आप से व्याप्त है ६५ और हे ईश! आपही आदि हो और मध्यहो और अंतहो और आपही अनादिहो सहस्रपाद अर्थात् हज़ार पैरोंवालेहो और हे भगवन्! आप विजयहो सहस्राक्षहो विरूपाक्षहो महाभुजहो ६६ अनन्तहो सर्वगतहो व्यापीहो हंसहो प्राणाधिपहो अच्युतहो गीर्वाणपति हो अव्यग्र हो रुद्र हो पशुपति हो शिवहो ६७ विविक्तहो जितक्रोधहो जितारातिहो जितेंद्रियहो हे भगवन्! आप जयहो शूलपाणिहो इसवास्ते हे भगवन्! शरणागतकी मेरीरक्षाकरो ६८ पुलस्त्यजी बोले हे मुने! जब दैत्याधिप अंधकने महादेवजीकी ऐसी स्तुति करी तब प्रीतियुक्त महादेवजी हिरण्याक्ष के पुत्र अंधक से वचन कहने लगे ६९ कि हे दानव! तू सि०

आ और हे अंधक! मैं तुझपर प्रसन्नहुआ एक अंबिका के बिना तू बरमांग हम तुझको बरदेंगे ७० ऐसे सुन अंधक कहने लगा कि हे भगवन्! अंबिका मेरीमाता है और आप त्र्यंबक मेरे पिता हैं माता के चरणों को मैं प्रणाम करूंहूँ क्योंकि अंबिका मेरेको बन्दनीय है ७१ और हे महेश्वर! जो बरदेतेहो तो यह बरदो मेरे शरीर और मन, बाणी इन्हों से उपजे पाप नष्टहोजावें ७२ और दुर्विचिंतित नष्टहोजावें और हे देव! मेरादानवभाव नष्ट होजावे और हे महेश्वर! आप के बिषे स्थिरभक्तिहोजावे ७३ ऐसे सुन महेश्वर कहनेलगे कि हे दैत्येंद्र! ऐसेही हो तेरे पाप नष्टहोजावें और तू दैत्यभाव से छूटकर भृंगी गणपति होजाय ७४ बरके देनेवाले महादेवजी तिसको ऐसे कह और त्रिशूल से उतार हाथ फेरकर अंधकको घाव से रहितकरदिया ७५ फिर महेश्वर अपने शरीरसेब्रह्मादि देवताओं को बुलाते भये फिर ये सम्पूर्ण महात्मा त्रिलोचन को प्रणाम करते हुये निकसे ७६ फिर नन्दीगणोंको बुलाकर और भृंगी को तिन्हों के आगे स्थापन करके तिस भृंगीगण को दिखाते भये ७७ फिर वे सम्पूर्ण गण दानव पतिरिपुको सूखे मांसवाला और गणाधिपत्यको प्राप्तहुआ ऐसा देख महेश्वर की प्रशंसा करते भये ७८ फिर भगवान् शंभु देवताओं से मिलकर बचन कहनेलगे कि हे देवताओ! अपने अपने अधिकारों पर जावो और स्वर्ग में सुख को भोगो ७९ और इन्द्र तुम मलयपर्वत को जावो और अपना कार्य करके फिर स्वर्ग में जावो

महेश्वर ऐसे देवताओं से कहके और सम्भाषण करके विसर्जन करते भये ८० फिर पितामह को नमस्कार करके और जनार्दन भगवान् से मिल के सम्पूर्णोंका विसर्जन कर दिया ८१ ऐसे बिसर्जन किये देवता स्वर्ग को प्राप्तहुये और महेन्द्र मलयाचल में कार्यकरके स्वर्ग में गया जब इन्द्रआदि देवता चले गये ८२ तब भगवान् शिव आये हुये नन्दीगणों को यथायोग्य बिसर्जन करते भये ८३ हे नारद! फिर गण शंकर को देख के अपने अपने वाहनों पर स्थित हुये महाभोगोंवाले शुभ लोकों में प्राप्त हुये ८४ जिन लोकों में कामदुघागौ हैं और सर्व कामफलोंवाले बृक्ष हैं और अमृतबाहिनी नदी हैं और पायसकर्दम अर्थात् खीर की कीचड़वाले ह्रदहैं ऐसे लोकों में गये ८५ जब सम्पूर्ण प्रमथ अपनी अपनी गतियों में प्राप्त होगये तब महेश्वर अंधकको हस्तमें लेकर नन्दीसहित शैलको जातेभये ८६ फिर जब दोहजार वर्ष व्यतीत होगये तब हर अपने भवन को आये और गिरिपुत्री को सफ़ेदआकके पुष्प में स्थित देखतेभये ८७ फिर सर्व लक्षणसंयुक्त आतेहुये शंभुकोदेख और आकके पुष्पको छोड़ के तिन सखियों को बुलातीभई ८८ फिर जया से आदि लेकर बुलाई हुई सम्पूर्णदेवी शीघ्र आती भई और महादेवजी के दर्शन की लालसावाली सखियों से युक्त स्थित होतीभई ८९ फिर त्रिनेत्र प्रेम से गिरिजाको देख पश्चात् नन्दी और दानव से मिलते भये ९० और गिरिसुता से मिलते भये और फिर कहने लगे कि

हे देवि! मैंने यह अंधक तुम्हारा दासकिया ९१ और हे सुन्दर हासवाली! प्रणतिको प्राप्तहुआ अपनापुत्रजान फिर अंधक से कहनेलगे ९२ कि हे पुत्र! जल्दआ और यह तेरी माताहै इस के शरण में प्राप्तहो यह तेरा कल्याण करनेवालीहै ९३ महेश्वरने ऐसे कहा तो नन्दी औरअंधक और गणेश्वर अंबिका को प्राप्तहोकर चरणों को प्रणाम करते भये ९४ हे मुने! फिर अंधक भक्तिसे नम्र हुआ महापवित्र और पापों को नाशकरने वाली और श्रुति की मानीहुई ऐसी स्तुति करता भया ९५ अन्धक कहता है कि भवानी और भूत, भव्य, प्रिया और लोक धात्री और जनयित्री और स्कन्दमाता ९६ और महादेवप्रिया और धारिणी, धरिणी, बुद्धि को प्रकाश करने वाली, त्रैलोक्यमाता ९७ धरित्री, देवमाता, इज्या, श्रुति, स्मृति, दया, लज्जा, कांति, अगन्या, अमृषामति ९८ सदापावनी, दैत्यसैन्य को नाश करनेवाली, महामाया, बैजयंती, शुभा ९९ कालरात्रि, गोबिंदभगिनी, शैलराजपुत्री सर्वदेवार्चिता १०० सर्वभूत चिंता, बिद्या, सरस्वती, त्रिनयनी, महिषी इन तुम्हारे स्वरूपों को मैं प्रणाम करता हूँ १०१ और मृडानी और शरण्या जोतूहै सोतेरी शरण में मैं प्राप्तहुआहूँ (ॐनमोनमस्ते) १०२ अन्धकसे ऐसे स्तुतिकरी वह बिभावरी प्रसन्नहुई और कहनेलगी १०३ कि हे पुत्र! मैं प्रसन्नहुई तू उत्तमबर मांग ऐसे सुन भृंगीकहनेलगा १०४ कि हे पार्बति! मेरे तीनप्रकार के पापों को नष्टकरदो और हे अंबिके! तुझ में व ईश्वर

महादेवजीमें मेरी नित्यभक्तिरहै १०५ पुलस्त्यजी बोले हे मुने! हिरण्याक्ष के पुत्रके बचनको गौरी अंगीकार करतीभई १०६ और फिर वह पूजनकरताहुआ गणों का अधिप होताभया हे मुने! महेश्वरने १०७ पहले ऐसे दानव बिरूपदृष्टिसे अपनी शक्तिकरके भयका देनेवाला ऐसा भैरव करदिया १०८ हे मुने! यह हरकीर्त्ति का बढ़ानेवाला और पुण्य और पवित्र और शुभदाद्विज श्रेष्ठोंमें कीर्त्तनके योग्य १०९ और धर्म, आयु, आरोग्य धन इन्होंकोबढ़ानेवाला ऐसाउत्तमचरित्रकहाहै ११०॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांभैरवप्रादुर्भावेऽन्धकवरप्रदानं नामसप्ततितमोऽध्यायः ७०॥

---

# इकहत्तरवां अध्याय॥

नारदमुनिने पूछा कि हे ब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठ पुलस्त्यजी! मलय पर्वतमें महेंद्रने जाके जो किया और जौनसा अपनाकार्य सिद्धकिया सो वर्णन करनेके आप योग्य हो १ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! पर्वतोंमें उत्तम मलया-चलमें जो महेंद्रनेकिया तिसको सुनो २ हे तपोधन! वह लोकके हितकेवास्ते कार्यकिया है जब सुरगणोंने दानव जीतलिये तब पातालजानेके उत्साह से सिद्धोंसेव्याप्त कन्दरवाला ३ लता वितानसेछन्न महासत्त्वोंसे आकुल घोड़ोंसे गाहाहुआ ठण्डे चन्दनसे शोभित ४ माधवीके पुष्पोंसे सुगंधित ऋषिसमूहोंसे युक्त ऐसे मलयपर्वत को दानव देखते भये ५ फिर मय और तारकासुर ने

आदिलेकर युद्धसे थके दैत्य तहां शीतलछाया देखके निवास करतेभये जब वे दैत्य तहां स्थित होगये तब नासिकाको तृप्त करनेवाला ६ और गन्धसे संयुक्त ऐसा दक्षिणका बायुहौलेहौले बहताभया फिर उत्तम निवास देखके वे वहीं प्रीति करतेभये ७ और लोकपूजितदेवता गणमें बिद्वेष करतेभये इनको शंकरजानके फिर तहां मलयमें इन्द्र और देवताओंको भेजतेभये ८ फिर वह इन्द्र भी मार्गमें चलताहुआ माताको देखताभया तहां तिस की परिक्रमाकर और सुन्दर पर्बतको देख ६ फिर भोगों से संयुक्त और प्रसन्न ऐसे सम्पूर्ण दानवोंको इन्द्र देखताभया १० फिर इन्द्र सम्पूर्ण दानवोंको बुलाताभया वे भी सावधानहुये बाणोंको छोड़तेहुये सन्मुख आये फिर अद्भुत दर्शनवाला इन्द्र ११ तिनको आतेहुये देखकर बाणजालों से ऐसे आच्छादन करताभया कि जैसे बर्षासे पर्बतोंको मेघ १२ फिर इन्द्र बाणोंसे तिन मायादिकोंको आच्छादन करके और आकाशको आच्छादन करके १३ कंककी पक्षोंवाले तीव्रबाणों से पाकको मारतेभये १४ तहां दृढ़बाणोंकरके शासनाकरनेसे इन्द्र पाकशासननामको प्राप्तहुआ १५ फिर तैसेही दूसरा बाणासुरका पुत्र पुरनामा जो तीव्रबाणोंसे बिदीर्णकिया इसवास्ते पुरन्दरनामहुआ १६ इन्द्र ऐसे इन दानवोंको युद्धमें मारके फिर दानवोंकी सेनाको जीतताभया १७ और हे ब्रह्मन्! जो पातालसे सेना चलीआई सो भी जीती हे ब्रह्मन्! इसवास्ते महादेवजीने इन्द्रको मलया-

चलको भेजा १८ और क्या सुननेकी इच्छा करता है सो कह १९ ऐसे सुन नारदमुनि ने पूछा कि हे ब्रह्मन्! इन्द्रको गोत्रभित् किसवास्ते कहते हैं यह संदेह मेरे हृदयमें बर्ते है २० पुलस्त्यजी बोले हे नारद! सुन जैसे इन्द्रको मैंने गोत्रभित् कहाहै सो जब हिरण्यकशिपु को मारदिया तब यह अरिमर्दन जो कुछ करताभया सो भी श्रवणकर २१ हे नारद! जब दितिकेपुत्र नष्टहोगये तब यह कश्यपजी से कहनेलगी कि हे बिभो! आप मेरे नाथहो सो इन्द्रको मारनेवाला पुत्रदो २२ ऐसे सुन कश्यपजी कहनेलगे कि हे असितेक्षणे! जो तू देवताओंके बीसबर्ष शौच और आचारसे युक्तरहेगी तो २३ शत्रुओंका नाशकरनेवाला और त्रैलोक्यका नाथ ऐसे पुत्रको जनेगी हे प्रिये! अन्यप्रकारसे नहींजनेगी २४ ऐसे भर्त्ता से कहीहुई दिति नियममें स्थित होगई और ऋषि गर्भाधान करके उदय पर्वत में प्राप्त हुये जब मुनिश्रेष्ठ कश्यपजी चलेगये २५ तब इन्द्र दिति से प्राप्तहोकर बचन कहनेलगा कि हे माताजी! जो तू कहै तो मैं तेरी अब शुश्रूषाकरूँ २६ फिर भाविकर्म से प्रेरित देवीदिति तिसको अंगीकार करतीभई २७ फिर पुरन्दर समिधाहरणादि अर्थात् कर्म्मके लिये लकड़ी आदि के लाने की शुश्रूषा करनेलगा २८ फिर यह अपने कार्यकेवास्ते नम्र आत्मावाला रहताभया और सर्पकी तरह छिद्र देखतारहा यह तपसे युक्त अत्यन्त शुद्धिमें रहतीभई २९ फिर दशवर्षके अन्तमें यह तप-

स्विनी खुलेहुये बालोंवाली गोड़ों में शिरकोरखके सोती भई ३० फिर उस अशौचके अन्तरको इन्द्रजानके नासिकाके छिद्रसे माताके गर्भमें प्राप्तहोगया ३१ प्रवेशहोके तहां कड़ोंपर हाथधरे बड़े ऊर्ध्वमुख बालकको देखता भया ३२ और इन्द्र तिसके मुखमें मांसकीपींड़ी देखता भया ३३ फिर क्रोधयुक्त यह इन्द्र तिस मांसकी बोटी को हाथोंसे मर्दन करताभया ३४ फिर यह और भी कठिन होगई फिर वह आधी ऊपरको बढ़गई ओ आधी नीचेको ३५ और तिसते सौपोरियोंवाला वज्र होगया हे ब्रह्मन्! तिसी बज्रसे ३६ यह इन्द्र दितिके गर्भको सात प्रकारसे छेदन करताभया फिर वह बिस्तार से रोया हे नारद! फिर बुद्धिमती दितिभी ३७ इन्द्र के चेष्टितको नहीं जानतीहुई रोतेहुये पुत्रके बचनको सुनती भई ३८ फिर इन्द्र घुर्घुर बचन बोला कि हे मूढ़! रुदन मतकर ३९ ऐसे कहके फिर एकएकके सातसातटुकड़ेकर दिये वे मरुतनाम देवता उत्पन्नहुये और इन्द्रके भृत्य हुये ४० फिर माताके अपचारकरके बलबीर्यको आगे करके वे निकसे ४१ और बज्रलिये उदरसे इन्द्र भी निकसा फिर शापसे डरताहुआ इन्द्र अंजलि बांधके दितिसे कहनेलगा कि मेरा अपराध नहीं है ४२ क्योंकि ऐसीही भावी थी इसवास्ते क्रोध नहीं करना ४३ दिति कहनेलगी कि हे इन्द्र! तेरा अपराध नहीं यह ऐसाही दिष्टथा क्योंकि सम्पूर्णकालमें जिससे मैं इसव्यवस्था को प्राप्तहोगई ४४ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! दिति

ऐसे तिन बालकोंको शांत कराके इन्द्रसहित तिन्होंको भेजतीभई ४५ हे मुने! ऐसे पहले गर्भमेंस्थित भयार्त्त अपने सहोदरोंको वज्रसे भेदन करताभया इसवास्ते हे महर्षे! भगवान् इन्द्र गोत्रभित् विख्यातहुआ ४६॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांमरुदुत्पत्तौएक
सप्ततितमोऽध्यायः ७१॥

## बहत्तरवां अध्याय॥

नारदमुनिने पूछा हेभगवन्!जोदितिके पुत्र मरुतकहे सो पहले वे कौन होतेभये सो कहो और हे सत्तम! पहले मन्वन्तरमें वे कौनहुये सो भी कहो १ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! पूर्व मरुतोंकी उत्पत्ति कहूँहूँ तिसको सुनो हे मुने! स्वायम्भुवसे आदिलेकर जो मन्वन्तरहुये २ हे मुने! स्वायम्भुवमनुके प्रियव्रतनाम पुत्रहुआ तिसके त्रैलोक्य पूजित बल पुत्रहुआ तिसके सन्तान नहींहुई ३ और प्रेतगतिको प्राप्तहुआ फिर तिसकी पत्नी शोक विह्वल रोतीभई ४ फिर वह पतिसे मिलके स्थित होगई दग्ध नहींहुई और अनाथकी तरह नाथनाथ ऐसा वहुतसा विलाप करतीभई ५ फिर आकाशवाणी तिससे कहने लगी कि हे पुत्रि! मतरोवे जो तेरे उत्तम सत्यहोगा तो पतिसहित तू अग्नि को प्राप्तहो ६ यह राजपुत्री सुवेदा ऐसीआकाशवाणीकोसुन कहनेलगी कि मैं अपने आत्मा का शोच नहींकरूँहूँ मैं तो पुत्रहीन इस राजाका शोच करूँहूँ यह मन्दभाग्यहै ७ फिर आकाशवाणीहुई कि

हे दीर्घनेत्रोंवाली! तेरेविषे राजा के सात पुत्रहोंगे इस सत्य-बचन में श्रद्धाकर और अग्निपर आरूढ़ हो ८ ऐसे आकाशबाणीसे कहीहुई बाला पतिको आरोपण करके और यह पतिव्रता अग्निको प्राप्तहुई और चिं-तवन करतीहुई अग्निके शरणमें प्राप्तहुई ९ फिर एक मुहूर्त्तमें प्यारी सहित यह राजाउठा और यह कामचारी सुनाभ की पुत्री रानीसहित आकाशको चला १० हे नारद! तिसी समयमें जातेहुये राजाकीरानी रजस्वला होगई फिर यह दिव्य योगसे भार्यासहित पांच दिन आकाशमें ठहरगया ११ फिर छठे दिन इसने बिचारा कि ऋतुबन्ध करना नहीं चाहिये इसवास्ते इसकामचारी ने स्त्रीकेसाथ रमणकिया फिर इसका बीर्य आकाशसे पड़ा १२ हे तपोधन! बीर्यके छुटे फिर यह भार्यासहित दिव्यगति करके ब्रह्मलोकको जाताभया १३ फिर श्वे-तबर्ण तिस बीर्यको सप्तर्षियों की पत्नी यथेच्छ देखती भईं तिसको देखके १४ यह बिचारती भईं कि यह कमल में पड़े यौबन लिप्सासे तिसको अमृत मानतीहुईं १५ बिधिवत् स्नान करके और अपने पतियोंका पूजन करके पतियोंसे आज्ञालेकर गईं और तिसको अमृतमान क-रके पानकरतीभईं १६ फिर पीनेमात्रहीसे वे ऋषियोंकी पत्नी १७ ब्रह्मतेजसे बिहीनहोगईं फिर वे सम्पूर्णमुनि तिन दोषवालियों को त्यागते भये १८ हे मुने! फिर आकाश में ये रोतेहुये सातपुत्रों को छोड़तीभईं तिन्हों के रुदनसे स-म्पूर्णजगत् पूरितहोगया १९ फिर भगवान् ब्रह्मा तहां

भये और आकाशचारी तिन मारुतों को लेकर आज्ञा
ते भये २० वे स्वायम्भुवमन्वन्तर में आदिमरुतहुये
हे नारद! अब स्वारोचिषमरुतोंको कहताहूँ २१ स्वारो-
चिषकापुत्र श्रीमान्क्रतुध्वजहुआ तिसके अग्निके से
तेजवाले सातपुत्रहुये २२ फिर वे तपके वास्ते महामेरु
शैलको प्राप्तहुये तहां इन्द्रपदकी बांछाकरतेहुये वे
ब्रह्माकाआराधन करतेभये २३ फिर बुद्धिमान् इन्द्रभया-
तुरहोकर हे नारद! अप्सराओंमें मुख्य पूतना से वचन
कहतेभये २४ कि हे पूतने! हे विलासिनि! तू महामेरु प-
र्वतको जा सो तहां क्रतुध्वजके पुत्र तपते हैं २५ हे सुंदरि!
तिन्होंके तपमें विघ्न कर हे मानदे! जैसे कार्यकी सिद्धिहो
२६ वैसेकर तेरा कल्याणहोगा ऐसे कहीहुई यह रूप-
शालिनी पूतना जहां वे तप करतेथे तहां शीघ्रआई २७
फिर आश्रमके समीप उत्तम जलवाली नदीथी तहां ये
सम्पूर्ण भ्रातास्नान करनेकोआये २८ वहभी स्नानक-
रनेको उस नदी में तैरी तिस अप्सराको देखके इन्होंका
मन क्षुभित होगया २९ और तिन्हों का वीर्य छूटगया
तिसको ग्राहोंमें मुख्य महाशंखकी प्रिया शंखिनी जल
में विचरती हुई पानकरगई ३० फिर वे भी तपमें भ्र-
ष्टहुये पिताहीके राज्यको प्राप्तहुये वह अप्सरा इन्द्रको
प्राप्तहोकर यथार्थ वचन कहतीभई ३१ फिर बहुतकाल
में यह शंखरूपिणी ग्राहीमत्स्यबंध अर्थात् मछलियों
के पकड़नेवाले को पकड़ली ३२ फिर वह मत्स्यजीवी
तिस महाशंखीको क्रतुध्वजके पुत्रोंको निवेदन करताभ-

या ३३ फिर ये योगधारी महात्मायोगी अपने मन्दिर
में लाके फिर पुरकी बावड़ीमेंछोड़दी ३४ फिर क्रमसे ति-
सके सातबालक जन्मे जन्महोतेही यह जलचरी तो मो-
क्षको प्राप्तहोगई ३५ और वे माता पितासे रहितजलमें
बिचरतेहुये बालक दूधके वास्ते रुदन करनेलगे फिर
तहां ब्रह्माजीआये ३६ और कहनेलगे कि हे मरुतनाम
पुत्राओ ! मतरोवो औरबायुस्कन्धके जाननेवालेतुमदेव-
ताहोजाओ ३७ ऐसे कहके और ब्रह्मा तिन सम्पूर्णों
को लेकर और देवताओंकेप्रति मरुन्मार्गमें योजनव
रके वैराज भवनमें गये ३८ स्वारोचिष मन्वन्तर में ऐ
मरुतहोतेभये हे तपोधन! अब औत्तम मन्वंतरके मरुतां
को सुन ३९ औत्तमका निषधोंका अधिप बपुष्मान् वि-
ख्यातराजाहुआ सो शरीरसे सूर्यकेसे कांतिवालाहुआ
४० तिसके गुणोंमें ज्येष्ठ और धर्मात्माज्योतिष्मान् नाम
पुत्रहुआ सो पुत्रकेवास्ते मन्दाकिनीनदीमें तपकरता
भया ४१ और देवाचार्यकी पुत्री तिसकीभार्या तपकरते
हुयेकी टहलकरतीभई ४२ सो फल, पुष्प, जल, समिध,
कुश ये आपही लातीभई और यह कमलकेसे नेत्रोंवाली
अभ्यागतोंका पूजनभी करतीभई ४३ पतिकी शुश्रूषा
करते यह अत्यन्त दुबलीहोगई औरतिसकीनसेंदीखने
लगगईं ४४ ऐसी यह सुन्दर अंगवाली बनमें सप्तर्षि-
योंने देखा ४५ फिर सप्तर्षि तिसका और तिसकेपतिके
तपकाहेतु पूँछतेभये ४६ सो कहनेलगी कि महाराज
सन्तानके वास्ते यह तपहै ४७ फिर हे ब्रह्मन् ! तिन्होंने

वरदिया जाओ तुम्हारे सातपुत्र होवेंगे और तुम्हारेही गुणोंसे युक्तहोवेंगे ४८ ऐसे कहके वे सम्पूर्ण महर्षि चलेगये और वह ज्योतिष्मान् राजर्षिभी भार्यासहित अपने नगरमें गया ४९ फिर जब बहुतकाल व्यतीत होगया तब यह तन्वंगी राजासे गर्भको प्राप्तहोतीभई ५० जब यह गर्भवतीहोगई तब यह राजा मरगया तब यह पतिव्रता सती होनेलगी ५१ तब मंत्रियोंने निवारणकरी परन्तु नहींमानतीभई चितामें भर्त्ताको आरोपणकरके आपभी बैठतीभई ५२ फिर हे मुने! अग्निके मध्यसे मांसकी बोटी निकसी तिसपर जोठंढाजलगेरा तो उसके सातटुकड़ेहोगये ५३ फिर वे सातों औत्तम मन्वन्तरमें मरुतहुये हे मुने! अब तामस मन्वन्तरके मरुतोंको कहताहूँ ५४ इन्होंको नृत्य,गीत,कलायें प्रियहोतीभईं तामसमनुकापुत्र ऋतध्वजहुआ सो पुत्रकेवास्ते अपने मांस और रुधिरको अग्निमें होमताभया ५५ फिर अस्थि, रोम, केश, स्नायु, मज्जा, त्वचा आदि वीर्य ५६ इन्होंकोभी होमनेलगा ऐसेसुनाहै ५७ और वीर्यके गेरनेपश्चात् अग्निसे ऐसाशब्दहुआ हे राजन्! मतगेरे ५८ और तिसके अनन्तर तिसीकेसे तेजवाले सातबालकनिकसे और रुदनकरनेलगे ५९ ब्रह्माजी ध्वनि सुनके आये और निवारणकरके मरुतबनालिये हे ब्रह्मन्! येही मरुनतामें देवतागण हुये ६० अब रैवतके मरुतों को कहताहूँ रैवतकापुत्र राजाविप्रजितहुआ जब तिसके संतति नहीं हुई ६१ तब सूर्य के आराधन से सुरमी

कन्याप्राप्तहुई उसकोलेके घरमें आया ६२ उसके बसते हुये तिसकापिता मरगया तब यह दुःखितहोके शरीरको त्यागनेलगी ६३ तब सप्तर्षियोंने बरदिया फिरयह जलती हुई अग्निसे पीड़ितभई ६४ फिर जब मरगई तब ऋषि कष्ट कष्ट कहतेभये ६५ और ज्वलित अग्निसे सात मनुष्यनिकसे फिर वेभी माताबिना रोये ६६ और ब्रह्माने आके निवारणकरे फिर रैवतमन्वन्तरमें ये मरुत बनालिये ६७ अब चाक्षुषके मरुतोंको सुनो इसमन्वंतरमें एक मंकीनामऋषिहुआ ६८ सो सप्तसारस्वत तीर्थमें तीव्रतपकरनेलगा तुषितदेवता तिसके तपके बिघ्न में बधूको भेजतेभये सो नदी तीर बिषे जाके क्षोभकरानेलगी ६९ तब मंकीकाबीर्य जलमेंछुटगया फिर तिस मूढ़ाको ऋषिनेशापदेदिया ७० हे मूढ़े! जा और इसशाप का महाफलभोग और यज्ञसभामें तुझको अश्वबिध्वंस करेगा ७१ ऋषि ऐसे शापदेके अपने आश्रमको चले गये फिर सातसरस्वतियोंसे सातमरुतहोगये ७२ ऐसे ये मरुतकहेहैं इनके सुननेसे पापोंकीहानि और मोक्ष प्राप्त होती है ७३॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांमरुदुत्पत्तिर्नामद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२॥

## तिहत्तरवां अध्याय॥

पुलस्त्यजी बोले हे मुने! इस वास्ते बलि को राजा

किया प्रह्लादकोमंत्रीकिया शुक्रकोपुरोहितकिया १ फिर राजसिंहासनपै प्राप्तहुये बिरोचनके पुत्र बलिदैत्यको जानकेदेखनके वास्ते देवतेआये २ आयेहुये तिन्होंको जानके क्रमसे पूजनकिया और अपनेकुलसे उपजे दैत्यों से बलिराजा पूँछताभया कि मुझको क्या कल्याणकारी है ३ फिर येसम्पूर्ण कहनेलगे कि हे असुरसुन्दर! जो कर्म आपको कल्याणकारीहै सोही हमारा हितकारीहै ४ तेरा पितामह हिरण्यकशिपु बड़ाशूरबीरहुआ तीनोंलोकोंमें समर्थहुआ ५ तिसको सिंहरूपधारणकिये विष्णुदानवों के प्रत्यक्ष नखों से फाड़तेभये ६ और शंकर ने महात्मा अंधकका राज्य लेलिया ७ और तेरे पितृव्य जंभ को इन्द्र ने मारदिया और कुजम्भ को विष्णु ने मार दिया ८ और शंख, पाक ये दोनों तेरे भ्रातों को इन्द्रने मारदिया और आपके पिता विरोचनको भी मारदिया हे ब्रह्मन्! इन्द्र करके ऐसे गोत्रके क्षयको सुनके सम्पूर्ण दानवों करके उद्योग करताभया ९ और रथ, हस्ती, घोड़े, पदाति देवताओंके युद्धके वास्ते निकसे १० फिर सेनाकानाथ मयदैत्य आगेहुआ और सेनाकेमध्य में बलि और अन्तमें कालनेमि ११ और वामपार्श्वमें शाल्व और दहनेतरफ तारकासुर १२ ऐसे दानवोंकी हजारहां अर्बुदसेना देवताओंसे युद्धकेवास्ते चली फिर देवपतिइन्द्र असुरोंका उद्योग सुनके देवताओंसे बोला कि दैत्योंसे युद्धकरो १३ इन्द्र ऐसे वचन कहके सारथि और अश्वों से युक्त हुये रथपर चढ़ फिर देवताग॰

भी १४ अपनेअपने वाहनोंपर सवारहोके युद्धकी वाञ्छा करते निकसे १५ और आदित्य और बसु और रुद्र और साध्य और बिश्वेदेवा और अश्विनीकुमार और बिद्याधर और गुह्यक और यक्ष और राक्षस और पन्नग १६ और राजर्षि, तपस्वी, सिद्ध,नानाप्रकारके भूत ये सम्पूर्ण गज और अश्व और रथ १७ और पक्षि, बाह्य बिमान इन्होंपर सवारहोके दैत्योंकी सेनाको गये १८ इसी कालमें गरुड़ प्राप्तहुआ तिसपर बिष्णु चढ़ कर चले १९ फिर त्रिलोकपति बिष्णुको आयेहुये जान इन्द्र देवताओं सहित मस्तकसे प्रणाम करताभया २० फिर गदालेके सेनाके आगे स्वामिकार्त्तिक हुआ और जघनोंमें बिष्णु और मध्यमें इन्द्र २१ हे मुने! बाईंतरफ जयन्त और दहनी तरफ बरुण इन्होंसे रक्षित २२ देवताओंकी सेना फिर सम्पूर्ण शस्त्रअस्त्र लेकर उदयाचलके उत्तम देशमें देवतों और असुरोंकी सेना इकट्ठी हुई २३ फिर गर्दसे आकाशमें मेघकी तरह घटा होगई और तुमुलयुद्ध होनेलगा कुछनहीं जानपड़ा और चारों तरफ मारो काटो २४। २५ ऐसा शब्द सुनने में आता भया फिर दैत्य और देवताओंका घोर युद्ध हुआ फिर रक्तसे धूली शान्त होगई पीछे जबधूली शान्त होगई २६ तब देवते दैत्योंकी सेनाके सन्मुख दौड़तेभये स्वामिकार्त्तिकजीकी सहायतासे कुमारकी भुजाओं से पालित हुये देवते दानवोंको मारतेभये २७.और मयसे रक्षित हुये दैत्य देवताओंको मारतेभये फिर अमृत के बिना

देवतोंको सेनासहित दैत्योंने जीतलिये २८ फिर शत्रुहा विष्णु भगवान् पराजित किये देवताओंको देख और शार्ङ्ग धनुषको लेकर बाणोंके समूहोंसे जहां तहां दैत्यों को मारतेभये २९ फिर बाणोंसे बींधेहुये वे दैत्य महासुर कालनेमिके शरणगये ३० फिर तिन दैत्योंको अभय देकर यह ऐसे बढ़ा जैसे चिकित्सासे त्यागाहुआ रोग ३१ फिर जिस जिस देव, यक्ष, किन्नरको हाथ से यह छुवताभया तिसीको मुखमें गेरताभया ३२ फिर क्रोध से अत्यन्त भयानकरूप धारण किया ३३ फिर गंधर्व और साध्य तिस रिपुको बढ़ाहुआ देखकर भय से चकितहुये सम्पूर्ण दिशाओंको भागतेभये ३४ फिर विष्णु बाणोंकी बर्षासे तिन्होंको आच्छादन करताभया फिर ये भयभीत हुये सब दिशाओं में भागनेलगे ३५ पीछे सब दैत्य सुन्दर मस्तकवाले और देवताओं से परिवृत ऐसे विष्णुको अनेक प्रकारके शस्त्रों से काटने लगे ३६ तब मय, बलि, कालनेमि इन आदि दैत्योंको देख पीछे शार्ङ्ग धनुषपर वज्रके समान बाणोंको चढ़ाय ३७ कोप से लालनेत्रोंवाले विष्णु रथ,हाथी, घोड़े इन सबों को आच्छादित करतेभये जैसे पर्वतोंको मेघ ३८ तब कालदंडके समान प्रकाशवाले और विष्णुके हाथसे मुक्तहुये और अर्द्धचन्द्र संज्ञक ऐसे बाणोंसे बलि, मय इनआदि दैत्य आच्छादित हुये भागनेलगे ३९ पीछे प्रारम्भ में ही शतवदन नामवाले दानवेंद्र का कालनेमि प्रेरता भया तब वह दैत्य अमित बलवान् और समर्थ और

लोकनाथ ऐसे बिष्णुके समीप आया ४० तब गदाका उठानेवाला और पर्वतके समान शृंगवाला ऐसा शतशीर्ष दैत्य को देखकर बेगसे बिष्णु धनुष को त्यागकर चक्रको हाथमें ग्रहण करते भये ४१ तब अतिछेदन करनेवाले और मानी ऐसे बिष्णुको वह दैत्य देखकर और हँसकर कहनेलगा ४२ कि मेरे पुत्रकी सेना को और मेरे बलको कौन शत्रु एकबारभी सहसक्ताहै ४३ और मेरी दृष्टि के आगे जो खल स्थितथा वह अब कहां गया और जो मेरे सन्मुख दौड़ा था तिसको अभी मैं तिसी के स्थानमें प्राप्तकरूं ४४ पीछे बिष्णुके मुक्केसे शिथिल अंग और शिरवाला और कातर नेत्रोंवाला ऐसा दैत्य देखनेलगा ४५ ऐसे कहकर स्फुरित ओष्ठोंवाला कालनेमि दैत्य क्रोधको प्राप्तहो गरुड़जीके ऊपर गदा को छोड़ताभया जैसे पर्वतपर इन्द्रबज्रको ४६ तब तिस आवती हुई गदाको बिष्णु अपने चक्रसे काटते भये पीछे दोनों भुजाओंको काटते भये ४७ जब दोनों भुजा कटगये तब उग्रपर्वतके समान प्रकाशवाला कालनेमि दीखता भया ४८ पीछे क्रोधसे बिष्णु चक्रकरके कालनेमि के शिरको काट पृथ्वीमें ४९ गिराताभया जैसे पकाहुआ ताड़का फल ५० पीछे बाहु और शिर से रहित कालनेमि मेरुपर्वतकी तरह कबंध स्थितहुआ ५१ तब तिसको गरुड़जी अपनी छातीकी झपटसे पृथ्वी में गिराते भये जैसे आकाश से राहु का शिर ५२ ऐसे जब कालनेमि मरगया तब देवताओं से पीडित किये दैत्य

वाणासुरके बिना शस्त्र और वस्त्र आदिको त्यागकर सब दैत्य भागते भये ५३ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांवामनप्रादुर्भावेकालनेमि वधोनामत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

---

## चौहत्तरवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! जब बाणासुर युद्ध करने को उद्यत हुआ तब सब दैत्य वेगसे फिर युद्ध करनेको देवतोंकी सेनाके समीप आतेभये १ तब अमित तेज वाले विष्णु अजेयरूपी बाणासुरको जान सब देवताओं को बुलाके कहनेलगे कि हे देवताओ ! संतापको त्यागके युद्धकरो २ विष्णुसे आज्ञापितकिये इन्द्र आदिदेवते दैत्यों के संग युद्धकरनेलगे और बिष्णु अंतर्हितहोगये ३ अंतर्हितहुये विष्णुकोजान शुक्राचार्य बलिसे बोले कि हे बले! बिष्णुने देवतेत्यागदिये हैं अब तू जयको प्राप्तहो ४ तब शुक्रके वाक्यसे तेजवालाबलि गदाको ग्रहणकर देवताओं की सेना के सन्मुखगया ५ पीछे वाण, शस्त्र प्रहार न्होंको ग्रहणकर देवताओंकीसेना में हजारहों को मारताभया ६ और अनेक प्रकारके रूपोंकरकेमयभी माया ो प्राप्तहोकर देवताओंकी सेनासे युद्धकरताभया और ायुजिह्व, पारिभद्र, वृषपर्वा, शतेक्षण, विपाक, विधुर, न्य ये भी देवताओं के सन्मुखदौड़नेलगे ७ तब दैत्यों हनहुये इन्द्रआदिदेवते विशेष करके विमुख होतेभये और प्रभग्नहुये देवतों के पृष्ठमें त्रिलोकीको जीतने

की इच्छा करनेवाले बलि, बाणआदि दैत्यदौड़े ९ और दैत्योंकरके संसाध्यमान और भय से पीड़ित ऐसे इन्द्र आदि देवते स्वर्गकोत्याग ब्रह्मलोकको गये १० जबइन्द्र आदि देवते ब्रह्मलोकमेंगये तब पुत्र, भ्राता, बांधव इन्हों सहित बलिराजा स्वर्गको भोगनेलगा और हे ब्रह्मन्! बलि राजा तो इन्द्रबना और बाणासुर यम होताभया और मय बरुण होताभया और राहु चन्द्रमा होताभया और ह्लाद दैत्य अग्नी होताभया ११ और केतु सूर्य होताभया और शुक्राचार्य बृहस्पति होताभया और भी सब देवताओंकी जगह दैत्य स्थित होते भये १२ और द्वापरके अंतमें और पांचवां कलियुगकी आदिमें देवासुर युद्धहुआ जहां बलि इन्द्र होताभया १३ और सातपाताल और भूलोक भुवःलोक स्वर्लोक इन दशलोकों का स्वामी बलिराजा हुआ १४ और दुर्लभ भोगों को भोगता हुआ आप स्वर्ग में बसनेलगा तहां बिश्वावसु आदि गंधर्ब तिसकी उपासना करनेलगे १५ और तिलोत्तमा आदि अप्सरा नृत्यकरनेलगीं और यक्ष, बिद्याधर आदि बाजोंको बजानेलगे १६ पीछे अनेक प्रकारके भोगोंको भोगताहुआ बलिराजा अपने पितामह प्रह्लाद का स्मरण करता भया १७ पौत्रकरके स्मृत किया प्रह्लाद पाताल से स्वर्ग में जल्द प्राप्त होता भया १८ आवते हुये प्रह्लादको देख बलिराजा सिंहासन को त्याग और अंजलिबांध दोनों चरणों में प्रणाम करता भया १९ पैरों में पतितहुये बलिराजा को उठाके और

मिलके प्रह्लाद परमआसनपै स्थितहुआ २० तिससे बलि कहनेलगा हे तात! आपके प्रसादसे मैंने देवते जीतेहैं और बीर्यवाले इन्द्रका मैंने राज्यभी छीनलिया है २१ सो हे तात! मेरे बीर्य से अर्जित किये त्रिलोकीके राज्यको तू भोग और मैं आपके आगे भृत्यरूप अर्थात् सेवक स्थितहूँ २२ और हे तात! इसी कर्म से मैं पुण्य वाला होजाऊँगा और आपके चरणोंकी पूजामें रत रहूँगा और आपके उच्छिष्ट अन्नका भोजन करूँगा २३ हे सत्तम! राज्यकी पालना करनेमें जो धीरजता नहीं होती सो गुरुओंकी शुश्रूषा करनेमें होतीहै २४ हे द्विजोत्तम! ऐसे बलिके बचनको सुन प्रह्लाद धर्म, काम, अर्थ साधन रूपी वचनको कहनेलगा २५ हे बले! पहले मैंने अकंटक राज्यकिया व पृथिवी शिक्षितकी और मित्रोंकी पूजाकरी दान और यज्ञकरे पुत्रोंकी उत्पत्तिकरी अत्र योगसाधक रूपीहुआ मैं स्थितहूँ २६ हे पुत्र! विधिपूर्वक मैंने जो तेरे प्रतिकहा तिसको ग्रहणकर और गुरुओं की शुश्रूषा में सबकाल तत्पररह २७ ऐसे कहकर दहिने हाथसे बलि राजाको ग्रहणकर इन्द्रके सिंहासनपै बैठाता भया २८ पीछे सब रत्नों से जटितरूपी सिंहासनपै स्थितहुआ बलिराजा इन्द्रकी तरह शोभित हुआ पीछे अंजली बांधके बलिराजा मेघ गम्भीररूप वाणीसे प्रह्लाद के सन्मुख कहनेलगा २९ हे तात! त्रिलोकीकी रक्षाकरनेवाले आप धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन्होंके लिये जो कर्त्तव्य है सो मुझको उपदेश करो ३० तिस वाक्यको शुक्राचार्य

की इच्छा करनेवाले बलि, बाणआदि दैत्यदौड़े ९ और दैत्योंकरके संसाध्यमान और भय से पीड़ित ऐसे इन्द्र आदि देवते स्वर्गकोत्याग ब्रह्मलोकको गये १० जबइन्द्र आदि देवते ब्रह्मलोकमेंगये तब पुत्र, भ्राता, बांधव इन्हीं सहित बलिराजा स्वर्गको भोगनेलगा और हे ब्रह्मन्! बलि राजा तो इन्द्रबना और बाणासुर यम होताभया और मय वरुण होताभया और राहु चन्द्रमा होताभया और ह्लाद दैत्य अग्नी होताभया ११ और केतु सूर्य होताभया और शुक्राचार्य बृहस्पति होताभया और भी सब देवताओंकी जगह दैत्य स्थित होते भये १२ और द्वापरके अंतमें और पांचवां कलियुगकी आदिमें देवासुर युद्धहुआ जहां बलि इन्द्र होताभया १३ और सातपाताल और भूलोक भुवःलोक स्वर्लोक इन दशलोकों का स्वामी बलिराजा हुआ १४ और दुर्लभ भोगों को भोगता हुआ आप स्वर्ग में बसनेलगा तहां विश्वावसु आदि गंधर्व तिसकी उपासना करनेलगे १५ और तिलोत्तमा आदि अप्सरा नृत्यकरनेलगीं और यक्ष, विद्याधर आदि वाजोंको बजानेलगे १६ पीछे अनेक प्रकारके भोगोंको भोगताहुआ बलिराजा अपने पितामह प्रह्लाद का स्मरण करता भया १७ पौत्रकरके स्मृत किया प्रह्लाद पाताल से स्वर्ग में जल्द प्राप्त होता भया १८ आवते हुये प्रह्लादको देख बलिराजा सिंहासन को त्याग और अंजलिबांध दोनों चरणों में प्रणाम करता भया १९ पैरों में पतितहुये बलिराजा को उठाके और

मिलके प्रह्लाद परमआसनपै स्थितहुआ २० तिससे बलि कहनेलगा हे तात! आपके प्रसादसे मैंने देवते जीतेहैं और बीर्यवाले इन्द्रका मैंने राज्यभी छीनलिया है २१ सो हे तात! मेरे बीर्य से अर्जित किये त्रिलोकीके राज्यको तू भोग और मैं आपके आगे भृत्यरूप अर्थात् सेवक स्थितहूँ २२ और हे तात! इसी कर्म से मैं पुण्य वाला होजाऊँगा और आपके चरणोंकी पूजामें रत रहूँगा और आपके उच्छिष्ट अन्नका भोजन करूँगा २३ हे सत्तम! राज्यकी पालना करनेमें जो धीरजता नहीं होती सो गुरुओंकी शुश्रूषा करनेमें होतीहै २४ हे द्विजोत्तम! ऐसे बलिके बचनको सुन प्रह्लाद धर्म, काम, अर्थ साधन रूपी बचनको कहनेलगा २५ हे बले! पहले मैंने अकंटक राज्यकिया व पृथिवी शिक्षितकी और मित्रोंकी पूजाकरी दान और यज्ञकरे पुत्रोंकी उत्पत्तिकरी अब योगसाधक रूपीहुआ मैं स्थितहूँ २६ हे पुत्र! बिधिपूर्वक मैंने जो तेरे प्रतिकहा तिसको ग्रहणकर और गुरुओं की शुश्रूषा में सबकाल तत्पररह २७ ऐसे कहकर दहिने हाथसे बलि राजाको ग्रहणकर इन्द्रके सिंहासनपै बैठाता भया २८ पीछे सब रत्नों से जटितरूपी सिंहासनपै स्थितहुआ बलिराजा इन्द्रकी तरह शोभित हुआ पीछे अंजली बांधके बलिराजा मेघ गम्भीररूप बाणीसे प्रह्लाद के सन्मुख कहनेलगा २९ हे तात! त्रिलोकीकी रक्षाकरनेवाले आप धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन्होंके लिये जो कर्त्तव्य है सो मुझको उपदेश करो ३० तिस वाक्यको शुक्राचार्य

सुन प्रह्लादसे बोले कि हे महाबाहो! बलिराजाके लिये उत्तर बर्णनकरो ३१ तब बलि शुक्राचार्य के बचनको सुन महाभागवत भक्त प्रह्लाद उत्तम बचनको कहता भया ३२ कि हे राजन्! अब भुवनके हितरूपी और धर्मका अबिरोध करके द्रव्य का संचय करना उचित है ३३ और सब प्राणियों पै दया और अर्थ, फल, काम और इस लोकमें और परलोकमें कल्याणकारी ऐसे कर्मका हे पुत्र! आचरण कर ३४ और जैसे सत्पुरुषों में तू श्लाघाके योग्यहो और जैसे तेरी कीर्त्तिहो और जैसे तू बुरेयशसे युक्त नहींहो तैसे हे महामते! कर ३५ और इसीवास्ते पुरुषोत्तम इस दीप्तरूप लक्ष्मीकी कामना करते हैं जिसकरके हमारे स्थानपै निर्वृतहुये प्राणी बसते हैं ३६ और कुलमें उत्पन्न हुआ और व्यसनमें मग्न हुआ ऐसे मित्रके कार्य्य में उपकार करना और बृद्ध, ज्ञाति, पुरुष, गुणी, बिप्र इन्हों बिषे अनेक प्रकारका उपकार करके यशको प्राप्तकर ३७ और जिससे हे पुत्र! राज्यमें स्थितहुये तेरे स्थानपै पूर्वोक्त सब पुरुष दुःखि नहीं होसकें तैसा तू यत्नकर तिसकरके तू लोकमें यशस्वी होगा ३८ और ब्राह्मणों से भूषित और क्षत्रियों से आवृत और बैश्योंसे अधिक और शूद्रोंसे संयुक्त ऐसी पृथ्वी में बृद्धिको प्राप्तहो ३९ और जिस कारण से शास्त्रयुक्त ब्राह्मण तुझको यज्ञकरावें ऐसा यत्नकर यज्ञकी अग्निके धुआंकरके राजाको शांति रहती ४० और तप, अध्ययन इन्होंसे सम्पन्न और अध्यापन

में रत ऐसे विप्रहोजावें और सबकालमें तू तिन्हों को पूजातरह ४१ और तेरी आज्ञामें स्वाध्याय और यज्ञमें रत और दाता और शस्त्रों की जीविकावाले और प्रजापालन धर्मवाले ऐसे क्षत्रियहोजावें ४२ और यज्ञ, अध्ययन इन्होंमें सम्पन्न और दाता और कृषिकरनेवाले और पशुओंको पालनेवाले और दुकानोंकी आजीविका करनेवाले ऐसे वैश्य होजावें ४३ और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इन्होंकी शुश्रूषामें रत और तेरी आज्ञाको करने वाले ऐसे शूद्रहोजावें ४४ हे दितिजेश्वर! जब ऐसे स्व-धर्मोंमें स्थित सबवर्ण रहेंगे तभी धर्मकीवृद्धि होवेगी और उसी धर्मकी वृद्धिमें नृपआदि वृद्धिको प्राप्तहोंगे ४५ इस वास्ते अपनेअपने धर्मोंमें स्थित सबवर्ण करने चाहियें क्योंकि धर्मकी वृद्धिमें तेरीवृद्धिहै और धर्महीकी हानि में तेरीहानिहै ४६ ऐसे प्रह्लाद दैत्य बलिराजाको वचन सुनाके मौनको धारण करताभया ४७ पीछे बलिराजा कहनेलगा हे पितामह! जो आप आज्ञादेतेहैं वह सब मैं करूँगा ४८ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांवामनप्रादुर्भावे चतुस्सप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

---

## पचहत्तरवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! जब नरसिंहजी ब्रह्मलोक को चलेगये तब बलिराजा धर्मसे युक्तहुआ त्रिलो-कीकी पालना करताभया १ तब सतयुगकीतरह धर्म

से युक्त जगत्को कलियुग देखके अपने स्वभावके नि-
षेवणमें ब्रह्माजीकी शरण जाताभया २ फिर तहां इन्द्र
और देवताओं से युक्त व अपनी दीप्तीसे देवते और
दैत्योंके स्थानोंको प्रकाशित करते ३ ऐसे ब्रह्माजी को
देखकर तिस ईश्वर ब्रह्माजी को कलियुग प्रणामकरके
यह कहताभया कि हे देव! मेरेस्वभावको बलिराजा ने
नाशकरदिया ४ फिर जगतों के योगी ब्रह्माजी कलि-
युग से कहनेलगे कि तिस बलिराजाने केवल तेराही
स्वभाव नहींजीताहै किंतु जगतोंका स्वभाव जीतलिया
है ५ सो हे कलियुग! तू इन्द्रकोदेख और बरुणकोदेख
और बायुकोदेख और बलवाले बलिसे सूर्य भी दीनता
को प्राप्त होरहाहै ६ सो तिसके कर्मका प्रतिषेध करने
वाला एकहज़ार शिरोंवाले और हज़ार पैरोंवाले हरि
भगवान् के बिना त्रिलोकी में कोई नहीं है ७ सो वे
अबिनाशी हरिभगवान् पृथ्वीलोक, पाताल, स्वर्ग इन्हीं
को और राज्य को और लक्ष्मी को तिस बलिराजा के
पाससे श्रेष्ठधर्म होनेकेवास्ते हरेंगे ८ ऐसे ब्रह्माजी से
कहाहुआ वह कलियुग इन्द्रआदिकों को प्रणाम करके
बिभीतक बनमें चलागया ९ फिर त्रिलोकी में कलियुग
नहींरहा और सतयुग प्रवर्त्तहोगया सो हे नारद! चारों
वर्णोंमें चतुष्पाद धर्म होगया १० और तप और अ-
हिंसा, सत्य, शौच, इन्द्रियनिग्रह, दया, दान, अक्रूरपना,
शुश्रूषा, यज्ञकर्म ११ ये सब बस्तु जगत्में व्याप्य
होके स्थित होतीभई सो हे ब्रह्मन्! बलवाले बलिराजा

ने कलियुग को भीसतयुग करदिया १२ और चारोवर्ण अपने अपने धर्म में स्थितहोतेभये और ब्राह्मण आश्रमों में प्रवेश होतेभये १३ और सदा प्रजा की पालनाकरने में तत्पर राजे होतेभये और त्रिलोकी में अत्यन्त धर्म प्रवृत्त होताभया और त्रिलोकी की लक्ष्मी अपने रूप को धारण कर दातृत्वशक्तिके वास्ते दानवों का ईश्वर ऐसे बलिके पास आती भई १४ फिर तिस आती हुई इन्द्र की लक्ष्मी को बलिराजा देख के पूछताभया कि तू कौन है और किसवास्ते आई है सो मुझ से कह १५ फिर पद्मोंकी मालावाली वह लक्ष्मी तिसके वचन सुन के बोली कि हे बलिराजा! तू सुन मैं बलसे आके तेरीरानी हुईहूं १६ और जो अप्रमेय बलवाला गदाधर देव है तिसने इन्द्रको त्यागदिया तब मैं यहां तेरे पास आईहूं १७ और तिस इन्द्रके चाररूपोंवाली चार स्त्री हैं सो एक तो सफ़ेद वस्त्रोंको धारण करनेवाली और सफ़ेद माला और चन्दनको धारण करनेवाली १८ और सफ़ेद वर्ण के हाथी पै आरूढ़ होनेवाली और सतोगुण से युक्त औरसफ़ेद शरीरवालीहै और दूसरी रक्त वस्त्रोंको धारण करनेवाली और रक्तचन्दन और मालाको धारण करने वाली १९ और रक्त अश्वपै चढ़ीहुई और रक्त अंगवाली और रजोगुणसे युक्तहै और तीसरी पीले वस्त्रोंको धारण करनेवाली और पीले वर्णवाली और पीलीमाला और चन्दनको धारण करनेवाली २० और सुवर्ण के रथमें बैठीहुई और तमोगुणसे युक्त ऐसीहै और चौथी नीले

बस्त्रों को धारण करनेवाली और नीली माला और चं-
दन को धारण करनेवाली २१ और नीले बैल पै चढ़ी
हुई ऐसी वे तीनों गुणों से युक्तहैं सो जोकि वह सफ़ेद
बस्त्रोंको धारण किये और सफ़ेद हाथी की असवारी किये
है २२ वह ब्राह्मणों को प्राप्त होगई और चन्द्रमा को
प्राप्त होगई और चन्द्रानुग अर्थात् तारागण आदिकों
को प्राप्त होगई और जो रक्त बर्ण और रक्तबस्त्रोंवाली है
और रक्त अश्वपै चढ़ीहुई और रजोगुण से युक्त है २३
उसको बिष्णु भगवान् मनुके लिये और मनु के पुत्रों के
लिये देते भये और इन्द्र के लिये देतेभये और जो पीले
बस्त्रोंवाली और सुबर्ण के रथ की असवारीवाली ऐसी
है २४ तिस को बिष्णुभगवान् प्रजापतियों के लिये देते
भये और बैश्योंके लिये देतेभये और जो नीले बस्त्रोंवा-
ली और अग्निके सदृश ऐसी चौथी बैलकी असवारी
वाली है २५ वह दैत्योंको प्राप्त होतीभई और राक्षस,
शूद्र, बिद्याधर इन्होंको प्राप्त होतीभई फिर ब्राह्मण आ-
दि तिस सफ़ेद बर्णवाली लक्ष्मी को सरस्वती कहते हैं
२६ और ब्राह्मणोंके संग यज्ञके मंत्रों करके सदा स्तुति
करते हैं और तिस रक्त बर्णवाली को सब क्षत्रिय जय श्री
कहते हैं २७ और हे असुरों में श्रेष्ठ बलिराजा! तिसीको
इन्द्र और मनु यशस्विनी कहते हैं २८ और बैश्यजन
तिस पीले बस्त्रोंवाली को और सुबर्ण सरीखे अंगोंवाली
को लक्ष्मी ऐसे कहके स्तुति करते हैं और वह प्रजाकी
पालना करतीहै और शूद्र तिस नील बर्णवाली को २९

भक्तिकरके दैत्योंके संग श्रियादेवी ऐसे नामकरके स्तुति करतेहैं इसप्रकार तिस विष्णुभगवान्ने वे सब स्त्रियों कोबांटादियाहै ३० सो इनस्त्रियोंके स्वरूपोंमेंस्थित अवि-नाशी खजानेहोरहेहैं और इतिहास, पुराण, वेद, वेदांग ३१और चौंसठकला ये सब सफ़ेद वर्णवाली लक्ष्मी के आश्रयहैं और महापद्मनामवाला खजानाभी तिसीके आश्रयहै ३२ और मोती सुवर्ण चांदी और सबप्रकार के आभूषण और अनेकप्रकारके शस्त्र और वस्त्र ये सब रक्तवर्णवाली के आश्रय हैं ३३ और महापद्मनामवाला खजानाभी इसी के आश्रय है और गाय, महिषी, गधा, ऊँट, श्रेष्ठजगहकी पृथ्वी ३४ ओषधी, पशु ये सब पीत वर्णवाली लक्ष्मीके आश्रयहैं और महानीलनामवाला खजानाभी इसीके आश्रय है और सबकी जातियोंको एकहीजाति प्रतिष्ठित करनेवालीहै ३५ और अन्य जा-तियोंको हननकरनेको नीलवर्णवाली लक्ष्मीहै और इसी के आश्रय शंखनामवाला खजाना है ३६ सो हे दानव! इसप्रकार ये सब संस्थित हैं और अन्य पुरुषों के जो जो रूपहैं उन्होंको मैं कहती हूं सुन सत्य, शौचमें युक्तहों और यज्ञ,दान इन्होंके उत्सवमें रतहों ३७ ऐसे मनुष्योंको महापद्मालक्ष्मीके आश्रय जानना और यज्ञ करनेवालेहों और श्रेष्ठकर्म करनेवालेहों और प्रसन्नरहते हों और मानवालेहों और बहुत दक्षिणा देनेवालेहों ३८ और सबके सन्मान करने से सुखी होवें ऐसे मनुष्य पद्मानामवाली लक्ष्मीके आश्रय होतेहैं और सत्य, श्रुत

इन्होंमें युक्तहोवें और अनेकप्रकार के सुबर्णकी दक्षिणा देनेवाले हों ३९ और न्याय और अन्याय के खर्च करने में युक्तहोवें ऐसे मनुष्य महानीला नामवाली लक्ष्मी के आश्रय हैं और नास्तिकहों शौचसे रहित, कृपण भोगसे बर्जित ४० और चोरीकरने में और झूठबोलने में तत्पर होवें ऐसे मनुष्य शंखानामवाली लक्ष्मीके आश्रय होते हैं सो हे दानव! बलिराजा ऐसे तिन्हों के प्रकार आप के आगे मैंने सब कहा है ४१ सो मैं वह रागिनी नामवाली और जयश्री नामवाली तुझको प्राप्तहुईहूं और हे दानवपते! तेरेबिषे श्रेष्ठमानी हुई प्रतिज्ञाहै ४२ और शूरबीरतासे युक्तहुये तुझको मैं प्राप्तहुईहूं और मैं नपुंसकको कदाचित् प्राप्त नहीं होतीहूं और बलसेयुक्तहुआ त्रिलोकीमें कोई भी नहीं है ४३ और तुझे बलकी बिभूति करके मेरे प्रीति उत्पन्नहुई है और जो तुझने युद्ध में देवराज इन्द्रको हरा दिया है ४४ इसवास्ते मुझको निरन्तर प्रीति उत्पन्न हुईहै और देवताओंसेभी अधिक बलवाला ४५ और परमसत्त्ववाला और चतुर और मानवाला और शूरवीर ऐसा तुझको देखके मैं आपही प्राप्तहुई हूं और दैत्यों में श्रेष्ठ बलिराजा हिरण्यकशिपु के कुलमें जन्मा हुआ जो तू है ४६ सो तुझको ऐसे कर्म का कुछ आश्चर्य नहींहै और तुझको ब्रह्माभी शोषित करदिया ४७ और अपने पराक्रमकरके त्रिलोकी जीतली इसप्रकार बरके देनेवाली वह जयश्री नामवाली ४८ और चंद्रमा

सरीखे मुखवाली लक्ष्मी बलिराजा के प्रति कह फिर सभाको प्रकाशित करतीहुई तिसके भवन में प्रवेश हो-गई फिर तिसके प्रवेश होनेसे अन्यस्त्री विधवाकी तरह दीखने लगीं ४६ और तिसके प्रवेश होनेके बाद ह्री, श्री, धी, द्युति, कीर्त्ति, प्रभा, मति, क्षमा, भूति, विद्या, नीति, दया ५० श्रुति, स्मृति, धृति, मूर्त्ति, शांति, पुष्टि, तुष्टि, रुचि ये सब और अन्य जो लक्ष्मी के पीछे गमन करनेवाली हैं ५१ वे सब तिसबलिराजाके आश्रयहुई विश्रामकरती भई इस प्रकारके गुणोंवाला वह श्रेष्ठ बलिराजा होता भया ५२ महात्मा और शुभ बुद्धिवाला और आत्म-वान् और यज्ञ करनेवाला और तपस्वी और मृदुरूप और सत्यवाणी वाला और दाता और भोक्ता और मनुष्यों की रक्षा करनेवाला ५३ ऐसा वह दानवों का इन्द्र बलिराजा जब स्वर्गका राज्य करनेलगा तब कोई भी क्षुधासे पीड़ित और मलिन और गरीब नहीं रहा और जन्मा हुआ मनुष्यमात्र भी तिन दैत्यों के पीछे सदा उज्ज्वल रहा और धर्म में रतरहा और इच्छापूर्वक भोगनेवाला होताभया ५४ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांवामनप्रादुर्भावे पञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

---

## छिहत्तरवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! जब इस प्रकार उस बलि राजाने त्रिलोकी के राज्यको पाया तब इन्द्र देवताओं के

संगहुआ ब्रह्माजी के स्थान पै जाताभया १ फिर तहां जाके कमलसे उत्पत्तिवाले ब्रह्माजीको ऋषियों के संग बैठेहुये देखताभया और अपने पिता कश्यपजी को देखताभया २ फिर वह इन्द्र देवताओं के संग ब्रह्माजी को शिर नवाके नमस्कार करताभया और कश्यपजी को नमस्कार करताभया और अन्य जो तपस्वी स्थित होरहेथे तिन्होंको नमस्कार करताभया ३ फिर देवताओं के संगहुआ वह इन्द्र ब्रह्माजी के प्रति कहने लगा कि हे पितामह! बलवान् बलिराजाने मेरा राज्य हरलिया ४ फिर ऐसा बचन सुनके ब्रह्माजी बोले कि हे इन्द्र! अपना कियाहुआ फल तू भोगता है ऐसे सुन इन्द्र पूछता भया कि मैंने क्या खोटाकर्म कियाहै ५ आप कहो ऐसे सुनके कश्यपजी बोले कि तुम्हने अपनी माता दिति के उदरसे बहुतबार बलसे गर्भ गिराके भ्रूणहत्याकरी है ६ फिर ऐसे सुन इन्द्र अपने पिता कश्यपजी से बोला कि हे बिभो! मेरी माताके दोषसेही वह गर्भ गिराथा क्योंकि वह अशौचको प्राप्तहोगई थी ७ इसवास्ते और फिर कश्यपजी महाराज माताके दोषवाले इन्द्रके प्रति कहनेलगे कि तेरे बज्रसे तेरी माताका गर्भ हत हुआ था ८ ऐसे कश्यपजीका बचन सुन फिर ब्रह्माजीके प्रति इन्द्र बोला कि हे बिभो! मेरे पापके नाशका आप प्रायश्चित्त कहो ९ ऐसे सुन ब्रह्माजी और बशिष्ठऋषि और कश्यपजी ये सब इन्द्रके प्रति जगत् का हित और विशेषकरके इन्द्रका हित ऐसाबचन बोले १० कि हे इन्द्र!

शंख, चक्र, गदा इन्होंको हाथमें धारण करनेवाले पुरुषो-त्तम जो माधव हैं तिनकी शरणको तू जा वे तेरा कल्याण करेंगे ११ ऐसे बचनको हजार नेत्रोंवाला इन्द्र सुन फिर यह बोला कि स्वल्पकाल में पुण्यका उदय किसलोकमें होताहै १२ ऐसे सुन वे सब ब्रह्माआदिक देवता बोले कि पृथ्वीलोकमें पुण्यका उदय स्वल्पकाल में होताहै १३ ऐसे ब्रह्माजीसे और कश्यपजी से और वशिष्ठजी से कहाहुआ वह इन्द्र वेग से पृथ्वी लोक में प्राप्तहोके १४ फिर कालंजर तीर्थके उत्तरकी तरफ और हेमाद्रि पर्वत से दक्षिणकीतरफ और कुशस्थली अर्थात् द्वारकापुरी से पूर्वकी तरफ और वसुके पुरसे पश्चिमकी तरफ ऐसे पवित्र स्थान में वह इन्द्र वास करनेलगा १५ और जहां मनुष्यों में श्रेष्ठ गय नामवाले राजा ने सौ-वार अश्वमेध यज्ञकरी है और दक्षिणा सहित सैकड़ों हजारोंबार मनुष्यमेधयज्ञकरी है और तहां शूर, वीर, राजा और देवता और दैत्योंकरके १६ और श्रेष्ठ मनुष्यों करके मुरारि भगवान् मुरारि और महामेध ऐसे नाम करके प्रसिद्ध और अपनी वास्तव्य मूर्तिको अप्रकट किये हुये १७ गदाधर ऐसे नाम से प्रसिद्ध होरहे हैं और महान् आद्य [illegible] रूपी संसार के शिरके छेदन क-रने में कुठाररूपी और जिन ईश्वरहीके [illegible] और वेद शास्त्रमें वर्जित ऐसे ब्राह्मण [illegible] होरहे १८ और तहां [illegible] प्रसाद [illegible] करने से मिलेहुये पितरोंसे और मनुष्यों [illegible]

यज्ञकाफल भोगकराते हैं १९ और तहां हिमालय पर्वत से प्राप्तहोके श्रीगंगाजी महानदी आके बहरही है और वह नदी दर्शनमात्र से और जलके आचमन करने से और स्नान करने से मनुष्योंके पापों को दग्ध करदेती है २० ऐसी तिस नदी के बिषे वह इन्द्र प्राप्तहोके और आश्रममें स्थितहोके भगवान्के आराधन करने में स्थित होतभया २१ और प्रातःकाल नियमकरके स्नान करना और पृथ्वी में सोना एकाग्रचित्त से भक्ति करना और कछुयाचना नहींकरनी और गदाधरदेवकी स्तुति करना इसप्रकार वह इन्द्र तपस्या करताभया २२ और सब इन्द्रियोंको रोकके और काम, क्रोध से रहित हुआ वह इन्द्र एकबर्ष को ब्यतीत करताभया २३ फिर ऐसे यह कथा नारदकेप्रति पुलस्त्यजी कहते हैं कि हे नारद! ऐसी तपस्याकरने से भगवान् इन्द्रकेप्रति प्रसन्नहोके यह कहनेलगे कि हे इन्द्र! तू जा मैं तुझपै प्रसन्नहुआ २४ और अब तेरा पापदूरहोगया और हे देवेश! तू अपने राज्यको जल्दही प्राप्तहोजावेगा और हे इन्द्र! जैसे भावी है और तेराकल्याण है तैसेही मैं यत्न करूंगा २५ ऐसे बिष्णु भगवान् इन्द्रके प्रति कहते भये और इन्द्रका बिसर्जन करतेभये फिर वह इन्द्र तिस मनोहर गङ्गानदी बिषे स्नानकरताभया फिर स्नानकरनेसे इन्द्रके तिसपाप से मनुष्य पैदा होतेभये और इन्द्रकेप्रति यह कहनेलगे हम को आप कछु अनुशासन अर्थात् आज्ञा देवो २६ फिर भयङ्कर कर्मकरनेवाले तिन्हों से इन्द्र यह कहता

भया कि हे पुरुषो ! मेरेपापसे उत्पन्नहुये तुम पुलिंदनाम अर्थात् म्लेच्छजाति करके प्रसिद्धहुये कालंजर और हिमाद्रिपर्वतके बीचमें बसतेरहो २७ ऐसे वह इन्द्र कहके पापसेरहितहुआ और देवता और सिद्ध और यक्ष इन्होंसे पूजित अपनी माताके आश्रम में प्राप्तहोताभया और वह आश्रम धर्मका निवासरूपी है और स्तुति करनेलायकहै २८ ऐसे तिस आश्रममें अदितिको देख फिर मस्तकविषे अंजलीबांधेहुये स्तुतिकरनेलगा और मस्तक को कमलसरीखी कांतिवाले अदिति के पैरों में नवाताभया और फिर अपने तपका निवेदन करताभया २९ फिर वह अदिति हज़ारनेत्रोंवाले इन्द्रकोगोदी में बैठाके और प्यारकरके फिर उसका कारण पूँछतीभई तब वह इन्द्र ऐसे कहताभया किमुझको बलिराजाने रण में जीतलिया ३० ऐसेसुनके वह अदिति शोकसे युक्तहुई दैत्योंकरके जीताहुआ इन्द्रको जानके फिर दुःखसेयुक्त हुई अनाद्य और स्तुति करनेलायक ऐसे विष्णुभगवान्की शरण जातीभई ३१ नारदने पूँछा हे पुलस्त्यजी महाराज ! देवताओंकी माता वह अदिति अनाद्य और आद्य ३२ और चराचर जगत् को उपजानेवाले ऐसे ईश्वरको किस स्थानमें आराधन करतीभई यह आप कहो ३३ पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! अदिति दीन और बलि दैत्यसे पराजितहुये ऐसे इन्द्र को शुक्लपक्ष में और मकरकी संक्रांति में और रविवारके दिन देखके ३४ फिर निराशावालीहुई और चित्तमें यत्न करतीहुई विष्णु

भगवान् की शरणमें प्राप्त होतीभई ३५ अदिति कहनेलगी हे कमलरूपीकोषमें चलनेवाले और संसार रूपी बृक्षके काटने में कुल्हाड़ारूप! आप जयकरो और पापरूपी इंधन में आप अग्निहो और तमोगुणके समूह को रोकनेवालेहो सो आपकेलिये नमस्कारहै ३६ और दिव्य तस्करमूर्त्तिको धारणकरनेवाले जो आपहो और त्रिलोकी की लक्ष्मी के मालिक जो आपहो सो आपके लिये नमस्कार है और चराचर जगत् के आप कारण हो और सब संसार की आप मूर्त्तिहो सो मेरी पालना करो ३७ और हे जगन्नाथ, जगन्मय ! आपके होयेहुये इन्द्र अपने राज्यकी हानिको प्राप्त होरहाहै ३८ और तिरस्कारको प्राप्तहोरहा है इसवास्ते मैं आपकी शरण आई हूँ इसप्रकार कहके फिर देवताओं से पूजित श्री-बिष्णु भगवान् को लाल चन्दन से लिखके ३९ और कनेरके पुष्पोंको चढ़ाय और श्रेष्ठ धूप देतीभई औरसूर्य की सूक्ष्म बिधि पूजाको युक्तकरतीभई और घृत से युक्त अन्नको निबेदन करतीभई और महार्हमणिको निबेदन करतीभई ४० इसप्रकार वह अदिति देवी इन्द्रके हितके वास्ते स्थित होके भगवान् की स्तुति करनेलगी और ब्रत करतीभई फिर दूसरेदिन प्रणामकर और स्नान कर और पूजनकर ४१ ब्राह्मणों के लिये सुवर्ण का दान और तिलों का दान देतीभई और फिर भगवान्के पूजन में आगे स्थित होतीभई ४२ फिर तब बिष्णुभगवान् प्रसन्न होके सूर्य के मण्डल से निकसके अदिति के

आगे स्थितहो यह बचन बोलते भये ४३ कि हे दक्षनंदिनि! तेरे व्रत करनेसे मैं बड़ा प्रसन्न हुआ सो तू मेरी प्रसन्नतासे दुर्लभ कामना को भी प्राप्तहोवेगी इसमें संदेह नहीं ४४ और हे अदिति देवि! तेरे पुत्र देवताओं को मैं राज्य देऊंगा और तेरे उदर में प्राप्त होके दैत्यों का नाश करूँगा ४५ ऐसा बचन विष्णु भगवान् का सुनके फिर भगवान् के प्रति वह अदिति कहने लगी कि हे महाराज दुर्भररूपी! आपको अपने पेटमें सहने को समर्थ मैं कैसे होऊंगी ४६ क्योंकि जिस आपके उदरमें चराचर जगत् वसताहै सो हे नाथ! आपको धारण करनेको मैं समर्थ नहीं हूं क्योंकि आप त्रिलोकी के धारण करनेवालेहो ४७ और आपके उदर में सात समुद्र और पर्वत वसते हैं सो इसवास्ते इन्द्र तो अपने राज्य को प्राप्त होजावे ४८ और मुझको कछु क्लेश नहीं होवे तिसी प्रकार आपकरो ४९ श्रीभगवान कहने लगे हे महाभागे! यह तेरा वचन सत्य है और मैं देवनों और दैत्योंसे दुर्धर्ष हूं परन्तु तदपि तेरे उदर में प्राप्त होऊंगा ५० और हे अम्बिके! अपनी आत्मा को और तीनों भुवनोंको और तुझको और कश्यपजी को इन सबोंको मैं अपने योग करके धारण करूंगा तू वृथा विषाद मत करे ५१ और तेरे उदर में जब मैं दुर्धर्ष गर्भस्थ होऊंगा तब सब दैत्य तेज से रहित होजावेंगे इसमें सन्देह नहीं इस प्रकार विष्णु भगवान् कहके फिर वैरियों के गण को प्रमर्दन करनेवाले वे विष्णु भगवान् अन्तर्धान होगये

अंश करके तिस अदिति के उदर में इन्द्रके हितके वास्ते प्रबेश होते भये ५२ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांवामनप्रादुर्भावेअदितिवरप्रदानं नामषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥

## सतहत्तरवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! इसप्रकार अदितिकेगर्भमें जब बामन आकृतिवाले बिष्णुभगवान् स्थितहोगये तब जैसे विष्णुभगवान् ने कहाथा तैसेही तेजसेरहित दैत्य होगये १ फिर तेजसेरहित दैत्योंको देखके फिर दानवशार्दूल वह बलिराजा दानवेश्वर प्रह्लादकेप्रति कहनेलगा २ बलिकहताहै हे तात! सबदैत्य तेजसे रहित किसहेतु करके होगये सो आप परमज्ञहो और शुभाशुभ हेतु के जाननेवालेहो इसवास्ते कहो ३ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! वह प्रह्लाद अपने पौत्रका बचन सुनके फिर दो घड़ीतक ध्यानमें स्थितहोताभया और दैत्यों के तेजकी हानि कैसे होगई ऐसे बिचार करताभया ४ फिर बिष्णु भगवान् से उत्पन्नहुआ भय दैत्यों के बिषे वह प्रह्लाद बिचारके यह बिचार करताभया कि अब बिष्णुभगवान् कहां हैं ५ फिर नाभि से नीचे सातलोकों का चिन्तवन करके नाभि से ऊपर पृथ्वीआदि लोकों में बिचरनेकी इच्छा करताभया ६ और कमलके आकार पृथ्वी और तिसके ऊपर कमलके आकार सुबर्णसे युक्त और महान्समृद्धिवाला ऐसे सुमेरु पर्वतको देखताभया ७ और

महान् आयुवाला वह प्रह्लाद तिस पर्वतके ऊपर आठ लोकपालोंको देखताभया और तिनलोकोंके ऊपर रजो-गुण से युक्त ब्रह्माकेपुरको देखताभया ८ और तिसपुरके नीचे महापवित्र और देवताओं से पूजित और मृग और पक्षिगणों से युक्त ऐसे आश्रम को देखताभया फिर तिस आश्रममें देवताओं की माता अदिति को देखताभया ९ पश्चात् सबतेजों करके अधिकतेजवाली तिस अदिति को देख फिर वह प्रह्लाद तिस विषे मधु-सूदन भगवान्को ढूंढ़ताभया १० और जगन्नाथ और माधव और वामन आकृतिवाले ऐसे विष्णु भगवान् को सब भूतों में श्रेष्ठ जो अदिति है तिसके उदरमें देखताभया ११ पश्चात् शंख, चक्र, गदा [illegible] हों को धारण करनेवाले और सब देवतों और असुरों करके चारों तरफ व्याप्त शरीरवाले १२ ऐसे वह विष्णु भगवान् शरीर से वक्रयोग करके वामनरूप को प्राप्त होगये तब ऐसे विष्णु भगवान् को वह प्रह्लाद देखके अपनी प्रकृति में स्थित होगया १३ फिर महाबुद्धि-वाला और विरोचन का पुत्र ऐसे बलिराजा को प्राप्त होके वह प्रह्लाद नारायण को प्रणामकर मधुर वचन बोलताभया १४ प्रह्लाद कहनेलगा हे दैत्येन्द्र! जहां से आपको भय प्राप्तहुआ है और जिनहेतु करके तेजसे रहित दैत्य होगये हैं १५ वह तुमको सुनना चाहिये मैं सब कहता हूं आपने इन्द्र, रुद्र, सूर्य, अग्नि इन्हों से आदि सब देव जीतलिये सो हे नृप पुनःजिनहुने तुमको

त्रिभुवनेश्वर देवके शरण प्राप्त होतेभये १६ तब तिन्हों को अभय देनेवाले और जगत् के गुरु ऐसे बिष्णु भगवान् ने अदितिके उदरमें अवतार लिया है १७ सो उन्होंने तुम्हारा तेज हरलियाहै ऐसे मेरीमतिहै क्योंकि सूर्यके उदय होनेके बाद अँधेरा स्थितरहनेको समर्थनहीं है १८ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! वह बलिराजा प्रह्लाद के बचन सुन के क्रोधसे नेत्रों को फरकाने लगा और कर्मरूप भावी से प्रेरा हुआ प्रह्लादके प्रति बचन कहने लगा १९ बलि कहताहै हे तात! ऐसा हरिभगवान् कौन है कि जिससे हमको भय प्राप्तहुआ है और बासुदेव से भी अधिक बलवाले मेरे सैकड़ों दैत्य हैं २० और जिन्हों ने इन्द्र, रुद्र, अग्नि, बायु इनसे आदि ले सब देवतोंको जीतके हरादिये हैं और स्वर्गसे दूर करादिये हैं और रण में उन्हों का अभिमान खंडित करदिया है २१ ऐसे दैत्य हज़ारों स्थित हैं और जिसने सूर्य्यके रथकेसा बेगवाला महान् चक्र धारण किया है ऐसा बिप्रचित्ति नामवाला और बलवान् ऐसा दैत्य मेरी सेनामें आगे रहनेवालाहै २२ और अयनामवाला शंकुनामवाला शवनामवाला और शम्भुनामवाला और असिलोमा और बिलोमकृत और त्रिशिरा और मकराक्ष और बृषपर्वा और शतेक्षण २३ ये सब दैत्य और बलवाले और युद्धमें बिशारद ऐसे अन्य दैत्यभी जिन्होंकी एकएक कलाकी सोलहवीं कलाभी बिष्णु नहीं है २४ ऐसे अनेक दैत्य मेरेपासस्थित हैं पुलस्त्यजी बोले हे नारद! इस प्रकार अपने पौत्रके

बचन सुनके कोपसे मूर्च्छित होताभया फिर विष्णुको निन्दितबचन कहनेवाले प्रह्लाद बलिको धिक्धिक् ऐसा बचन कहताभया २५ और यह कहनेलगा कि पापमें आचरण करनेवाले तुझको धिक्कार है और दुष्टबुद्धिवाला और मूर्ख ऐसे तुझको धिक्कार है और हरिभगवान् की निन्दा करताहुआ तू सो तेरी जिह्वा कैसे नहीं गिरती है २६ और हे दुर्बुद्धे! तू शोचकरने लायक है और साधुजनोंकरके तू निन्दा करनेलायक है क्योंकि जोतू त्रिलोकीकेगुरु बिष्णुभगवान्की निन्दा करताहै २७ और मुझकोभी बड़ा अफ़सोस है इसमें संदेह नहीं क्योंकि मेरे से तेरा पिता जन्मा है और जिस अपने पिताके तू ऐसा कठोर और देवताओं का अपमान करनेवाला पुत्र जन्मा है २८ और तू निश्चय जानताहै और अन्य भी ये सब असुर जानते हैं कि मुझको जनार्दनभगवान् अत्यन्त प्रिय हैं २९ सो मुझको अत्यन्त प्यारे भगवान हैं और प्राणोंसेभी प्यारे हैं ऐसे जानताहुआभी तू सर्वेश्वर विष्णुभगवान्की निंदा कैसे करताभया ३० और तुझको गुरुकी जगह पिताको पूजना चाहिये और मैं तेरेपिताकाभी पूज्यहूँ और गुरुहूँ सो विष्णुभगवान् तो मेरेभी पूज्य हैं और लोकके गुरुहैं ३१ और हे मूढ़! वे हरिभगवान् गुरुकेभी गुरु हैं और अतिपूज्यकेभी पूज्य हैं सो हे पापी! पूज्यकी निन्दा करताहुआ तू नीचे कैसे नहीं गिरताहै ३२ और ये जो दुराचारीदानव तेरसाथ हैं इन्होंका शोच तुझे करना चाहिये क्योंकि जिन्होंका

राजा तू दुराचारी और बासुदेव का निन्दक है ३३ और जो तुझने पूज्य बिष्णुभगवान्‌की निन्दाकरी सो हे पापी! तेरेराज्यका नाशहोवेगा ३४ और मुझको बिष्णुभगवान्‌से अधिककुछ प्रियनहीं है इसवास्ते मेरेमन करके और कर्म करके और बाणीकरके तू राज्यसे भ्रष्ट होवेगा ३५ और मुझको भगवान्‌से व्यतिरिक्त कछुनहीं दीखताहै इसवास्ते चौदह लोकोंमें तू राज्यसेभ्रष्टहोवेगा ३६ और सबलोकोंके बिषे भगवान्‌के बिना कोई परायण नहीं है इसवास्ते तुझको मैं राज्यसे भ्रष्ट देखताहूँ ३७ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! इसप्रकार जब प्रह्लादने बचन उच्चारणकिया तब बलिराजा जल्द अपनेआसनसे उतर के और अंजली बांधके ३८ शिरसे प्रणाम करता भया और यह कहताभया कि हे गुरो! मुझपै आप प्रसन्नहोवो क्योंकि अपराध कियाहुआ भी बालकपै गुरुजन क्षमा करदेतेहैं ३९ सो हे दानवेश्वर महाराज! आपने जो मुझको शाप दिया सो श्रेष्ठ है और मैं अन्य किसीसे भय नहीं मानता और राज्यके नाशकाभी भय नहीं मानता ४० और हे बिभो! मेरे राज्य छूटजाने का कुछ भी दुःख नहींहै मुझको तो केवल आपके अपराधहीका दुःखहै ४१ सो हे तात! मेरा अपराध क्षमाकरो और मैं बालक हूँ और अनाथहूँ और खोटीमतिवाला हूँ और गुरुजन दोषकरे पीछे भी दुःखको प्राप्तहुये बालकों पै क्षमा करदिया करते हैं ४२ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! इस प्रकार कहनेसे वह महात्मा और हरिभक्त ऐसा प्रह्लाद

मोहसे दूरहोके और चिन्तवन कर फिर अपने पौत्रके प्रति मधुर वचन बोलताभया ४३ प्रह्लाद कहता है हे पुत्र! मुझको मोहकरके ज्ञानहोगया और तिरस्कार में विवेकहोके सर्वगत विष्णुभगवान् को जानताहुआ तुझ को शापदेताभया सो हे दानव! तुझको मैं जो शापदेता भया ४४ सो यह निश्चय मोहही है उसमोहमें प्राप्तहोने से विवेकका प्रतिषेध होगया ४५ सो हे विभो! इसवास्ते राज्यके प्रति तुझको कछु सन्ताप नहींकरनाचाहिये फिर अवश्य भावीके प्रयोजनोंका नाश कदाचित् नहींहोताहै ४६ और पुत्र,मित्र,स्त्री,राज्यभोग इन्होंकेनिर्गमके विषे और आगमके विषे ज्ञानवान् जन विषादनहींकरते ४७ और हे दैत्येंद्र! जोजो सुखदुःख पूर्वकर्मके विधानसे होते हैं तैसेही सहने चाहिये ४८ और स्वाधीनपुरुष विपत्ति के आगमन को देखके दुःखी नहीं होते हैं और बढ़ीहुई सम्पत्तिको देखके कछु बहुतप्रसन्न नहीं होते हैं ४९ और धनके क्षयहोने में मोहको प्राप्त नहीं होते हैं और धनके आगमन में कछु प्रसन्न नहीं होतेहैं और सब कार्यों में धीरज रखते हैं ५० सो हे दैत्येन्द्र! ऐसे विचारके तुझको कछुभी विषाद नहीं करनाचाहिये और तू पण्डित है इस वास्ते तुझको खेदनहीं करनाचाहिये ५१ और हे महा-बाहो! अन्यभी हितका वचन कहताहूं सो तू और अन्य पुरुषों को सुनके तैसेही करना चाहिये ५२ कि अपने हितके वास्ते रक्षा देनेवाले पुरुषोत्तम भगवान् की शरणमें प्राप्त होना यही उचित है सो हे दानवेन्द्र!

वही भगवान् तुझको अभय का देनेवाला होगा ५३ और तेरी रक्षा करेगा क्योंकि जो पुरुष अनन्त और अनादि, मध्य और चराचरके गुरु और संसाररूपी गढ़ेमें गिरेहुये पुरुषके हाथको पकड़नेवाले ऐसे बिष्णु भगवान्‌के जो आश्रय होतेहैं वे पुरुष पृथ्वी बिषे खेद को नहीं प्राप्तहोतेहैं ५४ सो हे दानवश्रेष्ठ! अब तू तिसी भगवान् बिषे मन लगाले और तिसीका भक्त होजा और वही जनार्द्दन भगवान् तेरा कल्याण करेंगे ५५ और हे महाबाहो! इस प्रकार करताहुआ तू सिद्धिको प्राप्त होवेगा। ५६ और मैं तो पापकी शांतिके वास्ते नारायणका आराधन करूंगा। और तीर्थयात्रा में गमन करूंगा। फिर बिमुक्त पापहुआ जहां लोकोंके पति नृसिंह जीहैं तहां गमन करूंगा ५७ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! वह महात्मा प्रह्लाद इसप्रकार बलिराजाको संतोष दिवाके और योगाधिपति बिष्णु भगवान् को स्मरण करके और सब दानवोंके संग सल्लाह करके फिर श्रेष्ठ तीर्थयात्रा करनेके वास्ते गमन करताभया। ५८॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांवामनप्रादुर्भावेबलिशिक्षापनं नामसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७॥

---

## अठहत्तरवां अध्याय॥

नारदने पूछा हे पुलस्त्यजी महाराज! प्रह्लाद किन२ तीर्थों बिषे जाता भया सो प्रह्लाद की तीर्थयात्रा को आप सम्यक्प्रकार करके कहो १ पुलस्त्यजी बोले हे

नारदमुने ! सुन मैं प्राक्तनी कथाको और प्रह्लादकी शुद्धि और पुण्य देनेवाली ऐसी तीर्थयात्राको तुझसे कहूंहूं २ पहले कनकाचल सुमेरु पर्वतको पूजके फिर देवताओं के समूहोंसे सेवित ऐसे पवित्र तीर्थको जाताभया और वह तीर्थ मनुष्योंको मंगलदायक है और पृथ्वीमें वि-ख्यातहै और जहां मत्स्य अवतारकी मूर्ति स्थितहै ३ ऐसा वह तीर्थहै फिर तिसमें स्नान करके और देवतों और पितरोंका तर्पण करके और वेदों करके युक्त ऐसे जगन्नाथ भगवान्का पूजनकर ४ फिर एक दिन व्रत कर फिर देवता, ऋषि, पितृगण इन्होंका पूजनकर फिर पापके नाशकरनेवाली कच्छ अवतारकी मूर्तिको देखने के वास्ते कौशिकी नदीको जाताभया ५ फिर तिस नदी विषे स्नान करके और विष्णु भगवान्का पूजन करता भया और उपवासकर और पवित्रहो और ब्राह्मणों के लिये दक्षिणादेके ६ फिर कच्छशरीरको धारणकरनेवाले विष्णु भगवान्को नमस्कारकर पश्चात् हयमुख कृष्ण तीर्थको देखनेके वास्ते गमन करताभया ७ फिर तहां पितर और देवताओंका तर्पणकर और हयशीर्ष विष्णु भगवान्का पूजनकर फिर गजसाह्वय नामवाले तीर्थ विषे जाताभया ८ फिर तिस तीर्थमें स्नान करके और चक्रधारी विष्णु भगवान्का विधिपूर्वक पूजन करके फिर यमुनानदी विषे गमन करताभया ९ फिर तिस यमुनामें स्नानकर पवित्रहो देवता और ऋषि और पि-तर इन्हों का तर्पण कर फिर देवदेवेश और जगन्नाथ

और त्रिविक्रम अर्थात् वामनरूप तहां ऐसे बिष्णु भगवान्को देखताभया १० नारदने पूछा हे भगवन्! अब तो बिष्णुभगवान् त्रिलोकीके क्रमणकरनेवाले शरीरको धारण करेंगे और बलिराजाको बन्धन करेंगे ११ और वेही बिष्णु भगवान् पहलेभी त्रिविक्रमरूप को धारण कियाथा सो उसमें किसका बंधन कियाहे मुने! यह कथा मुझसे कहो १२ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! तुझको सुनना चाहिये मैं कहताहूं जोकि त्रिविक्रम अवतार हमने कहाहै वह जिसकालमें होताभया और जिसका बंधन होता भया सो सब कहते हैं १३ पहले धुन्धु नाम वाला एककश्यपजी का औरसपुत्र होताभया और दनु गर्भ अर्थात् दैत्योंके बंशमें उत्पन्नहुआ और महापराक्रम वालाहुआ १४ और बरके देनेवाले ब्रह्माजीकी सम्यक् आराधना करके अवध्यपने को मांगताभया अर्थात् सब देवताओंसे मैं नहीं मरूं ऐसा बर मांगता भया १५ फिर तपकरनेसे प्रसन्न हुये ब्रह्माजी उसको वही बरदान देतेभये फिर प्रसन्नहोके वह बलवान् दैत्य स्वर्गमें जाताभया १६ और चौथेकलियुगकी आदिमें इन्द्रआदि सब देवताओंको जीतके फिर आपही इन्द्रहोगया और तिससमय बलवान् हिरण्यकशिपु दैत्यभी होताभया १७ और वह हिरण्यकशिपु तिस धुंधुदैत्यके आश्रयहुआ मन्दराचल पर्वतबिषे बिचरताभया १८ और तब सब दैत्य इच्छापूर्वक स्वर्गमें बिचरतेभये और देवता दुःख से युक्तहुये ब्रह्मलोकमें जाके स्थितहोतेभये १९ फिरवह

धुन्धुदैत्य ब्रह्मलोक में गयेहुये देवताओं को सुनके फिर दैत्यांके आगे यह कहतासया कि हे दैत्यो! हम ब्रह्माके लोकको जीतनेकेवास्ते चलेंगे और तहां देवताओंको और इन्द्रको जीतैंगे २० फिर वे दैत्य धुन्धुकेवाक्यको सुनके कहतेभये कि हमसे लोकपाल नहीं डरते हैं और ब्रह्मलोकमें जानेकी हमारीगति नहींहै क्योंकि वह मार्ग अतिदुर्गम है २१ और यहांसे परे कहीं हजारयोजनों पै महनामवाला लोकहै और महान्ऋषियों करके सेवित है और उन ऋषियोंकी दृष्टि करके एकबारदेखनेसे सब दैत्य दग्ध होजाते हैं २२ और हे असुरेंद्र! तिस लोक से परे किरोड़योजनपै जननामवाला लोकहै और जहां ऐसी गौवासकरती हैं कि जिन्होंकी रज हमारा नाशकर देवे २३ और तिस लोकसे छः कोटियोजनपै तपनाम वाला लोक है और वह लोक तपस्वियों करके सेवित है और तहां साध्यसंज्ञक देवते रहते हैं ओरजिन देवताओंके श्वासकी वायु असह्य अर्थात् नहीं सहीजाती २४ और तिस लोकसे तीसकोटियोजनपरे सहस्रदीप्ति वाला आदित्यलोकहै और जहां सत्य भगवान् का निवासहै और उसी भगवान् ने आपके लिये वरदिया था २५ और जिसकी वेदध्वनिको सुनके देवते फूलते हैं और दैत्य और दैत्यांके सबकी संकल्पको जानते हैं २६ इसवास्ते हे महाबाहो! आप उन्हों में जानेकी मति मतकरो हे धुन्धो! वह ब्रह्मलोक मनुष्यों करके सदा दुराराध्य अर्थात् मुश्किल प्राप्तहोनेयोग्यहै २७ फिर तिन्हों

और त्रिबिक्रम अर्थात् वामनरूप तहां ऐसे बिष्णु भगवान्को देखताभया १० नारदने पूछा हे भगवन्! अब तो बिष्णुभगवान् त्रिलोकीके क्रमणकरनेवाले शरीरको धारण करेंगे और बलिराजाको बन्धन करेंगे ११ और वेही बिष्णु भगवान् पहलेभी त्रिबिक्रमरूप को धारण कियाथा सो उसमें किसका बंधन कियाहे मुने! यह कथा मुझसे कहो १२ पुलस्त्यजी बोलेहे नारद! तुझको सुनना चाहिये मैं कहताहूं जोकि त्रिबिक्रम अवतार हमने कहाहै वह जिसकालमें होताभया और जिसका बंधन होता भया सो सब कहते हैं १३ पहले धुन्धु नामवाला एककश्यपजी का औरसपुत्र होताभया और दनुगर्भ अर्थात् दैत्योंके बंशमें उत्पन्नहुआ और महापराक्रमवालाहुआ १४ और बरके देनेवाले ब्रह्माजीकी सम्यक् आराधना करके अबध्यपने को मांगताभया अर्थात् सब देवताओंसे मैं नहीं मरूं ऐसा बर मांगता भया १५ फिर तपकरनेसे प्रसन्न हुये ब्रह्मा जी उसको वही बरदान देतेभये फिर प्रसन्नहोके वह बलवान् दैत्य स्वर्गमें जाताभया १६ और चौथेकलियुगकी आदिमें इन्द्रआदि सब देवताओंको जीतके फिर आपही इन्द्रहोगया और तिससमय बलवान् हिरण्यकशिपु दैत्यभी होताभया १७ और वह हिरण्यकशिपु तिस धुंधुदैत्यके आश्रयहुआ मन्दराचल पर्वतबिषे बिचरताभया १८ और तब सब दैत्य इच्छापूर्वक स्वर्गमें बिचरतेभये और देवता दुःखसे युक्तहुये ब्रह्मलोकमें जाके स्थितहोतेभये १९ फिरवह

धुन्धुदैत्य ब्रह्मलोक में गयेहुये देवताओं को सुनके फिर दैत्योंके आगे यह कहताभया कि हे दैत्यो! हम ब्रह्माके लोकको जीतनेकेवास्ते चलेंगे और तहां देवताओंको और इन्द्रको जीतैंगे २० फिर वे दैत्य धुन्धुकेवाक्यको सुनके कहतेभये कि हमसे लोकपाल नहीं डरते हैं और ब्रह्मलोकमें जानेकी हमारीगति नहींहै क्योंकि वह मार्ग अतिदुर्गम है २१ और यहांसे परे कहीं हजारयोजनों पै महनामवाला लोकहै और महान् ऋषियों करके सेवित है और उन ऋषियोंकी दृष्टि करके एकबारदेखनेसे सब दैत्य दग्ध होजाते हैं २२ और हे असुरेंद्र! तिस लोक से परे किरोड़योजनपै जननामवाला लोकहै और जहां ऐसी गौवासकरती हैं कि जिन्होंकी रज हमारा नाशकर देवे २३ और तिस लोकसे छः कोटियोजनपै तपनाम वाला लोक है और वह लोक तपस्वियों करके सेवित है और तहां साध्यसंज्ञक देवते रहते हैं और जिन देवताओंके श्वासकी वायु असह्य अर्थात् नहीं सहीजाती २४ और तिस लोकसे तीसकोटियोजनपरे सहस्रदीप्ति वाला आदित्यलोकहै और जहां सत्य भगवान् का निवासहै और उसी भगवान् ने आपके लिये बरदिया था २५ और जिसकी बेदध्वनिको सुनके देवते फूलते हैं और दैत्य और दैत्योंके सधर्मी संकोचको प्राप्तहोते हैं २६ इसवास्ते हे महाबाहो! आप उन्हों में जानेकी मति मतकरो हे धुन्धो! वह ब्रह्मलोक मनुष्यों करके सदा दुरारोह अर्थात् मुश्किल प्राप्तहोनेयोग्यहै २७ ऐसे तिन्हों

के बचन सुनके वह धुंधु दैत्य ब्रह्माके लोकमें जानेकी इच्छाकरताहुआ और ब्रह्माको जीतनेकी इच्छाकरता हुआ तिन दैत्योंप्रति बोला २८ कहनेलगा कि हे दानवोंमें श्रेष्ठो! उसलोकमें कैसेजायाजाताहै और तहांदेवतोंके समेत इन्द्रकैसेगयाहै २९ फिर धुंधुसे पूंछेहुये वे दैत्य यहबचन कहनेलगे कितिसकर्मको हमनहींजानते पर शुक्राचार्यजी निश्चयजानतेहैं ३० फिर वहधुंधुदैत्यों के बचनकोसुन फिर दैत्यपुरोहित शुक्रजीसे पूंछताभया कि इन्द्र क्याकर्मकरके ब्रह्मलोकमें चलागयाहै ३१ फिर वह कलहको प्रियकरनेवाला दैत्याचार्यशुक्र बृत्रासुरका रिपु ऐसे इन्द्रका चारित्र कहनेलगा३२कि हे दैत्येंद्र!इन्द्र पहले सौ अश्वमेधयज्ञों के पुण्यको प्राप्त होताभया इसवास्ते वह ब्रह्मलोकमें चलागयाहै ३३ ऐसे तिसके बाक्यसुन वह दानवपति अश्वमेधयज्ञ करनेकोउत्तम प्रीति करताभया ३४ औरशुक्राचार्यकोबुलाय और श्रेष्ठ श्रेष्ठ दैत्योंको बुलाकर यह कहनेलगा कि मैं दक्षिणा सहित अश्वमेधयज्ञोंको करूंगा ३५ सो आपजाओ पृथ्वीके सब राजाओंको जीत के फिर अश्वमेध यज्ञोंके लिये यथेष्ट बस्तुओंका ग्रहणकरो ३६ और सब प्रकार के खजानेतैयारकरो और गुह्यकोंकोबुलाओ और ऋषियोंको बुलाओ फिर यमुनानदीके तटपैचलें ३७क्यों कि वही श्रेष्ठनदीहै और सबकी सिद्धिकरनेवाली और मंगलरूप है सो तिसके प्राचीन जलको प्राप्तहोके हम अश्वमेधयज्ञोंकोकरेंगे ३८ ऐसे तिस दैत्यके वचनसुन

फिर शुक्राचार्य प्रसन्न हुआ निश्चय करताभया और खजानेके द्रव्योंको इकट्ठेकरनेकी आज्ञादेताभया ३९ फिर वह धुंधु यमुनाके पूर्वतट विषे भार्गव शुक्रकरके सहित अश्वमेध यज्ञका प्रारम्भ करताभया ४० और तहां भार्गववंशमें होनेवाले ब्राह्मण सभापति और ऋत्विक् होतेभये और शुक्रकी मति के अनुसार शुक्राचार्य के शिष्य सब पंडित प्राप्त होतेभये ४१ और तहां यज्ञभागको भोगनेवाले राहु, केतु आदि होते भये इसप्रकार उस धुंधुदैत्य को शुक्राचार्य की मति के अनुसार सब दैत्योंको भाग दिया ४२ फिर वह प्रवृत्त होताभया और अश्व छूटताभया और अश्व के पीछे शोभावाला महाश्रेष्ठ असिलोमा दैत्य निकसता भया ४३ फिर तिस यज्ञके अग्निके धुआं से पृथ्वी, पर्वत, दशोंदिशा, विदिशा, आकाश ये सब व्याप्त होते भये और तिस उग्रगंध करके युक्तहुआ वायु स्वर्ग में और ब्रह्मलोक में प्राप्त होता भया ४४ फिर तिस गंध को सूंघ के सब देवते दुःखित होते भये और अश्वमेध यज्ञ करता हुआ धुंधु दैत्य को जानते भये फिर रक्षक जनार्दन भगवान् की शरण में इन्द्र आदि देवते प्राप्त होते भये ४५ और वर के देनेवाले पद्मनाभ भगवान् को प्रणामकरके फिर सब देवते भय से गद्गद वाणीकरके बोलते भये ४६ कि हे भगवन्! हे देवदेवेश! चराचर जीवों के परायण हे विष्णो! और देवताओंके दुःख को दूर करनेवाले आप हमारा विज्ञापन सुनो ४७ धुंधुनामवाला एकबलवान्

दैत्य है सो सब देवताओं को जीत के त्रिलोकी को हरता भया ४८ और शिवजी के बिना अन्य हम सब देवते त्रासमान होरहे हैं और यह दैत्य व्याधि की तरह बढ़ता है ४९ सो अब ब्रह्मलोक में भी स्थित हुये हमको जीतने के वास्ते उद्यत है और शुक्राचार्य्य का मत लेके वह अश्वमेध यज्ञ कररहा है ५० सो यह महाअसुर सौ यज्ञ करके ब्रह्मलोक में आने की इच्छाकरता है और देवताओंको जीतने की इच्छा करता है ५१ सो हे जगत्गुरो! इस वास्ते आप अकालहीन यज्ञ के विध्वंसका उपाय चिंतवन करो जिस से हम निवृत्तहोवें ५२ फिर मधुसूदन भगवान् देवताओं के बचन सुन के महाबाहु भगवान् अभयदेके शांत करते भये ५३ फिर सबदेवताओंका विसर्जनकर और जीतने के लायक तिस महाअसुर को जान फिर तिस धुंधुदैत्य को ठगने की मति करते भये ५४ तदनन्तर भगवान् ईश्वर अपना बामनरूप बनाय और अपने देह को तिसनदी के जल में निरालंबगेर ५५ क्षणमें डूबजावे और कभी क्षण में निकसे और अपनी इच्छा से केशों के खिंडारहा तब तिसे धुन्धु दैत्य ने देखा और अन्य भी दैत्यों और ऋषियों ने देखा ५६ तब यज्ञ के कर्म को त्याग के उत्तम ब्राह्मण तिसको निकालने के वास्ते दौड़ते भये ५७ और सभापति यजमान ऋत्विक् ये सब दौड़ के डूबते हुये तिसबामनरूप द्विजको पकड़ ५८ और बाहर निकाल प्रसन्नहोके पूंछते भये कि तू किस वास्ते यहांपड़ा है और किसने गेरा है यह कह ५९ फिर

तिन्हों के बचन सुन बारंबार कांपताहुआ धुंधुआदि दैत्योंसे कहनेलगा कि मेराकारण सुनना चाहिये ६० एकगुणवान् ब्राह्मण प्रभासनामवाला होताभया और सबशास्त्रोंको जाननेवाला और पण्डित और बारुणि गोत्रमें उत्पन्नहोताभया ६१ और तिसके मंदबुद्धिवाले दोपुत्रहुये एक तो मेरा बड़ाभाई हुआ और छोटा मैंहूं ६२ सो हे असुर! मेराबड़ाभाई तो नेत्रभासनामवाला हुआ और मेरानाम अतिआश्चर्य्य से पिताने गतिभास किया ६३ और हे धुंधुदैत्य! हमारा पिता शांतरूप होताभया और हे असुरो! स्वर्ग सरीखे सुन्दर गुणों से युक्त हुआ ६४ फिर काल के बश से हमारा पिता मरगया फिर हम दोनों पुत्र तिसकी और्ध्वदैहिक क्रियाकरके अपने घरमें आते भये ६५ फिर मैं अपने भाई से बोला कि घर जुदा २बांटनाचाहिये फिर तिसने कहा कि यहां तेरा भाग अर्थात् हिस्सा नहीं है ६६ क्योंकि कुबड़ा,बामन,खंज, नपुंसक, श्वित्रकुष्ठी, उन्मत्त, अंधा इन्होंका धनमें हिस्सा नहीं है ६७ और शय्या, बस्त्रमात्र अन्न ये बस्तु इच्छासे देनीचाहिये और तिन्होंको धन लेनेका अधिकार नहींहै ६८ ऐसे उसने कहा तब मैं बोला कि किसवास्ते और किस न्याय करके पिताके घरसे आधा धन लेने लायक नहींहूं ६९ ऐसे बाक्य कहनेसे मेराभ्राता कोपसे संयुक्तहो मुझको इस नदीमें गेरगया ७० और मुझको इस नदीमें पड़े ये एक बर्ष व्यतीत होगया अब आप सबोंने इससे

मुझे निकालाहै ७१ सो यहां प्राप्तहुये स्नेहसे बांधवों की तरह आप कौनहो और यह इन्द्रके समान दीक्षित और महाभुजावाला ऐसा कौनहै ७२ सो हे तपोधनाओ! यह सब सत्यबृत्तांत मेरेप्रति कहो और महर्द्धि सहित आप दया करके मुझ से कहो ७३ फिर वे तपोधन भार्गववंशी ब्राह्मण तिस बामन के बचन सुन सबबृत्तांत यथातथ्य कहनेलगे ७४ हे ब्रह्मन्! हम भार्गव गोत्रवाले द्विज हैं और यह धुन्धुनामवाला महान् दैत्य है ७५ और यह दाताहै भोक्ताहै और शांसिताहै और यज्ञकर्ममें दीक्षितहै ऐसे वे भार्गववंशी द्विज बामन भगवान्‌के प्रति कहके ७६ फिर तिस धुन्धु दैत्यके प्रति कहने लगे कि हे दैत्येंद्र! सबप्रकार की भेट ७७ और लक्ष्मी और अनेक प्रकार के रत्न ये सब इस ब्राह्मण के लिये देनेचाहिये ऐसे तिन द्विजोंका बचन सुन वह दैत्यपति यह बचन बोला ७८ कि हे द्विज! जो तू इच्छा करै उतनाही धन मैं देऊंगा और तुझको घर देऊंगा और सुबर्ण, घोड़े, रथ, हस्ती ये देऊंगा ७९ ऐसे ये सब बस्तु अब तेरे लिये देऊंगा सो तू अपने हितके वास्ते मांग ऐसे तिस दैत्यके बचनको सुन फिर बामन देव ८० असुरोंका पति धुन्धुदैत्यके प्रति बोले कि जिसकी सम्पत्ति सहोदर भाई ने हरली तिस असमर्थकी मेरी सम्पत्तिको क्या अन्यपुरुष नहीं हरलेगा ८१ सो हे महाभुज! दासी, बस्त्र, अलङ्कार, घर, रत्न, परिच्छद ये बस्तु आप समर्थ द्विजोंके लियेदेओ और मेरा प्रमाण देख

के हे दैत्येंद्र! मुझेतीनपैग धरतीदेओ और अधिकबस्तु के राखने में मैं समर्थनहींहूं ८२ ऐसे कहने के बाद वह दैत्याधिपति पुरोहितोंकेसंग हँसके तिस ब्राह्मणके लिये तब तीनपैग धरती देताभया और वह ब्राह्मणभी कछु विशेष नहीं ग्रहण करताभया ८३ फिर समर्थ और यशवाले और अनन्त शक्तिवाले भगवान् तीनपैगपृथ्वी देने के संकल्पके जलकोदेख त्रिलोकी के उल्लंघनेकेलिये अपने त्रैविक्रमरूप को करतेभये ८४ फिर तिस रूपको धारणकर व दैत्योंको मार और पहले पैरसे पृथ्वीको प्रक्रमणकर अर्थात् नापके फिर पर्वतों समेत और खजाने और शहर आदिकों समेत हरतेभये ८५ और भुवर्लोक और देवताओं के बासवाला स्वर्गलोक और चंद्रमा, नक्षत्र इन्होंसेमंडितआकाश इनसबोंको वह देव दूसरे पैगसे ग्रहणकरतेभये इस प्रकार वे अनन्त भगवान् बेगकर क्रमसे हरतेभये ८६ और जब तीसरा पैग पूरणनहींहुआ तब सुमेरुपर्वतके समान शरीरवाले त्रिविक्रम भगवान् कोपसे तिस दैत्यकी पीठपै पड़ते भये ८७ फिर हे नारद! तिस दैत्य पै भगवान् के गिरने से तीसहज़ार योजनका पृथ्वी बिषे गढ़ाहोगया ८८ फिर उस दैत्यको उठाके तिस गढ़ेकी जगह गेरतेभये और सिकता अर्थात् मृत्तिकाकी रेणुआदिकों से तिसगर्त्तको पूरण करते भये ८९ फिर भगवान्की प्रसन्नतासे इन्द्र और देवते स्वर्ग में प्राप्त होतेभये और सब त्रिलोकी उपद्रव रहित होगई ९० और भगवान् भी तिस रेती में

उस दैत्यको स्थापितकर फिर कालिंदी नदी में प्रवेशहो तहां अंतर्द्धान होगये ९१ ऐसे पहले विष्णु भगवान् बामन होतेभये और धुंधुदैत्य के जीतनेको त्रिबिक्रम रूपवाले होतेभये सो हे नारद! तिस पुण्य आश्रम में वह प्रह्लाद तीर्थयात्राके वास्ते जाताभया ९२ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांवामनप्रादुर्भावेधुन्धुपराजयो नामाष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

---

## उनासीवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! तिस कालिंदी के जल में स्नानकर और बिधि से पूजनकर पश्चात् एक रात्रि उपबास करके वह प्रह्लाद लिंगभेदनाम पर्वत को जाताभया १ फिर तहां जाकर उत्तम व मलसे रहित जलमें स्नानकर और भक्तिसे शिवजीको देख एकरात्रि उपबासकर केदारनाथतीर्थको जाताभया २ फिर तहांस्नान कर शिवजी को और बिष्णुको अभेदरूप भक्तिसे पूज फिर सातरात्रितक उपबासकर कुब्जाम्रतीर्थ को जाता भया ३ तहां पवित्र तीर्थ में स्नानकर और जितेंद्रिय हुआ उपबासकर फिर हृषीकेश भगवान् का पूजनकर बदरिकाश्रमको जाताभया ४ तहां भक्तिसे नारायण का पूजनकर और सरस्वतीके जलमें स्नानकर फिर बाराह तीर्थमें गरुड़ासनको देख फिर भक्तिसे पूजनकर ५ भद्रकर्णतीर्थ बिषे जाताभया तहां जलेश चन्द्रशेखर देवको देख और पूजनकर फिर बिपाशानदी को जाताभया ६

फिर तिसमें स्नानकर द्विजप्रिय देवदेवेश का पूजनकर और उपवासकर इरावती नदी में जाके तिस परमेश्वर को देखताभया ७ कि जिसके आराधन करनेसे पुरूरवा राजा परमरूपको और ऐश्वर्य को प्राप्त होताभया ८ और कुष्ठरोगसे युक्तहुआ भृगु जिसका आराधन करके अतुल और अक्षय आरोग्य को प्राप्त होताभया ९ नारदमुनि ने पूंछा हे महाराज! कैसे पुरूरवा बिष्णुका आराधन करके बिरूपको त्याग सुन्दररूपको प्राप्त होताभया १० पुलस्त्यजी बोले हे नारद! सुनो मैं पापोंकी नाश करनेवाली कथाको कहूंहूं पहले त्रेतायुगकी आदि का यह वृत्तांतहै ११ एक भद्रदेश नामसे प्रसिद्ध ब्राह्मणोंका देश होताभया और तहां शाकल नामवाला नगर होताभया १२ सो तिस नगर बिषे बिषण्ण बृत्तिवाला एक सुधर्मा नाम बैश्य होताभया वह धनाढ्य और गुणवान् भोगी और अनेकशास्त्रों को जाननेवाला हुआ १३ सो वह एक समय अपने नगरसे तहां ब्राह्मणों के नगरमें जानेकी इच्छाकर अनेक प्रकारकी क्रय बिक्रयों की चीज़ोंको ग्रहणकर गमन करताभया १४ फिर तिसके गमन करतेहुये मरुभूमि अर्थात् निर्जल भूमिमें रात्रिके समय चौरोंका दुस्सह दुःख होताभया १५ फिर सर्बस्व द्रव्यसे रहितहुआ वह बैश्य दुःख से युक्तहुआ और असहाय हुआ तिस बनमें उन्मत्तकी तरह बिचरनेलगा १६ फिर तिस बनमें बिचरते हुये दुःखाक्रांत बैश्यको आत्माकी तरह एक जांटीका बृक्ष प्राप्तहोगया १७ तब

मृगपक्षि इन्हों से रहित तिस बृक्षको देख श्रान्त हुआ और तृषा से युक्तहुआ वैश्य तिसके नीचे स्थित होता भया १८ फिर हाराहुआ वह वैश्य सोके फिर मध्याह्न समयमें उठा तब सैकड़ों प्रेतोंसे युक्तहुये आवते प्रेतको देखताभया १९ और अन्य प्रेतपै चढ़ाहुआ और रूखे शरीरवाले अन्यप्रेत पिंडादिकोंको ग्रहणकियेहुये अगाड़ी भाजरहे २० इस प्रकार वह प्रेत बनों में बिचरके फिर तिस जांटी बृक्षकी जड़ में स्थित उस वैश्यको देखताभया २१ फिर उस वैश्यके स्वागतको पूछके परस्पर आभाषणकर और कुशल पूछके तिस बृक्षकी छाया में बैठताभया २२ फिर तिस प्रेतराज ने उस वैश्य से ऐसे पूछा कि तेरा आवना कहांसेहै औरकहां तेरा बासहै और कहांजावेगा २३ और मृगपक्षि इन्होंसे रहित इस अरण्यबनमें मेरी शरण तू आया है यह सब बृत्तांत कहना चाहिये और तेरा कल्याणहो २४ इस प्रकार प्रेताधिप से पूछाहुआ वैश्य अपने धनका क्षय और सब बृत्तांत कहताभया २५ तब तिस बृत्तान्तको सुन वह प्रेत तिसके दुःखसे दुःखितहुआ अपने बंधुकी तरह तिस वणिक् पुत्रसे कहनेलगा २६ कि हे सुव्रत! इसप्रकार धनकेजाने से तुझको शोच नहीं करना चाहिये क्योंकि जो तेरे भाग्यका बलहै तो फिरभी द्रव्य होजावेगा २७ और भाग्यके क्षयमें धनका नाश होताहै और भाग्यके उदय होने में फिर धन होजाता है और क्षीणहुये इस शरीर को चिन्तवन करतेहुये फिर उदय होजाता है २८ ऐसे

कह फिर अपने भृत्योंको बुलाय वचन कहनेलगा कि अब यह अतिथि पूजनकरने लायक है और मेरास्व-जनहै २९ और हे प्रेतो! इसबणिक्पुत्रके दर्शन मुझको स्वजन सरीखे हैं और इसके आने से मुझको अतुल प्रीति उपजी है ३० ऐसे तिस प्रेतके कहतेहुये नवीन दृढ़मृत्तिका का पात्र दही भातसे युक्त और यथेप्सित आताभया ३१ और नवीन और दृढ़ और तोफाजल से भरीहुई ऐसी जलकी मटकी प्रेतों के अगाड़ी आके स्थित होतीभई ३२ फिर वह महामति प्रेत तिसजल के पात्रको और अन्नको आये हुये देख तिस बैश्य के प्रति कहताभया कि हे बणिक्पुत्र! मध्याह्न समय का आचरणकर और भोजनकर ३३ फिर वे दोनों प्रेत और बैश्य तिस जलके पात्रसे बिधानकरके मध्याह्नस-मयका नियम करतेभये ३४ पश्चात् पहले तो वह बैश्य इच्छापूर्बक दध्योदन अर्थात् दही चावलका भोजन क-रताभया और पीछे वह प्रेतराज तिन अन्य प्रेतों के लिये भोजनदेताभया ३५ जब सबभोजन इच्छापूर्बककरचुके तब वह प्रेतपाल तिस भोजनको आप करताभया ३६ फिर वह जब प्रेतपाल इच्छापूर्बक भोजनकरचुका तब वह भोजनकापात्र और जलकापात्र बैश्यके देखतेहुये अंतर्द्धान होगया ३७ तब तिस आश्चर्य को देख वह बुद्धिमान् बैश्य आश्चर्ययुक्त तिस प्रेतपालसे पूछताभया ३८ कि इस अरण्य निर्जलदेश में इस अन्नका समुद्भव कहां से हुआ और तोफाजल से भरी हुई यह जलकी

मटकी कहांसेआई ३९ और ये तेरेभृत्य भयसे रहित हैं और कृशवर्णवाले हैं और आप तेजस्वी हो और किंचित् पुष्टशरीरवाले हो और सुन्दर बाणीवाले हो ४० और सफ़ेदवस्त्रों को धारण करनेवाले हो और बहुतों के पालकहो सो यह क्या प्रकार है मुझसे सब कहना चाहिये ४१ ऐसे तिस बैश्यके बचन सुनके यह प्रेतनायक कहनेलगा और जो पहलेका बृत्तान्तथा वह कहता भया ४२ कि मैं पहले शाकलनाम नगर में सोमशर्म्मा नामवाला बिप्र होता भया और बहुला के उदर से जन्मता भया ४३ और लक्ष्मीवान् और महा धनवाला और बिष्णुभक्त और महायशवाला ऐसा एकसोमस्रवा नामवाला बैश्य मेरा प्रातिवेश्य होता भया अर्थात् उससे द्रब्यका लेना देना रहताथा ४४ सो मैं कदर्य और मूढ़ात्मा धनहोने मेंभी दुर्मतिरहा और ब्राह्मणों के लिये भी कुछ नहीं देता भया और आप भी उत्तम भोजन नहीं करताभया ४५ और जो प्रमादसे दही, दूध, घृतान्वित भोजन को कियाकरता तो रात्रि के समय शूरबीर नरों करके मेरा शरीर खायाजाता ४६ और प्रातःकाल मेरे घोर बिशूचिका मृत्युकी तुल्य अतुलहोगई अर्थात् हैजाहुआ और तब मेरे समीप कोई भी बांधव नहींरहा ४७ परन्तु किसी प्रकारसे मेरे प्राण बचगये इस प्रकार दयासे रहित पापरूप मैं रहता ४८ और बेर, तिलोंकी खल, शक्तु शाक इत्यादिक भोजनों करके और कुत्सित अन्नों करके आत्मा के काल को क्षिप्त किया

करताथा ४९ इसप्रकार आत्माको त्रास देतेहुये मैंने बहुतकाल ब्यतीतकिया फिर श्रवणनक्षत्र से युक्त भाद्रपदमहीनाकी द्वादशी प्राप्तहुई ५० तब नगर के लोग ब्राह्मण, क्षत्रियआदि इरावती नदी में स्नान के वास्ते जाते भये ५१ तब तिस अपने प्रातिवेश्य बैश्यके संग स्नानकरने के वास्ते मैं भी गया ५२ और एकादशी के दिन पवित्र होके उपबास करता भया और तिस संगम में जलसेपूरित और अच्छी पकीहुई नवीन ५३ ऐसी जलकी मटकी बस्त्रसे ढकीहुई और छत्र और उपानह अर्थात् जूतीजोड़ा ५४ और मृत्तिकाका पात्र मीठेदही से युक्त और चावलों से भरेहुये को पवित्र और ज्ञानी और धर्मी ऐसे ब्राह्मणके लिये देताभया ५५ सो हे बणिक्सुत! मैंने जीवतेहुये वही एक दान दिया है और सत्तरि बर्षतक कुछ नहीं दिया ५६ सो मरके मैं प्रेतहुआ मैं अन्नसे उपजीवी इन प्रेतों को उसदान के प्रतापसे भोजन कराताहूँ ५७ सो यह कारण अन्न जलका तेरेप्रति कहा है दियाहुआ यह अन्न मध्याह्न समय दिनदिनकेप्रति आजाताहै ५८ और जबतक मैं भोजन नहीं करूं हूँ तबतक क्षयनहीं होताहै और मेरे भोजनकरने के पीछे और जलपानकिये पीछे सब अंतर्द्धान होजाता है ५९ और जो मैंने छत्रदिया वह ये जांटीका बृक्षहोगया और जूतीजोड़ा देनेसे मेरा बाहन प्रेत होगया है ६० सो हे धर्मज्ञ! मैंने यह बृत्तांत और श्रवणनक्षत्र से युक्त द्वादशीका पुण्यवर्द्धन पुण्य तेरेप्रति

कहाहै ६१ ऐसेबचन कहनेकेपीछे वह वैश्यबचन बोला कि हे तात! जो मेरे करनेलायकहै सो आपकहो ६२ सो हे नारद! ऐसा उसवैश्यका बचनसुन वह प्रेतपाल आत्माको सिद्धिदायक बचनबोला ६३ हे महामते! हे तात! मेरेहितकेवास्ते जो कर्त्तव्य है सो मैं सम्यक् तेरेकल्याणके करनेलायक कहताहूँ ६४ सब तीर्थोंसे सेवित गयाजी में स्नानकर पवित्रहो मेरे नाम के उद्देश से पिंडपातन अर्थात् पिंडदानकर ६५ सो हे सखे! तहां पिण्डदान करनेसे मैं प्रेतभावसे मुक्तहुआ सर्वदान देनेवालों के लोकमें चलाजाऊंगा ६६ और भाद्रपद शुक्लाद्वादशी बुधवार और श्रवणनक्षत्र से युक्त कल्याणदायक है सो तेरेप्रति कही है ६७ ऐसे वह प्रेतपाल अपने अनुचरों समेत अपना नाम यथान्याय अर्थात् पीछे अन्यों के नामको तिस वैश्यके आगे बर्णनकर ६८ फिर तिस प्रेतपालको प्रेतकेकंधेपै स्थितकरवाके तिस मरुदेशको त्याग फिर वह बैश्य सूरसेन नामवाले रमणीकदेश में प्राप्त होताभया ६९ पीछे अपने धर्म कर्म के योगकरके बहुत साधन संचयकर श्रेष्ठगयाजी के तीर्थपै जाताभया ७० और तहां पिण्डदान प्रेतोंके लिये देताभया फिर अपने पितरोंके लिये देताभया और अपने कुटुम्बके लिये देताभया ७१ और वह महाबुद्धिवाला बैश्य तिस गयाजीमें तिलों के बिना अपने निमित्त पिण्डदान देताभया और गोत्रमें उत्पन्नहुयोंके लिये देताभया ७२ इसप्रकार तिन प्रेतोंके लिये पिंड देनेसे वे प्रेत बिमुक्तहुये ब्रह्मलोक में

प्राप्तहोतेभये ७३ और वह वैश्यभी तिस श्रवण द्वादशी को करके अपने स्थान में आताभया फिर कालधर्म से मृत्युको प्राप्तहोगया ७४ फिर गंधर्वलोकमें प्राप्तहो सुंदर भोगों को भोग फिर मनुष्यजन्म को प्राप्तहोताभया और धर्मवाले कुलमें जन्म लिया ७५ तब अपने कर्म की बृत्तिमें स्थितरहा और श्रवण द्वादशी के नियममें युक्तरहा फिर मृत्यु को प्राप्तहोके गुह्यक बनताभया ७६ पीछे तिसजन्ममें इच्छापूर्वक भोगभोगके मर्त्यलोक में प्राप्तहोके राजाका पुत्रहोताभया ७७ फिर तहांभी क्षत्रबृत्ती में स्थित हुआ दान भोगमें रत रहता भया और फिर गौओं के स्थानमें बैरियों के गणको मारके कालधर्म में प्राप्त होगया ७८ फिर इन्द्रलोक में प्राप्त हुआ सब देवताओं से पूजित होताभया फिर पुण्य के क्षय होने से स्वर्ग से परिभ्रष्टहुआ शाकलनगरमें ब्राह्मण होताभया ७९ और बिकटरूपवाला हुआ और सब शास्त्रों के पारको जाननेवाला हुआ और वह द्विज सुन्दररूपवाली द्विजसुताको बिवाहताभया ८० फिर वह भामिनी सुशीलस्वभाववाले अपने पति को मानतीभई और बिरूप मानतीहुई अपनी भार्याकोजान वह द्विज दुःखितहोता भया ८१ फिर दुःखित हुआ इरावती के तटके आश्रम में प्राप्त होके रूपको धारण करनेवाले बिष्णुभगवान् को प्राप्तहोताभया ८२ फिर तिसजगन्नाथको नक्षत्रपुरुष करके आराधित करताभया फिर वह सुन्दररूपको प्राप्त होताभया ८३ तदनन्तर अपनी भार्य्या को प्रिय

हुआ भोग्यताको प्राप्तहोताभया और पूर्वजन्मके अ-भ्याससे श्रवणद्वादशी में रतरहा ८४ ऐसे वह द्विजपुंगव कुरूपवाला भगवान् के प्रसादसे सुरूपवान् हुआ काम-देवके सदृश रूपवाला होता भया और वही द्विजमरके पुरूरवानामवाला राजा होताभया ८५ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांवामनप्रादुर्भावेप्रह्लादतीर्थयात्रायां श्रवणद्वादशीव्रतोनामएकोनाशीतितमोऽध्यायः ७६ ॥

---

## अस्सीवां अध्याय ॥

नारद ने पूँछा हे द्विजश्रेष्ठ ! पुरूरवा जैसे नक्षत्र पुरुषाख्य भगवान्का आराधन करता भया वह आप कहो १ पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! सुनना चाहिये नक्षत्र पुरुष व्रत को मैं कहूँगा और हे नारद ! बिष्णुदेव के जो जो नक्षत्रांगहैं सो कहताहूं २ बिष्णुभगवान् के चरणों में मूलनक्षत्रहै और दोनों पीड़ियोंमें रोहिणीनक्षत्रस्थित है और दोनोंगोड़ोंमें अश्विनीनक्षत्रस्थितहै ३ और दोनों पूर्वा और उत्तराषाढ़ कूलों में और दोनों फाल्गुनी गुदामें स्थितहैं और कृत्तिकानक्षत्र कटी में स्थित है ४ और दोनों भाद्रपद पांशुमें स्थित और रेवती कुक्षिमें स्थित है और छातीमें अनुराधा स्थितहै धनिष्ठा पृष्ठमें स्थित है ५ और बिशाखा भुजाओं में स्थित है और दोनों हाथोंमें हस्त और पुनर्बसु अँगुलियोंमें स्थित है और नखोंमें श्लेषानक्षत्र स्थितहै ६ औरग्रीवामेंज्येष्ठा कानों में श्रवण औरमुखमेंपुष्यस्थितहै और स्वातिनक्षत्र दंत

कहे हैं ७ और ठोढ़ी शतभिषाहै नासिका अनुराधा है और नेत्रोंमें रोहिणी ऐसा रूप प्रतिष्ठितहै ८ और मस्तकपै चित्रा संस्थितहै शिरपै भरणी है और आर्द्रा शिरके बालहैं ऐसे यह हरिका नक्षत्रांग कहाहै ९ सो हेनारद! यथायोग्यसे अबमैं बिधानकहूँगा सम्यक्प्रकारसे पूजितभगवान् यथेप्सित कामनाओंको देतेहैं १० और चैत्रके महीनेकी शुक्लपक्षकी अष्टमी के दिन जब धनराशिपै चन्द्रमा हो तब भगवान् के पैरोंको बिधान से पूजै ११ और नक्षत्र संनिधी के बिषे ब्राह्मणके लिये भोजनदे और रोहिणी नक्षत्रके दिन पीड़ियों का पूजन करै और घृतयुक्त तिल और चावलोंका दान भगवत् की प्रीतिके वास्ते ब्राह्मणके लिये देवे १२ और गोड़ों को भक्तिसे अश्विनी के दिन पूजै और इच्छाकी सिद्धिके लिये पूर्बवत् घृत और अन्नका भोजनदानदेवे १३ और बुद्धिमान् पुरुष पूर्बाषाढ़ और उत्तराषाढ़के दिन दोनों कूलोंका पूजनकरै और शीतल जलका दान देवे १४ और दोनों फाल्गुनियों के दिन भगवान्के गुह्यस्थान अर्थात् गुदाका पूजनकरै और दोहदकी जगह ब्राह्मणों के अर्थ भोजनदेना १५ और कृत्तिकाके दिन कटिका पूजन करै और उपबास करै और जितेंद्रिय रहै और दोहदकी जगह सुगन्ध पुष्प और जलदेवे १६ और पांशुका पूजन दोनों भाद्रपदों के दिन कर और गुड़ चावलों का दान दोहदकी जगह देवे १७ और रेवती नक्षत्रकेदिन दोनों कुक्षियोंका पूजनकरै और दोहदकी

जगह मूँगों के मोदकोंका दानदेवे १८ अ
छाती का पूजनकरै और दोहदकी जगह
देवे १६ धनिष्ठा नक्षत्र में पीठ का पूज
दोहदकी जगह और बिशाखा में दोनों
और दोहदकी जगह परमअ देवे
नक्षत्रके दिन हाथोंका पूज
हनभोग का देवै और पू
करै और ब्रीहिधान्य क
नक्षत्र में नखोंका पूजन
है और ज्येष्ठा नक्षत्र के
दोहद बिषे तिलोंके मोद
कानोंका पूजनकरै और द
पुष्य में मुखका पूजन औ
स्वातिके दिन दांतोंका पूजन
का दोहदकरै और भगवान्की
के लिये भोजनदानदेवे २४ और
पूजनकरै और मालकांगनी और स
हदकरै २५ मघाबिषे नासिकाकोपूजै
जन देवे और मृग का मस्तक शिर
इन्होंका दोहदकरै २६ चित्रानक्षत्र में
करै और दोहदकी जगह सुन्दरभोजन
में शिरका पूजनकरै दोहद में सुन्दर
२७ और बिद्वान् आर्द्रामें भगवान् के
करै और ब्राह्मणों के लिये भोजन दे

जगह गुड़ और अदरक बर्ते २८ इस प्रकार इन
क्षत्र योगों में जगत्के पति भगवान् का पूजन करना
ाहिये और जब समाप्त होजाय तब ब्राह्मण ब्राह्मणी
लिये सुन्दर बस्त्र और दक्षिणा देवे २९ और छतुरी
ीजोड़ा और सतनजा और सुवर्ण घृतपात्र दूध
वाली गौ ये सब ब्राह्मणके लिये देवे ३० और नक्षत्र
ाके प्रति द्विजोंको भोजन करावे और नक्षत्रज्ञब्राह्मण
ये दक्षिणा जुदी देवे ३१

जगह मूँगों के मोदकोंका दानदेवे १८ अनुराधाके दिन छाती का पूजनकरै और दोहदकी जगह कुलथीका दान देवे १९ धनिष्ठा नक्षत्र में पीठ का पूजन कर भक्ति से दोहदकी जगह और बिशाखा में दोनों भुजाओंको पूजै और दोहदकी जगह परमओदन देवे २० और हस्त नक्षत्रके दिन हाथोंका पूजनकरै और दोहद तहां मोहनभोग का देवै और पुनर्बसु में अंगुलियों का पूजन करै और ब्रीहिधान्य का तहां दोहद करै २१ श्लेषा नक्षत्र में नखोंका पूजनकरै और तीतरके मांसका दोहद है और ज्येष्ठा नक्षत्र के दिन ग्रीवाका पूजन करै और दोहद बिषे तिलोंके मोदक बनावे २२ श्रवण नक्षत्र में कानोंका पूजनकरै और दधि चावलका दोहद है और पुष्य में मुखका पूजन और घृत दूधका दोहदकरै २३ स्वातिके दिन दांतोंका पूजनकरै और तिलोंकी पूरियों का दोहदकरै और भगवान्की प्रीतिके वास्ते ब्राह्मणों के लिये भोजनदानदेवे २४ और शतभिषा में ठोढ़ीका पूजनकरै और सालकांगनी और सांठीचावलोंका दोहदकरै २५ मघाबिषे नासिकाकोपूजै और मीठा भोजन देवे और मृग का मस्तक शिर नयन और मांस इन्होंका दोहदकरै २६ चित्रानक्षत्र में मस्तकका पूजन करै और दोहदकी जगह सुन्दरभोजनदेवे और भरणी में शिरका पूजनकरै दोहद में सुन्दर चावलों को वर्ते २७ और बिद्वान् आर्द्रामें भगवान् के बालोंका पूजन करै और ब्राह्मणों के लिये भोजन देवे और दोहद की

जगह गुड़ और अदरक बर्ते २८ इस प्रकार इन नक्षत्र योगों में जगत् के पति भगवान् का पूजन करना चाहिये और जब समाप्त होजाय तब ब्राह्मण ब्राह्मणी के लिये सुन्दर बस्त्र और दक्षिणा देवे २९ और छतुरी जूतीजोड़ा और सतनजा और सुवर्ण घृतपात्र दूध देनेवाली गौ ये सब ब्राह्मणके लिये देवे ३० और नक्षत्र नक्षत्रके प्रति द्विजोंको भोजन करावे और नक्षत्रज्ञब्राह्मण के लिये दक्षिणा जुदी देवे ३१ यह नक्षत्रपुरुषाख्य ब्रत उत्तमहै पहले सब पापोंके नाशके वास्ते भृगुजी ने करा है ३२ और हे देवर्षे! इस ब्रत करके भगवान् के अंगोंका पूजन करने से मनुष्यों के सुरूप अंग होजाते हैं ३३ और सात जन्म के कियेहुये पाप तथा कुल में उपजे तथा पिता और माता से उपजे पाप इन सब पापों को केशव भगवान् नाश देते हैं ३४ और सब मंगलों को प्राप्त होता है और शरीर में उत्तम आरोग्यता होतीहै और मनमें अनन्त प्रीति उपजती है और अतिसुन्दर रूप होजाता है ३५ और मधुर बाणी होतीहै और श्रेष्ठकांति होजाती है और बाञ्छित कार्य होताहै इन सब कार्यों को पूजितहुये भगवान् सिद्ध कर देते हैं ३६ और इन सब नक्षत्रोंमें क्रमसे पूजन करके महाभागा अरुंधती श्रेष्ठ ख्यातिको प्राप्त होगई है ३७ और पुत्रके लिये सूर्यदेव नक्षत्रांग जनार्दन भगवान् का पूजनकर सिद्धिको प्राप्त होगया और बिदर्भ राजा भी गोबिन्दका पूजनकर पुत्रको प्राप्त हुआ ३८ और

जगह मूँगों के मोदकोंका दानदेवे १८ अनुराधाके दिन छाती का पूजनकरै और दोहदकी जगह कुलथीका दान देवे १९ धनिष्ठा नक्षत्र में पीठ का पूजन कर भक्ति से दोहदकी जगह और बिशाखा में दोनों भुजाओंको पूजै और दोहदकी जगह परमओदन देवै २० और हस्त नक्षत्रके दिन हाथोंका पूजनकरै और दोहद तहां मोहनभोग का देवै और पुनर्बसु में अंगुलियों का पूजन करै और ब्रीहिधान्य का तहां दोहद करै २१ श्लेषा नक्षत्र में नखोंका पूजनकरै और तीतरके मांसका दोहद है और ज्येष्ठा नक्षत्र के दिन ग्रीवाका पूजन करै और दोहद बिषे तिलोंके मोदक बनावे २२ श्रवण नक्षत्र में कानोंका पूजनकरै और दधि चावलका दोहद है और पुष्य में मुखका पूजन और घृत दूधका दोहदकरै २३ स्वातिके दिन दांतोंका पूजनकरै और तिलोंकी पूरियों का दोहदकरै और भगवान्‌की प्रीतिके वास्ते ब्राह्मणों के लिये भोजनदानदेवे २४ और शतभिषा में ठोढ़ीका पूजनकरै और सालकांगनी और सांठीचावलोंका दोहदकरै २५ मघाबिषे नासिकाकोपूजै और मीठा भोजन देवे और मृग का मस्तक शिर नयन और मांस इन्होंका दोहदकरै २६ चित्रानक्षत्र में मस्तकका पूजन करै और दोहदकी जगह सुन्दरभोजनदेवे और भरणी में शिरका पूजनकरै दोहद में सुन्दर चावलों को बर्ते २७ और बिद्वान् आर्द्रामें भगवान् के बालोंका पूजन करै और ब्राह्मणों के लिये भोजन देवे और दोहद की

जगह गुड़ और अदरक बर्ते २८ इस प्रकार इन नक्षत्र योगों में जगत्के पति भगवान् का पूजन करना चाहिये और जब समाप्त होजाय तब ब्राह्मण ब्राह्मणी के लिये सुन्दर वस्त्र और दक्षिणा देवे २९ और छतुरी जूतीजोड़ा और सतनजा और सुवर्ण घृतपात्र दूध देनेवाली गौ ये सब ब्राह्मणके लिये देवे ३० और नक्षत्र नक्षत्रके प्रति द्विजोंको भोजन करावे और नक्षत्रज्ञब्राह्मण के लिये दक्षिणा जुदी देवे ३१ यह नक्षत्रपुरुषाख्य ब्रत उत्तमहै पहले सब पापोंके नाशके वास्ते भृगुजी ने करा है ३२ और हे देवर्षे! इस ब्रत करके भगवान् के अंगोंका पूजन करने से मनुष्यों के सुरूप अंग होजाते हैं ३३ और सात जन्म के कियेहुये पाप तथा कुल में उपजे तथा पिता और माता से उपजे पाप इन सब पापों को केशव भगवान् नाश देते हैं ३४ और सब मंगलों को प्राप्त होता है और शरीर में उत्तम आरोग्यता होतीहै और मनमें अनन्त प्रीति उपजती है और अतिसुन्दर रूप होजाता है ३५ और मधुर बाणी होतीहै और श्रेष्ठकांति होजाती है और बाञ्छित कार्य होताहै इन सब कार्योंको पूजितहुये भगवान् सिद्ध कर देते हैं ३६ और इन सब नक्षत्रोंमें क्रमसे पूजन करके महाभागा अरुंधती श्रेष्ठ ख्यातिको प्राप्त होगई है ३७ और पुत्रके लिये सूर्यदेव नक्षत्रांग जनार्दन भगवान् का पूजनकर सिद्धिको प्राप्त होगया और विदर्भ राजा भी गोविन्दका पूजनकर पुत्रको प्रात हुआ ३८ और

लम्बी बाहु बड़ी छातीवाला चन्द्रमाके समान मुखवाला सफ़ेद दांतोंवाला गजेंद्रगामी कमल सरीखे नेत्रोंवाला स्त्रीके चित्तको हरनेवाला कामदेवके समान मूर्त्तिवाला ऐसा पुरुष भगवान्के पूजन करने से होजाता है ३९ और जो स्त्री पूजनकरै तो वह शरद्ऋतुके चन्द्रमाके समान मुखवाली और सुन्दर हास्य और नेत्रोंवाली और बड़ी छाती और सुन्दर गामिनी और तांबा सरीखे ओष्ठ और पैरोंवाली होजाती है ४० और रम्भा और मेनका अप्सरा श्रेष्ठ रूपको प्राप्तहुईं और चन्द्रमा श्रेष्ठ कांतिको प्राप्त होगयाहै और पुरूरवा राजा अपने राज्यको प्राप्त होगया ४१ सो हे नारद! इस बिधानसे भगवान्का नक्षत्रांग कहाहै और जिन ब्रह्मचारियों ने पूजन किया है उन्हों की कामना सिद्धहुई है ४२ और यह परमपवित्र और यशस्य और धान्य और श्रेष्ठरूपदायि ऐसा परमनक्षत्र पुरुषांग तेरे प्रति कहा है अब पवित्र तीर्थयात्राको सुन ४३ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांवामनप्रादुर्भावेप्रह्लादतीर्थ यात्रायांनक्षत्रव्रतोनामाशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

---

## इक्यासीवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! वह प्रह्लाद पवित्र इरावती को प्राप्त होके तिसमें स्नानकर और चैत्र की अष्टमी के दिन जनार्दन भगवान्का पूजनकर १ हे मुने! वेदोक्त बिधिसे फिर स्नान बिधिकर भक्तिसे एकरात्री व्रतकर

कुरुध्वज का पूजनकर २ फिर शुद्ध होके नृसिंह भगवान् को देखने के वास्ते जाताभया फिर यमुनाजी में स्नान कर और नृसिंह का पूजन कर ३ और एकरात्री व्रतकर फिर गोकर्णतीर्थ बिषे वह प्रह्लाद जाता भया और तहां स्नानकर प्राचीदेवेश का पूजनकर ४ और तहां से फिर कामेश्वर देवको देखने के वास्ते जाताभया फिर तहां स्नानकर और कामेश्वर शंकर के दर्शनकर ५ फिर वह प्रह्लाद महान् जलसे युक्त पुंडरीक तीर्थको जाता भया और तहां स्नानकर और देवता और पितरों का पूजन कर तिस देव को देख ६ फिर पुंडरीक देवका पूजन कर और तीन दिनोंतक उपबासकर फिर बिशाखा सहित कृष्णदेवको देख ७ फिर कृष्णतीर्थ में स्नान कर तीन रात्री तक पवित्र हुआ बास करता भया फिर हंसपद तीर्थमें हंसदेवको देख और ईश्वर का पूजन करताभया ८ फिर पयोष्णा नदी के बिषे अखंड तीर्थ देखने को जाता भया और तहां पयोष्णा के जल में स्नानकर जगत्पति अखंडदेव को जपता भया ९ फिर मतिमान् प्रह्लाद बितस्तानदी बिषे जाता भया तहां स्नानकर और देवेश का पूजन कर १० और बालखिल्य मरीचि आदि ऋषियों से आराध्यमान और पापों के नाशकरनेवाले ऐसे वे देवेश हैं और जहां सुरभी शुभाकपिला को ११ अपनी पुत्री को देवकी प्रियता के वास्ते और जगत् के हित के वास्ते रचती भई तहां देवह्रद में स्नानकर भक्तिसे शिवजी का पूजन कर १२ फिर बिधिवत् घृतको भोजन

कर माणिमंत तीर्थको जाताभया फिर तिस प्राजापत्य तीर्थ बर में स्नानकर १३ शिवको और ब्रह्माको और बिष्णु भगवान् को देखताभया फिर बिधान से तिन देवताओं का पूजन कर १४ और छःरात्री तहां बासकर मधुनंदिनी नदीबिषे जाताभया फिर तिसके जलमें स्नान कर चक्रधरदेव १५ और शूलधारी ऐसे गोबिन्द को देखता भया १६ नारद ने पूछा हे देव! बासुदेव भगवान् चक्र और शूलको किस वास्ते धारण करते भये यहमुझको सुनाओ १७ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! यह पवित्र और पुरातनी कथा है तिसको तू सुन जोकि बिष्णु भगवान् पहले मनु के लिये कहगये थे १८ पहले एक जलोद्भव नामवाला महान् असुर होताभया फिर ब्रह्मा जीका महान् तप करताभया तब वह प्रसन्नहो उस दैत्य को बर देता भया १९ कि देवता और दैत्यों से अजय अर्थात् रण में नहीं जीताजाय और शस्त्रों से अवध्य और ब्राह्मण और ऋषियों का शाप न लगे और जल में तथा अग्नि में अपने गुणों को छिपालेवे २० ऐसे स्वभाव वाला वह दैत्य देवताओं को और ऋषियों को और सब राजाओं को पीड़ा देताहुआ पृथ्वी में बिचरने लगा और उग्रमूर्त्तिवाला वह सब क्रियाओं का नाश करता भया २१ तब पृथ्वी में बिचरते हुये देवते और राजे रक्षक बिष्णुकी शरण जाते भये फिर तिन्होंके संग बिष्णु भगवान् जहां त्रिनेत्र शिवथा तहां हिमालयमें जाते भये २२ फिर उग्रकार्मवाले बिष्णु और शिव सला-

हकरके देवर्षियों के कार्यकेहितमें मतिकर शत्रुकेवास्ते अपने शस्त्रोंको बिपरीत करतेभये २३ फिर वह दानव मारने की इच्छावाले बिष्णु और शिवजी को आतेहुये देख घोरशत्रुओं को अजेय जानके अर्थात् नहीं जीते जावेंगे यह जान भयसे नदीकेजलमें प्रवेशहोगया २४ फिर तिस नदी में छिपेहुये शत्रुको देख शस्त्रोंसहित बिष्णु और शिवजी दोनों तहां प्रच्छन्नमूर्त्तिकरके स्थित होगये २५ फिर वह जलोद्भव नामवाला दैत्य शिवजी और बिष्णु को गये हुये जान जल से बाहर निकस डरताहुआ दिशाको देखताहुआ हिमालय पर्वतपै चढ़ताभया २६ फिर वे दोनों बिष्णु और शिवजी पर्वत की शिखरपै चढ़तेहुये शत्रुको देखके बेगसे शस्त्रोंको लिये दौड़तेभये २७ फिर उन दोनों ने तिसकी देह चक्रसे और शूलसे भेदन करदी फिर दीप्त बर्णवाला वह दैत्य पर्वत के शिखरसे ऐसे गिरताभया कि जैसे आकाशसे तारा टूटताहो २८ ऐसे बिष्णु भगवान् त्रिशूलको धारण करतेभये और चक्रको धारण करतेभये सो तहां बितस्तानदी शिवके चरणों में बहती है २९ सो वहां शिवजी की और बिष्णु भगवान् की पूजाकर और उपवासकर फिर वह प्रह्लाद हिमालय पर्वत को जाताभया ३० फिर हिमवत् पर्वत में जाके बिधिसे ब्राह्मणोंके लिये दानदेके फिर भृगुतुंगतीर्थको जाताभया ३१ और जहां महादेवजी बिष्णुके लिये अपने चक्र को देतेभये फिर तिस चक्रकी परीक्षाके वास्ते बिष्णु

भगवान् शिवजी के तीन भाग बनाते भये ३२॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांवामनप्रादुर्भावेप्रह्लादतीर्थ यात्रायांएकाशीतितमोऽध्यायः ८१॥

---

# बयासीवां अध्याय॥

नारदने पूछा हे भगवन्! लोकके नाथ विष्णु के लिये शिवजी महाराज किसवास्ते लोकपूजित शस्त्र-रूपी चक्र को देते भये १ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! इसपुरातनी कथाको तू सावधानहोके सुन यह चक्रप्-दान और शिवके माहात्म्यको बढ़ानेवाली कथा है २ पहले एकबेदबेदांगको जाननेवाला और गृहाश्रमी म-हाभागवीत मन्युनामवाला ब्राह्मण होताभया ३ और तिसके महाभागा आत्रेयी भार्या शीलस्वभाववाली और पतिव्रता और धर्मशीला नामवाली होतीभई ४ फिर ऋतुकालमें गमनकरनेवाला इस महर्षिके शोभा वाला उपमन्युनाम पुत्र होताभया ५ फिर पुत्रको वह माता चावलोंकी पीठीके रससे पोषतीहुई यह कहदेती कि यह दूधहै ६ सो वह बालक दूधको नहीं जानता हुआ तिसरसमें दूधहीकी भावना करलेता ७ फिर वह एकदिन अपने पिताके संग कहीं ब्राह्मणके घरमें दूध चावलोंका स्वादु भोजन करताभया ८ फिर वह ऋषि का बालक दूधका अच्छा स्वादु जानके मातासे दिये हुये दूसरेदिन तिसजलको नहींपीताभया ९ और बाल भाव से रोताभया जैसे जल के वास्ते चातक अर्थात्

पपीहा बोलताहै तैसे फिर उसकी माता रोतीहुई और आँसुओंसे गद्गदबाणीबोली १० कि उमापति महादेव और शूलधारी ऐसे शङ्करके प्रसन्नहुये बिना दूधकेसङ्ग भोजन करना कहा है ११ सो हे सुत ! जो तू दूधके भोजनकीइच्छा करताहै तो बिरूपाक्ष त्रिशूलीदेवका आराधनकर १२ फिर कल्याणदाता तिस जगद्धाता देवके प्रसन्न होने से तू अमृतकाभी पानकरलेवेगा और दूधका तो क्या कहनाहै १३ फिर वह माताका बचनसुन उपमन्यु नाम वाला पुत्र बोलताभया कि हे माता ! तुमने जो आराधन के वास्ते कहाहै वह बिरूपाक्ष देव कौनहै १४ फिर वह धर्मशीला नामवाली माता धर्म के वास्ते बचन कहती भई कि जो बिरूपाक्ष देव है सो सुननाचाहिये मैं कहती हूँ १५ पहले एक श्रीदामा नामवाला महान् दैत्य होताभया तिसने सब जगत् अपने बशमें करलिया और सब लक्ष्मी बश में करली १६ और तीनों लोक तिस दुरात्माने लक्ष्मीसे रहितकरदिये फिर श्रीबत्सचिह्नवाले बिष्णुभगवान्को हरनेकी इच्छा करताभया १७ फिर जनार्द्दन भगवान् तिस दुष्टके अभिप्रायको जानके तिसके बधकी इच्छाकर शिवजी के समीप जातेभये १८ फिर इसीकालके अनन्तर योगमूर्तिको धारणकरनेवाले अबिनाशीशंकर हिमाचलपर्बतके देशमें स्थितहो रहेथे १९ तब तिस सहस्रशिरवाले जगन्नाथशंकरको हरिभगवान् आत्मारूपको अपनी आत्मासे आराधन करतेभये २० और दिव्य एकहज़ारबर्षतक पैरके अं-

गुष्ठकेतान स्थितहोतेभये और योगियोंसे ज्ञेय और लक्षणसे रहित ऐसे परमब्रह्मगिनते अर्थात् जपतेभये २१ फिर वे शिवजी बिष्णुकेलिये बरदानदेतेभये और प्रत्यतेजवाला और दिब्य ऐसे सुदर्शनचक्रको २२ सब भूतोंकोभयदेनेवाला और कालचक्रके समान ऐसे तिस चक्रकोदेके फिर शिवजी बिष्णुके आगे कहतेभये २३ कि हे देवेश! यह श्रेष्ठ आयुध है और सब शस्त्रोंको छेदन करनेवाला है और बारह इस में आरहैं और छः आभा और दोयुगहैं और यह सुदर्शनचक्र बेगवाला है २४ और हे देव! ये आर इस चक्र में महीनों की जगह और राशियों की जगह हैं और शिष्टपुरुषों की रक्षाके वास्ते छः ऋतुहैं २५ और चन्द्रमा, सूर्य, बरुण, इन्द्र, अग्नि, बायु, बिश्वकेप्रजापति २६ बलवाले हनुमान् ये सब देवते और छः ऋतु इस चक्रमें स्थित हैं और अग्नि, सोम और धन्वन्तरि २७ और तप और तपस्या और चैत्रसे आदिले फाल्गुन तक बारहमहीने इसचक्रमें प्रतिष्ठितहैं २८ सो हे देव! तूही इसचक्रको ग्रहणकरके फिर देवताओंके शत्रु दैत्यको शंकासे रहितहुआमार २९ और यह मेरा चक्रराजपूजितहै और अमोघ है मैंने तपके बलसे धारण कियाहै ३० ऐसे कहने के पीछे बिष्णु शिवजीकेप्रति बचनबोले कि हे शंभो! मैं कैसे जानूं कि यह अमोघहै अथवा निष्फल है ३१ और हे बिभो! जो यह सर्वत्र अमोघहै तो इसकीपरीक्षाकेवास्ते तेरे शरीरमें प्रवेशकरूंगा आप ओटिये ३२ ऐसा बिष्णु

से कहेहुये बचनको सुनके शिवजीबोले कि यदि इसीत-
रहहै तो शंकासे रहित चित्तसे मेरे शरीरमें प्रबेशकरो
३३ फिर ऐसा महादेवका बचन सुनके बिष्णु भगवान्
तेजजाननेकी इच्छाकरके तिस सुदर्शनचक्रको शिवजी
केप्रति फेंकतेभये ३४ फिर बिष्णुकेहाथसे छूटाहुआचक्र
शूली अर्थात् शिवको प्राप्तहोके शिवजीको त्रिधा कर-
ताभया और यज्ञ यज्ञमें अग्निके तीनभाग करताभया
३५ फिर बिष्णुभगवान् तीनभागहुये शिवको देखके
लज्जितहुये शिवजीके पैरोंमें गिरतेभये ३६ फिर पैरों
में नम्रहुये बिष्णुको शिवजी देखके प्रसन्नहुये बोले कि
खड़ाहो खड़ाहो ऐसे बारंबार कहतेभये ३७ और हे
महाबाहो! बहुत आरोंवाले इसचक्रका तो यही स्वभाव
है कि छेद्यहो अथवा अछेद्यहो ३८ सबके यह चक्र तीन
टुकड़े करदेताहै और ये मेरे तीनभाग पवित्रहोवेंगे इ-
समें संशयनहीं ३९ यह एकभाग तो हिरण्याक्षहै और
यह दूसरा सुबर्णाक्षनामक है और तीसरा बिरूपाक्ष है
ऐसेये तीनोंभाग मनुष्योंको पुण्यदायीहैं४०सो हे बिभो!
खड़ाहो तूजा तिसदैत्यकोमार और हे बिष्णो! श्रीदामा
दैत्यनिहतहोने पीछे देवता आनन्दित होवेंगे ४१ ऐसे
शिवजीकरके कहाहुआ गरुड़ध्वज भगवान् देवपर्वतके
समीपजाके श्रीदामादैत्यको देखताभया ४२ फिर हरि
भगवान् देवताओंके अभिमानका नाशकरनेवाला तिस
दैत्यकोदेख बेगसे चक्रकोछोड़तेभये औरहे दैत्य! तूमरा
ऐसे बारंबार कहतेभये ४३ फिर सब से अधिक परा-

क्रमवाले तिस चक्रकरके दैत्यकाशिर छेदनहोताभया फिर कटाहुआ शिरवाला वह दैत्य पृथ्वीमें गिरताभया जैसे बज्रसे हतहुआ पर्वत गिरताहो तैसे ४४ फिर बिष्णु भगवान् तिस दैत्यको मारके बिरूपाक्षशिवका आराधन कर तिस बरायुधचक्रकोले फिर क्षीरसागर स्थान में जातेभये ४५ ऐसे तिसबालककी माता कहतीहै कि हे पुत्र! सो देवदेव महेश्वर बिरूपाक्ष यह हैं जो तू दूधके संग भोजनकी इच्छा करताहै तो तिनका आराधन कर ४६ फिर वह बीतमन्युकापुत्र माताका बचनसुन बिरूपाक्ष देवका आराधनकर दूधके संग भोजन को प्राप्तहोताभया ४७ ऐसे शिवजी के माहात्म्यवाला और जहां शिवका छेदनहुआ ऐसे पुरातनतीर्थबिषे पुण्यहेतु के वास्ते वह प्रह्लाद जाताभया ४८॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांवामनप्रादुर्भावेप्रह्लादतीर्थ यात्रायांद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२॥

## तिरासीवां अध्याय॥

पुलस्त्यजीबोले हे नारद! फिर तिसतीर्थबरमेंस्नानकर और त्रिलोचनदेवको देख सुबर्णाक्ष शिवका पूजनकर फिर नैमिषतीर्थबिषे जाताभया १ तहां पापोंके हरने वाले तीसहज़ारतीर्थहैं और गोमतीनदीबिषे कांचनाक्ष देवहै और शुभदेनेवाले आश्रम तहां वासकरतेहैं २ सो वह प्रह्लाद तिनआश्रमोंको और ऋषियोंको पूज और देवदेव शिवजीका पूजन बिधिसेकर ३ फिर गयाबिषे गो-

मतीनदीके देखनेको जाता भया तहां ब्रह्मसरमें स्नान कर और प्रदक्षिणाकर ४ पितरोंको पिंडदान देताभया फिर उदपानतीर्थमें स्नानकर और तहां पितरोंका अर्चन कर ५ और गयापति तथा गोपतिशंकर का पूजनकर और इन्द्रतीर्थ में स्नानकर और पितर, देवताओं का पूजनकर ६ फिर महानदी के जलमें स्नानकर सरयूनदी बिषे आता भया तहां स्थानकर और देवताओं का पूजनकर फिर कुशेशय स्थानबिषे जाता भया ७ तहां एकरात्री तक उपबासकर बिरजानदी बिषे जाता भया तहां स्नानकर और पितरों को पिंडदान देके ८ फिर जिन पुरुषोत्तम भगवान् के दर्शन के वास्ते जाता भया तिन पुंडरीकाक्ष शुचिभगवान् के दर्शनकर ९ तहां छः रात्रीतक उपबासकरके महेंद्र दक्षिणको जाताभया तहां अर्द्धांगी के ईश्वर शम्भुदेव को १० देख और पूजन कर और पितरोंका पूजनकर और महेंद्रदेव का पूजन कर उत्तर दिशा में गया तहां देववर शम्भु को देख ११ और सोमतीर्थ में स्नानकर फिर सह्याचल-पर्वत बिषे प्राप्त होता भया फिर तहां महोदकी के जलमें स्नानकर और बैकुण्ठदेव का अर्चनकर १२ और देवता, पितर इन्होंका पूजनकर फिर पारिपात्र पर्वत बिषे जाता भया तहां स्नानकर और पराजित देव का पूजन कर १३ फिर कशेरुदेशमें प्राप्तहोके बिश्वरूप शम्भु को देखता भया और तहां गणों से पूजित शिवजी हैं १४ फिर बिश्वेश्वर महादेव को देखता भया और पूजन करता

भया और तहां मणिकर्णिका तीर्थ बिषे स्नान करता भया १५ फिर वहप्रह्लाद सौगन्धमहाद्रि को जाता भया तहां महाह्रद में स्नानकर फिर शिवजी का पूजनकर १६ फिर वह योगात्मा प्रह्लाद बिन्ध्याचल में शिवको देखने जाताभया तहां बिपाशानदी में स्नानकर और शिवका पूजनकर १७ और तीनरात्री तक उपबासकर अवन्ती नगरीबिषे जाताभया तहां क्षिप्रानदी के जलमें स्नान कर और भक्तिसे बिष्णुका पूजनकर १८ फिर श्मशानमें स्थित और महाकालरूप शरीर को धारण करनेवाले ऐसे शिवजी को प्राप्त होता भया १९ और वे शिवजी तामसरूप में स्थितहोके संहार करते हैं और तहां स्थित हुये शिव ने श्वेत नामवाले राजा की रक्षा की है २० और सब भूतोंका नाशक जो कालहै उसे दग्ध कियाहै सो तहां अतिप्रसन्नहुये शिवजी पार्वती के संग बसते हैं २१ और तहां किरोड़ों अपने गण देवताओं से युक्तहैं तिन महाकालरूप और कालाग्नि के नाश करनेवाले शिवजी को देख २२ और धर्मरायको शांत करनेवाले मृत्युके मृत्यु और चित्रबिचित्रक २३ और श्मशान में बास करनेवाले और भूतनाथ और जगत्पति और शूलधारी ऐसे शिव का पूजन कर वह प्रह्लाद निषध संज्ञक देशों को जाता भया २४ फिर महेश्वरदेव को नमस्कारकर और भक्तिसे पूजनकर फिर महोदय तीर्थ को प्राप्तहोके हयग्रीवको देखता भया २५ फिर अश्व तीर्थ में स्नानकर और हयमुखतीर्थ को देख और श्री-

धर भगवान् का पूजनकर फिर पांचालदेश को जाता भया २६ फिर शिवजी के गणोंसे युक्त पांचालिक नाम वाला कुबेर के पुत्र को वह बशी अर्थात् स्वस्थचित्त वाला प्रह्लाद देखके फिर प्रयागतीर्थको जाताभया २७ फिर तहां निर्मल तीर्थ में स्नानकर लोकों में बिख्यात यामुनतीर्थ बिषे बटेश्वर रुद्रको देख और योगशायी माधव को देखता भया २८ फिर महाअसुर अर्थात् प्रह्लाद तिन पूज्य देवताओंका पूजनकर और माघमास में उपबासकर फिर काशीपुरीबिषे जाताभया २९ फिर तहां काशीपुरीमें पृथक्पृथक् तीर्थोंमें स्नानकर और पितर, देवताओंका पूजनकर ३० और काशीपुरी की प्रदक्षिणा कर और लोलनामवाले सूर्य के दर्शन कर मधुबन को जाता भया ३१ फिर तहां स्वयम्भुव देवका दर्शन और पूजनकर पुष्करारण्यको आवताभया ३२ फिर वह प्रह्लाद तिनतिन तीर्थों में स्नानकर और पितर और देवताओंका पूजन करताभया ३३ पवित्र और परम और धनको तथा यशको देनेवाला ऐसा यह पुराण महर्षि अगस्त्यजीने कहाहै यह कहनेसे और सुननेसे और स्मरण करनेसे पापोंको नाशता है ३४॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांप्रह्लादतीर्थयात्रानाम त्रिशीतितमोऽध्यायः ८३॥

---

## चौरासीवां अध्याय॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! जब दैत्योंका राजा प्रह्लाद

भया और तहां मणिकर्णिका तीर्थ बिषे स्नान करता भया १५ फिर वहप्रह्लाद सौगन्धमहाद्रि को जाता भया तहां महाह्रद में स्नानकर फिर शिवजी का पूजनकर १६ फिर वह योगात्मा प्रह्लाद बिन्ध्याचल में शिवको देखने जाताभया तहां बिपाशानदी में स्नानकर और शिवका पूजनकर १७ और तीनरात्री तक उपवासकर अवन्ती नगरीबिषे जाताभया तहां क्षिप्रानदी के जलमें स्नान कर और भक्तिसे बिष्णुका पूजनकर १८ फिर श्मशानमें स्थित और महाकालरूप शरीर को धारण करनेवाले ऐसे शिवजी को प्राप्त होता भया १९ और वे शिवजी तामसरूप में स्थितहोके संहार करते हैं और तहां स्थित हुये शिव ने श्वेत नामवाले राजा की रक्षा की है २० और सब भूतोंका नाशक जो कालहै उसे दग्ध कियाहै सो तहां अतिप्रसन्नहुये शिवजी पार्बती के संग बसते हैं २१ और तहां किरोड़ों अपने गण देवताओं से युक्तहैं तिन महाकालरूप और कालाग्नि के नाश करनेवाले शिवजी को देख २२ और धर्मरायको शांत करनेवाले मृत्युके मृत्यु और चित्रबिचित्रक २३ और श्मशान में बास करनेवाले और भूतनाथ और जगत्पति और शूलधारी ऐसे शिव का पूजन कर वह प्रह्लाद निषध संज्ञक देशों को जाता भया २४ फिर महेश्वरदेव को नमस्कारकर और भक्तिसे पूजनकर फिर महोदय तीर्थ को प्राप्तहोके हयग्रीवको देखता भया २५ फिर अश्व तीर्थ में स्नानकर और हयमुखतीर्थ को देख और श्री-

धर भगवान् का पूजनकर फिर पांचालदेश को जाता भया २६ फिर शिवजी के गणोंसे युक्त पांचालिक नाम वाला कुबेर के पुत्र को. वह बशी अर्थात् स्वस्थचित्त वाला प्रह्लाद देखके फिर प्रयागतीर्थको जाताभया २७ फिर तहां निर्मल तीर्थ में स्नानकर लोकोंमें बिख्यात यामुनतीर्थ बिषे बटेश्वर रुद्रको देख और योगशायी माधव को देखता भया २८ फिर महाअसुर अर्थात् प्रह्लाद तिन पूज्य देवताओंका पूजनकर और माघमास में उपबासकर फिर काशीपुरीबिषे जाताभया २९ फिर तहां काशीपुरीमें पृथक्पृथक् तीर्थोंमें स्नानकर और पितर, देवताओंका पूजनकर ३० और काशीपुरी की प्रदक्षिणा कर और लोलनामवाले सूर्य के दर्शन कर मधुबन को जाता भया ३१ फिर तहां स्वयम्भुव देवका दर्शन और पूजनकर पुष्करारण्यको आवताभया ३२ फिर वह प्रह्लाद तिनतिन तीर्थोंमें स्नानकर और पितर और देवताओंका पूजन करताभया ३३ पवित्र और परम और धनको तथा यशको देनेवाला ऐसा यह पुराण महर्षि अगस्त्यजीने कहाहै यह कहनेसे और सुननेसे और स्मरण करनेसे पापोंको नाशता है ३४॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांप्रह्लादतीर्थयात्रानाम त्रिशीतितमोऽध्यायः ८३॥

---

## चौरासीवां अध्याय॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! जब दैत्योंका राजा प्रह्लाद

तीर्थयात्राको चलागया तब बलिराजा देखनेको कुरुक्षेत्रमें आया १ अत्यन्तधर्मसे युतहुये तिसतीर्थबिषे ब्राह्मणोंमें उत्तम शुक्राचार्यजी श्रेष्ठ ब्राह्मणोंको निमंत्रित करतेभये २ शुक्रजीसे आमंत्रितकिये और तत्त्वकोजाननेवाले ऐसे आत्रेय, गौतम, कौशिक, आंगिरस ऐसे गोत्रोंके ब्राह्मण कुरुजांगलदेशसे ३ उत्तरदिशामें सतलजके पश्चात् प्राप्तहुये पीछे सतलजके जलमें स्नान कर पीछे बिपाशाको गये ४ तहां इसकीर्तिको जान और स्नानकर पीछे पितर और देवतोंकोपूज पीछे सूर्यके किरणोंसे च्युतहुई और पवित्र ऐसी किरणको प्राप्तभये ५ हे नारद! तिसमें सब महर्षि स्नान करके पीछे अतिपवित्र जलवाली बेगवती नदी में स्नानकर ईश्वरीको गमनकरतेभये ६ देविकानदीके जलमें स्नानकर पीछे पयोष्णा नदीमें स्नानकर हे नारद! माधवआदि तपस्वी सुभानवी नदीमें स्नानकरनेको उतरे ७ तहां गोता मारतेहुये अपने प्रतिबिम्बको देखतेभये हे नारद! यह जलके भीतर बड़ा अद्भुतआश्चर्यदेखा ८ जलसे निकसतेहुये और आश्चर्य से युक्तमनवाले वे तपस्वी फिर देखतेभये पीछे स्नानकर सब महर्षि ९ कमलके समान नेत्रोंवाले और लोधाके समान गंधवाले ऐसे ब्रह्माजी को पूजते भये पीछे फिर त्रिलोकी में बिख्यातहुये सरस्वती के तीर्थपे १० और कोटितीर्थपे रुद्रकोटि महादेवजी को देखते भये और नैमिषक्षेत्रमें रहनेवालेद्विज और मागधदेशकेद्विज और सैंधवदेशकेद्विज ११ और धर्मारण्य देशकेद्विज पौष्कर

बासी दण्डकारण्यबासी ताम्रदेशबासी भानुकण्ठ देश बासी देविकातीरबासी १२ ये सब ब्राह्मण तहां शिवजी को देखने के वास्ते आतेभये और किरोड़ों संख्यावाले द्विज हरके दर्शनोंकी लालसाकरतेहुये १३ मैं पहिले मैं पहिले ऐसे कहतेहुये आतेभये तब तिन्हों को आकुल देखके और दग्ध पापोंवालों को जान १४ तिन्हों पै दया करनेके वास्ते शिवजी महाराज अपनी किरोड़ोंमूर्त्ति बनातेभये फिर वे सबमुनि प्रसन्नहोके शिवजीको पूजते भये १५ और पृथक् पृथक् तीर्थोंबिषे स्थित होतेभये ऐसे रुद्रकोटि इसनामसे शिवजी प्रसिद्ध होतेभये १६ तिन्हों के दर्शन के वास्ते महातेजवाला भक्तिमान् प्रह्लाद जाताभया तहां कोटितीर्थ में स्नानकर और पितर, देवता इन्होंका तर्पणकर १७ और रुद्रकोटिका दर्शनकर फिर कुरुदेश और जांगलदेशको जाताभया तहां शिवजीको १८ सरस्वती के जलमें मग्न अर्थात् डूबे हुये को देख सरस्वतीनदीमें स्नानकर भक्तिसे शिवजीका पूजनकरताभया १९ और दक्षिणा दानदेके अश्वमेधतीर्थका पूजनकर देवता और पितरोंका पूजनकर फिर कन्याह्रद में स्नानकर सहस्रलिंग शिवजीका पूजनकरताभया २० फिर शुक्राचार्य की स्तुतिकर सोमतीर्थबिषे जाताभया तहां स्नानकर और पितरोंका पूजनकर भक्तिसे सोमका पूजनकर २१ क्षीरकाबासको प्राप्तहोके महायशवाला प्रह्लाद स्नान करताभया और खिरणीके बृक्षकी प्रदक्षिणा कर २२ फिर वह बुद्धिमान् प्रह्लाद कुरुध्वजदेव के

तीर्थयात्राको चलागया तब बलिराजा देखनेको कुरुक्षेत्रमें आया १ अत्यन्तधर्मसे युतहुये तिसतीर्थबिषे ब्राह्मणोंमें उत्तम शुक्राचार्यजी श्रेष्ठ ब्राह्मणोंको निमंत्रित करतेभये २ शुक्रजीसे आमंत्रितकिये और तत्त्वकोजाननेवाले ऐसे आत्रेय, गौतम, कौशिक, आंगिरस ऐसे गोत्रोंके ब्राह्मण कुरुजांगलदेशसे ३ उत्तरदिशामें सतलजके पश्चात् प्राप्तहुये पीछे सतलजके जलमें स्नान कर पीछे बिपाशाको गये ४ तहां इसकीर्तिको जान और स्नानकर पीछे पितर और देवतोंकोपूज पीछे सूर्यके किरणोंसे च्युतहुई और पवित्र ऐसी किरणको प्राप्तभये ५ हे नारद! तिसमें सब महर्षि स्नान करके पीछे अतिपवित्र जलवाली बेगवती नदी में स्नानकर ईश्वरीको गमनकरतेभये ६ देविकानदीके जलमें स्नानकर पीछे पयोष्णा नदीमें स्नानकर हे नारद! माधवआदि तपस्वी सुभानवी नदीमें स्नानकरनेको उतरे ७ तहां गोता मारतेहुये अपने प्रतिबिम्बको देखतेभये हे नारद! यह जलके भीतर बड़ा अद्भुतआश्चर्यदेखा ८ जलसे निकसतेहुये और आश्चर्य से युक्तमनवाले वे तपस्वी फिर देखतेभये पीछे स्नानकर सब महर्षि ९ कमलके समान नेत्रोंवाले और लोधाके समान गंधवाले ऐसे ब्रह्माजी को पूजते भये पीछे फिर त्रिलोकी में बिख्यातहुये सरस्वती के तीर्थपै १० और कोटितीर्थपै रुद्रकोटि महादेवजी को देखते भये और नैमिषक्षेत्रमें रहनेवालेद्विज और मागधदेशकेद्विज और सैंधवदेशकेद्विज ११ और धर्मारण्य देशकेद्विज पौष्कर

शिवजीका पूजनकर फिर दारुबनमेंजाके श्रीपर्बतको देखताभया ३३ फिर तिस पर्वतपैचढ़के श्रीनिवासदेव का पूजाकरताभया फिर कुण्डिनपुरकोजाके स्नानकर त्रिदिवेश्वर अर्थात् इन्द्रका पूजन करताभया ३४ फिर प्लक्षावतरणतीर्थको प्राप्त होके घ्राण अर्थात् नासिका को तृप्तिदेनेवाले देवता का पूजनकर सूर्यारकतीर्थबिषे बिधिसे चतुर्बाहुदेवका पूजनकर ३५ मगधदेशके बनमें प्राप्तहो व सुधाधिपदेवके दर्शनकर तिसका पूजनकर बिश्वेशदेवके दर्शनकेवास्ते जाताभया ३६ फिर महा-तीर्थबिषे स्नानकर बिष्णुको प्रणामकर फिर शौणतीर्थ को प्राप्त हो फिर सुवर्ण के कवचको धारणकरनेवाले शिवका पूजनकर ३७ महाकाशीबिषे भक्तिसे हंसाख्य शिवकापूजनकर और जगन्नाथका पूजनकर सैंधवार-ण्यको जाताभया ३८ फिर तहां क्षत्राख्य और शंख,शूल को धारणकरनेवाले शिवको पूजनकर त्रिबिष्टपतीर्थको जाताभया ३९ तहां जटाधार नामवाले शिवको देख और हरिको देख फिर पूजनकर कनखलको जाताभया ४० फिर तहां भद्रकालीश और बीरभद्रका पूजनकर फिर धनाधिप मेधानामसे प्रसिद्ध पर्वतको जाताभया ४१ तहां लोकनाथ, पशुपति, शिवका पूजनकर काम-रूप देशको जाताभया ४२ तहां चन्द्रमाकी कांतिस-रीखे पार्वतीसहित शिवजी का पूजन करताभया फिर वह महात्मा प्रह्लाद तिस तीर्थमें जाके महादेवका पूजन करता भया ४३ फिर त्रिकूटपर्वत में चक्रपाणिभगवान्

दर्शनकर पद्माख्यानगरी को जाताभया तहां लोकपूजित और प्रकाशमान ऐसे मित्राबरुण देवताओं का पूजनकर २३ फिर कुमारधाराको प्राप्तहो स्वामिकार्त्तिक को देखताभया फिर कपिलधारामें स्नानकर पितर और देवताओंका तर्पणकर २४ और स्वामिकार्त्तिकके दर्शन कर फिर नर्म्मदानदी बिषे जाताभया तिसमें स्नानकर फिर लक्ष्मीपति भगवान् का पूजन कर २५ पृथ्वी को धारणकरनेवाला और चक्रधारी ऐसे बाराहजीके दर्शन केवास्ते जाताभया फिर कोकामुखतीर्थमें स्नानकर तिस धरणीधर देवका पूजन कर २६ त्रिसौपर्ण महानाम के महादेव को देखने के वास्ते मद्रदेश को जाताभया तहां नारीह्रदमें स्नानकर और शिवजीका पूजनकर २७ कालञ्जरको प्राप्तहो नीलकण्ठ शिवको देखताभया फिर नीलतीर्थ में स्नानकर और शिवजी का पूजनकर २८ सागररूपी प्रभासतीर्थ बिषे शिवजी के दर्शनों के वास्ते जाताभया फिर सरस्वती और समुद्रके संगममें स्नानकर २९ फिर लोकपति शिवजी के दर्शन करता भया और जो दक्षके शाप से दग्धहोके क्षयहुआ ताराधिपचन्द्रमाको ३० शिवजीने और बिष्णुभगवान्ने पुष्ट कियाहै तिन दोनों देवोंका पूजनकर वह प्रह्लाद महालय को प्राप्तहोताभया ३१ फिर तहां शिवजी का पूजनकर उत्तर कुरु देशों को जाताभया तहां पद्मनाभ भगवान् का पूजनकर सप्तगोदावरतीर्थ को जाताभया ३२ फिर तहां स्नानकर त्रिलोकी में बन्दित और भयङ्कर ऐसे

# पचासीवां अध्याय॥

नारदने पूंछा कि हे भगवन्! जिन जपों को प्रह्लाद दैत्य जपताभया तिन गजेन्द्रमोक्षणादिक जपोंको मुझसे कहो १ पुलस्त्यजी बोले हे तपोधन! सुनो इनके स्मरण करने से और सुनने से खोटेस्वप्न का नाश होजाता है २ पहले गजेन्द्रमोक्षण को सुन पीछे पापको नाशकरने वाले सारस्वत स्तोत्रों को सुनो ३ सबरत्नों से युक्त समृद्धिमान् त्रिकूटनामवाला पर्व्वत है और पर्व्वतराज सुमेरुपर्वतका पुत्रहै ४ और क्षीरसागरके जलकी लहरियोंसे जिसकी शिला धोजाती है और पर्व्वतको भेदन करके ऊँचा खड़ाहै और देवर्षिगणोंसे सेवितहै ५ और अप्सराओंसे युक्त और समृद्धिमान् और भिरने में आकुलहै औरगन्धर्व, यक्ष, सिद्ध, चारण, सर्प ६ स्त्रियोंकरके सहितविद्याधर नियमवाले तपस्वी, भेड़िये, हस्ती, सिंह इनसबोंसे युक्तहुआ बिराजरहाहै ७ और पुन्नाग, अमलतास, बेलपत्र, आंवला, पाटला, आंब, नींब, कदम्ब, चंदन, अगर, चम्पक ८ शाल, ताड़बृक्ष, तमालबृक्ष, सरल, अर्ज्जुन, पित्तपापड़ा इन बृक्षोंकरके और अनेक प्रकार के अन्यबृक्षोंसे सब तरफसे आभूषित है ९ और अनेकप्रकारकी धातुओंसे अंकित शृंगोंवाला है और चारो तरफ से झिरता है और तीन बिस्तारवाले शिखरों से शोभित है १० और मृग, बानर, सिंह, हाथी इत्यादिक जीवों से संघुष्ट और मयूरों के शब्दसे युक्तहै ११ और

को देखनेकेवास्ते जाताभया फिर भक्तिसे तिनका पूजन कर परमपवित्र और जाप्य ऐसे गजेंद्रमोक्षण तीर्थ को देखने के वास्ते जाताभया ४४ फिर वह प्रह्लाद तहां तीनमहीनोंतक आदरसे मूल, फल, जल इन्होंका भक्षण करताभया फिर ब्राह्मणोंकेलिये सुवर्णदान दैकै दंडि-कांचन तीर्थको जाताभया ४५ तहां दिव्य और महाशा-खावाला और बनस्पति अर्थात् पीपल बृक्ष के शरीर को धारण कियेहुये और महाश्वापदसंज्ञक जीवों से युक्त ऐसे बिष्णु को देखताभया ४६ फिर तिसके नीचे तीनरात्रीतक स्थित होताभया और स्थंडिलपै शयन करताभया और सारस्वत स्तोत्रका पाठ करताभया ४७ फिर वह बिद्वान् प्रह्लाद सर्ब पापप्रमोचन तीर्थ को और हरिके दर्शनों के वास्ते जाताभया ४८ फिर तिस भगवान्के आगे पापके नाशकरनेवाले दो स्तोत्रों का पाठ करताभया और जिन स्तोत्रोंको क्रोडरूपी भगवान् पहले कहतेभये ४९ फिर तिस स्थान से वह प्रह्लाद शालग्राम महाफल तीर्थ को जाताभया और जहां स्थावर, जंगमोंबिषे स्थितहुआ मृत्यु बिष्णु को सर्बगत मानके रति करताभया और तहां भगवान् के पैरोंका पूजन करताभया ५० सो हे नारद! यह तेरेप्रति प्रह्लादकी तीर्थयात्रा कही है इसके सुनने से और स्पर्श करने से मनुष्य पापों से छूटजाते हैं ५१॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांप्रह्लादतीर्थयात्रायां

चतुरशीतितमोऽध्यायः ८४॥

पीनेकी इच्छाकरके तिस जलमें उतरता भया सो वह तिस पंकज बनमें लीनहुआ हस्तीयूथमें प्राप्तहुआ २२ तिस अव्यक्त मूर्तिवाले भयंकर ग्राहने जल्द ग्रहणकर लिया सो हथिनियों के देखतेहुये और दारुण चिंघाड़ मारतेहुये २३ तिस पंकज बनमें अतिबलवाले ग्राहने हस्तीको भीतर खींचा सो हाथी तो तीरकी तरफ खींचता भया और ग्राह जल में खींचता भया २४ ऐसे तिन्होंका दिव्य हज़ार वर्षतक महायुद्ध होता भया सो जलके भीतरकी फांसियों करके दुःखकी गतिवाला कर दिया २५ और घोरफांसियों से दृढ़ बँधाहुआ वह हस्ती अपनी शक्ति के अनुसार फरकके अतिचिंघाड़ मारता भया २६ और घोर कर्मवाले ग्राहसे गृहीत हुआ और व्यथित हुआ ऊँचा श्वासलेके परमबिपदा को प्राप्त हुआ हरि भगवान्‌का मन करके चिन्तवन करता भया २७ सो वह हाथी नारायण में परायणहुआ तिसी देव की शरण अपनी आत्माकरके होताभया २८ सो बिशुद्ध अन्तरात्माकरके एकात्माका ध्यानकरके जगन्मय देवका भक्तिसे अभ्यास करता भया २९ और केशव भगवान् से अन्यदेव को नहीं पूजता भया और मथित अमृत के फेनसरीखी कांतिवाले और शंख, चक्र, गदा इन्होंको धारण करनेवाले ३० और शुभ हज़ार नामों वाले आदिदेव, अज, बिभु ऐसे देवकी स्तुति करने के वास्ते ३१ वह गज कमलों में उत्तमकमल को अपनीसूंड़ से ग्रहणकर आपदसे छुटनेकी इच्छा करताहुआ स्तोत्र

तिसमें एकसुवर्णका शिखरहै वह सूर्य्य करके सेवित है और अनेकप्रकारके पुष्पों से युक्त और गन्धों से सुगंधित १२ ऐसा दूसरा चांदीका शृंगहै तिसको चन्द्रमा सेवताहै और पाण्डुरवर्णके बादलके समान कांतिवाला और रत्नोंके समूहकेसमान कांतिवाला १३ और हीरा, इन्द्रनीलमणिके तेजके समान कांतिवाला ऐसा तीसरा शृंग उत्तम है और ब्रह्माजी का स्थान है १४ तिसको कृतघ्नीपुरुष नहीं देखसकते हैं और क्रूर और नास्तिक नहीं देखसकते और तपसे रहित और पापीपुरुष भी नहीं देखसकते १५ और तिस शिखर के पृष्ठभाग में सुवर्ण के कमलोंवाला तालाब है और कारंडव, राजहंस इन्होंसे शोभित है १६ और कुमुद कमल सफ़ेदकमल इन्होंसे मंडित और सुवर्णकेशतपत्र कमलों से अलंकृत है १७ और मरकत मणि के समान पत्तों करके और सुवर्णकेसमान पुष्पोंकरके और बेल व रन्ध्रसहित बांस इन्होंसे युक्तहै १८ तिस तालाब में दुष्टात्माग्राह जलके अन्तर निगूढ़ रहता भया और हाथियों को पकड़ने वाला और महाबलवान् होताभया १९ सो एकसमय दान्त और प्रकाशमान शरीरवाला और हाथियों के समूह में जल पीनेवाला मदोन्मत्त जलकाङ्क्षी और पैरों से चलताहुआ पर्व्वत के समान २० ऐसा हस्ती ऐरावत के समान मदकी गन्ध से पर्व्वत को सुगन्धित करताहुआ और अंजन के समान कान्तिवाला और मद से चलायमान नेत्रोंवाला २१ तृषित हुआ जल

रूप और सुन्दर मुकुटवाले और अजर ऐसे आपको नमस्कारहै ४१ और नाभिसे जात कमलवाले और चतुर्भुजी क्षीरसागरमें शयन करनेवाले और अनेक तरहके मुकुट और आभूषणोंको धारणकरनेवाले सर्वेश्वर बरके देनेवाले ऐसे आपको नमस्कारहै ४२ और भक्तिप्रिय बरसे दीप्त सुदर्शनवाले और फूलेहुये कमल सरीखे नेत्रोंवाले इन्द्रके बिघ्नोंकी शांतिके लिये उद्यम करनेवाले योगीश्वर रजोगुणसे रहित ऐसे आपको नमस्कारहै ४३ और ब्रह्मरूप और देवताओंके प्रेरक, लोकप्रेरक, आत्मोद्भव, नारायण, आत्माकेहितरूपी और महाबराहरूपी ऐसे आपको नमस्कार है ४४ और कूटस्थ,अव्यक्त, अचिंत्यरूप, नारायण, आदिदेव, युगांत में शेषरूप पुराण पुरुष ऐसे देवदेवकी मैं शरण हुआ हूं ४५ योगेश्वररूप सुन्दर और बिचित्र मालावाले और अज्ञेय और अग्रच और प्रकृतिसेपरे क्षेत्रज्ञ, आत्मप्रभव, श्रेष्ठ ऐसे देवदेवकी शरण मैं हुआहूं ४६ और जिसको अक्षररूप ब्रह्म कहतेहैं और सर्वब्यापी कहते हैं और जिसके बिचार करनेसे मृत्युके मुखसे छूटजाता है ऐसे वह पुरुष श्रेष्ठगुणों से युक्त और परायण और शाश्वत बिष्णुको प्राप्त होजाता है ४७ और कार्यरूप और क्रिया कारणरूप और अप्रमेय और हिरण्यबाहु और पद्मनाभ और महाबल और बेदनिधि और देवताओंके ईश ऐसे बिष्णु भगवान्‌की मैं शरणहूं ४८ और मुकुट, बाजूबंद, महार्हमणि इन्होंको शरीरमेंधारणकरने

का पाठ करताभया ३२ गजेंद्र कहता है ॐमूलप्रकृति और अजित महात्मा और अनाश्रितदेवनिस्पृह ऐसे आपको नमस्कारहै ३३ और गुह्य और गूढ़ और गुण रूप और गुणवर्त्ती, अप्रतर्क्य और अप्रमेय, अतुल ऐसे आपको नमस्कारहै ३४ और शिवरूप, शांत, निश्चितरूप, यशस्वी, सनातन, पूर्ब और पुराणरूप ऐसे आपको नमस्कार है ३५ और देवाधिदेव के लिये और स्वभाव के लिये नमस्कार है और जगत्प्रतिष्ठ और गोबिंद के लिये नमस्कार है ३६ और पद्मनाभ को नमस्कार है और सांख्ययोगोद्भव को और बिश्वेश्वर देवको और हरिको नमस्कार है ३७ और तिस निर्गुण रूप और गुणात्मा को नमस्कार है और नारायण को और बिश्वेश्वर और देवताओं को व परमात्मा को नमस्कार है ३८ और कारणकरके बामनरूपी आपको नमस्कार है २ और अमित बिक्रमवाले नारायणको और शार्ङ्ग, धनुष, चक्र, गदा, खड्ग इन्होंको धारण करनेवाले तिस पुरुषोत्तमको नमस्कार है ३९ और गुह्य देवनिलय, महोदर, सिंहरूप, दैत्यों की मृत्युरूप, चतुर्भुजाओंको धारण करनेवाले और ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र, मुनि, चारण इन्हों से संस्तुत हुये उत्तमदेव बरके देनेवाले अबिनाशी ऐसे आपको नमस्कारहै ४० और शेषनाग पै शयन करनेवाले सुरप्रिय और गौकादूध, सुवर्ण, सुआ, नीलवर्ण के मेघ इन्होंके सदृश उपमावाले पीताम्बरको धारण करनेवाले और मधुकैटभके नाशी और बिश्व-

हेसुब्रह्मण्य! आपको नमस्कार है शरण आयेहुये की मेरी आप रक्षाकरो ५९ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! तिस नाग अर्थात् हस्ती की भक्तिका चिन्तवन करके शंख, चक्र, गदा इन्होंको धारण करनेवाले विष्णु भगवान् प्रसन्न होतेभये ६० फिर केशव भगवान् तिससरोवरके समीपताकी कल्पनाकर गरुड़ पै स्थित होके ६१ तिस ग्राहग्रस्त गजेन्द्रको और ग्राहको अप्रमेयात्मा भगवान् वेग करके जलाशय से बाहिर निकासते भये ६२ फिर माधव भगवान् स्थलमें स्थित तिस ग्राहको चक्रसे बिदारण करते भये और शरणागत गजेन्द्रको फांसियों से छुटाते भये ६३ सो वह देवल ऋषिके शापसे हूहू गन्धर्व ग्राह होगयाथा सो श्रीकृष्णसे मृत्युको प्राप्त होके स्वर्ग को प्राप्त होताभया ६४ और गज भी विष्णु भगवान् से स्पर्श हुआ दिव्य शरीरवाला पुरुष होताभया ऐसे वे दोनों गज और ग्राह बिपद्से छूटतेभये ६५ और कमल सरीखे नेत्रोंवाले और शरणागतकी रक्षा करने वाले ऐसे भगवान् तिन्हों से पूजित हुये प्रसन्न होते भये ६६ और योगीश्वर भगवान् शरणागत गजेन्द्रके प्रति यह मधुर बचन बोलते भये ६७ श्रीभगवान् कहते हैं कि जो पुरुष मुझको और तुझको और सरोवर को और ग्राहके बिदारणको और गुल्म, कीचक, वेणु, सुमेरु का पुत्र त्रिकूट पर्वत इन्होंके रूपको ६८ और पीपल सूर्य, गौ, पृथ्वी, नैमिषारण्य इन्होंका स्मरण स्थिरबुद्धि वाले ६९ करेंगे और पवित्र व्रतवाले भक्तिकरके सुनेंगे

वाले पीले वस्त्रों को धारण करनेवाले और विचित्र मालाको धारण करनेवाले ऐसे भगवान् की मैं शरण हूं ४९ संसार की उत्पत्ति करनेवाले वेद के जाननेवाले और योगात्मा करके सांख्यके जाननेवालोंमें बड़े और आदित्य, रुद्र, अश्विनीकुमार, वसु इन्होंके प्रभावको बढ़ानेवाले और समर्थ ऐसेआपकी शरणमें मैं प्राप्त हुआ हूं ५० और श्रीवत्सचिह्नवाले महादेव और गुह्य और अन्यकी उपमासे रहित सूक्ष्म, वरेण्य, अभयप्रद ऐसे देवकी मैं शरणहूं ५१ और सब भूतों के प्रभव और मुक्त संगवाले यतियोंकी परमगति जो भगवान् हैं तिन्होंकी मैं शरणहूं ५२ और भगवान् और गुणाध्यक्ष और कमल सरीखे नेत्रोंवाले और भक्तवत्सल ऐसे भगवान् की शरण मैं भक्तिकरके होताहूं ५३ और त्रिविक्रम, त्रिलोकेश सबके प्रपितामह योगात्मा और महात्मा ऐसे जनार्दनकी शरणहूं ५४ और आदिदेव, अज, पूज्य, व्यक्ताव्यक्त, सनातन, नारायण, सूक्ष्मरूप, ब्राह्मणप्रिय ऐसे भगवान्की शरणहूं ५५ व श्रेष्ठदेवको नमस्कारहै और सर्वसह और देवेश अन्यकी उपमासे रहित ऐसे भगवान्की शरणहूं ५६ और एकरूप लोक तत्त्व परात्मारूप और हजारशिरवाले अनंत महात्मा ऐसे भगवान्को नमस्कारहै ५७ और वेदके पारको जाननेवाले ऋषि आपहीको परमरूप कीर्त्तन करते हैं और ब्रह्मादिक देवताओंके आप परायणहो ५८ और हेपुंडरीकाक्ष अभयको देनेवाले आपको नमस्कार है

हेसुब्रह्मण्य! आपको नमस्कार है शरण आयेहुये की मेरी आप रक्षाकरो ५९ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! तिस नाग अर्थात् हस्ती की भक्तिका चिन्तवन करके शंख, चक्र, गदा इन्होंको धारण करनेवाले बिष्णु भगवान् प्रसन्न होतेभये ६० फिर केशव भगवान् तिससरोवरके समीपताकी कल्पनाकर गरुड़ पै स्थित होके ६१ तिस ग्राहग्रस्त गजेन्द्रको और ग्राहको अप्रमेयात्मा भगवान् वेग करके जलाशय से बाहिर निकासते भये ६२ फिर माधव भगवान् स्थलमें स्थित तिस ग्राहको चक्रसे बिदारण करते भये और शरणागत गजेन्द्रको फांसियों से छुटाते भये ६३ सो वह देवल ऋषिके शापसे हूहू गन्धर्व ग्राह होगयाथा सो श्रीकृष्णसे मृत्युको प्राप्त होके स्वर्ग को प्राप्त होताभया ६४ और गज भी बिष्णु भगवान् से स्पर्श हुआ दिव्य शरीरवाला पुरुष होताभया ऐसे वे दोनों गज और ग्राह बिपद्से छूटतेभये ६५ और कमल सरीखे नेत्रोंवाले और शरणागतकी रक्षा करने वाले ऐसे भगवान् तिन्हों से पूजित हुये प्रसन्न होते भये ६६ और योगीश्वर भगवान् शरणागत गजेन्द्रके प्रति यह मधुर बचन बोलते भये ६७ श्रीभगवान् कहते हैं कि जो पुरुष मुझको और तुझको और सरोवर को और ग्राहके बिदारणको और गुल्म, कीचक, वेणु, सुमेरु का पुत्र त्रिकूट पर्बत इन्होंके रूपको ६८ और पीपल सूर्य, गौ, पृथ्वी, नैमिषारण्य इन्होंका स्मरण स्थिरबुद्धि वाले ६९ करेंगे और पवित्र ब्रतवाले भक्तिकरके सुनेंगे

तो तिन्हों के दुःस्वप्न का नाश होगा और सुस्वप्न होजावेगा ७० और मत्स्य, कूर्म, बराह, वामन, तार्क्ष्य, नारसिंह, नागेन्द्र, सृष्टि प्रलयके कारणरूप ७१ इन नामों को प्रातःकाल उठके जो मनुष्य स्मरण करेंगे वे सब पापोंसे छूटेंगे और विष्णुलोकको प्राप्त होवेंगे ७२ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! हृषीकेश भगवान् गजेन्द्रके प्रति कहके फिर तिस गजरूप गंधर्व को हाथसे स्पर्श करतेभये ७३ फिर वह गजेन्द्र दिव्य शरीरवाला होके मधुसूदन नारायणकी शरणमें प्राप्त होताभया ७४ फिर वे नारायण तिस पापरूप बन्धनसे गजेंद्रको छुटाके बेद परायण ऋषियों से युक्तहुये ७५ वे भगवान् वहांसे जाते भये और इन्द्र आदिक देवते गजेन्द्रका छुटाना देख ७६ प्रफुल्लित नयनोंवाले हुये बंदन करतेभये और जनार्दन भगवान्की स्तुति करनेलगे और प्रज[illegible] प्रति ब्रह्म जी चक्रपाणि भगवान्का चेष्टित ७७ ग[illegible]
यह बचन बोलतेभये कि जो मनुष्य [illegible]
इसको नित्य सुनेगा ७८ वह परमसिद्धि[illegible]
और खोटा स्वप्न अच्छा होवेगा और य[illegible]
स्तोत्र पुरुषोंके पापोंका नाशकहै ७९ [illegible]
करने से और सुनने से पुरुष तत्काल[illegible]
है ८० और यह भगवान् का चरित्र[illegible]
और कीर्त्तनीयहै और पुण्यको देनेवाल[illegible]
कथन करने से जैसे गजबंधनसे छूटग[illegible]
पापोंसे छूटजावेगा ८१ और अज [illegible]

नारायण,ब्रह्मनिधि,सुरेश, देवगुह्य,पुराण पुरुष ऐसे लो-
काधिपदेवको मैं कहताहूं ८२ पुलस्त्यजीबोले हे नारद!
यह तुमसे स्तोत्रोंमें उत्तम मुरारिका स्तोत्र कहाहै इस
काकीर्त्तनकरनेसे और सुननेसे व चिंतवनकरनेसे पुरुष
पापोंको दूरकरनेवाले भगवान्को प्राप्तहोजाताहै ८३ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांवामनप्रादुर्भावेप्रह्लादतीर्थया
त्रायांगजेन्द्रमोक्षणोनामपञ्चाशीतितमोऽध्यायः ८५॥

# छियासीवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! कोई ब्राह्मणोंसे द्रोहक-
रनेवाला और निंदक और दूसरे को पीड़ा देने में रत
और तुच्छ और स्वभावकरके दयासे रहित ऐसाक्ष-
त्रियाधम अर्थात् नीच होताभया १ तिसने पितर,
देवते, ब्राह्मण इन्होंकी उपासना नहींकी सो आयुक्षी-
णहोने पीछे घोर राक्षस होताभया २ सो वह क्रूर तिसी
पापके दोषकरके और राक्षसपनेसे पापकी बृत्तिकरता
भया ३ सो ऐसे तिसको पापमें रतहुये सैकड़ों वर्ष व्य-
तीत होगये सो तिसी पापके कर्मसेखोटी बृत्तिको नहीं
छोड़ताभया ४ और वह भयंकर कर्म करनेवाला राक्षस
जिस जीवको देखे उसीको हाथोंमें पकड़के खाताभया ५
ऐसे तिस दुष्टको प्राणियोंका बधकरतेहुये बहुत काल
व्यतीत होगया और अवस्थाभी बदलगई ६ सो वह
राक्षस कदाचित् नदीके तटबिषे तपताहुआ महाभाग
और तथावत् जितेन्द्रिय ७ और आगिला इस स्तोत्र

तो तिन्हों के दुःस्वप्न का नाश होगा और सुस्वप्न होजावेगा ७० और मत्स्य, कूर्म, बराह, बामन, तार्क्ष्य, नारसिंह, नागेन्द्र, सृष्टिप्रलयके कारणरूप ७१ इन नामों को प्रातःकाल उठके जो मनुष्य स्मरण करेंगे वे सब पापोंसे छूटैंगे और बिष्णुलोकको प्राप्त होवेंगे ७२ पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! हृषीकेश भगवान् गजेन्द्रके प्रति कहके फिर तिस गजरूप गंधर्व को हाथसे स्पर्श करतेभये ७३ फिर वह गजेन्द्र दिव्य शरीरवाला होके मधुसूदन नारायणकी शरणमें प्राप्त होताभया ७४ फिर वे नारायण तिस पापरूप बन्धनसे गजेंद्रको छुटाके बेद परायण ऋषियों से युक्तहुये ७५ वे भगवान् वहांसे जाते भये और इन्द्र आदिक देवते गजेन्द्रका छुटाना देख ७६ प्रफुल्लित नयनोंवाले हुये बंदन करतेभये और जनार्दन भगवान्की स्तुति करनेलगे और प्रजाके पति ब्रह्माजी चक्रपाणि भगवान्का चेष्टित ७७ गजेन्द्रमोक्षको देख यह बचन बोलतेभये कि जो मनुष्य प्रातःकाल उठके इसको नित्य सुनेगा ७८ वह परमसिद्धिको प्राप्त होवेगा और खोटा स्वप्न अच्छा होवेगा और यह गजेन्द्र मोक्षण स्तोत्र पुरुषोंके पापोंका नाशकहै ७९ और इसके कथन करने से और सुनने से पुरुष तत्काल पापसे छूटजाता है ८० और यह भगवान् का चरित्र परम पवित्र है और कीर्त्तनीयहै और पुण्यको देनेवालाहै और जिसके कथन करने से जैसे गजबंधनसे छूटगया तैसेही पुरुष पापोंसे छूटजावेगा ८१ और अज वरेण्य, पद्मनाभ

नारायण,ब्रह्मनिधि,सुरेश, देवगुह्य,पुराण पुरुष ऐसे लो-
काधिपदेवको मैं कहताहूं ८२ पुलस्त्यजीबोले हे नारद!
यह तुझसे स्तोत्रोंमें उत्तम मुरारिका स्तोत्र कहाहै इस
काकीर्त्तनकरनेसे और सुननेसे व चिंतवनकरनेसे पुरुष
पापोंको दूरकरनेवाले भगवान्को प्राप्तहोजाताहै ८३ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांवामनप्रादुर्भावेप्रह्लादतीर्थया
त्रायांगजेन्द्रमोक्षणोनामपञ्चाशीतितमोऽध्यायः ८५॥

---

# छियासीवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! कोई ब्राह्मणोंसे द्रोहक-
रनेवाला और निंदक और दूसरे को पीड़ा देने में रत
और तुच्छ और स्वभावकरके दयासे रहित ऐसाक्ष-
त्रियाधम अर्थात् नीच होताभया १ तिसने पितर,
देवते, ब्राह्मण इन्होंकी उपासना नहींकी सो आयुक्षी-
णहोने पीछे घोर राक्षस होताभया २ सो वह क्रूर तिसी
पापके दोषकरके और राक्षसपनेसे पापकी बृत्तिकरता
भया ३ सो ऐसे तिसको पापमें रतहुये सैकड़ों बर्ष ब्य-
तीत होगये सो तिसी पापके कर्मसेखोटी बृत्तिको नहीं
छोड़ताभया ४ और वह भयंकर कर्म करनेवाला राक्षस
जिस जीवको देखे उसीको हाथोंमें पकड़के खाताभया ५
ऐसे तिस दुष्टको प्राणियोंका बधकरतेहुये बहुत काल
ब्यतीत होगया और अवस्थाभी बदलगई ६ सो वह
राक्षस कदाचित् नदीके तटबिषे तपताहुआ महाभाग
और तथावत् जितेन्द्रिय ७ और आगिला इस स्तोत्र

करके रक्षाकिये और तपोनिधि, योगाचार्य बासुदेव में परायण ऐसे दक्ष प्रजापतिको देखताभया ८ (दक्षप्रजापतिका रक्षाबर्णन) बिष्णु भगवान् पूर्वबिषे स्थितहों और चक्रको धारणकरनेवाले बिष्णु दक्षिण में स्थित हों और शार्ङ्गधर बिष्णु पश्चिमबिषे और खड्गी विष्णु मेरे उत्तरबिषे स्थितहों ९ और कोणोंबिषे हृषीकेश और तिनछिद्रोंमें जनार्दन भगवान् स्थितहों क्रोड़रूपी हरि पृथ्वीबिषे और नरसिंह आकाशमें स्थितहों १० और फुरताहुआ निर्मल सुदर्शनचक्र जो भ्रमताहै सो इसकी किरणोंकी दुष्प्रेक्ष्यमाला प्रेत और राक्षसोंको नाशितकरे ११ और यह हजार किरणोंवाली अग्नी सरीखे तेजवाली गदा राक्षस, भूत, पिशाच, डाकिनी इन्हों का नाशकरे १२ और बासुदेवके धनुषका फुरना मेरे रिपुओंका नाशकरे और तिर्यग्योनि, कूष्मांड, प्रेतादिक इन्होंका नाशकरे १३ और भगवान्के खड्गकीधारा में आयेहुये जो हैं वे सब शांतहोजावें जैसे गरुड़करके सर्पशांत होजातेहैं तैसे १४ और जो कूष्मांड, यक्ष, दैत्य निशाचरहैं और प्रेत, बिनायक, क्रूरमनुष्य, जृंभक, पक्षिगणहैं १५ और सिंहादिक पशु और दंद शूकादिक सर्प हैं वे सब बिष्णुकेचक्र और गदासेहतहुये सौम्य होजावें १६ और जो चित्तकी बृत्तिको हरनेवाले और स्मृति को हरनेवाले मनुष्यहैं और जो बल, पराक्रम, छाया इन्होंके बिध्वंस करनेवाले हैं १७ जो उपभोगके हर्त्ता हैं और जो लक्षणके नाशकरनेवाले हैं वे सब कूष्मांड विष्णु

केचक्रसेहतहुये नाशको प्राप्तहों १८ और देवदेव बासुदेव केकीर्त्तन करनेसे मेरी बुद्धि स्वस्थहो और मन और इंद्रिय स्वस्थहों १९ और पीछे आगे तथा दाहिनी तरफ तथा बायीं तरफ और त्रिकोणोंमें जनार्दन भगवान् स्थितहों और ईड्य, ईशान, अनंत, ईश्वर, जनार्दनको मनुष्य प्राप्त होके खेद नहीं पाताहै २० और जैसे परब्रह्मरूप हरि हैं तैसेही चररूप जगत्‌भी वही भगवान्‌है सो तिस भगवान् के सत्यनामकीर्त्तन करनेसे मेरे तीनप्रकारके पाप दूरहों २१ ऐसे वह दक्षप्रजापति आत्मरक्षाके वास्ते इस वैष्णव पंजर स्तोत्रका पाठकर संस्थित होरहाथा तब वह बलीराक्षस आवताभया २२ तब तिसद्विजकी कीहुई रक्षाबिषे वह राक्षस बेगसे रहितहोके चारमहीनोंतक स्थितहोता २३ इतनेमें उस द्विजकी समाधि समाप्त हुई सबतक वह राक्षस स्थितरहा फिर समाधि के अंत में तिसराक्षसको दक्षदेखताभया २४ फिर हीन उत्साह से रहित पराक्रमसे रहित ऐसे तिस राक्षसकोदेख कृपा सेयुक्त तिसराक्षसको धीरबंधाके २५ तिसके आगमन केहेतुको यथावत् पूँछताभया और आत्मकाप्रभावदेखनेके वास्ते रक्षाकरके तेजकेनाशकरनेको २६ हे राक्षस! तेरेप्रति कहूंगा तब राक्षस तिस बिप्रकेप्रतिबोला कि आप प्रसन्नहो मैं अपने पापसेदुःखीहूं २७ और मैंने बहुतसे पापकियेहैं और बहुतसेजीव बधकिये हैं और बिधवा तथा पुत्ररहित स्त्री मुझनेमारी है २८ और बिना अपराधवाले अनेकजीवोंका मैंने क्षयकियाहै सो

तिस पापसे आपकी प्रसन्नताकरके मैं छूटनेकी इच्छा करताहूँ २९ सो पापकी शांतिकेवास्ते मुझको संपूर्ण धर्मकी शिक्षादेवो और इस पापके क्षयकरनेवाला उपदेश पूँछताहूँ ३० ऐसे तिसका बचन सुनके वह द्विजोत्तम हेतुमान् श्रेष्ठ बचन कहता भया ३१ कि हे निशाचर क्रूरस्वभाववाले! तेरी चिरकालसे एकबार कैसे धर्ममार्ग में जिज्ञासाहुई ३२ राक्षस कहताहै हे बिप्र! मैं आपके पास आया तब तेरी रक्षाको बलसे क्षिप्त करदिया सो आपके स्वभावसे मेरी उत्तम बुद्धिहुई है ३३ और वह रक्षा कौनसी है मैं नहीं जानता और इसके परायणकोभी नहीं जानता परन्तु तिसकी सानिध्यताको प्राप्तहोके मैं परम सुखको प्राप्तहोगया ३४ सो हे धर्मज्ञ! मेरेबिषे आपकृपाकरो और हे आर्य! जैसे मैं पापको दूरकरनेवाला हों तैसे करो ३५ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ऐसे तिस राक्षसके कहनेसे महाभाग दक्ष बहुत देरतक बिचारके बोले ३६ दक्षऋषि कहते हैं जो तू अपने कर्म करके दुःखी होरहाहै सो यह पापका स्वभावहै और पापोंकी निवृत्ति उपकारसे है ३७ और मैंतो राक्षसोंको धर्मका उपदेश नहीं करूंगा और जो ब्राह्मण अति बचन बोलनेमें रत रहतेहैं उन्होंसे तू पूँछ ३८ ऐसे कहके वह विप्र जाताभया और वह राक्षस चिंताको प्राप्त होताभया मैं पापसे कैसे छूटूं ऐसे चिंतासे व्याकुलेन्द्रियहोगया ३९ फिर वह राक्षस क्षुधासे पीड़ितहुआभी जीवोंको नहीं खाताभया और छठे छठे कालमें अर्थात् छः लंघन

करके एक जीवको भक्षणकरताभया ४० सो वह कदा-
चित् क्षुधासेयुक्तहुआ गह्वरवनमें बिचरताभया तहां फ-
लाहारकोलिये आवतेहुये ब्रह्मचारीको देखताभया ४१
फिर तिस राक्षसने उस ब्रह्मचारी को पकड़लिया तब
राक्षससेगृहीतहुआ वह ब्रह्मचारी जीवनेकी आशा से
रहितहुआ साम अर्थात् समझाने की तरह राक्षस से
कहताभया ४२ हे राक्षस! जो तेराकार्यहै जिसवास्ते मुझे
ग्रहणकियाहै सो तू कह मैंकरूंगा ४३ राक्षसकहनेलगा
छठेलंघनबिषे तू आहार मिला मैं क्षुधित अर्थात् भूखाहूँ
और पापिष्ठहूँ ४४ ब्राह्मणकहनेलगा हे राक्षस! जो मुझ
को तू अवश्य खाता है तो गुरुको ये फलदेके मैं आजाऊँ-
गा ४५ और इन फलों का ग्रहण मैंने गुरु के वास्ते
कियाहै सो इतने इनफलोंको मैं गुरुकोदेके आऊँ तबतक
दोघड़ी तू मुझेछोड़ ४६ राक्षस कहनेलगा कि हेब्रह्मन्!
छठाकालमें आयाहुआ मैंने कोरा देवताभी नहीं छोड़ा
है यहमेरी पापजीविकाहै ४७ और तेरेछोड़नेका एकही
हेतु है सो सुन जो तू करेगा तो मैं निश्चय छोड़देऊँगा
४८ ब्राह्मण कहनेलगा कि जिसमें गुरुका बिरोध नहीं
होवे और धर्मकानाश नहींहो और मेरे ब्रतका नाश
नहींहो सो मैं करूँगा ४९ राक्षस कहनेलगा हे ब्रह्मन्!
मैंने अपने स्वभाव से और बिशेषकर जातिके दोष से
और निर्बिवेक चित्तकरके सदापापकर्मकराहै ५० और
बालक अवस्थासेलेके मेरामन धर्ममेंरत नहींरहाहै सो
जिसतरवकरके उसपापका नाशहो सोकहो ५१ और

जोजोकर्म बालकपनेमें कियेहैं तिन्होंको इसखोटीयोनि में प्राप्तहोके मैं दूरनहीं करसक्ता हूँ ५२ सो हे द्विजपुत्र ! जो तू यह सम्पूर्ण मेरेप्रति कहेगा तो क्षुधार्त्तहुआ भी मुझसे छूटजावेगा ५३ नहीं तो मैं तिसीपाप को करनेवाला हूँ और भूखा पियासा हूँ और छठे छठे दिन दया से रहितहुआ मैं जीवको भक्षण करता हूँ ५४ फिर तिसराक्षसके कहने से वह ब्राह्मण अतिशंका को प्राप्तहोताभया और तिसको कछु कहने में समर्थ नहींहुआ ५५ फिर वह ब्राह्मण बहुत देरतक बिचार करके अग्निदेवकी शरण होताभया और परमसंदेह को प्राप्त होगया ५६ और स्तुति करनेलगा कि जो मैंने गुरुकी शुश्रूषा के पीछे अग्निकी भक्तिकरी है तो अथवा नियमव्रत कियेहैं तो मेरीरक्षा अग्निकरो ५७ और मैंने जैसे अपनी माता की तथा पिताकी तथा गुरुकी आज्ञाकीहै तैसे अग्नि मेरीरक्षाकरो ५८ और मैंने जो बचनकरके तथा मनकरके तथा कर्मकरके गुरु की आज्ञा भंग नहींकीहै तो मेरीरक्षा अग्निकरो ५९ ऐसे वह ब्राह्मण अपने मनकरके सत्य सौगन्द करता भया तब अग्निदेवकी कृपा से सरस्वती प्रकट होती भई ६० फिर वह सरस्वती राक्षससे आकुलहुये उस ब्राह्मणसे बोली कि हे ब्राह्मण ! तू भय मतकरै अब मैं तेरीसंकटसे रक्षाकरूँगी ६१ इसराक्षसकी रक्षाकरने से तेरीजिह्वा आगे स्थितहोके राक्षससे तुझे छुटादेऊँगी ६२ और वह सरस्वती उस राक्षस ने नहींदेखी और

उस ब्राह्मणके प्रति कहके अन्तर्द्धान होगई ६३ ब्राह्मण कहताहै कि हे राक्षस! तेराकल्याणहो और अन्यपुरुषों का कल्याणहो ऐसा पुण्यको देनेवाला और पाप की शुद्धिकेवास्ते ऐसास्तोत्र मैं कहताहूं ६४ और प्रातःकाल उठके जपनाचाहिये अथवा मध्याह्नमें अथवा सायंकाल विषे संशय से रहितहोके जपने से पुष्टि और शान्ति होजाती है ६५ हरिकृष्ण, हरिकेश, बासुदेव, जनार्दन ऐसे जगन्नाथको मैं प्रणामकरताहूं वह मेरेपापको दूर करो ६६ चराचर के गुरु नाथ गोविंद शेषशायी ऐसे परमदेवको प्रणाम करताहूँ वह मेरेपापको दूरकरो ६७ और शंखधारी, चक्रधारी, धनुषधारी, मालाधारी, लक्ष्मी केपति ऐसे देव मेरेपापको दूरकरो ६८ दामोदर, उदाराक्ष, पुण्डरीकाक्ष, अच्युत, स्तुतिरूप ऐसे भगवान् को मैं प्रणाम करताहूँ सो मेरे पापोंको दूरकरो ६९ नारायण, शौरि, माधव, मधुसूदन, धराधार ऐसे भगवान्को मैं प्रणाम करताहूँ सो मेरेपापोंको दूरकरो ७० और केशव, केशिहंता और कंसहन्ता ऐसे भगवान्को मैं प्रणामकरता हूँ सो मेरे पापों को दूरकरो ७१ श्रीवत्स चिह्नवाला और श्रीश, श्रीधर, श्रीनिकेतन, लक्ष्मीकांत ऐसे भगवान्को मैं प्रणाम करताहूँ सो मेरेपापोंको दूरकरो ७२ और जिस सर्वभूतोंके ईश्वरको यतीजन अक्षररूप से ध्याते हैं तिस बासुदेवकी मैं शरणागत हूँ ७३ और तालबनमें जानेवाले जो भगवान् हैं और जिन्हों को वासुदेवाख्य से ध्यातेहैं तिन्होंकी मैं शरणागत हूँ ७४

सर्वब्यापी, सर्वभूत, सबकाआधार, ईश्वर, बासुदेव ऐसे परब्रह्मकी शरणागतहूं ७५ और जिसपरमात्मा अव्यक्त देवको श्रेष्ठबुद्धिवाले पुरुष कर्मके क्षयहोने पीछे प्राप्त होते हैं तिसकी मैं शरणागत हूं ७६ और पुण्य पाप से रहित पुरुष जिस ईश्वरको प्राप्त होते हैं तिस देवकी मैं शरणागतहूं ७७ और जो ईश्वर ब्रह्मा होके देवता आदि सब जगत्‌को रचताहै तिस ईश्वर की मैं शरणागतहूं ७८ और पहले जो ईश्वर ब्रह्माको देख चतुर्वेदमयी रूप को धारण करताभया तिस ईश्वरकी मैं शरण हूं ७९ और ब्रह्मरूपधर, देवजगत्‌कीयोनि, जनार्दन और सृष्टिबिषे रचनेवालेदेव ऐसे भगवान् को मैं नमस्कार करता हूं ८० और पृथ्वी की रक्षाकी और दैत्यों का नाशकिया देवताओंकी रक्षाकी तिसबिष्णुको मैं सदा प्रणाम करताहूं ८१ और जिसको ब्राह्मण यज्ञोंकरके पूजतेहैं तिस यज्ञभावन यज्ञपुरुष बिष्णुको सदाप्रणाम करताहूं ८२ और जो ईश्वरजीवोंको भजानेकी इच्छा करताहै और लोकोंका नाशकरताहै तिस अनन्त पुरुष रुद्रको सदा प्रणाम करता हूं ८३ और इस रचाहुआ जगत्‌को भक्षणकरके जो रुद्रात्मा नृत्य करताहै तिसको मैं प्रणामकरताहूं ८४ और देवते, दैत्य, पितर, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस जिस ईश्वर के अंशसे हुये हैं तिस सर्व व्यापी ईश्वरको प्रणाम करताहूं ८५ और सब देवते सब मनुष्यजाती वृक्ष बेलिआदिक मृगआदिक पशु ये सब जिस ईश्वरके एकअंश से उत्पन्नहोते हैं तिस सर्वगत

भगवान्को मैं नमस्कार करताहूं ८६ और जिससे परे अन्यकछु नहीं है और जिस महात्मा में सबकछुहै तिस अबिनाशी अनंत सर्वगत भगवान् को मैं नमस्कार करताहूं ८७ और जैसे सबकाष्ठोंमें अग्निगुप्त रहता है तैसेहीजीवों में बिष्णुरहता है सो बिष्णु मेरे सबपापोंको दूरकरो ८८ और चराचर ब्रह्मादिकोंमें जो सर्वव्यापी बिष्णु है और जो अज्ञानको छेदनकरता है सो मेरे पापोंका नाशकरो ८९ और शुभाशुभ कार्य रजोगुण, सत्त्वगुण, तमोगुण से उपजे अनेक जन्मके कर्मों से उत्पन्नहुये मेरेपापोंको दूरकरो ९० और जो रात्रीबिषे तथा प्रातःकाल तथा मध्याह्न समय वा संधियों में मन करके कर्मकर के बचनकर के ९१ कियाहुआ पाप है और ठहरता हुआने गमन करताहुआ ने शय्यापै जो कायाकरके मनकरके बाणीकरके खोटाकर्म किया है ९२ और जो बिनाजाने अथवा मदसे जो पापकिया है सो बासुदेव के कीर्त्तनकरने से जल्द नाश हो ९३ परस्त्री तथा परद्रव्यमें बांछाकरनी तथा द्रोह करना और पर-पीड़ा और दूसरेकी निंदाकरनी तथा महात्माओं की निंदाकरनी ९४ इन्होंका पाप तथा भोज्य, पेय, भक्ष्य, चोष्य, लेह्य इन्हों बिषे जो पाप किया है सो जैसे बिमल जलमें नमकका पात्र नाशमान होजाता है तैसे नाशमानहोजावो ९५ और जो मैंने बालकपने में तथा कुमार अवस्था में तथा यौवन अवस्था में पाप किया है तथा अवस्था के परिणाम में और जन्मांतरमें जो

पापकियाहै ९६ वह नारायण,गोबिन्द, हरिकेशव इन्होंके कीर्त्तनकरने से नाशको प्राप्तहोके जैसे जलमें नमकका बर्त्तनगलजाता है तैसे ९७ और बिष्णु,बासुदेव, हरिकेशव,जनार्दन, कृष्ण इन्होंको बारम्बार नमस्कार है और भविष्यकालके रूपकोलिये और कामदेवके बिघातकरनेवाले आपको नमस्कार है और केशी, चाणूर दैत्य इन्होंके क्षयकरनेवाले आपको नमस्कार है ९८ और आपके बिना बलिराजाको ठगनेवाला कौन है और सहस्राबाहु राजाके अभिमान को खंडन करनेवाला आपके बिना कौनहै ९९ और आपके बिना सेतुबन्धन करनेको अर्थात् समुद्रका पुलबांधनेको समर्थ कौन है और रावणको मारनेमें कौनसमर्थहै १०० और आपके बिना गोकुलको रतिदेनेवाला कौनहै और हेमधुसूदन भगवान्! आपके बिना प्रलम्ब, पूतना इत्यादिकों का मारनेवाला कौन है १०१ और हे देवदेव! आपके बिना दुष्टों को मारनेवाला कौन है और हेदेव! आपकी कृपाबिना मनुष्य उत्तम बैष्णव धर्मको प्राप्त नहीं होता १०२ और प्रारब्धसे अथवा अनिष्टकर्मसे तथा जाना हुआ तथा बिनाजानाहुआ जो पाप किया है तथा सात जन्मोंमें जो पापकियाहै १०३ और महापातक जो किया गया तथा उपपातक जो किया है वह संपूर्ण यज्ञादिकों के करने से तथा जप,होम, ब्रत इन्हों के करने से नाश को प्राप्त होजाताहै १०४ और जो मनुष्य वर्षदिन तक सोलह तिलके पात्रों को पूर्णकर दिन २ के प्रति दान

करै वहभी तिस पूर्वोक्त फलको प्राप्त होजाता है १०५ और शुद्ध ब्रह्मचर्य को प्राप्तहो और भगवान् के स्मरण कोप्राप्तहोके मनुष्य बिष्णुलोकमें प्राप्त होताहै यहमेरा कहा सत्य है १०६ जो यह मैंने सत्य कहा है इस में कछुभी झूठ नहीं है तो दुःखित अङ्गवाला मुझको यह राक्षस छोड़देवो १०७ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ऐसे कहने के पीछे वह ब्राह्मण तिस राक्षस से छूटगया फिर तिस राक्षसके प्रति वह बोला १०८ ब्राह्मण कहनेलगा कि हे राक्षस! भद्रमुख से कहाहुआ और तेरे पापकानाश करनेवाला बिष्णुका सारस्वत स्तोत्र है और यह स्तोत्र सरस्वतीने कहाहै १०९ और अग्निदेवकी प्रेरीहुई सरस्वती मेरी जिह्वा आगे स्थितहोके सबको शान्ति देनेवाला इसबिष्णुस्तोत्रको कहतीभई ११० सो इस स्तोत्र करके तू जगन्नाथ केशव भगवान्का आराधनकर फिर भगवान् के प्रसन्नहोने से तेरेपाप दूरहोजावेंगे १११ हे राक्षस! तू रात दिन इस स्तोत्रकरके भक्तिसे हृषीकेश भगवान्की स्तुतिकर पीछे तू पापसे छूटजायगा ११२ सो स्तुति किये हुये भगवान् सब पापोंका नाश करेंगे इसमें सन्देहनहीं है क्योंकि स्तुतिहुये हरिभगवान् भक्तकी पीड़ा को दूर करते हैं ११३ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! फिर वह राक्षस तिस ब्राह्मणको प्रणामकर और प्रसन्नकर तिसी समय तपकरने के वास्ते शालग्रामको प्राप्तहोता भया ११४ सो रात्रि दिन इस सारस्वत मन्त्रको जपता भया और देवक्रिया रति में युक्तहुआ तपकरनेलगा ११५ फिर

वह राक्षस तहां पुरुषोत्तम भगवान् का आराधन कर सब पापों से मुक्तहोके विष्णुलोक को प्राप्त होताभया ११६ सो हे ब्रह्मन्! नारदमुनि यह सारस्वत स्तोत्र मैंने तेरे प्रति कहाहै तिस ब्राह्मणकी रक्षाके वास्ते सरस्वती ने कहाहै ११७ और जो मनुष्य बासुदेवके इस परमस्तोत्र का पाठकरेगा वह सब पापोंसे छूटजायगा ११८ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांवामनप्रादुर्भावेप्रह्लादतीर्थयात्रायां सरस्वतीस्तोत्रेषडशीतितमोऽध्यायः ८६ ॥

## सत्तासीवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! अब दूसरा स्तोत्र कथा जाताहै हेजगन्नाथ! आपको नमस्कारहै हेदेवदेव! आपको नमस्कारहै हे बासुदेव! आपको नमस्कारहै हे बहुरूप! आपको नमस्कार है १ हे एकशृङ्ग! आपको नमस्कारहै हे वृषाकपे! आपको नमस्कारहै हेश्रीनिवास! आपको नमस्कारहै हेभूतभावन! आपको नमस्कारहै २ हेविष्वक्सेन! आपको नमस्कार है हे नारायण! आपको नमस्कार है हे ध्रुवध्वज! आपको नमस्कार है हे सत्यध्वज! आपको नमस्कारहै ३ हेयज्ञध्वज! आपको नमस्कार है हे दिव्यध्वज! आपको नमस्कारहै हे बालध्वज! आपको नमस्कार है हेगरुड़ध्वज! आपको नमस्कार है ४ हे बरेण्य! हेविष्णो! हे बैकुंठ! हे पुरुषोत्तम! आपको नमस्कारहै और हे जयन्त! हेविजय! हेजय! हेअनन्त! हे अपराजित! आपकोनमस्कार है ५ हे कृतावर्त्त! हेमहावर्त्त! हेमहादेव! आपको नमस्कार

है और हे अनाद्य! हे अनादिमध्यांत! हे महानाभ! आप को नमस्कार है ६ हे वृष्टिमूल! हे महामूल! हे मूलावास! आपको नमस्कार है और हे धर्म्मबास! हे जलावास! हे श्री निवास! आपको नमस्कार है ७ और हे धर्माध्यक्ष! हे प्रजाध्यक्ष! हे लोकाध्यक्ष! आपको नमस्कार है और हे सेनाध्यक्ष! हे कमलाध्यक्ष! आपको नमस्कार है ८ और हे गदाधर! हे श्रुतिधर! हे चक्रधारिन्! हे श्रीधर! हे बनमालाधर! हे हरे! हे धरणिधर! आपको नमस्कार है ९ और हे आर्तिषेण! और हे महासेन! हे पुरुष्टुत! हे बहुकल्प! हे महाकाल! हे कल्पनामुख! १० हे सर्वात्मन्! हे सर्वगत! हे बिरंचे! हे श्वेत! हे केशव! हे नीलरक्त! हे महानील! हे अनिरुद्ध! आपको नमस्कार है ११ और हे द्वादशात्मक! हे कालात्मक! हे परमात्मक! हे व्योमकात्मक! हे स्वब्रह्म! भूतात्मक आप को नमस्कार है १२ और हे हरिकेश! हे महाकेश! हे गुडाकेश! आपको नमस्कार है हे सूक्ष्मस्थूल! हे महास्थूल! हे महत्सूक्ष्म! हे भयंकर! और श्वेतपीतांबरधर! हे नीलबास! १३ और हे कुशापर शयन करनेवाले! आपको प्रणाम है और कमल में शयन करनेवाला और जल में शयन करनेवाला १४ और गोबिंदनाम वाला और प्रीति करनेवाला और हंसनाम से बिख्यात और पीत वस्त्रों में प्रियताकरनेवाला १५ और अधोक्षज और हलकी ध्वजावाला और जनार्दन और बामन रूपवाला और मधुसूदन ऐसे आपको प्रणाम है १६ और हज़ारशिरों वाला और ब्रह्मरूप शिरवाला और हज़ारनेत्रोंवाला और चन्द्रमा, सूर्य, अग्नि

इनरूप नेत्रोंवाला १७ और अथर्व बेदरूप शिरवाला और महाशिरवाला और धर्म रूप नेत्रोंवाला और महानेत्रोंवाला ऐसे आपको प्रणामहै १८ और हज़ारपैरोंवाला और हज़ारभुजों वाला और यज्ञबराह रूपवाला और महाअपूर्व रूपवाला ऐसे आपको प्रणामहै १९ और विश्वदेव और बिश्वात्मन् और बिश्वसंभव और बिश्वरूप और बिश्वको प्रवृत्तकरनेवाला ऐसे आपकोप्रणाम है २० और लंबीशाखाओं वाले बटबृक्ष आपही हैं और मूल फूल इन्हों से अन्वित बृक्षरूप आपही हैं और डालें, अंकुर, लता, पत्ते इनरूपोंवाले भी आपही हैं इस वास्ते आपको प्रणाम है २१ और हे प्रभो! ब्राह्मण आपकेमूलहैं और क्षत्रिय आप की डालें हैं और बैश्य आपकी शाखा हैं और शूद्र आप के पत्र हैं ऐसे बनस्पतिरूपी आपको प्रणाम है २२ और अग्निहोत्र करनेवाले ब्राह्मण आपकेमुख से उत्पन्नभयेहैं और शस्त्रों सहित क्षत्रिय आपकी भुजाओं से उत्पन्न हुये हैं और आपके ऊरुयुग से बैश्य उत्पन्न हुये हैं और आप के पैरों से शूद्र उत्पन्नहुये हैं २३ और आपके नेत्र से सूर्य उत्पन्नहुआ है और आप के पैरों से पृथिवी उत्पन्न हुई है और आपके कानों से दिशा उत्पन्न हुई हैं और आपकी नाभी से आकाश उत्पन्नहुआ है और आपके मन से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ है २४ और आपके प्राणोंसे बायु और आपके कामसे ब्रह्माजी उत्पन्न हुये हैं और आपके क्रोधसे तीन नेत्रोंवाला रुद्र उत्पन्नहुआ है २५ और आपके शिरसे स्वर्ग उत्पन्न हुआ है

और आपकेमुखसेइन्द्र और अग्नि ये दोनोंउत्पन्नहुये हैं और आपके मैलसे पशूउत्पन्नहुये हैं २६ और आपके रोमोंसे ओषधियां उत्पन्न हुईहैं ऐसे बिराट्रूपको धारनेवाले आपको प्रणामहै २७ और पुष्पहास, महाहास इननामोंवाले आपको प्रणाम है और ॐ कार, वषट्कार, वौषट्कार, धरा, स्वधा, स्वाहाकार, हन्तकार इननामों वाले आपको प्रणाम है २८ और सर्वाकार, निराकार वेदाकार इननामोंवाले आपको प्रणामहै और वेदमय देवभी आपहीहैं और सर्वदेवमयभी आपही हैं २९ और सर्वतीर्थमयभी आपही हैं और यज्ञकेभाग को भोजनकरनेवाले आपको प्रणामहै ३० और हज़ार धारावाले और सौधारावाले और भूर्भुवःस्वःइनरूपों वाले और सुन्दरबाणी को देनेवाले और अमृत को देने वाले ऐसे आपको प्रणामहै ३१ और सुवर्णको देनेवाले और वेदको देनेवाले और सबोंकाधाता और ब्रह्माका भी स्वामी और ब्रह्म के आदि का कारण और ब्रह्म रूपको धारणकरनेवाले ऐसे आपको प्रणामहै ३२ परब्रह्मरूपी आपको प्रणाम है और शब्दरूपी आपको प्रणामहै और बिद्याभी आपहीहो और वेद्यरूप भी आपहीहो और वेदनीयभीआपहीहो ३३ और बुद्धिभी आपहीहो और बोध्यभी आपहीहो और बोध्यतारूपी आपको प्रणामहै और होता, होम, हव्य, हूयमान, हव्यराट् ३४ पाता, पोत्ता, पूत, पावनीय इन नामोंवाले आपको प्रणामहै और हन्ता, हन्यमान, क्रीयमाण ३५

नेता,नीति,पूज्य,अज्ञ, विश्व, धाता, शुक्, शुच, विश्वधाम,कपाल, उलूखल, अरणि३६यज्ञपात्र, मंथा और एक प्रकारवाला बहुत प्रकारवाला और तीन प्रकार वाला औरयज्ञ,यजमान,पूज्य,पूजक३७और ज्ञाता, ज्ञेय, ज्ञान ध्यान, ध्येय,ईश्वर, ध्यानयोग,योगी,गति,मोक्ष,धृत,सुख ३८योगांग,ईशान और सर्वगत इननामोंवाला जोतू है तेरेअर्थ प्रणामहै और होता, ब्रह्मा,उद्गाता, यज्ञजल यज्ञस्तंभ,दक्षिणा३९ दीक्षा,पुरोडाश,पशु, पशुवाही, गुह्य,धाता,परम, नरनारायण ४० महाजन, निरयन और हज़ारहांसूर्य और चन्द्रमाओंके समान रूपवाला और बारहआरोंसे युक्त और छःनाभिवाला दो जुओंसेयुक्त ऐसे रथरूपभीआपहीहो ४१और अश्वबक्त,महामेधी, शंभु, शुक्र,वायु,मित्रावरुण,मूर्त्ति,अमूर्त्ति,अनघ,पर४२ प्राग्वंश, कायभूतादि, महाभूत, अच्युत, द्विज, ऊर्ध्वकाय, ऊर्ध्वबर, ऊर्ध्वबीर्य इननामोंवाले आपको प्रणामहै ४३ और महापातकों को नाशनेवाले भी आपही हैं और उपपातकको नाशनेवाले भी आपही हैं और और मुनियोंके ईश और सब पापोंसे रक्षा करनेवाले आपकी शरण मैं प्राप्त हुआहूं४४हे महामुने! सब पापों से छुटानेवाला यह परमस्तोत्र काशीपुरीमें महादेवजीने कहाहै ४५ ऐसे बिष्णुके अग्रभागमें गमन करके पीछे तहां सितोदकतीर्थमें स्नान करने से शान्तस्वरूप महादेव होकर सब पापोंसे निवृत्तहुआ ४६ हे महर्षे! महादेवजीका भाषित और पवित्र ऐसे इसस्तोत्रको पठन

करै तो पापों से रहित और शान्तमूर्त्तिवाले देवते और सिद्धों से पूजित ऐसा मनुष्य होजाता है ४७॥

इतिश्रीवामनपुराणभाषायांवामनप्रादुर्भावेप्रह्लादतीर्थयात्रायां पापप्रशमनस्तवोनामसप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७॥

---

## अट्ठासीवां अध्याय॥

पुलस्त्यजी बोले हे मुने! पापोंको नाशनेवाला दूसरा स्तोत्र तुमसे कहूँगा जिसके पाठकरने से निश्चय पापों का नाशहोजाता है १ और देवतों के ईशरूपी मत्स्यजी को प्रणाम करूंहूं और कूर्म्म, गोविंद, हयशीर्ष, भव, बिष्णु, त्रिविक्रम इन्होंको प्रणाम करूँहूँ २ और माधव ईशान, हृषीकेश, कुमार, नारायण, गरुड़ासन इन्होंको प्रणाम करूँहूँ ३ और ऊर्ध्वकेश और सिंहरूप और अनेक रूपों को धारण करनेवाला और कुरुध्वज और कामपाल और अखंड और ब्राह्मणप्रिय ऐसे बिष्णुको प्रणामकरूँहूँ ४ और अजित और विश्वकर्मा और पुंडरीक द्विजप्रिय और हंस और शंभु और ब्रह्मा और प्रजापति ५ इन्होंको प्रणामकरूँहूँ और शूलबाहु और देव और चक्रधर और शिव और बिष्णु और सुवर्णाक्ष और गोपति और पीतवस्त्रोंवाले ६ ऐसे ईश्वर को प्रणाम करूँहूँ और गदापाणि और कुशेशय और अर्द्धनारीश्वर और देव और पापनाशन ऐसे ईश्वर को प्रमाण है ७ और गोपाल और वैकुंठ और अपराजित और विश्वरूप और सौगन्धि और

सबकालमें शिवरूप इन्होंको प्रणाम है ८ और पंचा-
लिक और हयग्रीव और स्वयंभू और अमरेश्वर और
पुष्कराक्ष और अयोग, केशव ऐसे ईश्वरको प्रणामहै ९
और अविमुक्त और चंचल और ज्येष्ठ और ईश और
मध्यम और उपशान्त और जम्बुकसहितमार्कंडेय ऐसे
ईश्वरको प्रणामहै १० और पद्मकिरण और बड़वामुख
ऐसे ईश्वर को प्रणामहै और बाह्लिक और शिखी और
कार्त्तिकेय ऐसे ईश्वरको प्रणामहै ११ और स्थाणु और
अनघ ऐसे ईश्वरको प्रणामहै और बनमालीको प्रणाम
है और लांगलीशको प्रणामहै और हव्यबाहनको प्र-
णाम है १२ और त्रिसौपर्णको प्रणामहै और धरणीधर
को प्रणामहै और त्रिनाचिकेतु और ब्रह्मेश और शशि
भूषण ऐसे ईश्वरको प्रमाणहै १३ और सब पापों को
नाशनेवाला और कपर्दी ऐसे ईश्वरको प्रणाम है और
सूर्य्य, चन्द्रमा, ध्रुव, रौद्र और महौजस १४ और पद्मनाभ
हिरण्याक्ष,स्कन्द, अव्यय इननामोंवाले ईश्वरको प्रणा-
म है और भीम और हंस और हाटकेश्वर इन नामों
वाले ईश्वर को प्रणाम है १५ और सब काल में हंस
और घ्राणतर्पण और चारुकवच और महायोगी ऐसे
ईश्वरको प्रणामहै १६ और महायोगी ईश्वरको प्रणाम
है और श्रीनिवासको प्रणामहै और पुरुषोत्तमको प्रणाम
है १७ और चतुर्बाहुको प्रणाम है और बसुधाधिपको
प्रणाम है और बनस्पति और पशुपति और मनु और
अव्यय ऐसे ईश्वरको प्रणामहै १८ और श्रीकंठ और

वासुदेव और नीलकंठ और सदाधिप और अनघ और गौरीश और नकुटीश्वर ऐसे ईश्वरको प्रणामहै १९ और मनोहर और कृष्णकेश और चक्रपाणि और यशोधर और महाबाहु और कुशप्रिय ऐसे ईश्वरको प्रणामहै २० और भूधर और छादितगृह और सुनेत्र और शूली और शंखी और भद्राक्ष और बीरभद्र और शंकुकर्णक इन नामोंवाले ईश्वरको प्रणामहै २१ और बृषध्वज और महेश और विश्वामित्र और शशिप्रभ और उपेन्द्र और गोविन्द और पंकजप्रिय इन नामों वाले ईश्वरको प्रणाम है २२ और हज़ार शिरोंवाले ईश्वरको प्रणामहै और कुन्दमाली ईश्वरको प्रमाणहै और काल, अग्नि, रुद्र, देवेश इननामोंवाला और चर्म के बस्त्रोंवाला ऐसे ईश्वरको प्रणामहै २३ और छागलेश और पंकजासन और सहस्राक्ष और कोकनद इन नामोंवाले हरिशंकरको प्रणाम है २४ और अगस्त्य, गरुड़, बिष्णु, कपिल, ब्रह्म, वाङ्मय, सनातन, ब्रह्मा और ब्रह्ममें तत्पर ऐसे ईश्वरको प्रणामहै २५ और प्रतर्क्य और चतुर्बाहु और सहस्रांशु और तपोमय और धर्मराज और देव और गरुड़बाहन २६ और सर्वभूतगत और शान्त और निर्मल और सर्व लक्षण और महायोगी और अव्यक्त और पापनाशन ऐसे ईश्वरको प्रणाम है २७ और निरंजन, निराकार, निर्गुण, निर्मलपद इन नामोंवाले और पापोंकेहर्त्ता और शरण्य ऐसे ईश्वर की शरण में प्राप्तहुआ हूँ २८ और पुराना और पवित्र

और अगस्त्यजी का कहा और धन्यरूप और यशका देनेवाला और बहुतसे पापोंको नाशनेवाला ऐसा यह स्तोत्र कहाहै इसके कीर्त्तन और स्मरण करने से और सुनने से पापोंका नाश होताहै ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांप्रह्लादतीर्थयात्रायांद्वितीय पापप्रणाशनस्तोत्रेऽष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

## नवासीवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! जब दैत्योंके ईश्वर प्रह्लाद तीर्थयात्रामें चलेगये तब बिरोचन का पुत्र बलि देखने को कुरुक्षेत्रमें प्राप्तहुआ १ पीछे तहां महाधर्मयुत तीर्थ में ब्राह्मणोत्तम शुक्राचार्य भार्गवगोत्रके ब्राह्मणोंको आमंत्रित करताभया २ तब शुक्राचार्यके आमंत्रित किये भार्गवोंको सुन आत्रेय, गौतम, कौशिक, आंगिरस इन गोत्रोंवाले मुनि और इन्हींकी पत्नियां कुरुजांगल देशको गये ३ पीछे वे सब मुनि उत्तरदिशामें गमनकर पीछे शतद्रूनदीमें गमन करतेभये पीछे शतद्रूनदी में स्नानकरके पीछे बिपाशाकोगये ४ पीछे तहांभी अरतिको जान और स्नानकर और पितर, देवताओंका पूजनकर पीछे पवित्ररूप और सूर्यके किरणोंसे छूटीहुई किरणा नदीको गमन करतेभये ५ हे देवर्षे! तहां स्नानकर और देवताओं की पूजाकरके सब महर्षि पीछे सुन्दर जलवाली इरावतीमें स्नानकर पीछे ईश्वरी नदीमें गमन करतेभये ६ पीछे वे सब मुनि दिव्य रूपवाली पयोष्णीनदी में स्नान

करनेलगे तब आत्रेय आदि मुनि ७ तिस नदी में गोते मारनेलगे तब चित्रितरूपमुखको देखतेभये अर्थात् हे द्विज श्रेष्ठ! जलके भीतर अति आश्चर्यके कारणको देखने लगे ८ और जब गोतेमारके जलसे निकसे तब नहीं देखतेभये तब फिर आश्चर्य को मानतेहुये ऐसे तहां आश्चर्यकर सब ऋषिजन ९ हेब्रह्मन्! पीछे इसी आश्चर्यको आपसमें कहतेहुये और निरंतर चिंतवनकरतेहुये कि यह क्या देखा ऐसे आश्चर्य करनेलगे १० पीछे समीपमें बनखण्डमें बिस्तृतरूप और मनोहर और श्याम और पक्षियोंकीध्वनिसे शब्दित ११ और अतिऊंचा और आकाशतकब्याबृत और बिस्तृतरूप जटाओंकरके पक्षियों को और अंतर्भूमिको ब्याबृत करताहुआ १२ और पुष्पों वालेहंसों के बर्ण के समानबर्णवाले बृक्षोंसे ब्याप्त जैसे तारागणोंसे ब्याप्त आकाश तैसे १३ और कमलोंसे ब्याप्त और सफेद कमलसे शोभित और लालकमलोंसे ब्याप्त ऐसेबनको देखतेभये १४ तब अतितुष्टिको और परम आनन्दको प्राप्तभये पीछे प्रसन्नमनोंवाले मुनि तिस बनमें प्रवेशकरतेभये जैसे हंस सुन्दर सरोवर में १५ पीछे तिस बनके मध्यमें चारलोकपालोंके पवित्ररूप और लोक पूजित ऐसे आश्रमों को देखतेभये १६ अर्थात् पलाशके बृक्षोंसे आबृत और पूर्वको मुखवाला ऐसा आश्रम धर्म देखा और पश्चिमदिशाको मुखवाला और गूलरके बृक्षोंसे आवृत ऐसा आश्रम अर्थ का देखा १७ और उत्तरको मुखवाला और शुद्धस्फटिक

के समान तेजवाला और पीपलवृक्षोंसे आवृत ऐसा आश्रम मोक्षकादेखा १८ और दक्षिणको मुखवाला और अनेक प्रकारके बृक्षोंसे व्याप्त ऐसा आश्रम काम का देखा ऐसे ये चार आश्रम देखे १९ पीछे इन आश्रमों को आत्रेय आदि मुनि देखकर तहां रमणकरने लगे २० ऐसे धर्म, अर्थ, मोक्ष, काम इन्होंकरके अखण्ड नामसे विख्यात और चतुर्मूर्त्ति और जगत्‌का स्वामी और प्रथमही प्रतिष्ठित ऐसे बिष्णुहैं २१ तिनको योग की आत्मा और बहुश्रुत ऐसे मुनि शुश्रूषा, तप, ब्रह्मचर्य इन्होंकरके हे नारद! पूजतेहैं २२ ऐसे तिस बनमें इकट्ठेहुये मुनिबसतेभये और दैत्योंसे भीतहुये सब मुनि अखण्ड पर्वतका आश्रयकरतेभये २३ हे ब्रह्मन्! और अश्मकुट्ट और मरीचिप संज्ञक अन्य ब्राह्मण कालिंदीमें स्नानकर दक्षिणकी तरफ जातेभये २४ पीछे वे अवन्तिदेशको प्राप्तहोकर तहांबिष्णुकेसमीपजायस्थित हुये तहां बिष्णुके प्रसाद बिना कोई भी प्रवेश करसक्ता नहीं २५ तहांदैत्योंके भयसे बालखिल्य आदिमुनि प्रवेश करतेभये और ब्रह्मचारी रुद्रकोटि में आश्रित होकर स्थितहुये २६ ऐसे गौतम और आंगिरस आदि मुनि जब गमनकरतेभये तब शुक्राचार्यसबभार्गवोंको यज्ञमें प्राप्तकरतेभये २७ जब भार्गवों से अधिष्ठित और महा यज्ञके समान ऐसा यज्ञहोगया तब शुक्राचार्य बिधिसे बलिराज के लिये यज्ञदीक्षाकराताभया २८ पीछे श्वेत-अश्ववाला और श्वेतमाला और चन्दन को धारण

करनेवाला और मृगछाला से पृष्ठभाग में आवृत और कुशाओं से बिचित्रित २९ तिस बिस्तृत रूप यज्ञ में सभापतियों से परिवृत स्थित हुआ और हयग्रीव प्रलम्ब आदि दैत्यों से वार्यमाण ऐसे बलि राजा ३० दीक्षित हुआ और बिन्ध्याचली नाम से बिख्यात और हज़ारहांस्त्रियोंमें प्रधान और पर्वतकी पुत्री ऐसी बलिकीभार्याभी यज्ञकर्म में दीक्षितहुई ३१ पीछे शुक्राचार्यने सफेद बर्णवाला और अच्छे लक्षणोंवाला ऐसा अश्व पृथिवी मंडल में बिचरनेके लिये छोड़ा ३२ ऐसे जब अश्वछोड़ागया और यज्ञकर्मका बिस्ताश्भया और अग्नि में हवनहोनेलगा और अश्वछुटेको तीसरा महीनाहोगया ३३ और दैत्योंकी पूजाहोनेलगी और जब मिथुनराशिपरसूर्यस्थितहुआ ऐसे समयमें अदिति माधव और बामनके समान आकृतिवाला ऐसे देवको जनतीभई ३४ पीछे भगवान् और ईश और नारायणऔर लोकपति और पुरातन ऐसे बामनजी जब जन्मे तब महर्षियों के संग ब्रह्माजीप्राप्तहोकर स्तुतिकरनेलगे ३५ हे माधव! हेसत्त्वमूर्त्ते! आपको नमस्कारहै और हेशाश्वत! हे दिव्यरूप! आपको नमस्कार है और हे शत्रुरूपी वन में प्राप्त अग्निरूप! आप को नमस्कार है हे पापमहा दावाग्ने! आपको नमस्कारहै ३६ हे पुंडरीकाक्ष! आपको नमस्कारहै हे बिश्वभावन! आपको नमस्कार है और हे गदाधर! आपको नमस्कारहै और हे पुरुषोत्तम! आपको नमस्कारहै ३७ और हे नारायण! हे जगन्मूर्त्ते!

हे जगन्नाथ! हे गदाधर! हेपीतबस्त्र! हेलक्ष्मीकांत! हेजनार्दन! आपको नमस्कारहै ३८ और आपही रक्षाकरनेवाले हैं और आपही गोप्ताहैं और आपही बिश्वात्मा हैं और आपही सर्वगतहैं और आपही अविनाशी हैं और आपही सर्वधारी हैं और आपही धराधारी हैं और आपही रूपधारी हैं आपको नमस्कार है ३९ हे वर्द्धिताशेष! हे त्रैलोक्य सुरपूजित! हे दैवतपते! आपबृद्धिको प्राप्तहो ४० और आपही धाता और बिधाता हैं और आपही संहर्त्ता और महेश्वरहैं और हे महालय! हे महायोगिन्! हे योगशायिन्! आपको प्रणाम है ४१ ऐसे स्तुतकिये सर्वात्मा और सर्वगत और हरि, बामन जी कहनेलगे हे ब्रह्मन्! हेबिभो! मेरा उपनयन कर्म्म कराओ ४२ पीछे तिसबामन के जातकर्म्म आदि कर्म्म और यज्ञोपवीत कर्म महातेजवाला और तपस्वी ४३ और सब शास्त्रों को जाननेवाला ऐसा भरद्वाज करवाताभया पीछे सब प्रीतिसे बामनजीके लिये पदार्थदेने लगे ४४ पुलहमुनि बामनजी को यज्ञोपवीत देतेभये और ब्रह्माजी सफ़ेदधोती औ अँगौछा देतेभये और अगस्त्यजी मृगछाला देतेभये और भरद्वाज मेखलादेते भये ४५ और ब्रह्माके पुत्र मरीचि मुनि पलाशका दंड देतेभये और बशिष्ठजी अक्षसूत्र देतेभये और अंगिरा जीकौत्स्यबेद देतेभये ४६ और इन्द्र छत्र देताभया और नृगराजा खड़ाऊं जोड़ा देताभया और अतितेजवाले बृहस्पतिजी कमंडलु देतेभये ४७ ऐसे उपनयनकर्म्म से

युक्त और भगवान् और भूतभावन और मुनियों करके स्तूयमान ऐसे बामनजी अङ्गोंसहित वेदको पढ़तेभये ४८ हे नारद! भरद्वाजसे और बृहस्पतिसे महाआख्यान संयुक्त और गांधर्वसहित ऐसेसामवेदको पढ़तेभये ४९ ऐसे एकमहीनेमें ज्ञान और वेदके समुद्ररूप बामनजी लोकाचारकी प्रवृत्तिकेलिये बेदशास्त्र में कुशलहोगये ५० पीछे सबशास्त्रों में निपुणहोकर बामनजी ब्राह्मणों में श्रेष्ठरूपी भरद्वाजजीसे यहबचन कहनेलगे ५१ बामनजी कहतेहैं हे ब्रह्मन्! महोदयरूप कुरुक्षेत्रमें गमन करताहूं जहां दैत्यपतिबलिराजाका पवित्ररूप अश्वमेधयज्ञप्रवृत्तहोरहाहै ५२ और हे प्रिय! मेरेविषेआविष्ट हुये तेजोंको तू पृथिवीतलमें देख और जो पुण्यको बढ़ानेवाले मेरेअंशहैं वे सबमेरे समीपमेंहैं ५३ इसवास्ते मैं जानताहूं कि बलिराजा कुरुक्षेत्रमें स्थितहै ५४ भरद्वाजबोले कि हे देव! अपनी इच्छासे स्थितरहो अथवा गमनकरो आपको मैं आज्ञानहीं देसक्ता परन्तु हमसब बलिराजाके यज्ञमें गमनकरतेहैं ५५ और हे भगवन्! आपसे मैं यह प्रश्नकरताहूं हे पुरुषोत्तम! नित्यप्रति किसकिस स्थान में ५६ आप सांनिध्यरखतेहो मुझको जाननेकी इच्छाहै इसलिये आप वर्णनकीजिये ५७ बामनजी कहतेहैं हे प्रभो! श्रवणकीजिये मैंकहता हूं कि पवित्ररूपवाले जिनजिन स्थानों में मैं बहुततप करताभया तहांतहां बसताहूं ५८ हे भरद्वाज! मेरेरूपों करके आकाश, पाताल, समुद्र, दिशा, स्वर्ग, सबपर्वत, सब

मेघव्याप्तहोरहेहैं ५९ और पृथिवी को पूरणकरने के वास्ते अनेकप्रकारकेजीवोंकेगण और स्वर्गचारी और पृथिवीचारी और आकाशचारी ६० और स्थावर, जंगम और इन्द्र, सूर्य, चन्द्रमा, यम, बरुण, अग्नि इनआदि लोकपाल और ब्रह्माजीसे लगायत स्थावरतक और द्विज, पत्नी और मूर्त्तिवाले और अमूर्त्तिवाले ये सब मुझसेउपजे हैं ६१ और देवते, सिद्ध, दैत्य इन्होंसे पूजित रूप येहीमुख्यकहेहैं और पृथिवीमंडलमें येहीमेरेसमीप मेंहैं और इन्होंके दर्शनमात्रसे पापोंकासमूहतात्काल नाशहोता है ऐसे मुनिजनोंने भी कहाहै ६२ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांवामनप्रादुर्भावे
एकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

---

## नब्बेवां अध्याय ॥

बामनजी कहतेहैं सबोंसे आद्य महद्रूप मात्स्यनाम से बिख्यात मानसह्रदमें स्थितहै तिसके कीर्त्तन और स्पर्शआदिसे सबपापशान्त होतेहैं १ और दूसरा कौर्म नामसे बिख्यात मेरासन्निधान कौशिकी नदीमेंहै यह भी पापोंको नाशताहै और हयशीर्ष नामसे बिख्यात और कृष्णरूप कन्धा और नेत्रोंवाला ऐसा गोविंदहस्तिनापुरमेंहै २ और कालिन्दी नदीमें त्रिविक्रम नाममेरा रूपहै और लिंगभेदमें भवनाम मेरारूपहै और केदार में माधव, सौरि ऐसेनामोंवाला मेरारूपहै ३ और कुब्जांघ्रिमेंहृष्टमूर्द्धज मेरारूपहै और बदरिकाश्रममें नारायण

नामसे मेरारूप है और बाराहतीर्थमें गरुड़ासननाम मेरा रूप है ४ और रुद्रबर्ण में जयेशनाम मेरा रूप है और बिपाशा में द्विजप्रियनाम मेरारूप है ५ और इरावती में रूपधार मेरारूप है और कुरुक्षेत्र में कुरुध्वज मेरारूप है और कृतशौच तीर्थ में नृसिंहनाम मेरा रूप है और गोकर्ण तीर्थ में बिश्वकर्म्मा मेरारूप स्थित है ६ और प्राचीन में कामपाल नाम मेरा रूप स्थित है और महाजल में पुंडरीकनाम मेरारूप स्थित है और बिशाखयूप में व्यजितनाम मेरारूप स्थित है और हंसपद तीर्थ में हंसनाम से प्रकटरूप स्थित है ७ और पयोष्णी नदी में अखंड नाम से मैं बसताहूं और बितस्ता में कुमारी नाम से बसताहूं और मणिमान् पर्बत में शंभुनाम से स्थितहूं और ब्रह्मतीर्थ में प्रजापति नाम से स्थितहूँ ८ और मधुनदी में चक्रधरनाम से मैं स्थितहूँ और हिमालय में स्थूल बाहुनाम से स्थित हूँ और औषधों के शिखरमें बिष्णुनाम से मैं स्थित हूँ ९ और भृगुतुंग में मैं सुवर्णाक्षनाम से स्थित हूँ और नैमिषतीर्थ में पीतवासानाम से स्थितहूँ और गयाजी में गोपतिदेव, ईश्वर, त्रैलोक्यनाथ, बरद, गदापाणि १० इन नामों से स्थित हूँ और गोप्रतार में कुशेशयनाम से स्थित हूँ और पवित्ररूप माहेन्द्र पर्वत में अर्द्धनारीश्वर नाम से मैं स्थित हूँ ११ और उत्तर में गोपाल नाम से स्थित हूँ और महेंद्र में सोमपीति नाम से स्थित हूँ और सह्यपर्वत में वैकुंठ नाम से स्थित हूँ और पारिपात्र पर्वत में अपराजितनाम से स्थित हूँ १२ और

कशेरु देश में बिश्वरूपनाम से स्थित हूँ और मलय पर्वत में सौगन्धिनाम से स्थित हूँ और बिन्ध्यपर्वत में सदाशिव नामसे स्थित हूँ १३ और अवंतीदेशमें बिष्णु नाम से स्थित हूँ और निषध देश में महेश्वरनाम से स्थित हूँ और हे भरद्वाज! पांचालदेश में पंचालिक नाम से स्थित हूँ १४ और महोदय में हयग्रीव नामसे मुझ को जान और प्रयाग में योगशायि नाम से मुझको जान और मधुबन में स्वयंभू नाम से मुझको जान और पुष्कर में अयोगंधि नाम से मुझको जान १५ और हे बिप्रबर! काशीपुरी में केशव नाम से मुझको जान और इसी जगह अबिमुक्त और लोलनाम से भी मुझ को जान १६ और पद्मापुरी में पद्म किरण नामसे मुझको जान औरसमुद्र में बड़वामुखनाम सेमुझको जान और कुमारधार में बह्लीश, कार्त्तिकेय, बर्ह्ली इन नामों से मुझको जान १७ और अजस में शंभु और अनघ नाम से मुझको जान और कुरुजांगल देश में स्थाणु नाम सेमुझको जान १८ और किष्किंधाबासी जन मुझको बनमाली नाम से कहते हैं और बीर कुबलयारूढ़ और शंख, चक्र, गदाधर, श्रीवत्सांक, उदारांग, लक्ष्मीपति इन नामों से मुझको नर्मदामें जान १९ और माहिष्मती में त्रिनयन और हुताशन नाम से जान और अर्बुद पर्वत में मुझको त्रिसौपर्ण नाम से जान और शूकरपर्वत में मुझको क्ष्माधर नाम से जान २० और हे ब्रह्मर्षे! त्रिणाबिकेत, कपर्दी, शशिशेखर इन नामों से मुझको प्रभास

तीर्थमें जान २१ और उदयमें शशी सूर्य ध्रुव इन नामों से मुझको जान और हे मकुट में मुझको हिरण्याक्ष नामसे जान और शरोंके बनमें मुझको स्कन्द नाम से जान २२ और महालयमें मुझको रुद्र नामसे जान और हे मुनिश्रेष्ठ! सब सुखोंको देनेवाला पद्मनाभनाम से मुझको उत्तर कुरुदेशमें जान २३ और हे ब्रह्मन्! सप्तगोदावर तीर्थ में हाटकेश्वर नाम से मुझको जान और तहांही मुझको महाबासनामसे जान और प्रयाग मेंभी मुझको बटेश्वरनामसे जान २४ और शोणतीर्थ में मुझको रुक्मकवच नामसे जान और कुंडिनपुर में मुझको घ्राण तर्पण नाम से जान और भल्लाबन में महायोगी नामसे और माद्रदेश में पुरुषोत्तम नामसे मुझको जान २५ और प्लक्षावतरण में श्रीनिवास नाम से मुझको जान और सूर्पारक में चतुर्बाहु नाम से मुझकोजान और मगधापुरी में सुराधिपनामसे मुझ को जान २६ और गिरिव्रज में पशुपतिनामसे मुझको जान और यमुनाके तटमें श्रीकंठनामसे मुझको जान और दंडकारण्यमें बनस्पति नामसे मुझको जान २७ और कालंजरमें नीलकंठ नामसे मुझको जान और सरयूमें शम्भुनामसे मुझको जान और हंसयुक्त महा-मत्स्य जो मेरानाम है वह सब पापोंको नाशता है २८ और दक्षिणदिशाके गोकर्ण में सर्वनामसे मुझको जान और प्रजामुख में बासुदेवनाम से मुझको जान और शृङ्गश्रृंग में महाशौरिनाम से मुझको जान और कथा

में मधुसूदननाम से मुझको जान २९ हे ब्रह्मन्! त्रिकूट
शिखरमें चक्रपाणिनाम से मुझको जान और लोहदंड
में हृषीकेशनाम से मुझको जान और कोशलामें मनो-
हरनाम से मुझको जान ३० और सुराष्ट्रदेश में महा-
बाहु नाम से मुझको जान और नवराष्ट्र में यशोधर
नामसे मुझको जान और देविकानदी में भूधरनाम से
मुझको जान और महोदयानदी में कुशप्रिय नाम से
मुझको जान ३१ और गोमती में छादितगदनाम से
मुझकोजान और शंखोद्धारमें शंखीनामसे मुझको जान
और सैंधवबनमें सुनेत्रनामसे मुझकोजान और सूरपुर
में सूरनामसे मुझकोजान ३२ और हिरण्वतीमें भद्राख्य
नाम से मुझको जान और त्रिविष्टप अर्थात् स्वर्ग में
बीरभद्रनामसे मुझको जान और भीमापुरीमें शंकुकर्ण
नाम से मुझको जान और शालबन में भीमनाम से
मुझकोजान ३३ और यहीं विश्वामित्र नामसेभी मुझको
जान और कैलासपर्बत में वृषभध्वज नाम से मुझको
जान और महापर्बतमें महेशनामसे मुझको जान और
कामरूप में शशिप्रभनाम से मुझको जान ३४ और
बलभी में गोमित्रनाम से मुझको जान और कटाह में
पंकजप्रियनाम से मुझको जान ३५ और सिंहलद्वीप
में उपेंद्रनाम से मुझको जान और शक्रद्वीप में कुन्द-
मालीनाम से मुझको जान और रसातलमें सहस्रशिरा
नामसे मुझको जान ३६ और इसीजगह में कालाग्नि
रुद्र और कृत्तिवासा नाम से भी मुझको जान और

सुतल में अचलरूप कूर्मनाम से मुझको जान और वितल में पङ्कजासन नाम से मुझको जान ३७ और महातल में देवेश और छागलेश्वर नाम से मुझको जान और तलातल में सहस्रचरण और सहस्रभुज और ईश्वर ३८ और सहस्राक्ष और मुसलाकृष्टि दानव इन नामों से मुझको जान और पाताल में योगीश और हरिशङ्कर नाम से मैं स्थित हूँ ३९ और पृथ्वीतल में कोकनद नाम से मैं स्थित हूँ और पृथ्वी में चक्रपाणि नामसे मुझको जान और भुवर्लोक में गरुड़ नाम से मुझको जान और स्वर्लोक में विष्णु और अव्यय नाम से मुझको जान ४० और महर्लोक में अगस्त्यनाम से मुझको जान और जनलोक में कपिल नाम से मुझको जान और तपोलोक में अखिल और ब्रह्म और वाङ्मय और सत्य इन नामों से मुझको जान ४१ और ब्रह्मलोक में मुझको ब्रह्मानाम से जान और शिवलोक में सनातननाम से मुझको जान और वैष्णव लोकमें परब्रह्म नाम से मुझकोजान ४२ और निरालम्ब में अप्रतर्क्य नाम से मुझको जान और निराकाश में तपोमय नाम से मुझको जान और जम्बूद्वीप में चतुर्बाहु नाम से मुझको जान और कुशद्वीप में कुशेशय नाम से मुझको जान ४३ और हे मुनिश्रेष्ठ! प्लक्षद्वीपमें गरुड़वाहन नाम से मुझको जान और क्रौंचद्वीप में पद्मनाभ नाम से मुझको जान और शाल्मलद्वीप में वृषभध्वजनाम से मुझको जान ४४ और शाकद्वीप में

सहस्रांशुनाम से मैं स्थित हूँ और पुष्करद्वीप में धनराट् नाम से मैं स्थितहूँ और हे ब्रह्मर्षे ! पृथिवीमें मैं शालग्राम नाम से स्थितहूँ ४५ हे ब्रह्मन् ! जलस्थलपर्यंत चर और स्थावरमें पुरातन और सनातन और पवित्र ४६ और धर्म को देनेवाले और अति पराक्रमवाले और कीर्त्तनके योग्य और पापोंको नाशनेवाले ऐसे मेरेस्थान ये कहेगयेहैं ४७ और इन्होंके संकीर्त्तन से और स्मरण से और दर्शनसे और स्पर्शन से, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन्होंको दैत्य, मनुष्य, साध्य ये प्राप्तहोसक्तेहैं ४८ ऐसे मैंने अपने स्थान तेरे लिये निवेदन किये हैं सो हे बिप्र ! उठ देवताओं के हितकेलिये बलिराजाकी यज्ञमें गमन करेंगे ४९ पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! ऐसे बिष्णु भरद्वाजसे बचन कहकर पीछे तिस जगह से कुरुजांगल देश में बामनजी गमन करतेभये ५० ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायां वामनप्रादुर्भावेस्वस्थानोत्पत्तिर्नामनवतितमोऽध्यायः ९० ॥

# इक्यानबेवां अध्याय ॥

पुलस्त्यजी बोले हे स्वामिन् ! जब बामनजी गमन करनेलगे तब पृथिवी कांपनेलगी और पर्वत चलायमान होनेलगे और समुद्र क्षोभको प्राप्तहुये और हे नारद ! आकाशमें तारागणों के मण्डल विपरीत भावको प्राप्त होगये १ और यज्ञदेव परम आकुलता को प्राप्त हुआ और विचारनेलगा कि मैंनहीं जानता कि वामनजी क्या

करेंगे और जैसे महादेव ने मुझे दग्धकिया था तैसेही मुझको भगवान् दग्ध करेंगे २ और वेदपाठ मंत्र आहुति इन्होंकरके बित्तानकीयरूप जो ज्वलनाश्व भाग हैं वे भक्ति के द्वारा ब्राह्मणों करके प्राप्तभी कियेहुये हैं परन्तु विष्णु के भयसे अग्नि भी आहुतियों को ग्रहण नहीं करती ३ ऐसे घोररूप महाउत्पातों को देख बलि राजा प्रणाम कर और अंजलीबांध शुक्राचार्य्य से पूछने लगा ४ हे आचार्य ! पर्वतों सहित पृथिवी वायुसे हत हुये केलाकी तरह क्यों कांपती है और अग्निभी अच्छी तरह भागों को क्यों नहीं ग्रहण करता ५ और समुद्र किसवास्ते क्षोभको प्राप्तहुये हैं और आकाशमें नक्षत्र भी पहलेकी तरह नहीं बिचरते और सब दिशा किस वास्ते अँधेरासे व्याप्तहोरही हैं सो हे गुरो ! यह कारण किस दोषसे उपजे हैं मुझसे कहो ६ पुलस्त्यजी कहते हैं ऐसे बलिके बचनको शुक्राचार्य्य सुनकर और उत्पातों के कारण को जानकर बलिसे कहनेलगा ७ शुक्राचार्य बोले हे दैत्येश्वर ! सुनो जिसकरके मंत्रों के द्वारा हुत किये आसुर भागों को अग्नि नहीं ग्रहण करता है वे विष्णु भगवान् इस यज्ञमें आते हैं ८ इस वास्ते हे दैत्येंद्र तिस विष्णु के चरणों के फेंकने को नहीं सहतीहुई पर्वतोंसहित पृथिवी चलायमान होरही है और तिसी के चलने से समुद्र भी क्षोभ को प्राप्त हुये हैं ९ पुलस्त्यजी बोले हे नारद ! शुक्राचार्य के वचन को सुन बलिराजा फिर शुक्राचार्य्य से कहनेलगा हे ब्रह्मन् ! धर्म और सत्य को

देखकर आपने अति उत्साहरूपी मुझ से कहा १० बलिने पूछा हे भगवन्! बासुदेव के आगमन में धर्म, अर्थ, काम इन्हों का तत्त्व मुझ से बर्णनकर अर्थात् मुझे क्याकरना चाहिये और क्यादेनाचाहिये अर्थात् मणि, सोना, पृथिवी, हाथी, अश्व इन आदिकों में क्या देना उचित है ११ अथवा इन पदार्थों से अन्य बिष्णु भगवान् के हितके लिये कौन पदार्थ देने योग्य है इस लिये हे बिप्र! सत्य और पथ्य और प्रिय और शुभका देनेवाला ऐसा देनेयोग्य पदार्थ मुझसे कहो और जो आप कहोगे वही मैं करूँगा अन्यथा नहीं १२ पुलस्त्य जी बोले हे नारद! बलिराजा के कहे हुये बचन को भूत भविष्य के जाननेवाले शुक्राचार्य सुनकर और बिचारकर कहनेलगे १३ शुक्राचार्य कहतेहैं तैंने बेद बाह्यकर्म से यज्ञभागको खानेवाले दैत्य करदिये और बेदके द्वारा जो योग्यथे वे देवते यज्ञभाग से अलग करादिये इसवास्ते यहां बिष्णु भगवान् आतेहैं १४ सो हे दैत्य! जिससमय बिष्णु भगवान् यहां आकर स्थित होवेंगे तब तुझसे कछुकार्य्य पूछेंगे अर्थात् तृणकेसमान भी पृथिवी और सुबर्णआदि नहीं देना १५ और अर्थ रहित और शान्ति से युत ऐसा बचन कहना क्योंकि तिसकेलिये बरदान देनेको कोईभी समर्थ नहीं है १६ अर्थात् जिसके उदर में पृथिवीलोक भुवर्लोक स्वर्ग लोक पाताल आदि सब लोक नित्यप्रति स्थित रहते हैं १७ बलि कहनेलगा हे भार्गव! आपसे पहले मैं कह

चुकाहूँ कि याचना करनेवाले के लिये मैं निश्चय देता हूँ और साक्षात् बिष्णुभगवान् मेरेसन्मुख आकर याचना करेंगे तब आश्चर्य्य है कि मैं किसतरह दान नहीं दूँगा अर्थात् दानदेनाही उचितहै १८ हे बिभो ! ऐसेही सत्पुरुषों के कहतेहुयेभी मैंने श्लोक सुनाहै कि ऐश्वर्य की इच्छावाले पुरुषको ब्राह्मणों में सद्भाव करनाचाहिये १९ सोई हे ब्राह्मण सत्तम ! सत्यरूप दीखता है और पूर्वसंचित कर्मोंके द्वारा २० बाणी शरीर मन इन्हों से उपजे कर्म उत्तरजन्ममें स्फुटहोते हैं २१ और हे द्विजश्रेष्ठ ! जो मलयाचलमें कोशकारके पुत्रकी पुरातनकथा कहीगई है वह आपने नहीं सुनी है २२ शुक्राचार्य्य कहनेलगे हे महाबाहो ! कोशकारके पुत्रकी पुरानी और पवित्ररूप कथाको मुझसे बर्णनकर २३ बलि कहते हैं हे भार्गव ! सुनो जैसे पहले अन्तर में पूर्वाभ्यास निबद्ध रूप कथाहुईहै तिसको मैं कहता हूँ २४ पुलहमुनिका पुत्र ज्ञान बिज्ञान में तत्पर और तप में तत्पर और कोशकार नाम से बिख्यात ऐसा होता भया २५ और तिस कोशकारकी साध्वी और सती और वात्स्यायन की पुत्री और धर्म्मशीला और पतिव्रता और धर्मिष्ठा नामसे बिख्यात ऐसी भार्याहुई २६ तिस भार्यामें कोशकारके सकाशसे प्रकृति करके जड़ और मूककी तरह नहीं आलाप करनेवाला और अन्धा की तरह नहीं देखनेवाला ऐसा पुत्र उत्पन्न हुआ २७ तब वह धर्मिष्ठा जड़, मूक, अन्धा ऐसे तिस पुत्र को मानकर छठे दिन

स्थान के द्वारपर त्यागती भई २८ पीछे तहां दुष्ट आचारोंवाली और बालकों को हरनेवाली और अपने पुत्रको गोदमें धारणकरनेवाली और सूर्पाक्षी नाम से विख्यात ऐसी राक्षसी आगमन करती भई २९ पीछे वह राक्षसी तहां स्थान के द्वारपर अपने पुत्र को छोड़ कर तिस कोशकार ब्राह्मणके पुत्रको ग्रहणकरके पीछे खानेके वास्ते शालोदर पर्वत में गमन करती भई ३० पीछे तिस राक्षसी के आगमनको विचार तिसका नेत्रों से हीन और घटोदरनामसे विख्यात ऐसा भर्त्ता कहने लगा कि हे प्रिये! क्यालयाई है ३१ तब राक्षसी बोली हे राक्षसपते! कोशकार ब्राह्मणके द्वारपर अपनेपुत्रको स्थापितकर तिस ब्राह्मण के पुत्रको ल्याई हूँ ३२ तब राक्षस बोला हे भद्रे! तैंने अच्छाकाम नहींकिया क्योंकि महाज्ञानी और अतिक्रोधी कोशकारमुनि है सो हमारे को शापदेवेगा ३३ इसवास्ते हे सुन्दरि! जल्द घोररूप वाले इस बालकको तहां त्यागकर पीछे अन्य किसी के बालक को ल्याना चाहिये ३४ ऐसे उक्तकरी वह रौद्री और कामचारिणी ऐसी राक्षसी आकाशमार्ग के द्वारा वेगसे तहां आतीभई ३५ और पहले जब राक्षसी अपने पुत्रको त्यागकर ब्राह्मणके पुत्रको ग्रहणकर चलीगई थी तब स्थानके बाहर वह राक्षसीका पुत्र अपने मुखमें अंगूठादेकर ऊँचेस्वरसे रोनेलगा ३६ तब वहुतसे काल में तिस रोते हुये बालकके शब्दको सुन धर्मिष्ठा पतिसे कहनेलगी हे मुनिश्रेष्ठ! शब्द करनेवाला आपकापुत्र है

इसको तू देख ३७ तब तिसी समय वह ब्राह्मण स्थान से निकस तिस बालकको देख कहनेलगा हे प्रिये! इस बालकके द्वारा कोई भावीहोनी है ३८ अन्यथा ऐसा सुन्दरबालक पृथिवीमें कैसे स्थित रहै ऐसे कहकर मन्त्र-शास्त्री कोशकार ब्राह्मण मन्त्रोंकेद्वारा तिस राक्षसीकेपुत्र को ३९ बांध पीछे पृथिवीकोखोद तिसमें बालकको स्थापितकर कुशासहित हाथसे रक्षाकरताभया पीछे इसी अन्तरमें वह राक्षसीभी आकाशमें प्राप्तहोकर ४० स्थानके समीपमें तिसब्राह्मणके पुत्रको गेरतीभई तब पड़ते हुये अपने पुत्रको कोशकार ग्रहण करताभया ४१ पीछे राक्षसी अपने पुत्रके समीपमें आईभी परन्तु अपने पुत्र को ग्रहणकरने में समर्थनहींहुई ४२ तब जहां तहां भ्रष्ट होतीहुई राक्षसी अपने भर्त्ताके समीप गमनकर सब बृत्तांतवर्णनकरतीभई ४३ ऐसे जब राक्षसी चलीगई तब कोशकार ब्राह्मणने वह राक्षसीका पुत्रभी अपनीभार्याके लिये निवेदन किया ४४ और अपना पुत्र बछड़ावाली कपिलागायकेदूधसे व ईखकेरससे पुष्टकिया परन्तु इस बृत्तांतको मुनि अपनी भार्याके सन्मुखनहीं कहताभया ४५ ऐसे दोनोंबालक बृद्धिको प्राप्तहोतेहुये सातवर्ष की अवस्थाको प्राप्तहुये तब पिताने निशाकर दिवाकर ऐसे दोनों के नामधरे ४६ अर्थात् राक्षसी के पुत्रकानाम दिवाकरधरा और अपने पुत्रकानाम निशाकरधरा पीछे वह ब्राह्मण तिन दोनों पुत्रोंकी व्रतबन्ध आदि क्रिया कराताभया ४७ जब व्रतबन्ध अर्थात् यज्ञोपवीतकर्महुये

के पश्चात् दिवाकरनामवालापुत्र बेदका अध्ययनकरताभया और जड़भावसे निशाकरनामवाला पुत्र बेदको नहीं पढ़ताभया ऐसे मैंने सुनाहै ४८ तब निशाकरको बान्धव, पिता, माता, भ्राता, गुरु और स्थानबासीजन ये सब त्यागतेभये ४९ पीछे क्रुद्धहुये पिताने जल से रहित कूपमें वह निशाकर डालदिया और तिस कूपके ऊपर एक महाशिला रोपितकरदी ५० ऐसे कूपमें वह निशाकर बहुत बर्षोंतक स्थितरहा और तहां तिसकी पुष्टिके लिये एक आंवलाकाबृक्ष फलितहोगया ५१ पीछे हे भार्गव! जब दशबर्षब्यतीतहोगये तब तिसकी माता शिलासे आच्छादित तिस महाकूपको देख ५२ ऊंचे प्रकारसे कहनेलगी किसने यह बड़ी शिला कूपके ऊपर स्थापितकरी है तब कूपकेभीतर स्थितहुआ वह निशाकरपुत्र माताकीबाणीको सुनकर ५३।५४बोला कि पिताने इस कूपकेऊपर शिला स्थापितकरीहै तब माता बोली कूपकेभीतर अद्‌भुतस्वरवाला तू कौनहै ५५ तब वह बोला कि तेरा निशाकरनामसे बिश्रुत पुत्रहूँ तब माताबोली कि मेरापुत्र तो दिवाकरनामसे बिख्यातहै ५६ और निशाकर नामवाला मेरे कोई भी नहीं है तब वह पुत्र आदिसे सम्पूर्ण बृत्तान्त कहताभया ५७ तब सुनकर माता तिस शिलाको कूपपरसे हटाकर दूरकरतीभई तब वह पुत्र कूपसे निकसकर माताके पैरों में प्रणामकरताभया ५८ तब आनन्दितहुई माता तिस पुत्र को संगलेकर कोशकार पति के समीप में प्राप्त

भई ५९ और तिसपुत्रके चेष्टितकोकहतीभई तब पिताने पूँछा कि हे पुत्र! यह क्याकारण हुआ ६० जो आपने पहले मुझसे कुछ भी न कहा यह मुझको अति आश्चर्य है ऐसे बचनको सुनकर ६१ वह पुत्र माता और पिताके सन्मुख बाक्य कहनेलगा ६२ निशाकर कहता है हे तात! कारणको श्रवण कीजिये जिसकरके मैं मूक भावको प्राप्त होताभया और जड़भाव को और नेत्रों वालाहोकर अंधभावको भी प्राप्त हुआ ६३ पहले बृन्दारककुल में बृषाकपिका पुत्र और मालाकेगर्भ से उत्पन्न ऐसा मैं बिप्र हुआ ६४ पीछे मुझको पिता धर्म, अर्थ, काम इन्होंको देनेवाला शास्त्रपढ़ाताभया पीछेमैंने मोक्षशास्त्र, इतिहास, बेद इन्होंका भी पठनकिया ६५ तब मैं परावर में बिशारदरूप होकर महाज्ञानीहुआ परन्तु मद से अंधारहनेलगा और बुरेकर्मोंको करताभया ६६ और अति मद से मेरे अतिलोभ उपजा और तिस करके मेरी प्रगल्भता का नाशहुआ और मेरा बिवेक भी नाशको प्राप्तहुआ फिर मैं मूर्खभाव को प्राप्तहोगया ६७ और मूढ़भाव से मैं पापों में रतहोनेलगा पीछे परभार्या और परधनों में सदा मेरी बुद्धिलगनेलगी ६८ पीछे परस्त्री और परद्रव्य को हरने से बन्धनसे मेरामृत्यु हुआ तब मैं रौरवनरकमें गया ६९ पीछे हजारवर्षोंके अंतमें तिसनरकसे मैं छूटा तब कुछेक पापमेरा शेष रहा तब वनमें मृगोंको मारनेवालासिंह मैं होगया ७० पीछे सिंहरूपही में मनुष्यों ने पींजरामें रोकदिया पीछे राजा

मुझको अपने नगरमें लेगया ७१ और दैवयोग से पींजरे में बँधेहुयेके भी मेरे धर्म, अर्थ, कामये चारोंतरफसे प्रकाशित होनेलगे ७२ फिर एकसमय में गदाको हाथमें ग्रहण कर और एकबस्त्रको धारणकर अतिबलवान् राजानगर से बाहर निकसता भया ७३ और तिस राजाकीरूप में अतिसुन्दर और जितानामसे बिख्यात ऐसी भार्याहोती भई सो जब राजा चलागया तब वह रानी मेरे समीप में प्राप्तभई ७४ तिसको देखकर पूर्वाभ्यास के योगसे मुझको कामदेव जागा तब मैं प्रिय बचन से तिसको कहनेलगा ७५ हे राजपुत्रि! हे कल्याणि! हे रूपयौवन शालिनि! हे भीरु! तू मेरे चित्तको हरती है जैसे शब्द से कोयल ७६ तब वह मेरे बचन को सुनकर बोली हे ब्याघ्र! तेरे संग मेरी कैसे रति होवेगी ७७ तब मैं तिस रानी से कहताभया कि हे प्रिये! इस पींजरे के दरवाजे को खोलदे तब मैं निकसकर तेरा आदर करूंगा ७८ तब वह रानी बोली हे ब्याघ्र! इस समयमें सब संसार देखताहै परन्तु रात्रि में इस द्वारको मैं खोल दूंगी तब इच्छापूर्वक तू रमण कीजिये ७९ तब मैं बोला कि हे सुन्दरि! कालक्षेप करना उचित नहीं है इसवास्ते पींजराके द्वारको खोलदे परन्तु मुझको बंधों से मत छुड़ावे ८० तब हे गुरुजी! वह रानी पींजराके द्वारको खोलती भई सो द्वार खुलतेही मैं क्षण भरमें बाहर निकसा ८१ और बेड़ी आदि सब बन्धन मैंने अपनेही बल से तोड़ दिये और भोगकी इच्छा करनेवाले मैंने वह रानी ग-

हण करी ८२ तब मुझको अति पराक्रम वाले राजभृत्य देखते भये तब शस्त्रों को धारण करनेवाले तिन राजमंत्रियोंने मुझेपरिवेष्टित करदिया ८३ अर्थात् बड़ीफांसियों से और शृंखलाओं से मुझको बांध मुद्गरों से मारनेलगे तब बध्यमान होता हुआ मैं बोला कि मुझ को मत मारो ८४ तब वे मेरे बचनको सुन और मेरेको निशाचर जान बड़ के बृक्ष में बांधकर मारते भये ८५ तब पर स्त्री गमन से मैं फिर नरक में गया तब हज़ारबर्षके अंत में नरक से मुक्त होकर श्वेतगर्दभ होता भया ८६ तब बहुत स्त्रियोंवाला अग्नि बेष ब्राह्मण के स्थान पर मैं रहनेलगा तहां भी मुझ को काम आदि बिज्ञान प्रकाशित होने लगे ८७ पीछे तिस ब्राह्मण की स्त्रियां मेरे पर सवार होने लगीं पीछे एक समय में तिस ब्राह्मण की द्विमति नाम से बिख्यात ८८ छोटी भार्या अपने पिता के स्थानपर गमन करने की इच्छा करतीभई तब तिसका पतिबोला कि श्वेतगर्दभपर सवारहोकर गमन कर ८९ और एक महीना में आगमन करना उचितहै ऐसे उक्तहुई वह भार्या मुझपर सवार होकर और बंधन से मुझको खोलकर वेगसे गमनकरती भई ९० पीछे जब वह मुनिभार्या आधी दूरचलीगई तब मेरी पृष्ठि से उतर कर नदी में स्नान करनेलगी ९१ तब गीले वस्त्रसे अति रूपवाली और सांगोपांग से युक्त तिस मुनिभार्या को देख तिस के सन्मुख मैं भागा तब वह मेरे स्पर्शसे पृथ्वी पर पड़तीभई ९२ तब तिस के ऊपर कामदेव से पीड़ित

हुआ मैं पड़ताभया तब मुनि के भेजे हुये अनुचर ने मुझे देखा ९३ तब हे ब्रह्मन्! वह अनुचर दंड ग्रहणकर बेगसे मेरे सन्मुख दौड़ा तब तिस के भय से तिस भार्या को त्यागकर दक्षिण की तरफ मुख करके भागा ९४ तब बेगसे भागताहुआ मैं जिस से फिर नहीं निकसा जावे ऐसे गह्वररूप बांस के बिड़े में प्रबेश करता भया ९५।९६ तहां छःरात्रि में मेरे प्राणों का नाश होगया तब फिर मैं नरक में गया तहां से मुक्त होकर शुक अर्थात् तोता होताभया ९७ तब बन में एक भीलने मुझे पकड़लिया और पींजरामें रोक शालि नामवाले बैश्यपुत्र के लिये मुझको बेचता भया ९८ तब तिस बैश्यपुत्र ने अपने पुर में युवतियों के समीप में मुझे व्यवस्थित करदिया ९९ तब मुझको जल, फल, भक्ष्य, अनारदाना इन्हों से वे स्त्रियां पोषती भईं १०० और पीछे कभीक कमलपत्र के समान नेत्रोंवाली और श्यामा और पुष्ट कुचों वाली और सुन्दर कटिवाली और मध्य शरीरवाली और तिस बैश्य के पुत्र को प्रिय और शुभ १०१ और नाम से चन्द्रवती और स्वच्छ ऐसी एक भार्या पींजरा को खोलकर मुझको कोमल हाथों से ग्रहण करती भई १०२ पीछे वह मुझको पुष्टरूप अपने स्तनों पर धारण करती भई तब मैं कूदता हुआ तिसकी नाभी पर भोग करने का भाव करताभया १०३ तब मैं तिस स्त्री के हार से बंधकर पीछे मरता भया १०४ फिर नरकमें मैं गया पीछे बैल के शरीर को प्राप्त होकर चांडाल के स्थान में

बसता भया १०५ पीछे एक समयमें मेरेको गाड़ा में युक्त कर पीछे तिस गाड़ामें अपनी स्त्री को रोपण कर वनमें गमन करनेकी मति वह चांडालकरताभया १०६ पीछे अग्रभाग में वह चांडाल गमन करनेलगा और पृष्ठिभागमें वह स्त्री स्थित होकर गान करनेलगी तब तिस गानको सुन मैं दुःखित इन्द्रियोंवाला होगया १०७ तब मैं पृष्ठिभागमें देखकर पीछे बिपर्य्यस्तहुआ मैं तिस स्त्रीको देखकर पृथ्वी में पड़ता भया १०८ तब मुखसे बँधाहुआ मैं मृत्युभावको प्राप्त हुआ तब फिर मैं नरक में हजार बर्षतक बसा १०९ पीछे तिन जन्मोंको स्म-रण करता हुआ मैं आपके गृहमें उत्पन्न हुआ सो जितने बृत्तांत पूर्व जन्मों में मेरे बीते हैं तिन सबों को मैं जानता हूं इसमें संशय नहींहै ११० और पूर्वजन्म के अभ्याससे शास्त्र और बन्धन मुझको प्राप्तभये सो मैं ज्ञान और अज्ञान अर्थात् अविवेकता कभीभी क-रूंगा नहीं १११ और मन, कर्म, बाणी इन्हों करके पापों का आचरण करूंगा नहीं और शुभ, अशुभ, स्वाध्याय शस्त्रजीविका, बंधन, मृत्यु ये सब पूर्वाभ्याससे होसकते हैं ११२ जो मनुष्य पूर्वजन्मका स्मरण कर तिन पापों से निवृत्ति करना चाहताहै तिससे हे तात! शुभकी वृद्धि के लिये और पापके क्षयके लिये मैं वनमें गमन करता हूं और तू दिवाकीर्त्ति नामवाले इस पुत्रको गृहस्थ धर्ममें नियुक्त कर ११३ बलि कहता है ऐसे निशाकर पुत्र कहकर और पिता माताको प्रणाम कर हे भार्गव!

आद्य और ईड्य और पवित्र और ईश्वर का स्थान ऐसे बदरिकाश्रमको जाताभया ११४ ऐसे पूर्बजन्म के अभ्यासमें रतवाले पुरुषको दान और अध्ययन आदि कर्मोंका स्मरण रहताहै ११५ इसवास्ते हे द्विजवर्य्य! पहले मुझको अभ्यास होताभया नहीं तो मैं आपको नहीं कहता ११६ दान, तप, अध्ययन, चोरी, सब पातक, अग्नि दाह, दान, धर्म, यश, अर्थ ये सब पूर्बजन्मके अभ्यास से प्रकट होतेहैं ११७ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ऐसे बलिराजा समर्थरूप अपने शुक्राचार्य गुरुको कहकर फिर मधुकैटभको नाशकरनेवाले और चक्र, गदा, तलवार इन्हों को हाथमें धारणकरने वाले ऐसे नारायण का ध्यान करताभया ११८॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांवामनप्रादुर्भावेबालिशुक्रसंवादोनामैकनवतितमोऽध्यायः ९१॥

---

## बानबेवां अध्याय॥

पुलस्त्यजी बोले हे नारद! फिर इसीअवसरमें वामनरूप धारणकिये भगवान्‌भी तहां प्राप्तहुये और यज्ञबाटको प्राप्तहोकर ऊँचीआवाजसे यह बचन कहने लगे १ कि इस यज्ञमें तपस्वियों के रूप धारणकरके ॐकारहै पूर्व जिन्होंके ऐसी श्रुति स्थितहै और यह अश्वमेधयज्ञ यज्ञोंमें श्रेष्ठहै और यज्ञ करनेवालों में यह दैत्यनाथ मुख्य है २ फिर दानवों का अधिपति ऐसे बचन सुनके और बशहुआ जहां देवस्थितथे तहां

सम्पूर्ण पात्र लेकर आया ३ फिर पूजन करने के योग्य देवदेवेश बामनजीका यह असुर अर्घादिकोंसे पूजन कर फिर भारद्वाजऋषि सहित यज्ञबाटमें प्रबेश कराता भया ४ फिर प्रबेश होतेही देवेश का बिधान से पूजन करके फिर कहनेलगा कि हे मानके देनेवाले! हे भगवन्! कहो मैं आपको क्या दूं ५ फिर देवताओं में श्रेष्ठ और अबिनाशी ऐसे बामनजी बहुत काल हँसके भारद्वाजऋषिकी तरफ देखतेभये ६ फिर दैत्यराज से बचन कहनेलगे कि मेरा गुरुश्रुत है और अग्नि तिसकी सामग्री है सो तिस अग्निको दूसरेकी पृथ्वी में मैं स्थापन नहीं करता ७ सो हे राजन्! इस वास्ते मेरा यह दानहै कि मेरे शरीरके प्रमाण से तीन पैंड़ पृथ्वी मुझको दे ८ हे नारद! राजा बलि ऐसे भगवान्के बचन सुन फिर भार्याको और बाणासुर पुत्रकी तरफ देख यह बचन कहनेलगा ९ यह बामन केवल लघुप्रिय है क्योंकि जिसने बुद्धिकी मूढ़तासे तीनपैंड़ पृथ्वी याचनाकरी १० अहो देखो प्रायकरके ब्रह्मा भाग्यरहित मंदबुद्धियों को बहुत धन नहीं देता जैसे यहां विष्णुका बहुत प्रयास नहीं है ११ अहो जिसका भाग्य विपर्यय होवे तिसको विधि कुछ नहीं देताहै क्योंकि जहां मैं तो देनेवाला और तहां यह तीन पैंड़ पृथ्वी इसने मांगी १२ फिर यह महात्मा ऐसे वचन कहके फिर अत्यन्त विचार करके कहनेलगा कि हे विष्णो! आपने क्यामांगा हस्ती और घोड़ा और भूमि और दासी और सुवर्ण ये मांगो

अथवा और कोई बाञ्छित बस्तु मांगो १३ हे बिष्णो! जहां आप तो याचना करनेवाले और जगत्पति मैं देनेवाला तहां तीन पैंड़ पृथ्वी से दोनोंको कैसे नहीं लज्जा आवे १४ हे बामन! पाताल और पृथ्वी और स्वर्ग इन्हों मेंसे कोई स्थानमें बोलो कौनसादूं १५ ऐसे सुन बामनजी कहनेलगे कि हे राजन्! हस्ती और घोड़ा और सुबर्ण जिसको चाहिये उसको दो मैं तो तीनपैंड़ पृथ्वी चाहताहूं १६ जब बामनजीने ऐसा बचन कहा तब यह महासुर राजा बलि झारीको लेकर बिष्णुको तीनपैंड़ पृथ्वी देताभया १७ फिर शुक्राचार्य सूक्ष्मरूप धारणकरके झारीमें बड़गया तब कुशालेकर तिसकेनेत्र को भगवान् फोड़तेभये १८ हे नारद! जब हाथोंमें जल पड़ा तब महाराज शीघ्रही दिव्यरूप धारण करते भये त्रैलोक्यके नारायणके वास्ते जगत्मय बड़ा रूपधारण करतेभये १९ तिस रूपहीको कहते हैं कि पैरों में पृथ्वी स्थित देखी और सत्य और तप गोड़ों में स्थित देखे और मेरु और मन्दर जांघों में और बिश्वेदेवा कटिमें बस्ति और शिरमें मरुद्गण और लिंगमें कामदेव और बृषणोंमें प्रजापति २० और इष्टा पूर्तादि सम्पूर्ण क्रिया तहां स्थित देखीं और पृष्ठिदेशमें सब बसु और स्कंधों में सब रुद्र स्थित देखे २१ और दिशा भुजाओंमें स्थित देखीं और हाथमें बसु स्थित देखे और हृदयमें ब्रह्मा जी और हृदयके अस्थिमें कुलिश अर्थात् बज्र देखा २२ और हज़ारहा लक्ष्मी छाती में स्थित देखीं और मनमें

चन्द्रमा स्थित देखा और ग्रीवा में देवमाता अदिति स्थित देखी और नदी बलयों में स्थित देखी २३ और मुख में अग्नि सहित ब्राह्मण और होठों में धर्म, अर्थ, काम, मोक्षवाले शास्त्रों सहित संस्कार देखे २४ और श्रवणों सहित श्वास में अश्विनीकुमार देखे और सम्पूर्ण संधियों में पवन स्थित देखा २५ और दांतों में स्थित योगीजन देखे और जिह्वा में सरस्वती और चन्द्रमा, सूर्य नेत्रों में और कृत्तिकादि छाती में स्थित देखे २६ और शिखा में ध्रुवराजा स्थित देखा और रोमकूप में तारागण स्थित देखे और रोमों में महर्षि देखे २७ हे नारद! भूतभावन भगवान् ऐसे गुणों करके सर्वमय होकर एकही पैंड़ से सम्पूर्ण पृथ्वी को नापतेभये २८ हे नारद! ऐसे पृथ्वी के नापते हुये भगवान् के चन्द्रमा तो दक्षिण भाग में रहा और सूर्य उत्तर भाग में २९ और आकाश को नापते हुये बामनजी के सूर्य, चन्द्रमा नाभि के पास आते भये और तीसरी पैंड़ से स्वर्ग और मह और जन इन्हों को नापता भया ३० और हे राजन्! आधे अंग से सम्पूर्णों को नापकर और विश्व स्वरसे पूरित करदिया फिर प्रतापी बामनजीने बड़ारूप बढ़ाया ३१ सो ब्रह्मांड को फोड़कर निरालोक को प्राप्त हुआ और पसरते हुये विष्णु के चरण ने ब्रह्मांड भेदन कर दिया ३२ फिर विष्णु के चरणको प्राप्त होकर जो कुटिल नदी चली इस वास्ते हे मुने! तिसका विष्णुपदी नाम होता भया ३३ और तैसेही सो सुरनदी विख्यात हुई

और तिसको तपस्वी सेवन करते हैं और जब दूसरी पैंड़ बाकी रहगई ३४ तब क्रोध से फरकते हुये हैं होठ जिन के ऐसे भगवान् बलिको प्राप्त होकर यह बचन कहने लगे कि हे दैत्येंद्र! ऋण से घोर दर्शनवाला बंधन होता है सो क्या तो एक पैंड़को पूरणकर नहीं तो बंध को प्राप्तहो ३५ ऐसे मुरारिके बचन बलिका पुत्र बाणासुर सुन के हँसा फिर अमरपति भगवान् को ऐसे हेतु संयुक्त बचन कहता भया ३६ कि हे जगत्पते! छोटीसी पृथ्वी को पहले रच के अब स्वायंभुवादि भवनोंको कैसे बलि से मांगतेहो और आप पहले इस पृथ्वी को बड़ी क्यों नहीं रचते भये ३७ और हे बिभो! पर्वतों सहित और भवनों सहित जितनी पृथ्वी आपने रची है सो देदीगई क्या इस छल करके है ३८ हे भगवन्! जो आप से भी पूरने को समर्थ नहीं तिसको यह दितिजेश्वर कैसे देवे हे मुरारे! आपही पूरने को समर्थहो इसवास्ते आप प्रसन्नहो और बंधन को दूरकरो ३९ हे ईश! पात्र विषे दिया हुआ दान सुख का देनेवाला होता है और पवित्र देश में किया हुआ पुण्य और बरका देनेवाला होताहै ४० सो हे देवदेव! पृथ्वी का दान सम्पूर्ण कामनाओं का देने वाला होता है और हे अजितात्मन्! आप पात्रहो और ज्येष्ठा मूल योग विषे चन्द्रमा है ऐसा शुभकालहै और कुरुक्षेत्र पवित्र देश प्रसिद्ध है ४१ सो बुद्धिहीन वादों से क्या है शिक्षादो और साधु अथवा असाधु योग्य जानो वैसा करो ४२ और हे भगवन्! आप आदि श्रु-

तियोंके कर्त्ता जगत्‌को व्याप्त होकै स्थितहो सो प्रमाण करके आपही प्रभु तीन पैंड़की याचना करते भये ४३ हे भगवन्! लोकबंदित बड़ा रूप करके किसवास्ते जगत्त्रय को नहीं ग्रहण करते और इस में आश्चर्य नहीं जो तीन पैंड़ नहीं पूर्ण हुई ४४ क्योंकि आप क्रम से लंघन करने को समर्थहो और हे लोकनाथ! यह आप लीला करते भये और हे माधव! हे पद्मनाभ! आपही पृथ्वीको प्रमाण हीन करके हे विष्णो! बलिको बांधोहो और जो इच्छा करोहो सोही करोहो ४५ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! कि जब बलिके पुत्र बाणासुरने ऐसे बचन कहे तब आदिकर्त्ता जनार्द्दन भगवान् ऐसे बचन कहते भये ४६ हे बलिके पुत्र! जो तैंने अब बाक्य कहे हैं तिन्होंका श्रेष्ठ हेतु सहित मुझसे प्रत्युत्तर सुनो ४७ पहले मैंने तेरे पितासे कहा कि हे राजन्! मेरे प्रमाण से तीनपैंड़ पृथ्वी मुझको दे जिसने मैंने मांगीथी सो मैं वही अब खड़ाहूं ४८ हे असुर! तेरा पिता बलि क्या मेरा प्रमाण नहीं जानता सो अब मुझको निःशंक तीन पैंड़ पृथ्वी दो ४९ हे पुत्र! एकही पैंड़से सत्यपर्यंत नाप लेता परन्तु तेरे पिता बलिहीके वास्ते ये तीनपैंड़ करी है ५० इसवास्ते हे बलिपुत्र! तेरे पिताने जो मेरे हाथ में जल दिया है तिस करके इसकी कल्पांत आयु होगी ५१ हे बाणासुर! जो अब यह श्राद्धदेव मनु है सो बीते पचात् सावर्णि मनु होगा तब यह बलि इन्द्र होगा ५२ पुलस्त्यजी बोले कि हे मुने! त्रिविक्रम देवने बलिके पुत्र

बाणासुरको यह वचन कहकर फिर बलि को प्राप्तहोकर मधुर अक्षरोंवाले ऐसे बचन कहता भया ५३ हे राजन्! पैंड़ पूरण और दक्षिणा पूरणके वास्ते तू आ और महीतल सुतल नाम जो पाताल है तिस में रोग रहित हुआ बस ५४ ऐसे सुन बलि कहनेलगा कि हे नाथ! सुतलमें बसता हुआ के मेरे अव्यय अर्थात् अबिनाशी भोग कहां से आवेंगे जिससे वहां आरोग्य हुआ बसूं ५५ ऐसे सुन बामनजी कहने लगे कि हे दैत्येंद्र! जो उत्तम भोग तेरे अबहैं सो सुतल में स्थितके भी वे सम्पूर्ण होवेंगे ५६ और तेरे अबिधिदत्तदान और श्रोत्रिय रहित श्राद्ध और ब्रतरहित पठितकी बिद्या सम्पूर्ण फलदायक होंगे ५७ और तैंने और को जो यज्ञमहोत्सव में पवित्र उत्सव दिया है इसवास्ते द्वारप्रतिपदा नाम महोत्सव होगा ५८ और हे राजन्! तहां तुझको हृष्ट पुष्ट और अलंकृत ऐसे नरशार्दूल पुष्प दीपकों के दान से यत्नसे पूजनकरेंगे ५९ और तेरे दिनरात्रि अति मुख्य उत्सव होगा और जैसे यह अब यज्ञ है ऐसेही यज्ञ होगा ६० और चांदनी होगी हे नारद! मधुहा भगवान् राजा बलिको ऐसे कह और भार्या सहित सुतलको तिसका बिसर्जन कर और यज्ञ को ग्रहण कर फिर इन्द्र और देवताओं से सेवित स्वर्ग में गये ६१ फिर हे महर्षे! पृथ्वी और स्वर्ग इन्द्रको दे और स्वर्गादि इन्द्रको दे और देवताओं को यज्ञभाग का भोक्ता कर ६२ फिर देवताओं के देखते हुये विश्वपति भगवान्

अन्तर्द्धान होगये ६३ फिर जब धाता बासुदेव स्वर्गमें चलेगये तब शाल्व बहुत जबरी असुरोंकी सेनालेकर और सौभ ऐसा प्रसिद्ध पुर रचके फिर यथेच्छ आ-काशमें बिचरताभया ६४ और महात्मा मयअसुर सोना और तांबा और लोहा सुखवाला इन्होंके तीनपुर रच के सो तारकाख्य वैद्युतसहित भृत्य कलत्रों सहित तहां ठहरता भया ६५ और बाणासुर भी स्वर्ग से हतहुये फिर और बलिके रसातलमें बँधे फिर पृथ्वीमें शोणि-ताख्यपुर रचके दानवेन्द्रों सहित ठहरता भया ६६ हे मुने! ऐसे चक्र धारण किये बिष्णु ने बामनरूप धारण करके बलि बांधा इन्द्रकेप्यारके वास्ते और देवकार्यकी सिद्धिके वास्ते और ब्राह्मण ऋषियों के हितके वास्ते ६७ हे महर्षे! पवित्र और शुद्ध और पापोंका नाशकरने वाला ऐसा बामनजीका चरित्र तेरे से कहा जिन च-रित्रोंके सुननेसे और स्मरणकरने से और कीर्त्तन करने से पाप नष्ट होजाते हैं और पुण्यों की वृद्धि होजाती है ६८ हे मुने! पुण्यकीर्त्तिवाले और अव्यय ऐसे बामन जीका प्रादुर्भाव और बलिका बंध तेरेसे कहा हे विप्र! और जो कुछ सुननेकी इच्छा है सो कहो हम सम्पूर्ण वर्णन करेंगे ६९ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांवामनप्रादुर्भावेबलिबन्धोनाम द्विनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

# तिरानबेवां अध्याय॥

नारदमुनिने पूछा हे मुने! महात्मा भगवान् ने जैसे बलि बांधा सो सुना सो अब क्या प्रष्टव्य है तिसको सुन अब क्या कहूं १ हे मुने! बामन भगवान् बिष्णु देवराजको स्वर्ग देकर और अन्तर्द्धान होकर सर्बात्मा कहां गये सो कहो २ और हे बिप्रर्षे! सुतलमें स्थित दैत्येन्द्र बलि क्या करतेभये सो कहो और क्या तिसकी चेष्टा होतीभई सो सम्पूर्ण ब्याख्यान करनेके योग्यहो ३ पुलस्त्यजी बोले हे नारद! ऐसे असुर के बासको अंतर्द्धान करके फिर बामनजी अबामन होते भये और गरुड़ पर सवार होकर ब्रह्मलोक को जातेभये ४ फिर ब्यय रहित ब्रह्माजी बासुदेव को आया हुआ जानके और फिर उठके आदरसे कमलासन ब्रह्माजी प्रणाम करतेभये ५ फिर मिलके और बिधिसे पाद्य और अर्घ्यों से हरिका पूजन करके पूछने लगे कि हे भगवन्! आप कब आये ६ ऐसे सुन जगन्नाथ भगवान् कहने लगे हे ब्रह्मन्! हमने बड़ा कार्य किया देवताओं के यज्ञभाग के वास्ते आप बलि बांध दिया ७ ब्रह्मा ऐसे भगवान् के बचन सुनके प्रसन्न चित्तवाले होगये और कहने लगे कि कैसेबांधा महाराज कैसे सो शीघ्रकहो ८ जब ब्रह्माने ऐसे बचन कहा तब गरुड़ध्वज भगवान् सर्वदेवमय लघुरूप दिखातेभये ९ ऐसा रूपदेखके फिर उसीसमय पुण्डरीकाक्षको दशहज़ार योजन बिस्तृत देखताभया

फिर आधाप्रमाणसे देखा फिर ब्रह्माने प्रणामकरी १०
फिर प्रणामकरके साधुसाधु ऐसा बचनकहा और भक्ति
से नम्रहुआ ब्रह्मा महाराज की स्तुति करनेलगा ११
हे देवाधिदेव! आपको नमस्कारहै हे बासुदेव! हे बहुरूप!
हे वृषाकपे! हे भूतभावन! हे सुरासुरबृष! हे सुरासुरमथन!
१२ हे सुरासुरपति! हे श्रीनिवास! हे निर्मित आवास! हे
निर्मितकपिल! हे बिष्वक्सेन! हे नारायण! हे ध्रुवध्वज!
१३ हे सत्यध्वज! हे यज्ञध्वज! हे खड्गध्वज! हे तिलध्वज!
हे तालध्वज! हे बैकुण्ठ! हे पुरुषोत्तम! हे वरेण्य! हे बिष्णो!
आपको नमस्कारहै १४ हे अपराजित! हे अजय! हे जयंत!
हे कृतावर्त्त! हे कृतांत! हे महादेव! हे अनादे! हे अनन्त! आ-
पको नमस्कारहै १५ हे आदि अंत मध्य इन्होंका नाश
करनेवाले! हे पुरंजय! हे धनंजय! हे शुचिश्रव! हे कृष्णि-
गर्भ! आपको नमस्कारहै १६ हे बिष्णुमूल! हे मूलाधिवास!
हे धर्माधिवास! हे धर्मबास! हे धर्मव्यक्त! हे प्रजाध्यक्ष! हे
गदाधर! आपको नमस्कारहै १७ हे श्रीधर! हे श्रुतिधर!
हे बनमालाधर! हे लक्ष्मीधर! हे धरणिधर! हे पद्मनाभ! हे
विरंचे! आपको नमस्कारहै १८ हे महासेन! हे सेनाध्यक्ष!
हे परिष्टुत! हे बहुकल्प! हे महाकल्प! हे कल्पनामुख! हे
अनिरुद्ध! हे सर्वग! आपको नमस्कारहै १९ हे सर्वा-
त्मन्! हे द्वादशात्मक! हे सूर्यात्मक! हे सोमात्मक! हे काला-
त्मक! हे व्योमात्मक! हे भूतात्मक! आपको नमस्कार है
२० हे परमात्मक! हे सनातन! हे मुंजकेश! हे हरिकेश!
हे गुडाकेश! हे केशव! हे नील! आपको नमस्कारहै २१

हे सूक्ष्म! हे स्थूल! हे पीत! हे रक्त! हे श्वेतबासः! हे रक्ताम्बरप्रिय! हे प्रीतिकर! हे प्रीतिबास! हे हंसनीलबास! हे सारङ्गध्वज! आपको नमस्कारहै २२ हे सर्वलोकाधिबास! हे कुशेशय! हे अधोक्षज! हे गोबिन्द! हे जनार्दन! हे मधुसूदन! हे बामन! आपको नमस्कारहै २३ ॐ सहस्रशीर्षहो सहस्रदृक्हो सहस्रपादहो कमलहो महापुरुषहो सहस्रबाहुहो सहस्रमूर्तिहो हे भगवन्! देवता आपको सहस्र बदन कहतेहैं ऐसे आपको नमस्कारहै २४ हे बिश्वेदेव! हे बिश्वभूत! हे बिश्वात्मक! हे बिश्वरूप! हे बिश्वसंभव! आपसे यह सम्पूर्ण बिश्वहोताभया २५ हे भगवन्! ब्राह्मण आपके मुखसेहुये और क्षत्रिय भुजाओं से और बैश्य ऊरुवोंसे और शूद्रचरणकमलोंसे २६ हे भगवन्! आपकी नाभि से अन्तरिक्ष अर्थात् आकाशहुआ और मुखसे इन्द्र और अग्निहुआ और नेत्रों से सूर्य और मनसे चन्द्रमाहुआ २७ ब्रह्मा कहै है कि आपकी प्रसन्नतासे मैं और क्रोधसेत्र्यम्बक अर्थात् महादेवजी और आपके प्राणों से पवन और शिर से आकाश हुआ २८ और चरणोंसे पृथ्वी और कर्णों से दिशाहुई और आपके तेज से नक्षत्रहुये और मूर्तिमान् और अमूर्तिमान् सब आपसे उत्पन्नहुये २९ इसवास्ते जो सम्पूर्ण आपसेहुये तो आप इस वास्ते बिश्वात्माहो ऐसे आपके स्वरूपोंको नमस्कारहै ३० हे भगवन्! आप पुष्पहासहो और महासहो परमहो और ॐकारहो वषट्कारहो और स्वाहाकारहो ३१ स्वधाकारहो वेदमयहो और तीर्थ-

मयहो यजमानमयहो सर्वधाताहो यज्ञ भोक्ताहो आप भूर्द्दहो अभवर्द्द हो ३२ और बर्णदहो और अमृतदहो ब्रह्मादिहो ब्रह्ममयहो ब्रह्मशयहो यज्ञहो बेदकामहो और बेद्यहो और यज्ञधरहो ३३ और हे भगवन्! महासेनहो सुदामनहो नृकेसरीहो होमहो हव्यहो हूयमानहो हयमेधहो ३४ पोताहो पावयिताहो पूतहो दाताहो हन्यमानहो ह्रियमाणहो हर्त्ताहो आनित्यहो नेताहो बिश्वधामाहो शुभांडहो ३५ ध्रुवहो अरणिहो आशाणयहो और ध्यानहो और ध्येयहो और ज्ञेयहो और यशहो दाताहो ३६ और आप पशुहो द्रक्ष्यहो भूमहो ब्रह्माहो होताहो उद्गीताहो आप बुद्धिमानों की बुद्धि हो ज्ञानियों का ज्ञानहो ३७ और मोक्षकामियों को मोक्षहो और श्रीमानोंको श्रीहो और गुह्यहो याताहो परमहो सोचहो सूर्यहो दीक्षाहो ३८ दीक्षहो नरहो दक्षिणाहो त्रिनयनहो महानयनहो आदित्यप्रभहो सुरोत्तमहो शुचिहो ३९ शुक्रहो नभहो नभस्यहो ऊर्जहो रहहो सहस्यहो तपहो तपस्यहो मधुरहो मित्रावरुणहो प्राग्वंशकायहो ४० और आप भूतादिहो महाभूतहो ऊर्ध्वकर्माहो कर्त्ताहो सर्व पाप बिमोचनहो त्रिविक्रमहो ऐसे आपके स्वरूपोंको नमस्कारहै ४१ पुलस्त्यजी बोले हे नारदमुने! ब्रह्माने और तपस्वियोंने ऐसे स्तुतिकिया अद्भुत बेषधारणकिये बिष्णु ब्रह्माको यह कहतेभये कि हे अमलकांतिवाले ब्रह्माजी! वरमांगो ४२ फिर श्रीमिनुके पितामह तिनको यह कहतेभये कि हे बिभो! यह

अब मेरा बरदान है कि हे बिभो! हे मुरारे! इस पवित्र रूपकरके यहां मेरे भवनमें स्थितरहो ४३ हे मुने! ऐसे बृतकिया बरका देनेवाला बिभु ब्रह्माको ईप्सित बरदेता भया फिर यह अव्ययात्मा पूजन कियाहुआ बामनरूप करके आप ब्रह्माके भवनमें स्थित होतेभये ४४ तहां अप्सराओंके समूह नृत्यकरतेहैं और सुरेन्द्र गानगाते हैं और बिद्याधर बाजोंको बजातेभये और सुरसिद्ध संघ स्तुति करतेभये ४५ फिर सुराधिप बिभुका आराधन करके और धौतमल और सुसिद्ध ब्रह्मा हरिका आराधनकरके पवित्रबस्तु लाकर स्वर्गमें बिष्णुका भवन रचतेभये ४६ स्वर्गमें हजार योजनका बामनजीका भवन होताभया और हे महर्षे! इन्द्रभी ब्रह्माके तुल्य गुणवाली पूजाकरतेभये ४७ हे महर्षे! महात्मा त्रिबिक्रम जो देवहित करतेभये सो ये चरित्र तुम्हारे आगे कहेहैं अब हे मुने! दितिज रसातल में स्थितहुआ जो करता भया सो सुनो ४८॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांब्रह्मस्तुवोनामत्रिनवा शीतितमोऽध्यायः ६३॥

## चौरानबेवां अध्याय॥

पुलस्त्यजी बोले हे मुने! बलिदैत्य रसातल में जाकर फिर महँगे मोलकी मणियों से चित्रित और सुन्दर बिल्लौरी पत्थरों की पट्टियोंवाला ऐसा बिचित्रपुर रचता भया १ और तहां बिश्वकर्मा ने प्रासादों के मध्य में

हीराओंकी बेदीरची और मोतियों से जाली झरोखे दर-
वाजे येरचे २ हे मुने! तहां राजाबलि दिव्य अनेक प्रकार
के भोगोंको भोगताहुआ स्थितहोताभया और हे मुने!
विन्ध्यावलि नाम बलिकी स्त्री होतीभई ३ सो हजारहा
स्त्रियोंमें प्रधान और शीलसे मण्डित होतीभई सो बि-
रोचनकापुत्र महातेजाबलि तिसके साथ रमण करता
भया ४ फिर भोगमें आसक्तहुआ बलिके सुतलमें बसते
हुये दैत्य तेजोंकोहरने सुदर्शनचक्र पाताल में प्राप्तहुआ
५ फिर चक्रप्रविष्टहोतेही दानवोंकेपुरमें ऐसा हलाहल
शब्दहुआ जैसे क्षुभितहुआ समुद्र ६ फिर यह असुर-
पुंगव वलि तिस शब्दको सुनकर खड्ग लेताभया और
फिर आश्चर्य है यह क्या है ऐसे पूँछता भया ७ फिर
धर्म्मपत्नी और पतिव्रता ऐसी बिन्ध्यावली खड्गको
कोशमें प्राप्तकराके और भर्त्ताको शान्ति करातीहुई व-
चन कहनेलगी ८ कि हे प्रिय! यह दैत्यों के चक्र को
नाश करनेवाला भगवान् का चक्र है सो हे दैत्येन्द्र!
यह वामनजी महात्मा का चक्र आपको पूजना योग्य
है ९ फिर शोभन अङ्गोंवाली और सार्व्वपात्रा ऐसी
यह विन्ध्यावली यह वचन कहके निकसी और इसके
पीछे हजारअरोंवाला विष्णुका सुदर्शनचक्र निकसा
१० फिर हे ब्रह्मन्! असुरपतिबलि भी अंजलिपुट बां-
धताभया और विधिवत् पूजन करके यह स्तोत्र कहता
भया ११ कि दैत्य चक्रोंको नाशकरनेवाले सहस्र किरणों
वाला और सहस्र कान्तिवाला और सहस्र अरोंवाला

ऐसे हरिके सुदर्शनचक्र को मैं प्रणाम करताहूँ १२ और जिस चक्रकीनाभिमें ब्रह्माहैं और जिसमें त्रिशूल धारण किये महादेवजी और आराओंकी जड़में बड़ेपर्वतहैं १३ और जिसके आराओं में इन्द्र और सूर्य और अग्नि आदि जो देवता हैं और जिसके बेगमें बायु स्थित है और तेजमेंअग्नि १४ और जिसके आराओंके प्रांतभाग में मेघ हैं और बिजली और तारागण हैं और जिसके बाहर बालखिल्यादि मुनिहैं १५ तिस बासुदेवके दिव्य श्रेष्ठ आयुधको नमस्कार करूंहूं हे चक्र! शरीर बाणी मन से उत्पन्न हुये मेरे पापोंको दग्ध करो १६ और बिष्णु भगवान्‌का चक्र मेरे कुलकापाप और पिताकापाप माताकापाप इन्होंको दूरकरो और हे चक्र! तुझको प्रणाम है १७ और हे आयुध! बड़े बेगसे मेरेपापोंकोहरो और मेरे मनकीपीड़ा और शरीरकी पीड़ा दूरकरो १८ और हे चक्र! तेरेनामके कीर्त्तनसे मेरे सम्पूर्ण दुरित नष्टहो- जाओ हे मुने! यह बुद्धिमान् बलि ऐसे कहके और भक्ति से पूजन करके १९ फिर सम्पूर्ण पापोंका नाशकरनेवाले पुण्डरीकाक्ष भगवान्‌का स्मरण करके पूजनकिया ऐसा चक्र असुरोंको तेजरहित करके २० फिर पातालसे जब चक्र चलागया तब बलि अत्यन्त बिह्वलता को प्राप्त होता भया २१ फिर वलि परम आपद को प्राप्तहोकर ब्रह्मा का स्मरण करता भया और स्मरण किया यह ब्रह्माजी भी सुतल में दानवेश्वर को प्राप्त होतेभये २२ फिर महातेजाबलि ब्रह्मा को देखकर और सार्घपात्र

ग्रहण करके फिर हे ब्रह्मन्! विधि से ईश्वर ब्रह्माका पूजन करके २३ फिर अंजलिपुट बांध के यह वचन कहताभया हे भगवन्! आप स्मरण किये आये सो बड़ी कृपाकरी २४ हे भगवन्! हमारेहितको देखतेहुये जल्दीकहो कि संसार में बसतेहुये पुरुषके क्या सार है २५ और हे भगवन्! जिसके करनेसे बन्धनष्टहोवे और संसाररूप समुद्रमें जो बुद्धिहीन पुरुषोंके तिरनेके वास्ते हो सो कहो २६ पुलस्त्यजी बोले हे मुने! ऐसेपौत्रकेवचन सुनके प्रह्लाद चिन्तवनकरके जो संसार में हित था सो वचन कहतेभये २७ प्रह्लादजी कहते हैं कि हे दानवोंमें शार्दूलबले! जो तुम्हारी ऐसी यह बुद्धिहुई सो बहुत अच्छा हुआ २८ और हे बले! और मनुष्यों को और तुझको जो हितहै सो अब कहताहूं २९ हे बले! जो भव रूप समुद्रमें प्राप्तहैं और जो द्वन्द्वरूप वातसे हतहैं और जो पुत्र पुत्री और स्त्री इन्हों की रक्षाके भारसे पीड़ित हैं और विषम विषरूप जलमें जो डूबतेहुये हैं और जो नौकासे रहितहैं तिन्होंको एक विष्णु नौकारूप शरणहै ३० और हे धीर! अनन्त और अनादि मध्यरहित नारायण सुरगुरु शुभदवरेण्य शुद्धखगेन्द्र गमन कमलालयेश ऐसेहरिके जो आश्रयहैं सो धर्मराजके कानों में भी नहीं प्रवेशहोते ३१ और हे बले! धर्मराज फाँसीलिये अपने पुरुषोंको देखकर कानमें यह कहता है कि रे भगवान्की शरण जो पुरुषहैं तिनके पास मतजावो और हे दूतो! मैं वैष्णवों का प्रभु नहींहूं अन्य पुरुषोंका हूं ३२ और

तैसेही राजाओं में श्रेष्ठ और भक्तियुक्त ऐसे इक्ष्वाकु ने भी कहाहै कि हे पुरुषो ! जो पृथ्वी में विष्णुभक्तहैं सो धर्मराजके विषय नहीं होते ३३ और हे बले ! जो हरिकी स्तुति करती है वही जिह्वाहै और जो हरिके अर्पण है वही चित्तहै और हे बले! जोहाथ हरिकी पूजामें तत्परहैं वही श्लाघा करनेके योग्यहैं ३४ और जो भगवान् के चरणारविन्द पूजनेको समर्थ नहीं वे हाथ नहीं हैं किन्तु वे हाथ वृक्षकी शाखाहैं ३५ और हे बले ! जो कण्ठ हरिके गुणोंको नहीं वर्णनकरता सो मेंडकका ही कण्ठ है और जो जिह्वा हरिके गुणोंको नहीं वर्णनकरती सो रोगवाली है ३६ और हे बले! ऐसा मनुष्य साधुओं को शोचकरने के योग्यहै और हे बले ! जो पुरुष भक्तिसे विष्णुके चरण कमलों को नहीं पूजता है सो जीवताहुआही मराहै ३७ और हे बले ! जो पुरुष भगवान्‌के पूजनमें रतहैं वे मरे हुयेभी नहीं शोचने योग्यहैं ये मेरेबचन सत्यहैं सत्यहैं इन्हों में संदेह नहीं ३८ और जो शारीर और मानस और वाग्ज और मूर्त्त और अमूर्त्त और जो दृश्य और स्पृश्य और अदृश्य पदार्थ है सो सम्पूर्ण केशवात्मक है ३९ और हे बले ! जिस पुरुषने चार प्रकारसे वामन भगवान् अर्चित कियाहै तिसने देव दानवोंसहित तीनों लोक अर्चितकरदिये इसमें संदेह नहीं ४० और हे बले! जैसे समुद्रमेंरत्न असंख्यहैं ऐसे विष्णु भगवान्‌के गुण भी असंख्यहैं ४१ और हे बले ! जो पुरुष शंख और चक्र और कमल और धनुष और खड्ग इन्होंको धारण

किये जो श्रीपति बिष्णु तिसके आश्रय होते हैं तिन्हों को संसारकाभय नहीं होता और संसाररूपगर्त्तमें फिर नहीं पड़ते ४२ और हे बले! जिनपुरुषोंका मन निरंतर गोविंद में बसता है वे तिरस्कारको कभी नहीं प्राप्तहोते और न मृत्युसे डरते ४३ और हे बले! जो पुरुष शार्ङ्ग-धारणकिये बिष्णुके शरणहैं वे न तो धर्मराज के जाते और न नरकों में प्राप्तहोते ४४ और हे दानवोंमें शार्दूल! जिसगतिको बिष्णुभक्त प्राप्तहोते हैं तिसको श्रुति शास्त्रके बिचारनेवाले और ब्राह्मणभी नहीं प्राप्त होते ४५ और हे दैत्यशार्दूल! युद्धमें सन्मुखमरेकी जो गति होती है नरोत्तम तिससेभी अधिक गतिको बिष्णु भक्ति करके प्राप्तहोते हैं ४६ और हे दैत्य! धर्मशील और सात्विक और महात्मा इन्होंकी जो गति है सोई भगवान् को सेवतेहुयोंकीभी गतिहै ४७ और हे दैत्य! तिसके भक्त सर्वावास और वासुदेव और सूक्ष्म और अव्यक्तविग्रह ऐसे हरिको अनन्य चित्तसे प्रविष्ट होते हैं ४८ और हे बले! जो अनन्य भक्तिकरके केशवको नमस्कार करते हैं वे महात्मा पवित्रहुये तीर्थरूप होजाते हैं ४९ और हे दैत्य! जो ठहरताहुआ और चलताहुआ सोता हुआ जागताहुआ पीताहुआ खाता हुआ नारायण का ध्यानरक्खे है तिससे अन्यपुण्यभाक् और नहीं ५० और हे दैत्य! बैकुण्ठ और खंडपरशु और भवबंधको नाश करनेवाले ऐसे महात्मा बिष्णु को जो नमस्कार करते हैं सो संसारमें फिर नहीं आते ५१ और जो क्षेत्रों में

नित्यबसते हैं वे अमितकान्तिवालेहोके देहोंके बिषे स्थित हुयेभी कर्मोंकरके नहीं बँधते हैं ५२ और जिन्हों के बिष्णुभगवान् प्रियहैं वे बिष्णुके निरन्तर प्यारे हैं और वे बिष्णुके भक्त फिर संसारमें जन्म नहीं लेते हैं ५३ और जो पुरुष भक्तिसे नम्रहुये दामोदर भगवान् का ध्यान और अर्चनकरते हैं वे पुरुष इससंसाररूपी कीच में नहीं डूबते हैं ५४ और जो पुरुष प्रातःकाल उठके भक्तिसे भगवान् का स्मरणकरते हैं और जो भगवान् की कथाको सुनाते हैं और सुनते हैं वेभी अतिपापों से छूटजाते हैं ५५ और जिन पुरुषोंका मन हरिभगवान् रूपी वाक्य अमृतको कानों के द्वारापीके प्रसन्न होता है वे सबपापों से छूटजाते हैं ५६ और जिन पुरुषोंकीभक्ति चक्रपाणि भगवान्बिषे निरन्तर है वे जहां योगेश्वर हरिभगवान् हैं तहां नियतस्थानबिषे जाते हैं ५७ और बिष्णु कर्म में प्रसक्तहुये भक्तोंकी जो परमगतिहै वह तो हज़ारजन्मों के तपकरके प्राप्तहोती है ५८ और जिस पुरुष की भगवान् बिषे परमभक्ति नहीं है तिसको जप, मंत्र, तप, आश्रम इन्होंकरके क्याहै ५९ और जो मधु-सूदन भगवान् से द्वेष करताहै तिसका तप बृथाहै और यज्ञ, बेद, दान और तिसका सुनाहुआ यह सब बृथाहै ६० और जिसकी जनार्द्दन भगवान् बिषे भक्तिहै तिसको बहुत मंत्रों करके क्याहै किन्तु (ॐनमोनारायणाय)यही मंत्र सर्व्वार्थ साधकहै ६१ और जिन्होंकी गति बिष्णु भगवान्हैं तिन्होंकी पराजय कहां है और जिनके हृदय

में इन्दीवर श्यामजनार्द्दन भगवान् स्थितहैं तिनकी भी पराजय कहांहै ६२ और सर्व मंगल, मांगल्य, वरेण्य, वरदप्रभु ऐसे नारायणको नमस्कारकरके सबकर्म करने चाहिये ६३ और भद्रा और अन्य जो दुर्नीति से उपजे योगहैं वे सब विष्णुभगवान्के स्मरणमात्र करके नाश को प्राप्तहोजाते हैं ६४ और कोटिसहस्र और किरोड़ों सैकड़ों तीर्थोंका जो स्नानकरनाहै सो नारायणको प्रणाम करनेकी सोलहवींकलाकोभी नहीं पहुँचताहै ६५ और पृथ्वीपै जो पवित्रतीर्थ और स्थानहैं वे सब विष्णु के नाम स्मरण करने से प्राप्तहोजाते हैं ६६ और उनलोकों को व्रती और तपस्वीभी नहीं प्राप्तहोते हैं जोकि श्री-कृष्णको नमस्कार करने से प्राप्तहोते हैं ६७ और जो अन्यदेवताके भक्तहैं और विष्णुको मिथ्याभीपूजदेते हैं वे भी पुण्य के करनेवाले साधुजनों के स्थान में प्राप्तहोते हैं ६८ और जो सत्यप्रकार करके भगवान् को पूज के जिसफलको प्राप्तहोतेहैं वह फल अच्छा तप करने से नहीं प्राप्तहोता है ६९ और श्रेष्ठबुद्धिवाले पुरुष तीन संधियोंविषे भगवान्का स्मरण करते हैं वे उपवास के फलको प्राप्तहोजाते हैं इस में संदेह नहीं है ७० और हे बलिराजा! निरन्तर शास्त्रदृष्टकर्म करने से तिस भग-वान्के प्रसाद से तू परमसिद्धिको प्राप्तहोजावेगा ७१ सो तू तिसीभगवान् में मनकर और तिसीका पूजनकर और नमस्कारकर सो हे पुत्र! तिसदेवेश को प्राप्तहोके तू सुखको प्राप्तहोवेगा ७२ और अज, अनाद्य, अजर,

अमर ऐसे हरिभगवान्को जो मनुष्य नित्य स्मरण क-
रते हैं वेसर्वत्रग, ब्रह्मपर, पुराण, ध्रुव, अक्षय ऐसे बिष्णु-
पद को प्राप्तहोते हैं ७३ और जो बिगतराग औरपरापर
के जाननेवाले मनुष्य सुर, गुरु, नारायणको निरन्तर
स्मरण करते हैं वे जैसे सफ़ेदहंस समुद्रकेजलमें तिरजाते
हैं तैसे इस संसारको तिरजाते हैं ७४ और जो मनुष्य
निरन्तर कमलसरीखे नेत्रोंवाले ईश्वर भगवान्का ध्यान
करते हैं वे पापों से छूटजाते हैं और फिर माताकीचूँची
नहीं पीते हैं अर्थात् फिर जन्मनहींलेतेहैं ७५ और जो
मनुष्य वरद और पद्मनाभ, शङ्ख, चक्र, गदा, धनुष, बाण,
खड्ग इन्होंको हाथ में धारण करनेवाले ऐसे भगवान्का
कीर्त्तन करतेहैं वे निश्चय मधुसूदन भगवान् के स्थान में
प्राप्तहोतेहैं ७६ और जो भक्तिवाले मनुष्य संकीर्त्यमान
आद्यभगवान्का श्रवण करतेहैं वे पापोंसे छूटके सुखी
होजातेहैं जैसे अमृत पानकरनेसे तृप्तप्राणोंवाला तैसे
७७ इस वास्ते विष्णुभगवान्का श्रवण, कीर्त्तन श्रद्धा
वाले मनुष्योंको करना चाहिये और पूजाकरनी चाहिये
क्योंकि ऐसे मनुष्योंकी देवता प्रशंसा करतेहैं ७८ और
जो मनुष्य बाह्यकरके तथा शुद्ध अन्तःकरण करके के-
शव भगवान्का पत्र, पुष्प, जलादिकों से पूजन करताहै
वह निश्चय करके पूजाके योग्य है ७९ ॥

इति श्रीवामनपुराणभाषायांप्रह्लादसंवादेहरिप्रशंसा
नामचतुर्नवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

---

# पंचानबेवां अध्याय ॥

बलिप्रश्न करता है कि आपने जो कहाहै कि जनार्द्दनभगवान् का पूजन करके यथेष्टफल प्राप्तहो सो जो गति प्राप्त होती है तिसको कहो १ और किस पूजन करके भगवान् प्रसन्न होतेहैं और भगवान्की प्रसन्नताके वास्ते कौनसे दान श्रेष्ठ हैं २ और उपवासादिक तथा भगवान्का उत्सवकौनसी तिथिको करना और विष्णुकी तुष्टिके लिये कौनसी पुण्य श्रेष्ठहै ३ और जो दृढ़रूप अनालसी पुरुषों को कर्त्तव्य वह भी आप सम्पूर्ण कहो ४ प्रह्लाद कहते हैं हे बले! श्रद्धावाले और भक्तिमें तत्पर ऐसे मनुष्य जो भगवान्के उद्देश देते हैं तिसको मुनिजनोंने अक्षय कहाहै ५ और वही तिथी श्रेष्ठहै कि जिनमें जगत्पति भगवान्का पूजनकर और तन्मनाहोके जिस दिन उपवासकरे ६ और ब्राह्मणों के पूजन करने से भगवान् पूजित होजाते हैं और जो मूढ़ आत्मावाले तिन ब्राह्मणों से द्वेषकरते हैं वे निश्चय नरकमें जातेहैं ७ सो विष्णुमें तत्पर मनुष्यों को ब्राह्मणों का पूजन करना चाहिये क्योंकि पहले विष्णु भगवान् ऐसे कहते भये कि ब्राह्मण मेरा शरीर है ८ इस वास्ते पंडितहो अथवा मूर्खहो ब्राह्मण का अपमान नहीं करना चाहिये क्योंकि उसे विष्णुका शरीर जानना इस वास्ते पूजन करना ९ और भगवान्के वास्ते वे पुष्प श्रेष्ठकहेहैं जोकि वर्ण, रस, गंध इन्हों करके युक्तहोवें १०

और बिशेषकरके पवित्र तिथियोंको और दानोंको भगवान्‌की प्रसन्नताके वास्ते तेरे आगे कहूँहूं ११ जाई पुष्प, शतावरीपुष्प, चमेलीपुष्प, कुंदपुष्प, भोजपत्र केपुष्प, बाणकेपुष्प, चम्पाकेपुष्प, अशोक, पीलीकनेर, जूईकेपुष्प, १२ पारिभद्र, पाटल, बकुल, बिष्णुक्रांता, तिलकपुष्प, जासबन्दपुष्प, पीलातगर १३ ऐसे सब प्रकारके पीलेपुष्प बिष्णु भगवान् के पूजनमें श्रेष्ठ कहे हैं और केतकीके बिना सुगन्धवाले सब पुष्प भी श्रेष्ठ हैं १४ और बेलपत्र, जांटीकेपत्र, भंगराकेपत्र, तमालपत्र, आंवलाकेपत्र ये सब भगवान् के पूजनमें श्रेष्ठहैं १५ और जिन्होंकेपुष्प पूजनमें श्रेष्ठकहे हैं तिन्होंकेपत्र भी हरिके पूजन में श्रेष्ठ हैं १६ और बेलों करके तथा कुशाकरके तथा अनेक प्रकारके इन्दीबर आदि कमलों करके पूजन करना श्रेष्ठ है १७ और हे बले ! अल्पजलसे प्रक्षालित और पवित्र ऐसे बनस्पतियों के पत्तों करके और दूबके अग्रभागके पत्तोंकरके पूजन करना १८ और तैसेही पत्तोंकी पीपसियों से और कलियों से पूजाकरना चन्दन से तथा केसरिसे अनुलेप करना १९ और खस तथा पद्माख, पीतचन्दन इत्यादिकों से भगवान् का पूजन करना और भैंसागूगुल, लोबान, अगर २० पीछे शंख, जायफल इन्होंकी धूप भगवान् को देना उत्तम है और यव, गेहूँ, चावल इन्होंको घृतमें पका २१ तथा तिल, मूँग, उड़द, ब्रीहीधान्य इत्यादिक भगवान् के प्रिय हैं और गोदान तथा भूमिदान २२

तथा वस्त्रदान, स्वर्णदान ये सब भगवान् की प्रीति के वास्ते देनेचाहिये और माघके महीनामें तिलदान तथा धेनुदान २३ तथा इन्धन ये सब माधव भगवान् की प्रीतिकेवास्ते देनेचाहिये और फाल्गुन में व्रीही धान्य, मूँग, वस्त्र, कालामृगछाला ये सब गोविन्दकी प्रीति के वास्ते मनुष्यों को देनेचाहिये २४ और चैत्रमास में विचित्रवस्त्र, शय्यादान, आसन ये सब दान विष्णु भगवान्की प्रीतिकेवास्ते देनेचाहिये २५ और बैशाख में सुगन्धवालीमाला, सुगन्ध ये ब्राह्मणोंके लिये मधुसूदन भगवान्की प्रीतिकेवारते देनेचाहिये २६ और उत्तम ब्राह्मणोंकेलिये जलकाघड़ा, गाय, ताड़कावीजना, चन्दन ये सब ज्येष्ठमास में त्रिविक्रम भगवान् की तुष्टि के वास्ते देनेचाहिये २७ और जो सब काल विष्णुमें मनको लगाता है वह सदा पुत्र, धन, भार्य्या इन्होंसे युतरहता है २८ जो नम्रतासे विष्णुको पूजता हुआ भक्तिसे विधिपूर्व्वक नित्यप्रति इसको सुनता है वह निश्चयपापों से रहितहोके दक्षिणासहित अश्वमेध यज्ञके समग्रफलको प्राप्त होजाता है २९ और सोना पृथ्वी, अश्व, गाय, हस्ती, रथ इनसबों के दानके फल को पृथ्वी में पवित्रहुआ और अतिपुण्यवाला ऐसा वह पुरुष व नारी इस बामनपुराणके एकपादको सुनने से प्राप्तहोताहै ३० तीर्थोंमें उत्तम और अतिपवित्र ऐसे गंगा, नैमिष, पुष्कर तीर्थोंमें अथवा कोकामुख तीर्थ में जो स्नानके फलको विप्र कहतेहैं और जो माघमासमें

और बिशेषकरके पवित्र तिथियोंको और दानोंको भगवान्की प्रसन्नताके वास्ते तेरे आगे कहूँहूं ११ जाई पुष्प, शतावरीपुष्प, चमेलीपुष्प, कुंदपुष्प, भोजपत्र केपुष्प, बाणकेपुष्प, चम्पाकेपुष्प, अशोक, पीलीकनेर, जुईकेपुष्प, १२ पारिभद्र, पाटल, बकुल, बिष्णुक्रांता, तिलकपुष्प, जासबन्दपुष्प, पीलातगर १३ ऐसे सब प्रकारके पीलेपुष्प बिष्णु भगवान् के पूजनमें श्रेष्ठ कहे हैं और केतकीके बिना सुगन्धवाले सब पुष्प भी श्रेष्ठ हैं १४ और बेलपत्र, जांटीकेपत्र, भंगराकेपत्र, तमालपत्र, आंवलाकेपत्र ये सब भगवान् के पूजनमें श्रेष्ठहैं १५ और जिन्होंकेपुष्प पूजनमें श्रेष्ठकहे हैं तिन्होंकेपत्र भी हरिके पूजन में श्रेष्ठ हैं १६ और बेलों करके तथा कुशाकरके तथा अनेक प्रकारके इन्दीबर आदि कमलों करके पूजन करना श्रेष्ठ है १७ और हे बले ! अल्पजलसे प्रक्षालित और पवित्र ऐसे बनस्पतियों के पत्तों करके और दूबके अग्रभागके पत्तोंकरके पूजन करना १८ और तैसेही पत्तोंकी पीपसियों से और कलियों से पूजाकरना चन्दन से तथा केसरिसे अनुलेप करना १९ और खस तथा पद्माख, पीतचन्दन इत्यादिकों से भगवान् का पूजन करना और भैंसागूगुल, लोबान, अगर २० पीछे शंख, जायफल इन्होंकी धूप भगवान् को देना उत्तम है और यव, गेहूँ, चावल इन्होंको घृतमें पक्का २१ तथा तिल, मूँग, उड़द, ब्रीहीधान्य इत्यादिक भगवान् के प्रिय हैं और गोदान तथा भूमिदान २२

तथा वस्त्रदान, स्वर्णदान ये सब भगवान् की प्रीति के वास्ते देनेचाहिये और माघके महीनामें तिलदान तथा धेनुदान २३ तथा इन्धन ये सब माधव भगवान् की प्रीतिकेवास्ते देनेचाहिये और फाल्गुन में ब्रीही धान्य, मूँग, बस्त्र, कालामृगछाला ये सब गोविन्दकी प्रीति के वास्ते मनुष्यों को देनेचाहिये २४ और चैत्रमास में बिचित्रबस्त्र, शय्यादान, आसन ये सब दान बिष्णु भगवान्‌की प्रीतिकेवास्ते देनेचाहिये २५ और बैशाख में सुगन्धवालीमाला, सुगन्ध ये ब्राह्मणोंके लिये मधु-सूदन भगवान्‌की प्रीतिकेवास्ते देनेचाहिये २६ और उत्तम ब्राह्मणोंकेलिये जलकाघड़ा, गाय, ताड़काबीजना, चन्दन ये सब ज्येष्ठमास में त्रिबिक्रम भगवान् की तुष्टि के वास्ते देनेचाहिये २७ और जो सब काल विष्णुमें मनको लगाता है वह सदा पुत्र, धन, भार्य्या इन्होंसे युतरहता है २८ जो नम्रतासे विष्णुको पूजता हुआ भक्तिसे बिधिपूर्व्वक नित्यप्रति इसको सुनता है वह निश्चयपापों से रहितहोके दक्षिणासहित अश्वमेध यज्ञके समग्रफलको प्राप्त होजाता है २९ और सोना पृथ्वी, अश्व, गाय, हस्ती, रथ इनसबों के दानके फल को पृथ्वी में पवित्रहुआ और अतिपुण्यवाला ऐसा वह पुरुष व नारी इस बामनपुराणके एकपादको सुनने से प्राप्तहोताहै ३० तीर्थोंमें उत्तम और अतिपवित्र ऐसे गंगा, नैमिष, पुष्कर तीर्थोंमें अथवा कोकामुख तीर्थ में जो स्नानके फलको बिप्र कहतेहैं और जो माघमासमें

प्रयागजीके स्नानसे फलहोताहै ३१ सो बामनपुराणके एक पद के कीर्त्तन से मनुष्य प्राप्तहोके और राजसूय यज्ञके फलको प्राप्तहोताहै हे नारद! यह मैंने तुझसे कहा ३२ जो देवलोकमें और भूमिलोकमें महत्सुख को इसके सुननेसे मनुष्य प्राप्तहोता है और हे नारद! सौत्रामणि यज्ञके फलकोभी मनुष्य प्राप्तहोता है यहां मुझको संशयनहींहै ३३ सूर्य्य और चन्द्रमाके ग्रहण में रत्नके दानका जो फल है और अग्निहोत्री और श्रेष्ठ और बुभुक्षित ऐसे बिप्रको अन्नके दानका जो फलहै ३४ और जो इसफलको देवते कहतेहैं वह इस पुराणके पाठसे होताहै पुराणोंमें चौदहवां बामनपुराण प्रधानहै और इसके सुननेसे पाप नाशकोप्राप्तहोजाते हैं ३५ हे नारदजी! इसकेपाठसे बहुतसे महापाप भी नाशको प्राप्तहोजातेहैं पाठसे और सुननेसे सबप्रकार के पाप नष्टहोजातेहैं ३६ और जूतीजोड़ा, छतुरी, नमक, आंवला, कांजी ये सब आषाढ़ के महीने में बामनकी प्रीतिकेवास्ते देनेचाहिये ३७ और घृत, दूधका घड़ा धेनु, फल ये सब श्रावण के महीने में श्रीधर भगवान् की प्रीतिके वास्ते देनेचाहिये ३८ और भादोंके महीने में पायस अर्थात् खीर, मधु, घृत, लवण, गुड़ोदन ये सब हृषीकेशकी प्रीतिके वास्तेदेनेचाहिये ३९ और तिल, अश्व, बैल, दधि, ताम्र, लोहा ये सब दान ४० पद्मनाभदेव की प्रीतिकेवास्ते आश्विनके महीनेमें देनेचाहिये और चांदी, सुवर्ण, दीपक, मणि, मोती येसब दान ४१ दामोदर

की प्रीति के वास्ते कार्त्तिकके महीनेमें देने चाहिये और गर्दभ, उष्ट्र, घोड़ा, खच्चर, हाथी, गाड़ा, बकरा आदि ४२ ये सबदान केशव भगवान् की प्रीतिके वास्ते मार्गशीर्ष में देने चाहिये और हवेली, नगरादिक, गृह घरके आच्छादित करनेकी सबतरफ़से जगह ४३ येसब दान नारायणकी प्रीतिके वास्ते पौषके महीने में देनेचाहिये और दासी दास आभूषण छः रसोंसे युक्त अन्न ये सब दान ४४ पुरुषोत्तम भगवान्की प्रीतिके वास्ते सबकाल में देने चाहिये और जोजो घरमें आये को प्रिय है वही २ चक्रधारी भगवान्की प्रीतिके वास्ते देनेचाहिये ४५ और जोपुरुष केशव भगवान्का मंदिर बनवादेता है वह निरन्तर पवित्र लोकको प्राप्तहोजाता है और जो पुरुष पुष्प और फलोंसेयुक्त बगीचोंका दानकरता है वह इच्छापूर्वक श्लाघनीय भोगोंको भोगताहै ४६ और बिष्णुका मन्दिरबनवानेवाला पुरुष अपने पितामह से लेके आठ पीढ़ियों को अपनेसंग उतारदेता है ४७ और पितर, देवते, योगीजन इनगाथाओंको तपस्वी और योगी ऐसे ज्यामघराजाके आगे गातेभये हैं ४८ कि हमारे कुलमें कोई ऐसा विष्णुभक्त होवेगा ४९ कि जो पवित्र व्रतवाला भगवान्का मंदिरबनवावे अथवा कोई ऐसा भी होवेगा कि जो बिष्णुके मंदिरका लेपनकरे ५० अथवा कोई धर्मात्मा संमार्जन अर्थात् बुहारीदेनेवाला होवेगा और कोई हमारी संततिमें जन्माहुआ केशवके मंदिर में ध्वजा दान ५१ और दीपदान और पुष्प और चन्दन देने-

वाला होगा और हमारे कुलमें कोई ऐसा होवेगा कि जो सब पापोंको नाशकरनेवाली एकादशी ५२ व महापापोंको नाशनेवाले ब्रतको करेगा और महापातकों से युक्तहो अथवा पातकीहो तथा उपपातकीहो ५३ परंतु जो बिष्णु की बस्त्र आदि से झांकी बनाके मन्दिर से मूर्त्तिको निकासेगा वह सब पापोंसेछूटजावेगा इसप्रकार वह ज्यामघराजा पितरोंका बचनसुनके ५४ हे असुर! देवताओंके मन्दिरमें आ और पवित्रहोकेबिष्णुकेमन्दिर में पांचवर्णोंके रंगों करके चित्रामबनाताभया और वह राजा बिष्णुके मन्दिरमें सुगन्धतैलसे युक्त और घृतसे युक्त बिधिवत् दीपदानको करताभया ५५ और अनेक वर्णोंवाली और बहुतरंगोंसे रचितऐसी बैजयन्तीमाला को ५६ आप पृथ्वी में लिखताभया पीछे भगवान् की बिभूतियोंसेभगवान्के मन्दिरोंकोलिखताभया ५७ और मंजीठकरके नव रंगोंवाले सफेदपाटल इत्यादिकों के पुष्पोंसे औरफलोंसेयुक्त अनेकप्रकारके मनोहर बगीचे बनाताभया ५८ और लता, पल्लव, देवदारुइत्यादिकों से आवृत और राग तथा गन्धर्वबिधान के जाननेवाले और रत्न के संस्कारोंवाले ऐसे कुशलजनोंसे अलंकृत और अधिष्ठितकिये मञ्चोंपर यति और ब्रह्मचारियोंकी पूजा करताभया ५९।६० और ज्ञानसे सम्पन्न श्रोत्रिय दीनपुरुष और अन्धे लूले इत्यादिकों की नित्य पूजा हुआकरती इसप्रकार वह ज्यामघराजा श्रद्धासे युक्त होके और जितेन्द्रिय हुआ ६१।६२ विष्णुके स्थान

विषे प्राप्तहोताभया ऐसे प्रकार हम सुनाहै और महुआ व अलसीके तेलसेयुक्त सरसोंके तेलसे दीपदान करके भार्य्यासहित राजा अन्धतामिस्र नरकको तिरके पीछे विष्णुलोकमें प्राप्तहुआ ६३ सो हे बले! अब भी तिसी ज्यामघराजाके मार्गमें विष्णुलोककी इच्छा करनेवाले मनुष्य रहते हैं ६४ सो हे राजा! आपभी हरिकामंदिर बनवा और वहीं विष्णुका पूजनकर और बहुत श्रुत ब्राह्मणोंका भी पूजनकर ६५ और बिशेषकरके पौराणिक व सदाचारमें रत व शुचि ऐसे ब्राह्मणोंको बस्त्र आभूषण व रत्न, गौ, पृथ्वी व सुबर्ण इत्यादिकों से पूजनाचाहिये ६६ और जैसा ऐश्वर्य्यहो वैसेही भाग्यवान्का बिधिपूर्बक पूजनकरना चाहिये सो इसप्रकार क्रियायोग में रत रहने से तब तुझको मुरारिभगवान् शुभकरेंगे ६७ और हे बले! जगन्नाथ बिभुके आश्रय हुये मनुष्य कभी दुःखित नहीं होतेहैं ऐसे प्रह्लादकहके अपने नगरको गमन करतेभये ६८ पुलस्त्यजी बोले कि हे नारद! वह प्रह्लाद इसप्रकार सत्य श्रेष्ठ बचन कहके फिर तिसबलिसे पूजितहुये मुक्तिको प्राप्तहोतेभये ६९ फिर प्रसन्नहो बलिके पितामह प्रह्लाद चले गये तब वह बलिराजा चन्द्रमाके समान बर्णवाला हरिका मन्दिर बनवाताभया और महेन्द्रनामवाला शिल्पी तिस मन्दिर को बनाताभया ७० फिर वह राजाबलि भार्य्यासहित तिसमन्दिर में मार्ज्जन और लेपनकरता भया व महात्मा राजा यव, शर्करा इत्यादिकों की उत्तम

गन्ध व बलिको करताभया ७१ और बिस्तृत नेत्रों वाली बिन्ध्यावलीरानी आपही तिसमन्दिर में दीपदान करतीभई इसप्रकार वह बलिराजा पौराणिक ब्राह्मणों करके धर्मका श्रवण करताभया ७२ इसीधर्म में स्थित हुये राजाबलिकी यह बिधि होतीभई कि जगत्पति, जनार्द्दन, भगवान् दिव्यशरीर धारणकरके बलिकीरक्षा के वास्ते महान्लोहे के मुसलको ग्रहणकर दुष्टशत्रुओं को मारतेहुये तिस बलिके द्वारके आगे स्थित होतेभये और किलासेगुप्त तिसके घरमें शत्रुओंको प्रवेश न देतेभये ७३।७४ और राजाबलि द्वारमें स्थित सम्पूर्ण गुणों में अभिराम धाता नारायणजी से रक्षाकोप्राप्त महलकेबीच में देवता और ऋषियों में मुख्य भगवान् हरिजीका पूजन करतेभये ७५ इसीप्रकार असुरराज बलि हरिजीके चरणकमलों में पूजनकरतेहुये रहतेभये और नित्यही हरिजी के भाषितोंको स्मरणकरतेहुये तिनके बिनयका अंकुश उत्पन्नहुआ ७६ और इसचरित्र को दैत्यराजबलि पठनकरता और अपने गुरु और इन्द्र तुल्य पितामह के सत्य और शुभ बचनों को स्मरण करताभया ७७ जे पहले सुनने में अप्रिय और पीछेप्रिय बृद्धों के कहेहुये बचनों को सुनकर उन्हीं के अनुसार बर्त्तावकरते हैं ते आनन्दको प्राप्तहोते हैं ७८ आपदारूपी सर्पसे काटेहुये मन्त्रहीन मनुष्यको बृद्धोंके बचनरूप औषधही बिषहीन करदेते हैं ७९ बड़ों के बाक्यरूपी अमृतको पानकर और तिनके कहेहुयोंको

मानकर जो तृप्ति पुरुषोंको होती है वह सोमपानसेभी नहीं होती ८० आपत्तिमें पड़ेहुये जिन पुरुषोंको बृद्ध-जन शिक्षा नहीं देते ते बन्धुओं के बीचमें शोच करने योग्य और जीवतेही मृतक सदृश हैं ८१ आपदारूपी ग्राहसे पकड़ेहुये जिन पुरुषोंके बृद्ध पण्डित शिक्षकनहीं हैं जोकि उनको मोक्षदेनेवाले हैं तिन पुरुषोंकी शान्ति नहीं होती ८२ और आपदारूपी जलमें डूबते और क्लेशकी लहरों से उतरातेहुये पुरुषों को बृद्धों के वाक्यों को छोड़ और किसी प्रकार पार उतरना नहीं होसक्ता ८३ पुलस्त्यजी ने कहा कि हे नारद! तिससे जो बृद्धोंके वाक्यों को सुनकर उन्हींके अनुसार वर्त्तता है सो शीघ्रही सिद्धिको प्राप्तहोता है जैसे बिरोचन के पुत्र बलि प्राप्तहुये हैं ८४ ॥

इति श्रीवामनपुराणेश्रीत्रिविक्रमचरितंसमाप्तम् ॥

फिर पुलस्त्यजी ने कहा कि हे नारद! यह हमने तुमसे पुण्यकारी पुराणकहा इसको जो भक्तिसे सुनता है वह परमकीर्त्तिसमेत बिष्णुजीके पदको प्राप्तहोता है ८५ जैसे गङ्गाजीमें स्नान करनेसे पापदूर होजाते हैं तैसे-ही पुराणके सुननेसे भी पापनाश होतेहैं ८६ और जो बामनपुराणको सुनता है उसके और उसके कुलमें भी रोग और आभिचारिक बिषनहीं उत्पन्नहोते ८७ बा-मनजी ने नारदमुनि से कहा कि यह मैंने परमरहस्य तुमसे कहा इसको हरिभक्ति बर्जित और ब्राह्मणकी नि-न्दा में युक्त ऐसे पापी पुरुषों से न कहना चाहिये ८८

कारणसे बामनरूप नारायण अमितपराक्रमी शार्ङ्ग धनुष, चक्र, तलवार और गदा के धारण करनेवाले ऐसे पुरुषोत्तमजीके अर्थ नमस्कार है ८९ इसप्रकार से जो मनुष्य नित्य कहता है वह कृष्णकी भावना करनेवाला और देवों से पूजित मनुष्य विष्णुपद और मोक्षपदको प्राप्तहोताहै ९० मनुष्यको चाहिये कि कथा बांचनेवाले को गौ, पृथ्वी और सोने के आभूषणदे जितनादेनेकी सामर्थ्य हो सो सामर्थ्य के अनुसार नहीं देता उसके कथा सुननेका फल नाशहोजाता है ९१ और जो ब्राह्मण इस अनिन्द्य पुराणको तीनों सन्ध्याओं में पढ़ता वा सुनताहै उसकेसम्पूर्णपाप नाशहोजातेहैं औरसंपूर्ण सम्पदा भी मिलजाती हैं ९२॥

इति श्रीवामनपुराणेपुलस्त्यनारदसंवादेपञ्चनवतितमोऽध्यायः ९५॥

इदंवामनपुराणंसम्पूर्णम्॥

## इस्तहार लिङ्गपुराण ॥

जिसका उल्था छापेखाने के बहुत खर्च से जयपुरनिवासी दुर्गाप्रसादजी ने भाषा में किया जिसमें अनेकप्रकार के इतिहास, सूर्यवंश, चंद्रवंशका वर्णन, ग्रह, नक्षत्र, भूगोल खगोलका कथन, देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, नागादिकी उत्पत्ति दोप्रकारके सहस्रनाम, यदुवंशकथा, सर्ग, प्रतिसर्ग, त्रिपुरदाह, शिवजीकी अनेकमूर्त्तियोंकी प्रतिष्ठा, लिंगस्थापनफल, लिंगदानफल, नानाप्रकारके लिंगोंकी पूजाका फल, पाशुपतव्रतविधान, अनेकपापोंके प्रायश्चित्त, काशीमहिमा, जलन्धरवध, दक्षयज्ञविध्वंस, शिवविवाह, गणेशजन्म, शिवजीकी अनेक विभूतियों की महिमा, शिवपूजन, षोड़श महादान, जीवच्छ्राद्ध, शरभावतारकथा, विष्णु भगवान् के अवतारोंकी कथा, नन्दीअभिषेक, मृत्युंजयमन्त्रमाहात्म्य, योगसाधनादि हजारों विषय अतिविस्तार से चमत्कारपूर्वक वर्णन किये गये हैं जिनके पढ़नेसे मन प्रसन्नहोकर पुण्यकी वृद्धि होती है ॥

## ब्रह्मोत्तरखण्ड भाषा ॥

जिसको पण्डितदुर्गाप्रसादजी ने स्कन्दपुराणान्तर्गत संस्कृत ब्रह्मोत्तरखण्डसे देशभाषा में रचा जिसमें अनेक प्रकारके इतिहास राजादाशार्हकी कथा, शिवपंचाक्षरमन्त्रमाहात्म्य, कल्माषपाद राजाकी कथा, शिवरात्रि, प्रदोष सोमवार, उमामहेश्वरादि व्रतों के माहात्म्य, दोब्राह्मण और सीमन्तिनीकी कथा, अनेक भक्त राजाओं के इतिहास, रुद्राध्याय पाठका माहात्म्य इसी प्रकारकी अनेक कथाओं का वर्णन है ॥

## भविष्यपुराण भाषा ॥

श्रीपण्डित दुर्गाप्रसादकृत उल्था इसमें पौराणिक इतिहास, चारों वर्णों के धर्म, स्त्रीशिक्षा और परीक्षा, राजा और सर्व पुरुषों के लक्षण, व्रतोंके उद्यापन, और उनकी कथा, सर्पोंका वर्णन और उनकी चिकित्सा, स्त्रमोंका वर्णन, प्रासाद और प्रतिमाओं के लक्षण, शाकद्वीपीयब्राह्मणों की उत्पत्ति, भूगोलवर्णन, होने वाले राजाओं का राज्यसमय, संसार के दोष पातक नरकादि वर्णन, गर्भिणी के धर्म, धेनुदानविधान, जलाशय, देवालय बनाने वृक्ष लगाने का फल, सर्व प्रकार के दानों के माहात्म्य आदि वर्णन किये गये हैं ॥